प्रस्तावना.

पत्रुं तो रुज्जत थशे के श्रीचंद्रकुमारनो जन्म थयो
अमारा सर्व साधर्मी भाइओने आ पुस्तक वांचवाथी, पटलुं तो हजत थशे के श्रीचंद्रकुमारनो जन्म थयो
पछी स्वस्य थयथी मांडीने, यावज्जीव पर्यंत प्रतिदिवस राज्य, लक्ष्मी, नवीन स्त्रीओ अने बीजी पण अनेक
प्रकारनी कला कुशलतादिक उत्तम विशिष्ट वस्तुओनी अधिकाधिक प्राप्ति थती गइ. तेमज वळी शुद्ध श्रद्धा-
नपूर्वक अधिकाधिक श्री केवलिजाषित श्रीजैन धर्मनी प्राप्ति पण थती चाली.

आ रासना प्रथम खंडना प्रारंभथी मांडीने चोथा खंडना अंत सुधी दृष्टि करी वांचनार सज्जनोने ए
महान् पुरुषना प्रतापनी प्रबलता विषे कदि आश्चर्य उत्पन्न थया विना रहेशे नहीं; परंतु ए सर्व पूर्व जवने
विषे आचरेला आयंबिल वर्द्धमान नामे तपाचार धननुं फळ जाणवुं.

दान, शीयल, तप अने जाव ए चार प्रकारना धर्म, परमेश्वरे कह्या छे, तेमांना जाव सहित मात्र एकज
प्रकारनी तपश्चर्या आचरण करवाना प्रजावथी श्रीचंद्र राजा संसारमां सर्व प्रकारनां उत्तम सुखोने अनुजवी
छेवटे मुक्त थइने आत्मिक सुखरूप स्वसंपदानी प्राप्तिने पाम्या, माटे एवां उत्तम प्रकारनां तप आचरण
करवाने सर्व जव्य जीवोए उद्यम करवो. ए तप संबंधी माहात्म्यना वर्णनाश्रयी अनेक महा पुरुषोनां चरित्र
मांहेलुं आ एक चरित्र छे.

वळी आ रासनुं बीजुं नाम आनंदमंदिर पवुं राखवामां आव्युं छे. तेनो हेतु आ रासना चोथा खंडनी
छेल्ली ढालमां दर्शावेलो छे. तेमज आ रासना प्रथम प्रकृति खंडमां जे जे वातोनो समावेश थयेलो छे ते ते
खंडनी समाप्तिए तेनुं संक्षेप वर्णन करेलुं छे, माटे अत्रे लखवानी कांइ जरुर नथी, परंतु एटलुं तो जणाव-
वानी अगत्य छे के आ रासना प्रत्येक खंडमां प्रसंगानुसार नीति आदिक विषे विचित्र प्रकारना प्रस्ताविक
श्लोक, कुंडलिया, दोहा, चोपाइ प्रमुख अनेक जातिना छंदो आपेला छे, ते वांचनारने सद्बोध आपे एवा
छे. तेमज केटलीएक चमत्कारिक कथाओ पण आपेली छे.

आ ग्रंथना (१३६') पृष्ठथी त्रीजा खंडमां प्रीयंगुमंजरीए पाणिग्रहण करवानी अगाउ श्रीचंद्रकुमारने
केटलाएक प्रश्नो पूछ्या छे जेमां पद्मिनी आदिक चार जातिनी स्त्रीओनां लक्षण तथा सामुद्रिक शास्त्रने अनु-

गार स्त्रीओनां शुभाशुभ लक्षण, नागवादिक जातिनां लक्षण, पुरुषनी बहोंतेर कळानां नाम वगेरे केटलीएक जाणवा योग्य बाबत छे. तथा १५३ मा पृष्ठथी केटलीएक गूढार्थ समस्या विगेरे पूछी छे तेनो विस्तार छे.

एज बीजा खंडना १०४ मा पृष्ठथी देवद्रव्य भक्षणाश्रित संकाशनी कथा तथा सागर शेठनी कथा तथा साधारण द्रव्य अने ज्ञानद्रव्य भक्षणाश्रित कर्मसार अने पुण्यसारनी कथाओ आपेली छे. जे वांचवाथी देवादिकनुं द्रव्य भक्षण करवाथी नीपजता कटुक विपाकनुं जाणपणुं थाय छे, अने भव्य जनोने तेवां अशुभ निमित्तोथी विरमवाना परिणाम थाय छे.

चतुर्थ खंडमां विशेषे करी शल्योध्दरण न करनारा एवा दांभिक जनोने शिखामण अपाय ते आश्रयी ३०६ मा पृष्ठथी रुपी साध्वी तथा ते पछी सुसढ साधु अने लखणा साध्वीनी कथाओ सविस्तर देखाडी छे. तेमज आलोचना लेनारा अने आलोचना आपनारा गुरुना गुणनुं वर्णन करेलुं छे. तथा आलोचना लीधाथी केटला गुण उपजे ते तथा दश प्रकारना प्रायश्चित्तादिना स्वरूप प्रमुख अनेक वातो दर्शावेली छे.

आ रासनी प्रत घणे स्थानके छे, परंतु ते सर्व शंकित लखायेली दीठामां आवी छे. ते मांहेली त्रण प्रतो में पण आ ग्रंथ छापवा माटे एकठी करी तोपण परस्पर एक बीजी प्रत साथे मेळवतां कोइ कोइ स्थानके पाठ फेर अने अक्षर काना मात्रादिना फेर दीठामां आव्या; तेम आ ग्रंथने छापती वखते हुं पण सुमारे आरव्यवरो चार महीना सुधी ज्वरादि रोगे पीडित थयो, तेथी एनुं यथार्थ शोधन थइ शक्युं नथी. यद्यपि म्हारे हाथे आ ग्रंथ शोधायो छे तथापि व्याधिना प्रसंगथी तादृश शोधन थयेलुं कहेवाय नहीं; माटे शुद्ध वांचनाराओने अनेक स्थळे अशुद्धताना दोष दीठामां आवशे तथापि ते गुणग्राही जनो जेम आगळ पण म्हारा हाथे छपायेला ग्रंथोमां रहेला दोषोने सुधारी वांचता आवे छे अने म्हारा अपराधने न जोतां म्हारा उपर सुनजरपूर्वक कृपालुपणुं दर्शावता आवे छे, तेज रीते आ ग्रंथने पण सुधारी वांचशे अने म्हारा उपर पूर्वनी पेठेज क्षमा राखशे एवी आशा राखुं छुं.

द्वितीयावृत्ति पृष्ठ (१) ६५ (२) ६९ (३) ८९ (४) १५८

श्रावक भीमसिंह माणक.

॥ श्रीगौतमगुरुभ्यो नमः ॥

अथ

॥ श्रीश्रीचंद केवलीनो रास प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुखकर साहेब सेवीयें, श्रीसंखेसर पास ॥ जास सुजस जग विस्तर्यो, महिमा निधि आवास ॥ १ ॥ सागर पूजित चरण कज, रज पावित नरिंद ॥ परगट पूरण परचको, एहवो अवर न दीठ ॥ २ ॥ संप्रति काळें सीधै छे, जे महिमा भंडार ॥ पण ए अतीत चोवीशीमें, कही उतपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ दामोदर जिन पूछियो, कहीयें सिद्धि उदेश ॥ आषाढ नामा श्रावकें, आश दीधो सुभ लेश ॥ ४ ॥ तव जिनवर तेहने कहे, नमि भइ तेहनो सिद्धि ॥ आगामुक श्रीपासना, आर्यघोष सुप्रसिद्ध ॥ ५ ॥ ते निसुणी निज हरखथी, बिंब नरावे तास ॥ पूजी बोहोला कालमें, तिहां करे चिंत निवास ॥६॥ एम अनेक सुरें पूजीया, नमि विनमि खग-राय ॥ तेमें इहां ए आणियो, चोवीशीमां ठाय ॥ ७ ॥ अनुक्रमें सूरय चंद्रमा, एम अनेक वली इंद्र ॥ पूजे हरिहर महादेव, साथे इहां धरणींद्र ॥ ८ ॥ धरणेन्द्र पद्मावती, हाजर रहे हजूर ॥ सेवक वंछित पूरवे, सेवन करे भरपूर ॥ ९ ॥ कमलापति जग जाणियें, जीत लही रही मान ॥ जरासंध जीती करी, पूरो शंख वजाय ॥ १० ॥ जादव सहि सुखिया थया, संखेसर पुर गाम ॥ थिर स्थानक ते थापियो, आज लगें [illegible] ॥ ११ ॥ ठामें ठामें पासना, प्रगट छे अहिठाण ॥ श्री अश्वसेन नृप कुल गगन, दिनकर किरण [illegible] ॥ १२ ॥ प्रकटप्रभावी पासजी, परम पुरुष शिर लीह ॥ दसशत वदन न थुणी शके, महिमा अकल [illegible] ॥ १३ ॥ ओं ह्रीं [illegible] पासजी, मूल मंत्र ए बीज ॥ जपतां दुरित सवे टळे, आपी मति गति बीज [illegible] गुण, रयण तणा आवास ॥ आचारिज अनुयोग धर, शिक्षा दुविध प्रकाश ॥१५॥ [illegible] शिरदार ॥ धर्म मर्म सवि जाणिया, तत्त्वातत्त्व विचार ॥ १६ ॥ आ- [illegible] ॥ तेहिज प्रणमुं मनरली, जेम लहुं अविरल वाणि ॥ १७ ॥ बुद्धि-

हीण हुं आखशु, पण मेरे गुज तेह ॥ तेणें हेते उद्यम करुं, उत्तम गुणशुं नेह ॥ १८ ॥ उत्तम केरी संकथा, करतां नासे पाप ॥ साकर दूध मन विणु पिये, तोहि नासे सवि ताप ॥ १९ ॥ जिन गुरु सरसतीनें नमी, तेम प्रणमी ओंकार ॥ श्री श्रीचन्द केवली तणो, कहुं कथा अधिकार ॥ २० ॥ जेम जाण्यो छे शास्त्रमां, गुरु उपदेशें रसाल ॥ नाम ठाम तस दाखवुं, सुणजो थइ उजमाल ॥ २१ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

चतुर सनेही मोहना, महारा प्यारा प्राणआधारा ॥ ए देशी ॥ जय जयंवती चालनी ॥

॥ स्वस्तिश्री शाला सुविशाला, पोढी पर्व पोशाला ॥ सूत्र सुगाला सुकृत सुगाला, कहीयें नहीं दुष्काला ॥ १ ॥ मंदिरमाला उन्नत शाला, सत्रागार रसाला ॥ घन परें काला, गज शुंढाला, घंटारवें फमकाला ॥ २ ॥ त्रयल ठोगाला, नें कुंदाला, मानीने मठराला ॥ वारु वाचाला, नें विगताला, माहाजन वसे सुखाला ॥ ३ ॥ मणिमय भूषण,जालालंकृत सोजागण जिहां बाला ॥ नहीं जस दूषण अंगें आला,जोगी दिया चित्त चाला ॥४॥ वारु वरण तणा जिहां टाला, धर्मे होये उजमाला ॥ ठाम ठाम हय गय रह पाला, करत प्रजा रखवाला ॥५॥ जिनमंदिर उपर लहकेती, वारु जिहां वैजयंती ॥ मानुं ए स्वर्ग लोकनें चाटे, उसरतीह हसंती ॥ ६ ॥ कहे जिनराजनें अंतर राखुं, दाखुं समकेत पंति ॥ प्रणत सुरासुर, सवि जवि पातक, धूपघटीशुं दजंती ॥ ७ ॥ सकल लोकनें आनंदकारी, जेह नगरनी शोजा ॥ देखीनें अनिमिष थया सुरवर, मानुं रह्या थिर थोजा ॥ ८ ॥ किंबहुना सुखमांथी नाला, नाम विशाला नयरी ॥ अलकाधिक अधिकी शोजायें, जिहां नवि लागे वयरी ॥ ९ ॥ तिहां समकेतवर, बहुगुण मणि पेटक, चेटक नामें राजा ॥ जिनभक्ति देशविरति शुजमति, जेहना सवल दिवाजा ॥ १० ॥ दूसम सूसम केरे समयें, वरु वजीर वरु शीश ॥ इंड्रजूति नामें गोत्रें गौतम, जेहनी सबल जगीश ॥ ११ ॥ प्रथम संघयणी, प्रथम संठाणी, उन्नत सग कर माने ॥ कनक कमलनां मध्य निकष सम, गोरा सुंदर वानें ॥ १२ ॥ खंति मद्दव अज्जव मुत्ति, तव संयम आराधे ॥ सत्य शौच अकिंचन बंजह, दशविध धर्मनें साधे ॥ १३ ॥ चरण करण गुण लापव विनया, दिक गुणमणिना खाणी ॥ पंचसया मुनिवर परवरिया, संपूरण चउ नाणी ॥ १४ ॥ उयंगी तेयंगी जसंसी, वच्चंसी विख्याता ॥ न रह्या अंतरंग

रिपु केरा, जय आगम अयदाता ॥ १५ ॥ लब्धि तणा आगर सुखसागर, जग दर्शनथी उपजे ॥ नय छपनय नवि मंत्र रहस्या, दिक परमारथ विकसे ॥ १६ ॥ जीवित इहां मरण अनीहा, प्रमुख गमे नय टाल्या ॥ संक्षेपी जेणें तेजोलेश्या, सकल जंतु प्रतिपाल्या ॥ १७ ॥ एम अनेक गुण संयुत गौतम, गणधर गुणकर आव्या ॥ नयर विशालानें उद्यानें, तप संयमशुं राच्या ॥ १८ ॥ वनपालकें जइ राय वधाव्या, आव्या गौतम स्वामी ॥ जय जय नंदा जय जय भद्दा, प्रिय कहुं शिर नामी ॥ १९ ॥ इम दान देइ कहे राजा, वंदन काज सजाइ ॥ करो भरो आनंद प्रजा जन, आवो वंदन धाइ ॥ २० ॥ चतुरंगिणी सेना परवरियो, जेम जेहि उल्लासें हरियो ॥ तरियो हुं भवजल कहे गुणथी, परम प्रमोदने वरियो ॥ २१ ॥ अभिगम पंच विधिशुं करी आवी, गय पिछ पण वंदे ॥ गणधर गुणवंता देखीने, भक्ति विशेषें वंदे ॥ २२ ॥ मेघ मयूर चकोर कलाधिप, निरखी जेम परिहरखें ॥ जेम तृषणो द्विज अटवी अंते, पेयर अमृत वरसे ॥ २३ ॥ तेम हरखीयो हरखीयो चित्तमांहे, धर्मदेशना सुणवा ॥ ज्ञानविमल गुरु गणधर गुणथी, जनम सफल करी गणवा ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुधा सुधाकर देशना, जाणे सभा समस्त ॥ मोक्षतणुं कारण अछे, धर्म सदा प्रशस्त ॥ १ ॥ धर्म ते दुविध स्वरूप छे, निश्चय ने व्यवहार ॥ आतम रूपें निश्चयें, परतु स्वभाव विचार ॥ २ ॥ व्यवहारें चउ भेद छे, दान शीयल तप भाव ॥ समकेत संयुत निर्जरा, ते विणु पुण्य प्रभाव ॥ ३ ॥ ज्ञान अभय धर्मोपस्थिति, त्रिविध दान प्रधान ॥ बंभ कुलक्रम आतम गत, त्रिविध शील सुख थान ॥ ४ ॥ तप पण प्रवचनें होय छे, बाह्य अभ्यंतर भेद ॥ एकेको षट् विध अछे, आगममां ते वेद ॥ ५ ॥ अथवा तामस राजसें, सात्त्विक भाव त्रिभेद ॥ भाव तणा विणु हालीया, शुभ अशुभनें वेद ॥ ६ ॥ एम जोतां नवि पामियें, शास्त्र तणो कोइ पार ॥ पण कृत कर्मनें नासवे, तपनो इहां अधिकार ॥ ७ ॥ दुराराध्य दूरें रह्युं, जे कोइ विकट प्रचार ॥ ते तपथी सवि संपजे, देखेंथी तिणि वार ॥ ८ ॥ तप तो विविध प्रकारनां, बोल्या शक्ति विशेष ॥ पण आंबिल वर्द्धमाननो, महिमा अधिको रेष ॥ ९ ॥ एकेकुं आंबिल वधे, यावत् शत परिमाण ॥ ओली अंतें कीजीयें,

पारणानुं मंडाण ॥ १० ॥ थोडी थोडी छेदनें, एकेको उपवास ॥ शक्ते निरंतर कीजीयें, नहीं तो पारण न्यास ॥ ११ ॥ पांच सहस्र आंबिल होय, उपर वली पचास ॥ शत परिमाणें जाणवा, थोडीना उपवास ॥ १२ ॥ वरस चौद त्रण मास दिन, वीश अधिक तप मान ॥ अंतगड सूत्रमांहे कह्यो, स्वयमुख वीर जगवान ॥ १३ ॥ ए तप कंचन धातु छे, जो समता रस जुत्त ॥ शिवपद प्रापण हेतु छे, एह परम पद सूत ॥ १४ ॥ कर्म निकाचित तोडवे, सर्वारथ दीये सिद्धि ॥ अणुवांछकपणे पामीयें, विविध रुद्धि बहु लब्धि ॥ १५ ॥ जेम श्रीवीरें प्रकाशियो, श्रेणिक आगल जेह ॥ श्री श्रीचंद नरिंदनो, संबंधें गुणगेह ॥ १६ ॥

॥ यदुक्तं ॥ श्रीसिद्धर्षिगणिनां पूर्वप्राकृतचरित्रे ॥ जं चंदणेण अइया, तविअं अइ गरुअ वद्धमाण तवं ॥ तस्स फलेण हुउ सो, सिरिचंद निवो सया सुहिओ ॥ १ ॥ अर्थः–अतीत कालें चंदननें जवें जे अत्यंत (गरुअ के०) मोहोटुं आंबिल वर्द्धमान नामा तप कीधुं, तेने फलें करीनें ते श्रीचंद राजा सदा सुखीओ थयो ॥ १ ॥ गाथा ॥ निवाण धम्मतित्थे, एरवय वासम्मि पुणपवरो ॥ जाउ पुण इह जरहे, वत्तीस पयसयाहिवइ ॥ २ ॥ अर्थः–निर्वाणी नामा तीर्थंकरने वारें ऐरवत क्षेत्रमांहे पुण्यवंतमांहे श्रेष्ठ एवो ते राजा फरी वली आ जरतक्षेत्रमां उत्पन्न थयो, बत्रीश हजार देशनो अधिपति थयो ॥ २ ॥ दोहा ॥ ते तप अधोत्तर शतक, कर्युं चरित्र मझार ॥ पण शत ठेकी मानजो, आगममां अधिकार ॥ १७ ॥ तेहवो नृप तुजनें कहुं, सवि जविजन हित काम ॥ विकथा आलस मूकीनें, सुणजो करी मन ठाम ॥ १८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ चतुर सनेही मोहना ॥ ए देशी ॥ राग जेतश्री ॥

॥जंबूद्वीप लख जोयणो, आयामनें परिणाहे रे ॥ त्रिगुणी परिधि तस जाणीयें, बोली आगममांहे रे ॥ १॥ चतुर सोजागी सांजलो, ए सविहुनें मध्यें रे ॥ पूर्णचंद्र सम वाटलो, तेज तलित पूय संधे रे ॥ च० ॥ २ ॥ त्रण लाख सोल सहस्र वली, शत दोय सत्तावीशो रे ॥ जोयण कोश तिग एक शत, अट्ठावीश धनुष जगीशो रे ॥ च० ॥ ३ ॥ [illegible]

मांहे जरत विख्यातो रे ॥ च० ॥ ५ ॥ पाचसें छवीश जोयणां, ने कला अधिक कहीजें रे ॥ जोयणनो छोगणीसमो, भाग ते कला कहीजें रे ॥ च० ॥ ६ ॥ जरत थकी बमणा वधे, यावत् होये विदेहा रे ॥ एम दक्षिणथी लीजीयें, उत्तरथी वली तेहा रे ॥ च० ॥ ७ ॥ जंबूद्वीप पन्नत्तिमां, ए जोग्यो अधिकारो रे ॥ ते कहेतां विस्तर वधे, होये ग्रंथ अपारो रे ॥ च० ॥ ८ ॥ भरतमांहे षट् खंम ने, देश महस्स बत्रीशो रे ॥ तेमांहे पचवीश देश ने, साढा आर्य सुजगीशो रे ॥ च० ॥ ९ ॥ जरतक्षेत्र जूजामिनी, भाल तिलक उपमानो रे ॥ नयर कुशस्थल जाणीयें, कुशावर्त बिय नामो रे ॥ च० ॥ १० ॥ जेपुर आगल सुरपुरी, थइ हलकी तेणें ऊंची रे ॥ गुलनायें पण नवि रही, सकल सुभगता कुंची रे ॥ च० ॥ ११ ॥ पर उपकारें आगला, पांगला परधन लेवा रे ॥ गुण ग्रहवा शतजीह ने, नहीय कुजीहनी टेवा रे ॥ च० ॥ १२ ॥ मुंगा परदोष जाणवें, महस्स नयण निज दोषें रे ॥ न्यायें चित्त विलगे सदा, क्षेत्र सुपात्रने पोषे रे ॥ च० ॥ १३ ॥ इत्यादिक गुण जेहना, कहीयें केणी परें केता रे ॥ तेह नगरीनो राजीयो, प्रतापसिंह नाम नेता रे ॥ च० ॥ १४ ॥ नाम सुणीनें तेहनो, अरियण दूरें जावे रे ॥ जेम हरिनादें गजघटा, निर्मदतानें पावे रे ॥ च० ॥ १५ ॥ न्यायवंत नृप शोजीयें, दश लाख पुरनो स्वामी रे ॥ दश लख हय ने दीपता, विविध जाति अभिरामी रे ॥ च० ॥ १६ ॥ गज रथ तुरिय दश महस्स ने, कोमी संख्या ने पाला रे ॥ ध्वज करजादिक अति घणा, सामंत मंत्री रखवाला रे ॥ च० ॥ १७ ॥ जग प्रताप तपनें करी, रवि रहे गगनें फिरतो रे ॥ नित्य नित्य उगे आथमे, मानुं तेहनें अनुसरतो रे ॥ च० ॥ १८ ॥ अप्सरा रंजा उर्वशी, जे आगलें वहे पाणी रे ॥ राजाने अंतःपुरें, पंचसया ने राणी रे ॥ च० ॥ १९ ॥ तेमांहे अति वल्लही, जयश्री नामें पटदेवी रे ॥ पुत्र चार ने तेहनें, जनक कांति गुण तेहवी रे ॥ च० ॥ २० ॥ जय विजयो अपराजितो, जयंत नामें ते दीपे रे ॥ एणी परें राज्य करे सदा, आप बलें अरि जीपे रे ॥ च० ॥ २१ ॥ मुदित मनें रहे नृपति, एक दिन तखतें बेठो रे ॥ तिहां व्यवसायें आवियो, वरदत्त शेठनें दीठो रे ॥ च० ॥ २२ ॥ नवतर शुजतर लक्षणें, लक्षित अंग विराजे रे ॥ पूछे कुशलनी वातमी, वास किहां तुम गाजे रे ॥ च० ॥ २३ ॥ अचरिज कहो दीठुं होये, शो अर्थे इहां आव्या रे ॥ एहथी विशेष पुर जे होये, जे तुम चित्तमां जाव्या रे ॥ च० ॥ २४ ॥ ते निगुणी व्यवहारीयो, करी प्रणाम तव जाखे रे ॥ देव तुमारी कृपाथकी, नगर घणु मन राखे रे ॥ च० ॥ २५ ॥ पण मनो दीपशिखा जिमी,

नगरी कोइ न एहवी रे ॥ इन्द्रपुरी जस आगलें, जोतां न दीसे तेहवी रे ॥ च० ॥ २६ ॥ गृह प्राकार विहारमां, मांडणी अद्भुत दीसे रे ॥ वास्तुक शास्त्र तणी विधें, जोतां हियडुं हीसे रे ॥ च० ॥ २७ ॥ मध्ये प्रथम जिनवर तणो, विहार अने बहु वारो रे ॥ घार प्रारंजी चउदिशें, आपण श्रेणि उदारो रे ॥ च० ॥ २८ ॥ चार पोल ने पश्रनी, इशानें राजनिया रे ॥ अग्निकोणें व्यवहारीया, वायुकोणें क्षत्रिया रे ॥ च० ॥ २९ ॥ नैऋत कोणें अपर जना, एणी परें गेह निवेशा रे ॥ पदम सरोवर पुर बहि, द्रुपद बन्ध सेतु देशा रे ॥ च० ॥ ३० ॥ वापी कूप वनमालिका, पर्व शस्त्र बहु ठाम रे ॥ तेह नगरीनुं जोवतां, वाधे मन अभिराम रे ॥ च० ॥ ३१ ॥ तेह पुरीथी आवियो, वणिज व्यापारनें हेतें रे ॥ पण ते पुरी पावन करो, जोवानें संकेतें रे ॥ च० ॥ ३२ ॥ एह वचन वरदत्तनुं, निसुणी आनंद पामे रे ॥ ज्ञानविमल गुरुवयणथी, जेम जवि अनुजव कामें रे ॥ च० ॥ ॥ ३३ ॥ सर्व गाथा ॥ ९६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रतापसिंह नृप उमह्या, पुरी दर्शननें काज ॥ चतुरंग सेना परिवरया, मंत्रीसर युवराज ॥ १ ॥ विकट सुजट सार्थें लिया, वाजे वाजित्र नाद ॥ हाथीना हलका घणा, वाजे घंटना नाद ॥ २ ॥ सार्थे लीधो शेठियो, देइ आदर मान ॥ चाल्यो राजा चोंपशुं, देतो अढलक दान ॥ ३ ॥ तिलक करे व्यवहारिया, नीरें जरिया कुंज ॥ गाय सवच्छी लघु कनी, सतिलक वेदी वंज ॥ ४ ॥ निर्धूम अग्नि सोहामणो, दर्पण मंगल पाठ ॥ हय सांबेला साम्मुहा, वृषज राशि वध आठ ॥ ५ ॥ प्रथम प्रयाणें रायने, पवन थयो अनुकूल ॥ दिशि निर्मल ग्रह शुज कथक, नहीं अपयोगनुं मूल ॥ ६ ॥ मधु मदिरानें मृत्तिका, मंगलकरण सुखदाय ॥ सन्मुख सवि आवी मले, नोल चाम दिखलाय ॥ ७ ॥ वामा वायस तित्तरा, जैरव जिमणी थाय ॥ सांढ आडुके हनुमता, हरण करे वा लाय ॥ ८ ॥ नाहर वाहर सुख दिये, वामादे वीतार ॥ रातें शीयालां बोलतां, वाम चाली मोड धार ॥ ९ ॥ राय करें फल आपीयां, कंठ ठवी पुष्पमाल ॥ दधि दूर्वा घृतथी जियो, आगल धरे उदार ॥ १० ॥ पंखी करे प्रदक्षिणा, वली तोरण संयोग ॥

जातां अनुक्रमें, करे प्रयाण मंडाण ॥ कुंवर चार तिहां आविया, परदेशी गुणखाण ॥ १२ ॥ मारगमां ॥
वीनव्या, नरपतिनें कहे राय ॥ पेसारो पट मंडी, ते आवे जिन ठाय ॥ १४ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

राग काफी ॥ अलबेलानी देशी ॥

॥ पद प्रणमी कर जोडीनें रे लाल, सुंदर चार सुजट सुण राजा रे ॥ देई आशीष उभा रह्या रे लाल, होये गदा गद्गद ॥ सु० ॥ १ ॥ पुण्यें योग जेहवा मले रे लाल, मन मलियानुं संग ॥ सु० ॥ सज्जन जनशुं जे गोठडी रे लाल, ते आलगमां गंग ॥ सु० ॥ पु० ॥ २ ॥ १ चतुर २ कुशल ३ सोम ४ गुणधर रे लाल, सेवाना यती जाण ॥ सु० ॥ नाम अरथथी जाणियें रे लाल, देखी देय नृप माण ॥ सु० ॥ पु० ॥ ३ ॥ तुम मांहे छे शी कला रे लाल, तुम विद्या गुरु कोण ॥ सु० ॥ शे कारण आवतुं थयुं रे लाल, किहां तुमचुं अहिठाण ॥ सु० ॥ पु० ॥ ४ ॥ एक कहे पंखीस्वर लहुं रे लाल, बीजो कहे लखुं चित्त ॥ सु० ॥ नर स्त्री लक्षण त्रीजो लहे रे लाल, चोथो रथभ्रम कला सुपवित्त ॥ सु० ॥ पु० ॥ ५ ॥ एह कला अममां अछे रे लाल, सुण नरपति अम वाच ॥ सु० ॥ द्विज श्रीगणधराचार्य छे रे लाल, विद्यागुरु गिरि गाच ॥ सु० ॥ पु० ॥ ६ ॥ तुम पद सेवा कारणें रे लाल, आव्या छे गुणगेह ॥ सु० ॥ याग जिहां वसीयें तिहां रे लाल, गुणीनें गुणथुं नेह ॥ सु० ॥ पु० ॥ ७ ॥ मान देई पासें थापिया रे लाल, देइ चिंते तस अर्थ ॥ सु० ॥ मुद्रिकायें नंग शोनीयें रे लाल, नृप गत्रि वात समर्थ ॥ सु० ॥ पु० ॥ ८ ॥ मारगें चाल्यो नृपति रे लाल, क्रीडा लील विलास ॥ सु० ॥ पुर सर तटिनी वापिका रे लाल, वासी वन आवास ॥ सु० ॥ पु० ॥ ९ ॥ ठाम ठाम नृप भेटणां रे लाल, लइ दीयें बहु मान ॥ सु० ॥ नव नव कौतुक निरखतो रे लाल, देतो अविरल दान ॥ सु० ॥ पु० ॥ १० ॥ अनुक्रमें अनुक्रमें आवीया रे लाल, दीपशिखा पुरी पास ॥ सु० ॥ तेहवे पिंगल स्वर थयो रे लाल, सुणीने उपन्यो उल्लास ॥ सु० ॥ पु० ॥ ११ ॥ स्वर जाणे तेणे वीनव्यो रे लाल, स्नेही जननो लाग ॥ सु० ॥ होशे निःसंदेहथी रे लाल, सुणी हरख्यो नृप बहु लाग ॥ सु० ॥ पु० ॥ १२ ॥ पछे दीपशिखा पति रे लाल, दीपचंद इति नाम ॥ सु० ॥ पय प्रणमीनें वीनवे रे लाल, पावन करो मुज गाम ॥ सु० ॥ पु० ॥ १३ ॥ एम सुणी पुरीमां

आवया रे लाल, मन कीधुं जय राय ॥ सु० ॥ पदम सरोवर उपरें रे लाल, वेठा सिंहासन ठाय ॥ सु० ॥ पु० ॥ ॥ १४ ॥ पुरलोकना दीठी तिसें रे लाल, मीठी लागे मनमांहि ॥ सु० ॥ गढ मढ मंदिर मालिका रे लाल, पोल तोरणनी ठांहि ॥ सु० ॥ पु० ॥ १५ ॥ सात जूमि सौधपंतिनी रे लाल, गोंख ते जोखना गेह ॥ सु० ॥ देखं नयरमां संचस्या रे लाल, शोजा पुरनी अच्छेह ॥ सु० ॥ पु० ॥ १६ ॥ तिहां वातायनमां रही रे लाल, सुमुखी कनी अति चंग ॥ सु० ॥ तस मुखकज मांहें पड्यो रे लाल, जूपति मानस जृंग ॥ सु० ॥ पु० ॥ १७ ॥ स्मर जिह्न शरें वींधीयो रे लाल, जूपति हृदय मकार ॥ सु० ॥ क्षण एक शून्य मनें रह्यो रे लाल, योगी जिम लय धार ॥ सु० ॥ पु० ॥ १८ ॥ एणे समें चित्तने उंलखी रे लाल, बोल्यो सेवक तेह ॥ सु० ॥ हे नृप तुम सुकृतोदयें रे लाल, फलशे वंछित एह ॥ सु० ॥ पु० ॥ १९ ॥ कहे नृप चित्तें चमकियो रे लाल, जलुं लह्युं तें मुज मन्न ॥ सु० ॥ केहनुं घर ए कोण कनी रे लाल, लावण्य ललित यौवन्न ॥ सु० ॥ पु० ॥ २० ॥ तव चित्तज्ञ कहे हसी रे लाल, दीपचंद तुम जक्त ॥ सु० ॥ दीपवती राणी तणुं रे लाल, गेह अछे घन शक्त ॥ सु० ॥ पु० ॥ २१ ॥ ए तस कूखें सरोजनी रे लाल, कलहंसी सम जाण ॥ सु० ॥ सूर्यवती नामें अछे रे लाल, पुत्री पवित्र गुणखाण ॥ सु० ॥ पु० ॥ २२ ॥ त्रिभुवनसारनी उरमी रे लाल, गोरमी गुणह निधान ॥ सु० ॥ एक ठामें जोया जणी रे लाल, विधिकृत मनु अजिराम ॥ सु० ॥ पु० ॥ २३ ॥ वली दीपचंद चिंता मनें रे लाल, अपर अछे सुणो आज ॥ सु० ॥ कन्या केहने देयशुं रे लाल, कोण पहवो नरराज ॥ सु० ॥ पु० ॥ २४ ॥ कोण कोण शुज करी जेटणां रे लाल, करशुं मन संतोप ॥ सु० ॥ श्रीप्रतापसिंह रायनें रे लाल, जक्ति जावनो पोप ॥ सु० ॥ पु० ॥ २५ ॥ एम नृपनुं मन उंलखी रे लाल, कीधी सघली वात ॥ सु० ॥ मन गमतुं वैद्यें कह्युं रे लाल, दूधमां जेम निवात ॥ सु० ॥ २६ ॥ घिशुं राजा मन रंजीयुं रे लाल, सुणी ज्ञानविमल गुरु वाणि ॥ सु० ॥ केण विधि कन्या परणशे रे लाल, जूर्ज तेहनां मंकाण ॥ सु० ॥ पु० ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ १३७ ॥

दोहा

॥ कनी रुप लावण्य सुधा, सादर लोक न पान ॥ राज निज नयनां जलें, पुटकें पीये ताम ॥ १ ॥ सा

गुणुणी पण नृप तणुं, पीये प्रागण पीयूष ॥ निर्निमेषता निम ग्रहे, जिम चकोर शीत मयूख ॥ २ ॥ शक समान गुणे भर्यो, मनि गम कुमरी एह ॥ दैवयोग मलियो अत्रे, चंद्र चंद्रिका नेह ॥ ३ ॥ एम निसुणी वच पिता धरी, जोवे नयरी नाथ ॥ त्रिक चतुष्क चचर घणा, नाट्य विनोद विलास ॥ ४ ॥ जगदीश्वर जगनाथनुं, चैत्य भव्य उद्दाम ॥ प्रथम जिनेश्वर प्रणमीया, करी त्रिकरण मन ठाम ॥ ५ ॥ राज्यभवनामां आवीया, सिंहासन बेसाणि ॥ बेठा राजकुंवरी मळी, आणा शीश चढावि ॥ ६ ॥ देखीने सवि राजवी, आप आपणी तणि ॥ निरखे पण नूरे मने, काम करे चतुं चित्त ॥ ७ ॥ चित्त जाण नर वयणथी, दीपचंद नृप तुष्ट ॥ तेम केरी धन गर्जितें, परख्यो पुण्यें पुष्ट ॥ ८ ॥ सर्व गाथा ॥ १४५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ इम्बर आंबा आंबली रे, इम्बर दाडिम द्राख ॥ ए देशी ॥

हवे प्रतापसिंह राजने रे, पाणिग्रहण संकेत ॥ शुभ लगने आरोपियो रे, सवि पुरजन हित हेत ॥ १ ॥ गुणुण नर, जुओ जुओ पुण्य विलास ॥ पुण्यथीयें प्रत्यक्ष पेख ॥ गु० ॥ सुकृति जन जग रेख ॥ गु० ॥ जु० ॥ ए आंकणी ॥ महोटा मंडप मांडीया रे, देखी मोहे देव ॥ अवसर दान समर्पियें रे, नहीं नाकारनी टेव ॥ गु० ॥ जु० ॥ २ ॥ दीधा अति घणा दायजा रे, पोषे गवि पकवान ॥ जानी मानी साचव्या रे, जूजूआ बहु सनमान ॥ गु० ॥ जु० ॥ ३ ॥ आनंद अधिक उछाहशुं रे, थाट थयो वियाह ॥ सज्जन सहु राजी रह्या रे, नहीं कोइनी परवाह ॥ गु० ॥ जु० ॥ ४ ॥ निज उतारे आवीया रे, परणीने नरराय ॥ इंद्र इंद्राणी कमला हरि रे, एह योग गुणदाय ॥ गु० ॥ जु० ॥ ५ ॥ सामुद्रिक जन जोवीयो रे, सांभळ तुं नरराय ॥ पटराणी एहने करो रे, जेम होवे कोडि कल्याण ॥ गु० ॥ जु० ॥ ६ ॥ सुलक्षण वेहु पुत्र छे रे, जस रूपें गुणरूप ॥ रस जाणे रोहणधरा रे, तेम एहने छे नूर ॥ गु० ॥ जु० ॥ ७ ॥ जेहना श्वसुर पितामहा रे, मातामहा शिर छत्र ॥ पुत्र पौत्र पपोतरा रे, जस गुण गुण पवित्र ॥ गु० ॥ जु० ॥ ८ ॥ लाजकारी ए योग छे रे, लक्षणथी कहुं साच ॥ निःसंदेह ए जाणजो रे, सामुद्रिकनी वाच ॥ गु० ॥ जु० ॥ ९ ॥ गुण रूपादिक देखीनें रे, अंतःपुरमां कीध ॥ मूळवती पटदेविका रे, नृप हरख्यो एम कीध ॥ गु० ॥ जु० ॥ १० ॥ सुरतरु धर्म तणो

भाग्यो रे, रूप ताम ... ॥ एहवो अधिको को नहीं रे, लोक कहे एही राग ॥ सु० ॥ जु०॥ ११ ॥ केता एक दिन हरखें रे, रहेतांने थया जाम ॥ एहवे दूत एक आवीयो रे, दीपचंदने शिरनाम ॥ सु० ॥ जु० ॥ १२ ॥ सिंहपुराधिप नामथी रे, श्रीगुणांग नरेश ॥ जगीजी चंडवनी तणो रे, पति छे सुगुण निवेश ॥ सु० ॥ जु० ॥ १३ ॥ प्रतापसिंह बेटा अछे रे, तसते गजा मिलाय ॥ तेहथी निहां कणे दूतनें रे, कहे संबंध उछाय ॥ सु० ॥ जु० ॥ १४ ॥ देव सुणे वासंतिका रे, अटवी नीमाकार ॥ शूर नामें पल्लीपति रे, दुर्जय जस अधिकार ॥ (दुष्ट छे आचार) सु० ॥ जु० ॥ १५ ॥ ते पल्लीथी पश्चिम दिशें रे, सिंहपुर छे नयर ॥ श्रीगुणांग राजा अछे रे, तेहसुं धरे बहु वयर ॥ सु० ॥ जु० ॥ १६ ॥ नृपघर पेसी तस्करें रे, लीधो एकावली हार ॥ नासी गया ते दह दिशें रे, आरक्षकें करी वार ॥ सु० ॥ जु० ॥ १७ ॥ पग जोइ पूठें थया रे, बांधी आण्या प्रभु पास ॥ ताडंतां ते बोलीया रे, अमें शूर पल्लीपति दास ॥ सु० ॥ जु० ॥ १८ ॥ तस आदेशथकी कर्युं रे, चोर तणुं ए काम ॥ ते निसुणी नृप खीजीयो रे, हार ग्रही करे वाम ॥ सु० ॥ जु० ॥ १९ ॥ रोषें आरक्षकें दीओ रे, शूलारोपण चोर ॥ ते व्यतिकर शूर सांजले रे, पल्लीपति करे जोर ॥ सु० ॥ जु० ॥ २० ॥ सिंहपुरने वींटी रह्यो रे, जेम निधाननें व्याल तेह जणाववा आवीयो रे, दूत कहे सुणो जूपाल ॥ सु० ॥ जु० ॥ २१ ॥ प्रतापसिंह नृप पूछते रे, वात कही सवि दूत ॥ दीपचंद नृप हवे वीनवे रे, ए पल्लीपति यमदूत ॥ सु० ॥ जु० ॥ २२ ॥ एहना जयथी नवि करे रे, लोक कोइ व्यवसाय ॥ पंथ विषम एहथी थया रे, न चले कोइ उपाय ॥ सु० ॥ जु० ॥२३॥ घणुं किशुं प्रभु जाणीयें रे, कुग्रह परें ए खेट ॥ आ नगरी पण एहथी रे, जय पामे छे नेट ॥ सु० ॥ जु० ॥ २४ ॥ विहुंनी एम सुणी विनती रे, प्रतापसिंह नृप ताम ॥ कुंजीनाद सुणी केसरी रे, तिम तस जीतण काम ॥ सु० ॥ (ज्ञानविमल सही नाम) जु०॥ २५॥ सर्व गाथा ॥१७०॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रयाण जेरी देवरावीनें, परिवर्यो बहु सैन्य ॥ शूर जिलनें जीतवा, प्रतापसिंह अजिरेण ॥ चढत नगारे गाजीयां, शूर सुजट थया मस्त ॥ वेग मिलाया वाजीया, शुज मुहूर्त दिन शस्त ॥ २ ॥ कटक खेह

कायर प्राण ॥ अन्यायी नाठा गये, थाये हरामी हेराण ॥ ४ ॥ सिद्धपुर पासें आवीया, नदी तटें डेरा दीध ॥ चिंते प्रतापसिंह हीरचंद शेठ, शुनगांमनें सहाय कीध ॥ ५ ॥ शायर सफळनें पूछीनें, करे नागया विचार ॥ कहे केशरी गुंजारवें, वीरा आगळें, श्यो कीजें उपघात ॥ ६ ॥ कायर कीयां अमर संसार ॥ ७ ॥ पढीयासुं कळवळ करी, जिम तिम राख्यो प्राण ॥ पछ आगळ कोइ नागया, तो जाणुं नहीं अहिनाण ॥ ८ ॥ एम विचारी निकळ्या, सज्ज थया रण काज ॥ आय बंने जो नासियें, तो किम रहेशे लाज ॥ ९ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥ राग सिंधूडो ॥

॥ जो जइयें नाठी रे, तो करे लोक हांसी रे, एम विमासी निज जुद्धनें आवीया रे ॥ १ ॥ हाकोहाक करंता रे, चोपासें रे फिरंता रे, करता तिहां घन परें तीर भला गजे रे ॥२॥ राजा सेन आवे रे, आयुध वरसावे रे, रिपुसैन्य नसाये दिशोदिशें दडवडी रे ॥ ३ ॥ रणक्षेत्र मंडाणो रे, पक्षिपति राणो रे, पहुंच्यो नहीं टाणो कोइ न छानो रे ॥ ४ ॥ गज चढी शूर आयो रे, नहीं जननी जायो रे, माहामो ते धायो तेहने छमली रे ॥ ५ ॥ निर्मद गज देखी रे, नृप कटक छयेली रे, नवि कोइ विरोधी दीठो तेण समे रे ॥ ६ ॥ ए शुं थयुं ॥ ७ ॥ आवी कोइ नामे रे, गंध गज पछ पूछे रे, हीरचंद आलोचे रे, मनमांहे शोचे केम हवे जीतशुं रे ॥ ८ ॥ छूता पण पढीया रे, पण ते थया गळीया रे, नांखपासें रे, सग गंधनें पायें नवि निर्मद थया रे ॥ ९ ॥ कहे प्रताप केम कीजें रे, केणी परें जश लीजें रे, त्रीजें लिया आगळ कळिया पढीया शुं करे रे ॥ १० ॥ न चाले घउ प्राणे रे, रहेतां पणे वाणे रे, माहासुं ए जाणे ए नवडा पड्या रे जेम कंपल तेम नारी हुये रे ॥ ११ ॥ घोडयो रथ लेइ रे, चिंता तो केहुं रे, तेमो हवे सुजनें जुद्ध महारी फत्ता रे ॥ १२ ॥ शी चिंतो चिंता रे, रहो पथी निश्चिंता रे, नेता जो तुमहिज ए पृथिवी तणा रे ॥ १३ ॥ भिक्षाक यराका रे, जाशे जेम काका रे, हाथ पाका थइनें पांका दश दिशें रे ॥ १४ ॥ एम कही रथ लावे रे, हथीयार नरावे रे, राजाने छाये नत्र शिरें धरी रे ॥ १५ ॥ रथ फरहुं नमाके रे, नृप घाणे तासे रे, तरु पवन पछाडे तेम ते निकळ्या रे ॥

१६ ॥ घूमणीयें गज घाले रे, पण गामें न चाले रे, जिह्नना मन शांले जइयें हवे किण दिशें रे ॥ १७ ॥ इहां आवी अमीयो रे, हुं फंदमां पमीयो रे, नमीयो एणें राणे आण न मानतो रे ॥ १८ ॥ दिशि ताकें जेहवें रे, नृप काले तेहवें रे, चंडें कोदंडें पणठना पासमां रे ॥ १९ ॥ जयजयरव थावे रे, मंगल तूर वजावे रे, आवे रे शुजगांग नरेश्वर पाय पमे रे ॥ २० ॥ जागो जय सघलो रे, हतो एहज अवलो रे, सबलो तुम शरणो, जव में थादखो रे ॥ २१ ॥ सेना तव तूटी रे, पाली जइनें लूंटी रे, खूटी पापीनी जय आवी मली रे ॥ २२ ॥ जय कलश गंध गज लीधो रे, काठ पिंजर दीधो रे, कीधो निज सेवक शूर पलीपति रे ॥ २३ ॥ लक्षुं कोमी सोनैया रे, मूंगो मोती मोगइया रे, बीजा धन कहिया गणीया नवि शके रे ॥ २४ ॥ खाव्युं कटक ऋद्धि जाजी रे, मतवाला माजी रे, वाजी सवि आव्युं जनपद लोकनें रे ॥ २५ ॥ तूठो राजा जाले रे, सहु कोइनी साखे रे, पारखें पोहोता ए चारे नरा रे ॥ २६ ॥ ज्ञान कला चतुराइ रे, जलां दीठां जलाइ रे, पाइ में शोजा एहथी अति घणी रे ॥ २७ ॥ मुजनें दीधुं जयदान रे, ए तो पुरुष प्रधान रे, वहु दान देइने राखे तनु गाया परें रे ॥ २८ ॥ सूरजपुर नामें रे, थाप्युं पल्लि गामें रे, पटराणीनें कामे ए सवि जूमिका रे ॥ २९ ॥ मनावी आण रे, वलीयो देइ नीशाण रे, आवे नर राणह सिंहपुर जोयवा रे ॥ ३० ॥ शुजगांग नरदेवा रे, करे साची सेवा रे, मेवा जे जोइयें जेहने जेहवा रे ॥ ३१ ॥ दिन केता रहीयें रे, तुमथी सुख लहीयें रे, आणा शिर वहीयें तुमचा नेहथी रे ॥ ३२ ॥ एम कही संतोप्यो रे, प्रतापसिंह नृप पोप्यो रे, जूल्यो नवि धराये तेणी परें जोवतां रे ॥ ३३ ॥ प्रदीपवती दीपचंड राणी रे, सूर्यवती निज जाणी रे, धरे प्रीति अधिकेरी सगपण जाणीनें रे ॥ ३४ ॥ हवे प्रतापसिंह चलावी रे, केती जूंइ वलावी रे, पाठा फरी सिंहपुरें शुजगांग आवीया रे ॥ ३५ ॥ अनुक्रमें नृप आव्या रे, दीपशिखा पुरें जाव्या रे, वाजां वजमाव्यां जयत नीशाणनां रे ॥३६॥ पुण्यवंत जिहां जावे रे, तिहां मंगल थावे रे, जावें एम वाणी श्रीज्ञानविमल तणी रे ॥ ३७ ॥ सर्व गाथा ॥ २१६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीपशिखा पुरी आवतां, धरणीधवने अनेक ॥ लाज थया स्त्री धन सयण, गजरथ नर मल्या लेक ॥ १ ॥ व्यवहारी संतोपियो, जाणी तस उपकार ॥ मजाननां [illegible] तस जार ॥ २ ॥ दिन केता [illegible]

तिहां रही, नगरह जाणी प्रयाण ॥ करवाने हुये उतावला, प्रतापसिंह नृजाण ॥ ३ ॥ मंत्री प्रमुख सहुँ साथशुं, सूर्यवती पण साथ ॥ चतुरंगी सेना दायजा, दीधी अति घणी आथ ॥ ४ ॥ दीपचंद्र साथे थया, वोलाववाने काज ॥ जननी दीपवती सती, पुत्री ते धरी लाज ॥ ५ ॥ तुं मालारे हियडे वसी, तुं मुज प्राण आधार ॥ वीछडतां याहाला जोये, नयण न रहे धार ॥ ६ ॥ जागे सहुथी प्रथम तुं, समरे श्रीनवकार ॥ जिनप्रतिमा पूजी जमे, ए आपणो आचार ॥ ७ ॥ टाले सघळि आशातना, करजे विधिशुं धर्म ॥ विनय न चूके गुणी तणो, एह कयानो मर्म ॥ ८ ॥ त्रिविध नीख यतना करे, जक्ति करे जरतार ॥ पूज्य वचन अंगी करे, समजी तत्त्व विचार ॥ ९ ॥ कुल लज्जा गुर वेसमी, तुज मंडण आधार ॥ रोपी जे ते सींचजे, जिम पसरे आचार ॥ १० ॥ शीख देइ एम मावडी, देई आशीष अपार ॥ चिरंजीवो निज कंतशुं, तुजने धर्म आधार ॥ ११ ॥ मुज मनने वारण जाणी, केवरावे संदेश ॥ पीयर कदेई न वीसरे, जो सासरु होये शतदेश ॥ १२ ॥ बेटी परघर पामवे, एह सदा व्यवहार ॥ शिर चुंबी नीची हुवे, माताये तेणी वार ॥ १३ ॥ वोलावी पाछा वल्यां, पीयरीयां तेणी वार ॥ संखी सखीने एम कहे, ए छे तुम आधार ॥ १४ ॥ सोंपी में तुजने अछे, कालेजानी कोर ॥ घणुं घणुं शुं दाखवुं, तुं छे चतुर चकोर ॥ १५ ॥

॥ ढाल ७ठी ॥

माहारु करलडको पद्माणीयो रे ॥ ए देशी ॥

॥ महाराज आज आवे रे, प्रतापसिंह नृपाल ॥ मा० ॥ ए आंकणी ॥ वेगे कर्युं रे प्रयाण, चलिया दूत पधामणी ॥ नयर कुशस्थल जाण, थोडे दिनमां आवे धणी ॥ मा० ॥ १ ॥ शणगारे सवि हाट, वाटशुं आवे महाजन सामस्था ॥ नगरीनी शोजा देखी, सुर सघला जोये रह्यां ॥ मा० ॥ २ ॥ जरी जरी मोती माल, थोहुण गभाये स्वस्तिक पूरती ॥ मांचला सजी शुंज, नयणे निहाले नयर तणो पति ॥ मा० ॥ ३ ॥ वाजे वाजे गुहीर निशान, नाचे नाटक पात्र घणां तिहां ॥ दान मान गुणगान, न रही तेणे समे कांइ मणा जिहां ॥ मा० ॥ ४ ॥ महाजन करे रे जुहार, सार शृंगारादिक लेई जेटणां ॥ जय विजयादि कुमार, तात तणा पद नमीने ध्रावे गेहणा ॥ मा० ॥ ५ ॥ एणी परें नगर प्रवेश, कर्यो प्रजायें हरखशुं ॥ पुण्यें सघला योक, आय

सिंहे ते नयणें निरखशुं ॥ मा० ॥ ६ ॥ ध्यारी बेठा तख्त, चक्कल पडे नुं नाथ सवज ॥ डुगम ते सुगमज थाय, नित्य नित्य नवला कामित नीपजे ॥ मा० ॥ ७ ॥

यतः ॥ धर्माज्जन्म कुले शरीरपटुता सौभाग्यमायुर्बलं, धर्मेणैव जयंति निर्मलयशोविद्यार्थसंपत्तयः ॥ कांताराच्च महाभयाच्च सततं धर्मः परित्रायते, धर्मः सम्यगुपासितो भवति हि स्वर्गापवर्गप्रदः ॥ १ ॥ अर्थः—सारा कुलमां जन्म, शरीर सारुं पामवुं, तथा सौभाग्य, आयु अने बल, ते धर्मथकी प्राप्त थाय छे; अने निर्मल एवो यश, विद्या, द्रव्य, संपत्ति,ते सर्व धर्मे करीनेंज प्राप्त थाय छे. तथा उग्र वनने विषे सिंह, हाथी, अग्नि, तस्करादिक महाभय थकी निरंतर धर्म रक्षण करे छे, अने रुडे प्रकारे उपासना करेलो धर्म स्वर्ग तथा मोक्षने देनारो निश्चयत्वे करी थाय छे ॥ १ ॥

पूर्व ढाल ॥ डुसमन कीधा दूर, सूरपणाथी हो भूरि रमा लहे ॥ आनंदयो परिवार, सार जन्मारो हो एहयानो कहे ॥ मा० ॥ ८ ॥ पाले राज्य उल्लास, न्यायें धर्म अर्थ साधे भला ॥ विच विच काम विलास, देव दोगुंदक दीसे गुणनिला ॥ मा० ॥ ए ॥ सूर्यवतीनें साथ, काल न जाणे सुखमां जायतो, सुजश संयोग सौभाग, भाग्यवली छे प्रतापसिंह रायनो ॥ मा० ॥ १० ॥ एहवे एक दिन योग, चारे बंधव बेठा छे जयघरें ॥ करता वात विचार, नेह देखाडे छे अन्योअन्यहरे ॥ मा० ॥ ११ ॥ एह बंधव व्यवहार, सुख डुःख वात तणा मनोरथ धरे ॥ प्रसन्न चित्त तेणीवार, गोखें बेठा ते जोप भला करे ॥ मा० ॥ १२ ॥ एणे समे लोकना थोक, मलीया दीठा राज्य पंथे घणा ॥ कौतुक जोवा हेत, जावे नें आवे हो लेता भामणां ॥ मा० ॥ १३ ॥ कहे सेवकनें ताम, जइनें जूओ रे ए शुं अडे ॥ तेणे जई तिहां तेणीवार, जोइने भाखे रे जेम तेहनें रुचे ॥ मा० ॥ १४ ॥ कोइ परदेशी देव, आव्यो दीसे छे निपुण निमित्तियो ॥ पूछे जे तस वात, मननी दाखे छे जोइ निमित्तियो ॥ मा० ॥ १५ ॥ तेडाव्यो मनोहार, चारु करीने गणक कलाधरु ॥ बेठो देई आशीष, आगें बेठा ते राजकुमर वरु ॥ मा० ॥ १६ ॥ किहांथी आव्या आम, किण दिशें जाशो रे जाण ते जोषिया ॥ किहां धरो मन काम, ते सवि दाखो हो पुण्यना पोषीया ॥ मा० ॥ १७ ॥ अति आदर जिहां होये, तिहां बेसतां मनडुं उल्लसे ॥ एहवो लोकनो न्याय, ज्ञाननी गोष्टें हो साते सुख वसे ॥ मा०

न्यनैः ॥ भिंजानां परिवेषणादि च तथा पात्रादिशौचक्रिया, श्वश्रुर्भर्त्तननंददेवविनयैः कष्टं वधूर्जीवति ॥ १ ॥

अर्थः– शय्या उपाडवी, घरनुं वासीडुं काढवुं, जल गलवुं, रसोइ करवी, थालीयो मांजवी, दरणुं दलवुं, गाय दोहवी, छाश करवी, छोकरांओने जमवानुं पीरसवुं, वासणादि धोवानी क्रिया करवी, सासु, पोताना स्वामी, नणंद, देर तेमनो विनय करवो, एटलां कष्टोए करी वहु जीवे छे ॥ १ ॥

पूर्व ढाल ॥ श्रीजिनवचननी रागिणी रे, बोले मीठा बोल ॥ पीहरीयाने पूछतां रे, सुख दुःख न कहे तोल रे जाइ ॥ जू० ॥ ४ ॥ जिम अरहट घट यंत्रिका रे, यष्टि करे खटकार ॥ तिम सासू वहूशुं करे रे, वगर कामें फटकार रे जाई ॥जू०॥५॥ नानुं जाणुं वीसरयुं रे, जे कांइ विणठुं होय ॥ वहूनो वांक देखाडती रे, बीजो अवर न कोय रे जाई ॥ जू० ॥ ६ ॥ कर्म शुभाशुभ जे कर्यां रे, उदयें आव्यां तेह ॥ वहु विखवाद न चिंतवे रे, दुःख सहे निज देह रे जाई ॥ जू० ॥ ७ ॥ एक दिन ससरानी मुद्रिका रे, पडि खाधी तेणीवार ॥ वहूयें मूकी थानकें रे, करे घरना व्यापार रे जाई ॥ जू० ॥ ८ ॥ पूछ्युं ससरे किहां गई रे, मुद्रा माहारी आज ॥ पछवें वहू आवी दीये रे, वींटी लीयो माहाराज रे जाई ॥ जू० ॥ ९ ॥ सासू शोक्य समी जणे रे, लक्षण देखो स्वाम ॥ वहू रुपें ए चोरटी रे, केम रहेशे घर माम रे जाई ॥ जू० ॥ १० ॥ पूछयनां लक्षण चोरनी रे, न गणे कांई शंक ॥ तो शुं अवरनुं दाखवुं रे, पग पग दीसे वंक रे जाई ॥ जू० ॥ ११ ॥ वायण पर्रें ते लवलवे रे, सीगल परक समान ॥ आल दीये अमलावती रे, जिम तिम खवे नीशान रे जाई ॥ जू० ॥ १२ ॥ हवे ते सुत आव्यो घरें रे, सुणी शंखणी माता वात ॥ रीसें धमधमतो कहे रे, अहो अहो वहू विजात रे जाई ॥जू०॥ १३ ॥ हाथें ग्रही निज नारीनें रे, मारे मुशल प्रहार ॥ शिर फाट्युं शोणित वह्युं रे, कीधो तेणें ए अनाचार रे जाई, गमार जरतार रे जाई ॥ जू० ॥ १४ ॥ श्रीदेवी मन चिंतवे रे, कृतकरणी फल एह ॥ निमित्त मात्र फल पर दीये रे, एहिज धैर्य निःसंदेह रे जाई ॥ जू० ॥ १५ ॥ पीयरें जाई किणदिकें कानुं रे, दोमी आवी मात ॥ दुःखनर छाती फाटती रे, हा हा ए छतपात रे धाइ ॥ १६ ॥ धोलावे सुखशात । हवे कोण कहेशे मुज मात रे धाइ, ताहारी वाणी तीठी ने धाम रे धाइ ॥ धोला० ॥ ए आवकजी ॥ ...

गुणे न गुण ने शीश ॥ अविनय तो शीगी नथी रे, करजी विनय निज शीग रे थाइ ॥ थो० ॥ १० ॥ ओळंतो नवि आणीयोजी, फल्ल न शीखुं गुण ॥ पिता थांधव नयणां गमेजी, छगावती बहु गुण रे थाइ ॥ थो० ॥ १९ ॥ नागणमां बेठो ताहगोंजी, मन करे नवि परिवार ॥ कोण जिनधर्मनी यातडीजी, करशे भारोयार रे थाइ ॥ थो० ॥ २० ॥ साधु पण एवे सांभळीजी, पोकारे करी शोर ॥ मरणो माहारय करजी, में कीधुं पाप अघोर रे नाइ ॥ थो० ॥ २१ ॥ फेइ कहे निर्लज नागिला रे, जुहा बोली ए शोर ॥ कोइ कहे पति अपराधियोजी, जेहणो आंधयो गोर रे नाइ ॥ थो० ॥ २२ ॥ बहु गुइ तो तूटशे रे, ए नागिलीथी रे आज ॥ हुइ अचेतन ते गमेजी, लोकमां न रही लाज रे नाइ, नागरीशथी याज रे नाइ ॥ थो० ॥ २३ ॥ एहवे वैद्य कोइ आवीयोजी, कीधो मंत्र प्रचार ॥ जब हांटी सचेतन करीजी, तब हरख्यो परिवार रे नाइ ॥ थो० ॥ २४ ॥ कहे वैद्य याव थयुं रे, पण नहीं पहडुं आय ॥ धर्माविधिने साथयोजी, तेम आयति गुण थाय रे नाइ, कीधां दुष्कृत जाय रे नाइ ॥ थो० ॥ २५ ॥ देव गुरु धर्म संभारीया रे, शरणां चार सुणावे ॥ साधु गुणे आराधनाजी, करे शुभ भावना नाय रे थाइ ॥ थो० ॥ २६ ॥ जीव खमावया अति नलाजी, लाख चोराशी जेह ॥ पापस्थानक अढार छेजी, वोसरावीजे तेह रे थाइ ॥ थो० ॥ २७ ॥ सुकृत जाणी अनुमोदनाजी, निंदा दुष्कृतनी कीध ॥ श्री नवकार संभळावतांजी, प्राण त्याग तेणे कीध रे थाइ ॥ थो० ॥ २८ ॥ शुभ ध्याने शुभ संगतेजी, शुभ गति होये निदान ॥ ते पण आगळ जाणशोजी, ज्ञानविमल गुरु ज्ञान रे नाइ ॥ थो० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ २०९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मातपितादि मोहथी, कीधा बहुत विलाप ॥ जोर नहीं जे मरणशुं, पण ए मोह संताप ॥ १ ॥ प्रेत कार्य तेहनुं करी, गयण थयां गत शोक ॥ धर्म कर्म उद्यम करे, याद जे जे लोक ॥ २ ॥ नगर लोक फिट फिट कहे, जाणी नागिला यात ॥ गुण देखाडी नवि शके, श्रीधर गणक साक्षात ॥ ३ ॥ जइ अनेथी गामे गयो, अन्य गणकनी कांय ॥ कन्या नामे छाना अछे, परणावे धरणने ताय ॥ ४ ॥ सुगाळी ने सांभळी, एम

॥ जिनानां परिवेषणादि च तथा पात्रादिशौचक्रिया, श्वशुर्नसननंददेवविनयैः कष्टं वधूर्जीवति ॥ १ ॥
अर्थः– शय्या उपाडवी, घरनुं वासीदुं काढवुं, जल गलवुं, रसोइ करवी, थालीयो मांजवी, दरणुं दलवुं, गाय दोहवी, छाणा करवी, छोकरांओने जमवानुं पीरसवुं, वासणादि धोवानी क्रिया करवी, सासु, पोताना स्वामी, नणंद, देर तेमनो विनय करवो, एटलां कष्टोए करी वहु जीवे छे ॥ १ ॥

पूर्व ढाल ॥ श्रीजिनवचननी रागिणी रे, बोले मीठा बोल ॥ पीहरीयाने पूछतां रे, सुख दुःख न कहे तोल रे जाइ ॥ जू० ॥ ४ ॥ जिम अरहट घट यंत्रिका रे, यष्टि करे खटकार ॥ तिम सासू वहूशुं करे रे, वगर कामें फटकार रे जाई ॥जू०॥५॥ नातुं जातुं वीसरयुं रे, जे कांइ विणटुं होय ॥ वहूनो वांक देखाडती रे, बीजो अवर न कोय रे जाई ॥ जू० ॥ ६ ॥ कर्म शुभाशुभ जे कर्यां रे, उदयें आव्यां तेह ॥ बहु विखवाद न चिंतवे रे, दुःख सहे निज देह रे जाई ॥ जू० ॥ ७ ॥ एक दिन ससरानी मुद्रिका रे, पडि साधी तेणीवार ॥ वहूयें मूकी थानकें रे, करे घरना व्यापार रे जाई ॥ जू० ॥ ८ ॥ पूछ्युं ससरे किहां गई रे, मुद्रा माहारी आज ॥ एहवें वहू आवी दीये रे, वींटी लीयो माहाराज रे जाई ॥ जू० ॥ ए ॥ सासू शोक्य समी जाणे रे, लक्षण देखो स्वाम ॥ वहू रुपें ए चोरटी रे, केम रहेशे घर माम रे जाई ॥ जू० ॥ १० ॥ पूज्यनां भूषण चोरती रे, न गणे कांई शंक ॥ तो शुं अवरनुं दाखवुं रे, पग पग दीसे वंक रे जाई ॥ जू० ॥ ११ ॥ वाघण परें ते लवलवे रे, सीगल परक समान ॥ आल दीये अमलावती रे, जिम तिम लवे नीशान रे जाई ॥ जू० ॥ १२ ॥ हवे ते सुत आव्यो घरें रे, सुणी शंखणी माता वात ॥ रीसें परूहडतो कहे रे, अहो अहो वहू त्रिजात रे जाई ॥जू०॥ १३ ॥ हाथें ग्रही निज नारीनें रे, मारे मुशल प्रहार ॥ शिर फाट्यु शोणित वह्युं रे, कीधो तेणें ए अनाचार रे जाई, वलो गमार भरतार रे जाई ॥ जू० ॥ १४ ॥ श्रीदेवी मन चिंतवे रे, कृतकरणी फल एह ॥ निमित्त मात्र फल पर दीये रे, एहिज धैर्य निःसंदेह रे जाई ॥ जू० ॥ १५ ॥ पीयरें जाई किणहिकें कह्युं रे, दोडी आवी मात ॥ दुःखभर छाती फाटती रे, हा हा ए उतपात रे वाइ ॥ १६ ॥ बोलावे सुखशात । हवे कोण कहेशे मुज मात रे बाइ, ताहारी वाणी मीठी ने वात रे बाइ ॥ बोला० ॥ ए आंकणी ॥ तेडी लाव्या पीयरें रे, कहे जननीनें
नेघ ॥ तुज विण सर्व ...

करती विनय निज हीत रे वाह ॥ चो० ॥ १० ॥
गुणं न सूग ने दीठ ॥ अविनय तो कीधी नथी रे, करती विनय निज हीत रे वाह ॥ चो० ॥ १७ ॥ छगावती बहु गुण रे वाह
ओलंनां नवि आणीयेजी, कहन न दीठूं गुण ॥ पिता बांधव सयणां सवेजी, छगावती बहु गुण रे वाह
॥ चो० ॥ १९ ॥ नामणकां लेछे ताहरांजी, एम कहे नवि परिवार ॥ कोण जिनधर्मनी वातमीजी,
करशे वारोवार रे वाह ॥ चो० ॥ २० ॥ साधु पण एवे शंखिणीजी, पोकारे करी शोर ॥ भरणो बाह्ररस
करेजी, में कीधुं पाप अघोर रे नाह ॥ चो० ॥ २१ ॥ कंइ कहे निर्लज नागिला रे, जुआ बोधी ए गांड ॥
कोइ कहे पति अपराधियोजी, जेहथी आंणयो गांठ रे नाह ॥ चो० ॥ २२ ॥ बहू मूइ तो बूडशे रे, ए
पापिणीथी रे आज ॥ कुइ अचेतन ते सवेजी, लोकमां न रही लाज रे नाह, सागरीथाथी वाज रे नाह
॥ चो० ॥ २३ ॥ एहवे वैद्य कोइ आवीयोजी, कीधो मंत्र प्रचार ॥ जल छांटी सचेतन करीजी, तव हरख्यो
परिवार रे नाह ॥ चो० ॥ २४ ॥ कहे वैद्य पाछ थयुं रे, पण नहीं एहनुं आय ॥ धर्मोपधिने साधयोजी,
जेम आयति गुण थाय रे नाह, कीधां दुष्कृत जाय रे नाह ॥ चो० ॥ २५ ॥ देव गुरु धर्म संभारीया रे,
सरणां चार सुणाये ॥ साधु गुणे आराधनाजी, कहे शुभ भावना भाव रे वाह ॥ चो० ॥ २६ ॥ जीव
खमाव्या अति नलाजी, लाख चोराशी जेह ॥ पापथानक अढार तेजी, वोसरावीजे तेह रे वाह ॥ चो०
॥ २७ ॥ सुकृत तणी अनुमोदनाजी, निंदा दुष्कृतनी कीध ॥ श्री नवकार संभलावतांजी, प्राण त्याग तेणे
कीध रे वाह ॥ चो० ॥ २८ ॥ शुभ ध्याने शुभ संगतेजी, शुभ गति होये निदान ॥ ते पण आगल नासशो
जी, ज्ञानविमल गुरु ज्ञान रे नाह ॥ चो० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ २०९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मातपिताए मोहथी, कीधा बहुत विलाप ॥ जोर नहीं छे मरणशुं, पण ए मोह संताप ॥ १ ॥ प्रेत
कार्य तेहनुं करी, सयण थयां गत शोक ॥ धर्म कर्म उद्यम करे, वाछ जे ते लोक ॥ २ ॥ नगर लोक फिट
फिट कहे, लाणी नागिला वात ॥ गुण देखाडी नवि शके, श्रीधर सायक साक्षात ॥ ३ ॥ जइ अनेथी गामे
परयो, अन्य गणकनी कांय ॥ कन्या नामे उमा अछे, परणावे धरणने ताय ॥ ४ ॥ सुगाडी ने शंखिणी, रूप

क्षण ते गीगाय ॥ गजग पवन थोडे पणां, निठुर चित्त वखाय ॥ ५ ॥ ब्यार हनिडी वादिणी, तारिणी वैर विछाय ॥ भाय मदे पाउछ ठीकरुं, जस गोपन नाजन जाय ॥६॥ कूड कपटनी कोथली, कोइ नथावे दाय ॥ सागु दागी परिकरी, थापणी पकरी न्याय ॥ ७ ॥ प्रत्यक्ष पाप आवी मइयुं, सासु ससरो एम ॥ चिंते मनमां गृह पर्थां, पूग घाक नहीं जेम ॥ ८ ॥ दिन केते परलोकमां, सासु ससरो जाय, हवे क्रमा निःशंकथी, थाउ षडावे गाय ॥ ए ॥

॥ ढाल आठमी ॥

माहरुं मन मोयुं रे माधव देवा रे ॥ ए देशी ॥

॥ राग परजीयो ॥ अयवा प्रजाती ॥

॥ परणनी जाया रे माया बहु करे रे, वश कीधो निज कंत ॥ बाहिर अंतर क्षण नवि ते विना रे, न रहे ते एकांत ॥ १ ॥ जगमांहे जो जो रे मोह विटंबना रे, मोहनी मोहोटी आण ॥ मोहे नडिया ते नारी वश पड्या रे, सुर नर कीध हेरान ॥ जग० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ मंथ्यो ढांढो रे जेम वश फेरीये रे, तेम नचव्यो नार ॥ अवगुण सघळा गुण करी लेखवे रे, माने धन्य अवतार ॥ जग० ॥ ३ ॥ धणियाणी मुख कीधो धणीने कामण्यो रे, जिहां तिहां स्त्री गुण गाय ॥ मित्र अछे तस सोमदेव नामथी रे, कहे तेहने चित्त लाय ॥ जग० ॥ ४ ॥ माहारी नारी रे सारी सहु थकी रे, लक्षणवंती साच्च ॥ साच कहुं छुं एह जोता थकां रे, अवर ते काच ए पाच ॥ जग० ॥ ५ ॥ मित्र कहे सुण स्त्री गुण न वखाणीये रे, नारीनी एहवी नीति ॥ पण ए ताहारी नारी में एहवी लही रे, छे कुलटा नारीनी रीति ॥ ज० ॥ ६ ॥ यतः ॥ प्रत्यक्षे गुरवः स्तुत्याः, परोक्षे मित्रबांधवाः ॥ कर्मांते दासभृत्याश्च, पुत्राश्चैव मृताःस्त्रियः ॥ १ ॥ अर्थः—प्रत्यक्षमां गुरुने वखाणवा, परोक्षमां मित्र अने संबंधीओनां वखाण करवां, आपणुं कार्य थइ रह्या पछी दासनां अने अनुचरोनां वखाण करवां, पुत्र अने स्त्रीनां मरण पछी वखाण करवां.

वसशे नही रे, देशे तन मन चित्त ॥ जग० ॥ ७ ॥ अन्यने चिंते वळी अन्यने जोगवे रे, धरे वळी अन्यशुं राग ॥ नदीपाणी परे ए नीचगामिनी रे, स्यो धरे मिथ्या राग ॥ जग० ॥ ८ ॥ त्रिकरणे नारी ए नहीं ताहरी रे, एहशुं किस्यो रे सनेह ॥ पण ए नारी नवि रहे तुज घरे रे, म करीश इहां संदेह ॥ जग० ॥ ए ॥ यतः ॥ सती रे सती सो हम घर सती, तुम घर सती सो अम घर हती ॥ अमे वसु रहे यहे, तुमे ते घारे यहां, आंले पाडा किसर वाजे, अमे ते घारे त्यां ॥ १ ॥ पूर्व ढाळ ॥ गाम जावाने मिषे रहेजे शहेरमां रे, पछी आवो घरमांहि ॥ आवीने देखाडुं रे करणी एहनी रे, जेम तुं जाणे मांहि ॥ जग० ॥ १० ॥ मित्र वयण सुणी चित्तमां चमकीयो रे, ए किश्युं जाखे वयण ॥ जो नजरे देखुं तो साचुं सहुं रे, सख परघरना जंजेण ॥ जग० ॥ ११ ॥ घर जाइ नारीने धरणो एम कहे रे, जावुं ने परगाम ॥ काम करीने वहेलो आवशुं रे, तुम विण सुनुं धाम ॥ जग० ॥ १२ ॥ जोरे करी स्त्री मनावी नीसर्यो रे, चित्त डुमणो थइ वेग ॥ मित्र तणे घेर चिहु जाना रह्या रे, राति थइ करे उद्वेग ॥ जग० ॥ १३ ॥ तव चमक्यो ते पेखा वेहु जणा रे, तस्कर परे घरमांहि ॥ आवी छमा तव क्षणमां पूंठथी रे, आव्यो जार उमाहि ॥ जग० ॥ १४ ॥ ते पल्यंके बेठो देखीयो रे, धरणो विचारे ए कोण ॥ मज्जन जोजन करीने सूतो सेजमी रे, जोगवे जोग अघूण ॥ जग० ॥ १५ ॥ देखी असमंजस ए रीशे धमधमे रे, जाणे मारुं जार ने नार ॥ वळी चिंते पाप सहोदुं स्त्रीहत्या तणुं रे, लागुं मुज एक वार ॥ जग० ॥ १६ ॥ तेह जणी क्षत्रिय जारने मारतां रे, न कहे कोइ अन्याय ॥ काढी खड्ग आरक्षक सुत हण्यो रे, जानो रह्यो घरमांहि ॥ जाणजो हवे शुं थाय ॥ जग० ॥ १७ ॥ रुधिरे जीनी देखी सेजमी रे, चमकी छमा मनमांय ॥ हाहा ए शुं अकारज नीपन्युं रे, पण देखे नवि कांय ॥ जग० ॥ १८ ॥ जार छपाडुं देखी चिंतवे रे, मार्यो वेरवीए कोय ॥ बांधी पोटली माथे उपाडीने रे, कूपमां नाख्यो सोय ॥ जग० ॥ १ए ॥ धरणो घर बाहेर चिंतवे रे, अहो अहो धीठी एह ॥ क्रिश कुकर्म करे जूठ केहवी रे ॥ धिक् धिक् एहशुं नेह ॥ जग० ॥ २० ॥ निशा वळी घणी जाणी ते छमा रे, लीधो एक कमाड ॥ वस्रां येरूमी सीपक पूडा लापसी रे, तिलवट तेल अथाह ॥ जग० ॥ २१ ॥ नरी कमाड धाहारे ताडुं साचवी रे, चाली चाली निर्जीक ॥ धरणो पण पूठे थयो जोयवा रे, किहां जाशे करशुं निरख्ति ॥ जग० ॥ २२ ॥ पुर बाहिर सम-

खाने गिरिनी गुफा रे, तिहां मंदिर छे एक ॥ तेहमां बेठी थीठी छे बहु जोगिणी रे, प्रणमे तेह विवेक ॥ जग० ॥ २३ ॥ सर्वरा योगिणी तेहमां छे वडी रे, हर्षे बोलावे ताम ॥ रे कमया जले आवी वालिका रे, सीधुं ताहरुं काम ॥ जग० ॥ २४ ॥ ते वलि आपी योगिणी संतोषी घणुं रे, करे विनति तेणी वार ॥ दीधो मंत्र तुमो जे ते में साधीयो रे, तेहनो वलि ए सार ॥ जग० ॥ २५ ॥ हवे जो तरुतरुणनी विद्या दियो रे, तो हुं पति वलि देश ॥ कृष्ण चतुर्दशी रात्रे वहेलां आवजो रे, पहेरी काजल वेश ॥ जग० ॥ २६ ॥ एम कही विद्या वशीकरणी ने चूरणुं रे, आप्यो कमा मंत्रेड ॥ घर आवी तिहां पति पण पाछल आवीयो रे, पण घर लागे वेरु ॥ जग० ॥ २७ ॥ जय विजतस ने अचरिज रौद्र रसे जख्यो रे, पण धरे मनमां धीर ॥ हास्य शृंगार रस छांड्या मनमांहे थकी रे, शांतपणे थयुं शरीर ॥ जग० ॥ २८ ॥ धिक् धिक् कुलनी नारी ते सारी घणी रे, हुं थयो अति मतिमूढ ॥ मित्र पासे जइ युगते ते सवि दाखव्यो रे, करणी जेहनी गूढ ॥ जग० ॥ २९ ॥ मित्र पवित्र तुं माहारो हितकारी थयो रे, माता पिता तुं भ्रात ॥ एह अपाय महोदधियी उगारियो रे, ज्ञानविमल गुरु वात ॥ जग० ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ ३२८ ॥

॥ दोहा ॥

मित्र कहे चूरण थकी, वश करशे ए रंड ॥ धन सवि एहने वश होशे, देशे दंड प्रचंड ॥१॥ यतः ॥ रविचरियं गहचरियं, ताराचरियं च चंदचरियं च ॥ जाणंती बुद्धिमंता, महिलाचरियं न याणंति ॥ १ ॥ जलमज्झे मच्छ पयं, आगासे पंखियाण पयपंति ॥ महिलाण हियय मग्गो तिन्निवि लोए न दिसंति ॥ २ ॥ शब्दथ्य पंडिया सथ्य कुसला, सथ्य लब्ध लरकाय ॥ महिलाण चरिय जाणणे, मुरका अहवा तिरस्काय ॥ दोहा ॥ मित्र कहे निंदा किसी, निवडी निठुर ए नार ॥ मुख दीठे पण एहने, पापी हुवे जमवार ॥ २ ॥ चिंते घर जावुं नहीं, वाल मरण करुं आज ॥ कहे मित्र चिंते किस्युं, जाये जेहथी लाज ॥ ३ ॥ दुशमन शिर पग दीजीए, सयण जे संतोषाय ॥ तेहवुं कारज कीजीए, जेम उन्मत्त कमा दखाय ॥ ४ ॥ घर जाइ धन वश करी, रहेजे अति सावधान ॥ गुरुदत्त आलोयण ग्रही, टाले पाप निदान ॥ ५ ॥ पापी पाप थकी पचे, पहची

न पच्यते ॥ कुमित्रैः पच्यते गजा, पापी पापेन पच्यते ॥ १ ॥ दोहा ॥ मित्र पयाण मनमां धरी, गोढोनो गेह मझार ॥ मानती आवी अति घणुं, भीडी जेम मांजार ॥ ७ ॥ मीठुं बोले पण नवि गमे, सुग्गी लागे घाल ॥ मोढे मचका श्या नणे, जेम भींदल गंधे न्याल ॥ ८ ॥ रणधीर जे कोटवाल गुन, मूतक तणी सुणी वात ॥ काळो कृपथी तेहने, थयो अकारज घात ॥ ९ ॥ शहेरमांहे थयो गळगळो, न गमी कांइ सूज ॥ हाहाकार गङ्गको करे, पण किश्युं न जाणे गुज्ज ॥ १० ॥ घरांणु धन नवि काढीयुं, दाग्गी पणिनुं देन ॥ मित्र घरे जोतन करे, जाणे गयें संकेत ॥ ११ ॥ कोणुं कांजी सीनमी, कोढी राजीए जेम ॥ घरघरणी तेणी परे लजी, पूछी मित्रने प्रेम ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ २४० ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ काया पुर पाटण गोकल्युं ॥ ए देशी ॥

धरण धीरज धरी चालीयो, मढीय धर कापडी वेश रे ॥ देश पुर नगर जोतो फरे, मूक्यो आपणो देश रे ॥ १ ॥ धर्मथी दुरित दूरे टले, कुगति कुसंगति जाय रे ॥ मनह मनोरथ सवि फले, सयण सघलां मिले आय रे ॥ धर्म० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ एक दिन पर्वत पासे रह्यो, दीठलो सिद्ध नर एक रे ॥ विनयथी तस पद वंदीया, पासे बेठो सविवेक रे ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ विनयतणो गुण देखीने, रंजीयो सिद्ध नर तेह रे ॥ तुं कोण किहां थकी आवीयो, नरक गुण तणो गेह रे ॥ धर्म ॥ ४ ॥ वात कही सर्व करगूतनी, जेह थइ तेह तेणी वार रे ॥ दोष पातिक गुज लागीयां, तेहनो कर तुं निस्तार रे ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ सिद्ध चिंते ए मुग्ध जन्तु छे, अन्यथा केम कहे पाप रे ॥ कहे विचारी गुण गुजग तुं, गुजने चिंता ने आप रे ॥ धर्म० ॥ ६ ॥ स्थिर मने बुद्धि सवि उपजे, स्थिर मने धर्म फल थाय रे ॥ अस्थिर मन योगथी नवि होवे, इह परभव फल कांय रे ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ धरण कहे गुझने चिंता किसी, तुमो मला जाग्य वैराग्य रे ॥ सो कहे विद्याधर गुरे शीखवी, तास साधननो नहीं लाग रे ॥ धर्म० ॥ ८ ॥ यतः ॥ चित्तायत्तं धातुबद्धं शरीरं, चित्ते नष्टे धातवो यांति नाशम् ॥ तस्माच्चित्तं यत्नतो रक्षणीयं, स्वस्थे चित्ते बुद्धयः संभवंति ॥ १ ॥ तेह साध्या विना मन तणी, मालरी खटक नवि जाय रे ॥ मांनरे सर्व शाता थये, कांइ अछे तस उपाय रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ तेह विद्याने साधन

तो॥

११ ॥

जोहए बंधन गाढि रे ॥ गुरु मालीने ते दीने नही, सिद्ध नर कहे करी हांसी रे ॥ ध० ॥ १० ॥
मुज मंद रुच माहरे घणी, तेहथी थयुत्र गुणत्त रे ॥ आगले आवो तो ते दीजुं, तेहथी हेमने करो धन्न रे
॥ ध० ॥ ११ ॥ चित्त सुप्रसन्न करो आपणुं, साधीए गुरुदत्त मंत्र रे ॥ परउपकार जे संपजे, तन मन धन ते
पवित्र रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ सिद्ध नर चित्तमां हरखियो, सयण गुणी धरणनां नाम रे ॥ धैर्य औदार्य गुण बहु
लही, अहो अहो एह अभिराम रे ॥ ध० ॥ १३ ॥ मुज अजाणपानो ए विभ्रमे, नवि लगे वचननी सीम
रे ॥ पापभीरु पण तेहथी, संतमां एह निस्सीम रे ॥ ध०॥१४॥ सुरने चिंतित दिये सुरगवी, नरने सुरधेनु ते सेव
रे ॥ विनयथी सर्व सुप्रसन्न हुए, तात गुरु शेठ ने देव रे ॥ ध० ॥ १५ ॥ तुष्ट थइ सिद्ध नर तव कहे, तुं
अठे लइक जाव रे ॥ एम विश्वास नवि कीजीए, होये कलिमां बहु खल जाव रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ मैं तुज
सत्त्व परीक्षा करी, नही मुज रयण हेम काम रे ॥ अज्ञात विश्वास ते नवि घटे, आगे पण सुण्यां चार नाम
रे । ध० ॥ १७ ॥ यतः ॥ बाल्येनालिंगिता नारी, ब्राह्मणस्तृणहारकः ॥ वने पक्षी मुखे काष्ठं, ग्रामे वेसरजी-
वकः १ ॥ हुं तुं निःस्पृह मने धुर थकी, पण जोउं तुं नररत्न रे ॥ कर्ण पिशाची विद्या देउं, करीय कल्याणनुं
यत्न रे ॥ ध० ॥ १८ ॥ एह कल्याण विद्या अछे, गुरुजीए जे मुज दीध रे ॥ योग्य नरने जो आपीए, तो
होये कार्य सवि सिद्ध रे ॥ ध० ॥ १९ ॥ ताहरुं धन रहो तुज कने, माहरे तो नही काज रे ॥ एम कही
पाठ विद्या दिये, तेणे पण मही हित काज रे ॥ ध० ॥ २० ॥ भक्तिथी विधि सवि साचव्यो, साधी विद्या
तत्काल रे ॥ शुं अछे जेह न संपजे, गुरु तणे विनये सुरमाल रे ॥ ध० ॥ २१ ॥ रुडो व्याल वेताल अहि,
विष अरि दुष्ट करे जेह रे ॥ गुरु प्रत्यनीकता तेहथी, अशुभ करे भव तेह रे ॥ ध० ॥ २२ ॥ केटलाएक
दिन तिहां रही, आशीष लही शिर नाम रे ॥ नीसरियो ते देशांतरे, फरे पुर नयर बहु गाम रे ॥ ध०
॥ २३ ॥ कौतुक नवनवां देखतो, शीखतो विविध आचार रे ॥ एक दिन अंबतरु तले रह्यो, काउस्सग्गे
एक अणगार रे ॥ ध० ॥ २४ ॥ मानस सर जिम निर्मलुं, आतमाराम राजहंस रे ॥ उभय पख शुद्ध क्रीडा
करे, सुमति हंसी सदा संस रे ॥ ध० ॥ २५ ॥ निर्मल ध्यान मुकता चूगे, जाणे जड चेतन भाव रे ॥
नायविनाय विवेचन करे, भवजल तरण गुण नाव रे ॥ ध० ॥ २६ ॥ निरखीयो साधु निश्चल मने, वंदीया
तेहना पाय रे ॥ हरख्यो हेजशुं अति घणो, मनमांहे धन्य एम थाय रे ॥

पूंजी करी, आगल धरीय पडूर रे ॥ भगण कहे आज गुरुतर कहणो, दर्शन तुम नमुं चित्त रे ॥ १७ ॥ ॥ २० ॥ कहो हवे धर्मनी देशना, जेहथी जाय गति पाप रे ॥ ज्ञानविमल गुरु सयणनी, सांभलो समकित जाय रे ॥ ४० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ३६९ ॥

॥ दोहा ॥

मुनिवर तिहां उपदेश ये, सरस सुधा अनुकार ॥ जयवंतो जग धर्म छे, त्रिभुवन तणो आधार ॥ १ ॥ दुर्गति पडता जंतुने, धारे तेहिज धर्म ॥ नामधर्म ते जाणिये, जेहथी होवे शिवशर्म ॥ २ ॥ यतः ॥ दुर्गति-प्रपतान् जंतून्, धृत्या धारयते यतः ॥ धत्ते चैतान् शुभे स्थाने, तस्माद्धर्म इति स्मृतः ॥ १ ॥ दुर्गती प्रपतज्जंतून्, धारणाद्धर्म उच्यते ॥ संयमादिर्दशविधः सर्वज्ञः को विमुक्तये ॥ २ ॥ बंधु नहीं तस बंधु छे, नहीं असहाय सहाय ॥ असरणने ए सरण छे, अनाथ नाथ धर्म थाय ॥ ३ ॥ त्रर्युजय सम तीर्थ पर, नमस्कार सम जाप ॥ दया समान को धर्म नहीं, ए त्रिविध त्रिविधे हरे पाप ॥ ४ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र तप, ए गुण चार महंत ॥ ते गुण राजन अरिहंत सिद्ध, सूरि वाचक मुनिकंत ॥ ५ ॥ तेह सम अवर न मंत्र छे, शिव आकर्षण मंत्र ॥ सिद्धचक्र ए सामथी, सिद्धक्षेत्र गिरि तंत्र ॥ ६ ॥ दान दया दम त्रयां अछे, तेह धर्म जग सार ॥ पृथ्वी जगमां अति घणो, जग शोभा विस्तार ॥ ७ ॥ जीव अकाम निज तनु सहा, ऐसे जीव निरधार ॥ इंद्रिय दमन वैराग्यता, धर्म तणो ए सार ॥ ८ ॥ पंच परमेष्ठी स्मरणथी, नव नव आनंद थाय ॥ संपद सवि आवी मले, उभय लोक सुखदाय ॥ ९ ॥ जेह अनंत जिन मुनिगणे, फरस्यो यतो गुप्त चित्त ॥ शिवपद पाम्या जन घणा, करी तन मन एकचित्त ॥ १० ॥ पाप सहस्र गमे कर्यां, ए गिरिथी होये नाश ॥ समकित फरसी जो लहे, ए गिरि तीव्र विनाश ॥ ११ ॥ दानादिक सवि धर्म छे, शिवपद केरां मूल ॥ जो समकित सुरतरु मले, तो होवे नव प्रतिकूल ॥ १२ ॥ सम संवेग निरवेदता, अनुकंपा आस्तिक्य ॥ ए पांचे करी लक्षणे, लखीए समकित शक्य ॥ १३ ॥ गुणहीनजुं पण कोप नहीं, ए सम लक्षण जाण ॥ अभिलाषा जे मोक्षनी, ते संवेग वखाण ॥ १४ ॥ आश्रव त्याग इच्छा धरे, ते निर्वेद कहाय ॥ अनुकंपा दुःखी उद्धरण, कृष्ण नाथ कहेवाय ॥ १५ ॥ दोषरहित जे गुरु छे, ताग गगन पर-

नणी, जोइए कंचन राशि रे ॥ तुज समीपे ते दीसे नहीं, सिद्ध नर कहे करी हांसी रे ॥ ध० ॥ १० ॥ धरण कहे रत्न माहरे घणां, तेहथी बहुल सुवन्न रे ॥ आगले चाहो तो ते दीयुं, तेहथी हेमने करो धन्न रे ॥ ध० ॥ ११ ॥ चित्त सुप्रसन्न करो आपणुं, साधीए गुरुदत्त मंत्र रे ॥ परउपकार जे संपजे, तन मन धन ते पवित्र रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ सिद्ध नर चित्तमां हरखियो, वयण सुणी धरणनां नाम रे ॥ धैर्य औदार्य गुण बहु लही, अहो अहो एह अभिराम रे ॥ ध० ॥ १३ ॥ मुज अजाणपानो ए विभ्रमे, नवि गमे वचननी सीम रे ॥ पापभीरु पण तेहथो, संतमां एह निस्सीम रे ॥ ध० ॥ १४ ॥ सुरने चिंतित दिये सुरगवी, नरने सुरधेनु ते सेव रे ॥ विनयथी सर्व सुप्रसन्न हुए, तात गुरु शेठ ने देव रे ॥ ध० ॥ १५ ॥ तुष्ट थइ सिद्ध नर तव कहे, तुं अछे जडक जाय रे ॥ एम विश्वास नवि कीजीए, होये कलिमां बहु लख जाय रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ में तुज सत्त्व परीक्षा करी, नहीं मुज रयण हेम काम रे ॥ अज्ञात विश्वास ते नवि घटे, आगे पण सुण्यां चार नाम रे । ध० ॥ १७ ॥ यतः ॥ वाद्येनालिंगिता नारी, ब्राह्मणस्तृणहारकः ॥ वने पक्षी मुखे काष्ठं, ग्रामे वेसरजीवकः १ ॥ हुं तुं निःस्पृह मने धुर थकी, पण जोउं तुं नररत्न रे ॥ कण पिशाची विद्या देउं, करीय कल्याणनुं यत्न रे ॥ ध० ॥ १८ ॥ एह कल्याण विद्या अछे, गुरुजीए जे मुज दीध रे ॥ योग्य नरने जो आपीए, तो होये कार्य सवि सिद्ध रे ॥ ध० ॥ १९ ॥ ताहारुं धन रहो तुज कने, माहरे तो नहीं काज रे ॥ एम कही पाठ विद्या दिये, तेणे पण ग्रही हित काज रे ॥ ध० ॥ २० ॥ भक्तियी विधि नवि साचव्यो, साधी विद्या ततकाल रे ॥ तुं अछे जेह न संपजे, गुरु तणे विनये सुरसाल रे ॥ ध० ॥ २१ ॥ स्वजो व्याज येनाख अहि, विष अरि दुष्ट करे जेह रे ॥ गुरु प्रत्यनीकता तेहथी, अशुभ करे नव तेह रे ॥ ध० ॥ २२ ॥ केटलाएक दिन तिहां रही, आशीष लही शिर नाम रे ॥ नीसरियो ते देशांतरे, फरे पुर नयर बहु ग्राम रे ॥ ध० ॥ २३ ॥ कौतुक नवनवां देखतो, शीखतो विविध आचार रे ॥ एक दिन अंबतरु तले रह्यो, काउस्सग्गे एक अणगार रे ॥ ध० ॥ २४ ॥ मानस सर जिम निर्मलुं, आतमाराम राजहंस रे ॥ उभय पक्ष शुद्ध क्रीडा करे, सुमति हंसी सदा संस रे ॥ ध० ॥ २५ ॥ निर्मल ध्यान मुकता चूगे, जाणे जड चेतन भाव रे ॥ भावविभाव विवेचन करे, भवजल तरण गुण नाव रे ॥ ध० ॥ २६ ॥ निरखीयो साधु निश्चल मने, वंदीया तेहना पाय रे ॥ हरख्यो हेजशुं अति घणो, मनमांहे धन्य एम थाय रे ॥ ध० ॥ २७ ॥ काउस्सग्ग पारी

...हु जोग अवनी कीधो रे, एपन मझारे ... र ॥ गयं सुनटमा ... ताजा रे, ते विणु बीजो कोण होये राजा रे ॥ ११ ॥ तव पोहयो धरणो सुणो जाइ रे, चित्त प्रसन्ने प्रश्न वधाइ रे ॥ चित्त दिशा ने मार्गनी चिंता रे, करी पछी जोतुं थइ निश्चिंता रे ॥ १२ ॥ एम कही उइ कर धनने मूकी रे, कह्यो तिहांथी नावइ मूकी रे ॥ अनुक्रमे शत्रुंजय गिरि ते जावे रे, साधुने कहुं तप तपे मन भावे रे ॥ १३ ॥ इत्या वात कथी ते छूटे रे, हवे एहनो संबंध समोटे रे ॥ (इति धरणा संबंध ॥) हवे कुमर मन चिंता पेठी रे, मानुं परजलनी जाणे अंगीठी रे ॥ १४ ॥ चिंतातुर थया ते चार रे, साचुं थाशे तो इयो इहां विचार रे ॥ एक कहे ए शुं ने देव रे, साचुं जूठुं शुं नित्यमेव रे ॥ १५ ॥ एक कहे इहां करशुं उपाय रे, जोशी वाणी जूठी थाय रे ॥ पूर्वे पण एहवी थइ वात रे, बीजलीथी बोहयो नृपनो घात रे ॥ १६ ॥ नमि गृह राजाने आवी रे, गणकनी वाणी जूठी थावी रे ॥ उपमथी शुं काज न होये रे, बुद्धि प्रपंच जो बहुवा जोवे रे ॥ १७ ॥ एक कहे जो सूर्यवतीने रे, सुत थाशे तो हणशुं तेहने रे ॥ एक कहे शुं गर्पल ए छे रे, जिम समये जाणशुं पछे रे ॥ १८ ॥ एम मांहोमांहे करे विचार रे, कुमर जयादिक पेठा चार रे ॥ मंत्री मली ते उठी छेठ रे, नीसरणी तले सुणी गइ ठेठ रे ॥ १९ ॥ हवे विषादे मनशुं रोष्युं रे, सूर्यवतीने जइ मत्रि सोंप्युं रे ॥ रात दिवसने जागे जोवे रे, जेम मंदरगिरि सुणी मन थोवे रे ॥ २० ॥ धरण गणकनी सघली वाणी रे, सखी मुखथी जाणी तेणे राणी रे ॥ कहे सखीने पहेल हवे शुं थाशे रे, केम ए संकट दूरे जाशे रे ॥ २१ ॥ सखी कहे स्वामिनी म करो चिंता रे, जाणिने प्रतिकार करेशा रे ॥ राजाने ए वात जणावो रे, जेम जाणि तेम थाशे ए भावो रे ॥ २२ ॥ धर्म संभारो समकित धारो रे, चिंता करीने जन्म म हारो रे ॥ चिंता जीवित तनुने पीठे रे, चिंताथी सुख न रहे नींदे रे ॥ २३ ॥ सखी वयणाथी धीरज धारे रे, ज्ञानविमल जिन गुरु संभारे रे ॥ कान देइ सुणजो वात रे, आगळ स्या स्या होये अवदात रे ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन राणी पोढीयां, सुख शय्याये जाम ॥ सुपन चार दीठां विशे, ...
राका निशीथ समये भलुं, विधुमंडल उद्दाम ॥ तुरत मांहे ...

तीत ॥ ते आस्तिक्यपणुं कह्युं, ए समकितनी रीत ॥ १६ ॥ धृतियुत तीर्थ प्रजावना, जक्तिराग गुण हेत ॥ जिनशासननी कुशलता, ए जूषण संकेत ॥ १७ ॥ एम मुनि मुखश्री देशना, सुणी धरणो कहे स्वाम ॥ जेम हत्या पातक थकी, बूटुं ते कहो ठाम ॥ १८ ॥ कहे मुनि तुं पुण्यातमा, पापथी पामे शंक ॥ निश्चय तुं लघु कर्म ठे, जाणे तुं निःशंक ॥ १९ ॥ तप किरिया उद्यम करे, जइ सिद्धाचल ठाम ॥ डुक्कर तपने आदरे, पाप होशे सवि वाम ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ३०९ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ सुण मोरी सजनी रजनी न जावे रे ॥ ए देशी ॥

॥ राग केदारो तथा सिंधुओ ॥

मुनिवचन सुणी धरणो चाल्यो रे, समकित पामी मनमां माहाल्यो रे ॥ परउपकारी तुमे जगनेता रे, तुमचा गुण हुं यांचुं केता रे ॥ १ ॥ मुज अपराधीने तुमे तार्यो रे, देशना देइ जनम सुधार्यो रे ॥ प्रणमी प्रायश्चित्त दिले धारी रे, निंदे आतम पाप संजारी रे ॥ २ ॥ तीरथ यात्रा करण उमाह्यो रे, अनुक्रमे बहु जनपद अवगाह्यो रे ॥ नयर कुशस्थल वाटे दीठुं रे, जोतां लागे मनमां मीठुं रे ॥ ३ ॥ देव जुहार्या सद्गुरु वांद्या रे, साधर्मिक जन देखी आनंद्या रे ॥ ते हुं धरणो नामे गणीयो रे, ए महारो अवदात में जणीयो रे ॥ ४ ॥ सिद्ध प्रसादे नैमित्तने जाणुं रे, वात त्रिकालनी केतिक जाणुं रे ॥ मुजने सहुए नैमित्तिक जाणी रे, बोलावे ठे करणी दाखी रे ॥ ५ ॥ एम निसुणीने नृपति कुमारा रे, चित्त चमकीने करेय विचारा रे ॥ पूछीजे हवे जावी वात रे, राज्यजार केहने देशे तात रे ॥ ६ ॥ जय मुख्य करीने फल हाथे लेइ रे, नाणादिक बहु जक्ति करेइ रे ॥ जाखे जय हवे गणकना राजा रे, अम चारमां कोण होशे राजा रे ॥ ७ ॥ जोइ निमित्त ते शिर तव धूणे रे ॥ जेम चिंतातुर शिर नख खूणे रे ॥ मुखे कहे अनिष्ट ए शुं पूछ्युं रे, राज्य ते तुमने नहीं एम सूच्युं रे ॥ ८ ॥ तुम चारेमां राज्य न थाशी रे, एह कहुं तुं प्रश्न विमासी रे ॥ तव जय बोल्यो कोण ते थाशे रे, अमो जीवतां शुं यमथी जाशे रे ॥ ९ ॥ नव परिणित ठे सूर्यवती देवी रे, तस सुत थाशे ते राज्य लहेवी रे ॥ कटुक वयण एम गणकनुं निसुणी रे, [illegible]

तुं शुं जाणे अवनो कीडो रे, वचन प्रहारे एहने वींध्यो रे ॥ गर्व सुजटमां जग जे ताजा रे, ते विणु बीजो कोण होये राजा रे ॥ ११ ॥ तव बोल्यो भरणो सुणो जाइ रे, विण मगधे प्रश्न वधाइ रे ॥ विण क्रिया जे मार्गनी चिंता रे, फरी फरी जोशुं थइ निश्चिंता रे ॥ १२ ॥ एम कही उठ पाव पतने मूकी रे, छक्यो तिहांथी नायक चूकी रे ॥ अनुक्रमे शत्रुंजय गिरि ते जावे रे, साधुये कर्युं तप तंत्र मन भावे रे ॥ १३ ॥ हत्या पातकथी ते छूटे रे, एवो एहनो संबंध समोटे रे ॥ (इति भरणा संबंध ॥) एवे कुमर मन चिंता पेठी रे, मानुं परजकनी जाणे अंगीठी रे ॥ १४ ॥ चिंतामग्न थया ते चार रे, मानुं पाशे नो हवो इहां विचार रे ॥ एक कहे ए शुं जे देव रे, मानुं जुठुं शुं नित्य-मेव रे ॥ १५ ॥ एक कहे इहां करशुं उपाय रे, जोवी वाणी जुठी थाय रे ॥ पूर्वे पण एहवी थइ वात रे, बीजवीथी बोल्यो नृपनो घात रे ॥ १६ ॥ नवि गृह राजाने थावी रे, गणकनी वाणी जुठी थावी रे ॥ उद्य-मथी शुं काम न होये रे, बुद्धि प्रपंच जो चतुरा जोवे रे ॥ १७ ॥ एक कहे जो सूर्यवतीने रे, सुत थाशे तो हणानुं तेहने रे ॥ एक कहे शुं गर्भश ए जे रे, जिम समये जाणशुं पछे रे ॥ १८ ॥ एम मांहोमांहे करे विचार रे, कुमर जयादिक बेठा चार रे ॥ मंत्री मळी ते छानी हेव रे, नीसरणी तळे सुणी गइ छेव रे ॥ १९ ॥ हवे विचारे मनशुं रोप्युं रे, सूर्यवतीने जइ मवि सोंप्युं रे ॥ रात दिवसने जागे शोने रे, जेम मंदर-गिरि सुणी मन थोने रे ॥ २० ॥ भरण गणकनी सघळी वाणी रे, सखी मुखथी जाणी तेणे राणी रे ॥ कहे सखीने एहेन हवे शुं थाशे रे, केम ए संकट दूरे जाशे रे ॥ २१ ॥ सखी कहे स्वामिनी म करो चिंता रे, नाथिने प्रतिकार करंता रे ॥ राजाने ए वात जणावो रे, जेम नाथि तेम थाशे ए नावो रे ॥ २२ ॥ धर्म सं-चारो समकित धारो रे, चिंता करीने नय म हारो रे ॥ चिंता जीवित तनुने पीडे रे, चिंताथी सुख न रहे नीडे रे ॥ २३ ॥ सखी वयणाथी धीरज धारे रे, ज्ञानविमल जिन गुरु संभारे रे ॥ कान देइ सुणजो वात रे, आगळ स्या स्या होये अवदात रे ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन राणी पोढीयां, सुख शय्याये जाम ॥ सुपन चार दीठां तिसे, निशि निद्राये ताम ॥ १ ॥
राका निशीथ समये पछुं, विधुमंडळ उद्दाम ॥ तुरत मांहे फरी आवीयो, निश्चळ तेणे ठाम ॥ २ ॥ विकस्या

पत्र कोण्डीक नरे, दीपुं देखी हाय ॥ संकुचित थयुं तुरत पणे, विकसित थयुं देखी हाय ॥ ३ ॥ चैत्य सुधा धवलित कर्युं, पण वृष्टि मेघुं थाय ॥ एम जाणी ते राणीये, मणिमय कर्युं उद्दराय ॥ ४ ॥ मुकुलित छत्र गुणद्दिक नरे, राणी शिर धरीयुं आय ॥ ते विकसित थयुं आफणी, ए चार सुपन समुदाय ॥ ५ ॥ जाग्या राणी ततक्षणे, देखी सुपनां चार ॥ पति आगल परगटपणे, जाखे विनयथी सार ॥ ६ ॥ नरपति मन हरख्यां घणुं, सुपन अर्थ चित्त धार ॥ कहे राणीने सुत होशे, निर्जित देव कुमार ॥ ७ ॥ धर्म कल्पतरु फूलियो, फलशे गदल सम्वाय ॥ सोजागी महिमानिलो, सुत होशे सुखदाय ॥ ८ ॥ राणी पण हरखी जणे, अवितथ गामि वयण ॥ वाहालुं ने वैद्ये कह्युं, विकस्यां तन मन नयण ॥ ए ॥ हवे प्रजात समये थये, नृप आव्यो आस्थान ॥ बेठा बहु जन परिवर्या, करतां गुणी जन ज्ञान ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ ४२३ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ वीरमाता प्रीतिकारणी ॥ ए देशी ॥

॥ नृपति आदेश दीये मंत्रीने, सुपन पाठक तेडो ॥ जेह अष्टांग निमित्त लहे, कहे ज्योतिष छेडो ॥ १ ॥ धन धन धर्म सुरतरु तणो, महिमा अछे महोटो ॥ सकल मनवंछित फल फले, मानुं अमीअ रस लोटो ॥ धन० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ दिव्य उत्पात अंतरिक्ष छे, जौम अंग सरसत्त ॥ लक्षण व्यंजन जाणीये, एह अष्टांग निमित्त ॥ ध० ॥ ३ ॥ दिव्य ते नगर गांधर्वना, उल्का प्रमुख उत्पात ॥ अंतरिक्ष वादल वृष्टि मुख, जौम जूमिकंप निर्घात ॥ ध० ॥ ४ ॥ अंग फुरकणनी चेष्टा करी, स्वरनादे पंखी वाणी ॥ लक्षण कर पद आकृति, व्यंजन मशी तिलकथी जाणी ॥ ध० ॥ ५ ॥ एह अष्टांग निमित्तनो, करे त्रिविध नियेमो ॥ सूत्रार्थ वार्त्तिक जेदथी, एहवा जाणने तेमो ॥ ध० ॥ ६ ॥ तेम्िया गणक आदर करी, देइ मान सत्कार्या ॥ सुपन चारे तिहां दाखीयां, तेणें अर्थ चित्त धार्या ॥ ध० ॥ ७ ॥ चंद्रमंमल चली स्थानथी, करी स्थानके आव्युं ॥ सुत कलावंत होशे सही, स्थानांतरे एम जणाव्युं ॥ प्रथम सुपनार्थ ए जाव्यो ॥ ध० ॥ ८ ॥ विकच पंकज संकुचित थइ, देखी कर थकी विकस्युं ॥ थइ वियोगी सयोगी होशे, बीजा स्वप्न फल ए कहेशुं ॥ ध० ॥ ए ॥ छत्रथी एक छत्री नृपति, होशे आण अलंम ॥ तृतीय सुहणा फल जाणजो, (न्यायवंत जाग्य शोजा घणी,) तेज,

प्रताप चंद ॥ प० ॥ १० ॥ शेठ गणिमय सदा निर्मलुं, कह्युं नाम फल एह ॥ धर्मकृत जाचित सुत होशे,
भोग्या रयण फल तेह ॥ प० ॥ ११ ॥ एह सामान्य फल दाखीयुं, परं नाथ गंभीर ॥ एहना जे नृप अति घणा,
कहो कोण सांके धीर ॥ प० ॥ १२ ॥ गणक संतोषिया घर गया, परितोष बहु आणी ॥ तेह मनि अर्थ राजा
कहे, राणी हर्ष हैये आणी ॥ प० ॥ १३ ॥ अनुक्रमें गर्भ वधतो हते, थया मास जब तीन ॥ चंद्रपान डोहलो
उपनो, न मीले तेणे दीन ॥ प० ॥ १४ ॥ राणी दीठी नृपे दूबली, जेम शारदनो सिंधु ॥ पूछीयो तेणे तिहां
दाखियो, दुष्ट दोहद जेम अंधु ॥ प० ॥ १५ ॥ राये ते मंत्री जणावीयो, कहे करं छुं उपाय ॥ मनोरथ
राणीनो पुरशुं, एहनी वात छे कठणी, जो तुम सुपसाय ॥ प० ॥ १६ ॥ दूध नवगुण धेनु तणुं, मीला संयुत
कीधुं ॥ रजतना थाल मांहे धर्युं, कर्युं तृणा पर सिंधुं ॥ प० ॥ १७ ॥ एक नर उपर राखीयो, तस ढंकण
काज ॥ पूर्णिमा मध्य रात्रे तिहां, आणी राणी करी साज ॥ प० ॥ १८ ॥ गुहनी वात कहो कोण
लहे, मनि बुद्धिनी लील ॥ एम करी चंद्रमा पाइयो, सुधा रसना कल्लोल ॥ प० ॥ १९ ॥ नृपति राणी बेहु
हरखिया, अहो मंत्री प्रपंच ॥ श्रीचंद्र नाम इति थापशुं, जय जगमांहे संच ॥ प० ॥ २० ॥ नाम श्रीचंद्रनी
मुद्रिका, करावी तिहां राग्ये ॥ सफल होशे मनोरथ सदा, देशुं नाम बहु भाग्ये ॥ प० ॥ २१ ॥ शिष आनंद
दंपति ताणे, वध्यो तेम सिपुवेला ॥ पण जगमांहि माये नहीं, जुओ पुण्यनी लीला ॥ प० ॥ २२ ॥ पुण्य
समाधि दिन निर्गमे, रमे जेम भ्रमर मल्लिे ॥ नयनथी नयन मेलावके, दीये अति घणुं हरखे ॥ प० ॥ २३ ॥
हवे प्रतापसिंह जे नरपति, एकदा क्रीडया काज ॥ चितवे रमण उद्यानमां, लेइ सैन्यनो साज ॥ प० ॥ २४ ॥
एहवे तुरत तिहां आवीया, बुंबीया जण घणा फेद ॥ पूछीयुं शुं छे ते कहे, सुणो वात श्रुति देइ ॥ प० ॥२५॥
नैऋति नीरधिने तटे, कणकोट छे नाम ॥ रत्नपुर नाम वली जाणीये, एहवां दोय छे गाम ॥ प० ॥ २६ ॥
महा मदमत्त तेहना धणी, बढ एक सांग्रामांहि ॥ वायुने वह्नि मली जेम दहे, तेम दुःख दीये प्रांहि ॥ प०
॥ २७ ॥ देश पुर ग्रामने पीडता, जेम नदीय प्रवाह ॥ शंक ते कोइनी नवि गणे, कह्यो विषम तेणे राह ॥ प०
॥ २८ ॥ तेह मकर जणावया, अमो आव्या आज ॥ बुंबारव तेहनो ए करं, हवे राज्यने लाज ॥ प० ॥२९॥
ते सुणी नृपति अमरख भरी, कहे सैन्यने वाणी ॥ पर जइ गजा यार्ड सुमे, सजो रिपु तिल घाणी ॥ प०
॥ ३० ॥ केशरी अपर मद नवि सहे, तेम शूर हुंकार ॥ सहे नहीं मानथी नवि गणे, वली विषम प्रहार ॥ प०

॥ ३१ ॥ आप घरे आवीयो वेगथी, रणतूर वजावे ॥ प्रयाणनी भेरी भांकारवे, अरियण त्रास पावे ॥ ध० ॥ ३२ ॥ जश्थ अंतःपुरे दाखीयो, प्रिये सूर्यवती देवी ॥ विजय यात्राये जावुं थयुं, अकस्मात् थइ एहवी ॥ ध० ॥ ३३ ॥ सुख समाधे तुं इहां रहे, करी शांत मन वारु ॥ वेगे रिपु जीतीने आवशुं, अछे चित्त तुज सारु, जेम करहलाने मन मारु ॥ ध० ॥ ३४ ॥ सा कहे स्वामी हुं आवशुं, तुम साथे धरी माया ॥ प्रभु तुम विण कहो केम रहुं, जेम कायाने छाया ॥ ध० ॥ ३५ ॥ नृपति कहे तें साचुं कह्युं, पण गर्भ छे प्रौढ ॥ तेणे करी तेम्बुं नवि घटे, रणनी वात छे गूढ ॥ ध० ॥ ३६ ॥ एम सुणी गदगद स्वरे कहे, सवि कुमर वृत्तांत ॥ सेंहिय सखी मुखथी लह्युं, वली नैमित्तक वच कंत ॥ ध० ॥ ३७ ॥ तेह जाणी मुजने घटे, तुम साथे आवेवुं ॥ सुख दुःख सर्व माहारे हवे, तुम साथे सहेवुं ॥ ध० ॥ ३८ ॥ एम सुणी आयति मति करी, कहे दुःख मत धरजे ॥ सर्व शुन कार्य थइ आवशे, ज्ञानविमल मति करजे ॥ ध० ॥ ३९ ॥ सर्व गाथा ॥ ४६२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे राजा वेसी तखत, तेड्या चारे कुमार ॥ कुलमंडण आवो तुमे, अम साथे म लावो वार ॥ १ ॥ मनमांहे एम नृप चिंतवे, जो साथे आवे एह ॥ सिंह परे निर्भय रहे, जेम गिरि गव्हर तेह ॥ २ ॥ एम जाणी आग्रह करे, एक पंथ दो काज ॥ पण जेहने मन आमलो, ते केम वधारे लाज ॥ ३ ॥ मांहोमांहे तेणे परठियो, करवो एह जवाब ॥ इहां पण काज होये आपणुं, वली जावुं माने वाप ॥ ४ ॥ दुर्जन छंछो नीरघट, ए वेहु एक सरूप ॥ माथे चढावी राखीये, खल खल न छोमे रूप ॥ ५ ॥ कुमर करी मन मंत्रणो, जय मूकी निज गेह ॥ सज्ज थइ त्रण आवीया, सन्नाहित थइ देह ॥ ६ ॥ करी प्रणाम ऊजा रह्या, लेइ निज परिवार ॥ कहे राजा जय किहां अछे, थाशे केती वार ॥ ७ ॥ ते कहे ज्वरनी मांधता, तेणे हेते कृश भीस ॥ अमो जोरे पाछा वालीया, हवणा कांइक ढील ॥ ८ ॥ वली नृपे तेमावीयो, जयने वार बे चार ॥ पण गुरु टालो करी रह्यो, कही अनेक विचार ॥ ९ ॥ राजा पण उत्सुक थकी, कार्य तणे परवश ॥ जाणवुं पण नाणवुं मने, न टले जेह अवश्य ॥ १० ॥

॥ [illegible] आरती ॥

॥ निशानी मेरा दूर रही ॥ ए देसी ॥

॥ अति उत्सुक सुर आवीयो, गावे जीवो री सेवा सागुराय जो ॥ जीपुर जाणे जतपियो, सुन साकुने री
सुर आरती जाय के ॥ १ ॥ जाती जाय दशे नहीं, जो कीजे री नहीं कोदी उपाय के ॥ ए उपचार गगन
अडे, दांवे कारन री जिहां कारे सहाय के ॥ जा० ॥ २ ॥ सुन अनिविज्ञा समाणजी, मंगे पाग्यो री अनु-
जिणां शीर के ॥ नद सुणे साहुने जालीया, मन जीवण री जाणे परी शीर के ॥ जा० ॥ ३ ॥ सजा थइ रम-
रंग रली, जिहां गांदे री दाहण रम सुण के ॥ दांय विपुर्णे थइ करे, रुपी रुपचुं री गजे गज सुणे सुण
के ॥ जा० ॥ ४ ॥ गली लक्ष घरनी घजु, सुनी पुंठ री सुखनी सुरंगिण मां ॥ सालीसाजन जड़े जथ, सुन ध्याने
री थाये रस रेत मां ॥ जा० ॥ ५ ॥ सुन गोतम करतो थको, राजा पद री पाम्यु जिहां हार मो ॥ सेती
पद अति आदरे, जालीजे री आरता गाणे कुमार मो ॥ जा० ॥ ६ ॥ गज फौजे गे परता, रिपु सेना री
सनी अंगीकार मो ॥ जेन गोरदे लीर वीरनि, सखियो सेन री जेम देवगुरार मो ॥ जा० ॥ ७ ॥ काक नासा
गानी गया, एक मठ ने री पीजो महाराज मो ॥ आप ताना जड़ देवीजे, सहीला कुमर री आज्ञा महाराज्य
मां ॥ जा० ॥ ८ ॥ दांतादम नयणे करी, पड़ी गोरी री दोरीहो ठाउ मो ॥ दश दहाए चडे करे, सागे गेते री
लेहुने लही काज मो ॥ जा० ॥ ९ ॥ दाहण रम सांडुं सड़े, कस्तां विजयने री जिहां पारमहार मो ॥
सुरजीतण थाये देवीजे, पाइ ध्याग्यो री सुणे परिवार मो ॥ जा० ॥ १० ॥ ते पण सदे सतिसुन कल्पो,
देवीजे हां सतावसीक राग मो ॥ लहुने मठ हिर ठेढिगुं, महासेना री मन दशा सिद्धि जाय मो ॥ जा०
॥ ११ ॥ जगदर थायो सुर हिवणी, मन सांजो री महाराज ठेठ जीव मो ॥ रतपुरे नगरे गयो, वीर सेना री
पद जीत स्वीय मो ॥ जा० ॥ १२ ॥ नवलीर सुण जिहां जड़, लेहुनी री वणवोट पुर राज मो ॥ आपी सोग
हेत पहिजो, पस जीवों री महाराज आगी पाज मो ॥ जा० ॥ १३ ॥ जिहां सासुर सदे जीवतां, आपादिके
री पनी दई अपार मो ॥ सुन मागिरे जिहां रहे, दने सुणजो री पाउल अधिकार मो ॥ जा० ॥ १४ ॥
पनी राजा पारता गजी, सुणंगनी री पंदे सगान सुजन मो ॥ जिनवाणी मन जाणी, पांसे सहि री [illegible]

नंदन गुण तो ॥ जा० ॥ १५ ॥ एक दिन ग्रह गर्भे पेखीया, परभारे हो नट आयुध धार तो ॥ सेंडी सखीने कहे जुओ, कोण वेदना हो अहे किस्यो विचार तो ॥ जा० ॥ १६ सेंडी गर्भीये पूछीयुं, कहे जयनां हो अमे छुं गुण नार तो ॥ देवी गर्भ गमण जाणी, मूरपा छे हो अमने निरधार तो ॥ जा० ॥ १७ ॥ एम अणमोजग वचन सुणी, सखी आवे हो कहे राणी काज तो ॥ ए विपरीत वयण सुणी, कहे देवी हो केम करवुं आज तो ॥ जा० ॥ १८ ॥ सेंडी कहे निमित्तिये, जे बोल्युं हो ते अलिक न थाय तो ॥ धर्मबले विघ्नुं सघुं, परने चिंतवीये हो ते आपने थाय तो ॥ एवो अहे वळी लोकोनो न्याय तो ॥ जा० ॥ १९ ॥ जड-कथी तेणे वेदनुं, वचन मान्युं हो मनमां विषवाद तो ॥ उतावळथी पाळीया, साहसथी हो होवे प्रासाद तो ॥ जा० ॥ २० ॥ आपदे धर्म न छोमीये, एम जाणी हो मनमां धरी धीर तो ॥ कार्य करे सवि आपणां, सखी राणी हो वळी जयना वीर तो ॥ जा० ॥ २१ ॥ द्रोही चिंतित नवि फळे, तस कीधा हो थया व्यर्थ उपाय तो ॥ धर्म विना इच्छित नहीं, जेम अंकुर हो विणु मेह उपाय तो ॥ जा० ॥ २२ ॥ यतः व्याघ्राणां च गजानां च, सर्पाणामरीणां तथा ॥ मनोरथा न सिध्यंति, तेनेदं वर्तते जगत् ॥ १ ॥ पूर्व ढाळ ॥ कुळ अनुचित ए चिंतवे, द्रोहीनुं हो ए खेहशे पाप तो ॥ एम मन थिर करो सखी कहे, किस्यो न करवो हो इहां करशो जयाप तो ॥ २३ ॥ सुख समाधे दिन जोगवे, एम करतां हो थया पूरण मास तो ॥ शुज दिन शुज वेळा वळी, दिशि निर्मळ हो शुज वायु सुवास तो ॥ जा० ॥ २४ ॥ शुज रिख योगे चंद्रमा, शुज ग्रह वळी हो आव्या उच्च गम तो ॥ दृष्टिगोचर पण शुज थयो, अंशे अंशे हो वळीया शुज ताम तो ॥ जा० ॥ २५ ॥ मध्य रयणीने अवसरे, अपरीकृत हो दीपादिक कांति तो ॥ जेम प्राची रविने जणे, तेम प्रसवे हो पुत्र रत्न महांत तो ॥ जा० ॥ २६ ॥ हर्षजळे राणी हीयमुं, मानस सर हो अति जरियुं ताम तो ॥ सुत राजहंस रमे तिहां, निरखी निरखी हो रोमांचित तनु धाम तो ॥ जा० ॥ २७ ॥ लक्षण व्यंजन गुण युत, सोनागी हो जन काम सरूप तो ॥ पूर्णचंद्र सम वदन छे, फुल्लराजीव हो लोचन अति रूप तो ॥ जा० ॥ २८ ॥ अष्टमी शशी सम जाळस्थळ, अकळंकित हो शुजगांग प्रचार तो ॥ मनुं अश्विनी सुत सुर थकी, आवी रह्यो हो पत्रकी सार तो ॥ जा० ॥ २९ ॥ सौम्य गुणे विधु सारिखो, निज तेजे हो जीत्यो जेणे जाणु तो ॥ अधर अरुणनी भैगत अछे, धीर धर्मे हो मुरु गरे गुणखाण तो ॥ जा० ॥ ३० ॥ सकळ

कहानो गुरु अछे, कवि नायक हो लखशे गुणगेह तो ॥ आया गुन परे अरिगणे, नव मद् नग हो निरग धरी नेह तो ॥ ३१ ॥ बालकने करी करी जुवे, धारे निरखे हो जयना नटबगे तो ॥ दाकण जेम नट मारिया, हाथ जोडी हो राया कर्मना सगे तो ॥ जा० ॥ ३२ ॥ हर्षे विषाद नयानका, दिक रंगनो हो थइ शंकर ठाम तो ॥ ज्ञान विमल सुदिशा थकी, होशे जगमां हो हवे वधती माम तो ॥ जा० ॥ ३३ ॥ सर्व गाथा ॥ ५०५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मेंढी प्रमुख सखी प्रत्ये, कहे गदगद स्वर वाण ॥ सखी जूओ आज माहरा, कर्म तणा परिमाण ॥ १ ॥ नृपति पण हवे परे नहीं, विश्वर्ग नहीं कोय ॥ धाइ दीये वधामणी, तेहथी समय न होय ॥ २ ॥ धिग् धिग् माहारा कर्मने, दुःखी शेखरी नूत ॥ गीत नाद अलगां रह्यो, ए जयना यमदूत ॥ ३ ॥ वंश विभूषण तिलक सम, ए सुत राखुं केम ॥ ए सुतने शुं करी, पाछा वालुं जेम ॥ ४ ॥ देखी दुःखे दुःखीयो, थयो सखी परिवार ॥ राणीने मूर्च्छागमे, शीतल वायुने वारि ॥ ५ ॥ कहे सखी चिंता मत करो, चिंतायें वाधे व्याधि ॥ बुद्धि मिटे तनुबल घटे, चिंता महा उपाधि ॥ जाये जेहथी समाधि ॥ ६ ॥ दुःख धरे हवे शुं होये, कीधां आप्यां कर्म ॥ आपण आपे त्रूटीये, संभारो श्रीधर्म ॥ ७ ॥ ए सुतने जाम्ये करी, जाशे सर्व अपाय ॥ जे मनोरथ सुरतरु फल्यो, तो फलशे मोरी माय ॥ ८ ॥ दूधपयोधर जेणे दह्युं, उदरे वध्यो दस मास ॥ अदृष्ट थयो नवि संपजे, किजे किस्यो विमास ॥ ९ ॥ एम कही नवराबी घणुं, शोभावी शणगार ॥ श्रीचंद्र नामे भूषित, पहेरावी तेणी वार ॥ १० ॥ सखी मेंढी सहुने कहे, अजितय शक्रनो पुत्र ॥ जयंत परे वधु सुभग छे, सरखी सांई घरसूत्र ॥ ११ ॥ सर्व रत्ननुं सार मनुं, अथवा पिंड नवनीत ॥ नृप घरे कल्पद्रुम फल्यो, चारु चरण विनीत ॥ १२ ॥ गुप्त करीने राखीयें, करशो एह विचार ॥ अज्ञात समय ए जायशे, लेशे ए जयकुमार ॥ १३ ॥ तिहां पण किश्युं न चालशे, दुमणां जो निर्वाघ ॥ एहवुं कांइ कल्पीयें, जे कुशमन फके नृपे हाथ ॥ १४ ॥ एक सखी धाई एम कहे, सुत छानो रहे केम ॥ तो पछी सघळुं जाणशुं, समजीनुं जेम तेम

॥ १५ ॥ अपरा कहे एम नवि घटे, न रहे घरमा बाल ॥ घर पेसतां कोण वारशे, कोइ नथी रखवाल ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ ५२१ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ राजकुमर वर बाइ जलो जरतार ॥ ए देशी ॥

॥ सूर्यवती कहे सखी प्रत्ये, तुं अछे बुद्धि निधान ॥ प्रच्छन्न सुत ए केम रहे, कहे एहनुं रे निदान ॥१॥ मेरी बहेनी कहे कांइ एह उपाय, छुशमन जय दूरे जाय ॥ मे० ॥ चिंतित आपणुं थाय ॥ मे० ॥ ए आंकणी ॥ बादल छायो यद्यपि, होये सीत धाम गयण ॥ तोहे पण तम आवरे, तिम ए कुमरना नयण ॥ मे० ॥ २ ॥ राति थोमी पाछली, करवुं हजी बहु काम ॥ बुद्धि तो उपजी नथी, केम रहेशे रे ते आपणी माम ॥ मे० ॥ ३ ॥ पुण्यथी सुत मुख पेखीयुं, वली पुण्यनो छे ए सहाय ॥ कहे सखी मुजने उपजे, लाधो अछे रे उपाय ॥ मे० ॥ ४ ॥ घर थकी बाहेर मूकीये, शुज गामे एह कुमार ॥ तो छुशमन दाव फावे नहीं, जाणे तूठो रे किरतार ॥ मे० ॥ ५ ॥ घर बाहेर चाकर रह्या, ते पूछे तो शी वात ॥ दाखीये केम सुत राखीये, कोण करे रे तिहां पक्षपात ॥ मे० ॥ ६ ॥ कहे सखी घरनी बाटिका, तिहां कुसुमना पुंज ॥ शयन शय्या कारणे, मालाकारणी छे रे तेह प्रयुंज ॥ मे० ॥ ७ ॥ प्रजाते लेवा आवशे, ते पुष्पना समुदाय ॥ ते मांहे निधि परे घालीये, ए सुत रखने रे चिंत्यो एह उपाय ॥ मे० ॥ ८ ॥ सूर्यवती राणी कहे, ए बारु बारु विचार ॥ जामणे हुं तुज बुद्धिने, माहारी तुं रे जीवन आधार ॥ मे० ॥ ए ॥ निशा पश्चिम यामथी, उदयाद्रि आव्यो सूर ॥ मानुं नृपसुत मुख पेखवा, प्रह बाज्यां रे हवे मंगल तूर ॥ मे० ॥ १० ॥ तुरतथी मालणी आवीने, सखी करे तेह विचार ॥ एक अंजन आंजे आंखमी, एक ठवे रे कंठे पुष्पहार ॥ मे० ॥ ११ ॥ एक करे कुंकम रोलशुं, रचे आकृति अतिहि निलाड ॥ एक करे चंदन छांटणां, एक पूरे रे मननी रुहाड ॥ मे० ॥ १२ ॥ एम सखी सघली सुंदरी, मली करे नव नवि जक्ति ॥ नजरथी अलगो नवि करुं, शुं कीजे रे एहवी कर्मनी गति ॥ मे० ॥ १३ ॥ किम रहेसो ए एकलो न्हानडो, मूकतां न वहे हाथ ॥ जूख्याने मोदक मले, नवि मूके रे तेम प्रही रहे बाथ ॥ मे० ॥ १४ ॥ एक आलिंगे मस्तके, एक धरे हृदय मकार ॥ एक कीये [illegible]

हे माहारा प्राण ॥ एकडी एमणा हुं आधीन, गुणरागी
नीनीकार ॥ मे० ॥ १५ ॥ ... पुत्र फरूकमां त्वी,
रे माहारा जीवन प्राण ॥ मे० ॥ १६ ॥ एम चिंतवी पुत्र वारीया, तेमाटी तेणी वार ॥ त्नानकंवडे
वड जाते रे जट आगत वार ॥ मे० ॥ १७ ॥ वनमाटिकामांहे जड, मही छायशुं ते पाड ॥
नीटियो, कुमुमकुंजमांहे उरे ते पाड गुगुमाड ॥ मे० ॥ १८ ॥ सुनट शंका पारता, नीकडे गुं ततकाड ॥
आवी फरी मुजने कहे, एम कही नीनवे रे कर देइ कपाड ॥ मे० ॥ १९ ॥ गिंहायवोके जोयती, मुजने
पारोपार ॥ आवीने मयणुं कनु, ययुं मीतक रे ते तेणी वार ॥ मे० ॥ २० ॥ मनु नंदनानन नेत्रया, उगीयो
रवि परनात ॥ इसे जय सुजट पण आवीया, पाग परमां रे कहे कहो सुत वात ॥ मे० ॥ २१ ॥
जोयो पण नवि देखीयो, किंनि प्रगवनी परमांह ॥ पूछे तव मही छोकने, शुं जनयुं रे देवीये
उच्छाह ॥ मे० ॥ २२ ॥ मही उत्तर नवी दीये, तेणे जड जणाव्युं नूप ॥ सुत आवी जय सुते,
नवी दीनुं को कोइ प्रगय नकूप ॥ मे० ॥ २३ ॥ नटने जोयराये नंयरा, पेटी प्रमुख पशु ताम ॥
अंत मात्र किहां नवि लगो, गेह पाम्यो रे जय तेणे ठाम ॥ मे० ॥ २४ ॥ जय कुमर कहे मंत्री प्रत्ये, शुं
पशु एह अनिष्ट ॥ जग मात्र देखाडी जिगें, मनमांहे रे देखी थया संतुष्ट ॥ मे० ॥ २५ ॥ जयने
पडे अमारसा, मनोरथ रखा मनमांहि ॥ सुत सुता तो रखो वेगला, सुता शोधत रे देवी हरखित तांहि
॥ मे० ॥ २६ ॥ जय हरख पाम्यो तेहनो, परिवार देखी म्लान ॥ चित्तमांहे एणीपरे चिंतवे, गिण औषध रे
गयो व्याधि अमान ॥ मे० ॥ २७ ॥ लोक उजाये हाहा करे, मनमांहे दुःखे अमात ॥ पुरमांहे उत्सव
नवनवा, अमेंद रे गमगो दिन रात ॥ मे० ॥ २८ ॥ शुं शुं जमाय हवे थायशे, जणाय आंगण आज ॥ नी
गणगणी मंत्रनुं, हाहा देवे रे शुं कीधुं अकाज ॥ मे० ॥ २९ ॥ पिशुन दीयडुं किनदीशुं, दीधुं कह्युं नवि
जाय ॥ मुज नीजा मायावीया, कोड कलिया रे परे होय पशु माय ॥ मे० ॥ ३० ॥ एम कही जय पोहोतो
घरे, जाणे उगारीयो महजाय ॥ वड साता मन्नीने कहे, सुणे दीठा रे राय मनना न्याय ॥ मे० ॥ ३१ ॥
देवी कहे उतावळी, आवने नंदन ठाय ॥ क्षुधा तृषाये पीड्यो हशे, आणीने रे सुत कर देखाय ॥ मे०
॥ ३२ ॥ एम सुणी मन्नी ते तिहां गड, मनमां धरी उमेद ॥ ज्ञानविमल गुरु ध्यानथी, होशे संपद रे जाशे
नवि मेद ॥ मे० ॥ ३३ ॥ सर्व गाथा ॥ ५५४ ॥

॥ दोहा ॥

कुसुमपुंज जइ जोश्यो, पण दीठो सुत नवि तेथ ॥ शुं जूही हुं जायगा, नहीं आव्यो कोइ एथ ॥ १ ॥ निधि परे फरी फरी जोश्यो, दीठो नहीं कुमार ॥ मूर्च्छा पामे बहु रमे, करे विलाप अपार ॥ २ ॥ गदगद स्वर थोडी जिसे, निश्चे सुत कुशलनी वात ॥ पुत्र न दीठो जोयता, ए महोटो उतपात ॥ ३ ॥ निसुणी पच्चाहत थइ, देवी करे विलाप ॥ पारद पावक उपरे, जेम न रहे धरी आप ॥ ४ ॥ कदलीदलना वींजणा ॥ बावना चंदन वारि ॥ सींची वाली चेतना, देवीने परिवार ॥ ५ ॥ जेम दारिद्रीने करे, सुरतरु सुरमणि वस्तु, पामी पण न रहे यथा, एम ए तनय प्रशस्त ॥ ६ ॥ शुं कोणे ए अपहरयो, कोणे विणाश्यो होय ॥ शुं थयुं ए पुत्रने, खबर कहे इहां कोय ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

मनजमरा रे ॥ ए देशी ॥ राग गोडी ॥

॥ करे विलाप राणी घणुं, सुत माहारा रे ॥ तुं जीवन प्राण आधार, घणुं मुज प्यारा रे ॥ डुष्ट दैव तें शुं कस्युं ॥ सु० ॥ दीधो डुःख अंबार ॥ घ० ॥ १ ॥ निधि देखाडी जेम लीये ॥ सु० ॥ पीरसी जोजन थाल घ० ॥ पाडी मेरु चढावीने सु० ॥ मनोरथ छेद्यो कुदाल घ० ॥ २ ॥ दूषण माहारां कर्मनां ॥ सु० ॥ दोष न अपरनो कोय ॥घ०॥ कठिण पाप जे आचस्यां ॥सु०॥ उदये आव्यां सोय ॥ घ० ॥ ३ ॥ पंचाचार विराधीया सु० ॥ दीधां गुणिजन आल घ० ॥ के कीधी शीलखंमना सु० ॥ के पाड्या मझुआल ॥ घ० ॥ ४ ॥ कर्मादान समाचस्यां सु० ॥ के जू मांकड लीख घ०॥ पूंजो तावड नाखीयो सु०॥ के जांजी वली नीख घ० ॥ ५ ॥ ज्ञान देव गुरु साधारणा सु०॥ ऊव्यना कीधा नाश घ०॥ शोक्यनां बाल विछोहीयां सु० ॥ पाड्या दूध विनाश घ० ॥ ६ ॥ कामण मोहन करमका सु० ॥ दीधा बहुल शराप ॥ घ० ॥ वृद्ध विनय नवि साचव्या सु० ॥ चोरीनां कीधां पाप ॥घ०॥७॥ डुष्ट करम फेइ आचस्यां सु० ॥ पातक जव जव जेह घ० ॥ ते केवली जाणे सवे सु० ॥ एह डुःखनो नहीं छेह ॥घ०॥८॥ हा श्रीचंद किहां गयो सु० ॥ दे तारो देदार घ० ॥

गु० ॥ आ गमन कर्ने अवतार प० ॥९॥ एम विलाप पशु मांजती गु०॥ राज्य मुके थयो शोक ॥प०॥ स्वजन
गु० ॥ आ पत्र कर्ते अवतार प० ॥ ९ ॥ एम विलाप पशु मांजती गु० ॥ कहे राणीने तिहां सहु गु० ॥ म करो शोक
गमे तिहां आवीया गु० ॥ आवे मवि निज लोक प० ॥ १० ॥ कहे राणीने तिहां सहु गु० ॥ ११ ॥ ज्ञानतत्त्व राणी सुणो गु० ॥
सगार प० ॥ दुर्लभ्या जनितव्यता गु० ॥ थाय कर्मकृत भार प० ॥ ११ ॥ ज्ञानतत्त्व राणी सुणो गु० ॥ १२ ॥ अन्य होये ते
जाणो जो जिनवयण प० ॥ शुं विलाप कीधे होये गु० ॥ छपाको निज नयण प० ॥ १२ ॥ तेम तेम वधे घण शोर प०
आनीने गु० ॥ नहीं इहां कोइनो दोष प० ॥ होळिवो जेम जेम गांजरे गु० ॥ बंधु वर्ग एम थिर करी गु० ॥ घर
॥१३॥ जेम घनवृष्टि गनहय गमे गु० ॥ तेम जिन ध्यानथी शोक प० ॥ क्षण एक गली याम प० ॥ स्वप्नांतर गीत पवरशुं
पोहोंचो गवि लोक प० ॥ १४ ॥ परमेष्ठी स्मरण करी गु० ॥ क्षण एक गली याम प० ॥ मात निंद गुज किहां
गु० आवी सूरी अभिराम प० ॥ १५ ॥ सुण वरगे जागे अवे गु० ॥ किंवा निद्रामांहे प० ॥ नयनने छपन्यो आनंद ॥
थकी गु० ॥ शुं हगणां दुःखमांहे प० ॥१६॥ गुज नाग्ये तमो आवीया गुज माता रे ॥ विजयी छे गुज नंद करो० ॥
मगे गुणजाता रे ॥ ए आंकणी ॥ मा कहे कुलदेवी अछुं, गुज माता रे ॥ गुज पासे रहेतां अमो
॥ १७ ॥ पुण्यपुंजथी मे लही, गुण पेटी रे ॥ मूकयो अनेरे ठाम, महागुण पेटी रे ॥ गुज सुत छे गुण धाम म० ॥
गु० ॥ देवी नियननुं ठाम महा० ॥ १८ ॥ दुःख मनमां शुं मत करे गु० ॥ श्रीचंद्र कुमर सोहागणो गु० ॥ इहां मत धरजे
पारे घरगे आगथी गु० ॥ भवसे नृपति होय म० ॥ १९ ॥ श्रीचंद्र कुमर सोहागणो गु० ॥ राणी हर्षित मन थइ गु० ॥
संदेश म० ॥ २० ॥ एम कही कुलदेवी गइ गु० ॥ मूकी निद्रा ताम म० ॥ सखी कहे
संनारे जिननाम ॥ प० ॥ २१ ॥ मेंरी प्रमुख सखीने कहुं गु० ॥ सुपन तणी सवि वात प० ॥ राणी कहे सुरा
ए गवि गावनुं गु० ॥ ए कुलदेवी साक्षात ॥ प० ॥ २२ ॥ ए अवितथ्य वाणी होजो गु० ॥ देवपूज आवश्यकशुं गु० ॥
नाथ प० ॥ मंगलमाला घर घरे गु० ॥ श्रीजिनधर्म ते साच ॥ प० ॥ २३ ॥ धर्म कर्मना मर्म ॥ प० ॥ २४ ॥ एणे समे तेहिज
सामानिक पशु कर्ने ॥ प० ॥ विधिशुं पाठ गाचवे गु० ॥ लक्ष्मी करे जस गेह प०
॥॥॥॥ ॥ गु० ॥ लक्ष्मीदत्तानिभ शेठ प० ॥ लक्ष्मीपती तेहनी प्रिया गु० ॥ मध्य रयणीये ते लही गु० ॥ सुपन एहवुं
॥ ४५ ॥ धर्मी दातार ने धनी गु० ॥ पण नहीं तास अपत्य प० ॥ कल्पवृक्ष दीयुं गुज घरे गु० ॥
सत्य प० ॥ ४६ ॥ एतो सत्य गोत्रदेवता गु० ॥ आपी कहे शेठ उठ प० ॥ ते निसुणीने
॥ २७ ॥ सयण सवे तेडी करी गु० ॥ सुत जन्मोत्सव मंड प० ॥

आंपीयो सु० ॥ भोजन विधि घृतखंड ॥ प० ॥ २० ॥ कुसुमपुंज लेवा गयो सु० ॥ मोकलिया निज दास ॥ प० ॥ तिहां कुसुम चोगां गहथां सु० ॥ आव्या परीने दास ॥ प० ॥ २९ ॥ तेह आराम नृप वाडीये सु० ॥ कुसुम काज गयो तेण प० ॥ जय नृपनी आण लही सु० ॥ विविध कुसुमनी श्रेण ॥ प० ॥ ३० ॥ पुष्पकरंड जराबीया सु० ॥ सेवक पासे जाम प० ॥ एणे समे जाय तरु वसे सु० ॥ फलिया मनोरथ ताम ॥ प० ॥ ३१ ॥ प्रतापसिंह नंदन तिसे सु० ॥ फरकावे निज पाद प० ॥ पुष्पमांहे मधुकर परे सु० ॥ चिंते होड आल्हाद ॥ प० ॥ ३२ ॥ अद्भुत रूप गुणनो निधि सु० ॥ निरख्यो नंदन तेह प० ॥ तरणिकिरण परे दीपतुं सु० ॥ सौम्य सुधा सुखगेह ॥ प० ॥ ३३ ॥ सार मंदार तरु परे सु० ॥ छाया कांति सश्रीक प० ॥ लक्षण भूषित मृदु तनु सु० ॥ रलकंबल मुद्रा नीक ॥ प० ॥ ३४ ॥ रौरपरे मनु नीपनी सु० ॥ अतर्कित रत्ननी वृष्टि ॥ सुणो सवि सज्जन रे ॥ ए आंकणी ॥ ए सुत रत्नने आपीयो सु० ॥ ए वनदेवीनी सृष्टि प० ॥ ३५ ॥ मध्य रयणीये गोत्रदेवीये सु० ॥ जे कह्युं ते थयुं सत्य प० ॥ सेवा सफल थइ एहनी सु० ॥ पर्यागतनी नित्य ॥ प० ॥ ३६ ॥ निज मृदु कर कमले ग्रह्यो सु० ॥ ठवे कुसुम करंडकमांहे ॥ प० ॥ फूले बहु मूले करी सु० ॥ लेइ गयो निज घरमांहे ॥ प० ॥ ३७ ॥ लक्ष्मीवतीने आपीयो सु० ॥ कही विस्तर तस वात प० ॥ ज्ञानविमल वाणी सुणे, जे होये सुखणी धात ॥ प० ॥ ३८ ॥ सर्व गाथा ॥ ५५५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सा कहे वारु ए नीपन्युं, राख्युं महोटुं रत्न ॥ जाग्य मनोरथ कल्पतरु, फलीयो एह अयत्न ॥ १ ॥
अहो अहो तुम धीरता, अहो अहो बुद्धि प्रपंच ॥ राजगेह मिष साहसी, नहीं कांइ खल संच ॥ २ ॥
अहो अहो दृष्टि सुकुमारता, पाकां पूरव पुण्य ॥ थाकां दुरित हवे आजथी, नीकां इष्ट अगण्य ॥ ३ ॥
गूढ गर्भ माहरी प्रिया, थयो सांप्रत सुत जन्म ॥ करो विविध वधामणां, दान पुण्य विधि धर्म ॥ ४ ॥
पावन थइ जिन देहरे, स्नात्र महोत्सव सार ॥ कीजे नव नव छंदशुं, नाटक गीत उदार ॥ ५ ॥ मंगल धवल तणी ध्वने, पूरित दश दिशिमान ॥ याचक जनने आपीये, मनवंछित वरदान ॥ ६ ॥ पुत्र प्राप्ति हर्षे करी, थयो नगर आनंद ॥ हर्ष कोलाहल नीपन्या, जय जय शब्द अमंद ॥ ७ ॥ दश दिन स्थिति वधामणी, टाली

अशुचि संनार ॥ बारसमे दिवसे वली, तेडी सवि परिवार ॥ ८ ॥ चंद्रबिंब परे सुत दिपे, दीठो एह कुमार ॥ तेह जणी नाम आपीयुं, श्री श्रीचंद्र कुमार ॥ ९ ॥ अंक रहीर मज्जन वली, मंडन क्रीडा धात्रि ॥ पांचे धात्री वधे, जिम मुनि सुमति सजाय ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ ६०९ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥

॥ राग सारंग ॥ जीहो कुंअर येहो गोवरूं ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो नंदनवन जेम सुरतरु, जीहो गिरि दरि चंपक छोड ॥ जीहो तेम तेम दिन दिन वाधतो, जीहो गोर्धवे मनना कोड ॥१॥ महाजन पेखो पुण्य विशेष ॥ जीहो पुण्य प्रमाणे अति घणुं, जीहो आय मिले गुणविशेष ॥ विबुध जन पेखो पुण्य विशेष ॥ ए आंकणी ॥ जीहो यद्यपि सत्पति ते हुतो, जीहो पण सुत लायवने हेत ॥ जीहो कोटिध्वज तेठी थयो, जीहो मणिरयणाने संकेत ॥ वि० ॥ २ ॥ जीहो षष्ठी जागरणा थकी, जीहो चंक्रमणादि नाम करण श्रुतिवेध ॥ जीहो चूडा थापन मूकनं, जीहो अन्न प्राशन संवेध ॥ वि० ॥ ३ ॥ जीहो ते कीधा नवे मंडाण ॥ वि० जीहो सर्व क्रिया, जीहो यावत् वरस प्रमाण ॥ जीहो वली कुलाचार बहु परे, जीहो अंकथी अंके लीये घणुं ॥ जीहो व- ॥ ४ ॥ जीहो बंधु सयण ने नातमां, जीहो नागर जनना थोक ॥ जीहो न करे दग संताप ॥ जीहो विकृ- हालो जेम रवि कोक ॥ वि० ॥ ५ ॥ जीहो सुखकारी सवि लोकने, जीहो पंच वरस आकार धरे नहीं, जीहो बाल अबाल पराक्रमी, जीहो जे दीठुं ते सांभळ्युं, थयां जाम ॥ जीहो पूर्व संकेत तणी परे, जीहो मीठा जस आलाप ॥ वि० ॥ ६ ॥ जीहो सवि विधानुं ठाम ॥ वि० ॥ ७ ॥ जीहो टंकोत्किर्ण परे जोय ॥ वि० ॥ ८ ॥ जीहो एक जीहो एक वार जे होय ॥ जीहो ते सघलुं लीलावकी, जीहो कौतुक काजे कुमार दिन जाय उद्यानमां, जीहो जनक संघाते कुमार ॥ जीहो रथ चढी लीला कारणे, जीहो साल रसाल मृणालिका, जीहो ॥ वि० ॥ ९ ॥ जीहो चंपक नाग पुंनागनां, जीहो फोग फणस माकंद ॥ जीहो विविध नलिननी जाति ॥ जीहो वाणी कमलनां वृंद ॥ वि० ॥ १० ॥ जीहो शतक सहस दल पत्रनी, जीहो एम अनेकविध जोयतां, जीहो नागलतानी जाति ॥ वि० ॥ ११ ॥ जीहो ते गुणजो अह सावधान ॥ वि० ॥ १२ ॥

जीहो वाजित्रनादे वाजते, जीहो गातां गुणिजन कोडि ॥ जीहो दान महा देते थके, जीहो अति घण होमाहोडि ॥ वि० ॥ १३ ॥ जीहो नाटक पेटक थावते, जीहो धवल मंगलनी श्रेण ॥ जीहो हर्ष कोलाहल अति घणो, जीहो मुखे न कहाये केण ॥ वि० ॥ १४ ॥ जीहो गिरिवर सम कुंजर चढी, जीहो छत्र चामर वींजाय ॥ जीहो सारिका एक दीठी कुमरे, जीहो पाला आगल छे जाय ॥ वि० ॥ १५ ॥ जीहो मंत्री सामंत प्रमुख घणा, जीहो चो पखेर परिवार ॥ जीहो गाजे गजनी बहु घटा, जीहो हणहणता हयखार ॥ वि० ॥ १६ ॥ जीहो राणीपरे एक सारिका, जीहो अचरिजकारी रे एह ॥ जीहो नगरथी वाहेर आवतां, जीहो ते वनमां धरी नेह ॥ वि० ॥ १७ ॥ जीहो ते वनमांहे अछे भलुं, जीहो तुंग तोरण प्रासाद ॥ जीहो आदि जिणंद तणो अछे, जीहो दर्शने होय आह्लाद ॥ वि० ॥ १८ ॥ जीहो अति उत्सव आडंबरे, जीहो आवि चैत्य दुवार ॥ जीहो गजथी ते तिहां उतरी, जीहो पेसे चैत्य मकार ॥ वि० ॥ १९ ॥ जीहो कुमरे ते दीठी जिसे, जीहो हर्षित हृदय हराण ॥ जीहो चिंते ए शुं मानुषी, जीहो अथवा देव विनाण ॥ वि० ॥ २० ॥ जीहो अथवा जो तिरियंचिणी, जीहो केम जाणे सरूप ॥ जीहो नागर लोके परिवरी, जीहो ए तो अचरिज रूप ॥ वि० ॥ २१ ॥ जीहो एम विचार मनमां करे, जीहो एक स्त्री आवी ताम ॥ जीहो सुख आसनथी उतरी, जीहो कहे निज सेवकने ताम ॥ वि० ॥ २२ ॥ जीहो तात तणी आज्ञा लइ, जीहो पूछे कुमर संदेह ॥ जीहो तुमो कोण छो ए कुण अछे, जीहो पशु रूपे गुणगेह ॥ वि० ॥ २३ ॥ जीहो श्यो महोत्सव छे मोटको, जीहो केम आवी प्रासाद ॥ जीहो सवि वृत्तांत कही तम तणुं, जीहो टालो संशयवाद ॥ वि० ॥ २४ ॥ जीहो कुमर वचन सुणी सा कहे, जीहो गुण शृंगार कुमार ॥ जीहो एह नगरनो राजीयो, जीहो प्रतापसिंह सुखकार ॥ वि० ॥ २५ ॥ जीहो हमणां रत्नपुरे अछे, जीहो जनपद जीतण काज ॥ जीहो सूर्यवती तेहनी प्रिया, जीहो सेंही सखी हुं आज ॥ वि० ॥ २६ ॥ जीहो वृत्तांत हवे काचर तणुं, जीहो सांजल तुं सुकुमाल ॥ जीहो मुज स्वामिनीने ए वालही, जीहो हंसी राजमराल ॥ वि० ॥ २७ ॥ जीहो जन्मजूमि छे एहनी, जीहो कर्कोटक नामे दीप ॥ जीहो एक धनी शेठे तिहां थकी, जीहो आणी रत्नपुर दीप वि० ॥ २८ ॥ जीहो तिहां प्रतापसिंह आगले, जीहो जेट करी बहु मूल ॥ जीहो काव्य सूक्ति सुनावितें, जीहो कर्यो राजा अनकूल ॥ वि० ॥ २९ ॥ जीहो सूर्यवती राणी तणो, जीहो जांणी पुत्रवियोग ॥ जीहो

हेमवयकी राजा मिल्यां, जीहो माने वीतराग शोक ॥ वि० ॥ ३० ॥ जीहो दश दश देव किशुं थयुं, जीहो शुनपूरक पढ स्यम ॥ जीहो तेहनो महिमा नवि रह्यो, जीहो जेम रयणे अरयम ॥ वि० ॥ ३१ ॥ जीहो राणी कुशल विचारया, जीहो गविपर्ठ करीय विचार ॥ जीहो नरनागाये घोसवी, जीहो इहां मूकी तेण वार ॥ वि० ॥ ३२ ॥ जीहो जिनजापित वैराग्यना, जीहो कहे उपदेश रसाल ॥ जीहो जिनभक्ति राणी तिगे, जीहो चिंते कहयो गुरगाल ॥ वि० ॥ ३३ ॥ जीहो धर्मगोष्टि करतां थकां, जीहो जातो न जाणे काल ॥ जीहो उत्तम संगतिथी होये, जीहो दिन दिन मंगल माल ॥ वि० ॥ ३४ ॥ जीहो पुण्ये होये मति निर्मली, जीहो पुण्ये उत्तम संग ॥ जीहो पुण्ये जिन गुरु धर्मनो, जीहो पामे पावन संग ॥ वि० ॥ ३५ ॥ जीहो देवी महनी संगते, जीहो धर्मकथाये काल ॥ जीहो निर्गमतां दिन बहु थया, जीहो वंदे देव त्रिकाल ॥ जीहो ज्ञानविमल कही ढाल ॥ वि० ॥ ३६ ॥ सर्व गाथा ॥ ६५५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहेवा साधु तणे गुणे, सांजलीयुं ते एम ॥ नृपपुत्री आवते नये, पाइश तुं धरी प्रेम ॥ १ ॥ ते शुनियणे संमलो, समकितपूर्वक धर्म ॥ पाले अहोनिशि साचवे, श्रावकना षट् कर्म ॥ २ ॥ राणीने घणुं पावली, माण थकी सुखदाय ॥ उत्तम केरी प्रीतडी, दिन दिन वधती थाय ॥ ३ ॥ ओगाशुं जे प्रीतमी, करतां चित्त सुमलाय ॥ नीचनेह सरशब्द ज्युं, घटत घटत घट जाय ॥ ४ ॥ देवी तो धारे घणुं, पण तप करे कठोर ॥ जे स्थापेुं आगमे, तिणशुं केवुं जोर ॥ ५ ॥ अषाढ उपवासनी, कीधो तप निर्माय ॥ प सुखकारी सारिका, नय सह्यो पुण्य पसाय ॥ ६ ॥ आज अषाढ महोत्सवे, कीधी चैत्य परिवाम ॥ पुरमांहे दये पाहिरे, आवी पणे उछाह ॥ ७ ॥ आदिनाथना चैत्यमां, विधिशुं करी प्रणाम ॥ पेठी ते प्रभु वंदवा, नयनय नाथ अभिराम ॥ ८ ॥ सेंढी एम कही वातनी, शेठ पुत्रे जाणी जाम ॥ अहो अहो मन चिंतवे, पुण्योदयनां काम ॥ ९ ॥ जाति अछे तिर्यंचनी, देखो दहाता एह ॥ पुण्य सामग्री केहवी, सही अ- ने गरनेह ॥ १० ॥ जिनमंदिरमांहे जइ, जोउं एहनी जक्ति ॥ तिर्यंच पण जिन अर्चणा, केम देराडे शक्ति ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ ६५६ ॥

॥ अथ सारिकाकृत स्तुति ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ राग कापी मारु ॥ हरिये आवी रे, वृंदावनमां माय ॥ ए देशी ॥

॥ नमो नमो श्रीआदिजिणंदने, करती त्रिविध प्रणाम ॥ पंचाजिगमे नमन करंती, केवलज्ञानी नाम, ताते परी उल्लाम ॥१॥ प्रभुजी प्यारा रे, पुण्यथकी मे दीठा ॥ प्राण आधारा रे, परम सुधाथी मीठा ॥ ए आंकणी ॥ राजपुरुष उपयोग करावे, कोलाहलने समावे ॥ साची वाणीये जावना जावे, सहुने अचरिज थावे, वाजित्र-नाद वजावे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ हुं तो कावरी बावरचीपनी, सास जरी ए देही ॥ स्वामी बराबर को नवि दीठो, तुंही अलेही अदेही ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ तु निकलंक अने निर्मोही, तुं अदोही उदासी ॥ म्हारा मनमांहेथी केणी परे, कहो हवे केम परी जासी ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ जेम पंकजमां मधुकर पेसे, तेम मनकजमां पेठो ॥ तुम दर्शन पामी नवि हरखे, ते निगुणोने धीठो ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ हुं तिर्यंचणी ने वली पंखणी, आसेणी तुम सेवा ॥ पामीये तो ए अनोपम जाणे, जिम भूख्यां वर मेवा ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ जव जव ताहारी आण सुरगवी, होजो अविच-ल जावे ॥ तेहथी गोरस समकित सूधुं, ज्ञान ने चरण जमावे ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ जेम घृत आप स्वजावे निर्मल, रस शोध्यो कह्यो न जावे ॥ तेम तुम हेते निज स्वरूप ते, निरावरण प्रगटावे ॥ प्रभु० ॥ ८ ॥ इंद्र अनंता जो समकाउ, जक्ति करे जो कवेही ॥ तो पण प्रभुगुण समता नावे, तो हुं तिर्यंचणी केही ॥ प्रभु० ॥ ९ ॥ सारिका एणी परे आदि देवनी, गुणथुति करवा लागी ॥ सहु प्राणी जुउ ए अचरिज, ज्ञानविमल मति जागी ॥ प्रभु० ॥ इति सारिकाकृत स्तुति ॥

॥ दोहा ॥

॥ विधिशुं नाही वाव्यमां, करी धंचपुट शुद्ध ॥ मंगल आठ जरे तिहां, मुक्ताफल विशुद्ध ॥ १ ॥ पगर कुसुमनो तिहां जरे, धूपदीपनां पात्र ॥ जरे अबरसुं मृगमदे, नवरावे वली स्नात्र ॥ २ ॥ पावन करे कर्ममल-थकी, जन्म जरा ने मरण ॥ जेहथी जावे ते करी, पूजा अर्थ प्रवीण ॥ ३ ॥ एम पूजा अर्चा करी, पाउं पगे

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ राग आशावरी ॥ जिनवरशुं मेरो मन लीनो ॥ ए देशी ॥

॥ मालिकाने तिहां कर्म संयोगे, कुमरने नयणे निरख्यो री ॥ गुनगनाय गुणनिधि निज कर विधि, नीपायो
हरि नरिनां री ॥ १ ॥ आतम नाथ नली गति विरली, कुणही कही न जाने री ॥ कर्म शुभाशुभ समये
समये, बांधे नरिनली आवे री ॥ आत० ॥ २ ॥ मालिका कही श्रीजिनने चरणे, आवी एणी परे जाणे री ॥
माह मदे जगमांहे जगी, ए दोनो कहे मनु मागे री ॥ आ० ॥ ३ ॥ देवाधिदेव तो तुं ही तुंही, गुरु सुसाधु
निर्ग्रंथा री ॥ धर्म अहिंसा लक्षणआणा,-राधक धारी पंथारी ॥ आ० ॥ ४ ॥ एम कहीने आगमण गागारी,
संगे जिनवर मूरति री ॥ इम निसुणीने कुमर तिहां पोहतो, गुणपंचाणी अनुकूल री ॥ आ० ॥५॥ अहो अहो ना-
हारी चतुराइ, पाइ पण गुन गाणी री ॥ एहवुं निदान करे कोइ प्राणी, पण तिर्यंच गति पामी री ॥ आ०
॥ ६ ॥ वीतराग शासनमां एहवुं, नाम्हुं जे गुण पाइ री ॥ धर्म कर्यां अनिदान मुगति फल, संवर नाय स-
माइ री ॥ आ० ॥ ७ ॥ पंचामृत जमी मारा जीवनुं, चतुर जे एह छगाणो री ॥ माणो कीधो तें ए करतो,
ए विस्वाद स आणो री ॥ आ० ॥ ८ ॥ ए अचाइ महोत्सव जिनना, यात्रादिकनी करणी री ॥ गणा जीव
अनुमोदन करतो, ए समकित वर धरणी री ॥ आ० ॥ ९ ॥ एहवुं पुण्य करी पंचामृत, ए निदान तो न घटे
री ॥ पण छदीये जे पाक न फेड़तो, नाथी नाम ते न मिटे री ॥ आ० ॥ १० ॥ कुमर वचन एम निसुणी
बोले, मालिका मारी वाणी री ॥ में निदान कर्यं नथी कीधुं, गुण सुं कुमर गुणखाणी री ॥ आ० ॥ ११ ॥
संयम शील सुसाधु नारीने, समकित में आदरीयो री ॥ तेणे सुजने आगमिक नवे सुं, राजसुता नय
धरीयां री ॥ आ० ॥१२॥ मीजाते तो परनी इहा, एहवो जे व्यवहारो री ॥ तिहां मिथ्यात्वी संगति छडीये
सो, जाय एहे जमवारो री ॥ आ० ॥ १३ ॥ माय गले जेम काछनी घंटा, नाम विडंबना दोहीली री ॥ तेह
नाणी जो समकित संगी, पर मामधी मोहेली री ॥ आ० ॥ १४ ॥ जिनभगतिने जिनमत सुमति, कुमति
कलंक न दीसे री ॥ एहवी वाणी तेणे में दाखी, कुमर देखी चित्त विकसे री ॥ आ०

॥ १५ ॥ हुं जाणुं तुं धर्म करीने, शिवगरनी आशंसा री ॥ तेथे धर्म तो शीगति करिये, तेहनी नहीं प्रशंसा री ॥ आ० ॥ १६ ॥ कीधाथी अणकीधुं वार, एहवी नहीं जिनवाणी री ॥ अविधि करे भवविधि शिव फल दीये, धर्मबीज विधि शाखा री ॥ आ० ॥ १७ ॥ अशुभ निदान नव बोल्या प्रवचने, तेहमां एह नहीं आवे री ॥ सारिकाये निज भाव कहीने, कुमरने एम समजावे री ॥ आ० ॥ १८ ॥ तिहां आवी छे मेंडी नामे, सूर्यवतीनी आली री ॥ तेणे देवीने वात सुणावी, आवी कहे माहारी वाहाली री ॥ आ० ॥ १९ ॥ वहर्युं वहयुं ए ताहारुं कोइ साहस, दुष्कर आहारने पचख्खेरी ॥ पहेलां पण तप ताहरुं उत्कृष्ट, दुर्बल तनुने निरखे री ॥ आ० ॥ २० ॥ भामणडे जाउं हुं ताहारे, वेहेनी पारणुं कीजे री ॥ आवी आवासे सुख आलापे, मुजने आनंद दीजे री ॥ आ० ॥ २१ ॥ आयुमान जाण्या विण वहेनी, अणसणनी नहीं वात री ॥ जिनशासनमां एहवुं बोल्युं, तुं छे पंखी जात री ॥ आ० ॥ २२ ॥ जिनमत जाण्यो तेहने कहीये, हठ लाल छोडे वेगे री ॥ तेह जणी अछाइ पारणा, करी पछे करजो नेगे री ॥ आ० ॥ २३ ॥ सारिका बोले स्वामिनी जे तुमे, कयुं ते सघलुं में जाण्युं री ॥ पण जिन आगल जेह प्रतिज्ञा, कीधी हवे शुं ताणो री ॥ आ० ॥ २४ ॥ ज्ञानी वचन पण एहवुं भाखे, जे अहिनाण बताव्युं री ॥ ते पण समय अनुसारे जाणी, अणसणने मनि लाव्युं री ॥ आ० ॥ २५ ॥ यद्यपि कांइ विलावख्खावे, अधिकुं जेह कहाणुं री ॥ ते मिथ्यादुष्कृत हो मुजने, थिरताये न रहेवाणुं री ॥ आ० ॥ २६ ॥ एम कही कावर मौन करे जब, देवी एहवुं बोले री ॥ सखी तुम विण इहां वासर महारा, केम जाशे विपतोले री ॥ आ० ॥ २७ ॥ राणी ने वली सर्व साहेली, नगर लोक सवि मेली री ॥ अणसणनो उत्सव तिहां मांड्यो, धर्मराग मांहे जेली री ॥ आ० ॥ २८ ॥ दुरित तणा अढार आलोइ, सुकृत अनुमोदे सघलां री ॥ दुष्कृत निंदा मद परिहरणा, चार सरण करे विमला री ॥ आ० ॥ २९ ॥ सकल लोकने आनंदकारी, वारी दुष्ट कषाया री ॥ देवी उपर पण नहीं माया, केहनी माया काया री ॥ आ० ॥ ३० ॥ दिवस त्रण अणसण आराधी, परभव पामी मैना री ॥ चंदन प्रमुखे ते संस्कारी, संभारी गुण तेहना री ॥ आ० ॥ ३१ ॥ मूकी शोक राणी रहे सुखमां, कुमरे राणी जेरीरी ॥ पण मांहोमांहे कोइ न आणे, मुन वेदन नवि मेटी री ॥ आ० ॥ ३२ ॥ पिता पास आवी नवि तेहना, गुण

अनुमोदन करता री ॥ ... पाणी पछयी, गेनाये आणगण कीधुं री ॥ ए उत्तम गयुं मिथ्यामत तम, जीवितनुं फल लीधुं री ॥ आ० ॥ ३७ ॥ एम अनुमोदना त्रिगुणी येहुनी, आवे पण अनुमोदे री ॥ पद आवीने ज्ञानविमल गुरु, चरणकमलने वंदे री ॥ आ० ॥ ३९ ॥ सर्व गाथा ७०५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे तेहिज पुरमां वसे, मंत्रि श्रीधन नाम ॥ मतिराज सुधिराज येहु, नंदन तस गुण धाम ॥ १ ॥ पहेलो मंत्री पद धरे, अनुज अनुज पद ठाम ॥ अनुज प्रिया कमला अछे, तस सुत गुण अभिराम ॥ २ ॥ चंद्र परे निर्मल कला, गुणचंद्राख्य कुमार ॥ श्रीचंद्र कुमरने मित्र ते, प्रीतिस्थान अपार ॥ ३ ॥ क्षीर नीर परे तेहने, मैत्रि परम पवित्र ॥ विनय विवेक नरेंद करी, सेवा करे विचित्र ॥ ४ ॥ श्रीचंद्र तेहशुं वीगस्यो, मन कीधुं तेणे धीर ॥ पश्यतोहर गुणचंद्र थयो, तोही उत्तम शिर मोर ॥ ५ ॥ मांहोमां नख मांस परे, प्रीति वधे अति नेह ॥ अलगा न रहे एक घडी, एक जीव दोय देह ॥ ६ ॥ हवे पिता मन चिंतवे, पाळवीये जो पुत्र ॥ जो नवीयो सुत संपजे, तो राखे घरसूत्र ॥ ७ ॥ तादृश पाठक जोइये, शास्त्रनीतिनो जाण ॥ गुरुपरंपर आवीयो, निर्लोभी गुणखाण ॥ ८ ॥ विनय प्रमाद न सेवतो, उवतो नगलां न्याय ॥ एहवो जो पाठक मळे, तो लगुतां सुख थाय ॥ ९ ॥ गंगा तीरथी आवियो, श्रीगुणधर उवज्झाय ॥ शेठे आव्यो मांनवी, साथे बहु परिवार ॥ १० ॥ पूर्वे धार वाराणीया, चित्तज्ञान नर जेह ॥ तेहना गुरु पण एह छे, सकल कलाना गेह ॥ ११ ॥ अरिहंत मतने अनुसरे, सकल शास्त्र परवीण ॥ नीतिदक्ष सुधी संत छे, स्फुटवच कार्य अदीन ॥ १२ ॥ शेठे ते घर तेडीने, दीधां वली बहुमान ॥ पुत्र पाठवा मारव्यो, प्रभु करो आश प्रमाण ॥ १३ ॥ पाठक कहे तुज पुत्रने, निरखुं लावो आंही ॥ आकारी पगे पाडीयो, लावण्यगुणनी वांहिं ॥ १४ ॥ गुरुपद प्रणमी प्रेमशुं, पिता चरण प्रणमेय ॥ बेठो उचित स्थानके, विनयवकी स्वयमेव ॥ १५ ॥ सर्वत्र लक्षणे अलंकर्यो, देखी तेह कुमार ॥ योग्य जाणीने हरखीया, उपाध्याय तिहां सार ॥ १६ ॥ जाणे उत्सुक हुता, देखी सरस थयुं चित्त ॥ ॐकार करी मानियो, एह कुमार सुविनीत ॥ १७ ॥ ७२२ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

राग सारंग ॥ सज्जनानी देशी ॥

श्रीगुणधर उवझायने, शेठ दीये बहु दान सज्जना॥ निरुपद्द गुणथी नविडीय.कुमर जे विनयनुं धाम सज्जना॥१॥ विनयथकी मति गुणवधे, विनय जे धर्मनुं मूल सज्जना॥ शेठ नाम गुरु मारडी, विनयथी मति अनुकूल सज्जना॥ वि०॥२॥ एकवारनी ॥ कहे उवझाय सुणो शेठजी, हुं धुनविकरी नाही सज्जना॥ जे उपगार करी इच्छा करे, ते नाणु गुरीजने माहि सज्जना ॥ वि० ॥ ३ ॥ विनय करी विद्या लीयें, ए तो उत्तम पक्ष सज्जना॥ अथवा विद्यायीं विद्या लीयें, ए पण बीजो दक्ष सज्जना ॥ वि० ॥ ४ ॥ धनथी विद्या जे लीये, ते तो नाहीं युक्त सज्जना ॥ पुण्यात्माने दीयें होये, बीजो कारण उक्त सज्जना ॥ वि० ॥ ५ ॥ जो विनयी विद्यारथी, बांधे नेहथी चित्त सज्जना ॥ अविनयीने पण तो दीयें, जो धन देवा चित्त सज्जना ॥ वि० ॥ ६ ॥ कहे उवझाय शुभ स्थानकें, कीजे शास्त्र अभ्यास सज्जना ॥ शेठ कहे मे थापियो, लखमीपुर जे पास सज्जना ॥ वि० ॥ ७ ॥ राजानी आणायकी, पहिलां वास्युं जेह सज्जना ॥ तिहां आवास जे माहरा, पावन कीजे तेह सज्जना ॥ वि० ॥ ८ ॥ ते पंडित स्थानक जोइ, शास्त्र अभ्यासने योग्य सज्जना ॥ सामग्री तिहां मेलवे, अशनादिकना जोग सज्जना ॥ वि० ॥ ९ ॥ यतः ॥ आचार्यपुस्तकनिवाससहायनोग्यं, वाह्याश्च पंच पठनं परिवर्धयंति ॥ आरोग्यबुद्धिविनयोद्यमशास्त्ररागाः, पंचांतराः पठनसिद्धिकरा भवंति ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ शुभ मुहूर्त शुभ चंद्रमा, योग लगन बल जाण सज्जना ॥ लेखशाला महोत्सव तिहां, मांड्यो मोहोटे मंडाण सज्जना ॥ वि० ॥ १० ॥ वस्त्राभरणे शोभता, पाठक तस परिवार सज्जना ॥ वाधे एम शोभा घनी, विनयथी अंतर सार सज्जना ॥ वि० ॥ ११ ॥ आदि ॐनमो भणे, वळतो अक्षर पाठ सज्जना ॥ दान मान आपे घणां, ए उच्छरंगा ठाठ सज्जना ॥ वि० ॥ १२ ॥ व्याकरण काव्य अलंकार जे, ज्योतिष शास्त्र ने छंद सज्जना ॥ गणितागम सहुए भण्या, शास्त्र अनेक अमंद सज्जना ॥ वि० ॥ १३ ॥ सामुद्रिक वास्तुक वळी, नाना नणा जे भेद सज्जना ॥ वळी शृंगार रस मंजरी, शालिहोत्र ने वेद सज्जना ॥ वि० १४ ॥ दोरा लगन ने नाडिका, [illegible] सज्जना ॥ [illegible] सज्जना ॥ वि० ॥ १५ ॥ [illegible]

गाजेन थाइ कंग, ... मधारंभादिक जिके, भनुमिमाना याग सजना ॥ त्रि० ॥ १७ ॥
नयगोग्य कृत्तिरुचा, तेहनों पण अन्याय सजना ॥ गुरुमगादथी तेहने, फरनत प्रासि न जोग सजना
तेम श्रीगुणधर गुरु तणा, कम गंम्या अनि तेम सजना ॥ गुरुमगादथी तेहने, फरनत प्रासि न जोग सजना
॥ त्रि० ॥ १० ॥ जेम आदर्शमां प्रतिबिंब, जाणे मन्निरे नाम सजना ॥ जयें तेह पर विस्तरी, तग मनि शास्त्र
निगम सजना ॥ त्रि० ॥ १९ ॥ गकल शास्त्र कुशली थयो, कुमर अमरपति जेम सजना ॥ उपाध्याय पण निज परें,
गंगुराम थया तेम सजना ॥ त्रि० ॥ २० ॥ दूषण रहित जे न्याये, शोनाव्या मति तेह सजना ॥ पाठक गमन
लही पाम्या, कुमर कहे बहु नेह सजना ॥ त्रि० ॥ २१ ॥ म्लान वदनकज देखीने, जेम दिवसें शशिबिंब
सजना ॥ अश्रुमोचन बहुविध करे, न गहुं सुख निर्बंध सजना ॥ त्रि० ॥ २२ ॥ कुमरने देखी पढ्यो, न
करो पढ्यो शोक सजना ॥ निशाणा नवि मूकीये, जे गपत्राड थोक सजना ॥ त्रि० ॥ २३ ॥ थांरु होये ते
दाणगो, मानविनाने नयण सजना ॥ आज लगे गुरु नाहरो, थीनुं न निरखुं वयण सजना ॥ त्रि० ॥ २४ ॥
कुमर पढे गुणो नानजी, दुःख नहीं मुजने कांय सजना ॥ पण विद्यागुरु माहरा, गंगुरु जे उपाध्याय सजना
॥ निगमी निज कुमार सजना ॥ त्रि० ॥ २५ ॥ कोण मति गति मुज देखशे, तत्त्व कहेशे वली कोण
सजना ॥ ज्ञानांजन करी आंजशे, कहो कोण माहारां नयण सजना ॥ त्रि० ॥ २६ ॥ पढवे अनुमति मागता,
आपवा पावकगण सजना ॥ तेहवा कुमरने देखीने, धरतो दुःख गमुदाय सजना ॥ त्रि० ॥ २७ ॥
अहो नवि अहो तेहनो, अहो अहो विनय विवेक सजना ॥ अहो अगर्व निर्दंनता, प्रशंसे अतिरेक
सजना ॥ त्रि० ॥ २० ॥ कहुं तेह गुन कारणे, जो पंच दिवस रहेवाय सजना ॥ तो अम्ह हियडुं
ठरे, कुमरने बहु सुख थाय सजना ॥ त्रि० ॥ २९ ॥ गुरुजीये मानी विनति, रह्या वली केटलाक
वार सजना ॥ दाक्षिण्यथी नवि निपजे, मोह महोटो जंजाल सजना ॥ त्रि० ॥ ३० ॥
गुरु गुणचंद निरख्या थकी, श्रीचंद्र हरख समुद्र सजना ॥ तेहथी अतिही उछस्यो, नीर न मायें
मधुर गाजता ॥ त्रि० ॥ ३१ ॥ श्रीगुणधर सुगुरु तणा, गुण माणिक निज चंद्र सजना ॥ श्रीचंद्र निजगत वंदशे,
... गेली सजना ॥ त्रि० ॥ ३२ ॥ ज्ञानविमल गुरुराजथी, पाम्या श्रुतनिधि सार सजना ॥ ते गुरु
... नीमडे, तेहना बहु उपगार सजना ॥ त्रि० ॥ ३३ ॥ सर्व गाथा ॥ ३५५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे प्रतापसिंह राजीयो, रिपुजनपदने जीति ॥ हळ्युं रत्नपुरुं मही, करी आणानी रीति ॥ १ ॥ उदधिरत्न मणिमाणिके, मुक्ताफलनी कोडी ॥ वस्तु अपूरव बहु लेई, कोण करे होमाहोमी ॥ २ ॥ वरस आठ तिहां किण रही, वरतावी निज आण ॥ आपे अति उलट धरी, सेना बहु मंमाण ॥ ३ ॥ नयर कुशस्थल आवीया, माहामा आवे लोक ॥ निज नगरपति देखीये, हर्षित जिम रवि कोक ॥ ४ ॥ शेठ सेनापति मंत्रथी, सवि सुहृज्जनपरिवार ॥ लेइ अपूरव भेटणुं, आव्या शेठ कुमार ॥ ५ ॥ जइ राजाना पाय नमी, बेसे यथोचित ठाम ॥ स्वागत कुशल पूछ्युं तिसे, सकल लोकने ताम ॥ ६ ॥ शेठ पासे सुत देखीयो, सुंदर सकल शरीर ॥ देखी नृप पूछे तिसे, ए सुत कोण वरवीर ॥ ७ ॥ शेठ कहे तुम दासनो, ए नंदन छे स्वामि ॥ हर्षित मन कहे राजीयो, स्नेह नयनथी ताम ॥ ८ ॥ संप्रति जातिस्मरण छे, लोचन केरो प्रेम ॥ सज्जन मलवा टलवले, दुर्जन मलवा नेम ॥ ९ ॥ कहे कणकोटपुरु दीयुं, ए सुतने सुखकाज ॥ स्नेह जणावे अति घणो, दृष्टियुगल माहाराज ॥ १० ॥ दान अयारित आपतां, आवे राज दुवार ॥ निज घर मंगल धवलशुं, आवे धरी अलंकार ॥ ११ ॥ लखमीदत्त शेठ आविया, नृपति तणुं बहु मान ॥ लेईने सुत साथले, देता अढलक दान ॥ १२ ॥ हवे गुणधर उवज्झाय जे, पाठ धारे निज ठाम ॥ धारबंध जल तरणि जे, प्रमुख वस्तु अभिराम ॥ १३ ॥ वली अनेक गुण योग्यता, दिव्य वस्तु छे जेह ॥ तेह कुमरने आपीने, चाल्या वधते नेह ॥ १४ ॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥

॥ जीरे महारे जाग्यो कुंवर जाम, तव देखे दोलत मली ॥ जीरेजी ॥ ए देशी ॥

जीरे महारे हवे ते नगरमांहे सार, आठ वसे व्यवहारीया जीरेजी ॥ जी० ॥ धनप्रिय धन धनसार, धनदत्त धनद अनुकारीया जीरेजी ॥ १ ॥ जी० ॥ कमलादिक तस नार, रूपे रंभा उर्वशी जीरेजी ॥ जी० ॥ पुत्री तेहनी सार, लखमी प्रमुख गुणथी हसी जीरेजी ॥ २ ॥ जी० ॥ लावण्य रूप चातुर्य, प्रमुख गुण संपदा जीरेजी ॥ जी० ॥ धनधर्मी लक्ष्मीवती आदि, प्रमुख सुता कलिंग सुदा जीरेजी ॥ ३ ॥

जीरेजी ॥ जी० ॥ जनक विचारे ताम, श्रीजे कन्याने धनं
॥ जी० ॥ पामी यौवन वेल, मदन रमण नंदनवनं जीरेजी ॥ जी० ॥ जाणी ए वर ने योग्य,
जीरेजी ॥ ४ ॥ जी० ॥ श्रीचंद्र परे सौम्य, निरखीने मन चिंतवे जीरेजी ॥ जी० ॥
लक्ष्मीदत्त शेठ वीनवे जीरेजी ॥ ५ ॥ जी० ॥ लक्ष्मीदत्त पण तेह, वात सुणीने हरखीयो जीरेजी ॥ जी० ॥
निज सुतने ए योग्य, कन्यागण गुणे परखीयो जीरेजी ॥ ६ ॥ जी० ॥ शुभ दिन वेला लग्न, जाणी विवाह
मांमीयो जीरेजी ॥ जी० ॥ कन्या आठ उदार, जाणो रत्नाकरंकियो जीरेजी ॥ ७ ॥ जी० ॥ पाणिग्रहण
उदार, करावे एकण दिने जीरेजी ॥ जी० ॥ शोभे कुमर विशेष, आठ कन्या एके मने जीरेजी ॥ ८ ॥
॥ जी० ॥ कन्या आठे ते पाय, रति हृदये अंतर थकी जीरेजी ॥ जी० ॥ प्रतिबिंबाणी तेह, कांति कलाए
नरे नकी जीरेजी ॥ ९ ॥ जी० ॥ श्रीचंद्र पूरणचंद्र, सोल कला परे मनुप्रिया जीरेजी ॥ जी० ॥ कन्या शोभे
तेम, जेम इंद्रे जुंभकप्रिया जीरेजी ॥ १० ॥ जी० ॥ नित्य उदित श्रीचंद्र, देखी चंद्र कलंकित थयो जीरेजी
॥ जी० ॥ श्रीनिवास सुर ताम, श्रीचंद्रने वदने रह्यो जीरेजी ॥ ११ ॥

आठ कन्यानां तथा तेना पितानां अने मातानां नाम.

पितानां नाम.	मातानां नाम.	कन्यानां नाम.
१ धनप्रिय.	१ कमलसेना.	१ धनवती.
२ धनदेव.	२ कमलवती.	२ धनाइ.
३ धनदत्त.	३ कमलसिरी.	३ धारणी.
४ धनसार.	४ कमला.	४ धारकन्या.
५ धनेसर.	५ कनकावती.	५ लक्ष्मीवती.
६ धनगोप.	६ कुसुमसिरा.	६ लीलावती.
७ धनमित्र.	७ कनकादेवा.	७ लाछीबाइ.
८ धनचंद्र.	८ कोकिलदेवा.	८ लीलाइ.

जी० ॥ गणमणि माणिकभूमि, कुमर रोहणगिरि सारिखो जीरेजी ॥ जी० ॥ विबुधे अलंकृत सार, इंद्र परे

अन पारख्यो जीरेजी ॥ १२ ॥ जी० ॥ सुमनस नंदन वाणि, कंचनगिरि जाणे वमो जीरेजी ॥ जी० ॥ गंभीरम गुणे जलनिधि, अपरीकृत रह्यो ते जडो जीरेजी ॥ १३ ॥ जी० ॥ एणी परे गुणनी श्रेणि, आवी वश थिर जाणीने जीरेजी ॥ जी० ॥ दानादिक बहु पुण्य, करतो निज कुल जाणीने जीरेजी ॥ १४ ॥ जी० ॥ इत्यादिक गुण कोमी, जोम न कोइ ए समी जीरेजी ॥ जी० ॥ कहेतां नावे पार, जो मति होये सुरगुरु समी जीरेजी ॥ १५ ॥ जी० ॥ एक दिन हवे गुणचंद, साथे जाये पुर बाहिरे जीरेजी ॥ जी० ॥ क्रीडा काज कुमार, उद्यानेथी चढी वारणे जीरेजी ॥ १६ ॥ जी० ॥ सरोवर केरे तीर, पट आवासमां उतस्या जीरेजी ॥ जी० ॥ तुरंग विचित्रनी जाति, जाणे रवि रथथी विलख्या जीरेजी ॥ १७ ॥ जी० ॥ देखी ते अश्ववृंद, श्रीचंद गुणचंद प्रत्ये कहे जीरेजी ॥ जी० ॥ पूछ तुं एहनुं मूल्य, ए केहवा केहवुं लहे जीरेजी ॥ १८ ॥ ॥ जी० ॥ तिहां एक पुरुष छे वृद्ध, पूछ्यो तव एहवुं भणे जीरेजी ॥ जी० ॥ वेच्या तुरंग अनेक, तेहनी संख्या कोण गणे जीरेजी ॥ १९ ॥ जी० ॥ पण हमणां छे सोल, अश्व ते उत्तम जातिना जीरेजी ॥ जी० ॥ ते जोवाने कुमार, आवे मित्र संघातिना जीरेजी ॥ २० ॥ जी० ॥ मित्र कहे कहो स्वामि, कोण कोण उत्तम एहमां जीरेजी ॥ जी० ॥ तिहां लक्षणे प्रधान, आखे कुमर छे जेहमां जीरेजी ॥ २१ ॥ जी० ॥ गंगाजलनी जाति, उज्ज्वल वरण मुखे करी जीरेजी ॥ जी० ॥ तार्क्ष्य नाम ए जाति, अष्ट मंगल रेखे करी जीरेजी ॥ २२ ॥ जी० ॥ रक्त वरण कीयाह, वली खुगाह छे सामलो जीरेजी ॥ जी० ॥ चित्र वरण हाराह, घृत प्रज सराह ए निर्मलो जीरेजी ॥ २३ ॥ जी० ॥ कृष्ण वरण कांइ श्वेत, ए उराह हय जाणीये जीरेजी ॥ जी० ॥ कृष्ण जानु कांइ पीत, रोकनाह मन आणीये जीरेजी ॥ २४ ॥ जी० ॥ ए नीलक हय जाति, हरिक होलक सित पिंगला जीरेजी ॥ जी० ॥ ए पंचभद्रनी जाति, दोय अछे गति आगला जीरेजी ॥ २५ ॥ जी० ॥ हृदय पृष्ट मुख पाम, पुष्पित शुभ लक्षणे लिख्या जीरेजी ॥ जी० ॥ पंचम गतिये प्रधान, ए दोय उत्तम पारिख्या जीरेजी ॥ २६ ॥ जी० ॥ लाख सुवर्णने मूल, ए पण लेवा दोहिला जीरेजी ॥ जी० ॥ धोरित वल्गित प्लुत्य, एहवी गतिना सोहिला जीरेजी ॥ २७ ॥ एहवे नृप वर्गीय, राजकुमर आव्या तिसे जीरेजी ॥ जी० ॥ जोइ जोइ मौढ शरीर, इच्छाये लीधा जिसे जीरेजी ॥ २८ ॥ जी० ॥ पोपे तथा अध लाख, देइ

मूहय खेद गया जीरेजी ॥ जी० ॥ मांधा अने अति छप, नहीं तुरग त्रण तिहां रह्या जीरेजी ॥ २९ ॥जी०॥ वायुवेग महावेग, तुरग दो पंचनद जातिना जीरेजी ॥ जी० ॥ वेगवंत रथ योग्य, लक्षण जोड़ नातिनो जीरेजी ॥ ३० ॥ जी० ॥ हृदये विचारी ताम, कुमर ते हय दोय संग्रहे जीरेजी ॥ जी० ॥ लाग्य दोय सुवर्ण, मूहय देइने तेह निरवहे जीरेजी ॥ ३१ ॥ जी० ॥ आवे निज घर जाम, तेहवे कुलवृद्धे तेहने जीरेजी ॥ जी०॥ गाढ कहे गवि वात, आगलथी लही जेहने जीरेजी ॥ ३२ ॥ जी० ॥ अने त्रिविध गंगार, मित्र शत्रु उदासीनता जीरेजी ॥ जी० ॥ कहे कुमरो ए पुत्र, जूओ दक्षपणनी पीनता जीरेजी ॥ ३३ ॥ जी० ॥ राजकुमरे जे लीध, अश्व ते लघु मूहय मोह तनु जीरेजी ॥ जी० ॥ या महा मूहय लघु अंग, अश्व लीधा तुम गुण मनुं जीरेजी ॥ ३४ ॥ जी० ॥ जेह जनकनी आण, न करे ते सुत नहीं नतो जीरेजी ॥ जी० ॥ कीधो एम गोकार, कोणहीक नरे भरी आमलो जीरेजी ॥ ३५ ॥ जी० ॥ शेठ सुणी कहे एम, रे गाढे स्वरे शुं लवे जीरेजी ॥ जी० ॥ धन सुज घरे गवि जेह, ते एहनां नाग्य थशे हवे जीरेजी ॥ ३६ ॥ जी० ॥ एहनां पुण्य पगाय, धन ओछुं न होये कहे जीरेजी ॥ जी० ॥ कूर्पाकूपनुं नीर, थाये ओछुं जेम नहे जीरेजी ॥ ३७ ॥ ॥ जी० ॥ ज्ञानविमल सूरि एम, जाणे रागे जे प्रीतमी जीरेजी ॥ जी० ॥ लवयच सुणी मन नंग, न करे तेहनी धन गमी जीरेजी ॥ ३८ ॥ जी० ॥ सर्व गाथा ॥ ८०७ ॥

॥ दोहा ॥

एहवे कुमर वेर आवियो, प्रणमी तातना पाय ॥ कहे में पाजीसुग भला, ठन रूप्य ठहराय ॥ १ ॥ नलुं कर्युं सुत एम कही, आप्युं धन निज हाथ ॥ तुग तुरंगे आरोपियो, जेम मुकुटे रतनी जात ॥ २ ॥ पिता आदेशथकी तिहां, गाढ रतविचित्र ॥ सुवेग नामे रथ कारव्यो, जोतां नयन पवित्र ॥ ३ ॥ नृप सारथिना वंशनो, एक कुमर सुकुमाल ॥ नाम धनंजय सारथि, छद्मवंत दयाल ॥ ४ ॥ तेही स्वामिदिशे चाले, गंभीरम गुणयुक्त ॥ विनयी नक्ति अति घणो, प्रास परीक्ष जे छक ॥ ५ ॥ शुन मुहूर्त्त जोड़ करी, लेइ पिता आदेश ॥ मित्र सहित ते सारथि, रथनो कीध निवेश ॥ ६ ॥ पुण्यकारी दोय अश्वने, कर करमी सुकुमाल ॥ सूक्ष्मबुद्धि सुशिक्षितने, बांधे घूपरमाल ॥ ७ ॥ परखु नविन अद्भुत सुणे, दीठे मन सुप्रसन्न ॥

माये तेम नही तेहना, करता बहुल यतन ॥ ७ ॥ मनमां चिंते एहवुं, जोडजे रथ वेग ॥ पोता होवा वन जाणी, मावे जन उद्वेग ॥ ए ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

योगीसर चेलानी देशी ॥

॥ कुमर मित्रने सारथि रे, वेगा रथ करी सज्ज रे ॥ अवधेसा वारु ॥ अभ्यारीदा कारणे हो लाल ॥ मानुं त्रिवर्ग ए आपणी रे, धर्म अरथ काम सज्ज रे ॥ अ० ॥ जनक तणी आणा लही हो लाल ॥ १ ॥ निज नगरीथी नीसर्या रे, कोइ दिशि धरी मनमांहे रे ॥ अ० ॥ कौतुकने जोवा जणी हो लाल ॥ अर्ध प्रहरमांहे गया रे, पंचदश योजन थाहि रे ॥ अ० ॥ फरी आव्या पाछा घरे हो लाल ॥ २ ॥ एम सघली दिशिने विषे रे, मन इच्छाये जाय रे ॥ अ० ॥ सारथि रथ हय मानिधे हो लाल ॥ निशिदिन एम फिरता रहे रे, जोतां कीडा जाय रे ॥ अ० ॥ नयन करावे पारणां हो लाल ॥ ३ ॥ कदहीक कदही पूछे पिता रे, वेलातिक्रम हेत रे ॥ अ० ॥ अ० ॥ कहीने उत्तर दीये हो लाल ॥ बाहेर जीतर जोयतां रे, वाडी वन उद्यान रे ॥ अ० ॥ निशिदिन इच्छाये फिरे हो लाल ॥ ४ ॥ तुम पाखे जमवुं नहीं रे, तात कहे एम वाणी रे ॥ अ० ॥ करो कीडा मन मानते हो लाल ॥ कुमर कहे सुणो तातजी रे, ए युगति छे वात रे ॥ अ० ॥ शीघ्र रमीने आवशुं हो लाल ॥ ५ ॥ पण मुज इच्छा बाधते रे, नहीं रहे मनह समाधि रे ॥ अ० ॥ तुम आणा माहारे होजो हो लाल ॥ शेठ कहे हवे ताहरे रे, मन समाधि होये जेम रे ॥ अ० ॥ तेम लीला विलसो सदा हो लाल ॥ ६ ॥ रथ बेसी हवे एकदा रे, त्रिकूट पर्वते जाय रे ॥ अ० ॥ तिहां जैरव योगी थके हो लाल ॥ पद्मासने बेठो तिहां रे, दुर्यो तरुण जाणी रे ॥ अ० ॥ वत्स तुं लघुवय देखीये हो लाल ॥ ७ ॥ वत्सराजरो शोजीये रे, सोवनरथ हय जोडि रे ॥ अ० ॥ दुष्ट विषम अटवी महा हो लाल ॥ केम एकाकी आवीयो रे, कहे योगी गुण वात रे ॥ अ० ॥ कहे कौतुकने कारणे हो लाल ॥ ७ ॥ तुम सरिखाना प्रजावथी रे, जय न होये कोइ ठाम रे ॥ अ० ॥ साहसिक जाणी करी हो लाल ॥ कहे जैरव श्रीचंदने रे,

उंघर गाधक थाय रे ॥ अ० ॥ कुमरे वयण ते उनयुं हो लाल ॥ एकलो ते पाले रही रे, विधिशुं करे आहूति रे ॥ अ० ॥ कहे योगी हवे तेहने हो लाल ॥ १० ॥ रे धातक इहां आवशे रे, अनेक वीर वैताल रे ॥ अ० ॥ विश्वासुं नवि केहथी हो लाल ॥ धर्य धरी कहे गांजलो रे, नहीं इहां कोइ परवाह रे ॥ अ० ॥ तुं जेम जाणो तेम साधजो हो लाल ॥ ११ ॥ योगी कहे में परखीयो रे, साहसिक शिरदार रे ॥ अ० ॥ दुश्मन जोरो तुझे तुज सत्त्वथी हो लाल ॥ धुत्तीय अंधकारणी रे, लिये तुं गुटिका एह रे ॥ अ० ॥ दुश्मन जोरो नवि चाले हो लाल ॥ १२ ॥ महा प्रसाद करीने लीये रे, श्रीचंद्र गुटिका तेह रे ॥ अ० ॥ पाय नमी योगी नमा हो लाल ॥ आज्ञा पामी तेहनी रे, आवे निज पुर काज रे ॥ अ० ॥ मनमांहे हरख्यो घणुं हो लाल ॥ १३ ॥ नाग नाम क्रीडा करे रे, कुमर नगर घरे नित्य रे ॥ अ० ॥ एम सुखमांहे दिन जोगवे हो लाल ॥ किहां विद्या किहां औषधि रे, किहां विषहर मणि जोग रे ॥ अ० ॥ पामे पुण्य प्रसादथी हो लाल ॥ १४ ॥ नय नवि गमु प्रशस्तना रे, आवी मले समुदाय रे ॥ अ० ॥ मित्र रत्नीना योगथी हो लाल ॥ पुण्ये सघली संपदा रे, पुण्ये वंछित जोग रे ॥ अ० ॥ पुण्ये अणचिंतित फले हो लाल ॥ १५ ॥ ए श्रीचंद्र चरित्रनो रे, एम पहेलो अधिकार रे ॥ अ० ॥ ज्ञानविमल सूरे जाखीयो हो लाल ॥ आनंदमंदिर एहनुं रे, नाम ते रासनुं एह रे ॥ अ० ॥ जणतां गणि मंगल हुवे हो लाल ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ ७३२ ॥

इति श्री श्रीचंद्रकेवलिचरित्राधिकारे बालबंधआनंदमंदिरनाम्नि रासबंधे, १ श्रीपार्श्वनाथप्रणाम, २ श्रीगौतमस्वामिगणधर विशालानगरीपादधारण, ३ श्रीचेटकमहाराजवंदनागमन, ४ श्रीदेशनाकथन तपोमाहात्म्ये श्रीश्रीचंद्रकेवलीकथाकथन, ५ कुशस्थलनगरवर्णन, ६ व्यवहारीआगमन, ७ दीपशिखानगरीवर्णनश्रवण, ८ श्रीप्रतापसिंहनृपस्य तत्र गमन, ९ चत्वार विशिष्ट पुरुषमिलन, १० सूर्यवतीपाणिग्रहण, ११ सूरपल्लीजीतण, १२ तत्र सूर्यपुरनगरस्थापन, १३ चार विशिष्ट पुरुषवरीक्षामापण, १४ पश्चान्नगरं प्रतिचलनं, १५ धरणगणकसमागमन, १६ जयादिकुमरनिमित्तप्रश्न, १७ धरणगणकस्वयकथ्यवाकथन, सिद्धाचलगमन, १८ तदनंतरं सूर्यवतीस्वप्नदर्शन, १९ श्रीप्रतापसिंहनृपस्य गर्भमहामहोत्सवनिग्रहण, २० जयादि कपटरचनाकरण, २१ सूर्यवतीगर्भरक्षण, २२ गोत्रदेवीवचनकथन, २३ लक्ष्मीदत्तश्रेष्ठिगृहे पुत्रप्रापण, २४ जन्ममहोत्सवनामादिकरण, २५ सारिकाख्यपाठिकमहोत्सवे निदानवरण, २६ राज्ञ आगमन, २७ कणकोटपुरदेयाण, २८ कलापठन, २९ अष्टकन्यापाणिग्रहण, ३० हयमूल्यग्रहण, ३१ रथर्पुजन, ३२ विविधक्रीडाकरण, ३३ अनेकविशिष्टवस्तुलाभप्रापण, इत्यादि कथाकथनगुणमयानुनयनस्वरूपमयः प्रथमोऽधिकारः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीद्वितीयोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ जय जय तुं जगदीश्वरी, जगदंबा जगमाय ॥ श्रीजिनमुखकज वासिनी, शारद मात कहाय ॥ १ ॥ तुं त्रिपदी त्रिपुरा तथा, तुं त्रिरूपमय देवी ॥ शक्ति सरूपे खेलती, नवनव रूप धरेवि ॥ २ ॥ जे त्रिभुवनमांहे तिहुं पदे, ते सवि तुम्ह आकार ॥ नित्य अनित्य ने उन्नय वली, नित्यानित्य विचार ॥ ३ ॥ आदि शक्ति तुं जिनवरी, तुं त्रिकाल स्थिर जाव ॥ ते प्रणमीने सरसति, अद्दर ज्ञान प्रजाव ॥ ४ ॥ हवे श्रीचंद तणो कहुं, बीजो जे अधिकार ॥ सांजलतां सुख उपजे, वारु डे विस्तार ॥ ५ ॥ निजावासमां अन्यदा, बेठा मित्र कुमार ॥ गोखे जोप धरी जोवे, दोलाखेलन सार ॥ ६ ॥ अति मोहोटे आडंबरे, तूर ने नाद विचित्र ॥ हय गय रथ पायक बहु, परवरिया नृप पुत्र ॥ ७ ॥ जयादिक चारे कुमर, देखी पूछे जाम ॥ ए कोण आडंबर कियो, जाये डे किण गाम ॥ ८ ॥ तव गुणचंद्र कहे इश्युं, जाणे सघली वात ॥ स्वामिन ए कौतुक तणुं, निसुणो मनु अवदात ॥ ९ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ रामचंदके बाग, चांपो मोरी रह्यो री ॥

॥ ए देशी ॥

॥ दक्षिण दिशिने जाग, ललित लखाम गमुं री ॥ तिलकपुर डे नयर, वैर विरोध वम्युं री ॥ १ ॥ श्रीतिलकाजिध राय, पायक कोडी गमे री ॥ रतिकारक रति नाम, घरणी धरणी गुणे री ॥ २ ॥ तिलकमंजरी नाम, ... ॥ पामी योवन जाव, संपति देह ... री ॥ ३ ॥ ... ॥ ४ ॥ ...

आणी दर्प घणो री ॥ ६ ॥ स्वयंवर मंडप तुंग, मांहे नगरीपति री ॥ कंकोतरी मषि ठाम, मेहले करी मीन-
ति री ॥ ७ ॥ आव्या बहु राजान, मानवर्वृंद महया री ॥ कौतुक जोवा हेत, जाये न केणे कह्या री ॥ ८ ॥
ए जयादि कुमार, ते पण तिहां जावे री ॥ त्रहि आडंबर साथ, माहामा ते आवे री ॥ ९ ॥ गुणुहर्षनो दिन
शुक्ल, आजथी गणर दिने री ॥ पंशी योजन ने दूर, नयर ते नहीय कन्हे री ॥ १० ॥ एहवी सघळी वात,
श्रीगुणचंद्र कहे री ॥ उदेशी श्रीचंद्र, मित्र पवित्र लहे री ॥ ११ ॥ लक्ष्मीदत्त पण शेठ, कहे गुणचंद्र भते री ॥
राधावेध विधान, देखेन कोइ कवे री ॥ १२ ॥ श्रीचंद्र पूछी जोय, जेम मन पोंश हुवे री ॥ तेम इच्छा पुरेवि,
एहवुं वचन लहे री ॥ १३ ॥ तेह जाणाव्युं सर्व, कुमरने कर्ण धरी री ॥ सत्यवंत मतिवंत, पितु आदेश करे
री ॥ १४ ॥ दिवस गया जब सोल, कुंकुमरोल जिस्यो री ॥ संध्या समये ताम, सारथि मित्र वस्यो री ॥१५॥
रथ वेगी चित्त धारी, पुर ते संमुख जणी री ॥ न लहे कोइ तस भेद, वेदने जेम गुणी री ॥ १६ ॥ पूछुं न
कांइ कुटुंब, छवंबे पुरवी वणी री ॥ गिरि वन सर पुर नयर, उलयवरात नदी री ॥ १७ ॥ पूर्व दिशे जेम सूर,
आवी उदय करे री ॥ तेम प्रभाते श्रीचंद्र,नयर ते नजरे धरे री ॥१८॥ मूकी रथ उद्यान,मित्रने साथ लेइ री ॥
मंडप राधावेध, कर्यो छे वेगो तिहां री ॥ १९ ॥ नृपवर्गकुल ते ठाम, मंचोन्मंच घणा री ॥ सवक पुलक गवि लोक,
थोके थोक जणा री ॥ २० ॥ थंभ छे एक उत्तंग, उपर चक्र फरे री ॥ अवळां सवळां आठ, पूतळी एक धरे री ॥२१॥
तेहनुं राधा नाम, वेधे ते वाम हणे री ॥ जोवुं तस प्रतिबिंब, तेलना कुंभ वशे री ॥२२॥ ऊर्ध्वमुष्टि अधोदृष्टि,
धनुषमां तीर धरे री ॥ चक्रमध्य थइ तीर, वेधे सत्य करे री ॥ २३ ॥ जे भाग्याधिक होय, ते कन्या कीर्ति
वरे री ॥ संप्रति समये तेह, त्रिभुवनमांहे शिरे री ॥ २४ ॥ वाजे तूर ने नाद, साद न कोइ सुणे री ॥
वेत्रिणी राजावंश, जाले जेह गुणे री ॥ २५ ॥ तिलकमंजरी स्त्रीरत्न, आवे जेण समे री ॥ स्वयंवर मंडपमांहे,
नृप मन सर्व रमे री ॥ २६ ॥ वरमाला लेइ हाथ, दक्षिण पास रही री ॥ निरखे नृपना रूप, चित्तनी वृत्ति
लही री ॥ २७ ॥ श्रीषेण ने हरिषेण, प्रमुख नृपाल महया री ॥ उठ्या साधिने एक, तिणथी कोइ न टह्या री
॥ २८ ॥ धनुर्विद्या अभ्यास, करता देखी लक्षा री ॥ कन्याये लक्षि तेह, देखत पाप फला री ॥ २९ ॥
देखाडी बहु प्राण, नाखे बाण घणां री ॥ हास्यरसे संग्राम, तेहनी न रही मणा री ॥ ३० ॥ केइ वाये
करताल, नाखे अंगुली दीये री ॥ कोइ न साधे वेध, जे कीर्ति कन्या लीये री ॥ ३१ ॥ लज्जावक्रिम गात्र,

॥ २१ ॥

...ने गुणी कहे री ॥ जयादिक सुकुमार, निज मद दूर वहे री ॥ ३२ ॥ कामराज वामांग, शुजगांग ...गणिपति री ॥ श्रीगत ने परचंड, धन्नी कीर्ति हती री ॥ ३३ ॥ एक चक्रनो वेध, नरवर्म नृप करे री ॥ पहवे जोगुं धाण, जिसगुं पदन धरे री ॥ ३४ ॥ दुष्कर कार्य ए देखी, दश ते वेमी रह्या री ॥ ज्ञानविमल मतिवंत, ते छात्रक न काया री ॥ ३५ ॥ ४४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम देखी सवि भूपनो, विक्रम शारद घनगाज ॥ वहु बोला पण ए नहीं, वहु मोला नवि राज ॥ १ ॥ श्रीतिलक राजा तिहां, तिलकमंजरी ताय ॥ सवि परिजन चिंतातुरा, तेम कन्या उवज्झाय ॥ २ ॥ हवे शुं ...भीपत्रशे इहां, मूढ सचिवनां वृंद ॥ एम देखीने बोलीयो, जहराज एक मुकुंद ॥ ३ ॥ धन्नी मान धरे जिको, ...मे गुणजो राजान ॥ जे होये ते थाजो प्रगट, साधे जो सावधान ॥४॥ एम सुणी गुणचंद्र सख, कहे श्रीचंद्रने ...एम ॥ था अवसर नीको अछे, राधा वेधे जेम ॥ ५ ॥ अवसर लेइने चूकीये, तो शी निपुणता तास ॥ जे अवसर चूके नहीं, तेहना कीर्ति विलास ॥ ६ ॥ स्वामी तुमे सुपरिचित कर्यो, ए विद्या अभ्यास ॥ कृपा करी ते अग जाणी, देखावो सुविलास ॥ ७ ॥ जरिया ते छलके नहीं, जेह उंडा ने अगाध ॥ ते नर तो बिरला अछे, पुहवी मंगल लाध ॥ ८ ॥ मित्रे प्रेर्यो वहु परे, तव श्रीचंद्र कुमार ॥ सार पोतानुं पोरवे, कहीये ते अधिकार ॥ ए ॥ सर्व गाथा ॥ ५३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

फाग धमालनी देशी ॥

॥ सकलकलानिधि श्रीचंद्र कुंअर, आवे थंभ समीप ॥ शुद्ध भूमिका नजर धरीने, हरखे पुलित जेम ...नीप ॥ १ ॥ सोजागी सज्जन सांजलो हो ॥ अहो मेरे प्यारे, सुंदर सहज सुकुमाल ॥ सो० ॥ ए आंकणी ॥ गज्ज थइने नमी निज गुरुने, भमि धनुष ने तीर ॥ गुणे जोमीने करे टंकारव, गाजे जेम जलनिधि नीर ॥ सो० ॥ २ ॥ शास्त्र रीते विधि सम्यक् कीधो, लीधी प्रतिज्ञा चित्त ॥ लघु कलगुं राधावेध साधे, चाधे नय ...नृपति चित्त ॥ सो० ॥ ३ ॥ ...

गाता, मंजु तव करा। अम ॥ गो० ॥ ४ ॥ [illegible]
फेहनो सुत सुकुलीणो, पोहीया तिहां राजान ॥ गो० ॥ ५ ॥ तिहां मंगाई जननो पहु सूते, अवगर पामी
नेह ॥ मित्र कुमर जनगण चढ़ने, श्रीगरी गया पनजेह ॥ गो० ॥ ६ ॥ मित्र कहे स्वामी थिर थाजो, पूरो
मनोरथ सर्व ॥ निज पुत्र रूपे कर्यो कन्या मह, गई गर्वित जन गर्व ॥ गो० ॥ ७ ॥ कहे श्रीचंद मित्र प्रते
एहवुं, न घटे पतिगत काम ॥ गिनादेस तिणे इहां आव्यो छुं, जाणो जो पवि मान ॥ ८ ॥ तो इहां विलंबनो
समय नथी छे, गमन जइये आज ॥ एम कहीने रथ पेली चाढया, निज पुर आवण काज ॥ गो० ॥ ९ ॥
इति गयो तिहां मायन लोक, जोवणीयो ते कुमार ॥ पूर्व जायके दाख्यो न रहे, कुसुम पल्लित [illegible]
॥ गो० ॥ १० ॥ श्रीकुशस्थलपुरे लक्ष्मीदत्त, व्यवहारीनो नंद ॥ आज कन्यावर धीर उदारह, नामथी
कुमर श्रीचंद ॥ गो० ॥ ११ ॥ सकलकला श्रीगुणधर पाठक, पासे शीखी जेण ॥ नाम सुवेगरथे वेग तुरंगा,
पवन परे चातुर्येण ॥ गो० ॥ १२ ॥ श्रीप्रतापसिंह नृपति अर्पित, कणकोट पुर लोयेण ॥ ते श्रीचंद कुमर
ए जाणे, वाग्यो वाजा जनश्रेण ॥ गो० ॥ १३ ॥ चतुर्थः चरित्रे ॥ गिरुआ गुणधर पाठक, सकलकला जेण गि-
खिलया निकला ॥ दुर्लभ लागणचंद, रमणो जो जगत गिरिनंदो ॥ १ ॥ जाण सुवेग रहिया, अश्वगण
पवनवेग सहेवा ॥ निकलो गदीण कणकोट, देशपति गिरिनंदो ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ दर्पे श्रीतिलक नृपति
कहे पहुं, दाखो एह कुमार ॥ ते सुणी गजरथ दश मेलावे, जावे जेम पुरुषी पार ॥ गो० ॥ १४ ॥ वायु-
वेग परे चालता जावे, न मिले पाछा कोइ ॥ चमत्कार पाम्या नृप पोते, अहो अहो साहसिक जोड़ ॥ गो०
॥ १५ ॥ दुष्कर कीधुं दुष्कर जाणुं, कहुं कांइ न जाय ॥ पाछा गया ते पाछा आव्या, विनवे तिलक नृप
नाम ॥ गो० ॥ १६ ॥ इम निसुणी राजा दुःख पाम्यो, कन्या पण मुरझाय ॥ करे विलाप शीतल उपचारे, हा
नाम हा जाय नाथ ॥ गो० ॥ १७ ॥ रागावेगने सुज हृदयनो, मेघ करण सुनगेह ॥ पति मुजने जो मूकी जावे,
तो मुज अनला देह ॥ गो० ॥ १८ ॥ एम विलाप करती ते कन्या, देखीने कहे ताम ॥ जयादिक सवि
कुमर तिहां किण, पोहोतो अम नयरी निज धाम ॥ गो० ॥ १९ ॥ अवश्य जितावे कणकोट नगरनुं, दीधुं जे
नरेश ॥ वस्त्रादिकनी योग्यता देते, लक्ष्मीदत्तनो सुत अत्र ॥ सो० ॥ २० ॥ कन्या शीघ्र तिहां मोकलीये, वलीयो
जोवे नाथ ॥ ते निसुणी राजादिक हरख्या, पकवाने दीधे जेम हाथ ॥ गो ॥ २१ ॥ इम गज रथ ने वस्त्र विचः

वाग, अग्निमालिकने रक्त ॥ आपी नवि राजा संतोष्या, निज निज पुरे जावे यक्त ॥ सो० ॥ २२ ॥ निरखकन्या कन्याने लावे, पुत्री मकर विलाप ॥ नयर कुशस्थळे गुज्ज वछ्छ छे, मेळी दासुं संताप ॥ सो० ॥ २३ ॥ एम विचार करी मेहले कन्या, मेहले सचिव कहे स्वामि ॥ एक विचार सुणो ते दासुं, दासुं नहि स्वामीशुं काम ॥ सो० ॥ २४ ॥ गुज्ज सेवक गयो अपने उतारे, तिहां मळीया जे मूढ ॥ एह विचार कर्यो छे तेणे, मीठा भुग हृदयनो गूढ ॥ सो० ॥ २५ ॥ आपणा चाकरनो ए चाकर, तेणे कर्यो राधावेध ॥ लज्जाव्या आपणने राजाना, अणपरणे गयो दुर्वेध ॥ सो० ॥ २६ ॥ जाग्य आपणुं जे एहने एहवुं, गयो चित्तमां धार ॥ तिहां आवी कन्या आपणथी, केम जाशे निरधार ॥ सो० ॥ २७ ॥ एही विचार सुण्यो ते दास्यो, ते जणी करीये विचार ॥ कन्याने इहां राखी तेकया, मोकलीये शीघ्र कुमार ॥ सो० ॥ २८ ॥ धीर नामे मंत्री जे मोहोटो, बुद्धिवंधी सावधान ॥ ते मोकलीने कुमर तेडावो, जेम होये बहु मन मान ॥ सो० ॥ २९ ॥ हवे कुमर तुरत निज नयरी, आव्यो बीजे दिन ॥ वियोगथी बाहेर जोवाने, मोकल्या निज नर धन्य ॥ सो० ॥ ३० ॥ बीज चंद जेम कृश निर्मळ तनु, निरखी पामे हर्ष ॥ रथथी उतरी पिता पद प्रणमी, पामीयो परम उत्कर्ष ॥ सो० ॥ ३१ ॥ निज वस्त्रांचले सुत तनु मांजे, जांजे विरह वियोग ॥ वेळातिक्रम कारण पूछे, कहे प्रभु कौतुक योग ॥ सो० ॥ ३२ ॥ सुणी शेठ सुत वचन रसाळां, मौन करी कहे पुत्र ॥ सपरिवार साथे घर आव्यो, जाण्यो नवि परतणुं सूत्र ॥ सो० ॥ ३३ ॥ जेम श्रीचंद्र कहे तेम गुणचंद्र, दाखे सघळी वात ॥ जेम ध्वनि पडछंदे होवे वमणो, अवर कांइ नवि लहे तात ॥ सो० ॥ ३४ ॥ हवे केताइक दिनने अंतरे, आवे जयादि कुमार ॥ राधावेध संबंधनो विस्तार, जावे नृप आगळ सार ॥ सो० ॥ ३५ ॥ चमत्कार चित्त पाम्यो नृपति, साधु साधु कहे पाण ॥ आर नगरवासी शेठ नंदने, साधियो वेध सुजाण ॥ सो० ॥ ३६ ॥ रूप कांति गुण एहनो अधिको, अद्भुत धनुष कळाय ॥ ज्ञानविमळ गुरु एहनो धन धन, जे लह्यो सुजश समुदाय ॥ सो० ॥ ३७ ॥ सर्वगाथा ॥ ९० ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे राजा एणे आपणो, कीधो अम विस्तार ॥ ए कुमरे ए मापले, अम लह्या जयादि कुमार ॥ १ ॥

तेह कुमर ने माहरा, ए ने शहनो नंद ॥ माहारे तो बहु गोरखी, पाम्यो बहु आनंद ॥ २ ॥ कुंवर ए मारो
थकां, राख्युं माहारुं नाम ॥ यश संयुत देशदेशमां, सीधां वंछित काम ॥ ३ ॥ कोण पासे क्यारे एणे, शीखी
कला अनेक ॥ लघु पण अलघु पराक्रमी, अहो गंभीर विवेक ॥ ४ ॥ मंत्रीराज वली वीनवे, सुणो एक अच-
रिज वात ॥ श्रीचंद्र क्यारे तिहां गया, आव्या क्यारे भ्रात ॥ ५ ॥ दीसे ने निल्ये इहां, शेठ पुत्र गुण सत्र ॥
मुज न्हाइ नंदन अछे, ते तस मित्र पवित्र ॥ ६ ॥ एम सुणी नृप अचरिज धरी, तेडे तिहां गुणचंद्र ॥ पुत्र
सहित लक्ष्मीदत्तने, सचिवपें थइ वितंद्र ॥ ७ ॥ पूर्वे पण शेठे सुण्यो, जनमुखथी संबंध ॥ उत्संगे धरी पुत्रने,
पूछे करी निर्बंध ॥ ८ ॥ वत्स वार पोहोरे गयो, तिलकपुरे करी काज ॥ फिरी आव्यो ते सवि कहो, केम
महीया सवि राज ॥ ९ ॥ लक्ष्मीवती पण मायडी, कहे आवडी वात ॥ हर्ष नीरशुं सींचती, कहे सुत शी
तुज धात ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ १०० ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ पूत न कीजे रे साधु वेरागरूो ॥ अथवा अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

॥ वयण सुधानां वयण सोहामणां, जाणे लाज न राखेजी ॥ जिन गुरु मात पिता नृप आगले, संत ते
साचुं भाखेजी ॥ १ ॥ पुत्र कहे सुणो तातजी माहरा, ए सवि तुज प्रसादोजी ॥ सरोवर जल जे पयोने उप-
करे, ते सवि जल प्रसादोजी ॥ पु० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ पुण्य प्रभावेजी रथ तेहवो मल्यो, सारथि मित्र
संयोगजी ॥ अश्वरतन पण वेग विशेषता, तेहनो मलियो योगजी ॥ पु० ॥ ३ ॥ एक दिवसमां शत योजन
जइ, फिरी आवे ए शक्तिजी ॥ ते कारणथी गमनागमननुं, एहवी मंत्रनी शक्तिजी ॥ पु० ॥ ४ ॥ हर्षित हृदय
थइ माता पिता, सुतने एह विचारजी ॥ राधावेध ए किम तें साधियो, कन्या प्राप्ति उदारजी ॥ पुत्र० ॥ ५ ॥
करमह मूकी तरत इहां आवयुं, ए सवि कथा विस्तारजी ॥ गुणचंदे ते सघलुं दाखव्युं, विस्मित हृदय मकारजी
॥ पु० ॥ ६ ॥ तुम पूछ्या जाण्या विणुं केम होये, पाणिग्रहण संबंधजी, गिरुआ ने गुरु आणा बाहिरो, न होये
कार्य प्रबंधजी ॥ पु० ॥ ७ ॥ ते कारणथी तुरत आवीया, कोइ न लहे तस अर्थजी ॥ हवे पाछलथी रे
नृप कन्या मंत्री, प्रमुख आवेया समर्थजी ॥ पु० ॥ ८ ॥ शेठ सुणी सुतनी शंसना, अहो गांभीर्य निरीहाजी ॥

गुरुजन जक्ति करे अति आदरी, धन धन पहेला दीहाजी ॥ पु० ॥ ९ ॥ आप मंदीरे निज पुत्र नगी करे, नही नृप कवीनो खोटजी ॥ मित्रनो योग अडे पण तेहवो, अहो निज रहिनो श्रोतजी ॥ पु० ॥ १० ॥ शेठ तणु घर उत्सवमय थयुं, हर्ष तणी पुणी वातजी ॥ गीत गान दान मानादिक घणां, धन धन मात ने तातजी ॥ पु० ॥ ११ ॥ जय जय जीव चिरं बहु नंद जो, दीये एम बहु आशीषजी ॥ मंगल तोरण द्वारा पूर्णना, नादादिक बहुल अगीशजी ॥ पु० ॥ १२ ॥ एम उत्सव करी सहु जन घर गया, श्रीचंद्र पण निज गेहजी ॥ कोट बाहेर जे श्रीपुर वासीयो, तिहां निवसे सुसनेहजी ॥ पु० ॥ १३ ॥ पूरव परे वली मित्र साथे करी, रथ बेसी संचरयेजी ॥ शुज शकुने प्रेरयो पश्चिम दिशे, उदेशीने जायजी ॥ पु० ॥ १४ ॥ हवे बीजे दिवसे उत्सव करे, शेठ आपणे गेहेजी ॥ तेहवे आव्या सचिव नरोत्तमा, कुमर आकारण नेहेजी ॥ पुत्र० ॥ ॥ १५ ॥ चामर छत्र तुरंग रथ गजवरा, राज तणां जे चिह्नजी ॥ नृप आदेशे रे शेठ तणे घरे, आव्या करवा संबंधजी ॥ पुत्र० ॥ १६ ॥ शेठ कहो तुम पुत्र किहां अडे, दाखो ते अम ठामजी ॥ राज चिह्न शोजाये अति घणुं, शोजावीजे धामजी ॥ पुत्र० ॥ १७ ॥ हर्षित शेठ सुत जोवरावीयो, गयो क्रीमणने काजेजी ॥ मित्र सहित ए पूरवली परे, आवशे हवे आजेजी ॥ पुत्र० ॥ १८ ॥ ते मंत्रीसर शेठ सवें मली, लेइ जेटण बहु डव्यजी ॥ प्रतापसिंह नृप पासे आवीया, कहे वृत्तांत सुजव्यजी ॥ पु० ॥ १९ ॥ शेठे दाख्यो रे निज सुतनो सवि, विस्तरथी अवदातजी ॥ राजा हर्ष्यो चित्तमांहे घणुं, अहो अहो एह सुजातजी ॥ पुत्र० ॥ २० ॥ राजा पण कहे मांजलुं में हतुं, जनमुखथी ए उदंतजी ॥ जाग्यवंत ए कुमर ठे तुम तणो, ए महोटो मतिवंतजी ॥ पुत्र० ॥ २१ ॥ क्रीमा करीने रे घरे आवे यदा, मेलवजो मुज पासेजी ॥ मुज सुतथी पण अधिको एहने, जाणुं हुं एह विश्वासेजी ॥ पु० ॥ २२ ॥ शेठे मूकी जेट ते संग्रही, आपे बहु सत्कारजी ॥ नृपने प्रणमी रे सवि घर आवीया, शेठ मंत्री परिवारजी ॥ पु० ॥ २३ ॥ हवे श्रीचंद्र कुमर वनमां गया, मध्यरयणीनी वेलाजी ॥ निजानु तिहां कोइक तरुतले, सूतो ठे धरी खीलाजी ॥ पु० ॥ २४ ॥ रथ सारथिने रे मूकी एकगमा, पायरी मित्रनुं यत्नजी ॥ सुखे सुतो रे मित्र ठे जागतो, पासे राखी शस्त्रजी ॥ पु० ॥ २५ ॥ तेणे समे ते तरु शाखा उपरे, निवसे शुक शुक एकजी ॥ कुमर ते जाणो रे निरखीने कहे, शुक प्रत्ये शुकी सुविवेकजी ॥ पु० ॥ २६ ॥

॥ पु० ॥ २७ ॥ गुरु फल आपे रे राज लहे नहुं, लघुथी सचिवपद होयजी ॥ प्राहुणा नोके ए आपणे कीजीये, निरखो नर होयजी ॥ पु० ॥ २८ ॥ एम कही थेगे जइ फल आणीयां, तम आगल ते मूकेजी ॥ संत न होये रे सूने मन रहा, अवसरे शुन नवि चूके रे ॥ पु० ॥ २९ ॥ कीर मिथुन हमी अन्य थने गयुं, फलयुग गुणचंद्र लेयेजी ॥ कुमरने आगले ते फल ढोइयां, लीये करमां स्वयमेवजी ॥ पु० ॥ ३० ॥ शुक व्यतिकर सघलो तिहां दाखव्यो, फल गुण नाख्यो तामजी ॥ हर्ष धरीने रे मित्र प्रत्ये कहे, किहां ते शुकनुं गामजी ॥ पु० ॥ ३१ ॥ ते फल लेइने तिहांथी चालीया, वेसी रथे पंथे जायजी ॥ आगल जाते रे सर एक आवीयुं, तिहां मध्य गमय ते थायजी ॥ पु० ॥ ३२ ॥ प्रातः समयनी रे नवि करणी करी, पावन करी निज देहजी ॥ ॥ गुरु फल आपे रे विधिशुं जोगव्युं, लघु यहेंथी वेयजी ॥ पु० ॥ ३३ ॥ तम पासे एक नंदनवन जिस्युं, वन एक छे अनिरामजी ॥ ते जोवाने कुमर तिहां गया, सरम समाय गुठामजी ॥ पु० ॥ ३४ ॥ जोतां जोतां रे वन शोभा तणी, पशु पशु जाति विनोदजी ॥ ज्ञानविमल गुरु तिहां, मुनि निरखीया, वाध्यो मननो प्रमोदजी ॥ पु० ॥ ३५ ॥ सर्व गाथा ॥ १२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांत दांत अंतर धरि, निर्विकार परिणाम ॥ क्रियावंत संयम गुणे, चरण करण अनिराम ॥ १ ॥ दयावंत षट्कायना, मैत्रिपवित्रित काय ॥ अप्रतिबंध वायु परे, करे विहार अमाय ॥ २ ॥ ध्यान धरे त्रिकरण-पणे, ते देखी मुनिराय ॥ परम प्रमोदे प्रणमिया, पूज्य तणा तिहां पाय ॥ ३ ॥ तीरथ जंगम साधु छे, तस दर्शन ते पुण्य ॥ मनमांहे एम चिंतवे, आज थयो हुं धन्य ॥ ४ ॥ बेठो यथोचित आगले, मुनि निरखे धरी नेह ॥ नरक तिर्य नवि गती, एक जीव दीय देह ॥ ५ ॥ धर्माशीषपूर्वक दीये, अति उपदेश रसाल ॥ दुर्लभ मानवभव लह्यो, जेम मरुमां सुरसाल ॥ ६ ॥ कर्मनूमि वली आर्य ए, जनपद जाति कुलवंश ॥ तनु पटुता गुरु आर्यनी, सामग्रीना अंश ॥ ७ ॥ सांजलवुं आगम तणुं, सद्दहणा रुचि सार ॥ आदरवुं अंगे करी, ए दुर्लभ आचार ॥ ८ ॥ ए पामीने नवि करे, आदर जिनवर पंथ ॥ नरनव एले गमावीयो, जेम अजगले थण पलिमंथ ॥९॥ एम जाणीने नविजना, धारो शुधो धर्म ॥ धर्म विना नवि पामीये, शिवगति केरुं शर्म ॥१०॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ राग धोरणी ॥ वैरागी थयो ॥ ए देशी ॥

कहे मुनिवर तुं योग्य छे रे, धर्मधुराने काज ॥ धरवाने धोरी समो रे, पडिवज समकित आज रे ॥१॥ कुमर शिरोमणि॥ लक्षण लक्षित देह रे, जेणी परे दिन मणि॥ दीपे जे गुणगेह रे, धर्म चिंतामणि॥ ए आंकणी॥ नृप तणो तुं पुत्र छे रे, वली पामीश वर राज ॥ ए लक्षणथी जाणीये रे, नमशे पद बहु राज रे ॥ कु०॥ २॥ नृत्रोन्नत तुज शिर अछे रे, छत्रपति तेणे हेत ॥ उन्नति वंशनी शोभती रे, वृक्ष पृथुल मतिवंत रे ॥कु०॥ ३॥ धर्मरत्न पण ते धरे रे, जे शुभ लक्षण गात ॥ सर्व थकी उपगारीयो रे, समकित रत्न सुजात रे ॥ कु० ॥ ४ ॥ अथ देववर्णनं ॥ सर्व नाव सवि परे लहे रे, जित रागादिक दोष ॥ त्रिजगमां हितकारियो रे, ते देव कृत नवशोष रे ॥ कु० ॥ ५ ॥ वचन यथास्थितने वदे रे, करे पण तेह आचार ॥ एहवा देवने आदरे रे, करे अपरां परिहार रे ॥ कु० ॥ ६ ॥ ध्यावो एहिज सेववो रे, शरण त्राण गुणी एह ॥ मोक्ष मूल कारण अछे रे, एहयो देवनो देव रे ॥ कु० ॥ ७ ॥ अथ गुरुवर्णनं ॥ पंच महाव्रत धारको रे, निरवद्य मधुकर वृत्ति ॥ लाभ अलाभे जे समो रे, नहीं हीणी चित्तवृत्ति रे ॥ कु० ॥ ८ ॥ निराशंस धर्म आदरे रे, उपदेशे पण तेह ॥ कपट पटव लटपट नहीं रे, गुणमय छे जस देह रे ॥ कु० ॥ ए ॥ अथ धर्मवर्णनं ॥ निर्दोषी देवे कह्यो रे, निःस्पृह गुरु धरे अंग ॥ दुर्गति पडतां जंतुने रे, अवलंबन करे तुंग रे ॥ कु० ॥ १० ॥ क्षांत्यादिक दश नेद जे रे, संयम सत्तर प्रकार ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र छे रे, तेहिज धर्म आधार रे ॥ कु० ॥ ११ ॥ इति सम्यक्त्वं ॥ ए समकितनां अंग छे रे, तत्त्व त्रय निरधार ॥ निश्चयथी लख ल्ये रे, समकित गुण निर्धार रे ॥कु०॥१२॥ एम अनादि संसारमां रे, नवी लाधुं एह रत्न ॥ तिहां लगे जीव रुले घणुं रे, लेखे न कांय प्रयत्न रे ॥ कु० ॥ १३ ॥ तेह समकित वासित मते रे, आतम नावज थाय ॥ तिणथी सवि गुण संपजे रे, आयति सिद्ध ते थाय रे ॥ कु० ॥ १४ ॥ अर्थ सामायिक व्रत ग्रहे रे, अवसर पामी काय ॥ पंच परमेष्ठी नवकार जे रे, मंत्र जपे नितु नाय रे ॥ कु० ॥ १५ ॥ अथ सामायिकस्यार्थः ॥ रागदोषथी सम रहे रे, सवि जन मैत्रीनाव ॥ वैमानिक सुर आउखुं रे, बांधे तो मन नाय रे ॥ कु० ॥ १६ ॥ [illegible]

दातार ॥ एक सामायिक साचुं रे, न होवे परावर सार रे ॥ कु० ॥ १७ ॥ दिन दिन एक खंड सुवर्णनी रे, दातार ॥ एक सामायिक साचुं रे, न होवे परावर सार रे ॥ कु० ॥ १८ ॥ त्रस थावर प्राणी तांहीं आगे कोय ॥ एक सामायिक साचिवुं रे, पुण्य न होय सुं जोय रे ॥ कु० ॥ १० ॥ अवर ते कर्म प्रताप गिरं रे, समता नाव सनाव ॥ ते सामायिक जन कहे रे, अवर ते कर्मना दाव रे ॥ अवर नें कर्म प्रताप रे ॥ कु० ॥ १९ ॥ नगवती अंगे नाखीयुं रे, आतम तेह समाय ॥ अवी सामायिक आतमा रे, निरावरण निरमाय रे ॥ कु० ॥ २० ॥ सम कहीये आतम गुणा रे, दर्शन ज्ञान चारित्र ॥ आय लाज तेहनो हुवे रे, ते सामायिक तत्त्व रे ॥ कु० ॥ २१ ॥ जिन मुनिगण पण आदरे रे, सामायिक आचार ॥ द्रव्य नावलिंग परिणति रे, निश्चयथी व्यवहार रे ॥ कु० ॥ २२ ॥ पंच परमेष्ठी श्री पद एहनो रे, कारण कार्य संबंध ॥ गुणी गुण अलगा नवि रहे रे, आधाराधेय प्रबंध रे ॥ कु० ॥ २३ ॥ गुण बारे ए अलंकर्या रे, दूर दोष अढार ॥ धवला अरिहंत ध्यायीये रे, नाम जिन नाव विचार रे ॥ थापना द्रव्य प्रकार रे, ए पद निरधार रे ॥ कु० ॥ २४ ॥ आठ कर्म क्षये नीपनो रे, आठ अनंत गुण सिद्ध ॥ पद्मराग परे रातडा रे, ध्यावी ते तो होवे सिद्ध रे ॥ कु० ॥ २५ ॥ छत्रीश छत्रीशी गुरु गुणे रे, आचारज पीत वर्ण ॥ ध्यातां प्रवचन गुण गणे रे, एह ध्यावे तेह सफल रे ॥ कु० ॥ २६ ॥ पणवीश गुण मणि जडिया रे, उवज्झाया सुखकार ॥ मरकतमणि सम ध्यायीये रे, सूत्र अध्ययन उपकार रे ॥ कु० ॥ २७ ॥ अंजन मणि सम ध्यायीये रे, गुण सत्तावीश सार ॥ साधु केरा नवि त्रवियनो रे, धारक जे अणगार रे ॥ कु० ॥ २८ ॥ द्रव्य नावथी ए गुणी रे, पद प्रमाणे जे प्रमाण ॥ सर्वे पाप तेहथी नासे रे, महा मंगल ए नाम रे ॥ कु० ॥ २९ ॥ ए त्रिहुं लोके शाश्वतो रे, वली त्रिकाल त्रिहुं क्षेत्र ॥ तीरथ संघ प्रवचन जिके रे, ते पण ए पद मित्त रे ॥ कु० ॥ ३० ॥ जनम समय पण समरीये रे, जेम आपे सहु धर्म ॥ अंत समय पण समरीये रे, जेम त्रूटे सब कर्म रे ॥ कु० ॥ ३१ ॥ आपदनां संकट्टां रे, थाये आपद नाश ॥ संपदमां पण समरतां रे, जेम होवे थिर तस वास रे ॥ कु० ॥ ३२ ॥ जेम अहि डंकित विष तणो रे, गरुड मंत्रथी जाय ॥ अर्थ नाव जाणया विना रे, फलदायक श्रद्धा थाय रे ॥ कु० ॥ ३३ ॥ कामकुंभ चिंतामणि रे, कल्पद्रुम गुण जेह ॥ ते तो एक जव फल दीये रे, या जवजव

... ए ध्यायंत ॥ ५ ॥ परमपदनो ए हेतु जे रे,

ए नवकार महंत रे ॥कु०॥ ३५ ॥ प्रणवादिक बहु बीज रे, ते पण एहनां गहाय ॥ ज्ञानविमल गुरु वयणथी रे, एहेजी तस संपदाय रे ॥ कु० ॥ ३६ ॥ सर्वगाथा ॥ १०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिन पूजी पावन मने, गुणे लाख नवकार ॥ ते तीर्थंकर पद लहे, मानवनें अवतार ॥ १ ॥ कर आवर्ते जे गुणे, साधुनी प्रतिमा मान ॥ भूत प्रेत प्रमुख अरि, न छले तास निदान ॥ २ ॥ नंदावर्त शंखावर्ते गुणे, शाकणी रक्ष वेताल ॥ मरकी मारि न होये कदा, नामें दुरित प्रचार ॥ ३ ॥ चिंतित ए नवकार पद, जय संकट चूरेय ॥ जेम माता राखे पुत्रने, तेम वंछित पूरेय ॥ ४ ॥ हृदय गुफामां नवपदो, वसे केसरि सिंह ॥ कर्म मतंगज नवि रहे, संचित पूरव अह ॥ ५ ॥ नअक्षरथी नासीये, सतसागरनुं पाप ॥ एक पदे पचासनां, सागर जाये पाप ॥ ६ ॥ सकल पदे पणसय अतर, केरां अघ नासंत ॥ गयां जाय छे जायशे, जे सेवे ते एम मंत ॥ ७ ॥ जिनशासननो सार छे, चौद पूरव उद्धार ॥ जस मने एहनी आसता, शुं करे तस संसार ॥ ८ ॥ सर्वगाथा ॥ १०९ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ फागनी देशी ॥

॥ मोहनीय स्थिति अंतर छे, सित्तरी कोडाकोड ॥ एक कोडी ऊणी रहे होये, परमेष्ठीपदने जोड ॥१॥ आठ कोडी आठ लाख छे, आठ सहस सत आठ ॥ आठ अधिकथी शिव लहे, ए आगमनो पाठ ॥२॥ निश्चयथी नवकारनो, स्वामी तेह विशुद्ध ॥ ग्रंथि भेद विधि तपयुते, होये नवतत्त्वह बुद्ध ॥ ३ ॥ कुलधर्मे अन्यासथी, मंद कषाय निर्माय ॥ तेहने पण गुण नीपजे, पुण्यप्रकृति ठहराय ॥ ४ ॥ गुणकारी बहु परे होये, जेम जेम आश्रव रोध ॥ कर्मसुभटने जांजवा, जेहमां ने पण योध ॥ ५ ॥ अडसठ पणतीश सोल अग, षठ दुग अक्षर एक ॥ ए विधानथी जे गुणे, गुरु आम्नाय विवेक ॥ ६ ॥ शांत दांत इंद्रिय दमी, गुरु जिन केरो जक्त ॥ श्रद्धारुचि उदार मन पर, उपकृति करण प्रसक्त ॥ ७ ॥ जे कृतज्ञ करुणा जणी, हृदय होये उल्लास ॥ से ए गेहनी योग्यता, भलया गुणश्र न्याम ॥ ८ ॥ योग्यायोग्य जोइ करी, देवो ए वर मंत्र ॥

नाग परी लिये ... ॥

... देशी दाख ... नाथ परी ... कीर्ति गाथा केरा पंथ ॥ ... ॥ नंदन फल सुख ...

... माहें गुरु याचना, देवी दाख ... ॥ १० ॥ चरित्रमांहे जे दुर्लभ किति, गाथा केरा ग्रंथ ॥ रत्नांगली ... नंदन फल ...

दुराणो, टाळी करजे गत ॥ १० ॥ चरित्रमांहे जे दूर्लो किति, रत्न ने रूप गुरणं ॥ रत्नांगली ... नाथ प्रकार ॥ १३ ॥

अने गंधव ॥ ११ ॥ तेन प्रचार स्फटिक मणि, रत्न ने रूप गुरणं ॥ ... ने नाथ ए, त्रिविध जे नाथ्य प्रकार ॥ १३ ॥

॥ १२ ॥ पंचवर्ण नव गुरुनी,मात्रा थोडी सार ॥ स्हाय्य उपांगु ने नाथ ए, त्रिविध जे गाथा रीति ॥ १४ ॥

गेहधंधन नवि करो, करो नवाये प्रीति ॥ अविधि आशातना टाळतो, मुनि पद गाया रीति ॥ १४ ॥

नृत्य अनादर नाहे, अनादंमित गर्व ॥ अंगुष्ठादिक मेळवी, नाचे सदे शिव पर्व ॥ १५ ॥ रत्ने मोहन

वधी, प्राप्ति होवे जो माध्य ॥ रिपुउच्चाटन देवने, गामे दोंगं गाथ्य ॥ १६ ॥ नरा सोना परिवारनी, पुन्ने

गीत गहीज ॥ रागादिक उपशमने, नीव निराश जाणीए ॥ १७ ॥ तर्जनी ज्येष्ठानामिका, अने कनिष्ठा

नाण ॥ ए अंगुलीये गाया रिपु, जेह गुण यदा गाण ॥ १८ ॥ इत्यादिक बहु नेद जे, वळी तिथि नक्षत्र

माण ॥ राशि गणना नेद ए, कार्य करण परकाश ॥ १९ ॥ गुण अकनाळीन जे, तेहमां मुख्य गान ॥ गरु-

दिक जे थोडी ते, दूर अने विख्यात ॥ २० ॥ नाग पद जे सिद्धचक्रनां, ते गणु अंतर नूत ॥ गुण गुणी नाचे

नालीये, आलीये अति अतुर ॥ २१ ॥ श्रीसिद्धसेन दिवाकरे, निर्मिन पहनुं तत्त्व ॥ अष्टप्रकारी मंगल,

छंदो मेदधी गत्य ॥ २२ ॥ एम ए नाथ जे उत्तम, उत्तम लोक सुखदाय ॥ पंडित निजगणे नाचतां, ज्ञान-

विमळ गुण थाय ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ २१२ ॥

॥ ढाळ छठ्ठी ॥

॥ ए देशी ॥

एम धर्मो धणुने परणावे ॥ ए देशी ॥

॥ एम मुनिवरनी धर्म सुणावे, हृदयमांहे घणुं नावे रे ॥ मिथ्यामत तम दूरे जावे, मित्रत्व नेद जणावे रे ॥ एम मुनिवर० ॥ १ ॥ उपन्यो अंतर नाव ने गाणो, जाणे हीरो जाणो रे ॥ तत्त्व त्रयनी वाते गाणो, धर्म न होवे गाणो रे ॥ एम० ॥ २ ॥ समकित मूळ सामायिकनुं मन, देव गुरुनी सारे रे ॥ कहे प्रभु ... निर्मळ, नेत्र कर्या एम नावे रे ॥ एम० ॥ ३ ॥ तुंदी मध्य तुंदी पंथ अमारे, हितदायक हित-

... कह्यो जेम ग्रहीये, गुरु प्रवचननो गामी रे ॥ एम० ॥ ४ ॥ रस सार धातु फसा ने

विद्या, धर्मधनार्जन सेवा रे ॥ गुरु उपदेश विना नवि सीफे, मंत्र तंत्र ने देवा रे ॥ एम० ॥ ५ ॥ यद्यपि मणि बहु मूलुं होवे, पण शतपुट शोधन पावे रे ॥ मुकुटादिकमां कोइ न जोमे, तेम गुरु गुण सवि आवे रे ॥ एम० ॥ ६ ॥ मात पिता पति बंधु सखाइ, ते जव जव आय मिलाइ रे ॥ तेथी अधिक प्रभु धर्म सगाइ, जव जव जे सुखदाइ रे ॥ एम० ॥ ७ ॥ धन्य धन्य कृतपुण्य पन्होतो, जे में तुजने दीठा रे ॥ जन्म सफल थयो माहरो सांप्रत, तमे ठो सहु जन जेठा रे ॥ एम० ॥ ८ ॥ एम स्तवी नमी गुरु पद पंकज, शुभ अनुमोदन करतो रे ॥ गुरु गंजीर वचन गुणकारी, मनमांहे समरंतो रे ॥ एम० ॥ ए ॥ कृतनिश्चय परमेष्ठी पद गुणवे, सामायिक पण समये रे ॥ करवुं समकितने शोजावे, ते करणी आचरवे रे ॥ एम० ॥ १० ॥ आशंसाये धर्म न साधे, बाधे न कोइ त्रिवर्ग रे ॥ जेणे करी आतमना गुण बाधे, इश्या धर्म अपवर्ग रे ॥ एम० ॥ ११ ॥ समकितवंतो मित्र सारथि, रथ संयुत थइ चाले रे ॥ कौतुक जोया पूर्व तणी परे, महा अटवी एक निहाले रे ॥ एम० ॥ १२ ॥ तिहां जाते मध्याह्न थया जब, तृषा कुमरने बाधे रे ॥ शुष्क पर्ण परे म्लान वदन तव, देखी मित्रने दुःख बाधे रे ॥ एम० ॥ १३ ॥ तिहां जल प्राप्ति किहांये न दीठी, तपे जेम अंगीठी रे ॥ जलचिंता कहो केम जांजशे, आपद आवी धीठी रे ॥ एम० ॥ १४ ॥ कहे सारथिने रथथी उतरी, तरु उंचो आरोही रे ॥ जलनी शुद्धि दिशो दिश जोया, तिणथी सुखीया होही रे ॥ एम० ॥ १५ ॥ जेम कहुं तेम सारथिये कीधुं, दूरे जलनुं ठाण रे ॥ दीठुं तेणे पंखी अनुसारे, वातादिक अहीनाणे रे ॥ एम० ॥ १६ ॥ ते दिशे उद्देशीने चाल्या, रथ बेसीने वीरा रे ॥ अनुक्रमे जातां सर एक दीठुं, चेगां तेहने तीरा रे ॥ एम० ॥ १७ ॥ ते पासे एक वन ठे महोटुं, विविध जाति तरु राजी रे ॥ निर्मल पाणी वस्त्र पूत करीने, पीये कुमर सवि माजी रे ॥ एम० ॥ १८ ॥

कीदृशं वनं ॥ अंब कदंब जंबू जंबीरं, केतकि कनक अने कणवीरं, करणां चरणां वरवा नीरं, उंचा अनोपम अतुल उशीरं ॥ १ ॥ चंपक नाग पुनाग कुटीरं, पुंग लविंग पलाशाटीरं ॥ फोग फणस माकंद [illegible] रं, द्राख साग नारंग करीरं ॥ २ ॥ [illegible] मंदार करीरं ॥ अशोक

गभीरं ॥ मातुलिंग सङ्करी थंजीरं, कर्कट कालिंग ने बीजपूरं ॥ ४ ॥ धव खादिरा गुरु तगर तमालं, कुमार कुंदरु खोयान सिबीरं ॥ इत्यादिक तरु गण गंभीरं, एहवुं कानन देखत धीरं ॥ ५ ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ दक्षिण दिशि उद्देशी चाल्या, पाद विहारे हलके रे ॥ आगल निकट जातां सर दीठुं, परिमल कमलना महके रे ॥ एम० ॥ १९ ॥ तत्सरं कीदृशं ॥ काव्यं ॥ मोघं मित्रमनोरथाखिलदृशां, दौर्जन्य-वह्निपुरं ॥ पत्राक्षिप्रतिजंगितावधुमिवाष्टश्रेणियत्तत्परा ॥ सच्छायामगनोन्निरंचिततटामिष्टाखिवचेतगो, मोदं प्रेक्षितवान् सरो महदिह श्रेयो वनं जीवनं ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ उपलब्धवरशाखिविराजित, ममित्र नृप सुत बेसे रे ॥ नीरतरंग तारग चक हंसा, देखी शोभा विकसे रे ॥ एम० ॥ २० ॥ अभिनव मानस सरस समानं, दर्श करण ते निरखे रे ॥ अनुक्रमे तेहनी शोभा जोतो, चमत्कारने परखे रे ॥ एम० ॥ २१ ॥ तीरे तीरे जाते जाते, रजक एक नख नामे रे ॥ चीवरने शुचि करतो दीठो, वस्त्र तपावे तामे रे ॥ एम० ॥ २२ ॥ वस्त्र तणा समुदायमां साडी, एक लघु तरुके दीधी रे ॥ देखी कुमर कहे सुण बंधव, कांइ वस्त्र परीक्षा कीधी रे ॥ एम० ॥ २३ ॥ मित्र कहे शुं अद्भुत जाणो, ते वली स्वामी दाखो रे ॥ ते कहे पद्मिनीनी ए सामी, मधुकर वृंदने साखे रे ॥ एम० ॥ २४ ॥ पुष्पगंधथी अधिक सुगंधो, होये पद्मिनीनो स्वेद रे ॥ तेहनी ए सामी दीसे छे, स्त्रीना छे चउभेद रे ॥ एम० ॥ २५ ॥ पद्म सुगंध स्वेद पद्मिनीनो, हस्तिनी होये मद्यगंधा रे ॥ मिरक सरिखो गंध चित्रिणी, शंखिनी होये मत्स्यगंधा रे ॥ एम० ॥ २६ ॥

॥ यतः ॥ पद्मिनी पद्मगंधा च, मद्यगंधा च हस्तिनी ॥ चित्रिणी चित्रगंधा च, मत्स्यगंधा च शंखिनी ॥ १ ॥ [illegible]निद्राऽऽहारवती, पद्मिनी प्रणयमदा ॥ बह्वाहारा हस्तिनी च, चित्रिणी शंखिनी तथा ॥ २ ॥ [illegible] पुनः, [illegible] हस्तिनी पुनः ॥ उद्धतं चित्रिणी शांतं, दीनहीनं च शंखिनी ॥ ३ ॥ पद्मिनी प्रौढ-[illegible] ॥ चित्रिणी कार्यकृत् प्रोक्ता, शंखिनी क्षणिकव्रता ॥ ४ ॥ पद्मिनी स्वापराधं च, [illegible] शंखिनी कलहप्रिया ॥ ५ ॥ पद्मिनी सर्वतो दक्षा, कामदक्षा च [illegible] च शंखिनी ॥ ६ ॥ पद्मिनी अल्पकामा च, दीर्घकामा च [illegible] ॥ ७ ॥ इत्यादि रसमंजरी शृंगारशतके कथितं ॥

ख्याति- [illegible] पूछे रे ॥ कोण स्थानक चीवर ए केहनां, कोण

सगरी ए तुं छे रे ॥ एम० ॥ २७ ॥ रजक कहे गुण सब वेदेशिक, दीपशिखा नामे नयरी रे ॥ दीपचंद राजा छे तेहनो, पण कीधा छे पयरी रे ॥ एम० ॥ २८ ॥ पद्म सरोवर नामे सरोवर, हुं रजक छुं तेहनो रे ॥ वस्त्र समूहय जे ए दीसे, प्रदीपवती राणी तेहनो रे ॥एम०॥ २९ ॥ ए साखी जेहनी छे ते कहुं, भमरा केम न मूके रे ॥ जो सो वारे उमाडी मूकीजे, तो पण ठाम न चूके रे ॥ एम० ॥ ३० ॥ चंद्रवती नृपनी जत्रीजी, गुन-गांग रायनी राणी रे ॥ कुमर अछे वामांग मनोहर, तस वेहनी बेहु गुणखाणी रे ॥ एम० ॥ ३१ ॥ शशि-कला चंद्रकला नामे छे, रूप लावण्यनी शाखा रे ॥ रत्नपुरेश महामत्र नृपने, परणावी छे रसाला रे ॥ एम० ॥ ३२ ॥ चंद्रकला बीजी लघु कन्या, रूप गुणे सवि नारी रे ॥ अधरीकृत छे ए मातुल गेहे, मेहली एम निरधारी रे ॥ एम० ॥ ३३ ॥ साधु वचन पूर्वे सांजलीयुं, जोशी जाणे जाख्युं रे ॥ राजाधिराज्यना पत्नी होशे, जन्मवेलाये एम दाख्युं रे ॥ एम० ॥ ३४ ॥ सूर्यवतीने सुत जे होशे, तस पटराणी थाशे रे ॥ इति निमित्त वचन आज लगे, मह्युं न हवे जणाशे रे ॥ एम० ॥ ३५ ॥ सूर्यवतीने पुत्रनी इच्छा, आज लगे न पूराणी रे ॥ अने स्वप्ने शुजगांगने जाख्युं, कुलदेवीये एम वाणी रे ॥ एम० ॥ ३६ ॥ मोकलजो मातुल घर एहने, तुरत होशे विवाह रे ॥ ते कुलदेवी वयण करेवा, आणी छे उन्नाहे रे ॥ ज्ञानविमल कहे ताहे रे ॥ एम० ॥ ३७ ॥ सर्व गाथा ॥ २५० ॥

॥ दोहा ॥

॥ माता ने जाइ बेहु, दीपवती वामांग ॥ पांचसें पांचसें गज तुरी, आण्या साथे उत्तंग ॥१॥ कर मूका-मण देयसे, अपर वली बहु आथ ॥ माठल पण बहु दायजो, देशे तेहने साथ ॥२॥ ते पद्मिनीनी शाटिका, जिहां नमरा गुंजत ॥ पूछ्या माटे कह्युं, मूल थकी वृत्तांत ॥ ३ ॥ पण ए वातां वात छे, किहां सूर्यवतीने पुत्र ॥ संजावना पण मने नथी, केम वसशे घर सूत्र ॥ ४ ॥ अथवा विधि व्यापारनो, पार न पामे कोय ॥ जे मन चिंति न शकीये, तुरत मांहे करे सोय ॥ ५ ॥ यतः ॥ अघटितघटितानि घटयति, सुघटितघटितानि जर्जरी कुरुते ॥ विधिरेव तानि घटयति, यानि पुमानेव चिंतयति ॥ १ ॥ दोहा ॥ सहेजे सहेजे आवीया, रे वेदेशिक मित्र ॥ जोइ पुरना कौतुका, कीजे नयन पवित्र ॥ ६ ॥ रजक वचन एम सांजली, पाम्या चित्त

चमत्कार ॥ पुर जोयाने चमक्या, मित्र सहित ते कुमार ॥ ७ ॥ कौतुकी न होवे आवग्यु, पहली नगनी थाण ॥ सुकृतीने तेहिज उपजे, जे श्रावति गुणग्राण ॥ ८ ॥ रथ मूकीने तिहां फरो, आगे जावे जाम ॥ देखे पट मंडप जखा, उतारा अभिराम ॥ ९ ॥ देखी अचरिज पामता, पूछे नर तिहां एक ॥ कटक केहनुं केम इहां, जाग्ये सकल विवेक ॥ १० ॥ ते कहे सुणजो सुगुण नर, श्रीनिलय ने देश ॥ तिलकवती नगरी तणो, तिलक नाम नृपदेश ॥ ११ ॥ धीर प्रधान ने नंदनो, ते आव्यो इहां आज ॥ चतुरंगिनी सेना सजी, कुशस्थलपुरे जाता काज ॥ १२ ॥ ते मांहे गायन अछे, नाम धीगारव जाण ॥ नागिनार गयो संप्रति, राजकुमरने गाण ॥ १३ ॥ गीत गान गंधर्वनी, कला सुगुण अभ्यास ॥ ए सरिखो आपनी तले, अवर न को ए पास ॥ १४ ॥ कुमर ते एम सांभळी, चिंते मनमां एम ॥ ए नवि स्वामी देखावुं, कहे गुणचंद्र धरी प्रेम ॥ १५ ॥

॥ ढाळ सातमी ॥

॥ धे धे मुनिवर विहरण पांगराजी ॥ ए देशी ॥

॥ नगर जोयाने हुंते संचरेजी, मित्र प्रेमधुं राजकुमार रे ॥ मांहो मांहे ते आमंत्रण करे रे, आव्या नय एक उद्यान मझार रे ॥ १ ॥ पुण्यप्रतापे कुमर कलानिधोजी, जाणे कोइ आव्यो देव जयंत रे ॥ पग पग पुण्य तणां फल परगडांजी, महिमा महोटाउ अति महंत रे ॥ पुण्य० ॥ २ ॥ ऋतुनने हुंते वनराजक वीरे जी, सारां फल अंब तणीने साख रे ॥ राजकुमरे ते बहु संतोषियो रे, चिंते मन ए फलसी फलनी दाखरे ॥ पुण्य० ॥ ३ ॥ एक दिशे ताड तमाल हिंताल छेजी, एक दिशे नाग पुनाग ने साग रे ॥ एक दिशे अगिंग अगुरु ने चंदना रे, एक दिशे वेलि वासंती बाग रे ॥पुण्य०॥ ४ ॥ एक दिशे पूग कंकोल गणां तरु रे, पाडल चंपक तिलक अशोक रे ॥ दाडिम बीजोरां जाण पदामनां रे, एक दिशे मेवानां तरु थोक रे ॥ पु० ॥ ५ ॥ वेलि वनितायें तरुवर आलिंगीयाजी, देखी कामी मन नवि ठहराय रे ॥ एक दिशे मालतीना बहु मांडवा रे, नागरवेली छेदी न जाय रे ॥ पु० ॥ ६ ॥ किहांकणे पवन हणाया द्रुम नाचता रे, पुष्प फळेशुं करता नयिक आतिथ्य रे ॥ पत्रयश्चये करी कुमरने वंदता रे, विहग शब्दे करी कहता गुण अविकथ्य रे ॥ पु० ॥ ७ ॥

एणी परे वननी शोजा जोयतां जी, दीठी तिहां एकेकनी गुणखाण रे ॥ कुसुमक्रीमा करती गणी गायतुंजी, कहिनाणें करी गहिज पद्मिनी जाण रे ॥ पु० ॥ ७ ॥ यतः ॥ पाणौ पद्मधिया मधूककुसुमभ्रांत्या तथा गमयो, नीलेंदीवरशंकया नयनयोर्बंधूकबुद्ध्याधरे ॥ लीयंते कबरीषु बांधवजनव्यामोहजातस्पृहा, दुर्वारा मधुपाः कियंति तरणी स्थान्यान्यहो रदति ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ तेहनी जाणी कुमर जाये जिसे रे, उक्का प्रेमे करी नमतुं तुंम रे ॥ मित्र संघाते तिहां दीठो तिसे रे, कुमरीयें ते प्रेमसुधानो कुंम रे ॥ पु० ॥ ए ॥ गोरी ते रूपे मनमां चिंतवेजी, मानुं ए पूरव जवनो कंत रे ॥ तेह जणी चेष्टा थाये एहवीजी, दीठे कंते होये अत्यंत रे ॥ पु० ॥ १० ॥ यतः ॥ स्त्री कांतं वीक्ष्य नाजिं प्रकटयति मुहुर्वीक्षयति कटाक्षान्, दोर्मूलं दर्शयति रचयति कुसुमापीडमुत्क्षिप्तपाणिं ॥ रोमांचस्वेदजृंजान् श्रयति कुचतटस्रंसिवस्त्रं विधत्ते, सोत्कंठं वक्ति नीवीं शिथिलयति दशत्योष्ठमंगं जिनक्ति ॥ १ ॥

जावार्थः—कामवश थयेली स्त्री स्वेच्छित स्वामीने जोइने एटलां वानां करे छे ते जेम के, पोतानी नाभिने बतावे छे, कटाक्षे करी तेनी सामुं जोवे छे, हाथ उंचा करे छे, केशने वारंवार उघाडा करी समारे छे, रोमांच, प्रस्वेद, तथा बगासां वगेरेनो आश्रय करे छे, वारंवार स्तन परथी खसेला वस्त्रने धारण करे छे, जेम तेम वचन बोले छे, पहेरेलां वस्त्रनी गांठने छोडे छे तथा बांधे छे, अने होठ डसे छे, तथा आलस मरडे छे.

॥ पूर्व ढाल ॥ चेष्टा एहवी कुमरीये जाणी आपणी रे, मूके चतुर सखी तेहने पास रे ॥ ए कोण मुज मनधननो अपहरु रे, रूप लावण्य सवि लक्षण गुण आवास रे ॥ पु० ॥ ११ ॥ नाम कुल गोत्र नयर ने जनपदे रे, मात पिता वली वंश विख्यात रे ॥ त्वरितपणे जइ पूछ तुं मित्रने रे, आवी कहे मुजने ते सवि वात रे ॥ १२ ॥ एम निसुणीने चतुरा तेणे पासे गइ रे, प्रणमीने पूछे विनति एक रे ॥ राजकनी ए चंद्रकलाजिधा रे, माहारी छे स्वामिनी ए सुविवेक रे ॥ पु० ॥ १३ ॥ पद्मिनी ए निज रूपे जितउर्वशी रे, तेहनी हुं सखी छुं प्रेमनुं धाम रे ॥ चतुरा नामे तुम जणी मोकली रे, पूछण जाति कुल सुवंश नाम रे ॥ पु० ॥ १४ ॥ ते जणी करी कृपा सवि दाखवो रे, निसुणी तव हरख्यो गुणचंद्र मित्र रे ॥ जाखे तिहां सघलुं चरित्र ते आपणुं रे, जाति कुल वंश ने गोत्र पवित्र रे ॥ पु० ॥ १५ ॥ धारे तव श्रीचंद्र मित्र मस्ये तिहां रे, किस्युं प्रयोजन छे आपणुं आज रे ॥ नगर देखवे चीत न राखवे रे, आपणे करेमां थावे लाज रे ॥ पु० ॥ १६ ॥ एम कहीने मित्रने

पु० ॥ १७ ॥ आगळ जातां दीठुं एक देहरुं रे, ... मंदिर पोळ बाजार ... जाणे अवनी तळे आव्यो विजयंत रे ॥
मणिमय शोना मंदिर तोरणे रे, दंड कळश ध्वजपंक्ति करी झळकंत रे ॥ पु० ॥ १८ ॥ निरखी हरखीने पेठा
तेहमां रे, वंदे विधिशुं करी मनशुं निज काम रे ॥ चैत्यवंदन करे दश त्रिक साचवी रे, गावे तिहां नाथ
तणा गुणग्राम रे ॥ पु० ॥ १९ ॥ यतः ॥ तिन्नि निसिहि तिन्नि पया, हिणा तिन्नि चेवय पणामा ॥ तिविहा
पुआ य तहा, अवतिथ्यतिय भावणं चेव ॥ १ ॥ तिदिसि निरक्खण विरइ, पयभूमिपमज्जणं च तिक्खुत्तो ॥
वणाइतियं मुद्दाइ, तिहं च तिविहं च पणिहाणं ॥ २ ॥ इति दशत्रिकं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥ श्रीरागेण गीयते ॥

॥ अरिहंत नमो भगवंत नमो, परमेसर जिनराज नमो, प्रथम जिनेसर प्रेमे पेखत, सीधां सघळां
काज नमो ॥ अ० ॥ १ ॥ भवपारंगत परम महोदय, अविनाशि अकलंक नमो ॥ अजरामर अद्भुत अति-
शय निधि, प्रवचन जलधि मयंक नमो ॥ अ० ॥ २ ॥ तिहुयण भवियण जण मण वंछिय, पूरणदेव रसाल
नमो ॥ लळि लळि पाय नमुं हुं भावे, कर जोडीने त्रिकाळ नमो ॥ अ० ॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तुं जगजन सज्जन,
नयनानंदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नरवर नायक, सारे अहनिशि सेव नमो ॥ अ० ॥ ४ ॥ तुं तीर्थंकर
सुखकर साहेब, तुं निष्कारण बंधु नमो ॥ शरणागत जीवन हितवत्सल, तुंही कृपारस सिंधु नमो ॥ अ० ॥
॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्शे दर्शित, लोकालोक स्वभाव नमो ॥ नाशित सकल कलंक कलुष गण, दुरित उपद्रव
भाव नमो ॥ अ० ॥ ६ ॥ जगचिंतामणि जगगुरु जगहित, कारक जगजन नाथ नमो ॥ घोर अपार भवो-
दधि तारण, तुं शिवपुरनो साथ नमो ॥ अ० ॥ ७ ॥ अशरण शरण नीराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश
नमो ॥ बोध दियो अनुपम दानेसर, ज्ञानविमल सूरीश नमो ॥ अ० ॥ इति स्तुतिः ॥

पूर्व ढाल ॥ एम चैत्यवंदन करतां सांभळी रे, चतुरा सखी भाखे स्वामिनीने ताम रे ॥ तेह सुणीने मा
नी दुःख धरे रे, केणी परे मळशे ते अभिराम रे ॥ पु० ॥ २० ॥ माहारे तो ए वर ए भवे मन धर्यो रे,
अवरनी इच्छा नहीं सुहणा मांहे रे ॥ तेहवुं जाणीने उद्यम करो रे, सखीयो जो माहारी सहियर यांहे रे ॥
पु० ॥ २१ ॥ जाणो तेहनो ए नंदन होयजो रे, नृप प्रधान के शेठ संबंध रे ॥ मनमां धार्यो जे ते ...

सनीने होय रे, अपर मूकी दीयो सघला धंध रे ॥ पु० ॥ २२ ॥ नगरीमांहे ए किहांये जायशे रे, तेह जाणी
पाछो एहने केड रे ॥ एम कहीने सवि पाहन चढ्या रे, पाड्या कुमरनी पुठे न करी जेड रे ॥ पु० ॥ २३ ॥
चतुरा कोविदा तुरत ते मोकली रे, आपे रही चैत्य समीपे तेथ रे ॥ जोवे एम नजरशुं दूर रही हुती रे,
अनिमिष नयने करी कुमर छे जेथ रे ॥ पु० ॥ २४ ॥ जे चकोरी चंद्र तणी सुधा रे, पीये सादरशुं तेम ए
पाल रे ॥ गुणचंद्रे तिहां दीठी पद्मिनी रे, सिंहावलोकन करतां राज मराल रे ॥ पु० ॥ २५ ॥ हर्ष पामीने
भ्रूसंज्ञा करी रे, कह्युं नगरादिक सघलुं ठाम रे ॥ कन्या पण समजी सवि करपल्लवे रे, वंश कुल गोत्र पवित्र जे
नाम रे ॥ पु० ॥ २६ ॥ जाव जणाव्यो आपण पद्मिनी रे, भ्रूसंज्ञाथी सघली कीधी वात रे ॥ विलंब करावो
इहां कणे मित्रजी रे, तो आवी बने सघली वात रे ॥ पु० ॥ २७ ॥ निज माताने सर्व जणावे पद्मिनी रे, तेणे
पण मांड्या तेह उपाय रे ॥ उद्यम सहकारी कारण साधतो रे, ए आये सिद्ध कार्य एहवो शास्त्रनो न्याय रे
॥ पु० ॥ २८ ॥ एहवे प्रत्येके श्रीजिनबिंबने रे, प्रणमी स्तवी गर्भघरेथी ताम रे ॥ नीकली मंडप बाहेर
आवीया रे, जोवे तिहां विविध जाति चित्राम रे ॥ पु० ॥ २९ ॥ उपले उकेरी नवनव पूतली रे, नाटक
कौतुकने करती रंग रसाल रे ॥ आपे देखीने देखावे मित्रने रे, एम करतां ते आवे चैत्य दुवार रे ॥पु०॥३०॥
मित्रे धीनवीयो स्वामीजी बेसीये रे, क्षण एक जेम लहीये आराम रे ॥ बेसे तिहां मित्र वयणथी जेटले रे,
दीठी तिहां कन्या अभिराम रे ॥ पु० ॥ ३१ ॥ जेणी परे खेंचे छे चमक लोहने रे, जेम होये वली चंचल
जलधि तरंग रे ॥ चंद्रचंद्रिका निरखी तेम थयुं रे, रूप निरखणने काजे चंग रे ॥ ज्ञानविमल सूरि कहे
एकंग रे ॥ पु० ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो अहो एहनुं वदन,नयन जाल विशाल ॥ विपुल कपोल गलस्थल, नासा पुट सुकुमाल ॥ अहो
अहो मुख सुजगता,विधु पण धरे अंकजाव ॥ श्रवणपालि दोला जिसि,रसना अमृत तलाव ॥ २ ॥ चिंधाधर
युग रातडा, अहो अहो अद्भुत रूप ॥ ... गुणमां नवि करे, रतिवर मदन स्वरूप ॥ ॥ नु विधि
... एहने ...

…तो बहु देखीये, पण पहेलुं मन प्रेम ॥ ५ ॥ कोइक नयने जोयतां मांहोमां
सिद्ध मित्र ॥ जिते कारज पहलुं, थाये मन पवित्र ॥ ६ ॥ कहे कुमर हवे मित्रने, अहो दुर्जय विषयार ॥
रोकातुं पण नवि रहे, जेहवुं स्नेह विकार ॥ ७ ॥ धीर वीर कोटीर जे, संसारे बहु जन ॥ पण दुर्धर मन
वश करे, ते विरला जग धन्न ॥ ८ ॥ मन विकल्पना सिंधुमां, जग विवेक वर यान ॥ स्मरगिरिथी नाशुं
नहीं, ते नर लहे बहुमान ॥ ९ ॥ यतः ॥ अहो आश्चर्यं कठिने नयने नाराचरीरे, कर्णोत्तान्यां नर्त्र
नृपमुनिमितिविमाणपुट्कः श्रवः पाली दोलांकितचतुरी विशाधरयुगः किमन्यत्सर्वेपि प्रकृति गुनगारत्वयपता:
॥ १ ॥ स्त्री गुण लावण्य चंद्रमा, देखी प्रेमजल वृद्धि ॥ तारुण गझाये न नंजीये, ते नर पामे सिद्धि
॥ १० ॥ तिहां लगे लज्जा विनय यश, तिहां पुरुषारथ बुद्धि ॥ काम कटाक्ष रमणी तणा, जिहां लगे
दृढ न पतंति ॥ ११ ॥

यतः ॥ गागा वाणमुक्तैर्भ्रमदलगलावण्यपंचानन, प्रेमारंभमयः समुच्चयगुरुकुब्जाधिकारोर्मिनिः ॥
तारुण्योधराणां विवेकवदनं मध्ये मनोऽर्धे कृतं, यस्याकृत्य न नश्यते स्मरगिरा लोकः सलोकः क्षितौ ॥ १ ॥
आ श्लोकनो भावार्थ दशमी तथा अग्यारमी गाथामां छे ॥ सन्मार्गे तावदास्ते प्रभवति पुरुषस्तावदेवेंद्रियाणां,
लज्जां तावद्विधत्ते विनयमपि समालंबते तावदेव ॥ भ्रूचापाकृष्टमुक्ताः श्रवणपथगतानीलपक्ष्माण एते ॥ याव-
ल्लीलावतीनां न हृदि धृतिमुषोनालपक्ष्माण पते ॥ २ ॥

भावार्थ—ज्यांसुधी कानपर्यंत लांबा नेत्ररूप धनुषथकी काढ्या पिछवाळा नीलावाळी स्त्रीना कमळ समान नेत्र कटाक्ष नथी
पाडे थया त्यांसुधी मनुष्य सारा मार्गमां रहे छे, त्यां पर्यंत इंद्रियोनो पराभव करे छे, लज्जा पण त्यां पर्यंत छे, विनयनुं पण त्यां प-
र्यंत आलंबन करे छे, हृदयने विषे धैर्य गुण पण त्यांसुधी रहे छे.

॥ दोहा ॥

॥ ते नारी इहां रहेवुं नहीं, जिहां स्त्रीजन बहु आवंत ॥ एम कही चैत्यथी चालीयो, मित्र सहित
गुणवंत ॥ १२ ॥ कुमर कहे आगे चालो, आवे जे उद्यानपुर ॥ दूरसेवण खी …

पुण्योदे जब आवीया, रथ मालिने काज ॥ पाछल कोइ देखे नहीं, गयो कन्या कोइ दाग ॥ १४ ॥ चिन्ते गुणचंद्र चिंतवे, केम हशे थाय विशेष ॥ लक्ष्मी केरी आरति, पडे न सुलछी खंत ॥१५॥ सर्व गाथा ॥२२०॥

॥ ढाल आठमी ॥

नदी यमुनाके तीर उडे दोय पंखीया ॥ ए देशी ॥

॥ मित्र घरे मन जाय, जाणे कोइ आवी मळे, एहवे एकण पास मुरज ध्वनि सांभळे ॥ कहे तव कुमरने मित्र भणो सुण विनति ॥ ए निसुणवे गीत, होये मुज मन रति ॥ १ ॥ जोइ ए संगीत पछी रथ आपणे, जाशुं महाराज मित्र एहवुं भणे ॥ मित्र तणुं मन राखवा काज तिहां गया, तावत् श्रीचंद्र कीर्ति सुणी विस्मय थया ॥ २ ॥ नृत्य करे तिहां नर्त्तकी कीर्तन ते करे, ध्रुवपद श्रीचंद्र नाम कही मुख उचरे ॥ मन चिंते श्रीचंद्र घणा छे नामथी, कोण जाणे कोण हशे अने कोण कामथी ॥ ३ ॥ कान धरी जब गीत सुण्युं तब हेजथी, लक्ष्मीदत्त सुत श्रीचंद्र सगुणो तेजथी ॥ लक्ष्मीवतीनो नंदन जोग निदान छे, जयवंतो ते आज बहुबुद्धि निधान छे ॥ ४ ॥ ते सुणी कहे श्रीचंद्र मित्र ए घर केहनुं, कोण सज्जन परिवार निमित्त छे जेहनुं ॥ जेटले जोवा जाय बिहुं घर बारणे, साहामो दीठो शेठ रह्यो मत्त वारणे ॥ ५ ॥ वरदत्त नामे शेठ देखीने ओळख्यो, कहे कुमर तव मित्र प्रत्ये ए चित्त लख्यो ॥ ए मुज तातनो वाणिज्य कारक शेठनो, पुत्र अछे तिहां आव्यो अम घरे छेठनो ॥ जो जाणशे ए आज तो आपणने राखशे, ते जाणी पाछो वेगे ए विनति दाखशे ॥ षटपदी ॥ ६ ॥ कर झालीने मित्र तिहांथी नीकल्यो, द्वारपाळे कह्युं सर्व जइ वरदत्तने गयो ॥ वरदत्त तव निज शेठनो नंदन अटकल्यो, पण ए वात असंभव मनमां खळभळ्यो ॥ ७ ॥ ते श्रीचंद्रने पास तुरग रथ जट घणा, सहस गमे परिवार नहीं कांइ मणा ॥ ते एकलो केम होय जइने जोइये, वात न मळती एह ए संशय धोइये ॥ ८ ॥ चिंति आवे बार जिसे ते फरी गया, जाणी पाछळ थाय वेहु नजरे थया ॥ ओळखीया ते कुमरने पद प्रणमी थयुं, जाग्य संयोगे आज दरिस लह्युं तुम तणुं ॥ ९ ॥ वृष्टि थइ विण वादळ कुसुम विणु फळ थयुं, जीवन दिन घडी आज समय सफळुं थयुं ॥ जाग्यवती ए भूमि जिहां नृप पाउधारी, परीवे हवे धरी प्रेम घरे मुज आवशो ॥ १० ॥ जे माहरे घर मंगळ जय वधामणां, ते सवि

गुण गणना केई गुण जाणता ॥ गुणने जाणी जाणी आप एम किम हरे, ए मनि दोखत दास कुमारा एम करीने मरे ॥ ११ ॥ वयकोशरि गुणवत शरद पर आणीने, शगु गुणनो लेश नाखे उत्तम मन जाणीये ॥ आव्या मंडप मकरान्द तणी फरां गुण कृपा, दाढिम प्रेम ने जाणि देखी धरी मन प्रेमा ॥ १२ ॥ शेठ परे तब आवीया मित्र ने दरखीयो, गुणचंद्र कार्य विलंब कहीने परखीयो ॥ कहे पादर रथ मारथि जे ते आणीये, ने सीधुं अंगे तेम प्रगत मन जाणीये ॥ १३ ॥ महनगरमां जेम तरणि तेजाल नत्तोगणे, तेम व्यवहारीमां तेह दीपीयो मधु गणे ॥ शेठनी पत्नी नाम प्रथाये गुणना कहे, देतां अदलक दान अयाचित नवि गहे ॥ १४ ॥ नहुगांक कहे सर्व ममा धणी आवीयो, नहगुण गीत ने गान बहु माने जावीयो ॥ एहवे श्रीदीपचंद्र नरेश निज सभा, पूरी शेठ सामंत प्रमुख शुभली प्रभा ॥ १५ ॥ वीणादिय गंधर्व कलामां शिरोमणि, गोरव सज्जन परिवार वीणादिक स्वगुणी ॥ रागादेष विधान प्रमुख प्रबंध घणा गाये छे, अन्य राजकुमरनी वीटंवणा थाय छे ॥ १६ ॥ आप कर्ता जे गीत अपूर्व ध्वनि मन हरे, मधुर गुणे करी सार सुधाने अपहरे ॥ नवरस नाना तेह गान बहु शोभीये, तान ताल लय मूर्छना वाजित्र शोभीये ॥ १७ ॥ नाद ने पंचम वेद भेद एहना लहे, योगी जोगी सर्व नाद मन थिर रहे ॥ तन मन करी एकाग्र निमिष नयने करी, उत्त प्रीत अतीव आदर निरखी धरी ॥ १८ ॥ सांजले सघला मन्य नृप पूछे रही, चंद्रवती देह आदि तरुण प्रदीपवती सही ॥ एम सुणी मनि परवद मोदशुं सांजले, पुहवामां सरी चतुर चंद्रवतीशुं मळे ॥ १९ ॥ कहे स्वामिनी उद्यानमां सधाने मह, चंद्रकला निहां गान गुणे जो जे थइ ॥ रूपवंत गुणवंत पुरुष कोइ आवीयो, जाणयो न ताम सकल कुमरी मन लावीयो ॥ २० ॥ एहवे आवी कोविदा कहे ने पुरुषनी, वात नामादिक सर्व नाही कांइ जाणी ॥ अने विहारमां तेह कुमर जिन वंदनां, दीठो रूप मरूप कला गुण चंद तो ॥ २१ ॥ कहे राजा सणी तेह सुगुण नर जाणीयो, पुत्री प्रेमनो पात्र पर जे पाणीयो ॥ ए अज्ञात कुल शीलने कन्या केम दीजीये, स्त्रीय मांहे शोभा कहो केम लीजीये ॥ २२ ॥ तोहे पण दीपचंद्र नरेश जणावीये, एम कही गया ते पांसे सर्व सुणावीये ॥ दीपचंद्र कहे नाम हवी माहरूं जोइ, नहीं क्रीडापर निशुनां भूलि करी करी होइ ॥ २३ ॥ ए पद्मिनी गुण अशेष सकल वनिता वसी, इद्दकुमाव वलिगने देतां शोभा शी सांपडी ॥ मन केम होये प्रगत ए वात जे सांभली, जो सुजगांग नृप सुणशे तो पजाडशे पामली ॥ २४ ॥ चंद्रकला केम

एहने परणे जाणती, गूर्यवतीनो पुत्र विवाह मन आणती ॥ ते तो मनोरथ सघला हृदयमांहे रह्या, जे कांइ कर्म लख्या ते थाय न जाय कोणे कह्या ॥ २५ ॥ जो एहवो संयोग करीजे तो यश किश्यो, आपणने जगमांहे मलशे जिस्यो तिस्यो ॥ एम करतां यथाशक्ति स्वयंवर मंडावशुं, राज्यपुत्र कोइ योग्य विवाह करावशुं ॥ २६ ॥ एहवे चैत्य समीपे सुचंद्रकला जणे, सखी प्रियंवदा नामे जोओ ते किहांघणे ॥ लही तेहनो आदेश जोइ पुर परिसरे, पर आपण वन वाडी वावि सरोवरे ॥ २७ ॥ नवि दीठा तिहां कोय मित्र कुमर बिहुं, आवी एहवी वात जणावी ते सहु ॥ निसुणी तेह उदंत वियोग ज्वरी रडे, छिण नीशासा मूकीने धरणी ढली पडे ॥ २८ ॥ हुं निर्भाग्य शिरोमणि आज किश्युं करशुं हवे, एहवो वर पामीने खोयो ते दहे हवे ॥ दुःखपूर महमूर ते एहवो उलट्यो, जेणे करी गुणना देश विवेक गिरिथी लटयो ॥ २९ ॥ गोत्रदेवी कुलदेवी कहो मुज किहां गइ, सार करे नहीं कोय वेशुद्धि ते थइ ॥ चैत्यमांहे जे मयूर शकुन ने पूतली, पूछे तेहनी वात जाणे थइ बाउली ॥ ३० ॥ अरे शुक शुकी मेनादिकने कहे मुज पति, केम बोलाव्यो नाहीं न राख्यो करी थिति ॥ हवे माहारा कहो प्राण केणीपरे धारशुं, केहने देखी आज हृदय दुःख वारशुं ॥३१॥ इहां नहीं तुमचो वांक ए वंक छे माहरो, मूकी लज्जा विलगत तो श्यो आशरो ॥ बहुला एम विलाप ते चंद्रकला करे, शून्य चित्त वनमांहे देवान थइ फिरे ॥३२॥ एहवे चतुरा ताम आवी सघलुं कह्युं, उचित वरादि उदंत जे मातपिता लह्युं ॥ वली विशेष दुःखपूरे मूर्च्छा पामती, सखीये कीधी सज्ज वियोग मन वामती ॥ ३३ ॥ प्रियंवदाये तुरत पितुने दाखव्युं, तेहवी लेइ उत्संगे सुताने सुख ठव्युं ॥ रे वत्से धर धीरज त्यज उत्सुकपणुं, थाशे सघलुं भव्य म कर मन दूमणुं ॥३४॥ तुं तत्त्वज्ञ सुदक्ष महामति धीर छे, दुःख म कर मन कांइ तुं कोमल वपु अछे ॥ तुज विवाहे स्वयंवर इच्छा अति घणी, जे छे ते तो जाणे श्रीज्ञानविमल गुणना धणी ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम निसुणी पुत्री कहे, तुज कुखि उपन्न ॥ सतीये जे पति मन धर्यो, तेहीज वरे न अन्य ॥ १ ॥
विस्तर स्वयंवर मंडपे, कोइ न माहरे काम ॥ वर श्रीचंद्रज माहरे, अथवा अनलनुं ठाम ॥ २ ॥ पुत्री निश्चय ॥ ३७ ॥
वो, जाणी चंद्रवती माय ॥ गुनट प्रत्ये एहवुं कहे, विनयो दीपचंद्र राय ॥ ३ ॥ ते द्विज वरने जोवशो, जे

गन पुरी कह्व ॥ अवर न कार … नवे, एह यथारथ … ॥ कुमरी मूरछन …वगथुं, नाटुल… ॥ गायन जन प्रधान
श्रीचंद्र राजा प्रते, मूकी मननो गर्व ॥ ५ ॥ राजा वीरनी गुरतणो, आवे वीव मझार ॥ आवी नविने पूछीगुं, पण
गुण, अवर पत्नी परिवार ॥ ६ ॥ प्रदीपवती राणी तिहां, मली तणो परिवार ॥ एहवे चंद्रकला मली, कहे सुत चेष्टा
नवि दीठ कुमार ॥७॥ रायचंद्र राजा जुवे, पण खबर न आवी कांय ॥ मनचंतित कोइ मली, टळशे चिंता काम ॥ ९ ॥ ते
थाय ॥ ८ ॥ पाम चन्द्र कुरंक पाणुं, मली सुणनुं नाम ॥ राजा आणद अतिनवी, परदेश घरे यद्ध अद्दि ॥ १० ॥ राजा
समये कोइ सुत नरे, कही कुमरनी शुद्धि ॥ लायाय रूप ने कांतिनर, अपरीकुल घर चंद्र ॥ ११ ॥ बेठे सिंहासन
देश घरे गया, देखी तिहां श्रीचंद्र ॥ दीपचंद्र नृप पद नमे, नेट करी अनूप ॥ १२ ॥ नृप उरगंग लीये कुमरने, धरी
रूच्युं, आवी वेला तप ॥ दीपचंद्र नृप पद नमे, पूरी प्रेम अपार ॥ १३ ॥ गुणचंद्रे तिहां कुमरनुं, चरित्र कह्युं सुविशेष ॥
प्रमोद अपार ॥ए संगति होडियनुं, पूरी प्रेम अपार ॥ १४ ॥ कहे गायन आगे गाइयो, राधावेध प्रबंध ॥ ते ए
वीणारवे पण दासीगुं, करी मनमां छंदेश ॥ १५ ॥ सुरसुर पण नवि करी शके, जस गुण केरो अंत ॥ अधि-
श्रीचंद्र जाणजो, गुणमणि केरो सिंधु ॥ १६ ॥ अथ वीणारवगायनेन जल्पितं ॥ गाहा ॥ गहावद-
प्राधित गुरुजन, तिलकमंजरी कंत ॥ सरुनिरु गरुहरणो, वीरिको जयओ सिरिचंदो
तिलीए मणेधर वरिओए तिलयमंजरीए ॥
॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ २७९ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ ए देशी ॥
राग केदारो, रुकमिणी रूपे रंगीली नारी ॥ ए देशी ॥

॥ एह चरित्र पवित्रनो लाला, कुमरने देखी धाम ॥ जोवा कारण आवीया लाला, प्रदीपवती गुण
नाम ॥ १ ॥ कुमरजी रूप शिरोमणि एह, ए तो गुणमणि केरो गेह कुमरजी ॥ चंद्रसुं चंद्रकलाने नेह कुमरजी,
… ने मननेह कुमरजी ॥ रूप शिरोमणि एह ॥ ए आंकणी ॥ तिहां ते कुमरने देखीने लाला, नवि पाम्या
… ली लाला, ते अनुभवनो मोद ॥ कु० ॥ रू० ॥ २ ॥ हवे परदेश शेठ नेहणुं लाला,
— आय पच्युं फरी आस ॥ कु० ॥ रू० ॥ ३ ॥ साहिब

चरणनी रेणुये लाला, पावन कीधुं गेह ॥ एम कही जे भेटणुं कर्युं लाला, ते श्रीचंद्रने दीये धरी नेह ॥ कु० ॥ रू० ॥ ४ ॥ कहे नृप हवे श्रीचंद्रने लाला, सुणो कुमार कोटीर ॥ चंद्रकला जणी लीजीये लाला, आवी यौवन तीर ॥ ए पद्मिनी पद्म शरीर ॥ कु० ॥ रू० ॥ ५ ॥ सुजगांग नृपतिये मोकली लाला, सकल सामग्री मेल ॥ विवाह कारण कुमरजी लाला, करो तेहनो कर मेल ॥ कु० ॥ रू० ॥ ६ ॥ कुमर कहे युक्तुं नहीं लाला, अचरिजकारी वचन्न ॥ जो फिरी न कहुं तो माहरो लाला, दोलायीतुं मन्न ॥ कु० ॥ रू० ॥ ७ ॥ किहां पृथ्वीपति नंदनी लाला, किहां हुं तुम दासनो पुत्र ॥ संयोग सरिखो जोमीये लाला, शोजा होय उजयत्र ॥ कु० ॥ रू० ॥ ८ ॥ वज्र रत्नशुं शोजिये लाला, सुवर्ण मुद्रिका जेम ॥ पण काच उपलमां जोमतां लाला, नवि शोजीजे हेम ॥ कु० ॥ रू० ॥ ए ॥ रत्नमाला वायस गले लाला, जेम न विजूश थाय ॥ कुज्ज गले मुक्तावली लाला, तेम अकुली घर कनी थाय ॥ कु० ॥ रू० ॥ १० ॥ प्रासादने शिखरे रह्यो लाला, पण काक न थाये हंस ॥ नीच राज्य अजिसिंचिउ लाला, तेम उंच न थाये वंश ॥ कु० ॥ रू० ॥ ११ ॥ दुष्कुलथी स्त्री रत्न ते लाला, लीजे ए शास्त्रनी वाणि ॥ पण सुकुल स्त्री दुकुल नरे जोडीये लाला, एहवी नहीं किहां वाणि ॥ कु० ॥ रू० ॥ १२ ॥ यतः ॥ बालादपि हितं ग्राह्यं, अमेध्यादपि कांचनं ॥ नीचादप्युत्तमा विद्या, स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि ॥ १ ॥

भावार्थ—बालकथी पण हितकारक वचन ग्रहण करवुं, अपवित्र पदार्थने मळेलुं सुवर्ण होय तो पण ग्रहण करवुं, अने नीच थकी पण विद्या ग्रहण करवी तथा स्त्रीरूप रत्ननुं नीच कुल थकी पण ग्रहण करवुं.

॥ पूर्व ढाल ॥ ते जणी स्वयंवरे मेलवी लाला, कीजे अतिहि विवाह ॥ ए विधि छे राजधानीनो लाला, जेम होये सविने उत्साह ॥ कु० ॥ रू० ॥ १३ ॥ विनयवचन एम सांजली लाला, कहे दीपचंद्र नरेश ॥ ए गंजीर गुणथी लहुं लाला, निरहंकार नरेश ॥ कु० ॥ रू० ॥ १४ ॥ लोज लेश दीठो नहीं लाला, राजकनीने हेत ॥ इत्यादिक गुणे जाणीयो लाला, कोइ उत्तमता तव चेत ॥ कु० ॥ रू० ॥ १५ ॥ केइक कुलथी नीच छे लाला, पण गुणथी छे उंच ॥ केइक कुल उंचा हुंता लाला, पण गुणथी हुए नीच ॥ कु० ॥ रू० ॥ १६ ॥ तुं तो गुण कुले उंच छे लाला, दीसे छे प्रत्यक्ष ॥ व्यवहारी कुल नीच नहीं लाला, ते तो दीसे शास्त्र समक्ष ॥ कु० ॥ रू० ॥ १७ ॥ रूप कांति मंडितपणे लाला, ...

तहां अगदन्य नहीं कोय ॥ कु० ॥ रू० ॥ १८ ॥ नीच वगाण्यो शिर चंप धरे लाला, शारद पर शकराज ॥ चंप वखाण्यो गीधुं तोगे लाला, तज्ञागामिन नाह ॥ कु० ॥ रू० ॥ १९ ॥ यतः ॥ पानिरागनयकूप्यर्ध, नाम्यर्थ पुष्पने पुंधः ॥ काकोहमिति जल्पश्च, हंसः किं याप्यगो नवेत्— १ ॥

नावार्थः—पोतानुं अने गपंडानुं स्वरूपनु हाथ पुरुषो सो पोतानी मेळेज जाणे छे, धने हुं कागडो छुं एम केनार हंस थोड़ बिगड़ काइ होय ' महिज होय.

॥ पूर्व ढाल ॥ ते माटे मनोरथ अम तणा लाला, पूरो इहां न विचार ॥ एह विवाह हवे करो लाला, नागरो इहां वेकार ॥ कु० ॥ रू० ॥ २० ॥ एम कहे पण इच्छे नहीं लाला, न वदे लाजथी वयण ॥ एम जाणी गणि आवीया लाला, जेन तणे घर मयण ॥ कु० ॥ रू० ॥ २१ ॥ तदनंतर घर गुणतिशुं लाला, जोजन विविधुं धर्ं ॥ ऋद्धगारी जमाडीया लाला, धवंगवी थडी गई ॥ कु ॥ रू० ॥ २२ ॥ चंदनमाळे शोजावीया लाला, मानवा हव करी नेह ॥ ऊर्ध्वं नृप चित्रशंसे लाला, वेगाले नयि नेह ॥ कु० ॥ रू० ॥ २३ ॥ एहवे श्रीपवी तणा लाला, गुन वरचंद कुमार ॥ यदी पद्मिनीनो वंधु ने लाला, जे वामांग कुमार ॥ कु० ॥ रू० ॥२४॥ गर्व महथा तिहां एकठा लाला, नर्म वचन कहे ताम ॥ कहे विवाहनी योग्यता लाला, इहां नहीं विशेषनुं काम ॥ कु० ॥ रू० ॥२५॥ दुग्धमांहे जेम शर्करा लाला, जेम नागवल्ली पुंग वृक्ष, कल्पवल्ली कल्पद्रुमे लाला, ए शोना सर्व दक्ष ॥ कु० ॥ रू० ॥ २६ ॥ तेम गुम योगे पद्मिनी लाला, होशे महोदय योग ॥ एह काम कीधे हवे लाला, वीजा वधु शुन योग ॥ कु० ॥ रू० ॥२७॥ कुमर कहे ए नथि सर्व लाला, पण लूमणां ए नथि थाय ॥ दिशि जोवाने नीकर्यो लाला, विण पृथ्वी माय ताय ॥ कु० ॥ रू० ॥२८॥ विनयी ए लक्षण नहीं लाला, जिहां नंदे भावंत ॥ ने नणी मानवने कही लाला, लज्जालु कुलवंत ॥ कु० ॥ रू० ॥२९॥ लज्जा गुणनी मायमी लाला, लज्जा ऋद्धि निधान ॥ लज्जाहीन जे मानवी लाला, नहीं तस ज्ञान न मान ॥ कु० ॥ रू० ॥ रू० ॥ चंदनी कहे तें नणे लाला, जे तुमे बोल्या वयण ॥ ए तुम कुलने उचित ने लाला, पर तात नथि परवीण ॥ कु० ॥ रू० ॥ ३१ ॥ पण पूर्वे उत्तम जना लाला, नाग्य परीक्षण काज ॥ नीसरीया ने परदेश लाला, तम मलिया ने धनराज ॥ कु० ॥ रू० ॥ ३२ ॥ तिहां शुं नथि पूछी गया लाला, सर्व ने नाग्याधीन ॥ पिता तेहयोहित रहे लाला, पुत्र होवे जगत सुदिन ॥ कु० ॥ रू० ॥ ३३ ॥ फर्म ने सहुनां जूजूयां लाला,

ने जाणी तुमे छो दक्ष ॥ ज्ञानविमल गुरु जागथी लाजा, मंदर मध्ये केइ लक्ष ॥ कु० ॥ रू० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१२ ॥

॥ दोहा ॥ सोरठा ॥

॥ चंद्रवतीनां वयण, सांभलि चिंते चित्तमां ॥ नृप राणी माता बहिन, केम उत्तर दिउं एहमां ॥१॥ तेहवे कहे अमात्य, शुं दुष्कर एहमां अछे ॥ धन विवाहने राज्य, गृहीने तो ए मधयुं रुचे ॥ २ ॥ अमने कहेजो कोइ, एहवुं तो होशे लीयां ॥ जरियां जरे सहु कोइ, न होये रेवा मरुथले ॥ ३ ॥ कहे हवे चंद्रकुमार, अग तपशो मलिशो नथी ॥ जे लघुकर्मा शुभाचार, तेहनेशुं अधिक संतोषथी ॥ ४ ॥ कहे वामांग कुमार, एह विवाहने मानशो ॥ पण विवेकने मान, देखीने वली जाणशे ॥ ५ ॥ अहो अहो कुमर विवेक, राज्य कनीये निरीह छे ॥ जोग मले तो योग, वांछे ते विरला अछे ॥ ६ ॥ छता जोगने छंडी, योग ग्रहे धीरज धरी ॥ कोइ अछता इच्छंति, कर्मदिशा जस आकरी ॥ ७ ॥ जे संतोष समाधि, सुख आगल उपम नहीं ॥ भवसुख ते तृण मात्र, उत्तम ते इच्छे नहीं ॥ ८ ॥ कहे श्रीचंद्र सुकुमार, राज्य कुमर छो जगतिला ॥ हृदये करो विचार, कहो कुण गुण वाणिज्य जला ॥ ९ ॥ दोहा ॥ वणिक वधूटी निज घरे, करे रंधनादिक कर्म ॥ क्षत्रीय कुलनी उपनी, राज्य सुताने सुशर्म ॥१०॥ किहां घर नरपति कुल तणुं, किहां वणिक कुल नीच ॥ तुम मनमां नथी आवतुं, पण न मले ए संच ॥११॥ तुमो सवि कन्या पदनां, हितचिंतक छो जाय ॥ पण ए वणिक तणे घरे, शी परे सुखिणी थाय ॥१२॥ जो एहवो योग मुजने, विधि जो मेलण हार, ॥ तो श्याने वणिक कुले, देवत मुज अवतार ॥ १३ ॥ एम निज वयणनी चतुरता, करी करावे मौन ॥ सघली देखीने थइ, चंद्रकला हृदि दून ॥ १४ ॥ आंसु जलजलीयां नेरे, जेम जलथल गत मीन ॥ चंद्रकला थइ बीजनी, दीन वदन चिंतातुरी ॥ खेद धरी होइ खीण ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ ४२७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

देशी जतिनी, भलनी मनमा जे आणी ॥ ए देशी ॥

॥ अइ धीन ने पूछी आली, अनुरू जावे जइ वाली ॥ मम मनीषमी ...

[illegible] धन्य ताहरी ए [illegible] तेहिज कर

॥ ६ ॥ कहुं पुत्री तें जाओ करी गां, गुण ग्रह्यां घर ए घरीयो ॥ जिहां जिहां जोशो गंगने, तेहिज कर वाद ॥ २ ॥ दोहा ॥ उत्तम जे कारज करे, ते विवेक बहुमान ॥ जिहां जिहां जोशो गंगने ... कोइ क्षत्रीय तेज जणाये, अग निदान ॥ ३ ॥ चाल ॥ परदेश कहुं हुं घाजी, गुरु दीधुं अंग निहाळी ॥ कोइ क्षत्रीय तेज जणाये, अग मनमां चपर न आवे ॥ ४ ॥ कोइ वचनि कर्मने जोगे, छूट्यो घाजी वणिक कुल भोगे ॥ तोहुं फिरयुं दीग लागे, विवाह ते गुणने लागे ॥ ५ ॥ जां जे निज मनकुं गाजी, तो शुं करे लोकने काजी ॥ अमो जाणी वणिकनी जाति, दीधी कन्या जति जाति ॥ ६ ॥ दोहा ॥ जेहने जे मनमां वश्यो, वरशो तेहिज कंत ॥ एक वार कन्या दीजे, एक वार कहे संत ॥ ७ ॥ कन्या ए विवाहथी, होशे अनेक विवाद ॥ राग प्रकृति ठहेशो वाणी, निश्चयथी उन्माद ॥ ८ ॥ चाल ॥ नैमित्तक वचन पण एहवुं, मतनो ज्ञानीना जेहवुं ॥ पाणी गंगद गुननो भेद, होशे नित्य नित्य उमेद ॥ ९ ॥ एम निगुणी शकुन ग्रंथीयंथे, गुणचंद्र मनमां गंथे ॥ कुल सामायिक ने सर्व, छागीने आणावर्युं पूर्व ॥ १० ॥ ते माटे करमह मानो, विवाह न होशे वानो ॥ कोइ पूरव जननो प्रेम, प्रगट्यो ने जाण्यो नेम ॥ ११ ॥ दोहा ॥ ए पद्मिनी जिनधर्मिणी, जाणे जिनवर वयण ॥ श्रीम- त्यणे पवित्र जे, जिनपूजादि प्रवीण ॥ १२ ॥ शुद्ध शील लीलावती, पंचपरमेष्ठी जाप ॥ करती धरती धर्म मनें, करे सामा [illegible] ॥१३॥ एण जे मनमां धर्यो, वरशे पण ए तेह ॥ ते माटे शुभ जाणो, जेम अम थाये नेम ॥ १४ ॥ चाल ॥ श्रीचंद्र विचारे चित्त, जो आवी मळ्युं जे ए निमित्त ॥ राणीनुं वचन न छेदाय, करी प्रेम ए कर्मनी भाग ॥ १५ ॥ जेता गुण दीजे जवाब, ए तो लागो हर्ष संताप ॥ न निषेधुं तेहिज मान्युं, ए न्याये [illegible] ॥ १६ ॥ तेवी चंद्रकला से बेटी, मति लक्षण गुणनी पेटी ॥ कहे घर गते वरमाळ ठवीने, [illegible] ॥ १७ ॥ दोहा ॥ मंडप लोग हर्ष करी, तेणे कीधुं ततखेव ॥ माता पुत्र लाज भरी, [illegible] ॥ एहवो जोय [illegible], गोरी मधुरते सूरा ॥ तेम निरखे आनंदशुं, चंद्रकला [illegible] ॥ छाजा अतिशी आर्थिये, चंदन नाटक जोय [illegible] भारी [illegible] ॥ [illegible] सुकुमाला, पांसीत गुणादिक [illegible] तेहने तेह तेम तेनी ॥ [illegible] ॥ जोवाने राग पासे आवे, तीनी [illegible] काम लिय लाये ॥ [illegible] ए जाणे, जाणुं [illegible]

पत्रानी ॥ २३ ॥ दोहा ॥ एम निगुणी गुणचंद वच, पामांगादिक राय ॥ चतुरादिक परिवार सवि, थारे तेणे ठाय ॥ २४ ॥ तदनंतर चंद्रवती कहे, मरकतकुं करी हाम ॥ पूछीजे वाड कहो, थने विधा अन्याम ॥ २५ ॥ कहे कुमर मनमां हसे, ते पूछो धरी खंत ॥ विधा थएट मंनारी थकी, जाये जेम थएतुंत ॥ २६ ॥ ढाल ॥ चंद्रकला गुणी कंत वयणा, करी रोमांचित तनु नयना ॥ गुण तेर तांबूलना बोल्या, नहीं जाणो, मही बीडुं हाथमां राख्यो ॥ २७ ॥ खेड पाननुं बीडुं हाथ, कहे कुमरने ए तांबूल नाथ ॥ गुण केता एहना वातार्थ कफनाशनं कृमिहरं दुर्गंधनिर्नाशनं ॥ वक्त्रस्याजरणं विशुद्धिकरणं कामाग्निसंदीपनं, तांबूलस्य जवेत् त्रयोदश गुणा स्वर्गेपि ते दुर्लजाः ॥ १ ॥ तथा ॥ पस्वामिन्नेजिरिदं त्रयोदश गुणैर्युक्तं प्रसादिकृतं ॥ १ ॥ जावार्थ ॥ तांबूल, कटु, उष्ण, तिक्त, मधुर, क्षार अने कषाय तेणे युक्त जो होय तो ते केवुं जाणवुं ? तो के वात, कफ हणनारुं जाणवुं तथा कृमिने नाश करनारुं छे, मुखनी दुर्गंधिनो नाशकारक, मुखनुं आजरणरूप, मुखने शुद्ध करनार अने कामाग्निने प्रदीप्त करनार, एम सर्व तेर गुण तांबूलमां रहेला छे ॥ तथा अंतरंग बीटकं कीदृशं इति पृष्टे॥ ढाल ॥ कहे ए तो द्रव्यथी बोल्युं, ए तो सघले दीसे मोहियुं ॥ हवे अंतरंग बीटक कहीये, चंद्रकलाथी तेहनुं लहीये ॥ २९॥ प्रियवच नागरवेली दल, शुद्ध प्रेम ते पूग ॥ समकित चूर्ण कपूर धृति, मरचि निर्झर संयोग ॥ ३० ॥ एहवुं बीडुं मुख धरे, तस सुगंध मुख वास ॥ खयन खास थाय नहीं, जिनवर ध्यान उमास ॥ ३१ ॥

॥ कुमरीमंडया चतुरा मंलया अंतरंगबीटक पृष्टः ॥ श्रीचंद्रः प्राह ॥ संस्कृतजाषायाः काव्यं ॥ सुजा-गपत्रालि मिथः प्रियं वचः, सत्प्रेमपूगानी सुदृष्टिचूर्णकः ॥ संतोषकर्पूरसुगं वर्त्तिकां, तथेदृशं बीटकमस्तु मे विज्ञौ ॥ १ ॥ मत्यं वचो नागरखंमबीटकं, सम्यक्त्वपूगं नुजतत्त्वचूर्णकं, स्वाध्याय कर्पूरसुगंधपूरितं, तदस्तु सख्यः नियमौल्यकारकं ॥ २ ॥ जावार्थ ॥ अन्योन्य प्रिय वाक्य ते रूप तांबूल पत्र, रुडा प्रेमरूप सोपारी, रुडी दृष्टिरूप चूनो, संतोषरूप बराम कपूर, रुडा संगरूप लवींग एवुं मारे तांबूल बीटक जोये ॥ ढाल ॥ वली सखीने एली परे पूछे, हवे ध्यान तणा गुण पूछे ॥ कहे दश गुण ध्याननां कहीये, विवेक शास्त्रमां एहवा लहीये ॥ ३२ ॥ यतः ॥ ध्यानं नाम मनःप्रसादजननं दुःस्वप्नविध्वंसनं, गौनाभ्यासतं ...

तेजगः ॥ कफचोतकरं शिरःशुलकरं कामाग्निसंदीपनं, स्त्रीणां मनमथमोदनं श्रमहरं स्नानं दशैते गुणाः ॥ १ ॥ नावार्थः ॥ मनने प्रसन्न राखनार, माठा स्वप्ननो नाश करनार, सौनाग्य करनार, मळनो नाश करनार, तेजने वृद्धि करनार, रूपने प्रकाश करनार, मस्तकने शुल करनार, कामाग्निने संदीपन करनार, स्त्रीना मनने काम-देव उत्पन्न करनार तथा श्रमने नाश करनार, ए दश गुणवालुं स्नान कर्युं ने ॥ चाल ॥ अंतरंग स्नान हवे दाखो, करे शमरस अमीजळ चाख्यो ॥ जेहथी विषयांक मळ जावे, तृष्णानो ताप छळावे ॥ ३३ ॥ वळी पूछे शीमश्री नेह, चतुरा कहे दाखो नेद ॥ रूपे तो मधुर जाणे, पण जावे स्वामि वखाणे ॥ ३४ ॥ श्रीचंद्रः भाख ॥ दोहा ॥ गुण तंडुलनुं नीपनी, करुणा दालि संजुत ॥ समकित घृतनुं जिमीये, तो नांजे नवनृत ॥ ३५ ॥ यतः ॥ गुणतंडुलनिष्पन्ना, सन्मैत्रीदाली सुंदरा ॥ सम्यक्त्वघृतसंपूर्णा, हिम का नुज्यतामियं ॥ १ ॥ नावार्थः—गुणरूप चोखा, तथा सारी मैत्रीरूप सुंदर दाल तथा सम्यक्त्वरूप घृते करी शुक्ल खीचडीनुं नोजन करवुं ॥ अथ कुमरीभृंगश्या कोविदागल्या अंतरंगलपनश्रीनोग्ये पृष्टे ॥ कुमर आह ॥ चाल ॥ लपनथी जेह त्रिधारी, अंग अमनाय पूजा धारी ॥ नानाविध सेगर जारी, विधि रचनाये एह धारी ॥ ३६ ॥ यतः ॥ लप-नश्री त्रिधा नक्ति, श्चित्रनक्तिसुराजिता ॥ सा नित्यं नुज्यमाना हि, तनुशोनां वितन्वतां ॥ नावार्थः—त्रण प्रकारनी नक्ति, चित्र विचित्र नक्तिए करी सुशोनित, एवी लापसी जमे छते निरंतर शरीर शोनाने वधारे ने ॥ अंतरंगगुलपर्पटिकानोग्ये पृष्टे ॥ पुनः कुमर आह ॥ चाल ॥ गुल पर्पटिका कहो केही, जस नाम न लाग्ये जेही ॥ अनुकंप उचित कीर्तिदान, एहना जिहां नाम प्रधान ॥ ३७ ॥ अंतरंगे पहिज जाणो, मन कृपणपणुं नवि आणो ॥ एम नोजननी कुरमाइ, नित्य कीजे तेही नलाइ ॥ ३८ ॥ यतः ॥ त्रिधा दानसमानं यदृपकुमानेन संयुतं ॥ गुलपर्पटिका सूर्णं, नुज्यतां भरयष्टं सखे ॥ १ ॥ नावार्थ—प्रमाण विनानुं त्रण प्रकारनुं दान पण माने संयुत करवुं, तेरूप गोळपापडीनुं हे सखी प्रतिदिन नोजन करवुं ॥ अथ वरदत्तादिकुमारे देव, गुरुधर्मतत्त्वे पृष्टे ॥ पुनः कुमर आह ॥ चाल ॥ शुद्धदेव सुगुरु शुद्धधर्म, जाणो हवे तेहना मर्म ॥ जे विणु पण नयमां नमिया, नव इणे विणा अरहेंते गमीया ॥ ३९ ॥ वळी दोष अढार न दीसे, अतिशय गुण जास जगीशे ॥ निर्दूषण धारे वाचा, अवितथ षडविध जग याचा ॥ ४० ॥ त्रैलोक्यमीहित हितकारी, वर ज्ञान ने दर्शन धारी ॥ एवी सफल देवनो देव, नव नव कीजे तस सेव ॥ ४१ ॥ समकित युत इंद्रिय दामे,

जिनवचन तणो रस चाखे ॥ पण समिति गुप्ति जे धारे, जे आप तरया पर तारे ॥ ४२ ॥ षट्काय तणा जीव राखे, जिनमारग सूधो जाखे ॥ नहीं ममता समता धास्या, एहवा शुद्ध गुरुने उपास्या ॥ ४३ ॥ वीतराग प्रणीत हितदायी, मुनि आदरे जेह अमायी ॥ जे प्रवचनने अनुकूल, दया आणी विनय ते मूल ॥ ४४ ॥ दुर्गति पडताने धारे, दशविध क्षांत्यादिक सारे ॥ ते धर्म कहीजे सूधो, सुणी सघला जन प्रतिबूधो ॥ ४५ ॥ ए तत्त्वत्रय जस चित्ते, निरुपाधिक अंतर वृत्ते ॥ ते त्रिभुवन तिलक समान, नर कहीये जस मन ए ध्यान ॥ ४६ ॥ एम चंद्रवती जे राणी, तेम प्रदीपवती गुणखाणी ॥ सची हरख्या सुणी सत वाणी, जेम सारंग जेठी पाणी ॥ ४७ ॥ प्रिय बोला सखी हवे बोले, कहो स्वामि कोण तुम तोले ॥ अंतरंग जोजन देखाडो, अमने जरपूर जमाडो ॥ ४८ ॥ हवे कुमर तिहां वली जाखे, हितकारक माया राखे ॥ परमावर्त्त ने धरम जे करण, जोजन मंडप चित्त ठरण ॥ ४९ ॥ सामग्री शुज बाजोठ, सिंहासन चित्त अकुंठ ॥ उचितादिक गुण आंख लिया, उच्छाह सकल जिहां मलिया ॥ ५० ॥ शुजरुचि तिहां थाल विशाल, गुणराग ते वाटिका माल ॥ गुरुजन ते होये हितकारी, तिहां जोजनविधि करे सारी ॥ ५१ ॥ पीरसे समकित सूखडी, जेथी जाजे जव दुःखरूडी ॥ परमार्थ संस्तव दल दोठां, गुणी सेवा शुजदल मीठां ॥ ५२ ॥ सुकुमालपणुं सुंहाली, जिन-जक्ति जिलेबी जाली ॥ जे नियम तणो सावधान, ते विविध जाति पकवान्न ॥ ५३ ॥ मोदोडुं मन मोतीचूर, पञ्चखाण फल्यां घृत पूर ॥ गीत गान ते मीठा मेवा, वच वच तेहना रस लेवा ॥ ५४ ॥ श्रुतज्ञान तणी जे दीखा शाख दाल शुजाशय पीला ॥ करंबो कृत कार्य विवेक, हित शिक्षा चमका देक ॥ ५५ ॥ अनुजवरस शीतल पाणी, लेइ पावन थाओ प्राणी ॥ एणी परे अंतरंग जमाडी, तिहां पूरी सहुनी रुहाडी ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ हवे सामांगादिक कहे, कहो अंतरंग विनोद ॥ सारी पासा सोगठां, सुणवानो छे मोद ॥ ५७ ॥ जवचोपट चोगानमें, थितियानक समुदाय ॥ राग द्वेष पासा तिहां, सोगठ सोल कषाय ॥ ५८ ॥ कुमति कुघरणीशुं रमे, मदीयो आतम राय ॥ कृष्ण नील तोरे नहीं, लेश्या रंग बनाय ॥ ५९ ॥ ए रामत जीते नहीं, जव प्रपंचको खेल ॥ दाव न आवे पाधरा, आतम अनुजव मेल ॥ ६० ॥ ढाल ॥ चारित्र चोगाने आवे, समतासुं संगति लावे ॥ बार जावना मैत्र्यादिक चार, सोल सारी दाव उदार ॥ ६१ ॥ ज्ञान दर्शन पासा होय,

नील पीत धवल रंग जोय ॥ जीते तव जगनो लेह, होये अनुभवनुं रंग रेह ॥ ६२ ॥ अविरति मिथ्यात्व
कषाय, प्रमाद चोक चोकक ए थाय ॥ अशुभ योग ते ते गुण जाणो, दाय ए राग द्वेष वखाणो ॥ ६३ ॥ अज्ञान
ते एक कहीजें, चोकनुं पण ते लहीजे ॥ ए पण दुग ए पंच लहीजे, एम रागनो रंग कीजे ॥ ६४ ॥ एम रागल
जे रमी जाणे, जे अंतरनाय वखाणे ॥ ते कहीये रंग रंगीला, जिनमतना जेह वगीला ॥६५॥ अपर वात॥ चोवीश
दंडक द्वार गारी, चोसठ अनुभाग विचारी॥शुभ अशुभ तणा जे ठाण, अध्यवसाये अहीनाण ॥६६॥ येहु नर्के
पाये पार, जे अविरति केरां द्वार ॥ बिहु चोके होय आठ, जिहां विरति तणा होये पाठ ॥ ६७ ॥ गति
आगति वचन उपात, नारीनी ए छे वात ॥ एहना छे अर्थ अनेक, लहीये जो होय विवेक ॥ ६८ ॥ सुणी
नाय एहवा वाक, काया कुमर तिहां मति पाक ॥ जे गुरुमुखथी अर्थ भाख्या, वली अनुभव ज्ञान विचाख्या
॥ ६९ ॥ अथ पुनः कुमरं प्रति वरदत्त आह ॥ दोहा ॥ सात व्यसन जे द्रव्यथी, ते दुःखदायक होय ॥ पण
अंतरंग जो वारिये, तो परमानंद होय ॥ ७० ॥ द्यूत मांस वेश्या सुरा, चोरी आखेटक परदार ॥ एहेकुं सेव्युं
हीये, नरक तणां ए द्वार ॥ ७१ ॥ ए तो जाति थकी टले, लज्जाये वली जाण ॥ पण अंतरंग न टालीये, तो
होये नरक निदान ॥ ७२ ॥ छप्पय ॥ कर्म्मप्रकृति ए द्यूत, खेलवुं अहनिशि वारो ॥ परपरिवाद मिष्टि मांस,
मोह मदिराने वारो ॥ कुमतिवेश्या संयोग, अदत्त बहुविध ते चोरी ॥ आखेटक दुर्ध्यान, आगवर ते पर
गोरी ॥ एहीज अंतरव्यसन छे, अनादि दुःखदायकुं ॥ ज्ञानविमल गुरु वयणथी, लहीये एह उपायकुं ॥ १
॥ दोहा ॥ एणी परे बहुविध ज्ञाननी, चरचा करे कुमार ॥ जे जे वातो पूछीयां, तुरत कह्यां तेणी वार ॥ ७३ ॥
पुनः पृच्छति माधवः कीदृशाः सुखिनः ॥ इति पृष्टे ॥ कुमरः आह ॥ छप्पय ॥ धर्म कहीजे ताय, माय
जग क्षमा भणीजे ॥ भ्राता संयम सार, दया जग बहिन सुणीजे ॥ सत्य सुमित्र पवित्र, उमितल
पोशेहीय नगरा ॥ भोजन ज्ञान सुतत्त्व, दशोदिश वस्त्र समग्गा ॥ विरति नारी दीपक वली, चंद्र
जिहुं दिशि उजलडे ॥ ज्ञानविमल गुरु साधने, सयल कुटुंब साथे मले ॥ १ ॥ निज भुज घर
उपधान, पवन अति बीजण भावे ॥ चंद्रोदय आकाश, विपुल जस अंत न आवे ॥ मुक्ताफल उपमान,
तार माला अति फावे ॥ दिशि कन्या अनुकूल, सुवरे जग वाय डोलावे ॥ ऋजुता विरति सुनारिशुं, करे
केली निशदिन वली, ज्ञानविमल कहे नृपति परे, सुखे सोवे छे यति ॥ २ ॥ नयर विवेक उदार, सार सम-

चित्त दृढ पायो ॥ नवतत्त्वह दरबार, घोष मद्देलो मन जायो ॥ धर्मरयण जंडार, दान दम फलक नीपायो ॥ रम्य नीराग श्रृंगार, सदरम सेजा समपायो ॥ आगम नयनी गजपटा, ध्वजा महामत लहलहे ॥ नय कहे सम संतोष परिमल, अंगे चंदन महमहे ॥ ३ ॥ आगम पाठ सुगीत, रीति तिहां यंत्र बजावे ॥ नाटक समयत संसार, जीव नट नृत्य देखावे ॥ षड्ज मह्दल मान, तान घडी खोल जगावे ॥ नटनायक तिहां मोह, हाव-जाव भाव सुणावे ॥ एणी परे ऋषि राजा सदा, जोये तान उलट धरी ॥ ज्ञानविमल मुनिराजनी, कीर्ति चिहुं दिशि विस्तरी ॥ ४ ॥ कष्ट सहे केम एह, जेह एता परवरियो ॥ श्रीजिनवरनी आण, छत्र शिर उपर धरियो ॥ पहेरयो शील सन्नाह, तेग संवेग कर लीधो ॥ जिन उपदेश सुचक्र, धरि सवि थयो सुप्रसिद्धो ॥ राग द्वेष दुःशमन दृष्टा, हणी चिंता मन तणी ॥ ज्ञानविमल सूधा साधनी, अछे ए प्रभुता घणी ॥ ५ ॥ अथ अंतरंगदीपालिका कीदृशी ॥ काव्यं ॥ सत्ध्यानोज्वलदीपकः विलसत् स्वाध्यायमारात्रिकः, शुध्धाहार सुजोजनः सुगुणशाक् तांबूलशोजाजृतः ॥ श्रीनिर्ममलक्ष्यपागमजजेष्ठावनामोत्तरः ॥ शीलालंकृतजागमुदे जयतु योऽर्हद्धर्मदीपोत्सवः ॥ १ ॥ अथ श्रीखंडेण अंतरंगसाधुदीपोत्सवे उक्ते सति वारांगना नाटयमध्ये तदेव गायसाह ॥

॥ लाल मेरे प्यारे रे ए देशी ॥

दुःखहरणी दीपालिका रे लाल, पर्व थयुं जगमांहे जवि प्राणी रे ॥ जिन निर्वाणथी थापना रे लाल, आज लगे उच्छाह मनोहारी रे ॥ १ ॥ समकितदृष्टि सांजलो रे लाल ॥ ए आंकणी ॥ स्याद्वाद् घर धोळीये रे लाल, दर्शननी करो शुद्धि ज० ॥ चारित्र चंद्रोदय जला रे लाल, ते टालो रजनी वुद्धि म० ॥ स० ॥ २ ॥ सेव करो जिनराजनी रे लाल, दल दोगं मीलाश ज० ॥ विविध पदारथ जावना रे लाल, ते पकवान्ननी राशि म० ॥ स० ॥ ३ ॥ गुणिजन पदनी नामता रे लाल, तेही जुहार जटार ज० ॥ विवेक रल मेराइयां रे लाल, उचित ते दीप संजार ॥ म० ॥ अनुमोदना तेल सार ॥ म० ॥ स० ॥ ४ ॥ सुमति सुवनिता वासीये रे लाल, मनघर मांहे विलास ज० ॥ विरति सहेली साथनुं रे लाल, अविरति अलच्छी निकास म० ॥ स० ॥ ५ ॥ धर्मरागना चित्तना रे लाल, तेहिज जला रायगार ॥ ज० ॥ दर्शन गुण पाया वध्या रे लाल, सूधा घर उप-कार ॥ म० ॥ स० ॥ ६ ॥ पूरव सिद्धकन्या मले रे लाल, आनंदया हुआ ख्बगार ॥ ज० ॥ [illegible]

॥ म० ॥ म० ॥ ३ ॥ अनंत चतुष्टय दायको रे लाल, गुण धाम निर०

नेहिला रे लाल, करुणा निधि मार ॥ म० ॥ म० ॥ ३ ॥ अनंत चतुष्टय दायको रे लाल, पुणि परे गई दीवालिका रे
॥ न० ॥ पालिमदग त्रिजगी करे रे लाल, गहुने इंद्रियोध ॥ म० ॥ म० ॥ ७ ॥ प्रगट सकल गुणगाण ॥ म० ॥ म०
लाल, करवां कोडी कल्याण ॥ न० ॥ ज्ञानविमल गुरु सेवनां रे लाल, प्रगटे सकल गुणगाण ॥ भाव ॥ कह्यो कंडुकनी हवे
॥ ७ ॥ इति ॥ कुमरीअंदिलासिनः पुनः कोविदादिनिः पृष्टे मनि कुमर आद ॥ भाव ॥ कह्यो कंडुकनी हवे ॥ ३४ ॥ क्रोध
दीक्षा, अंतरंग त्यागनी दीक्षा ॥ एक नर एक नारि पंचाली, मोह नृपति तणा ते गाथी ॥ ३५ ॥ पसे
मान शांत ते माया, नवकुंड ते उन आगा ॥ उच्चाडे अविरति गेडी, अज्ञान दंडडा जेडी ॥ ३६ ॥ दवे
दीक्षा लिधु गंगी ॥ नव्य अनव्य जीव पडी ॥ दुर्गागना माय गंडोडे, तेहथी नवकुंडमां थोडे ॥ ३७ ॥ दवे
मानि त्रि गुणगा गाथी, ते गग नरगां रमे त्रादी ॥ दान शील तप त्रिडुं पुरिया, तावना वनिताने मरिया ॥
७७ ॥ धन्ना गेदीनुं उन्नावे, गिडनुं मामांहे पाडे ॥ नवमाणीवे पद दीधा, जे समकित गुणथी भीधा ॥७०॥
एम रमन करता जीते, तव नयना भ्रमण अनीते ॥ गुणी रामत एहवी वात, गुणी गुणपी घर गाती जात
॥ ७८ ॥ एम गोष्टी करी वहुवार, हरख्यो मडूचे परिवार ॥ गमी चंद्रकजाने नाम, श्रीचंद्रनो केहवो प्रकाश
॥ ०० ॥ गला ॥ श्रयमी केत्रिगतो ढक्षागनिमयो दिगस्त्री गधू दर्पण, श्यामा यदि सुमंगलसिंधु कुसुमं व्योमा-
त्रिरंनोरूपमा ॥ तारा गोपुर मुक्ति गीतनिषृष्टं चत्रे स्मरदमारने, थंद्र श्रीमकडधिरं विजयतां ज्योत्स्ना सुधासा-
गिरा ॥ १ ॥ भाव ॥ एम निगुणी कडानी पाणी, मनमां हरख्या गुणी प्राणी ॥ कहे कुमर हवे सुणो दाखो, ए
तीने नंदकजानुं वर्णन आग्यो ॥ ०१ ॥ तना कुमरः प्राह ॥ हुंकारो मदनद्विजस्य गगनक्रोडस्य दृष्टांकुरा, तारा-
पतिनिः सुक्ति पसयसमंदरमण्डांकुला ॥ शृंगाररागंउवुंनिकानिरलिपी मानस्विनी कलोरी, गंधा पारपधून-
मद्दिलिपि चांदीकला राजते ॥ १ ॥
॥ भाव ॥ जिम चमकी कहे मति निहार, ताओ योग मदयो अनुकार ॥ चंद्रित गुणथी पुत्र जाणजुं,
अनुराग ते एम बीजाणजुं ॥ ०२ ॥ एम करतां रयणी विहाणी, कर जोडीने आवे राणी ॥ तव शेठ कहे एम
गाते, नही आवे कुमर ए माते ॥ ०३ ॥ प्रम पर देवपूजा करतो, नियमादिक मनि अनुसरतो ॥ नही
... ॥ ०४ ॥ एम निगुणी शेठ घर पोहोता, चंद्रकजा माये

गहगहता ॥ एह ढालमां अंतरंग वात, कहे ज्ञानविमल सूरि विख्यात ॥ ७९ ॥ ए ढालमां उक्त ढाल सुधां सर्व गाथा ॥ ११० ॥ सर्व गाथा ॥ ५३७ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ हवे दीपचंद नरस्वामि, पूछे गणकने तेमीने ॥ लग्नविवाहने काम, शुभ दिन दाखो ज्योतिषी ॥ १ ॥ दोहा ॥ कहे गणक प्रभु सांजलो, शुद्धलग्न छे काल ॥ दीपचंद कहे केम मले, सामग्री ततकाल ॥ २ ॥ केम शुभगांग नरेसरु, आवे एता मांह ॥ ए तो लग्न न संपजे, दिन जुओ अवर उच्छाह ॥ ३ ॥ निमित्तज्ञ कहे ते खरुं, एहवुं लग्न न कोय ॥ राधमास सीत पंचमी (वैशाख सुदि पंचमी) बहुरेखा शुभ जोय ॥ ४ ॥ दोष कोय नवि एहमां, जोतां विश्वावीश ॥ ए साचवतां आपणी, वधशे अधिक जगीश ॥ ५ ॥ ते माटे ए साधीये, करजो पछे विस्तार ॥ उत्तमने शुभप्रकृतिथी, नित्य नित्य मंगल चार ॥ ६ ॥ तेह वयण अंगी करे, दीपचंद्र नरनाथ ॥ सवि सामग्री मेलवे, हर्षित थयो सहु साथ ॥ ७ ॥ मुज पुत्री पुरवास छे, शेठ मुख्य तस नंद ॥ ते मुज पुत्र समो गणुं, पामुं अधिक आनंद ॥८॥ श्रीचंद्र कुमर पासे रही, प्रदीपवती पण एम ॥ चिंती बहु उत्सव करे, पुत्री पुरने प्रेम ॥९॥ सप्त भूमि आवास जे, शणगारे घर हट्ट ॥ ठाम ठाम वियाहनां, मंमाणा गहगट्ट ॥ १० ॥ निज भूषणथी शोभिये, तनुछवी अधिक प्रभाव ॥ ओठाने शोजा करे, ते तो कृपण स्वजाव ॥ ११ ॥ तेणे दिन शुभ रिख योग शुभ, वार लग्न सवि सौम्य ॥ वर्णक उद्वर्णक विधि, मारंज्या सवि हर्म्य ॥ १२ ॥ मंगलधवल ध्वनि बहु, वाजे मंगल तूर ॥ दिशिमंडल वहेरुं कर्युं, दिनकर अधिक सनूर ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ ५५० ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥

टुंक अने तोडा विचे हो, मेदीनां दोये रुंख, मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥

॥ वंधुर सिंधुर उपरे रे, चढिया चंद्रकुमार ॥ सुंदर सोजागी ॥ वंदीजन जय जय जणे रे, आवे मंडप वार ॥ सुंदर ०॥ १ ॥ लय लागी तेणे तान, वारु वयरागी ॥ दीये दीये अढलक दान, सहु होये रागी ॥ ए आंकणी ॥ चतुरंग सेनाये परवर्या रे, नाटिकबद्ध बत्रीश ॥ सुं० ॥ लग्नोदय वेला सधि रे, हय खेवे सुजगीश ॥ [illegible] ० ॥ २ ॥ , चंद्रकला कर मेलवे रे, श्रीचंद्रकुमरने [illegible]

वरती जय जय वाण ॥ गुं० ॥ ३ ॥ तेणे नगरे गुणीयो बहु रे, नहीं केहने विखवाद ॥ गुं० ॥ कर मोचन
वेळा दीये रे, गज तुरंग प्रासाद ॥ गुं० ॥ ४ ॥ विधिशुं उत्कृष्ट ओच्छवे रे, थयो श्रीचंद्रविवाह ॥ गुं० ॥
दीपचंद्र नृप पण करे रे, विवाहनो उच्छाह ॥ गुं० ॥ ५ ॥ रुप्य सुवर्ण रत्नादिके रे, पूर्या बहु धनकोष ॥ गुं० ॥
यथाशक्ति बीजा दीये रे, तेथी नृप संतोष ॥ गुं० ॥ ६ ॥ धरणेंद्रे आप्यो अछे रे, अतिबहु मूल्य जे हार
॥ गुं० ॥ चंद्रवती पण ते दीये रे, दिव्यप्रभाव उदार ॥ गुं० ॥ ७ ॥ पद्मिनी नाइ चांगच छे रे, तेणे दीधुं बहु
द्रव्य ॥ गुं० ॥ सिंहपुरथी जे आवीयो रे, जे जे वस्तु ते नव्य ॥ गुं० ॥ ८ ॥ प्रत्येके पंच वर्णनां रे, अश्व
रथ ने पल्यंक ॥ गुं० ॥ श्रीकरी जूषण मुद्रीका रे, सिंहासन बहु अंक ॥ गुं० ॥ ९ ॥ मुकुट ओशीशां
चंद्रुआ रे, हेम कचोळ ने थाळ ॥ गुं० ॥ शय्या सवि साजे सजी रे, घर वळी तुंग विशाळ ॥ गुं०
॥ १० ॥ ध्वज छत्र तोरण दीपिका रे, कुंजादिक सवि रात्र ॥ गुं० ॥ कुंत खड्ग धनु शर मुशल रे, शस्त्र
सोळनां रात्र ॥ गुं० ॥ ११ ॥ जूषण सघळी जातिनां रे, नीराणादि अनेक ॥ गुं० ॥ प्रत्येके
पंच पंच दासा रे, दीधां धरी विवेक ॥ गुं० ॥ १२ ॥ राज सत्तांग वळी आपीयां रे, वळी वहेली आठ
॥ गुं० ॥ चतुरा कोविदा प्रियंवदा रे, आनंदादि सुपाठ ॥ गुं० ॥ १३ ॥ चतोंतेर वळी सानरणशुं रे, आपी
सेवा काज ॥ गुं० ॥ बत्रीश पात्र पद्म अति जला रे, शोळस नाटक साज ॥ गुं० ॥ १४ ॥ वळी कुशलांग नृप
आवीने रे, देशे दायजो जेह ॥ गुं० ॥ सार सार जे वस्तु छे रे, दीधी ते धरी नेह ॥ गुं० ॥१५॥ हवे प्रनाते
गज बेसीने रे, जाये नगरी मांहि ॥ गुं० ॥ विविध उत्सव करता थका रे, जेम हरि नंदनवन मांहि ॥ गुं० ॥
॥ १६ ॥ पहवामां एक जे थयुं रे, निसुणो थइ सावधान ॥ गुं० ॥ कनकदत्त व्यवहारियो रे, रूपवती कनी
नाम ॥ गुं० ॥ १७ ॥ थइ श्रीचंद्र अनुरागिणी रे, कहे जनकने एम ॥ गुं० ॥ में मने श्रीचंद्रने वर्यो रे,
अवरने वरवा नेम ॥ गुं० ॥ १८ ॥ पिता कहे सुण बालिका रे, तुं दीसे छे मूढ ॥ गुं० ॥ शुं तें पुरमां नथी
सुणयुं रे, एहनुं अंतर गूढ ॥ गुं० ॥ १९ ॥ पद्मिनी कन्या परणवा रे, राजादिक मळी सर्व ॥ गुं० ॥ अत्या-
ग्रहथी मनावीयो रे, लटयामे ते पर्व ॥ गुं० ॥ २० ॥ तुज सरिखीनी वातनी रे, ते न धरे निज कान ॥ गुं० ॥
तो आशा शी तेहनी रे, न करीश मनमां मान ॥ गुं० ॥ २१ ॥ एम पिता वयणां सांजली रे, चिंतातुर तव
थाय ॥ गुं० ॥ घर वातायनमां रही रे, करशे कोइ उपाय ॥ गुं० ॥२२॥ एहवे मांहे आवतां रे, दीठा श्रीचंद्र

कुमार ॥ सुं० ॥ गोख तळे जब नीकल्या रे, गाजते परिवार ॥ सुं० २३ ॥ नृत्यंतरमांहे दाखी रे, वींटी कुसुमनी माळ ॥ सुं० ॥ मेघ तेम जेम देखती रे, आगळे पमी रसाळ ॥ सुं० ॥ २४ ॥ ऊंचुं जोयुं जेटले रे, दीठी कन्या त्हां गोख ॥ सुं० ॥ अनुरागिणीये जे दाख्युं रे, जाव मयाची जोर ॥ सुं० ॥ २५ ॥ हवे तेणे जे वाक्य दाख्युं ते कहे छे ॥ तथाहि ॥

॥ निरर्थकं जन्मगतं नलिन्या, यया न दृष्टं हि सुधांशुबिंबं ॥ उत्पत्तिरिंदोर्विफला च येन, दृष्टा प्रबुद्धनलिनी कदैवः ॥ १ ॥

॥ पूर्व ढाळ ॥ वांची जावि निज मने रे, चंद्रकळा कर दीध ॥ सुं० ॥ गाम गाम दान देयता रे, शोजा पाम सवि लीध ॥ सुं० ॥ २६ ॥ निज उतारे आविया रे, जोजन विधि करी खास ॥ सुं० ॥ नगर लोक जमाडीयो रे, ते दिन जक्ति विलास ॥ सुं० ॥ २७ ॥ शेठ सुताये मोकली रे, सखी एक तस पास ॥ सुं० ॥ चंद्रकळाये कहावीयुं रे, आगळ पोहोंचशे आश ॥ सुं० ॥ २८ ॥ हमणां तो अवसर नथी रे, एम कही वाळी तेह ॥ सुं० ॥ एहवे धीर प्रधानजी रे, आवी मळ्या गुणगेह ॥ सुं० ॥ २९ ॥ कहे तिलकपुर आववुं रे, विवाह करणने हेत ॥ सुं० ॥ तिलकमंजरी दीन छे रे, राधावेध संकेत ॥ सुं० ॥ ३० ॥ कहे श्रीचंद्र हवे धीरजे रे, ते जाणे सवि तात ॥ सुं० ॥ हुं कांइ जाणुं नहीं रे, आणा विणु नवि थात ॥ सुं० ॥ ३१ ॥ वीणारव गुणीजन कहे रे, गाउं तुम गुण गीत ॥ सुं० ॥ कुमर कहे हमणां नहीं रे, गायन समय सुविनीत ॥ सुं० ॥ ३२ ॥ एम कहीने बीजे दिने रे, चाल्या चतुर कुमार ॥ सुं० ॥ सुसरे आवता राखीआ रे, पण न रह्या तेणीवार ॥ सुं० ॥ ३३ ॥ गज मूक्या सवि तिहांकणे रे, अपर सवे लीये साथ ॥ चाले माले मोजशुं रे, राजादिक ग्रही हाथ ॥ सुं० ॥ ३४ ॥ मार्ग घणो उल्लंघता रे, सुखीया सघळा लोक ॥ सुं० ॥ ज्ञानविमल सूरि एम कहे रे, पुण्ये सघळा थोक ॥ सुं० ॥ ३५ ॥ सर्व गाथा ॥ ५०५ ॥

विनय भक्ति गुण देखीने, रंज्यो सर्वे परिवार ॥ आंसु जळअलियां नरे, जोड़ करी वारोवार ॥ २ ॥ गुणीना गुण जे चित्त वश्या, ते वीसरे नहीं किवार ॥ गंनाव्या भाव्या घणुं, भागभांहे सो वार ॥ ३ शील दीये कन्या मत्ये, वधूयोग्य हित वयण ॥ आलिंगन लीधी तणे, नीर भरंते नयण ॥ ४ ॥ राजा दीप प्रदीपवती, माता आपे शीख ॥ योग्य वधूने जे घटे, चंद्रकळाने पेख ॥ ५ ॥

यतः ॥ अभ्युत्थानमुपागते गृहपतौ तद्भाषणे नम्रता, तत्पादार्पितदृष्टिरासनविधिस्तस्योपचर्या स्वयं, सुप्ते तत्र शयीत तत्प्रथमतो, मुंचेच्च शय्यामिति, प्राच्यैः पुत्रि निवेदिताः कुलवधूसिद्धांतधर्मा अमी ॥ १ ॥

भावार्थः—पोतानो स्वामी आवे त्यारे सामुं उभुं थावुं, स्वामी साथे बोलवुं पडे त्यारे पतिना चरणनी सामुं जोवुं, पोतानी मेळे तेनी सेवा करवी, पति सुवे ते पछी सुवुं, स्वामी उठे त्यार पहेलां उठवुं, आ कुळवधूना धर्म जाणवा.

॥ दोहा ॥ शिक्षा समर्पी सर्वने, चाल्या चेहु दल ताम ॥ मारग सींच्यो आंसुये, जाते वळते गाम ॥ ६ ॥ सहुने पाछा घरदभने पण वाळीयो, प्रीतिदान बहु देह ॥ निज घरनी परे तेहने, संतोषी ससनेह ॥ ७ ॥ सहुने पाछा वाळीने, पिता मिलन उमाह ॥ चाल्या चौंप करी घणुं, जोता कौतुक राह ॥ ८ ॥ धीरसेन सेना अछे, ते चाले ते मंद ॥ गुणचंद्र तेहने राखवा, साथे हव्या अमंद ॥ ९ ॥ श्रीचंद्र रथे वेगा घणुं, वायुवेग परे जंति ॥ तेहिज दिन निशि पामीया, श्रीपुर नयर महंत ॥ १० ॥ रथ मूकीने तिहां कणे, गया निज गेह मझार ॥ मात पिता पद प्रणमिया, हर्ष आंसु जल धार ॥ ११ ॥ पितर कहे तुमने थया, दिवस पंच गुण पुत्र ॥ ते पंच वरस समा थया, गुण अमचा पर सूत्र ॥ १२ ॥ एटला दिन सुखमां गया, किंवा इच्छाचार ॥ अथवा हठ करी राखीया, किणही राजकुमार ॥ १३ ॥ कहे श्रीचंद्र तुम महिमथी, सघले लह्यो सुख चयन ॥ जय सौभाग्य ने ज्ञान बहु, पाम्युं आदर अयन ॥ १४ ॥ क्रीडा करतां मुज मळ्यो, वरदत्त तुमचो नृत्य ॥ लेखशाळ उत्सव हतो, तस घरे बहु परे नृत्य ॥ १५ ॥ हठ करी मुजने राखीयो, आज लह्यो आदेश ॥ आव्यो तुमचा पद नम्या, कह्यो एम संदेश ॥ १६ ॥ पिता सुणी ते हरखिया, निसुणी एह उदंत ॥ कहे सुत ताहरुं चरित्र मति, सुण्युं प्रतापसिंह नृकंत ॥ १७ ॥ रत्नपुरो तुजने दीयो, करी महोटो सुपसाय ॥ तेह भणी शुभलग्न दिने, प्रणमो नृपति पाय ॥ १८ सर्व गाथा ॥ ६१४ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

वींछीयानी देशी ॥ तथा ॥ महारा प्राणप्रिया रे पासजी ॥ ए देशी ॥

॥ हवे माता निज वस्त्रांचले, प्रमार्जे शिशुनुं अंग रे ॥ कहे जामणडां लिउं ताहरां, तुज होजो सुख अनेग रे ॥ १ ॥ मनमोहन जीवन माहरा, कुंअरजी प्राणाधार रे ॥ कहे जनकने तुज आज्ञा लही, हुं आव्यो राज कुआर रे ॥ म० ॥ २ ॥ माता सुत तनु निरखे घणुं, चाटे जेम वाछरु गाय रे ॥ तिहां मींढल बांध्युं देखीनुं, जनक पर विस्मय थाय रे ॥ म० ॥ हरखी माता कहे कंतने, देखो करग्रहणनुं चिह्न रे ॥ जोइ जनक तणा चित्तमां वस्युं, शुं थयुं कहो हर्ष मग्न रे ॥ म० ॥ ४ ॥ कहे श्रीचंद्र तव सुणो तातजी, कोइ गणके प्रेमने हेत रे ॥ मींदल बांध्युं ए मुज करे, लाज जाणी तस संकेत रे ॥ म० ॥ ५ ॥ एम उत्तर वाली तातने, सुखशुं रहे निज घरमांहे रे ॥ कहियेक क्रीडा करे बागमें, कहियेक वली श्रीपुरमांहे रे ॥ म० ॥ ६ ॥ आवासे कहियेक निज रुचे, फिरे गिरि शिखरे बहुमान रे ॥ एम करतां केतेक दिन अंतरे, थयो ते सुणजो सावधान रे ॥ म० ॥ ७ ॥ ऊर्ध्व भूमे कुमर क्रीडा करे, पोताना आवासमांहे रे ॥ एहवे वाजिंत्रना नादशुं, पूरित दिग्मंडल मांहे रे ॥ म० ॥ ८ ॥ वंदी जन कीर्ति गावते, तिहां मलिया लोक अनेक रे ॥ जिहां जाय छे ए राजमंडली, बहु जन नववेशे छेक रे ॥ म० ॥ ९ ॥ शेठ घरने बारणे आवीया, किशुं ए छे एम कहे वाणी रे ॥ जेम मुद्रिका भूषण संगोपीये, तेम गोपे शेठ घर ठाण रे ॥ म० ॥ १० ॥ देखी सैन्यने आकुल ते थयो, ए शुं मोकरी घरमां वाप रे ॥ ए तो राउल जन दीसे अछे, अम घर व्यवहारी अताप रे ॥ म० ॥ ११ ॥ एहवे गुणचंद्र आवी नमे, कहे तातजी तुम बहू एह रे, ए तो चंद्रकला नृप नंदनी, मयि परिकर दीसे तेह रे ॥ म० ॥ १२ ॥ सवि वात कही विवाहनी, सुणी हर्ष्यो चित्तमां शेठ रे ॥ पद्मिनीने गुणचंद्र कहे, प्रणमो ए सुसरो नेठ रे ॥ म० ॥ १३ ॥ ए सासू आंसु हर्षमां, वरमे पामी उत्कर्ष रे ॥ मोच्छादि सुख आलापनां, पूछे तिहां आणी हर्ष रे ॥ म० ॥ १४ ॥ गुणचंद्र कहे किहां थापीये, ए चतुरंग सेना थाट रे ॥ कहे शेठ कुमरने पूछीने, थापो सघलो ए पाट रे ॥ म० ॥ १५ ॥ वातायन बेठा कुमरने, प्रणमी पूछे गुणचंद्र रे ॥ कहो स्वामी ए किहां थापीये, वाहन गज रथ अश्व रे ॥ म० ॥ १६ ॥ श्रीधर [illegible]

... विनयपणुं अखो लक्ष रे ॥ ... ए ज्ञान उत्कृष्टो कीध रे ॥ म० ॥ १७ ॥ अहो पिंगे अभ्र
॥ म० ॥ १० ॥ इणे गमनागि आपाममां, रही पंकजना पनि पाग रे ॥ जेम दोगुंदक सुर
परे, हरि कमला लील विलास रे ॥ म० ॥ १९ ॥ हर्षे पूरित मानगा, थया नागरजन मनमांहि
रे ॥ उगमय उत्सुकता घणी, तेणे गमये पुरमां प्राहि रे ॥ म० ॥ २० ॥ केइ नाम्य रसे गुणने रसे, रूप
गारथी मित्र महाय रे ॥ पद्मिनीने परिवार तणा, जगने थुणतां दिन जाय रे ॥ म० ॥ २१ ॥ इणे कुमर
जयादिक जेह छे, तेणे कीधो एक विचार रे ॥ वीणारव गायन आवीयो, धीर गणिय गंधाते गार रे ॥ म०
॥ २२ ॥ तेहने तेमीने एम कहे, तमे कीधो श्रीचंद्र प्रबंध रे ॥ पूछ्युं तव गायन कहे, राधावेधनो काव्यो गुण
बंध रे ॥ म० ॥ २३ ॥ कहे ते श्रम आगल गायशो, जेम पामे सुरजन हर्ष रे ॥ तिहां श्रीचंद पण बेठो हवे,
ते करशे दाननो वर्ष रे ॥ २४ ॥ तिहां वंछित दान तुमे मागजो, जे सुरगररतनमां एक रे ॥ ते तुमने अश्व
आपशे, एम याचजो करीश्र विवेक रे ॥ म० ॥ २५ ॥ सुणी मीठा हृदये भीठडा, पर उन्नति गहे न लगार
रे ॥ खणुहेते प्रीति खरा स्नेहे, परखो दुर्जन आचार रे ॥ म० ॥ २६ ॥ लखशे रचनी गति आकरी,
त्यारे ज्ञान न पडया होय रे ॥ एम कुबुद्धि धरी तग शीखव्युं, करो कार्य ए अमचुं जोय रे ॥ म० ॥ २७ ॥
दाक्षिण लाज नव लोनथी, पक्षियजियुं गायने तेह रे ॥ होये जे जेहथी भवितव्यता, उपजे तेम बुद्धि गनेह
रे ॥ म० ॥ २८ ॥ बीजे दिने गायने मेलव्या, मधि लोक तणा आघाट रे ॥ कुमर प्रबंध तेम गाइयो, जेम
पामे मणि धन पाट रे ॥ २९ ॥ आव्या तिहां पहु व्यवहारीया, स्वजनादिक मंत्री सामंत रे ॥ नर नारी
सुरादि निरंतरे, आवी बेठा मतिवंत रे ॥ ३० ॥ श्रीचंदना गुणनी वर्णना, अवरां अवदेखण रूप रे ॥
राधावेधनुं गायन गायतां, सुणी श्याम वदन थया नृप रे ॥ जयादिक कुमर अनूप रे ॥ म० ॥ ३१ ॥
हास्यादिक रस रीकर थयो, विस्मय वीतरग ने धीर रे ॥ पद्यामां श्रीचंद्र आवीया, राधावेध कस्यो जेणे
धीर रे ॥ म० ॥ ३२ ॥ सुखकर गीत गायन गायतो, तहेनो तिहां कंचन कोडी रे ॥ जेम राधा साधीने
गया, मित्र साथे रथ लेकी रे ॥ म० ॥ ३३ नृप आव्या ते जेम तेम गया, कन्याना जेह विलास रे ॥ धीर

मंत्रीने तेमण मोकल्या, विस्तर कह्या तेह आलाप रे ॥ म० ॥ ३४ ॥ रजनीने अंते चंद्रमा, कहे श्लोक अनेक प्रकार रे ॥ वरसावे जयागानी परे, शोभीया जयादि कुमार रे ॥ म० ॥ ३५ ॥

॥ तद्यथा ॥ राग आशावरी ॥ गाइये रे श्रीचंद्रकुमारा, निज रूपे करी निर्जित मारा ॥ त्रिभुवनमांहे धैर्यना धारा, एहवा अवर न को दातारा ॥ गा० ॥ १ ॥ मति चित्ते भारती मुखकमले, भाग्य भाले लखमी छे निलवे ॥ भुजे शूरता सत्य वचने महले, दान करे जिनध्यान मनोले ॥ गा० ॥ २ ॥ करणीये दया स्थानक पामी, भुज तनुमां कांइ नहीं खामी ॥ धणी रोपे करी कीर्ति ते कामी, ते दश दिशि फिरे गाम अपामी ॥ गा० ॥ ३ ॥ खार जलधि ने चंद्र कलंकी, रवि तातो घन छे चपलंकी ॥ अर्थी अदृश्य मेरु काष्ट सुरतरुआ, सुरमणि उपल सुरगवी पशु वरुआ ॥ गा० ॥ ४ ॥ सुधीध्वजिव्हे सेवित दीसे, तुज उपमान कहुं केम चित्त हींसे ॥ तुज दानादिक गुणथी निकसे, सवि उपमान ए चित्त न पेसे ॥ गा० ॥ ५ ॥ हे श्रीचंद तुं चंद्रथी निर्मल, परस्त्री न फरसे करथी सामल ॥ कांइ अपूरव चंद्र कलामल, फरसे तेहने युक्त महाफल ॥ गा० ॥ ६ ॥ कल्पद्रुम सम तुम तनु जाणी, श्री निवास करे थिरता आणी ॥ मुखकजे पद्मनी मति पहिचाणी, हृदय गंभीर जलनिधि एम जाणी ॥ गा० ॥ ७ ॥ नाभि तदभ्रमे करपद युगले, अरुण कमलनी बुद्धि विमले ॥ कुवलेंदीवर शंकाये नयने, दंते वज्राकर मनु अयने ॥ गा० ॥ ८ ॥ एणी परे सघले श्री रही ताहरे, अंगे सर्वनी उपमा थाहरे ॥ भट्ट कहे शुं वर्णुं अमारे, हवे तुम गुण कहीये छे जिहा रे॥गा०॥९॥ इति गायनकृतस्तुति॥

॥ हवे ए गुण श्लोके करी कहेवा ते श्लोक कहे छेः-बुद्धिश्चेतसि भारती च वदने, भाग्यं च भालस्थले ॥ लक्ष्मीर्वेश्मनि शूरता भुजयुगे, वाचि स्थितं सुनृतं ॥ दानं पाणितले रुचिस्तुतिमनस्यर्हत्क्रियायां दया, स्थाना भासिरवैवयात्पुरुदिशं श्रीचंद्रकीर्त्तिस्तव ॥ १ ॥ आस्ये पद्मधिया गभीरहृदये वारांनिधेः शंकया, नाभौ पद्मनदभ्रमात्क्रमकरद्वंद्वेऽरुणाब्जेहया ॥ फुल्लेंदीवरवांछया नयनयोर्दंतेषु वज्राकर, भ्रांत्या कल्पतरुभ्रमेण वपुषि श्रीचंद्र ते श्रीरजत् ॥ २ ॥ क्षारो वारिनिधिः कलंककलुषश्चंद्रो रविस्तीक्ष्णरुक् जीमुतश्चपलाश्रयोर्धपटलाद्दृश्यः सुवर्णाचलः॥ काष्टं कल्पतरुर्दृषत्सुरमणिः स्वर्धामधेनुः पशुः, श्रीश्रीचंद्रसुधादिजिव्हविधुरातस्केनसाम्यंतत्र ॥३॥ श्रीचंद्रकलागनोरमः स्पृशति स्वं स्वकरैः परस्त्रिया उर्वी, सृजति निर्मली चित्तं, यद्भुत्पि निर्मलोनिशं ॥ ४ ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ इत्यादिक निज गुण सांभली, कहे गायकने घर जाव रे ॥

अश्वगुणनें गति ते किहांथकी ... ॥ म० ॥ ३६ ॥ एम निपुणी गूढ तेणें मागीयो, पायुवेग अश्व ते त्यांहि ...
मागीयुं, अश्व आपुं गुण अनेक रे ॥ ए तो अश्व तणो युग रथ छे, न होये इहां एक विवेक रे ॥ म०
॥ ३७ ॥ कहे श्रीचंद्र हवे गुणचंद्रने, रथ लावो श्रीपुरे जेह रे ॥ मागणनां वंछित पूरीये, कहे ज्ञानविमल सूरि
नेह रे ॥ म० ॥ ३७ ॥ सर्व गाथा ॥ ६६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आण्यो रथ तत्कालमां, कहे गायनने एम ॥ एक तुरंगशुं ताहरुं, कारज होशे केम ॥ १ ॥ माग्याथी अधिकुं दीये, तेहिज कहीये दातार ॥ मुह देखी मागे नहीं, मरे ते मागणहार ॥ २ ॥ ते माटे ए सुवेग रथ, पायुवेग महावेग ॥ अश्वयुक रथणे जड्यो, आपुं ते लीयो वेग ॥ ३ ॥ वली बीजुं बहु आपीउं, दान मान गुनिधान ॥ चिरंजीवि चिरं नंद तुं, कहे गायन गुणगान ॥ ४ ॥ एम देखी तेहावीने, तिहां अनेक छे नट्ट ॥ ते श्रीचंद्रना गुण कही, लेवा दान गहगट्ट ॥ ५ ॥

एकेन नटेन उक्तं ॥ कवित्त ॥ धीर वीर कोटीर, दान शिरमुकुट समाणो, ताहारे सुजस कलाप विश्व गवि उज्ज्वल जाणो ॥ काढ्यो कृपणता श्याम, तेह जड़ने किहां रहिउं, कज्जल अहि तव वैरी वदनपंकज गंमहिउं ॥ कमलंजपरण घनघोरमां, कृष्णदिशादिक भ्रामरी ॥ श्रीचंद्र दानगुण नीपनी, कीर्ति पूरिं तेहवी परी ॥ १ ॥

॥ अपरो नटः प्राह ॥ सोमनट कहे अद्भुत केहनो कोण रस पूज्यो, तव कहे कविरस सार एहनोए जस इहां पूर्ण्यो, श्रीचंद्र जसे जग उज्ज्वल कस्यो, कालिमां कहो क्यां गइ ॥ तस अरि मुखे तम नारी, जाइ त्यां निर्भय रही ॥१॥ कवित ॥ धीर तुं जय धीर अपर कवि तेहने पूछे ॥ कुणतु तेह कहे नट पत्रमां ए चिकसुं ॥ कविनामा छंद ॥ श्रीचंद्र तुम यशं त्रिभुवन पोखे, श्यामलपणुं किहां किहां खोले ॥ कज्जल भमर तुम अरिमुख कमलज्ज, हय मुह मृगमद कोकिल गले ॥१॥ काव्यं ॥ धीर त्वं जय को नवान कलिर्के ...

स्ति किं, काव्यं वाच्यगुणोऽत्र कोऽद्भुततरसः स प्रोच्यतां श्रूयतां ॥ श्रीचंद्रत्वदनइपत्गुरुद्वयसशाश्वेती कृते विष्टपे, यत्काम्यं शशिकजलादिषु हि तत्विरुद्धवशा दुर्दशाः ॥ १ ॥

॥ एकेन कविना कलकंठेन अस्यैव उत्तरार्द्धकृतं ॥ वीरत्वं श्रीचंद्रत्रिजगद्विजितयशः मत्पुंडरीकंमदं ॥ ब्रह्मस्थानमरालवालसुवियदं शृंगालिनिश्शुंवते ॥ १ ॥ दोहा ॥ एम निसुणी बीजो जणे, अर्ध समस्या पाद ॥ एहीज विहुं पद पाछलां, आगले नवलो पाद ॥ १ ॥ वीरत्वं० ॥ श्रीचंद्रमहींद्र नाव एक अवर कहीजे, नव जस सित पुंडरीक, त्रण जग उज्ज्वल कीजे ॥ गयो आकाश तिहां ब्रह्मकमल वली वाहनहंसा ॥ धवल थया तस संग कृष्णगुणथी जनस्या ॥ तिहां जइ कमलमांहे रह्या, भ्रमर श्रेणी रूपे थइ, अथ चंद्रमा उज्ज्वल थयो, पण अगमिशे असिता रही ॥ २ ॥ लक्षदानं ॥ तव त्रीजो जणे जइ एह तो थोड्या माचुं, ए नृपनो जस राशि एक रसनाये केम याचुं ॥ किंबहुना कहे होय एहथी अवर न दूजो, लाग त्याग परनाग आग गुणे एहीज पूजो ॥ जे जग उज्ज्वल वस्तु छे, ते श्रीचंद यश देश छे ॥ नररूप नृपति लख्खोयमें, एह वात अम मन रुचे ॥ ३ ॥ लक्षदानं ॥

॥ छंद ॥ एम सोमेश्वर ने वीरेश्वर माहेश्वर, माधव नृपेश्वर ॥ एणी परे कुमरनी कीर्तिविश्रामे, गाम गाम जनकादिक प्रकाशे ॥ १ ॥

ततः सोमेश्वरकविना उक्तं ॥ चंद्रः ॥ चंद्रशून्ये क्षयादोषा, करः कलंकस्यपंतुता ॥ मदोदितोयमांतस्न्माथीव्यक्तिं व्यधाद् भुवि ॥ १ ॥

॥ पूर्व दोहा ॥ एम त्रण पंडितने दीये, कनक रयणनी कोडि ॥ यथायोग्य मंत्रि साचवे, भोजनविधि करे होडि ॥ ६ ॥ सज्जन गुणिजन साधुजन, भक्ति करे तिहां योग ॥ चमत्कार चित्त पामीया, धन धन कहे पुरलोग ॥ ७ ॥ नृप अथवा नृप नंदना, ए सम दान समर्थ ॥ शेठ पुत्रने सारिखा, कोय न ए परमार्थ ॥ ८ ॥ दान तणो अतिशय घणो, देखी थया लयलीन ॥ पण शेठे एम चिंतव्युं, कुल वणिकनुं दीन ॥ ९ ॥ धन तो पामीजे घणुं, पण अश्व न एहवी जोड ॥ न मले ते जाणी धन देइ, अश्व लीधो फरी जोडि ॥ १० ॥ एम एकांते पुत्रने, तमीने कहे वात ॥ जाग्य शिरोमणि तुं थके, कलमंकण तुं जात ॥ ११ ॥ दीधुं दान ते [illegible]

... ॥ १३ ॥ ए गुणगुरु गुण छतां, दीते वे संसार ... जेह एह आगी ... नया कीजीयें, न रहे
विशाल ॥ १४ ॥ धीर प्रधाने दान करूं, पहेलां ते पड़ दान ॥ ते पण जिणमां धारवी, जेह जीवे ते अति मागा, जेम उंदर ने
॥ १५ ॥ जाण प्रमादे पामीयें, कल्पद्रिकना दान ॥ ते रथ केनी परे आपीयें, जो धरनी पर होवे आन
॥ १६ ॥ गुण्य गरासुं देइने, रथ गुणनी जोडि ॥ दीधो पाछी ए गम नको, करता होता होडि
॥ १७ ॥ राजाने करो नेहलुं, जेम राजा होवे प्रसन्न ॥ तो नवि मनोरथ भांजे, सहु कहेशे धन्य धन्य
॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ २४ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

कांकरीया मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी गुरु गाजनांजी, उत्तर हृदये विचार ॥ विनय करीने वीनवेजी, खमो अपराध अपार
॥ १ ॥ सुणो मारजी माहारा, मानो गुरु वचन प्रमाण ॥ सुणो नाननी माहारा, गुरु जो सुगुण सुजाण ॥
सुणो नाननी माहारा, शिर धरुं गुरुनी आण ॥ ए आंकणी ॥ दीधुं दान ते पाणकांजी, ते पाछुं न लेवाय ॥
जो लेइ पाछु दीजीयेजी, तो लोकमां हांसी थाय ॥ सु० ॥ नीचमां नीच कहाय ॥ सु० ॥ २ ॥ केइ रथ केइ
धन धन पामजी, नामनी मतिये सर्व ॥ पशी पशु गवरो नामथीजी, गुण परसादे सर्व ॥ सु० ॥ ३ ॥
केइ कहे गुण ते स्हेजी, एहवुं सो जगमांहि ॥ राजादि इच्छे गज रथाजी, देइ धन लेवे उच्छांहि ॥ सु० ॥ ४ ॥
ने ते दुर्जन देखीयेजी, ते पण लेवे लोक ॥ अर्थी धन मादे दीये जी, एहमां कोइ न शोक ॥ सु० ॥ ५ ॥
सुगर नर अणबोल्या रहाजी, निज थानक गया नाम ॥ उत्तर देतां नवि फावेजी, इच्छवुं न रहे माम ॥ सु०
॥ ६ ॥ नवल नवल मन मनावनाजी, जिहां लगे होय गुणवंत ॥ जिहां लगे रहेवुं तिहां सुंदरजी, न रहेवुं जिहां
दुःख पावत ॥ सु० ॥ ७ ॥ चिड़चिड़ पत्थरतनापणुंजी, पाप सुं नरकनुं डाण ॥ शुं कीधुं शुं देखशुं जी, धारक
करीने गुमान ॥ सु० ॥ ८ ॥ इवे रहेवुं तो नवि घटेजी, नावे मननी प्रीति ॥ मटयो मांकणनो ढांकणोजी,
उदित उत्तम रीति ॥ सु० ॥ ९ ॥ माहणथी नवि संपजेजी, जिहां माहण तिहां सिद्धि ॥ नाविं ...

होशे जी, तिहां तेहवी होये बुद्धि ॥ सु०॥ १०॥ यतः॥ को विदेशः सुविद्यानां, किं दूरं व्यवसायिनां ॥ कोऽतिभारः समर्थानां, कः परः प्रियवादिनां ॥ १ ॥ दीसे विविह चरियं ॥ १ ॥ देशाटनं पंमितमित्रता च, वारांगना राजसजाप्रवेशः ॥ अनेकशास्त्रार्थविलोकनानि, चातुर्यमूलानि जवंति पंच ॥ २ ॥ तादृशी जायते बुद्धिर्व्यवसायश्च तादृशाः ॥ सहायास्तादृशाः ज्ञेयाः, यादृशी जवितव्यता ॥ ३ ॥

त्रणे श्लोकनो जावार्थ—रुडी विद्यावालाने क्यो परदेश होय छे, व्यवसायीने शुं दूर छे, समर्थने शो भार छे? मीठां वचन बोलनारने कोण जुदो छे? देशाटन, पंडितनी मित्राइ, वारांगनानो संगम, राजसभामां प्रवेश, अनेक शास्त्रोनुं जोवुं ए पांच चातुर्यना मूल छे, जेवी भावी होय तेवी बुद्धि थाय, व्यवसायो पण तेवाज थाय अने सहाय पण तेवाज थाय छे.

॥ पूर्व ढाल ॥ आज रजनी प्रथम याममांजी, न कहुं कोइने कांहि ॥ निसरवुं एम चिंतवीजी, करी परदेश उच्छांहि ॥ सु० ॥ ११ ॥ मित्र जाणशे तो वस करीजी, राखशे अथवा साथ ॥ आवेशे तो नहीं बने जी, एकाकी खड्ग हाथ ॥ सु० ॥ १२ ॥ चंद्रकला वलगी गलेजी, केम मुज विण धरे धीर ॥ मुज काजे सवि छंडीयुंजी, मात पिता धन धीर ॥ सु० ॥ १३ ॥ यूथभ्रष्ट जेम हरिणलीजी, विरहातुर रणमांहे ॥ तेम वियोग माहारो सहीजी, दुःखिणी ए घरमांहे ॥ सु० ॥ १४ ॥ ते जणी ए समजावीनेजी, जाउं पछी विदेश ॥ एम चिंतिने आवीउजी, चंद्रकला संनिवेश ॥ सु० ॥ १५ ॥ वात कही सघली तिहांजी, समजावी ते बाल ॥ तिहां जे स्नेहनां वयणडां जी, कोण कहे ते वाचाल ॥ सु० ॥ १६ ॥ स्नेह मान नवि संपजेजी, ते जाणे किरतार ॥ के निज मनकुं जोगवेजी, जीवित तस आधार ॥ सु० ॥ १७ ॥ शीख जलामण तिहां करीजी, चाले जेहवो कुमार ॥ तेहवे मित्र आवी मह्योजी, श्रीगुणचंद्र कुमार ॥ सु० ॥ १८ ॥ कहे स्वामी एक विनतिजी, गायने कीधी जेह ॥ नृप कुमरना वयणथीजी, माग्यो अश्व में एह ॥ सु० ॥ १९ ॥ में महारी बुद्धे करीजी, नवि माग्युं ए स्वामि ॥ हवे ते पासे जइ नवि शकुंजी, तुमे दीधुं बहु दान ॥ सु० ॥ २० ॥ तुमे चक्री दातारमांजी, वेचाणा अमो दान ॥ ते माटे उचित धन दियोजी, हयो रथ पाछो निदान ॥सु०॥२१॥ सुणी वात कुमर कहेजी, दीधुं फरी न लेवाय ॥ रयणुं काम न को आवे जी, घोडुं अघोडुं न थाय॥ सु० ॥ २२ ॥ उक्तं च ॥ जिह्वैव सतामुने फणनृतां सपुधतयोऽप्यथा, ताः सदैव विनायतोर्निगदिताः पद्मकान्तिकेसरस्य च ॥ [illegible]

...सिरीके सीगोंजी, च्यार न करी कोइ बार ॥ येह ...
...निमरनाथ ॥ गु० ॥ २३ ॥ विरह दुःख पाम्यु नहीजी, रिषभी मनजी बार ॥ ध येह छगो
सी, सुत रहेजो दिन रात ॥ गु० ॥ २४ ॥ ए रहे पर्नजय मान्यीजी, ख्याती कहे गुरो ख्याति ॥ ...नाभनेजी,
मागध भाइसी, एम इम न कहे गाम ॥ गु० ॥ २५ ॥ एम निगुनी श्रीगुरे गमाजी, कुमर येह परिवार ॥ सिंधर गति नानरे
कुमर देवीने दर्गलुकी, ख्याध कहे हैदार ॥ गु० ॥ २६ ॥ नयनां आंसुर्यां जरंती, न वीणे चारित्रे मारि ॥ एम वेली
शील्धर जिन कहे वांगी, करां गंगी बार ॥ गु० ॥ २७ ॥ ख्याध नना गुन शुणे कहीजी, समजावे घरी मन
॥ दमन्ती नमन के गहवांजी, अनुग करो परी नेम ॥ गु० ॥ २० ॥ नागनने तर मोहीयानी, ख्याध ने मरग
रवनार ॥ रागिमरनि एम जानीवेजी, मरने रमाणीने नाथ ॥ गु० ॥ २९ ॥ वीनावर ख्यातीन देखनी, माने
जिहां परी देव ॥ मर्रे चरम ख्यनिरवाणीवांजी, गुणर्नेद बीची गंध ॥ गु० ॥ ३० ॥ मेनावति पर्नजय कन्योजी,
करी मे होना गेहे नाथ ॥ मे म जिहां पने पारीवानी, करी महोटा गुणगार ॥ गु० ॥ ३१ ॥ परदेसे नाना
हरहेजी, लहुंने करी दीने मान ॥ श्रीगुर श्रीदतुनी माणुजी, वीणुं ख्यति बहुमान ॥ गु० ॥ ३२ ॥ ख्यनुसार
लहचार के दलानी, बर्लवनादिक मन ॥ ने गणधर गुणीया कमानी, जाने मने गुरां ॥ गु० ॥ ३३ ॥
हास्तिनाथ गुरु देवाजी, पर्ग माणुं बनी ध्यान ॥ पाला करता ओलनेजी, छागुणि करन निरान
॥ गु० ॥ ३४ ॥ सर्वगाथा ॥ ७२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ बाहन बाजी गजैवरा, श्रीवरी बहु मुजह ॥ राजविया दो जिहां घरी, लेरेंगु गहगह ॥ १ ॥
मंगानुक श्रीन मेवना, पंच सहनना बाट ॥ पंच सहस्र बाजित्रना, बंदीजनना बाट ॥ २ ॥ नूर नरे बहुमाने
करी, ख्याधर ख्याणे गेह ॥ मान पिता परिवारने, मनीना परी बहु नेह ॥ ३ ॥ परसा मांहे ख्यानीयो, बीर
दमाल उदार ॥ ममी श्रीवीर्चंदने, जिन गुणचंद कुमार ॥ ४ ॥ तेडे वीरने बोलव्यो, नन्दि करे परीहरो ॥ बीर
करे इसे विनति, पाडिशदल लावे ॥ ५ ॥ एम कहे गुरो वीरजी, दिन होय पची गुरु नाग ॥ जासो गुरु गडरा
आदी, सुणो पर रहेसो नाग ॥ ६ ॥ राजाने वे बीनवी, नग ख्यापन घरी मेन ॥ ...

तिलकमंजरी प्रेम ॥ ७ ॥ सूर्यवतीनी जाएजी, चंद्रकला बहु जेह ॥ ते पण राणीने मले, धाधे बहुल सनेह ॥ ८ ॥ पिता वयण मित्रे सुण्यां, ते कहे कुमरने जाम ॥ चिंते चित्त एहवुं तिहां, केम पोहोंचशे मन हाम ॥ए॥ एम विचारी आवीया, जोजनशाले कुमार ॥ दिवस जाग ठे आठमो, जोजनने आचार ॥ १० ॥ कहे मामी मोदक दीयो, माये करी रुहाडि ॥ पीरस्या मोदक बहु परे, करी करी बहु लाड ॥ ११ ॥ लाडू गाडू जेवडा, लालणीया रसदार ॥ कस मसीया सिंह केसरा, सूधा शाक सिरदार ॥ १२ ॥ खंभ खंड देइ सर्वने, वहेंचीने तेणी वार ॥ थली वैकालक विधि करे, अशनाकादि सुविचार ॥ १३ ॥ निजावासे आवी करी, कहे गुण-चंद्रने एम ॥ कणकोट पुरे थापीया, मंत्री प्रमुख बहु प्रेम ॥ १४ ॥ नामां लेखां ते करो, एम कही जोड्यो तथ्य ॥ बीजा पण बहु जोडीया, जे जे ठाम समथ्थ ॥ १५ ॥ चंद्रकला घर आवीया, आणी अति आणंद ॥ त्रिविध मेल सवि साचवी, जेम कलकंठ माकंद ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ ३४४ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

राग मारुणी ॥ राम धरणी कां आणी रे ॥ ए देशी ॥

तात कह्युं सघलुं तिहां दाखे, राखे कांइ न शंका रे ॥ तुं माहारे मन वल्लज बहु ठे, ताहारो कांइ न वंका रे॥ वाहाली ॥ १ ॥ चंद्रकला तुं राणी रे, जोइ हवे वलीउं ठे दाने, तातनी बुद्धि हणाणी हो ॥ वाहाली ॥ चंद्र० ॥ ए आंकणी ॥ मात पिता गुरु देवनी वाणी, अमृतथी अधिक पहिचाणी रे ॥ तें जाणीने में नवि जाणी, तेणे मुज मति मुंजाणी हो ॥ वा० ॥ चंद्र० ॥ २ ॥ यतः ॥ अमृतरसादप्यधिका, शिक्षा मातुः पितुर्गुरुजनस्य ॥ ये मन्यंते न मनाक्, ते विहिताः सर्वदा कुधियः ॥ १ ॥

भावार्थ—अमृतरसथी पण अधिक एवी मातापिता, गुरुजननी शिक्षाने जे किंचित् पण नथी मानता ते कुबुद्धि जाणवा.

॥ पूर्व ढाल ॥ एम निसुणीने चंद्रकला चिंते, अहो निर्गर्वता स्वामी रे ॥ दान शक्ति जे जक्ति अनोपम, अहो गंजीरता पामी हो ॥ वा० ॥ चं० ॥ ३ ॥ कहे स्वामी तुम पावन मनथी, किहांये अशुज न होवे रे ॥ राजऋद्धि मलशे तुम बहुलां, दुःख तुम माहामुं न जोवे रे ॥ स्वामी आठं तुम बलिहारी ॥ ए आंकणी ॥ ४ ॥ बाप्पल बंधि बांधी निहां कुमरे, ...

...चन गुणी, हृदय थंभत्र कीजे हो ॥ स्वामी ॥ जा० ॥ १ ॥ हुं विषकन्या कांइ न वीसर्जी, कांइ पावगुणुं नवि पुंहुंरे ॥ स्वसुर वर्गने दुःख देते थइ, कांइ हृदय न फुटुं रे ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ ७ ॥ नाथ इहां रहो मुज उपरोधे, कांइ श्रने उणोठं रे ॥ हय गय रथ धन कंचन कोडी, रयण मणे पर पूरुं रे ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ ८ ॥ नाग्य कुमारनें हुं नवि दीनुं, संशय कोइ न मुजने रे ॥ रुदन करंती देखीने कहे, सम हे माहारा तुजने हो वाहाली ॥ चं० ॥ ए ॥ तुं धणीयाणी तुं कल्याणी, धीर मधर मति जाणी रे ॥ स्वतुज निर्मित विनय रूपे हे, पद महत्वनी खाणी हो ॥ या० ॥ चं ॥ १० ॥ मात पिता मित्र सयण संबंधी, कोइने हुं नवि पूछुं रे ॥ तुमचुं प्रेम अने मुज गाढो, मननी वात सवि सूचुं हो ॥ वा० ॥ चं० ॥ ११ ॥ ते माटे मुजने दे अनुमति, आज इच्छित करुं काज रे ॥ कहो तो हुं तुम साथे आवुं, जिहां पति तिहां नवि राज हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ १२ ॥ माता पितादिकनुं दुःख मुजने, कोइ न चित्तमां लागे रे ॥ पण तुम दर्शनने विरहथी, ते मवि आवी लागे हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवपणुं मुज एहवुं आव्युं, सुख सघळां तुम साथ हो ॥ अभिमानद्रुम नाजी नवि गुण, गंनी थया अनाथ हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ १४ ॥ काव्यं ॥ उड्डीना गुणपत्रिणः सुखफलान्याराद्वि-शीर्णान्यधः पर्यस्ताः परितो यशस्तशकिताः संपद्गताः पद्मयाः ॥ मार्गेव प्रसृताः प्रमोदहरिणा च्छायाकथांतर्गता, दैन्यारण्यमतंगजेन महता जग्मेऽभिमानद्रुमे ॥ १ ॥

भावार्थः—मोहोटा दैन्यरूप अरण्यना हस्तीए अभिमानरूप वृक्ष भागे छते गुणोरूप पक्षीओ उडी गया, सुखरूप फल पणे दूर पडी गयां तथा यशरूप पुष्प चारे तरफ पडीयां, पूर्वे प्रशस्त थइ पत्नी संपद्रूप लता नाश पामी, प्रमोदरूप हरिण अन्य वृक्षछायामां जइ बेठा.

॥ ढाल पूर्वली ॥ सखीवृंद मांहे तुं तोपण, पति विणु मंहुं नामी रे ॥ पति विणु नयर ते पयर करे बहु, तेणे हुं साथे आवी हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ १५ ॥ रूप कुंअर ए मुजने जुगतुं, पण पग बंधन मोदोडुं रे ॥ परदेशे फरतां लागे हे, पग पाठवुं ते छोडुं हो ॥ या० ॥ चं० ॥ १६ ॥ पतिव्रतानुं पहिज लक्षण, जे पति कहे ते मान्य रे ॥ मुज कहेणथी तुमो घरे वसो, थाशो महुनुं थान हो ॥ या० ॥ चं० ॥ १७ ॥ देवपूजादिक धर्म आराधो ... रहीनो धर्म रे ॥ समकित मूल शील गुण रोपो, आपो पुण्यनां कर्म हो ॥ या० ॥ चं० ॥ ...

धर्म धरी मुजने सुखशाता, तुमने पण इहां थाउ रे ॥ जाधि जात ते हृदये जावो, सुख दुःख आतम सारु हो ॥ वा० ॥ चं० ॥ १९ ॥ एम कहीने पोताने करो, आंसुआं ते लूहे रे ॥ मधि जूराण हितशिक्षा देइने, प्रेम वचन पडिबोहे हो ॥ वा० ॥ चं० ॥ २० ॥ दास दासी सखी सहचर अनुचर, सहुनी जलामण आपी रे ॥ पति जावानो निश्चय जाणी, जाणे एम समापी रे ॥ वा० ॥ चं० ॥ २१ ॥ मत जाओ एम कहे अपमंगल, जाओ कहे निःस्नेह रे ॥ यथारुचि कहे उदासीनता, दूर रहो दहे देह हो ॥ वा० ॥ चं ॥ २२ ॥ साथे आवुं ए वचन असत्यता, नावुं कठिन ए वाणी रे ॥ प्रस्थित समये बोली न जाणुं, नेह गहेली राणी हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ २३ ॥ कार्य करी तुरत दर्शन देजो, लेजो जग जशवाद रे ॥ श्रीनवकार तणी अंग रक्षा, धरो टाली विखवाद हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ २४ ॥ यतः ॥ मागच्छेत्यपमंगलं व्रज इति स्नेहेन हीनं वच, त्तिष्ठेति प्रभुता, यथारुचि कुरुष्वेत्येत्युदासीनता ॥ स्वार्थेऽन्वेमीति चैत्यसद्गृहवचो नैमित्तिवाक् तुच्छता, प्रस्थानोन्मुख ते प्रयाणसमये वक्तुं कथं वेत्त्यहं ॥ १ ॥

भावार्थ—न जाओ एम कहुं तो अमंगल थाय, जाओ कहुं तो स्नेहविनानुं वाक्य कहेवाय, रहो कहुं तो मने अधिकारीपणुं आवे, यथारुचि करो एम कहुं तो उदासीनता थाय, साथे आवुं एम कहुं तो कडवुं वचन कहेवाय, नैमित्तिक वात कहुं तो तुच्छता थाय, ते माटे हे प्रस्थान करनार स्वामी, तमारा प्रयाण समयमां बोलवाने केवी रीते जाणुं?

॥ पूर्व ढाल ॥ शिर शिखंधे मुखे मुख, पुटकाये वज्रसन्नाह रे ॥ हस्ते आयुध पदतले रक्षक, पंच पद धरो उच्छाह हो ॥स्वा० ॥जा० ॥२५॥ चार चूलापदे आतम रक्षा, शिखावज्र जूपीठ रे ॥ वप्र वज्रमय बाहिर करवो, खाइ अंगार संपुट हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ २६ ॥ वज्रमंडप करी बाहिर रहेवुं, एहवुं निश दिन करवुं रे ॥ मार्गे रण संकटमां विशेषे, एहिज चित्तमां धरवुं हो ॥ स्वा०॥ जा० ॥ २७ ॥ अष्ट महाभय निकट न आवे, पाप पंकज सवि जावे रे ॥ संपद् सघली विण तेडी आवे, वाहालां मिलणुं थावे हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ २८ ॥ इहां "परमेष्ठिनमस्कार" ए स्तोत्र जाणवुं, न्यास, मुद्रा, कवच प्रस्थानासनादि विचार गुरु मुख थकी जाणी लेवो ॥ ढाल ॥ तुम पंथे सवि मंगल होजो, फरी वहेला आवजो रे ॥ श्वास परे अम संभारजो, सुख पत्र नियते देजो हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ २९ ॥ यदुक्तं ॥ सव वर्त्मनि वर्त्तता शिवं, पुनरस्तु त्वरितं समागमः ॥

॥ ख्याल ॥ स्नेह गोविन्दो गगन मधीने, फल दीधुं ...
रचीने दीधुं छे ॥ ख्या० ॥ जो० ॥ ३० ॥ निलहिन गंगा पावी मुरली, मारुलिक विस्तार है ॥ कोई ... ने कविन ढोले, हरन ने
नित करतां, गीनी ऋषि सरनार छे ॥ ख्या० ॥ जो० ॥ ३१ ॥ कुंवर दिसे भावो परी मुंगे, गगन ... है ॥ निरखियो परियो
जोगो है ॥ गुरु छपान यह गायी गिरि नदी, शिवागणा मन मुकतो छे ॥ ख्या० ॥ जो० ॥ ३२ ॥ भांगे भावी
मन मिरयानी, जोड मावनी वाली है ॥ एकदिनें उद्देनी भावो, मानुं करा मुगलानी छे ॥ ख्या० ॥ जो०
॥ ३३ ॥ शिवलिक जोगड धीरे रावन, धीरे गुवार धीरे है ॥ रावनीय वीरेन्द्र श्रीशंकर, राणी अनुराग मधीने
छे ॥ ख्या० ॥ जो० ॥ ३४ ॥ शिवकोजनी आवालावा जोपक, मानु नेह महमाया है ॥ शिवलिक मानुरोग
मुगल रस, मुगलधारि महाया छे ॥ख्या०॥जो०॥३५॥ गोपालिका मानिरगोपी कीरतिकी,मानें मानमाती है ॥
शिवों व्यालानि शिवों निवोडा,मानी मानी मारी छे ॥ ख्या० ॥ जो० ॥ ३६ ॥ कोड कानोडी कोड मानंती,
कोड मानीने जाली है ॥ लोकमें गीयाने गावक गावों, रामी जागरनं गानी छे ॥ ख्या० ॥ जो० ॥ ३७ ॥
॥ गया ॥ लक्षण गीयाण नवनवण, मानिर नाथि गवाई ॥ देवनागर गानरवागण, रागुनी सहिनाई ॥ १ ॥
बात ॥ निज मुख शिव करतें गोजवतो, गवतो मदुर्गा गाना है ॥ मेन पराणें करी गुलाई, फर नुं गिरि
पर मनानी छे ॥ ख्या० ॥ जो० ॥ ३८ ॥ गने गावत गीर गेंनी मनावें, मजालानें गुप आवं है ॥ श्रीशंकरो
गिनाद गिनेनाग, कारण करी नमु गाने छे ॥ ख्या० ॥ जो० ॥ ३९ ॥ शिवकोजनी नेनी गायन, गीर गगानें
बाली है ॥ निरुनी मन मदनो भाति राजा, कानिनाद मुख गानी छे ॥ ख्या० ॥ जो० ॥ ४० ॥ नटम ॥

॥ दोहरा ॥

॥ दीपचंदजो ख्याल्यो करवा गान ॥ ते गाम शिव गीगक कहे, गण मनानी सनाय ॥ १ ॥
गहनुं, जे गाने गावन गाविन ॥ राजाने गण मानीनें, गुणगानीने गनिन ॥ २ ॥ गुणंगानी कहे
गानी जे रागनी ॥ तेहनी गागिकता राग, तेनुं कवित गगनि ॥ ३ ॥ गुण आदेश तेह गया,
गाने जग गाय ॥ अंधकार कालीनां, तेह दीने गधु गान ॥ ४ ॥ शिवों गीनों गानि मुगीनें, गुजाव गेगानी
गान ॥ करगोगन गान देनीने, मनोने जे गान ॥ ५ ॥ गायकार नित गानीने, कहे राजा शिवों ...

धर्म थर्क मुजने सुखदाता, तुमने पण इहां वारु रे ॥ जावि जाव ते हृदये जावो, सुख दुःख आतम सारु हो ॥ वा० ॥ चं० ॥ १९ ॥ एम कहीने पोताने वस्त्रे, आंसुआं ते लूहे रे ॥ मणि जूषण हितशिक्षा देइने, प्रेम वचन परिबोहे हो ॥ वा० ॥ चं० ॥ २० ॥ दास दासी सखी सहचर अनुचर, सहुनी जलामण आपी रे ॥ पति जावानो निश्चय जाणी, जापे एम समापी रे ॥ वा० ॥ चं० ॥ २१ ॥ मत जाओ एम कहे अपमंगल, जाओ कहे निःस्नेह रे ॥ यथारुचि कहे उदासीनता, दूर रह्ये दहे देह हो ॥ वा० ॥ चं ॥ २२ ॥ साथे आवुं ए वचन असत्यता, नावुं कठिन ए वाणी रे ॥ प्रस्थित समये बोली न जाणुं, नेह गहेली राणी हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ २३ ॥ कार्य करी तुरत दर्शन देजो, लेजो जग जशवाद रे ॥ श्रीनवकार तणी अंग रक्षा, धरो टाली विषवाद हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ २४ ॥ यतः ॥ मागच्छेत्यपमंगलं व्रज इति स्नेहेन हीनं वच, स्तिष्ठेति प्रभुता, यथारुचि कुरुष्वेत्येत्युदासीनता ॥ स्वार्थेऽन्वेमीत्ति चैत्यसदूमहवचो नैमित्तिवाक् तुच्छता, प्रस्थानोन्मुख ते प्रयाणसमये वक्तुं कथं वेत्त्यहं ॥ १ ॥

भावार्थ—न जाओ एम कहुं तो अमंगल थाय, जाओ कहुं तो स्नेहविनानुं वाक्य कहेवाय, रहो कहुं तो मने अधिकारीपणुं आवे, यथारुचि करो एम कहुं तो उदासीनता थाय, साथे आवुं एम कहुं तो कडवुं वचन कहेवाय, नैमित्तिक वात कहुं तो तुच्छता थाय, ते माटे हे प्रस्थान करनार स्वामी, तमारा प्रयाण समयमां बोलवाने केवी रीते जाणुं?

॥ पूर्व ढाल ॥ शिर शिखबंधे मुखे मुख, पुटकाये वज्रसन्नाह रे ॥ हस्ते आयुध पदतले रक्षक, पंच पद धरो उच्छाह हो ॥स्वा० ॥जा० ॥२५॥ चार चूलापदे आतम रक्षा, शिलावज्र जपीठ रे ॥ वप्र वज्रमय वाहिर करवो, खाइ अंगार संपुठ हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ २६ ॥ वज्रमंरूप करी वाहिर रहेवुं, एहवुं निश दिन करवुं रे ॥ मार्गे रण संकटमां विशेषे, एहिज चित्तमां धरवुं हो ॥ स्वा०॥ जा० ॥ २७ ॥ अष्ट महाजय निकट न आवे, पाप पंकज सवि जावे रे ॥ संपद् सघली विण तेडी आवे, वाहालां मिलणुं थावे हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ २८ ॥ इहां "परमेष्ठिनमस्कार" ए स्तोत्र जाणवुं, न्यास, मुद्रा, कवच प्रस्थानासनादि विचार गुरु मुख थकी जाणी लेवो ॥ ढाल ॥ तुम पंथे सवि मंगल होजो, फरी वहेला आवजो रे ॥ श्वास परे अम संजारेजो, सुख पत्र नियते देजो हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ २९ ॥ यदुक्तं ॥ तव वर्त्मनि वर्त्ततां शिवं, पुनरस्तु त्वरितं समागमः ॥ अयि साधय साधयेप्सितं, स्मरणीया समये वयं वयः ॥

भावार्थ—तमने मार्गने विषे निरुपद्रव वर्तजो, वली तरत समागम होजो, वांछित साधजो अने अमने अवसरे संभारजो.

॥ ढाल ॥ स्नेह गोष्ठिनां वचन मलीने, फल दीधुं ते लीधुं रे ॥ कांइ कृत्य ते उचित लेइने, हृदय ते स्त्रीने दीधुं हो ॥ वा० ॥ चं० ॥ ३० ॥ तिणहिज वेला परथी पुरथी, सालशिक शिरदार रे ॥ निसरियो धरियो निज करमां, तीखी अति तरवार हो ॥ वा० ॥ चं० ॥ ३१ ॥ कुबेर दिशे चाल्यो धरी चुंपे, नवनव कौतुक जोतो रे ॥ पुर उद्यान वन वावी गिरि नदी, निरुपम मठ गुल्लतो हो ॥ वा० ॥ चं० ॥ ३२ ॥ धर्म सहायी मन निरमायी, जोइ शकुननी वाणी रे ॥ एकदिशे उद्देशी चाल्यो, चतुर कला गुणखाणी हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ ३३ ॥ किहांएक चोपड वंधे रामक, वंधे ध्रुवपद वंधे रे ॥ राधावेध संबंधक श्रीचंद्रना, गुणे अद्भुत प्रबंधे हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ ३४ ॥ तिलकमंजरी उपलंभाना दोधक, याद छंद बनाया रे ॥ किहांएक वायुवेग तुरग रथ, गुणचंद्रादि सहाया हो ॥स्वा०॥जा०॥३५॥ गोपालिका शालि गोपी कौटंबिनी,गाये गायन वाली रे ॥ किहां आरामणि किहां हिंचोला,रमती रमणी वाली हो ॥ स्वा०॥ जा०॥ ॥ ३६ ॥ कोइ कातंती कोइ नाचंती, कोइ पाणीये जाती रे ॥ खांडणे पीसणे चावन वाणे, रात्री जागरणे गाती हो ॥ स्वा० ॥ जो० ॥ ३७ ॥

॥ यतः ॥ खंडण पीसण जलयहण, वाहिर भूमि गयाइं ॥ देवजयण पाणरुवणण, रसगुली महिलाइं ॥ १ ॥

ढाल ॥ निज गुण निज करणे गाजलतो, मलतो सहुनां मनमां रे ॥ वेष परावर्त करी सुखसुं, फर पुरे गिरि वर वनमां हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ ३८ ॥ हवे पाछल धीर मंत्री प्रभाते, राजसभाये नृप आगे रे ॥ श्रीचंद्रने वियाह निमंत्रण, कारण करी बहु रागे हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ ३९ ॥ तिलकमंजरी केरी वातज, धीर प्रधाने दाखी रे ॥ निसुणी मन हरख्यो अति राजा, ज्ञानविमल गुरु साखी हो ॥ स्वा० ॥ जा० ॥ ४० ॥ १०९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सेनानी दीपचंद्रनो आव्यो कन्या साथ ॥ ते पण निज वीतक कहे, पय प्रणमी नरनाथ ॥ १ ॥ चंद्रकला विवाहनुं, जे थयुं सरस चरित्र ॥ राजाये पण दाखीयुं, सूर्यवतीने पवित्र ॥ २ ॥ सूर्यवती कहे माहरी, चंद्रवती जे नयणी ॥ तेहनी चंद्रकला सुता, देखुं हर्षित नयणि ॥ ३ ॥ नृप आदेश लेइ गया, कुमर तणे जय धाम ॥ चंद्रकला उछरंगमां, लेइ दीये बहु मान ॥ ४ ॥ तिहां तेणे सवि पूछीयुं, कुशल खेमनी वात ॥ धरमोचन दान देखीने, प्रत्येके जे जात ॥ ५ ॥ चमत्कार चित्त पामीने, कहे राजा किहां कुमार ॥

राजाने वली शेठीए, मेली बहु परिवार ॥ ६ ॥ गाम गाम सघले तिहां, जोवराव्यो कुमार ॥ पण किहांए लाधो नहीं, जेम मरुमां सहकार ॥ ७ ॥ तिहां दुःख पाम्या अति घणुं, राजा शेठ परिवार ॥ श्रीगुणचंद तो अति दुःखी, रति नवि लहे लगार ॥ ८ ॥ थलगत मीन परे टलवले, संजारी तस नाम ॥ प्रेम महादुःख हेतु छे, एम बोले गुणधाम ॥ ९ ॥ प्रेम तणो बे लेइने, थमनो लेइ मकार ॥ प्रेम इसी परे नीपनो, तिणथी दुःख दातार ॥ १० ॥ प्रेम प्रेम सहुको करे, पण प्रेम ते पूरुं वयर ॥ गति मति छोडीने फिरे, जाणे खांम गलेफ्युं जहेर ॥ ११ ॥ प्रेम ते प्राणीने करे, प्राण तणो परवास ॥ प्रेम ते हिम परे दाजवे, मुख मूके निशास ॥ १२ ॥ शेठ कहे निर्भाग्य हुं, मूढये लिउं रथ फेरी ॥ तेणे वयणेथी नीसर्यो, लीधुं दुःख उदेरी ॥ १३ ॥ माता कहे कदि मुखथकी, नवि मागे सुत कांय ॥ मोदक आवी मागीया, दीधा वली वेहेंचाय ॥ १४ ॥ पण में इम नवि जाणीयुं, जे करशे एम विकल्प ॥ सुत विण सवि सूनां थयां, मंदिर शहेर सुख तल्प ॥ १५ ॥ जले तैल लवे गुह्य जेम, पात्रे पसरे दान ॥ तेम पसरी ए वातडी,पुरमां तेह निदान ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ ८०५॥

॥ ढाल पंदरमी ॥

माळीकेरे बागमे, दो नारिंग पक्के रे लो, अहो दो० ॥ ए देशी ॥

॥ सूर्यवती कहे नंदनी, केम स्वयंवर आप्यो लो ॥ अहो केम० ॥ केम विवाह ए नीपनो, केम दायजो आप्यो लो ॥ अ० ॥ १ ॥ वात कही सघली तिहां, जेम आवी परण्या लो ॥ अ० ॥ यावत दीधुं दान जे, गायने गुण वरण्या लो ॥ अ०॥२॥ राज्यकुले थइ वात जे, कुमर नवि दीसे लो ॥ अ० ॥ चंद्रकला गेइ घरे, चित्ते नवि हींसे लो ॥ अ०॥३॥ गुणचंद्र रुदतो तिहां गयो, दुःखीयो चंद्रकला पासे लो ॥अ०॥ कहो स्वामी तुज मुज तणो, किहां गयो कब आसे लो ॥ अ० ॥ ४ ॥ जो जाणो तो दाखवो, आधुं दुःख थावे लो ॥ अ० ॥ वाहाला विण जे दिहडला, ते दुःखमां जावे लो ॥ अ० ॥ ५ ॥ मुजशुं अंतर नवि हतो, पण न कह्युं कांइ लो ॥ अ० ॥ जाणुं ए दुःख पामशे, बहु एम मन लाइ लो ॥ अ० ॥ ६ ॥ एम सुणी चंद्रकला कहे, सवि गुह्यनी वातां लो ॥ अ० ॥ ते कुणही नवि जाणीयो, जे निशिमां जातां लो ॥ अ० ॥ ७ ॥ अहो अहो मननी गूढता, अहो अहो साहस धीरा लो ॥ अ० ॥ ते सज्जन केम वीसरे, जेहना गुण मीठा लो ॥ अ० ॥ ८ ॥ राजादिक सवि नयर ते, लोके नवि पाया लो ॥ अ० ॥ एम दिन त्रय लगे सोचीया, मानुं

॥ अ० ॥ ९ ॥ अवसानने बहुमान, वालिय आगार हो ॥ अ० ॥ मौन ग्यान गुन-
ध्यान ते, नवि कोणे पाम्या हो ॥अ०॥१०॥ इंम चोथे दिन ज्ञानी मुनि, कोइ तिहां आव्या हो ॥अ०॥ नृप नृप-
पत्नीने तेड, मधुर मधुराया हो ॥ अहो चंद्रकला गहगह्या हो ॥११॥ वंदी मुनिना पायने, ठाम आप आपणे
हो ॥अ०॥ बेठा निरवद्य आसने, मुनि देशना दाखे हो ॥ अ० ॥ १२ ॥ देशना अंते भूपति, कहे साधुजी हो
॥अ०॥ मे जनमथी पुत्र ने, पूछ्यो निर्वाणनी हो ॥अ०॥१३॥ उपवनिकामां पुष्प, ताणे मधुराये हो ॥अ०॥
निशांची लीधो केमे, कहो केम पुण्य थाये हो ॥ अ० ॥ १४ ॥ ज्ञान थकी तव साधुजी, नाखे बहु गुणीये हो
॥ अ० ॥ नंदन नाग्यकेत पुत्र ने, तेहनी गुणीये हो ॥ अ० ॥ १५ ॥ तस दिन नाग मोहन, देवी पुत्र भणीये
हो ॥ अ० ॥ जिहां भूपवां ने तेह, कहुं हवे सांभळीये हो ॥ अ० ॥ १६ ॥ लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी अछे, लक्ष्मीवतीनी
राणी हो ॥ अ० ॥ १७ ॥ कोटीध्वजनी कीरति अछे, जगमांहे जाणी हो ॥ पूछ्यो तिहां पुत्र पुत्रने, ते पुत्र
घर पाये हो ॥ अ० ॥ नाम दीधो श्रीचंद्र ने, मुद्रिका निवासे हो ॥ अ० ॥ १८ ॥ अरे राजन तुमे पढिया,
अंके वेसाड्यो हो ॥ अ० ॥ जिहां रे अंतर नंदनो, पामो मन धार्यो हो ॥ अ० ॥ १९ ॥ कनकोट नगरतुं,
राज दीठुं अति नेहे हो ॥ अ० ॥ तन दीठे तारे, तस ए लोके कहीये हो ॥ अ० ॥ २० ॥ दान गुणे ए
छराने, देवी सेठ पोते हो ॥ अ० ॥ वणिक पुत्र ए वात, नृपति पुत्र तोले हो ॥ अ० २१ ॥ वचनं कुमणो
छोडने, गयो ते विदेश हो ॥ अ० ॥ सबले नृपति छोडने, गुणने एक परखे हो ॥ अ० ॥ २२ ॥ इम निगुणी
गुणियणने, नयण नवि हरख्यां हो ॥ अ० ॥ वमणो वाध्यो प्रेम ने, बेहु पुत्र निरख्यां हो ॥ अ० ॥ २३ ॥
गंगिणिकनुं वचन ने, गयुं ज्ञानी वखाणे हो ॥ अ० ॥ चिंते मनमांहे एम, जोवुं कदि नयणे हो ॥ अ०
॥ २४ ॥ चंद्रकला गुणचंद्र ने, विशेष गुणीया हो ॥ अ० ॥ सज्जन छवनि थानने, गुणी मत डुःखीया हो
॥ अ० ॥ २५ ॥ मागध पंडित लोक, कवित बहु नाखे हो ॥ अ० ॥ श्रीगुणचंद्र गुणना तेह, दान बहु दाखे
हो ॥ अ० ॥ २६ ॥ मुनि नमि निज थानके, जाये नवि आनंदी हो ॥ अ० ॥ उत्सव पुरमां थाय, जोत्या
नवि बंदी हो ॥ अ० ॥ २७ ॥ भूपतिनी कहे गंध, मतंगज मारे हो ॥ अ० ॥ ते पट हस्ती छोड, आवे सुत
जिहां रे हो ॥ अ० ॥ २८ ॥ चंद्रकला हवे किहां रे, नृपति नेहे हो ॥ अ०॥ सेठ परे यती किहां रे, …
घन नेहे हो ॥ अ० ॥ २९ ॥ किहांरेक श्रीपुर मांहे, पुत्रे तिहां रहती हो ॥ अ० ॥ …

सदा तिहां करती लो ॥ अ० ॥ ३० ॥ धर्म थकी सवि वंछित, लीजे सोहेलां लो ॥ अ० ॥ इष्ट सयण संयोग, आवी मले पहेलां लो ॥ अ० ॥ ३१ ॥ अवसर धर्मनो पामी, करे नवि पहेलां लो ॥ अ० ॥ ते जाणो नरमांहे, गणीजे पहिलां लो ॥ अ० ॥ ३२ ॥ यतः ॥ धर्मोऽयं धनवल्लभेषु धनदः, कामार्थिनां कामदः, सौभाग्यार्थिषु तत्प्रदः किमपरं पुत्रार्थिनां पुत्रदः ॥ राज्यार्थिष्वपि राज्यदः किमथवा नानाविकल्पैः कृतै, स्तत्किं यन्न करोति किंतु कुरुते स्वर्गापवर्गौ अपि ॥ १ ॥

भावार्थ—धर्म जे छे ते धन जेने वाहालुं होय छे तेने धन आपनारो छे, कामनी इच्छा करनारने काम आपनारो छे. सोभाग्यना अर्थीने रुडुं भाग्य देनारो थाय छे वली पुत्रेच्छावालाने पुत्र आपनार छे. राजयनी इच्छा करनारने राज्य आपनार छे. वली शुं कहीए! नाना प्रकारना विकल्पोए करेलो जे धर्म छे ते शुं न करे छे! अर्थात् सर्व कांइ प्राप्त करे छे. वली स्वर्ग अने मोक्ष तेने देनारो एवो धर्म छे.

॥ ढाल सोलमी ॥

राग धन्याश्री ॥

॥ धर्म प्रभावे प्रगटे सघली संपदा रे, रूप सुभग सौभाग्य ॥ धर्मे जीवित दीर्घ रोग न संपजे रे, जेहने धर्मशुं राग ॥१॥ सांभलियां हवे आगे गुणने गायवा रे ॥ ए आंकणी ॥ आपद अटवी संकट निकट न आवही रे, जय थाये विसराल ॥ कीरति कमला विमला तेहनी विस्तरे रे, जेहने धर्मनो ढाल ॥ सां० ॥ २ ॥ रोग शोग वियोग विलय जाये सदा रे, सुमति सुंदरी लागये ॥ मंगलमाला लच्छि विशाला तस घरे रे, आयती मुक्तिनो भोग ॥ सां० ॥ ३ ॥ ए बीजो अधिकार कह्यो में मति थकी रे, चरित्र तणे अनुसार ॥ चार पुरुषारथ परे ए जाणीये रे, अर्थ सुरूप विचार ॥ सां० ॥ ४ ॥ ज्ञानविमल गुरु वयण हृदयमां सांभली रे, सयण लह्यां आणंद ॥ भणतां गुणतां सुणतां सज्जनने होये रे, वंछित सुरतरु कंद ॥ सां० ॥ ५ ॥ सर्व गाथा ॥ ८४२ ॥

इतिश्री श्रीचंद्रस्य राधावेधविधानं त्वरितगृहागमन रथतुरगगतिगमन चंद्रकलापाणिग्रहकरणकरमोचन महादानपश्चाद्गृहागमनजयंतादिकुमरकुशिक्षित वीणारव गायनदानमार्गणअश्वदाने रथार्प्पण तत्श्रुतजनकखेदप्रापण विषवाद विधुरीतगृहान्निर्गमन एकाकीगमन पश्चात् मुनिवचने ज्ञापित श्रीचंद्रगमन राज्यप्राप्तिपर्यंते मिलन कथन परमानंद प्रापण इत्यादि चरित्रनिबन्ध नामा आनंदमंदिर नाम्नि महारासके द्वितीयोऽधिकारः संपूर्णः ॥

॥ अथ तृतीयोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ ब्रह्माणी वरदायका, वरगुण मणि नंमार ॥ वंछित पूरण सुरलता, जिनवाणी विस्तार ॥ १ ॥ जगदंबा जगदीश्वरी, जयवंती जगमांहि ॥ शक्तिरूप सघले फिरे, त्रिभुवन जेहनी छांहि ॥ २ ॥ कमलकरा कमलेक्षणा, कमल कोमल मम वाण ॥ कमलानना कमलासना, वीणा पुस्तक पाण ॥ ३ ॥ तेह तणी सान्निध लही, सखी गुरुनो सुपसाय ॥ हवे आगल श्रीचंद्रनी, कथा कहुं सुखदाय ॥ ४ ॥ मुदित मने मेदिनी फरे, जोतां नवनव रंग ॥ किहांएक रथ किहांएक हये, किहांएक चरणने संग ॥ ५ ॥ किहां दिवसे किहां रजनीये, किहां परगट प्रच्छन्न ॥ परमेष्ठी पद ध्यानथी, सदा मने सुप्रसन्न ॥ ६ ॥ गुरुदत्त औषधि योगथी, सघले निर्जय हेत ॥ आपद् ते संपद् होये, जेहने पुण्यसंकेत ॥ ७ ॥ वणिक हाट दीनार देइ, करे जोजननुं काज ॥ शेष दीनारनो नवि दीये, संतने होये सुख साज ॥ ८ ॥ पांच सात साथे जमे, पण एकाकी नवि खाय ॥ दुःखितने छानुं दीये, पर दुःख देखी दूणो थाय ॥ ९ ॥ श्रीचंद्र चंद्र किरण परे, कुमुदामोद करंत ॥ सुख शातामां महीयले, विचरे ते विलसंत ॥ १० ॥

॥ ढाल पहेली ॥

एकवीशानी, राग मल्हार, आव्यो रे आव्यो रे, आव्यो जलधर विहुं पखे ॥ ए देशी ॥

॥ चाल ॥ हवे एक दिन रे तरु उपर वासो वसे, तिहां देखे रे छाया तनुनी एक रसे ॥ अणुआली रे निशि पण पुरुष न देखीयें, मन चिंते रे ए कांइ अचरिज लेखीयें ॥ १ ॥ त्रूटक ॥ लेखीये ए कोइ सिद्ध नर छे, अंजनादिक योगथी ॥ मंत्रथी एहवुं थयो पृछे, जोउं शुं छे जोगथी ॥ शिर जार वहेतो तेह जाणी, जाये जव तस पाछले, छाया न देखे तेहनी तिहां, वृक्ष घन शिख्या मले ॥ २ ॥ चाल ॥ रह्यो छानो रे, विस्मय थइने तिहां किणे ॥ रवि उग्यो रे, देखी पद पद्धति मुणे ॥ अनुसारे रे, पगलां लेइ चालीयो ॥ आगे जातां रे, महा पर्वत एक भालीयो ॥ ३ ॥ त्रूटक ॥ भाली तिहां एक गुफा महोटी, मांहे पगले पेसतां ॥ पण न

देखे नीरस्थानां, जाणी मन करे सामता ॥ तस पासे वापी अछे तिहां तरु; मूल कोटर एक छे ॥ तिहां नीर फल आहार करीने, रह्यो तेहमां ते पछे ॥ ४ ॥ चाल ॥ जोवे दृष्टे रे, कुमर तिहां तस वाटमी ॥ त्रीजे यामे रे, जे थयो ते सुणो चापमी ॥ गुफामांहेथी रे, पुरुष एक ते नीकस्यो, धुंसर वेशे रे, युवा चोर ते अटकस्यो ॥५॥ त्रूटक ॥ अटकस्यो वावे जल पीइने, लेइ वारी पाछो फरे ॥ मूकी जल तिहां फरी पाछो, गुफामांहेथी नीसरे ॥ शिला देइ वावे आवी, स्नान मज्जन तिहां करी ॥ गांठ छोमी तेणे समये, गुटिका लेइ मुखमां धरी ॥ ६ ॥ चाल ॥ तदनुजावे रे, अदृश्य थइ ते चालीयो ॥ छाया देखी रे, आतपे पुर जणी हालीयो ॥ गयो दूरे रे, जाणी कुमर पाछो फस्यो ॥ आप वलथी रे, शिला उघामी मांहे गस्यो ॥ ७ ॥ त्रूटक ॥ ते गस्यो दरीमां एक महोटुं, गेह देखे रयणे जस्युं ॥ तेमांहे तरुणी एक कन्या, मध्य यौवन आचस्युं ॥ कहे जगिनी केम एकाकी, रहे इहां किण कारणे ॥ तव सजल नेत्रे कहे विदेशी, चरित्र माहारुं जे सुणे ॥ ८ ॥ चाल ॥ नायकपुर रे, विप्र वसे सारथिपति ॥ अधिकारी रे, नायक पण छे द्विज पति ॥ मंत्री पण रे, रविदत्त नामे जूदेव छे ॥ तस पत्नी रे, शिवमती नामे सुशेव छे ॥ ९ ॥ त्रूटक ॥ शिवमती ते हुं इहां आवी, तेह कारण सांजलो ॥ ते गाममां थाये नित्ये, चोरिकानो मामलो ॥ तिहां गाम लोके मलीने कह्युं, द्विज पतिने चोरनो ॥ जयनिरासने करण हेते, करे आरक्षक जोरनो ॥ १० ॥ चाल ॥ कहे रक्षक रे, सिद्ध चोर कोइ अछे ॥ तस निरतज रे, न पडे जिहां तिहां ते गिच्छे ॥ जे फावे रे, वीकुं तस घर ते मुखे ॥ तेणे कारण रे, गाममां कोइ न रहे सुखे ॥ ११ ॥ त्रूटक ॥ सुखे कोइने निंद नावे, कह्युं मंत्री तेमीने ॥ तुमथी जो न वले चोर तेह जो, मंत्रीपद द्यो छोमीने ॥ धणी धुरास्थल देशनो ते, तेह रक्षा कीजसे ॥ तेह तुमने बहु परे हवे, जली शिक्षा दीजशे ॥ १२ ॥ चाल ॥ एम निसुणी रे, मंत्री मनमां कंपीयो ॥ कहे सुणो स्वामी रे, हुं चोर ग्रहुं एम जंपीयो ॥ लाज दाक्षिण रे, छोमी न जाये चत्तमे ॥ जे गिरुआ रे, ते सघली वाते नमे ॥ १३ ॥ त्रूटक ॥ जमे पुरमां चोर ग्रहवा, आप घर खाली करी ॥ तव चोर आव्यो कांइ न दीठुं, ग्रही मुजने आकरी ॥ वस्त्रे करी कर आस्य बांधी, खंधे करी इहां लावीयो ॥ रोपे करीने अवर घरमां, द्रव्य कांइ न पावीयो ॥ १४ ॥ चाल ॥ चोर जापे रे, हुं रत्नाकर नाम छुं ॥ ते दिननी रे, एकलमी एणे ठाम छुं ॥ अरे बांधव रे, अवर कांइ जाणुं नहीं, ए तस्कर रे दृश्य अदृश्य होये किहां कहीं ॥ १५ ॥ त्रूटक ॥ किहांये गयो छे निशा शेषे, फिरी इहां ते आवशे ॥ एम तिम

थया प्राण आज मुजने, न जाणुं शुं थावशे ॥ पण पांडुपुत्र वियोग मुजने, हृदयमां खटके घणुं ॥ हवे तुमो कोण किहांथी आवीया, मुज नाथथी कहो ते सुणुं ॥ १६ ॥ ढाल ॥ कहे कापडी रे, हुं विदेशी पंथी अछुं ॥ मन मान्युं रे, जिहां गमे तिहां रहुं गछुं ॥ एम निगुणी रे, कहे हुं धर्म बांधव नही ॥ बांधी मोहनुं रे, फल मक्षोडुं बीहवुं नही ॥ १७ ॥ त्रुटक ॥ नही माहरे बंधु जाणुं, जे वियोग पति सुत तणो ॥ तेह भंजो आज माहरे, बहेन मुजने करी गणो ॥ दरी मांहेथी तेह काढी, शिक्षा करीने दृढ करी ॥ अनुक्रमे तेहने नगर आणी, मेलवी ते सुंदरी ॥ १८ ॥ ढाल ॥ तस कंते रे, गच्छ प्रशंसवुं तेहनुं ॥ शिवमतीये रे, भक्ति करे दिन जेहनुं ॥ बहु आपे रे, कंचन प्रमुख ते नवि लीये ॥ उपकृति करी रे, करी बंध्रे ते नंदीये ॥ १९ ॥ त्रुटक ॥ नंदीये नही तेह सज्जन, जे उपकृति करी इच्छिये ॥ तोहे पण संभारवाने, आप मुद्रा ते दीये ॥ तिहां थकी हवे फिरी चोर थानक, जोयवाने तरु तले ॥ आवी छानो रह्यो जेहवे, तेहवे तिहां अटकले ॥ २० ॥ ढाल ॥ एहवे एक रे, म्लान वदन नर आवतो ॥ चोर जाणी रे, पासे तेह बोलावतो ॥ मांहोमांहे रे, पूछे नाम गोत्रमणुं ॥ कहे कापडी रे, लक्ष्मीचंद्र नाम मुज तणुं ॥ २१ ॥ त्रुटक ॥ जाणुं माहरुं नाम रत्नाकर, कुमर चिंते जो ए कहे ॥ तो छपावुं चार दरीनुं, हृदय कोण केहनुं लहे ॥ कुमर पूछे केम सचिंता, मित्र दिसो छो तुमो ॥ कहे कठिन एह उत्तर, कार्य बहु शिर ने थमो ॥ २२ ॥ ढाल ॥ कहे पल्ली रे, वात नियाण परे भीडमी ॥ एहवे आव्या रे, अध्यग पंच तिण वाटमी ॥ मांहोमांहे रे, मुख दृष्टा करे जेटले, गुणथी गुटिका रे, बांधे चोर वस्त्रांचले ॥ २३ ॥ त्रुटक ॥ जवी सुखे कुमरे दीठी, चिंतवे मन एहवुं ॥ एह गुटिका ग्रहण काजे, वस्त्र करुं कंइ तेहवुं ॥ शिर वस्त्र वेहुनां करी भेलां, हसी कहे एम वातमी ॥ शिखा तले ए वस्त्र मूकी, जोइये एकत्र जमी ॥ २४ ॥ ढाल ॥ निज वस्त्रथी रे, जे काढे तेहने दीउं ॥ हेममुद्रा रे, मांहे जे तोपाण लीउं ॥ एम पण करी रे, पंच कत्या तिहां गालीया ॥ चोरे खोजथी रे, पण सांचुं एम जालीया ॥ २५ ॥ त्रुटक ॥ राखीया ते बेहु शिखा हेठे, वस्त्र कुमरे मूकीया ॥ निष्कामपणाने जोर वहुओ, चोर करी ते चूकीया ॥ कुमरे वस्त्रथी गर्व लीधां, वस्त्र सहु साचे तदा ॥ गुटिका संयोगे कुमर हरख्यो, चित्तमांहे अति मुदा ॥ २६ ॥ ढाल ॥ ते पंथमां रे, फल पाकां सहकारनां ॥ मूढये लेइ रे, वेसेंनी दीये तेणी वारमां ॥ सहु खाये रे, तृप्त थया मन अति घणुं ॥ चोर चिंते रे, उपाये ए गुफा वारणुं ॥ २७ ॥ त्रुटक ॥ वारणुं ए जो

आणंद लो, पुण्य साहसी ओयदो ॥ लो ढवे साहस ओर ढतो वाने, किंतु काया पामशे ॥ एहवे नागक-
पूर पालीओ, पूर बल गाजरयो ॥ ते पंच नाग प्रधान तिहां वाणे, चोर ग्रह दत्त दिश पुत्यो ॥ २० ॥ ढाल ॥
ढवे कामी रे, विजय ने गम्यादिक सही ॥ ते गुटिका रे, मुख देइ अदरश तिहां रही ॥ तह उपर रे, गाम-
पाल जोइ सही ॥ कुण कटकना रे, नर पाना आव्या वही ॥ २९ ॥ त्रूटक ॥ वही आवे पद विलोके, चोर
ने दीठा नहीं ॥ फिरी गया पाछी पेरे सुजट जाती, निज पुरे ते गया वही ॥ कुमर पण कोइ दिशे उद्देशी,
चालीओ सही संकटे ॥ गुटिका प्रजावे एक समये, पायमाळे जइ मळे ॥ ३० ॥ तिहां सूता रे, पंथी बहु देश-
देशना ॥ तस पाळी रे, निसुणे काने एकमने ॥ वैतालिक रे, एक बोढयो गाथा कही ॥ छप्पयमां रे, ते
बोढयो गुणजो सही ॥ ३१ ॥ त्रूटक ॥ कही एहवुं गाहा जाणे, कुमर तव तिहां मांजये ॥ तव एक अपर
विदेशी बोढयो, वचन ताहरुं नवि मळे ॥ ते लोक केरो पुत्र सुणीयो, तुं कहे नृपनंदनो ॥ ते वात सघली
नहीं तव परी, कहे वंदी सुज मनो ॥ ३२ ॥ छप्पय ॥ राधावेध विधाने, तिलकमंजरीये वरियो ॥ पद्मिनी चंद्र-
कलाये, जिण वरियो बहु परवरियो ॥ झीखी कला जेणे सर्व, गुणी गुणधर गुरु पासे ॥ गुणचंद्र मित्र सुवेग,
अभरय दान विलासे ॥ श्रीप्रतापनृप कुलतिलो, सूर्यवती सुत चिरंजयो ॥ श्रीचंद्रकुमर ते साहसी, नाम
लिये आनंद जयो ॥ १ ॥ अथ गाहा ॥ नयरे कुसत्थलं मिय, पुहवि स पयावसिंह कुलचंदो ॥ सिरिसूरिय
वइ तणुओ, सिरिचंदो जयउ भुवणयले ॥ १ ॥ रायावेह विहिए, सयंवरे वरिओ तिलयमंजरीए ॥ सव तिय
गव हरणो, धीरिओ जयउ सिरिचंदो ॥ २ ॥ सिंहपुरवर नरेसर, सुह गंग सुयाइ पुवनव नेहो ॥
पउमणि चंदकलाए, परणीओ जयउ सिरिचंदो ॥ ३ ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ चाल ॥ हुं हमणां रे, कुशस्थल नयरे हतो ॥ आवी पद्मिनी रे, चंद्रकलासुं रहे महलपतो
॥ पीलारपने रे, दान दीधुं रयनुं जिहां ॥ ऊद्वाणो रे, दिलमां लोक घणुं तिहां ॥ ३३ ॥ त्रूटक ॥ किहां
एहवुं दान न सुण्युं, राजा विण परलोकने ॥ इत्यादिक वचने रोष पामी, कुमर पाम्यो शोकने ॥
एहवे धीर प्रधान आवी, राय विनवीने कहे ॥ श्रीचंद्रने तुमो दीयो आदेश, तिलकमंजरी कर ग्रहे ॥ ३४ ॥
चाल ॥ तव नरपति रे, कुमरनी खबर करे जिसे ॥ तव सुणीयो रे, गयो परदेशे कुमर तिसे ॥ तेणे दुःखथी
रे, दुःखीयो पुरजन नृपकुलं ॥ नवि चाले रे, जाचिकर्म प्रति वळं ॥ ३५ ॥ त्रूटक ॥ अत्र कांइ न चाले कर्म

गाथे, फहे गति मली न्हावीया ॥ एहवे ज्ञानविमल गुरु तिहां, अति आनंदे आवीया ॥ सूयवनीये प्रश्न कीधो, आप पुत्र अछे किहां ॥ ज्ञानवलथी सर्व जाण्युं, चरित्र यावत् गमन जिहां ॥ ३६ ॥ सर्व गाथा ॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥

इमणां परदेशे गया, ते श्रीचंद्र कुमार ॥ परम अंते मलशे सही, जोमी राज्य परिवार ॥१॥ राजा राणी हरखियां, सुणी निज पुत्रनी वात ॥ शेठ शेठाणीने कहे, धन धन तुमो माय तात ॥ २ ॥ गीत कवित तिहां तेहना, कहे बहु बंदी नट्ट ॥ दान मान पाम्या घणा, गली गली गहगट्ट ॥ ३ ॥ तिहां में पण बहु धन लयुं, जाउं हुं निज गेह ॥ ते माटे में चावियो, राजपुत्र सनेह ॥ ४ ॥ एह चरित्र निज सांभली, जे पाम्यो आनंद ॥ ते तो जाणे केवली, अपर न जाणे मंद ॥ ५ ॥ श्रीनिदान लग आपीयुं, कुमरे तेणी वार ॥ गुरु धून प्रमुख घरने दीये, जे पंथिजन धार ॥ ६ ॥ चली तेहिज वेशे करी, आगल चाल्यो कुमार ॥ इयत अदरय किहां करो, निज इच्छा अनुसार ॥ ७ ॥ अनुक्रमे अटवी पामिया, दुःखित दंडाकार ॥ पुण्यवले ते मारगमी, कलणावंत कुमार ॥ ८ ॥ तिहां रात्रे एक तरु तले, आवी रहे कुमार ॥ ते तरु शुक स्थानक अछे, निशा सुखे तेणीवार ॥ ९ ॥ चाली करी तिहां शुक घणा, आव्या बोले वाण ॥ कोण कोण किहांथी आवीया, पूछे तेह सुजाण ॥ १० ॥ वृद्ध कीर एक बोलीयो, त्रण दिने आव्यो हुं आज ॥ तव लघु शुक कहे तातजी, शुं पडयुं हतुं काज ॥ ११ ॥ के कोइ अचरिज दीठुं, तिणथी कालविलंब ॥ तव जीरण शुक दाखवे, सुणो वत्स अविलंब ॥ १२ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

जो नणदी हो लाल जरुखे दिल लगा ॥ ए देशी ॥ पलाचीना रागमां छे ॥ अथवा ॥ मोरा स्वामी हो, वात सुणो एक माह्नी ॥ ए देशी ॥

॥ हांरे म्हाना सूडा हो, हांरे म्हाना बच्चा हो, वात सुणो एक माहरी ॥ जे निसुणीने आनंद पामो, करो सुमची मति सारी ॥ मारा म्हाना सूडा हो, वात सु० ॥ ए आंकणी ॥ पूरव दिशे मांहेन्द्र नयर छे, तिहां त्रिलोचन राजा ॥ मा० ॥ गुणसुंदरी नामे पटराणी, जेहना सयल दीवाजा ॥ ना० ॥ वा० ॥ ॥ १ ॥ सुता सुलोचना छे आत्यंधा, चोसठ कलानी प्रबंधा ॥ मा० ॥ सा मति नयन हृदयथी जाणे, शास्त्रना सकल संबंधा

॥ ना० ॥ वा० २ ॥ राजा मंत्रि प्रत्ये एम जापे, ए पटु लोचन थाय ॥ मा० ॥ पमह वजावो नयरमां एहवो, जेम कोइ परगट थाय ॥ ना० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जे साजां करे लोचन तेहने, अर्ध राज्य ने पुत्री ॥ मा० ॥ तेहने आपुं थापुं पासे, राखुं तेहशुं मैत्री ॥ ना० ॥ वा० ॥ ४ ॥ मास पांच थया डिंडिम वाजे, छठो मास छे वेगा ॥ मा० ॥ पण तस जाग्य वलेथी कोइ, आज लगे नवि दीठा ॥ ना० ॥ वा० ॥ ५ ॥ लघु कीर एक बोइयो तत्क्षण, कहो तातजी सोइ ॥ मा० ॥ एवुं औषध कोइ किहां छे, जेहथी नयन सज्ज होइ ॥ ना० ॥ वा० ॥ ६ ॥ वृद्ध कहे एहनुं छे औषध, शिशु कहे इहां अम्र दूरे ॥ मा० ॥ वृद्ध कहे इहां अन्ने पण ए, गुह्य न कहीये निशिपूरे ॥ ना० ॥ वा० ॥ ७ ॥ यतः दिवा निरीक्ष्य वक्तव्यं, रात्रौ नैव च नैव च ॥ संचरति महाधूर्तः वटे वररुचिर्यथा ॥ १ ॥

भावार्थः—दिवसमां गुह्य वाक्य जोइने बोलवुं, अने रात्रिमां तो बोलवुंज नहि; कारणके रात्रिमां धूर्त जनो फरया करे छे. तेम करतां जो बोलीये तो वडमां वररुचिनी पेठे थाय.

॥ ढाल ॥ बालक स्त्री मूरख केरो, हठ छोड्यो किमही न छूटे ॥ मा० ॥ कहे तातजी ते जे तो दाखो, जेम मन संशय खूटे ॥ ना० ॥ वा० ॥ ८ ॥ एहिज तरुमूले दोय वल्ली, सम्रजाव पीतवर्णी ॥ मा० ॥ एक अमृत संजीविनी छे, बीजी निर्घृण व्रणनी हरणी ॥ ना० ॥ वा० ॥ ९ ॥ पहेलीनां दल लांबां पहोलां, बीजीनां दल न्हानां ॥ मां० ॥ पृत्ताकारे शस्त्र निवारे, एह लतानां मानां ॥ ना० ॥ वा०॥ १० ॥ तेह वचन कुमरे सवि सुणीयां, गुणीया थइ एकंगे ॥मा०॥ ते औषधि युगल लेइ चाल्या, ते पुर दिशि मनरंगे ॥ ना० ॥ वा० ॥ ११ ॥ त्रण दिने ते अटवीने अंते, आगल जातां आव्यो ॥ मा० ॥ लक्ष्श जनपद नयर पण लक्ष्श, शोनाये चित्त जाव्यो ॥ ना० ॥ वा० ॥ १२ ॥ कूपाराम सरोवर वापी, तरु छायाये शोजे ॥ मा० ॥ गढ मढ मंदिर पोल विपणनी, श्रेणी देखी मन थोजे ॥ ना० ॥ वा० ॥ १३ ॥ पण नर पशु उज्झित देखीने, कौतुक चिंते महोटुं ॥ मा० ॥ पेसे पुरमां जेहवे त्यारे, वचन सुणी अति कोडुं ॥ ना० ॥ वा० ॥ १४ ॥ सारिका एक संभ्रमथी जाखे, पंथी म पेसे इण पुरमां ॥ मा० ॥ केम धारे जे गुण वैदेशिक, विघन अछे तनु घरमां ॥ ना० ॥ वा० ॥ १५ ॥ कुमर कहे ए कोण नगर छे, कोण राजा जय केहनो ॥ मा० ॥ केम सूनं पर तं पण कोण छे.

ए जनपद चोफेर रह्यो छे, कुंडलपुर नाम जगीशे ॥ ना० ॥ या० ॥ १७ ॥ अर्जुन नामे राजा एहनो, पांच प्रिया तस नारी ॥ मा० ॥ सुरसुंदरी मुख्या छे राणी, रतिथी पण प्यारी ॥ ना० ॥ या० ॥ १८ ॥ तेह नगरीमां चोरी थाये, दिवस गये घट भाले ॥ मा० ॥ नृपति तलार जोये ते तस्कर, पण नवि आवे हाथे ॥ ना० ॥ या० ॥ १९ ॥ एक दिने तस्कर धन लेइ जातो, दीठो नृपति निहाळे ॥ मा० ॥ तस पूठे छानो गयो राजा, जाएयुं सघळार परिवारे ॥ ना० ॥ या० ॥२०॥ एम जाणी ते तस्कर धूर्ते, दृष्टि वंचवानी पंथी ॥ मा० ॥ कोइक मठमां पेसी धन नवि, मूके मननुं गंथी ॥ ना० ॥ या० ॥२१॥ जिज्ञासु तापस एक सूतो, धन तस पासे थापी ॥ मा० ॥ आप गयो नासीने तिहांथी, नृप कहांकने आवी ॥ ना० ॥ या० ॥ २२ ॥ निशा शेषे सुभटे मळी बांध्यो, ते तापसीने विगोइ ॥ मा० ॥ धन लेइ निग्रह करी हणीयो, थयो राक्षस दुःख जोइ ॥ ना० ॥ या० ॥ २३ ॥ रोष थकी राजाने मार्यो, वळी मार्यो बहु लोक ॥ मा० ॥ सैन्य दैन्यथी दश दिशि नाठुं, मानुं जाणी शोक ॥ ना० ॥ या० ॥ २४ ॥ राणी पांचे तेणे राखी, अंतःपुरमां राखे ॥ मा० ॥ तेहमां गर्भिणी गुणवंती राणी, आगसप्रगया लागे ॥ ना० ॥ या० ॥ २५ ॥ जाणे छे जो नंदन थाशे, ॥ हणीश बुद्धि छे एहथी ॥ मा० ॥ कर्मजोगे तेहने थइ पुत्री, चंद्रमुखी नामे तेहथी ॥ ना० ॥ या० ॥ २६ ॥ नवि जाणीये आवी शुं थाशे, जे आवे ए पुरमां ॥ मा० ॥ तेहने राक्षस हणतो दीसे, वळे वैर एम मनमां ॥ ना० ॥ या० ॥ २७ ॥ एम निसुणी पुरमां ते पेसे, कुमर धीरज धरी चित्ते ॥ मा० ॥ विविध सौध माळाने जोतो, गाम गाम चलुं चित्ते ॥ ना० ॥ या० ॥ २८ ॥ राजभुवनमां जाइ पहेरी, राजयेश पोतानो ॥ मा० ॥ नृपावासे गोखे बेठी राणी, निरखी पाछो पलंगो ॥ ना० ॥ या० ॥ २९ ॥ कोमळ शय्यानी हींडोळा, खाटे आवी सूतो ॥ मा० ॥ पंचपरमेष्ठीनी अंगरक्षा, करीने निर्भय हूतो ॥ ना० ॥ या० ॥३०॥ हवे पश्चात् नरपदनी पद्धति, देखीने जय आवे ॥ मा० ॥ सूतो देखी मनमां चिंते, कोण ए प्रगट प्रजाये ॥ ना० ॥ या० ॥ ३१ ॥ केम आव्यो एकलडो शूरो, धीर पइ मुज गंजे ॥ मा० ॥ सूतो छे पण जळमां फेकुं, के हणुं खड्गने तेजे ॥ ना० ॥ या० ॥ ३२ ॥ शय्या सहित इंसे करी चूकं, चिंतिने हाक मारे ॥ मा० ॥ रे शीयाळ केसरीने ठामे, आवे केम किण सारे ॥ ना० ॥ यां० ॥ ३३ ॥ उठ उठ उतावळो मुजथी, शुं नवि बीहे रंका ॥ मा० ॥ शुं मनमांहे नथी उपजती, विषम

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ पाली ते आपोजी, रावण जानकी रे ॥ ए देशी ॥

॥ धीर वीर कोटीर तुं रे, कुंभलपुरनुं राज्य रे ॥ उच्चर माहारा वयणथी रे, कहे पसाद शिरताज रे ॥ १ ॥ महोटो महिमा रे धर्म नरिंदनो रे, अणचिंतित फल दाय रे ॥ जिहां गुणवंत पगलां भरे रे, तिहां रान वेला छल थाय रे ॥ महो० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ राज्यप्रिया पागे जइ रे, कहे तुम अमचां भाग्य रे ॥ गड सुकृनी आवी मल्या रे, गयां हवे दुरित दुर्भाग्य रे ॥ महो० ॥ ३ ॥ आजथी तुमो मुज बेहेनमी रे, गमजो मुज अपराध रे ॥ राज्य दीयुं में पहने रे, अखये चिंतामणि लाध रे ॥ महो० ॥ पहथी मुख निराबाध रे ॥ महो० ॥ ४ ॥ कुमर कहे तुमो मावमी रे, पण कोइ तेहवो नर जोय रे ॥ राज्य दीयो तो सुखे पले रे, जे जाति कुल उत्तम होय रे ॥ महो० ॥ ५ ॥ राणी कहे प्रभु तुम समो रे, लक्षण गुणथी न दीठ रे ॥ नरहयां करे आवी चहुं रे, शुं न पीये सुधारस मीठ रे ॥ महो० ॥ ६ ॥ कहे गुणवंती माहारी सुता रे, चंद्रमुखी करो नारी रे ॥ कहे अज्ञात ने न दीजीये रे, राज्यने कन्या सार रे ॥ महो० ॥ ७ ॥ यह कहे शुं मानहा रे, महोटा निःस्पृह होय रे ॥ पण उदये आवी मह्युं रे, ते केम टलशे तोय रे ॥ महो० ॥ ८ ॥ राज्य पसादे आपीयुं रे, कन्या कीध विवाह रे ॥ लोक आणीने वासीया रे, गज रथ सैन्य अथाह रे ॥ महो० ॥ ९ ॥ आज्ञा वरतावी तिहां रे, जय श्रीचंद्र नृपाल रे ॥ ऋद्धि समृद्धि वाधी घणी रे, वर्त्यां मंगलमाल रे ॥ महो० ॥ १० ॥ कहे राक्षस हवे रायने रे, वज्रखुरो जे चोर रे ॥ जले आले जे मरावीयो रे, मुजने जेणे जोर रे ॥ महो० ॥ ११ ॥ ते माटे कुंभलगिरे रे, मुख्य शिखर तस ठाम रे ॥ सुवर्ण रयणनुं पूरीयो रे, में हणीयो ने ताम रे ॥ महो० ॥ १२ ॥ यह वयणथी तिहां जइ रे, लीधो ते सवि माल रे ॥ चंद्रपुरं तिहां वासीयुं रे, गृह हट श्रेणि विशाल रे ॥ महो० ॥ १३ ॥ यह चैत्य तिहां थापीयुं रे, मूर्त्ति उपलनी कीध रे ॥ चोर देह उपर रही रे, नाम नरवाहन दीध रे ॥ महो० ॥ १४ ॥ फिरी आव्या कुंडलपुरे रे, दिन केता रह्या तंत्र रे ॥ श्वशुर वर्ग मंत्री लोकने रे, पूछी सवि तिहां मंत्र रे ॥ महो० ॥ १५ ॥ सिंहासने थापी पादुका रे, करी मर्यादा धार रे ॥ यह तणी आणा लही रे, चाहया वलिय कुमार रे ॥ महो० ॥ १६ ॥ वेश पूर-

यखो श्रादरी रे, ज्ञानी गुटिका योग रे ॥ माहेंद्रपुरे क्रमे श्रावीया रे, निशि बाहेर कर्मयोग रे ॥ महो०
॥ १७ ॥ तिहां पदेखो सूतो श्रछे रे, नामे लोहखुरो चोर रे ॥ नयरमांहे चोरी करी रे, श्रवस्वापिनी योग
पूर रे ॥ ॥ महो० ॥ १० ॥ कहे कापमीने एहवुं रे, तुं वहीश जाके जार रे ॥ तेह वचन श्रंगीकरी रे, चाल्यो
साथे तेणीवार रे ॥ महो० ॥ १ए ॥ श्रागे जात जोयरुं रे, मांहे दीवानी ज्योत रे ॥ रखे जखुं एक कामिनी
रे, देखी श्रचरिज हूंत रे ॥ महो० ॥ २० ॥ चोर कहे पुत्री एहनी रे, जक्ति करे जली जांत रे ॥ सा कहे
श्रावो घर जीतरे रे, स्नान जोजन एकांत रे ॥ महो० ॥ २१ ॥ ते सांजली कूम जाणीयो रे, बांधी काढ्यो
घहि चोर रे ॥ रोषथी स्त्रीने पूछीयुं रे, कहे तुं कोण कोण ए चोर रे ॥ महो० ॥ २२ ॥ सा कहे लोहखुरो
श्रछे रे, चोर ए पुत्री तास रे ॥ लावे नर संकेतथी रे, हुं हणुं करी वेसास रे ॥ महो० ॥ २३ ॥ तेहने पण
काढी बाहेर रे, मुंदी दरीनुं बार रे ॥ गोमी चोरने बंधथी रे, छूटा मूक्या तेणीवार रे ॥ महो० ॥ २४ ॥
पुत्री लेइ चोर किहां गयो रे, थयो प्रजात उग्यो सूर रे ॥ पंचपरमेष्ठि समरण करी रे, संजारी नियम प्रमुखनां
पूर रे ॥ महो० ॥ २५ ॥ पेठो महिंद्रपुर नयरमां रे, बेठो व्यवहारीने हट्ट रे ॥ पमहो वाजतो श्रावीयो रे,
एहवामां गहगट्ट रे ॥ महो० ॥ २६ ॥ पूछे श्यो पमहो वजे रे, कह्युं तेणे सवि वृत्तांत रे॥ छ दिन त्रण छमासी
थइ रे, पण नवि छवे कोइ संत रे ॥ महो० ॥ २७ ॥ राज्यकनी जात्यंध छे रे, सज्ज करे कोइ नेत्र रे ॥
अर्ध राज्य कन्या दिये रे, वली बहुलां धन खेत्र रे ॥ महो० ॥ २८ ॥ ते निसुणी नर श्रावे घणा रे, पण
कोइथी श्रर्थ न सीध रे ॥ एम सुणी पमहने फरसीयो रे, कुमरे वाचा दीध रे ॥ महो० ॥ २ए ॥ तेणे जइ
राजा विनव्यो रे, कापमी विद्या सिद्ध रे ॥ पमहो तेणे फरसीयो रे, तेमी श्रावो ते सिद्ध रे ॥ महो० ॥३०॥
छत्र चामर गज श्रादि दे रे, मोकली तेड्यो तेह रे ॥ राज्यसजामां श्रावीयो रे, देखी पाम्या नेह रे ॥ महो०
॥ ३१ ॥ श्राशीर्वाद उंचे स्वरे रे, देइ श्रासने उपविष्ट रे ॥ विनयगुणे करी जाणीयुं रे, कोइक पुरुष विशिष्ट
रे ॥ महो० ॥ ३२ ॥ पूछ्युं स्वामी तुमो किहां वसो रे, कहे ते कुशस्थले वास रे ॥ वैदेशिकने शुं पूछवुं रे,
जिहां घट तिहां घरवास रे ॥ महो० ॥ ३३ ॥ पूछे कापमी तुमने श्रछे रे, सुखशाता कल्याण रे ॥ ते कहे
तुम पद दरिसणे रे, कोइक पुण्य प्रमाण रे ॥ महो० ॥ ३४ ॥ कन्या जाग्यथी श्रावीया रे, तुरत करो ए
काम रे ॥ ते कहे वंछित थायशे रे, ज्ञानविमल गुरु नाम रे ॥ महो० ॥ ३५ ॥ सर्व गाथा ॥ १५० ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे कापसी राजा प्रत्ये, देखाको कनी तेह ॥ गुरवचणे आणी तिहां, ते कन्या गुणगेह ॥ १ ॥ देखी हा हा उचारे, रतने आयी ग्योम ॥ माये रत्नदोषी अछे, विधि ए कविनी जोम ॥ २ ॥ यतः ॥ शशिनि खलु कलंकः, कंटकं पद्मनाले, जलधिजलमपेयं, पंडिते निर्धनत्वं ॥ दयितजनवियोगो, दुर्भगत्वं स्वरूपे, धनपति कृपणत्वं रत्नदोषी विधाता ॥ १ ॥

भावार्थः—चंद्रमामां कलंक, पद्मना नालमां कांटा, समुद्रनुं जल अपेय, पंडितने निर्धनपणुं, वाहाला जननो वियोग, स्वरूपने विषे दौर्भाग्य, धनवानने विषे कृपणपणुं एटलां वानां करयां, माटे विधाता रत्न जेवा पदार्थमां पण एकेक दोष उत्पन्न करनार छे.

॥ दोहा ॥ पावन पृथ्वी तल करयुं, जलना करी छंटकाव ॥ दश दिशि पूजा बलि दीये, जपीया मंत्र प्रभाव ॥ ३ ॥ ओँ ह्रीँ ह्रीँ मुंच फुट्, स्वाहा मंत्र विशेष ॥ शक्ति नवानी शांबरी, कीधा बहु उल्लेख ॥४॥ जीव अमारी प्रमुख बहु, दीन दुःखी उद्धार ॥ विधि सघलो तिहां दाखिये, मलिया बहु परिवार ॥ ५ ॥ यव-निका विच अंतरे, मंधावी ते मांहे ॥ कन्याने आणी तयी, सहुने हर्ष उच्छाहे ॥ ६ ॥ केवलज्ञानी देवना, थाप्या मांडा पट्ट ॥ धूप दीप उखखेवणा, गुणणाना बहु थट्ट ॥ ७ ॥ कन्या नयन चोपलेरयी, एत्रनी पाली बंधि ॥ औषधि रस मांहे नाखो, शनैः शनैः कृत संधि ॥८॥ औषधि रस अनुभावथी, नेत्र थयां सुतिपात्र ॥ पद्मनेत्र परे विकसियां, तरणी किरणे प्रभात ॥ ९ ॥ देवपूजा विधि साचवे, दिव्याभरण विशाल ॥ चाल वदन गुण अंग सवि, तरणी परे तेजाल ॥ १० ॥ कन्या कुमरने देखतां, मनुं ए देव कुमार ॥ जन देखीने नवि करे, विधिपूर्वक सुविचार ॥ ११ ॥ कुमर कहे रे जनको, चारु नयनथी देख ॥ सुज्ञ नाम वंचावीयो, श्रीचंद्र नाम इति लेख ॥ १२ ॥ हर्ष थकी स्तवना करे, प्राणनाथ आधार ॥ पहेलां दीधी छे मुजने, तात प्रतिज्ञा सार ॥ १३ ॥ हवे में आज थकी वस्या, जाण्यो में आचार ॥ जाति कुलादिक सवि लह्युं, सुज्ञने अनुसार ॥ १४ ॥ कन्या धन्यपणुं भजे, मनमां थइ संतुष्ट ॥ हवे कुमर केम संचरे, सुणजो ते सवि शिष्ट ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ १६५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ काया कामनी वे लाल ॥ ए देशी ॥

॥ हवे ते तिहां थकी वे लाल, वेश जव्य परिहरी ॥ धातु रंगित्त वे लाल, वस्त्र अंगीकरी ॥ त्रूटक ॥ अंगीकरी ते नवि पहेरी, जस्म धूसर केश ए ॥ नृप पासे वही आव्यो, कहे कहो तुम आदेश ए ॥ १ ॥ कन्या आवी वे लाल, पालक तेहवे ॥ नामे सुलोचना वे लाल, सत्य यइ जेहवे ॥ त्रू० ॥ हवे राजा निज उछंगे, देखी अचरिज सहु जणे ॥ जयजयारव करे उत्सव, सुत जनम परे ते घणे ॥ २ ॥ कन्या मेली वे लाल, मध्य अंतःपुरे ॥ थुथुकारे वे लाल, लुंछणमां करे ॥ त्रू० ॥ धरे करतले अमृतनी परे, वाहाली लागे अति घणुं ॥ क्षण एक नजरथी दूर न करे, वात ते केती जणुं ॥ ३ ॥ हवे ते कापमी वे लाल, नृपे घरे आणीयो ॥ रूपवती काजे वे लाल, सुजट बहु ताणीयो ॥ त्रू० ॥ जाणीये केम हवे मंत्री साथे, करे राय विचार ए ॥ दीजीये केम एह कन्या, लही कुल कुल आचार ए ॥ ४ ॥ नृप आदेशे वे लाल, मंत्री गयो पूछवा ॥ कुलवंशादि वे लाल, नाम सवि सूचवा ॥त्रू०॥ हवे केम कुल जाति कहेवां, तेह हसीने कहे कापमी ॥ पाणी पी घर पूछीये एम, करे लोक जे वातमी ॥५॥ ए उखाणो वे लाल,साचो दाखव्यो॥शिर मुंमीने वे लाल, वार कुण जाखव्यो ॥ त्रू० ॥ दाखव्यो जव तुमो परह वजतां, जेह साजी ए करे ॥ तेहने अर्ध राज कन्या, दीउं एहवो वर वरे ॥ ॥६॥ गूंथक फूटे वे लाल, वैद्य वैरी होवे ॥ हवे गुण पूछे वे लाल, जाति कुलने जुवे ॥ त्रू० ॥ जूवो तो ते सुखे जूवो, महारी हा जती नथी ॥ पण कहीने जे पलट जावे, तेहथी वद जाति को नथी ॥ ७ ॥ तोही सुणजो वे लाल, वातनो आमलो ॥ नयर कुशस्थले वे लाल, लक्ष्मीपति गुणनिलो ॥ त्रू० ॥ अति जलो शेठ ने तेहनो सुत, व्यसनीयो ने निज मति ॥ घर थकी ललमी लेइ छानी, दीयुं जिम तिम हठ हुंति ॥ ८ ॥ जनके वाख्यो वे लाल, परिकरे पण कह्युं ॥ में नवि मान्युं वे लाल, जूतपटे जल वह्युं ॥ त्रू० ॥ कहे न चाले एम जाणी, घर थकी हुं काढियो ॥ व्यसनथी जीव शुं न पामे, दुःख जेम अनादियो ॥ ए ॥ महियले जमतां वे लाल, एक सिद्धज मल्यो ॥ सेवा कीधी वे लाल, व्यसन अपयश टल्यो ॥ त्रू० ॥ फल्यो ते जन मजने वह

जिहां तिहां ॥ नहु निज केरो ये लाल, जातिमदनो जिहां ॥ सू० ॥ तिहां वनमुं कुसुम लेइ, शिर धरे नहुये जना ॥ अंगथी उपनो मल नंखीजे, ए दृष्टांत ते शुभ मना ॥ ११ ॥ ते नरने मूकी ये लाल, हुं इहां आवीयो ॥ तुं व्यसनीयो ये लाल, धन उपर मन लावीयो ॥ सू० ॥ जाणियो में इम व्यसन न छोडे, धन विना तेणे पडधो छ्यो ॥ ए कार्य कीधुं जेह पूठमुं, कहियो एम सुत मरलघो ॥ १२ ॥ राजा निगुणी ये लाल, कहे किशुं कीजशुं ॥ व्यसनी नरने ये लाल, कनी केम दीजशुं ॥ सू० ॥ लीजशुं तो पण शुभ न दीसे, वचन बोल्युं नवि रहे ॥ वात पहवी निज अंतःपुर, मांहे ते मपिने कहे ॥ १३ ॥ पुत्री जाणे ये लाल, तात न पहलुं ॥ चरित्र न होये ये लाल, लक्षण जेहवुं ॥ सू० ॥ तेहवी चतुर वचन रचना, जेम मुक्तादिक लख्युं ॥ श्रीचंद्र नामे एह सुतवर, जनक आगे एम कह्युं ॥ १४ ॥ हरख्यो राजा ये लाल, गणक तेडावीया ॥ आवे लम ये लाल, मंत्री नवि आवियां ॥ सू० ॥ जावियां कुमरने तेडवाने, तव तिहां देखे नहीं ॥ गांधः अंतःपुर पुरीमां, किहांये तेह गयो वही ॥ १५ ॥ पहवुं निसुणी ये लाल, कनी मूर्छा लहे ॥ जेम वनवल्ली ये लाल, हिमजलथी दहे ॥ सू० ॥ वहे आंसु नयण रोये, रोवरावे वली अन्यने ॥ करे विलाप बहुला, वियोगे नर धन्यने ॥ १६ ॥ तेणे दिन कुणही ये लाल, न जम्युं नयरमां ॥ मंत्री हुआ ये लाल, मूढमति हृदयमां ॥ सू० ॥ वहे राजा नगर लोकने, कोइ कुशस्थल पुर थकी ॥ आवीयो जाणो तेह पूछो, खबर लहीये तेह थकी ॥ १७ ॥ तेहने पूछ्या ये लाल, श्रीचंद्र ते घणा ॥ कुशस्थलमां ये लाल, नहीं कांइ छे मणा ॥ सू० ॥ घणा तेहमां एक लाखे, लक्ष्मीदत्त सुत जेह छे ॥ ते जामाता अने मसारा, शेठ धननो मन रुचे ॥ १८ ॥ सुत्रा तेहनी ये लाल, देखी ओलख्यो ॥ धन शेठ पुत्री ये लाल, धनवतीये लख्यो ॥ सू० ॥ लख्या गुणबुद्धि वही तेहिज, सुणी राजा हरखीयो ॥ पुत्रीने कहे तेह ताहरो, सुगुण वर संतोषीयो ॥ १९ ॥ इम कहे राजा ये लाल, मंत्री महे-लशुं ॥ तेहने तेडण ये लाल, आवशे महेजशुं ॥ सू० ॥ महल वात ए एम कही ते, सहु गया निज थानके ॥ सुलोचना पण हर्ष पामी, काल एम गयो पलकमें ॥ २० ॥ हवे वसु चिंता ये लाल, मिश करी चालीयो ॥ कुमर तिहांथी ये लाल, देश निज आवीयो ॥ सू० ॥ जालीयो बीजो देश तिहां किणे, वदुक थइ देखे फिरे ॥ अनुक्रमे एक वन मांहे महोटुं, सजल निर्मल तिहां सरे ॥ २१ ॥ कमले मलीयुं ये लाल, पंखी गण संयुतं ॥ क्रीडा जलनी ये लाल, पाले जइ आगितं ॥ सू० ॥ तुरत आगे जोय जेते, एक उद्यान ते दीठुं ॥ तेहमांहे

अछे आश्रम, सकल अचरिज मीठकुं ॥ २२ ॥ जोइ एक ठाम वे लाल, तुरंग वृषने जलुं ॥ किहां नर नारी वे लाल, विविध वेशे धत्युं ॥ त्रू० ॥ धत्युं चित्तमां कुमरे एहवुं, नहीं ए योगी तापसा ॥ ए विकल्पे शुं कत्थाथी, जोउं जइने त्रे किश्या ॥ २३ ॥ जोवे जेहवे वे लाल, तापस कुमर छे ॥ वलकल पहेर्यां वे लाल, चंद्रांक शिरे रुचे ॥ त्रू० ॥ मंच हिंमोले खाट रमतो, कुमर एक दे धूमणी ॥ वेष नरनो अछे कुमरी, चिंतवे कुंडलपुर धणी ॥ २४ ॥ पासे देखे वे लाल, तापस वालिका ॥ वटुकने देखी वे लाल, कहे सुकुमालिका ॥ त्रू० ॥ मालिका कुसुमनी देइ बोले, वटुक वेसो तरु तले ॥ सुखे गायाये वीसमो ए, सुकृत योग पुण्ये मले ॥ २५ ॥ रायण हेठे वे लाल, वेठो वटुक ते ॥ जल फल ढोवे वे लाल, मधुर कटुक न ते ॥ त्रू० ॥ मले वंधूर प्रीति पूछे, कयण थानक कोण तुमो ॥ होंश सांजलवानी सखीयो, हुं विदेशी पण अमो ॥ २६ ॥ एहवे आवी वे लाल, अपरा वालिका ॥ गाती मधुरुं वे लाल, देइ कर मालिका ॥ त्रू० ॥ कालिका नहीं नजर मांहि, हियेे हरप प्रणालिका ॥ कहे गाथा धरी उछाहा, मली सघली आलिका ॥ २७ ॥ यतः ॥ चंदकला रायसुया, सा सयकलाए जायणं जयइ ॥ सिरिचंदोवरो जाए, सयमेव परिक्खिऊण कथो ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ सांजली एहवुं वे लाल, चित्तमां चिंतवे ॥ ए केम जाणे वे लाल, वात सघली कले ॥ त्रू० ॥ एहवे आवी एक वृद्धा, वेश विधवा सीत पटा ॥ नर वेपने स्त्री वेप आप्यो, कनीने कही लटपटा ॥ २८ ॥ वृद्धा वोले वे लाल, वटुक देखी तिहां ॥ कहो कोण तुमे छो वे लाल, आव्या क्यांथी इहां ॥ त्रू० ॥ कहे वटुओ कुशस्थलथी, आवीयो एम सांजली ॥ हर्ष कलरव करे तव तिहां, सखी सवि टोले मली ॥ २९ ॥ जलुं जलुं जाखे वे लाल, वटुओ आवीयो ॥ वात सुणावे वे लाल, खवर कांइ लावीयो ॥ त्रू० ॥ ते जावीयो कोइ चंद्रकलानो, वर थयो के नवि थयो ॥ ते कहे लक्ष्मीदत्त अंगज, वर वत्था महु वहु थयो ॥ ३० ॥ सुणी एम वाणी वे लाल, कहे सघली सखी ॥ साची वाणी वे लाल, होये सदा सुखी ॥ त्रू० ॥ सुख लहे हवे वटुक पूछे, मात कहो ए कुण जना ॥ केम जाणो रहो वनमां, एह अचरज मुज घना ॥ ३१ ॥ मन मेलीने वे लाल, कीजे वातकी ॥ हुं परदेशी वे लाल, पंथी कापकी ॥ त्रू० ॥ लांपकी वात तो मुज न गमे, कहुं तो रहुं चापकी ॥ कहे वृद्धा सुण रे वटुआ, मने मत जाणे हुं वापडी ॥ ३२ ॥ नयर वसंते वे लाल, वीरसेन नरपति ॥ तेहनी राणी वे लाल, पहेली वीरमती ॥त्रू०॥ छती वीजी चीरमजा तिहां, पहेली ते हुं जाणजो ॥ मंगु नृपनी अछुं पुत्री, चित्तमांहे

आणजो ॥ ३३ ॥ सुत पिताने बे लाल, दोय पुत्री थशी ॥ जयश्री पहेली बे लाल, विजयवती पाछली ॥ ध्रू० ॥ तली जयश्री वहिन माहरी, प्रतापसिंह नृपने परे ॥ जयादिक सग चार अंगज, अने राजप्रिया शिरे ॥ ३४ ॥ महारी अनिषा बे लाल, विजयवती कहे ॥ महामती नामे बे लाल, मंत्रीपद सुत वहे ॥ ध्रू० ॥ रहे ए पण माहरो जे, पीतरीयो ए अम तणो ॥ स्थिति कही में मूलथी ए, सुण ज्ञानविमल भविजन भणी ॥ ३५ ॥ सर्व गाथा ॥ २०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जेम थयुं इहां कणे आवयुं, ते सुणो वडुक प्रधान ॥ वीरधवलने सुत थयो, नरधर्मानिध नाम ॥ १ ॥ शूरवीर अति साहसी, शास्त्र शस्त्रनो जाण ॥ काल केते सुता थइ, चंद्रलेखा गुण खाण ॥ २ ॥ ते ए नर पेमे रहे, सघो एहनो परिवार ॥ तदनंतर माहरे थयो, वीरधर्म कुमार ॥ ३ ॥ सांप्रति पांच वरिसो थयो, अने एह वनमांह ॥ एक दिन राजाने थयो, कालज्वर दिये दाह ॥ ४ ॥ तव वीरधर्म कुमारने, सचिव महामती तेम ॥ देजो राज्य सुत अनंतरे, पण नवि करजो जेम ॥ ५ ॥ एम कही राजा सुर गयो, नरधर्म थलियो सुत ॥ राज्य लीये ते आप वसे, नीमरीयां कर्म विचित्र ॥ ६ ॥ वाटे एक पुरे आवतो, मलीयो निमित्तिक एक ॥ मंत्री महामती पूछीयो, करी बहु विनय विवेक ॥ ७ ॥ ते नैमित्तिक तेमीयो, में तस करी प्रणाम ॥ सुत तस उत्संगे दीयो, कह्यो जे आगल स्याम ॥ ८ ॥ कन्यानो वर कोण होशे, राज्य लहेशुं केम ॥ दाण जोइने ते कहे, जे शुभ शुन गुण क्षेम ॥ ९ ॥ महोटो बलवंत एहनो, चंद्रकलापति जाण ॥ प्रतापसिंह नृपनंदनो, पुत्री वर गुण खाण ॥ १० ॥ वली जोइने फरी कहे, जाज्यो मंदिर वनमांहि ॥ तिहां राजा दिन पूरा जे, रमो राग उमांहि ॥ ११ ॥ जे नर छत्र धरगशे, रायण वृक्ष अपार ॥ लिखित श्लोक अमने देइ, गणक गयो तेणीवार ॥ १२ ॥ वित्त अमाके हरखीयुं, कीधो बहु सत्कार ॥ तिहांथी इहां वन आवीया, लेइ साथे परिवार ॥ १३ ॥ इहां आवीने मोकल्या, दोय नर योगीवेश ॥ तिहां जइ तेणे आवी कह्युं, चरित्र सवे अतिशेष ॥ १४ ॥ उभय मायव विहुं जणे, चंद्रकला विवाह ॥ पण तेणे शोकयुत दाखीयो, नृप नही कांय ॥ १५ ॥ ते नवी ते मलीयो नहीं, करीये काल विलंब ॥ नरवेषे स्त्री वेश पण, विविध विनोद अवलंब ॥ १६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

थाहरा मेडा उपरे मेह जरुखे वीजली हो लाल ॥ ज० ॥ ए देशी ॥

॥ क्रीडा विविध प्रकार सखीजनशुं करे हो लाल ॥ स० ॥ कुसुम तणा अवतंस सखी जनने नरे हो लाल
॥ स० ॥ गाये वाये नृत्य करे मनमोदशुं हो लाल ॥ क० ॥ योग मल्यो नहीं तेह हवे केम वेदशुं हो लाल ॥
ह० ॥ १ ॥ इम सवि निसुणी वात कुमर जय उठीयो हो लाल ॥ कु० ॥ तेहवे रायण दूध धार तव वूठीयो
हो लाल ॥ धा० ॥ हरप तणो कलखाट थयो तिहां सुखकरु हो लाल ॥ थ० ॥ चंद्रलेखाये पाम्यो कंत
मनोहरु हो लाल ॥ कं० ॥ २ ॥ लज्जाये नतकाय भाय वयणे तिहां हो लाल ॥ मा० ॥ वरमाला ठवे कंठ
रायण तरु ठे जिहां हो लाल ॥ रा० ॥ फल दल अतुल डुकूल मणी विप धारता हो लाल ॥ म० ॥ प्रमुख
दीयां बहु दान मान मन धारतां हो लाल ॥ मा० ॥ ३ ॥ वीरमती सुत आणी उछंगे संठव्यो हो लाल ॥
उ० ॥ वीरवर्म ए वात एता दिन में गोपव्यो हो लाल ॥ ए० ॥ हवे जेहवो तुमे स्वामी करेशो एहने हो
लाल ॥ क० ॥ आश्रित गुण वश होय लघु गुरु तेहने हो लाल ॥ ल० ॥ ४ ॥ यतः ॥ आश्रयवशेन पुंसां,
गिरिमा लघिमा च जायतेऽवश्यं वंध्ये वंध्यसमानः, करिणो वत दर्प्पणे लघवः ॥ १ ॥

भावार्थः—आश्रयना वशे करी पुरुषने लघुपणुं मोहोटापणुं प्राप्त थाय छे. केनी पेठे तो के हस्तीयो विंध्याचल पर्वतमां
ज्यारे रह्या होय त्यारे विंध्या पर्वत समान होय छे, पण दर्पणमां ते हस्तीने जोइये तेवारे तेज हस्ती लघु देखाय छे.

॥ पूर्व ढाल ॥ गुणसंगे जे कुसुम शिरे ते धारीये हो लाल ॥ शि० ॥ इशे राख्यो इंदु ते कलंक निवारीये
हो लाल ॥ ते० ॥ एम सासुनां वयण सुणी श्रीचंद नणे हो लाल ॥ सु० ॥ थाशे मंगल लील अधृति नवि
मन गणे हो लाल ॥ ए० ॥ ५ ॥ सोप्युं सचिवने ताम नलामण सवि करी हो लाल ॥ न० ॥ कहे कुंमलपुरे
जाजो जिहां ठे चंद्रपुरी हो लाल ॥ जि० ॥ शील नलामण लेख लख्या ते मंत्रीने हो लाल ॥ ल० ॥ हुं
जाउं बुं विदेश कार्य निमंत्रीने हो लाल ॥ का० ॥ ६ ॥ केताक दिन वनमांहे रह्यो परिवार ते हो लाल ॥
रह्यो० ॥ कुंडलपुर उद्देशी चल्ले असवार ते हो लाल ॥ च० ॥ वचमां आव्युं महेंद्र त्रिलोचना राजीयो
हो लाल ॥ त्रि० ॥ सुलोचनानो बाप बहु गज बाजीयो हो लाल ॥ ब० ॥ ७ ॥ तेड्या करी

॥ क० ॥ दरश्यो नृप परिवार संघंप मंजारनां हो लाल ॥ मं० ॥ पहने पंथी कोड कुमारय-
सखी आशीषो हो लाल ॥ कु० ॥ कुंभरपुरनी मांहे थइ ने नाचियो हो लाल ॥ धं० ॥ ७ ॥ गाथा दीपक
पाठ नगी गुण गावे हो लाल ॥ न० ॥ गुणी श्रीपंडचरित्र सहुनां चित्त ठरे हो लाल ॥ म० ॥ पंड-
रंगना ने गर्जापना वेडु अंग मधे हो लाल ॥ वे० ॥ प्रीते प्रीतिनी संग गाकर नेम पथ नवे हो लाल ॥ मा०
॥ ८ ॥ यता महाराज विलीप, गर्वारे परियो निरखगंजरीप ॥ गवनियगर दरगो, मीरिगो नयठ निरि-
नंदो ॥१॥ सिंदूरे विराजरे, गुलाल नगाड गुपनर नेहा ॥ पठमली चंदकलाप, परनिश्यो जयठ गिरिचंदो
॥ २ ॥ नचे कुमारनामी, पृथ्वी न पयारणिंद कुवरपंदो ॥ गिरि गुरियवड नगो, गिरिचंदो नयठ नुयणपले
॥ ३ ॥ पूर्व लाल ॥ श्रीमतीने आमक कर्यो तिहां रागना हो लाल ॥ क० ॥ पण न रखा तिहां नेह कुंभरपुर
देखवा हो लाल ॥ कुं० ॥ गुणीयो नवि परिवार कुंभरपुरमां रहे हो लाल ॥ कुं० ॥ दवे श्रीपंडकुमार एकाकी
पनं पडे हो लाल ॥ प० ॥ १० ॥ कौतुक नयनय नांन निलांन विलोकतां हो लाल ॥ नि० ॥ आव्या एक पुर
बाहेर पदाराम देखतां हो लाल ॥ प० ॥ देखी अपरिज तेह पूछयो एक यालीयो हो लाल ॥ पू० ॥ कहो
रयो ए पूर्णांत होवे जो जालीयो हो लाल ॥ हो० ॥ ११ ॥ गुण पहुच्या देइ कान ए कांपिलपुर अने हो
लाल ॥ प० ॥ जितशत्रु नृप पटराणी रति मन रुपे हो लाल ॥ राणी० ॥ कनकरथ तस पुत्र रमे ते रंगमें
हो लाल ॥ रंगे० ॥ मित्र नाणे परिवार करी बहु संगमें हो लाल ॥ क० ॥ १२ ॥ एक दिन गायन वीणारथ
इहां यागो पण्या हो लाल ॥ उद्यो० ॥ राधावेध प्रबंध गुणी नवि जन हरया हो लाल ॥ गु० ॥ नायक
गो श्रीपंडकरीने गाइयो हो लाल ॥ क० ॥ दान मान धन खान बहुत तिहां पाइयो हो लाल ॥ प० ॥१३॥
पण गायन कहे एम श्रीपंडने कर दीधो हो लाल ॥ श्री० ॥ ते नर्णी मज्ञिपुं कांइ गुणी अपरिज हुवो हो
लाल ॥ गु० ॥ तेह मधंयमां पान गुणी ने चित्त धरे हो लाल ॥ गु० ॥ राधावेध विधान निसरपुरे नेम करे
हो लाल ॥ नि० ॥ १४ ॥ आयो देवागुं एह आराम ए यरना हो लाल ॥ आ० ॥ मलिया सखी कुमार
करे श्रम सारनां हो लाल ॥ क० ॥ एनो मयोटो चेत साथे साथा यनी हो लाल ॥ मा० ॥ नाजन तेहनुं एह
कलीयेसे पनी हो लाल ॥ क० ॥ १५ ॥ लिपिकारना एक करी नर पुत्रिका हो लाल ॥ क० ॥ ए पनुरने प
वाण गाये करी नंत्रिका हो लाल ॥ मा० ॥ एके कीधो येन नवो श्रीपंडनो हो लाल ॥

॥ सारथ मित्र ते एक कर्यो तिहां कारिमा हो लाल
॥ क० ॥ कारिमी कन्या एक करे वरमालिका हो लाल ॥ क० ॥ लागे अलागे वाए कोलाहल तिहां करे हो लाल ॥ घो० ॥ लेइ माला गले कंठ श्रीचंद ते संचरे हो लाल ॥ श्री० ॥ १७ ॥ जाये जाये एह न कोइ कर धरे हो लाल ॥ न० ॥ एणी परे राधावेधनी अनुकृति सवि करे हो लाल के ॥ अ० ॥ एहवे पिंगल नट्ट जाणे दोय गाथिका हो लाल ॥ ज० ॥ निगुणी हर्ष्या सर्व गुणी निज साधिका हो लाल ॥ सु० ॥ १८ ॥ यतः ॥ लोइय गिष्कं डुविहं, देवगयं गुरुगयं मुणेयवं ॥ लोउत्तरं च डुविहं, देवगयं गुरुगयंतं च ॥ १ ॥ इह चउहा गिष्कंतं, गुचय वयणाउवज्जियं जेण ॥ समत्त तत्तदिठी, सुरो सो जयउ सिरिचंदो ॥ २ ॥ इत्यादि ॥ पूर्व ढाल ॥ ए सवि नाव कनकरथ कुमर करे तिहां हो लाल ॥ कु० ॥ ए सवि चरित्र देखाड्युं वणिके धरी करे हो लाल ॥ व० ॥ कुमर समीपे कनकवती नृप नंदनी हो लाल ॥ वती० ॥ हर्ष धरी कहे एम महा आनंदिनी हो लाल ॥ महा० ॥ १९ ॥ अंब धावीने नाखे ए चेष्टा कारिमी हो लाल ॥ ए० ॥ देखी उपजे रीजतो साची मन रमी हो लाल ॥ तो० ॥ ते जो मले साक्षात् ते तेहने परणीये हो लाल ॥ तो० ॥ निश्चय कीधो एम प्रबंध ए वरणीये हो लाल ॥ प्र० ॥ २० ॥ तेहनी सखी ठे त्रण मंत्रीनी दीकरी हो लाल ॥ मं० ॥ प्रेमवती इति नाम सारथवाह दीकरी हो लाल ॥ सा० ॥ धनश्री नामे शेठ सुता त्रीजी अठे हो लाल ॥ सु० ॥ हेमश्री इति नाम त्रणेने मन रुचे हो लाल ॥ त्रणे० ॥ २१ ॥ तेणीये पण वर्यो एह वरंवर सहु वदे हो लाल ॥ वरं० ॥ धावी माये सवि तेह जणाव्युं नृप हदे हो लाल ॥ ज० ॥ नृपते मोकल्या मंत्री कुशस्थल तेरुवा हो लाल ॥ कु० ॥ विरह तणां सवि दुःख व्यथाने फेरुवा हो लाल ॥ व्य० ॥ २२ ॥ चिंते मनमां कुमार रखे कोइ ओलखे हो लाल ॥ रखे० ॥ तो परवशथी कोइ न लहीजे मन सुखे हो लाल ॥ ल० ॥ एम जाणीने तेह तिहांथी नीसर्यो हो लाल ॥ ति० ॥ जोइ ते पुर सर्व वाकी वनमां फर्यो हो लाल ॥ वा० ॥ २३ ॥ आगल जातां नूमि उल्लंघी तेणे घणी हो लाल ॥ उ० ॥ नगरी आवी एक शोजा जस चोगुणी हो लाल ॥ सो० ॥ बाहिर यक्षनुं देवल देखी पेसे तिहां हो लाल ॥ दे० ॥ तिहां दुःखीयो कर गले देइ नर बेठो तिहां हो लाल के ॥ न० ॥ २४ ॥ चिंतातुर ते देखी कहे तव तेहने हो लाल ॥ क० ॥ कोण तुं अरति करे कांइ पूछे ते तेहने लाल ॥ पू० ॥ सुण वैदेशिक पंथी माहरी जे वारता हो लाल ॥ मा० ॥ कहेतां आवे

लाज पण विवेक न आरता हो लाल ॥ वि० ॥ २५ ॥ कांतिपुरनो नृप नृसिंह नामे अने हो लाल ॥ नृ० ॥ प्रियंगुमंजरी नाम सुता गुणथी भये हो लाल ॥ गु० ॥ हवे माहरे जे दुःख अने ते सांभलो हो लाल ॥ अ० ॥ नेशति कूणे एक अने हेमपुर नलो हो लाल ॥ अ० ॥ २६ ॥ मकरध्वज ने राय अपायने दाखतो हो लाल ॥ अ० ॥ मदनपाल तस पुत्र कलागुण पालतो हो लाल ॥ क० ॥ घातायने रह्यो तेह युवान कौतुक जुवो हो लाल ॥ यु० ॥ एहवे दीठी एक योगिणी जाति तिसे हो लाल ॥ यो० ॥ २७ ॥ तेमी तेहने नाम पूछे ते वातमी हो लाल ॥ पू० ॥ कहे तुज कुशल कल्याण अने दिन गतमी हो लाल ॥ अ० ॥ तव योगिणी कहे काहला कुशल न पूछीयें हो लाल ॥ कु० ॥ ए संसार असार मांहे जेणे मूं-चीयें हो लाल ॥ मांहे० ॥ २० ॥

अथ योगिणी वाणी ॥ जरा राक्षसी जब शिरे आवे, तब यौवनने नसाडे ॥ काला केश ते होवे पांडुर, इंद्रिय बलने पाडे ॥ १ ॥ जर गुण हो गयो युवण जाणो काल आहेडी केडे ॥ काहला कुशल तुं पूछे जोला, रूप कांतिने फेडे ॥ २ ॥ पलक पलकमें आयु घटावे, तो शी कुशलनी वातां ॥ काम क्रोध मदे पूर्यो जीवडो, बांधे नरकनां खातां ॥ ३ ॥ एक घडी ने पाहुरिया पंच, एक कालो एक धोलो ॥ जीव जगावे तेह घोर्दो-घावे, तो कुशल किहांथी जोला ॥ ४ ॥ कुशल तेहने जेह न जाया, जाया तेह मरंदा ॥ तो शी कुशलनी वात कहीजे, ए दीसे जनवृंदा ॥ ५ ॥ आसन मारे पण आश न मारे, नरम भूमि अंग धारे ॥ कंथा धरे पण विकथा न छंडे, तो शी मुद्रा धारे ॥ ६ ॥ पहेरी कोपिन पण किंपि न परिहरे, मांहे जनसुं माया ॥ मुंडी संसा-रमें आया जाया, कीधा योग न पाया ॥ ७ ॥ चार लाख चुलसी लख जोणी, तिहां रही जमी जमी आया ॥ विषय पाया तिणसुं मन टाले, तो परब्रह्मही पाया ॥ ८ ॥ ते माटे जे जिनधर्म जाणे, कुशलपणुं ते वखाणी ॥ माहारे बाह्य अभ्यंतर कुशलं, जाणुं श्रीजिनवाणी ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ ढाल पूर्वली ॥ कहे योगिनी हुं आवी कांति नयर थकी हो लाल के ॥ कां० ॥ जाउं कुशस्थल नयर कार्य धरी मन थकी हो लाल ॥ का० ॥ देखाडे पट रूप तरुणीना रूपनो हो लाल ॥ त० ॥ देखत रंग कुमार तणुं मन धूंपनुं हो लाल ॥ त० ॥ २९ ॥ पूछे कुमर रूप अने कहो केहनुं हो लाल ॥ अ० ॥ कहे योगिनी नृसिंह राजानी पुत्रीनुं हो लाल ॥ रा० ॥ प्रियंगुमंजरी नाम कनी कांतिपुर रायनी हो लाल ॥ कां० ॥ ए तो अने

क्षयमात्र तस गुणसमुदायनी हो लाल ॥ त० ॥ ३० ॥ श्रीगुणधर पाठक राज तणा मुखथी सुण्या हो लाल ॥ त० ॥ श्रीचंद्र गुणसमुदाय ए तेह पासे जाण्या हो लाल ॥ ए० ॥ श्रीचंद्रने अनुरागिणी कन्या ते थइ हो लाल ॥ क० ॥ ए पट देवा काज जाउं हुं इहां थइ हो लाल ॥ जा० ॥ ३१ ॥ पट लेवाने काज उपाय ते बहु करे हो लाल ॥ उ० ॥ पण नापे पट योगिनी तिहांथी संचरे हो लाल ॥ ति० ॥ ते तो कुशस्थल नयरे पोहोती योगिनी हो लाल के ॥ पो० ॥ पाठल मदननो मार कुमरने पीडनी हो लाल ॥ कु० ॥ ३२ ॥ तव मित्रे मली तात जणाव्यो तेहनो हो लाल ॥ ज० ॥ तस जनके पण कन्या तात माग्यो तेहनो हो लाल ॥ तात० ॥ पण ते नापे आपे वात पण नवि रुचे हो लाल ॥ वा० ॥ जस जवरे न जरे जाउली तो मोदक केम पचे हो लाल के ॥ मो० ॥ ३३ ॥ यदुक्तं ॥ जावागूजरणे जाड्यं, मोदकानां तु का कथा ॥ वचनेऽपि दरिद्रत्वं धनाशा तत्र कीदृशी ॥ १ ॥

भावार्थः—जावली पचवामां जाड्य छे त्यारे लाडु पचवानी तो शीज वार्ता? सारां वचन बोलवामांज दरिद्रत्व छे तो त्यां धननी आशा तो क्यांथीज होय?

॥ पूर्व ढाल ॥ तात कहे सुण पुत्र अधृति चित्त मत करे हो लाल ॥ अ० ॥ नृपपुत्री कोइ अधिक एहथी रूपे शिरे हो लाल ॥ ए० ॥ तोहे पण रति न लहे थलगत मीन ज्युं हो लाल के ॥ थ० ॥ देह होये अति हीण प्रमेही घृत पान ज्युं हो लाल ॥ प्रमे० ॥ ३४ ॥ मदनपाल हुं तेह पिताथी अण कहे हो लाल ॥ पि०॥ छानो रह्यो तुं आय रूपने परवशे हो लाल ॥ रू० ॥ केतकी गंध आकृष्ट अलि जिण परे अटे हो लाल ॥ अ० ॥ आगल भावि वात ज्ञानविमल मति तुम वटे हो लाल ॥ वि० ॥ ३५ ॥ सर्व ॥ २६४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इहां आवी छानो रह्यो, आरामिकने धाम ॥ मालिणीने में एम कह्युं, कहे संदेशो ताम ॥ १ ॥ हेम-पुरी पति पुत्र छे, मदनपाल तस नाम ॥ तुम पट रूपथी मोहियो, ते आव्यो मुज धाम ॥ २ ॥ एक वार माहारी कला, रूप चतुरता सार ॥ देखी पत्रे जेम मन रुचे, तेम करजे इष्ट विचार ॥ ३ ॥ ते आगल गुण वर्णना, पणी परे करजे पेन ॥ ते होये अनुरागिणी, मुजने जो होये चेन ॥ ४ ॥ एम कही दीये...

मालिणी जइ कहे वात ॥ स्वामिनी एह नर मारिसो, अवर न को माहात् ॥ ५ ॥ एम बहु बहु गुण वर्णना, कीधी ते सुणी सर्व ॥ इमी अमारेक एम कहे, जोइये ए माहापण गर्व ॥ ६ ॥ एम कही पुष्पोच्चय थकी, खेड रक्त एक फूल ॥ कर्णमूले धरी दृष्टियी, दूरे करुं अमूल ॥ ७ ॥ वली शत दल रंगी कुंकुमे, कर्णदृष्टि धरी स्याम ॥ हृदय उपरें थापीयुं, एह समस्या याम ॥ ८ ॥ कन्या मालिणीने कहे, ए प्रत्युत्तर इयाव ॥ पत्री वली माहापण तणा, समजाशे बहु जाव ॥ ए ॥ ते आवी आरामिका, संजलावी सवि वात ॥ उत्तर तो रह्यो वेगलो, न समजी वातनी धात ॥ १० ॥ चतुरांनी वातां जली, नही परदेशनी वात ॥ श्रो वातांथी सुख उपजे, श्रो वातथी घर जात ॥ ११ ॥ महोकम मदने मारीयो, करयुं जाजरुं अंग ॥ पुरुष मात्र लिंगे रह्यो, वहे श्रीवनुं अंग ॥ १२ ॥ किहां जाउं हवे शुं करुं, एम चिंतातुर मन्न ॥ यक्षालये आवी रहुं, जावे उदक न अन्न ॥ १३ ॥ नृप पुत्री पण इहां कने, आवे ते प्रति दिन्न ॥ नजरे पण दीठी नथी, देव तणे अप्रसन्न ॥१४॥ पोलिहारिणी एहनी, काढे नरने दूर ॥ जो कोइ धीठो थइ रहे, तो मारि पडे महमूर ॥१५॥ सर्व ॥२७ए॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ पणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ मदनपाल कहे मालणी रे, दाखी दुःखनी वात ॥ मनरा मित्ता ॥ कोइ दुःख जंजन नवि मले रे, पर उपकारी जात ॥ मन० ॥ दुःख सहीये पण नवि कहिये रे, जेह न दुःखलो जाण ॥ म० ॥ तुमे परदेशी सुजाण, दीसो छो मोज महिराण ॥म०॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आरीसा परे संक्रमे रे, परदुःख हृदये जेह ॥म०॥ विरला परदुःख देखीने रे, ते सज्जन गुणगेह ॥ म० ॥ २ ॥ श्रीचंद्रने मन उपनी रे, करुणा अतिहि रसाल ॥म०॥ अहो दुःखीओ ए स्त्री तणो रे, स्त्री जग महोटुं जाल ॥३॥ गुणधर गुरु इहां आवीया रे, पूर्वे ए देश मझार ॥म०॥ सेवक तेणे करी जाणीयें रे, महोटो गुरु उपकार ॥ म० ॥ ४ ॥ अहो कुमरनी दक्षता रे, कीधी समस्या एह ॥ म० ॥ रक्त कमल परे माहरो रे, रागी तुं कृत नेह ॥ म० ॥ ५ ॥ पण में काने न सांजल्यो रे, दीठो नजरे नांही ॥ म० ॥ ते जणी रक्त फूल ढांकीयुं रे, हृदय मांहे पण नांही ॥ म० ॥ ६ ॥ शतदल परे नीराग छे रे, ते श्रीचंद्र कुमार ॥ म० ॥ में माहरे गुणे रंगीयो रे, काने धर्यो दृष्टिचार ॥ म० ॥ ७ ॥ तेहिज हृद-

वर्णी मालीनुं रे, अवतार्यो नहीं लाग ॥ म० ॥ कुसुम जाति सवि रूपनी हो रे, पूरो गर्व गम्यो लाग ॥ म० ॥ ८ ॥ पंडित कानी पद्म छे रे, पण न लहे तस्यो ज्याव ॥ म० ॥ जो केम लहुने इस्या रे, थाशे केम गुण जाव ॥ म० ॥ ९ ॥ पण कुमारी तेह छे रे, जिने पर उपकार ॥ म० ॥ बुद्धि पण तेहनी वडे रे, तेम गुणीना होवे भरतार ॥ म० ॥ १० ॥ श्रीचंद्र कहे इसे मदनने रे, तुं करीश कइ उपाय ॥ म० ॥ दृष्टि संयोग नवि थयो रे, गुण केहने कहो ते थाय ॥ म० ॥ ११ ॥ मदन कहे नित्य सुख वही रे, मांहरे कारज सिद्धि ॥ म० ॥ तस्यो निश्चय मुज मने रे, ते जाणी कोइ करो बुद्धि ॥ म० ॥ १२ ॥ एम बेहु मंत्रणुं करे रे, तेहवे वाग्यो ढोल ॥ म० ॥ मदन कहे ते आवती रे, सखी परिवारी अनंग ॥ म० ॥ १३ ॥ आगळथी उद्यानमां रे, गया ते बहु लोक ॥ म० ॥ कुमरी कामाजपे पेसती रे, दीठी सखीना थोक ॥ म० ॥ १४ ॥ मारुत वीणा वांसळी रे, श्रीमंडल वाजाय ॥ म० ॥ तेणी झुंगट नरहरे रे, थाजे नाद कंसाल ॥ म० ॥ १५ ॥ गाये वाये प्यार द्विजे रे, लोके करी बहु मान ॥ म० ॥ स्थान मान ध्वनि मूर्छना रे, विविध विविध त्रय मान ॥ म० ॥ १६ ॥ एहवामां एक वालिनी रे, मूकी धूगर रंग ॥ म० ॥ मणिनाथ केता दिपन्ता रे, तेजी धन्य अनंग ॥ म० ॥ १७ ॥ हाहाकार रोदन करे रे, सखी कहे एह स्वरूप ॥ म० ॥ गावुं रोवुं केम मयुं रे, ए तो अद्भुत रूप ॥ म० ॥ १८ ॥ सखी एकने पूछीयो रे, एहनो इसो विचार ॥ म० ॥ सखी कहे मुज तेह्ना नहीं रे, कहेवा ए अधिकार ॥ म० ॥ १९ ॥ एक सखी दाही कहे रे, एक वडे कुं हीर ॥ म० ॥ ए कुमारी मानव्यो रे, कायें अने ए मनीर ॥ म० ॥ २० ॥ एक सखी कहे मानीये रे, ऐसे कटतीरान ॥ म० ॥ धनमारे वामित करो रे, मायना चंदन थान ॥ म० ॥ २१ ॥ स्वामिनी मूर्छा वाळीये रे, तो अम जीवित धन्य ॥ म० ॥ मयं सखी सखी तेहनी रे, वाळी मूर्छा स्वन्न ॥ म० ॥ २२ ॥ प्रजा सखीने पूछीयुं रे, वात तणो इसो मर्म ॥ म० ॥ ते कहे एक सखी आरणी रे, मोकली योगिनी धर्म ॥ म० ॥ २३ ॥ तेह कुमारथत्र पुरे गई रे, श्रीचंद्रनी शुद्धि हेत ॥ म० ॥ स्वामिनी स्वामिनीये मोकली रे, करी योगिनी संकेत ॥ म० ॥ २४ ॥ श्रीचंद्र कुमरने जणावता रे, नित्र गुण गावती वात ॥ म० ॥ ते निहां नइ आवी इहां रे, पण न मळ्यो कुंअर जात ॥ म० ॥ २५ ॥ न मळ्यो ते तो तुं करे रे, एम निहां गुणीनुं चरित ॥ म० ॥ तेह पुत्र जाणी यस्यो रे, जाण्य यशी गुण हृत ॥ म० ॥ २६ ॥ पण ते गानन गुण थयो रे, श्रीयुतजीयो भाव नाव ॥ म० ॥ एम निपुणी दुःखित थइ रे, कारज सिद्धि नहीं

कांय ॥ म०॥ २७ ॥ तेणे ते वात आवी कही रे, तेहथी मूर्च्छा थाय ॥ म० ॥ स्वामिनी दुःख गढुं दुःखी रे, हवे कोइ न सूझे उपाय ॥ म० ॥ २८ ॥ एम कही सखी पुरमां गइ रे, करवा सुगमनी वात ॥ म० ॥ श्रीचंद्र कहे हवे मदनने रे, ए तो जाणी तुज धात ॥ म० ॥ २९ ॥ इण राचे विरचे क्षणे रे, वीजली परे निर्बंध ॥ म० ॥ ते स्त्रीना प्रतिबंधथी रे, होये कर्मनो बंध ॥ म० ॥ ३० ॥ ते जाणी जो मन थिर होये रे, तो ए विकल्पने होम ॥ म० ॥

॥ अथ शीलामणनी जकडी श्रीचंद्र कहे छे ॥ मदनपाला वे, सुंदर शीख सुणीजे ॥ जण जण सेंती वे, यारी प्रीति न कीजे ॥ त्रूटक ॥ कीजे नवि परतरुणी सेंती, केती वार ए प्रीतडीयां ॥ विषफलीनी परे मुहडे मीठी, परिणामे दुःख वेलडीयां ॥ शेलडीयां परे गहिलो जाणे, अंते विरस दुःख देहडीयां ॥ दिवाना परे फरे पुर वने, भीतर बाहिर सेरडीयां ॥ १ ॥ निंद न आवे वे, रसिक न रयणी विहाणे ॥ अन्य न भावे वे, धीरज मनमां नाणे ॥ त्रूटक ॥ नाणे कांइ शंका जाणी रंका, लंकापति परे दुःख पामे ॥ गल शोष संतावे ओर न पावे, जन मांहे अपयश पामे ॥ राज मर्यादा धरे नवि तेहनी, जेहनी मति स्त्रीशुं बांधी ॥ इह भव परभव केरो कोइ, परमारथ न शके साधी ॥ २ ॥ राग देखावे वे, राति कणयर कलीयां ॥ अंतर काली वे, काली चोर के कलीयां ॥ त्रू० ॥ मत्रियांशुं हसे हसीमलती, त्रिसमें छेद देखावतीयां ॥ केहेर हलाहलथी पण अधिकी, जेहनी जाणीजे वतीयां ॥ इंद्र चंद नागिंद जोवाये, निगुणी निरुपम जस वतीयां ॥ हरिहर ब्रह्मा तरुणी पुरंदर, विकल थइ करता नतियां ॥ ३ ॥ विषकी कदली वे, भूमि विना जग मांहि ॥ विषकरी वाघण वे, व्याधि महा निर्नामाहि ॥ त्रू० ॥ निर्नामे कोइ अपर महामद, विष नामांतर निपायुं ॥ कपि विणुं मापिणी पापणी जाणे, जग मन तरुणीशुं लायुं ॥ द्वादशमो ब्रह्मा सुत वेठो, जस मन परतरुणी इहा ॥ गति मति रति नवि होइ हीणी, होये वली दुर्बल देहा ॥ ४ ॥ इम मन जाणी वे, चंचलता निवारी ॥ धृति मति धरीये वे, गुरु शिक्षा चित्त धारी ॥ त्रू० ॥ धारीजे शिक्षा यइश्र दक्षा, लख्या लेख न त्रूटीजे ॥ तुं कुमर कृपाला, मदनपाला सत्त्व थकी नवि त्रूटीजे ॥ ज्ञानविमल मतिशुं चित्त धरजे, शील हमारी अति सारी ॥ जेम इह भव परभवे होये सुखकारी, सहेज थकी सुणो नर नारी ॥ ५ ॥ इति शीखामण जकडी ॥

॥ पूर्व हाथ ॥ गाथार्थ एम करतां ओ कार्यनो रे, काम तणो मनकोड ॥ म० ॥ २१ ॥ तो नाइ राज्य गृहीने रे, शे परे परदेश ॥ म० ॥ एकबुद्धि तुजने दिउं रे, मुं कर सुंदर वेश ॥ म० ॥ २२ ॥ धन उपाय करी मेलीये रे, धननी होये गति काम ॥ म० ॥ अवगुण पण गुण करी गुंथे रे, जगमां मोहन दाम ॥ म० २३ ॥ कुरूप रूप निर्गुण गुणी रे, प्राये चिंतित थाय ॥ म० ॥ लोक तणो व्यवहार ने रे, प्राये एम कहाय ॥ म० ॥ २४ ॥ कपट घणी मति संपजे रे, निसुणी एह वचन ॥ म० ॥ जेम तुजने मेलावडो रे, थाशे तुम मन प्रसन्न ॥ म० ॥ २५ ॥ ज्ञानविमल मतिने यजे रे, होशे ताहारुं काम ॥ म० ॥ हुं पण परिचर्या करुं रे, सेवक परे रही पास ॥ म० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ३२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ द्रव्य मदीने अति घणुं, करी नगरमां वास ॥ तुं कुमर छानो रहे, हुं तुं ताहरी पास ॥ १ ॥ तेणी परे हुं परनीश तिहां, नृप जाणशे एम ॥ श्रीचंद्र कुमर छानो थश्ने, तव उपजशे प्रेम ॥ २ ॥ भाग्य हशे जो ताहरुं, न पचशे कर्मनुं जोर ॥ ते निसुणी हर्षित थयो, जेम चकवाने भोर ॥ ३ ॥ तेणे सघलुं तेमज कर्युं, सात भूमि घर लीध ॥ मदन रह्यो तस अंतरे, कुमरे कारज कीध ॥ ४ ॥ उचित दान तेहवां दीये, मेले सज्जननी गोठ ॥ थात चित्त सवि कुमर ते, दाखे उपजे तूठ ॥ ५ ॥ मंत्री सामंतादिक सवे, यातायात करेव ॥ मुं मौनी योगी परे, रहेजे इहां स्वयमेव ॥ ६ ॥ निज चातुर्य गुणे करी, रंज्युं आखुं शहेर ॥ नृप मंत्री कन्यादिका, करे सवि लहेर महेर ॥ ७ ॥ नृप घणो आग्रह करी, मनावियो विवाह ॥ जाणे श्रीचंद्र आवीया, छाना नगरी मांह ॥ ८ ॥ शणगारी सघली पुरी, लोक तणे मन हर्ष ॥ सामग्री सवि मेलवी, विवाहना उत्कर्ष ॥ ९ ॥ जोशी तेडी पूछीया, लीधुं लगन नजीक ॥ रखे विघ्नने कार्यनी, सिद्धि न होय निर्भीक ॥ १० ॥ हर्ष कोलाहल अति घणो, नगरीमां निशदिन ॥ एहवे वातायन रह्यो, मदन गुणे सुजगीश ॥ ११ ॥ चिंते लायक ताहरे, आज पड्युं निरधार ॥ भाग्ये पण माहरे मल्यो, आवी एह कुमार ॥ १२ ॥ हुं परणीश हवे एहने, प्रियंगुमंजरी नाम ॥ कन्या कर ग्रहणे करी, वधशे महारी माम ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ ३३३ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ छमछटीनी देशी ॥ आज मल्हारा आदीश्वरने श्रणविधि वंदण चाल्या ॥ ए देशी ॥

॥ लगन तणो दिन जेहवे आव्यो, तेहवामां तणी वेला ॥ पाणीहारी जाये जल नरवा, करती मांहोमांहे लीला रे ॥ १ ॥ छमछमी, छमछमी माहरी हेव रे, ए तो मदनपालने महेल रे ॥ छम०॥ ए आंकणी ॥ आवो वेगे वेगे, पाछा फरी घर जइये ॥ कौतुक आज अचंनम होशे, ते जइ यहेला जोइये रे ॥ छम० ॥२॥ राज्यकुमरी देवकुंअरी पूछे, शुं ते कौतुक होशे ॥ शुं शुं जाणे वाली जोली, सुर नर आवी जोशे रे ॥ छम० ॥ ३ ॥ श्रीगुणधर पाठकनी पासे, प्रियंगुमंजरी कन्या ॥ सकल कला लीली छे तेणे, पृथ्वी कोइ नहीं अन्या रे ॥ छम० ॥ ४ ॥ श्री श्रीचंद्रकुमर पण नणीयो, ते पाठकनी पासे ॥ पाठक वयण थकी अनुरागिणी, कुमरी थइ उल्लासे रे ॥ एम० ॥ ५ ॥ पद्मिनी प्रमुख नारी चउनेदा, नायक नरना नेदा ॥ ए जाणे ने ते पण जाणे, पूछशे ताग विनोदा रे ॥ छम० ॥ ६ ॥ स्त्री नरनां वली लक्षण कहेशे, सामुद्रिकने नेदे ॥ गाहा गूढा ने हरियाली, गूढ समस्या नेदे रे ॥ छम० ॥ ७ ॥ पुरुष तणी कला वली बहोंतेर, चोसठ स्त्री कला बोली ॥ मांहोमांहे ते पूछशे, वात करशे दिल खोली रे ॥ छम० ॥ ८ ॥ सरसे सरसी जोम मली छे, एक गुरु पासे नणीयां ॥ धाइ वनोतां एहज सरज्यां, आपणे चोथिल घटियां रे ॥ छम० ॥ ९ ॥ पहेलां गोठी करीने वेगे, फर मेलावो करशे ॥ तेह नणी पहेलां घर जइने, राज्यञुवन जइ धरशे रे ॥ छम० ॥ १० ॥ मदनपाल घर वेगो गोखे, वात सुणी जल आणी ॥ चिंते मनमां ए तो मानुं, केम करी रहेशे पाणी रे ॥छम० ॥ ११ ॥ कमलिणी भ्रमर रहे तिहां लीनो, तो अवरांनुं शुं जाय ॥ पण कमल पराग तणो परिमल ते, लेते मधु सुग्ध थाय रे ॥ छम० ॥ १२ ॥ परणशे ते वंछित लहेशे, पण सुणतां शुं जाय ॥ पहली वाणी मदन तणे मन, पच्च घरावर थाय रे ॥ छम० ॥ १३ ॥ पाणीहारीनी वात जणावी, आवी मित्रनी आगे ॥ मित्र कहे हवे कूपक खणीये, घर प्रदीपन लागे रे ॥ छम० ॥ १४ ॥ कहे मित्र उद्यम बहु कीधो, पण तुज नाग्य न दीसे ॥ एम जाणुं हुं महारी मतिथी, केम नावी शुं होशे रे ॥ छम० ॥ १५ ॥ तोहे पण एक बुद्धि अछे सुण, सुजश्री वय शुं लघु छे ॥ रुपे तो सुज सरिखो नासे, नूषण मणि परे बहु छे रे ॥ मह० ॥ १६ ॥ माहरो मेल कीधे...

हमणां, ताहरो वेश दीये गुजने ॥ माहरे गमे तुं कर जालीने, कोइ न लहेशे तुजने रे ॥ हम० ॥ १७ ॥ याचना भंग करे नहीं उत्तम, ते भणी बुद्धि बतावुं ॥ अर्थी दोष न देखे कांइ, तेणे पण तेम बनाव्युं रे ॥ हम० ॥ १८ ॥ वेष परावर्त्त करी ते सम, दीसे भूषणे भूष्यो ॥ सादे वेषे पण सुंदर दीसे, द्वारपाल कुमरने देख्यो रे ॥ हम० ॥ १९ ॥ सर्व सामग्री सज्ज करीने, धवल मंगल गीत गाते ॥ नाटक नवनव छंदे थाते, वाजित्रना रव वाते रे ॥ हम० ॥ २० ॥ सुवर्णरत्न अवतंस करीने, दीपे कुंमल जोडे ॥ मुक्तालंकृत गजवर चमीयो, छत्र चामरनी जोडे रे ॥ हम० ॥ २१ ॥ बहु उत्सवशुं नगरमांहे थइ, पाम्यो नृपनुं गेह ॥ जेहवे आवे तेहवे वधुउं, बोल्यो एक ससनेह रे ॥ हम० ॥ २२ ॥ तारक नामे भट्टपयंपे, तेहना गुण वाचाल ॥ अहो अहो अमे पूरण भाग्ये, निरख्यो भाग्य रसाल रे ॥ हम० ॥ २३ ॥ गाथा ॥ तइया विवाह समए, धणवइ पमुहाण अठ कन्हाणं ॥ सिरिचंदो सिढि घरे, जो दिठो सो इमो जयउ ॥ १ ॥ चाल ॥ एम गाथा निसुणीने हरख्या, सवि आपे तस दान ॥ नृप लेइ निज अंके कुमरने, आपे अति बहु मान रे ॥ हम० ॥ २४ ॥ राजा आपे सिंहासन बेठा, पामी अति आणंद ॥ सकल लोकने विस्मय पेठो, जुवो कुमर श्रीचंद रे ॥ हम० ॥ २५ ॥ पाद पीठे पुत्रीने थापी, कहे रूप ए निरखो ॥ कुंडल नाम मुद्रा अनुकारे, गोष्ठी करवा सरिखो रे ॥ हम० ॥ २६ ॥ सर्व लोकनी साखे भाखे, प्रियंगुमंजरी पुत्री ॥ रूपे निर्जित मार कुमारेंद्र, गोष्ठी करो धरी मैत्री रे ॥ हम० ॥ २७ ॥ स्त्रीना भेद कह्या प्रभु केता, लक्षण जाति विभेद ॥ ते दाखो अमने हवे इहां कणे, भांजो मननो खेद रे ॥ हम० ॥ २८ ॥ कहे श्रीचंद्र गजगति भद्रे, स्त्रीना भेद छे चार ॥ पद्मिनी हस्तिनी चित्रिणी शंखिनी, मूल भेद ए चार रे, सुणीये तास विचार रे ॥ हम० ॥ २९ ॥ लोक थोक मलिया सवि जोवा, करत कोलाहल सोर ॥ कौतुक एक अने वली सहेजे, सुणवुं जेम घन मोर रे ॥ हम० ॥ ३० ॥ केइक घरना कयला कूटे, केइ करे परनिंदा ॥ केइक आप तणा गुण दाखे, मलिया माणस वृंदा रे ॥ हम० ॥ ३१ ॥ परण्यो ते परदेशे चाल्यो, तइयां छे मुज न्हानां ॥ केइ कहे ए वेलाये शुं, रहीए छानामानां रे ॥ हम० ॥ ३२ ॥ सुखीयाने सघलुं ए सूजे, शुं एहथी कांइ न सूजे ॥ कमाइये जो भारो वहीये, तो भारायी भेंश दूजे रे ॥ हम० ॥ ३३ ॥ एक कहे माहारो रतनशी रुको, जेणे पियुडो विसार्यो ॥ नागां उघाडां ए ढांके, सुखे जाये जमवारो रे ॥ हम० ॥ ३४ ॥ एक कहे मुज गारू करडी, जोडे अजोड्या जोमा ॥ देवरीयो

पण गुण ...
माड थाइ जाणुं, माहारे कोइ न दीसे ॥ मोटे पण आगल आगलथी, पालके लिखी दीसे रे ॥ हम० ॥ ३० ॥
परदेशे जइ पोहोगे कन्या, नही कोइनुं तेडीयाणुं ॥ थोडा मांहे घणुं विमासुं, अहवा माहारुं मुह कालुं रे ॥ हम० ॥ ३९ ॥ एक कहे माहारे कोण पाडु, ज्यारी लागे ते जाजी ॥ सींगल गूंगल पूंगल कामे, मुजने खीधी मारी रे ॥ हम० ॥ ४० ॥ एक कहे ए कोइ न समजे, गाणोतरने जडावुं ॥ देवाडानी वात जणावी, तेम कहीने समजावुं रे ॥ हम० ॥ ४१ ॥ मटोटे जाणे करी मगाइ, पर पागरा सवि गगया ॥ तुमने तो थाइ कोइ न सिंगा, न गांजरे अम जगया रे ॥ हम० ॥ ४२ ॥ एकण लगने आपणे घे परणयां, ताहरे जे ए घर नरीयुं ॥ हवी लगे माहारे नवि आशा, ए कांड शुं करियुं रे ॥ हम० ॥ ४३ ॥ एक कहे अफलांगरां जोड, साथुं थइ जाय ॥ जेम बीजे तेम पांका थाशे, घरमां कांइ न थाय रे ॥ हम० ॥ ४४ ॥ सुलीया जोड सहेजे पल्ला, आगो दाहमो सूखी ॥ गुण हुगर तुम विण कहेने कहीये, मामी मोटी भूखी रे ॥ हम० ॥ ४५ ॥ नवे पोणाने परदेशो आपण, कीधा विण केम थाशे ॥ मनमां मोटाइ रहे नारी, जेम कूतरो वडेरा तसे मारे हाशे रे ॥ हम० ॥ ४६ ॥ पोहता पायगणां करी बेसे, कोमी काम न आवे ॥ नयडाने अकारी मारे, धर्म नाम न सुहावे रे ॥ हम० ॥ ४७ ॥ एम हमारे कथली करती, धर्म जावे पण बेठी ॥ तिणथी ही धर्म थाणी सूझे, कम पण करे भीठी रे ॥ हम० ॥ ४८ ॥ गुणी मागी वातां करती, पार मली जिहां थाली ॥ घर घर नंजण भाडा करती, कथडानी वात धाली रे ॥ हम० ॥ ४९ ॥ एम बहु गोर करतां देखी, राजा परूइ पजावे ॥ करी एकांत ए गोष्ठी सुणजो, जेम मनसुं रीजावे रे ॥ हम० ॥ ५० ॥ ज्ञानविमल मतिनी ए वातो, सज्जन जन मन भावे ॥ पण काने सुणी मीठी लागे, जिम घन ताणे नियाल रे ॥हम०॥५१॥ सर्व गाथा॥२०७॥

॥ दोहा ॥

॥ सोरठी ॥ कहे श्रीपंकजकुमार, चार नेद ए मांनजो ॥ धुरथी चित्तमां धार, मूकी मनमां आमलो

॥ १ ॥ पाछे हस्तणी चित्रणी, संखणी सर्वा वखाण ॥ गवि श्रंगे गुण पद्मणी, तिणकरा गुण माण ॥ २ ॥

॥ अथ पद्मिनी लक्षण सवैयो ॥ पद्म उपमान देह, गुमजित अमृत गेह, हंसगति गमन रेह, स्निग्ध तनु दंत है ॥ सुक्ष्मी सह श्याम केश, दीर्घ नेत्र को है निवेश, पृथुअही उरोज देश, अल्प निंद सेनु है ॥ अल्प काम अल्प मान, पतिसें रहे एकतान, अल्प स्वेद अल्प रोष बीजरी चमक है ॥ अल्प हास अल्प नाम अल्प है, निपात पद्माकर पुष्पजोग प्रियकी धमक है ॥ इति षोडश प्रकारे पद्मिनी लक्षणं ॥

॥ अथ हस्तिनी लक्षण सवैयो ॥

विजित गति गयंद, साम मद मतगंध, थूल केश नैन लघु पर, मत्त चारी है ॥ बहु कामको उमेद, बहु स्वेद बहु स्नेह, बहुत व्यापार भेद, बहुत आहारी है ॥ शैलविरम हे हस्त, मौक्तिक प्रियप्रशस्त, आपमत रहे मस्त, क्रोध तर जारी है ॥ हस्तिनीकी एह जाति, जानीये युं जडी जाति, पद्मिनी थे विजाति पर, बुद्धिवत्र सारी है ॥ १ ॥ इति हस्तिनी लक्षणं ॥

॥ अथ चित्रिणी लक्षण सवैयो ॥

चित्रिणीको विविध गंध, अरुशोजा सुदृढबंध, एण गति सुस्मिदंत, केसको कलाप है॥ उन्नत उरोज रोज, नेत्रजित नील सरोज, अल्प निंद है हरोज, मधुर आलाप है ॥ मिताचार मिताहार, वार वार काम प्रचार, मध्य स्नेह तीक्ष्ण, कटाक्ष स्वेद व्याप है ॥ मकर समान हस्त, लक्षण प्रियाविहस्त, अंगमें अनेक रंग, अनंग केरी छाप है ॥ २ ॥ इति चित्रिणी ॥

॥ अथ शंखिनी लक्षण सवैयो ॥

शंखिनीको मतगंध, शोभा कुचकी प्रबंध, दीर्घ स्तन दीर्घ दंत, खरकी गति धारी है ॥ पिंगनेत्र पिंगकेश, करतु है विविध वेश, दीर्घ हास्यको प्रवेश, दीर्घ काम विकारी है ॥ दीर्घ रोष दीर्घ शोष, अकाजसे पीयत कोस, न पेखत नियदोष, अमिताहार आहारी है ॥ मत्स सम विषम हाथ, कलह प्रिय के लीये साथ, कुस-मलता भावनायसें पण धारी है ॥ ३ ॥ इति शंखिनी लक्षणं ॥

॥ पूर्व दोहा ॥

एम एकेकीना होये, सोल सोल अहीनाण ॥ एम करतां चोसठ होये, संकर भेद प्रमाण ॥ ३ ॥ जाति

लक्षण गुण भेदथी, होय एकमां अनेक ॥ ते तो शास्त्रथी जाणजो, जो होये चतुरने टेक ॥ ४ ॥ मूल भेद
चेहु अने, शुना अशुना स्त्री जाण ॥ शुन लक्षणथी होये शुना, अशुना अशुन प्रमाण ॥ ५ ॥ कांइक नारीनां
कहुं, शुन लक्षण शुन गात्र ॥ लक्षण व्यंजन भेदथी, जाणीजे गुण पात्र ॥ ६ ॥ सर्व गाथा ॥ ३०० ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ गणधर दश पूरवधर सुंदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूरण चंद्रमुखी पाद अरुण सम, दीपे तनुनी छाया रे॥ वक्त्र विशाल अधर उंठ अरुणा, ए पद्म लक्षण
शुन गाया रे ॥१॥ गुणीये स्त्रीनां अंग सुलक्षण, निर्लक्षण स्त्री संगे रे ॥ शुन लक्षण नर क्षीणो थाये, जेम पय
कांजी प्रसंगे रे ॥ गु० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ अंकुश कुंडल चक्रनी रेखा, जेहने करतले होवे रे ॥ प्रथम पुत्र
प्रसवे ते नारी, पति देशाधिप जोवे रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ जस करतल गढ तोरण मंदिर, पद्म कुंज छत्र चक्र रे ॥
दास कुले जातां पण नरपति, वली होय रेखा चक्र रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ मयूर छत्र आकृति जस करतले, पुत्र
वछ्ल राजा राणी रे ॥ होये ते गुणवंत सुशीला, प्रेम प्रीति गुण खाणी रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ वक्र केशकलाप सुरंग
वर्तुल, दक्षिणावर्त्ता नाभि रे ॥ प्रीतिवंती ते पुण्यवनोती॥ पुत्र पुत्रीनी लाजी रे ॥गु०॥ ६॥ दीर्घ केश दीर्घा-
यचुल, दक्षिणावर्त्ता नाभि रे ॥ धन धान्ये परिवारे वधती, पति तेहने घणुं कामे रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ चंपक
गुली नारी, दीर्घायु ते पामे रे ॥ धन धान्ये परिवारे वधती, पति तेहने घणुं कामे रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ चंपक
वर्णी कोमल वयणी, कोमल नयणी श्यामा रे ॥ स्निग्ध अंगी कोमल ते वाणी, पलथी अति सुख पामे रे ॥
सुवर्ण नूषण कामा रे ॥ गु० ॥ ८ ॥ जे नारीने हसतां नीलवट, स्वस्तिक होये आकार रे ॥ घोमा हाथी
महल गमे तस, वाहन बहु परिवार रे ॥ गु० ॥ ए ॥ मस तिल लंछन मावे पासे, गलकुंच मंगल होवे रे ॥
ते महिला सुत प्रसवे नारी, दरिद्रपणुं ते धोवे रे ॥ गु० ॥ १० ॥ अल्प स्वेद अल्प रोम अल्प निद्रा, अल्प
भोजन अल्प हांसी रे ॥ अंगादिके वली रोम न होवे, ते स्त्री उत्तम जासी रे ॥ गु० ॥ ११ ॥ वण ऊरु
करिकर सम नहीं रोमे, अश्वपत्र परे योनि रे ॥ नितंब ललाट पृथुल कूर्मोन्नत, गूढमणि नाभि ऊंमी रे ॥गु०
॥ १२ ॥ शीत उष्ण ऋतु सरिखे समये, आलिंगन सुख सरखुं रे ॥ निर्धन कुलनी होये यद्यपि, धन लहे
नरपति परखुं रे ॥ गु० ॥ १३ ॥ रोमाला जंघा ने पयोधर, वदन उंठ रोमालां रे ॥ शीघ्रपणे विधवा होये ते

॥ सु० ॥ १४ ॥ स्थूल जंघा चाफाल पग चापट, के दासी के विधवा रे ॥ दरिद्र दुःख तणी संचितागणी, मृतवत्सा वा वंजा रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ पृष्टावर्त्ता पतिने मारे, हृदयावर्त्ता पतिभक्ता रे ॥ कटि आवर्त्ता स्वछंदाचारिणी, त्रिविध तरुणीनी विगता रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ जे स्त्रीने वली त्रण होये लांबा, ललाट उदर भग जेहने रे ॥ ते स्त्री श्वशुर देवर वरने हणे, सुत सुख क्षण नहीं तेहने रे ॥सु०॥१७॥ काली जीभ पिंग नेत्र लंबोष्ठी, घुर्घुर स्वर अति काली रे ॥ अति गोरी पट एही वरजो, सामुद्रिकने निहाली रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ गंमस्थल हसतां पमे खाडो, ते पण गेहे न रहे रे ॥ इच्छाचारी ते रहे फरती, कुललज्जाने न वहे रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ पदप्रदेशनी अंगुलथी वधती, ते निज घरमां न ठरे रे ॥ पाद मध्यमां अंगुष्ठथी वधती, काम विना तस न सरे रे ॥ सु० ॥ २० ॥ चरणलंक धरती नवि फरसे, पानी होय उपरती रे ॥ अनामिका पण भूमि न फरसे, ते जार तणे घर रमती रे ॥ सु० ॥ २१ ॥ चरण कनिष्ठा भूमि न रसे, ते पण जारशुं विलसे रे ॥ उद्भुत कपिल केश रोमराजी, दारिद्र दासपणुं फरसे रे ॥ सु० ॥ २२ ॥ घदनाकारे भग आकारी, जेम कटि तेहवां नेत्र रे ॥ जेहवा कर तेहवा पद लहीये, जंघा तेहवी धरे मैत्र रे ॥ सु० ॥ २३ ॥ काकस्वरी काकजंघा दीर्घदंती, पृष्ठे होये रोमराजी रे ॥ दश मासे ते पति हणनारी, विषकन्यामां माजी रे ॥ सु० ॥ २४ ॥ छिद्रलाद विषमांगुली नारी, नास वंशे विषमी रे ॥ ते नारी बहु वैर वधारे, अशुभ लक्षण पति न गमी रे ॥सु०॥२५॥ धमधमाट करती जे चाले, वली करमका थावे रे॥ ते नारी पण वैर वधारे, नीच शिरे गति दुःख पावे रे ॥ सु०॥ २६ ॥ अति लांबी अति टुंकी अति कृश, अति काली अति गोरी रे ॥ ए दो भागणी सघली त्यजवी, वाद कलह प्रिय धोरी रे ॥ सु० ॥२७॥ पाक परघर प्रशंसे ने फरे, परघरनी अनुकूला रे ॥ आसन अथिरने उत्तर वाले, ते स्त्री वंश प्रतिकूला रे ॥सु०॥२८॥ पतिआक्रोशे सुसर पख वैरिणी, जेहना पग रहे पोहोला रे ॥ परिहरवी पुत्रवती ते पण, वक्रमुखी पिंगलोला रे ॥सु०॥२९॥

यतः ॥ पिंगाक्षी कूपगंमा, परपुरुषरता, स्थूलजंघोर्ध्वकेशी; लंबोष्ठी दीर्घवक्त्रा, प्रविरलदशना, श्यामतालुोष्ठजिह्वा ॥ शुष्कांगी संगरक्ता, विषमकुचयुगा, नासिकाक्रांतवक्त्रा, सा कन्या वर्जनीया, सुतसुखरहिता, भ्रष्टशीला च नारी॥१॥पीनोरू पीनगंमा, सुश्रमितदशना, दक्षिणावर्त्तनाभिः॥ स्निग्धांगी चारुश्रुभ्रा पृथुकटिजघना सुस्वरा चारुकेशी, कूर्म्मपृष्ठा धनूर्णाधिरदसमपृथुस्कंध लागा सुवृत्ता, सा कन्या पद्मपत्रा सुजगगुणयुता, नित्यमुत्साहयोग्या॥२॥

गनु गम गुणगण्यार रे ॥ गु० ॥ ३० ॥ एम अनेक सामुद्रिक लक्षण, लक्षित देखा जाणी रे ॥ नागा गम स्तुनाये कथन करी, करे गग पर मधुरी, ऋद्धि राज धन पामी रे ॥ गु०॥ ३१ ॥ अथवा वली चार भेदे नारी, ऊढा अने अनूढा रे ॥ एक स्वकीया ने परकीया, कामशास्त्रमां मूढा रे ॥ गु० ॥ ३२ ॥ ज्ञात अज्ञात यौवना कहीये, मोढा गम्या धीरा रे ॥ वासकसज्जा ने अभिसारिका, कामकंदनी कीरा रे ॥ गु० ॥ ३३ ॥ मुग्धा विप्रलब्धा, प्रि-यवत्सा, प्रोषितपतिका जाणीये रे ॥ भेद अनेक लक्षण गुणथी जे, वात्स्यायनमां सुणीये रे ॥ गु० ॥ ३४ ॥ रसमंजरी रसिक प्रिया नाटक, श्रृंगार शतक प्रमुख रे ॥ कामकामी जे होये ते जो जो, पद्मिनी सकल विशेष रे ॥ गु० ॥ ३५ ॥ शंख पगनी आडु जोती, शंखिणी ने मृगाक्षी रे ॥ आप तणां लक्षण राखेवा, परजो पद्मिनी पामी रे ॥ गु० ॥ ३६ ॥ सामुद्रिकनां लक्षण जोइ, परणे कन्या जाणी रे ॥ निर्धन कुलनी पण होये राणी, ज्ञानविमल सूरि वाणी रे ॥ गु० ॥ ३७ ॥ ४३९ ॥

पद ॥ छंद ॥ विरखें दांते ने पिंगलाक्षी, कोप घणो ने दर्शने काली ॥ चक्र नेत्र वली मुखकुं ताणे, अहनिशि आणे आप वखाणे ॥ १ ॥ चाल ॥ वगाणे आखी हियडे पालि, पंट मजाली मुंजाली, पण क्रोध न छंडे, कलहप्रिय मंडे, माता मांड जेम घटकाली ॥ मस्तक कपिवेणि, केशर नयणी पायर पंडा पात्र जिस्या, ते नारी पामी मीत म करजो, अपपूण्यानां फल इस्यां ॥ २ ॥

अथोत्तमा ॥ सुशिल सुलक्षणी रंग रसाली, कनक चूडीने पहिरण काली ॥ दक्षिण करे जो दानज दीजे, तो इसी नारी निश्चय पामीजे ॥ १ ॥ चाल ॥ पामीजे युवती गायु गमनी, नणदल नगिनी सुमुखीणी ॥ पर-पुरुष न जोती, भाग न करती, तांत न धरती कंथ तणी ॥ जिनधर्म उचरती, पीयुमन गमती, शारदचंद निर्मळ जिसी ॥ पहेले नवे कोइ महानर कीधां, ते नर पाम्या नार इसी ॥२॥ इत्यादिक बहु वक्तव्यता जाणवी.

॥ दोहा ॥

॥ कहो नायक होये केटला, तब पोहया कहे चार ॥ अनुकूल दक्षिण शठ वली, धृष्ट भेद ए चार ॥ १ ॥ हवे ए चारनां लक्षण कहे छे ॥ जे पररमणी रत नहीं, निजसुं निरखे राग ॥ ते अनुकूल ...

... रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ अपूर्व अंग ... पण पारद, के दासी के विधवा रे ॥ दरिद्र दुःख तणी संविजागणी, मृतवत्सा या वंशा रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ पृष्ठावर्त्ता पतिने मारे, हृदयावर्त्ता पतिजनका रे ॥ कटि आवर्त्ता स्वछंदाचारिणी, त्रिविध तरुणीनी विगता रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ जे स्त्रीने वली त्रण होये खोबा, ललाट उदर जग जेहने रे ॥ ते स्त्री श्वशुर देवर वरने हणे, सुत सुख हण नहीं तेहने रे ॥सु०॥१७॥ काली जीन पिंग नेत्र संघोली, घुघुर स्वर अति काली रे ॥ अति गोरी पट पही वरजो, सामुद्रिकने निहाली रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ गंडस्थल हसतां पके खाडो, ते पण गेहे न रहे रे ॥ स्वेच्छाचारी ते रहे फरती, कुलखाने न वहे रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ पदप्रदेशनी अंगुलथी वधती, ते निज घरमां न ठरे रे ॥ पाद मध्यमां थंगुष्ठथी वधती, काम विना तस न मरे रे ॥ सु० ॥ २० ॥ चरणडंक धरती नवि फरसे, पानी होय उपरती रे ॥ अनामिका पण भूमि न फरसे, ते जार तणे घर रमती रे ॥ सु० ॥ २१ ॥ चरण कनिष्ठा भूमि न रसे, ते पण जारशुं विलसे रे ॥ उद्धुत कपिल केश रोमराजी, दारिद्र दासपणुं फरसे रे ॥ सु० ॥ २२ ॥ पदनाकारे नाग आकारी, जेम कटि तेहवां नेत्र रे ॥ जेहवा कर तेहवा पद लहीये, जंघा तेहवी धरे मैत्र रे ॥ सु० ॥ २३ ॥ काकस्वरी काकजंघा दीर्घदंती, पृष्ठे होये रोमराजी रे ॥ दश मासे ते पति हणनारी, कन्यागर्भ माली रे ॥ सु० ॥ २४ ॥ निःस्वाद विषमांगुली नारी, नास वंशे विषमी रे ॥ ते नारी बहु वैर वधारे, अशुभ लहण पति न गमी रे ॥सु०॥२५॥ धमधमाट करती जे चाले, वली करकशा थावे रे ॥ ते नारी पण वैर वधारे, नीच शिरे गति दुःख पावे रे ॥ सु०॥ २६ ॥ अति लांबी अति टुंकी अति कृश, अति काली अति गोरी रे ॥ ए दो जागणी सघली त्यजवी, वाद कलह प्रिय धोरी रे ॥ सु० ॥२७॥ पाक परघर प्रशंसे ने करे, परघरनी अनुकूला रे ॥ आसन अथिरने उत्तर वाले, ते स्त्री वंश प्रतिकूला रे ॥सु०॥२८॥ पतिआक्रोशे सुगर पत्त वैरिणी, जेहना पग रहे पोहोला रे ॥ परिहरवी पुत्रवती ते पण, वक्रमुखी पिंगकोला रे ॥सु०॥२९॥

यतः ॥ पिंगाक्षी कूपगंडा, परपुरुषरता, स्थूलजंघोर्ध्वकेशी; लंबोष्ठी दीर्घवक्त्रा, प्रविरलदशना, श्यामताल्वोष्ठजिह्वा ॥ शुष्कांगी संगरक्ता, विषमकुचयुगा, नासिकाक्रांतवक्त्रा, सा कन्या वर्जनीया, सुतसुखरहिता, भ्रष्टशीला च नारी॥१॥ पीनोरू पीनगंडा, सुसमितदशना, दक्षिणावर्त्तनाभिः॥ स्निग्धांगी चारुभ्रूश्च पृथुकटिजघना सुस्वरा चारुकेशी, कूर्मपृष्ठा धनूष्याधिरदगमपृथुस्कंध नागा सुदृशा, सा कन्या ...

पूर्ण थाय ॥ मुख नसिर्नु होवे मदन मंदिरगण, नेत्र समान आधार रे ॥ नागा गम सनुनाये कथन करी,
तनु गम गुणविस्तार रे ॥ सु० ॥ ३० ॥ एम अनेक सामुद्रिक लक्षण, लक्षित देश जाणी रे ॥ कर पीन
करे नग पर पगुडी, कलि गज धन पाणी रे ॥ सु०॥ ३१ ॥ अथवा चन्नी चार भेदे नारी, कहा अने अनूढा
रे ॥ एक स्वकीया ने परकीया, कामशास्त्रमां मूढा रे ॥ सु० ॥ ३२ ॥ ज्ञात अज्ञात यौवना कहीये, प्रौढा
मध्या धीरा रे ॥ सामकन्यका ने अतिसारिका, कामकंदली कीरा रे ॥ सु० ॥ ३३ ॥ मुग्धा विप्रलब्धा, वि-
प्रलब्धा, प्रोषितभर्तृका नकीये रे ॥ भेद अनेक लक्षण गुणची छे, वात्स्यायनमां सुणीये रे ॥ सु० ॥ ३४ ॥
रसमंजरी रसिक प्रिया नाटक, शृंगार रागके प्रमुखा रे॥ कामकामी जे होये ते जो जो, एहवा सकल विशेषा
रे ॥ मु० ॥ ३५ ॥ गोटा गगनी मांडु जोती, लंखिणी ने सुणाडी रे ॥ आप तणां लक्षण रालंघा, परजो एहवी
पाडी रे ॥ मु० ॥ ३६ ॥ सामुद्रिकनां लक्षण जोइ, परणे कन्या जाणी रे ॥ निर्धन पुरुषनी पण होये राणी,
ज्ञानविमल सूरि वाणी रे ॥ सु० ॥ ३७ ॥ ४२९ ॥

पग ॥ भेद ॥ जिस्थे दांते ने विकराळी, कोप घणो ने दर्शने काळी ॥ पक नेत्र पत्नी मुखकुं ताणे, अहनिशि
आणो आप पराणे ॥ १ ॥ चाल ॥ पगाणे आळी छिपके पाळि, पेट मजाळी मुंजाळी, पण कोप न छंडे,
कळहन मंडे, माता मांड जेम घटकाळी ॥ मस्तक कपिशेणि, केशर नयणी बाघर पेटा धाउ जिस्या, ते नारी
पाषी गीत म करशो, अणपूरयानां फळ इस्यां ॥ २ ॥

अयोगमा ॥ सुदिन सुलक्षणी रंग रसाळी, कनक चूडीने पहिरण काळी ॥ दक्षिण करे जो दानज दीजे,
एहवी नारी निश्चय पामीजे ॥ १ ॥ चाल ॥ पामीजे युवती गायु गमनी, नगदरु जगिनी सुगुणीणी ॥ पर-
पुरुष न जोती, पाप न करती, लांच न धरती केह तणी ॥ जिनधर्म उपरती, पीयुमन गमती, शारदचंद
निर्मल जिसी ॥ पहेले जन्मे कांइ महातप कीधां, ते नर पाम्या नार इसी ॥२॥ इत्यादिक घणु सकलता जाणवी.

॥ दोहा ॥

॥ कह्यो नायक होय केटला, सग पोरया कहे चार ॥ अनुकूल दक्षिण शठ वळी, धृष्ट भेद ए चार ॥ १ ॥
हवे ए चारनां लक्षण कहे छे ॥ जे परस्त्री रत नहीं, निजशुं नित्ये राग ॥ ते अनुकूल नायक कह्यो, सुन

लाग ॥ २ ॥ चित्ते पररमणी रमे, पण विकार न देखाव ॥ ते दक्षिण नायक कह्यो, कुलाचार न चुकाव ॥ ३ ॥ प्रिय बोले पण प्रिय नवि करे, धरे कोप प्रचार ॥ शठ नायक ते जाणीये, एहवो घणो प्रचार ॥ ४ ॥ आप अपराध न जाणतो, अज्ञाने कृत कर्म, अपमान्यो पण तेहवो, ते धीठो अकुशल कर्म ॥ ५ ॥ इत्यादिक नेदे घणा, नायक नेद विचार ॥ वर्णनेदथी जाणीये, चार चोक सोल सार ॥ ६ ॥ हवे स्वामी रस केटला, कहे नव रस संसार ॥ शृंगार हास्य ने वीर रस, करुण अद्भुत नय नार ॥ ७ ॥ रौद्र बिनत्स ने शांत रस, ए वली त्रिविध संनार ॥ स्थायी सात्त्विक संचारिया, नावे अनेक प्रकार ॥ ८ ॥

हवे ए नव रसनां लक्षण कहे ठे ॥ दोहा ॥ दंपती रागे नीपजे, ते शृंगार डु प्रकार ॥ संयोग ने वियोगथी, सकल जंतु विस्तार ॥ ए ॥ ते प्रछन्नाप्रछन्नथी, तेहना बहु विस्तार ॥ हास्य सहज निमित्तथी, डुविध नेद सुविचार ॥ १० ॥ दान धर्म रण नेदथी, उत्साहे होये धीर ॥ करुणा पण शृंगारथी, नेद होये कृतवीर ॥ ११ ॥ अंगावेश चेष्टा थकी, रौद्र बिनत्स विशेष ॥ नाति सकलथी नीपजे, रस नयानक देख ॥१२॥ पूरव सकल रस पुष्टता, आप गुणे जे तुष्ट ॥ ते नवमो वर शांत रस, तेहने किजे पुष्ट ॥ १३ ॥ यतः ॥ सम्यक्ज्ञान समुझान, शांतो निःस्पृह नायकः ॥ रागद्वेषपरित्यागा, च्छांतो रस उदाहृतः ॥ १ ॥ दोहा ॥ राग द्वेषको लेश नहीं, सम्यक्ज्ञान गुण धाम ॥ आपस्वनावे मग्नता, अनुनव शांत इति नाम ॥१४॥ काव्यप्रकाश अलंकारमें, एहना ठे विस्तार ॥ तेहथी सघला जाणजो, ज्ञानविमल मति धार ॥ १५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ नणदल हो नणदल चुंकले यौवन झल रह्यो ॥ ए देशी ॥

॥ कहो स्वामी बहोंतेर कला, नरनी दाखे जेह ॥ प्रीतम ॥ निसुणी सहुले उपजे, चतुर सनाने नेह ॥ प्रीतम ॥ कहो० ॥ १ ॥ लिखित १ गणित २ चित्ररूप ३ ठे, गीत ४ नृत्य ने ५ वाद्य ६ ॥ प्री० ॥ सप्तस्वर ७ खड्जादिका, पुष्कर गतिनां वाद्य ८ ॥ प्री० ॥ क० ॥ २ ॥ तालमान ए जूवट कला, १० पाशा ११ अष्टापद खेल १२ ॥ प्री० ॥ जनवादवा ते १३ दक्षता, सवि अग्रेसर १४ मेल ॥ प्री० ॥ क० ॥ ३ ॥ दगमटीनुं जाणवुं, १५ अशन १६ पान ने १७ वस्त्र १८ ॥ प्री० ॥ तेहनुं विधे निपजाववुं, विलेपन १ए शयन २० विधि

आर्या २१ प्रहेलिका २२ मागधिका, २३ गाथा २४ गीतिका २५ श्लोक २६
नव ॥ प्री० ॥ क० ॥ ४ ॥ आर्या २१ प्रहेलिका २२ मागधिका, जाणे तेहना श्लोक ॥ प्री० ॥ क० ॥ ५ ॥ त्राण विधिशु
॥ प्री० ॥ हिरण्य सुवर्ण २७ चूर्ण २८ योग २९ जे, जाणे तेहना थोक ॥ प्री० ॥ क० ॥ ५ ॥ ३४ गज ३५ तुरग ३६ मणि, ३७
गवेषणा, ३० तरुणी सेवा परिकर्म ३१ ॥ प्री० ॥ स्त्री ३२ नर ३३ हय ३४ गज ३५ वृषभ ३६ मणि, ३७
कुर्कट ३८ छत्र ३९ दंड ४० ॥ असि ॥ प्री० ॥ क० ॥ ६ ॥ अग्नि ४१ काकिणी ४२ पछेना, लक्षण गुण ने दोष
॥ प्री० ॥ वास्तु विद्या ४३ पर थापना, खंधार ४४ नगर मान ४५ योग ॥ प्री० ॥ क० ॥ ७ ॥ चार ४६
प्रतिचार ४७ ते कहकला, व्यूह ४८ अने प्रतिव्यूह ४९ ॥ प्री० ॥ युद्ध ५० नियुद्ध ५१ ते जाणीये, चक्र
५२ गरुड ५३ शकट ५४ व्यूह ॥ प्री० ॥ क० ॥ ८ ॥ अतियुद्ध ५५ अस्थियुद्ध ५६ जाणीये, मुष्टियुद्ध ५७
बाहुयुद्ध ५८ ॥ प्री० ॥ धनुर्वेद ५९ भ्रमण ६० वेद जे, तृणद ६१ दृष्टि लतायुद्ध ६२ ॥ प्री० ॥ क० ॥ ९ ॥
हिरण्यपाक ६३ सुवर्णपाक ६४ जे, सूत्रखेड ६५ पत्रछेद्य ६६ ॥ प्री० ॥ नालिकाखेड ६७ घटीछेद ६८ काष्ठ
पटन ६९ तनु छेद ॥ प्री० ॥ क० ॥ १० ॥ सजीव करण ७० ने निर्जीव करणं ७१, शकुन विहंगम वाणि
७२ ॥ प्री० ॥ ए बहोतेर नरनी कला, आगम वचन प्रमाण ॥ सुंदरी ॥ कहो० ॥ ११ ॥ कोइ एक स्थानके
अन्य प्रकारे पण बहोतेर कला कही छे, ते कहे छे ॥ काव्यानि ॥ लिखित १ पठित २ संख्या ३ गीति ४
नृत्यानि ५ ताला ६, पटह ७ मृदंग ८ वीणा ९ वंश १० भेरी ११ परीक्षा ॥ द्विरद १२ तुरग १३ शिक्षा
धातु १४ दंड १५ मंत्रवादा १६, वलि पलित विनाशौ १७ रत्न १८ नारी १९ नृलक्ष्म २० ॥ १ ॥ छंद २१
तर्क २२ सुनीति २३ ॥ तत्त्व २४ कविता २५, ज्योतिः २६ श्रुति २७ वैद्यकं २८ ॥ भाषा २९ योग ३०
रसायनां ३१ जन ३२ लिपि ३३, स्वप्नेंद्रजालं ३५ कृषि ३६ ॥ वाणिज्यं ३७ ॥ नृपसेवनं च ३८ शकुनं ३९,
वार्य ४० पि ४१ संवाहनं ४२, हर्षित्रासन ४३ मर्दनो ४४ धूंगतयो ४५ वंशभ्रमो ४६ चौपटे ॥ २ ॥ प-
प्रवेदन ४७ मर्मभेदन ४८ कला कृत्य ४९ ॥ गुरुशिक्षना, ५० लोकाचार ५१ जनानुवृत्ति ५२ फलनिर् ५३
सारा ५४ छुरीबंधनं ५५ ॥ मुद्रा ५६ जो ५७ रद ५८ काष्ठ ५९ चित्रकृति ६० दो ६१ र्दंग ६२ मुष्टि ६३
सैना ६४ धनि ६५ बाहुयुद्ध ६६ गरुड गर्भ ६७ ६८ गजदमनं ६९ योगा ७० ७१ नामाक्षयः ७२ ॥ ३ ॥
इत्यादि चरित्रप्रकरणादवपि दृश्यते ॥
पर्ण हाय ॥ चोसठ महिलानी कला, अगने ताणो नेह ॥ प्रीतम ॥ नृत्य १ उचित २ चित्र ३ वाजित्र ४,

१ त्र ५ तंत्र ६ गुणगेह ॥ प्री० ॥ क० ॥१२॥ कहो स्वामी चोसठ कला ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञान ७ विज्ञान ८ दंत्र ९ जलथंज १०, गीतगान ११ मेघवृष्टि १२ ॥ प्री० ॥ तरुरोपण १३ आकारगोपन १४, अन्न १५ सृष्टि फलाकृषि १६ ॥ प्री० ॥ क० ॥ १३ ॥ धर्मविचार १७ शकुन १८ सार, क्रियाकल्प १९ संस्कृतजल्प २० ॥ प्री० ॥ धर नीति २१ धर्मनीति २२ लीला गति २३, कामविकारनां जल्प २४ ॥ प्री० ॥ क० ॥ १४ ॥ सुवर्णसिद्धि २५ वर्णिक वृद्धि २६, सुरभि तेलनुं कर्म २७ ॥ प्री० ॥ हय २८ गज २९ लक्षण परीखण, नर ३० स्त्री ३१ लक्षण मर्म ॥ प्री० ॥ क० ॥ १५ ॥ लिपि अक्षर परिछेदनो ३२, सुवर्ण रत्नना भेद ३३ ॥प्री०॥ बुद्धि तत्काल जे उपजे ३४, वास्तुसिद्धिना भेद ३५ ॥ प्री० ॥ क० ॥ १६ ॥ वैद्यक्रिया ३६ कामनी क्रिया ३७, घटभ्रम ३८ सारिश्रम ३९ चूर्णयोग ४० ॥ प्री० ॥ अंजनयोग ४१ हस्तलाघवं ४२, वचनपटु ४३ भोजनविधि भोग ४४ ॥ प्री० ॥ क० ॥ १७ ॥ वाणिज्यविधि ४५ मुख मंडनं ४६, शालिखंडन ४७ काव्यशक्ति ४८ ॥ प्री० ॥ कथा कथन ४९ रोदन कला ५०, पुष्पग्रंथन ५१ वक्रोक्ति ५२ ॥ प्री० ॥ क० ॥ १८ ॥ वेषविधान ५३ आभरणविधि ५४, सकल भाषानो विशेष ५५ ॥ प्री० ॥ नृत्य उपचार ५६ गृहचार ५७ ए, परवचन निराकरण निरेप ५८ ॥ प्री० ॥ क० ॥ १९ ॥ केशबंधन ५९ वीणावादनं ६०, लोकव्यवहार ६१ अंक चार ६२ ॥प्री०॥ वितंडावाद ६३ प्रश्नप्रहेलिका ६४, ए चोसठ सुविचार ॥ प्री०॥ क० ॥२०॥ गणित त्रीसरी लीलावती, गुणाकार भागाकार ॥ प्री०॥ मूल घनवर्ग गणित पदे, बोल्यो बहु विस्तार ॥ प्री०॥ क० ॥२१॥ इत्यादिक जे पूछीयुं, प्रियंगुमंजरीये जेह ॥ प्री० ॥ ते श्रीचंदे दाखीयुं, एक विद्या गुरु तेह ॥ प्री० ॥ क० ॥ २२ ॥ गाहा गूढा केम भाषीये, प्रश्न पहेलिका केम ॥ प्री० ॥ विविध जाति ते देखीये, वाधे मननो प्रेम ॥ प्री० ॥ क० ॥ २३ ॥

तदुच्यते ॥ पढमक्खर विणु जग जीवाडे, मझक्खर विणु जगने पाडे ॥ अंतक्खर विणु सहुने मीठो, सो स्वामी मे नयणे दीठो ॥ काजल ॥

पढमक्खर विणु मीठो लागे, अंतक्खर विणु पंखी लागे ॥ मझक्खर विणु मुखमां जाय, ते आवे तो बहु पसाय ॥ उत्तर ॥ कागल ॥

मझक्खर विणु जलमां वसतो, आदिक्खर विणु घर सोहंतो, अंतक्खर विणु सहुने वाहालो, तुमने जोवाने में आखी ॥ उत्तर ॥ आंखडी ॥

अंतरकर विणु वदे संन्यासी, मध्यक्षर विणु करे अविमासी ॥ आदिअक्षर विणु त्रिगतां भासा, दिसे शोहा ते सुकुमाला ॥ उत्तर ॥ सारसी ॥ इति गाथा गूढा ॥

॥ कवित्त ॥ दोइ अक्षर नर नारे, कोप वही नरने मारे, देखे सबला लोक थोक पण कोइ न धारे ॥ नाछो जाणी नाद, केडे शिर काली आणयो ॥ वली दीये बहु मार, नारी गुण तेह वखाणयो ॥ कर पग विणु पग मेलता, करे कराये अति घणी, अवधि कही छ मासनी, नारी वांकी ते सुणी ॥ १ ॥ उत्तर ॥ नेमी दरो ॥ इति विंदु समस्या ॥

कवित्त हरियाली ॥ त्रण अक्षरनी नारी, नयरमांहे बहु दीसे ॥ वदन अनेक विशाल, जीभ कर पाय न दीसे ॥ नाटक करे अपार, अन्न पाती नवि खाये ॥ कदये न पीये नीर, जीव विण सबले व्यापे ॥ ते नारीने दाखवो, अवधि मास षट् जाणीये, तुरत कहे जे तेहनी, बुद्धि सविहु वखाणीये ॥ १ ॥ उत्तर ॥ चालणी ॥

॥ दोहा ॥ पीउ परदेश सिधावते, करे समस्या नारी ॥ पय जल सूरिज त्रिदशा, करे आकार मनोहार ॥ १ ॥ ए शुं मंगाव्युं ते कहो ॥ उत्तर ॥ दोहा ॥ तव श्रीचंद्र कहे इस्युं, खारोदक सज धार ॥ मंगाविउं धणीयाणीये, ए संज्ञा चित्त धार ॥ २ ॥

॥ पुनः ॥ पीउ परदेशथी आवीयो, दीधी मुगता रासि ॥ प्रिया करे गुंज जाणीये, नाखी दीये करी हांसी ॥ १ ॥ तेहनो हेतु जाणीये, कहे श्रीचंद्रकुमार ॥ अरुण करतले विंबिया, नयन कांति छवि धार ॥ २ ॥ इति गूढ समस्या ॥

॥ अथ कुंडलिया ॥ हैया म करिश शोश तुं, देखी पराइ ऋद्धि ॥ पर आशे शुं नीपजे, जिहां साहस तिहां सिद्धि ॥ १ ॥ जिहां साहस तिहां सिद्धि, बुद्धि पण तेहथी आवे ॥ तेहथी मले सहाय, दाय पण तेहथी आवे ॥ जे पासे गुण चेन, तेणे कांइ आगे दीया ॥ इहां नहीं कोइनो चार, धैर्य धरी रहे तुं हैया ॥ २ ॥ हैया म करिश शोश तुं,

॥ गूढो ॥ गिरि तनया माता तणो, जामाता सुत थान ॥ तस नग तस रिपु पति, तस बंधव रिपु जाण ॥ १ ॥ तस रिपु तस सुत तुम प्रते, मंगल करो विचित्र ॥ आ अवसर ते आपीये, पहुं कहे पवित्र ॥ २ ॥ उत्तर ॥ गणेश ॥ इत्यर्थः ॥

॥ ढाल पर्यंती ॥ एणी परे बहुविध शास्त्रनी, गोष्ठि थइ तेणी वार ॥ प्री० ॥ निगुणी आनंद पामीया,

नागर जन परिवार ॥ प्री० ॥ क० ॥ २४ ॥ वरमाला कंठे ठवी, कीधा सवि आचार ॥ प्री० ॥ मंगल चारे वरतीयां, नाटकनां दोकार ॥ प्री० ॥ क० ॥ २५ ॥ मंगल धारे नाटक रह्यां, चोरी मध्य विज्ञाग ॥ प्री० ॥ चोथे मंगले आपीया, चतुरंग दलना लाग ॥ प्री० ॥ क० ॥ २६ ॥ उचित उत्सव थयो अति घणे, प्रियंगुमंजरी साथ ॥ प्री० ॥ वंधुर सिंधुरे ते चड्या, चाले वहुले साथ ॥ प्री० ॥ क० ॥ २७ ॥ सुणे पंथे अद्भुत गिरा, निज सौज्ञाग्य कुमार ॥ प्री० ॥ शचि शक्र रति काम ते, जेम कमला ने मुरार ॥ प्री० ॥ क० ॥ २८ ॥ रोहिणी चंद्र गौरि गिरीशनो, रन्नादेवी ने सूर ॥ प्री० ॥ तेहथी एहनो अति वन्यो, योग सदा ससनूर ॥ प्री० ॥ क० ॥ २९ ॥ एम पुरवाणी निसुणतां, आवी आपणे ठाम ॥ प्री० ॥ सहु सहुने ठामे मोकइयां, देइ दान यथोचित ठाम ॥ प्री० ॥ क० ॥ ३० ॥ वास आगारे आवियां, सखी संयुत प्रिया साथ ॥ प्री० ॥ सावधान हसिताननें, सुखीया शचि हरि साथ ॥ प्री० ॥ क० ॥ ३१ ॥ काव्य गोष्ठि वहु तिहां करे, श्री ज्ञानविमल मतिमंत ॥ प्री० ॥ हवे तिहां कणे जे थयुं, ते सुणजो सवि संत ॥ प्री० ॥ क० ॥ ३२ ॥ सर्व गाथा ॥४७०॥

॥ दोहा ॥

॥ चापण संज्ञाये तेमीयो, मदनने तेणी वार ॥ निज वच सत्य करवा जणी, ए उत्तम आचार ॥ १ ॥ वपुचिंता मिश घर थकी, नीसरियो जेणी वार ॥ प्रिया तव पुठे थइ, कहे श्रीचंद्रकुमार ॥ २ ॥ वर्चो घर जावुं अने, तिहां अने वहु नार ॥ तुमो तो एणे थानके रहो, आवुं तुं एक तार ॥ ३ ॥ ऊर्ध्व जूमिथी उतरी, अधो जूमि आवेइ ॥ श्वशुर वर्गथी जे लह्युं, ते सवि मदनने देइ ॥ ४ ॥ निज कुंमल ने मुद्रिका, श्वशुर दत्त मुद्रिका जेह ॥ ते पासेथी स्वयं लीये, आप वेश तस देह ॥ ५ ॥ कहे मदनने एहवुं, तुज मन तोषण काज ॥ में ए सघलुं, कीधलुं, हवे जाउं वुं आज ॥ ६ ॥ ते कहे सर्व जलुं कर्युं, करो यथारुचि स्वामी ॥ हर्ष्यो मदन नयनांजना, दिक करी बेठो ठाम ॥ ७ ॥ वेश लेइ सवि तेहनो, वास घरे जव जाय ॥ आतुर होये उतावला, एहवो बोल्यो न्याय ॥ ८ ॥ तेम चाउंतो आवतो, वेमंतो नग तुंरू ॥ लघ्धपणे कंपे चरण कर, विरूग देह जय चंरू ॥ ९ ॥ देखी तेहवो ते प्रिया, सखी युत वाहेर आवि ॥ कहे कोण ए आव्यो इहां, कोण ए पति वेश बनाय ॥ १० ॥ कहे सखी जडे शुं कहे, कांइ व्यामूढ ने मन्न ॥ ते विणु कोण आवे इहां, वेपनूपण

प्रकाश ॥ ११ ॥ प्रियंगुमंजरी कहे सखी, जो नवि मानो वात ॥ तो जाइने पूछीये, सर्व कथा संधान ॥ १२ ॥ कहे सखी गेले जइ तेम पूछीयुं, नावे कांइ ध्यान ॥ श्रीचंद्र तो दीसे नहीं, कोइ अन्य नर जाति ॥ १३ ॥ कहे सखी दीपालिक हती, एहनो आपणे दीठ ॥ गेहले जइ जोयो घणुं, पण ते किहांय न दीठ ॥ १४ ॥ हवे प्रियंगुमंजरी तिहां, एक सखी तिहां मेली, माताने पासे जइ, कहे सघल दुःख मेली ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ ४८८ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ प्यारो प्यारो करती ॥ ए देशी ॥

॥ हवे पोढी नाम गवित्री, केम आवी गुरुने पुत्री ॥ कुनाल के देह पवित्री, जेम निस्पर पोढे तेत्री ॥ केम आवी ॥ १ ॥ श्रीचंद्र श्रीचंद्र करती, केम गुरु पासे दुःख करती ॥ केम श्रीचंद्र श्रीचंद्र करती ॥ ए आंकणी ॥ दुःख नहीं काढे गुरु जाणी, पीयु जाणे अपर नर जाति ॥ मे दीठो खजा पाली, पशु परे हूं तुं पिछाणी ॥ रे माय ॥ श्री० ॥२॥ माता कहे तुं पोढे, गुजा कंचन सम तोले ॥ धरमुं गोनुं फूंके डोले, पहली नवि करती तोल रे माय ॥ श्री० ॥ ३ ॥ मेरु शिखरे पंगुल पूगे, पश्ची सूरज पश्चिम उगे ॥ पण शुभ पुत्री तेही न चूके, परण्यो ते किमही न मूके रे माय ॥ ४ ॥ पिउडो पिउडो करती ॥ ए आंकणी ॥ सखी सघली पासे पूछी, तेणे पण निश्चित पूछी ॥ माता मनमांहे मुरछी, जेम जलनाले होये फुणी रे माय ॥ पि० ॥५॥ राजाने तेह जणाव्यो, प्रजाने तेह तेडाव्यो ॥ जयी द्रष्टि तेह धराव्यो, नहीं श्रीचंद्र एम चित लाव्यो रे माय ॥ पि० ॥ ६ ॥ कहे पुत्रा कुंमर दयावो, किहां ते पश्ची तेह वतावो ॥ फरी ज्ञानवे गोदि मंगलावो, जेम हाथे मेगलनो पथावो हो माय ॥ पि० ॥ ७ ॥ देव आगे जेम घण गाजा, नृप आगे कुलाशन राजा ॥ जेम पोढ न पोढे माजा, किहां छाजे मलि ने पाजा हो माय ॥ पि० ॥ ८ ॥ कहे राजा कह्यो कोण तुं, रे निर्गुंण पीउ निगुण तुं ॥ नवि पोढे कांइ ते वळगुं, मरुं पेटे थुंक न गळगुं हो माय ॥ पि० ॥ ९ ॥ नीली कांते जय मारे, तिहां चंदणुं रूव देया रे ॥ जव पाम्यो सयाखिल जाग्ये, मन दोका कांइ न रागे रे माय ॥ पि० ॥ १० ॥ हूं मदनपाल तुं नामे, आ मूल चरित्र करुं नामे ॥ ए बुद्धि चतुरनी भारी, ए मझोटो नर उपकारी हो माय ॥ पि० ॥ ११ ॥ मन मेल तेह मन मराणे, जिणे काजे कन्या परणे ॥ ते तो निर्दन उपकारी, में गनि मति

गमती हारी हो माय ॥ पि० ॥ १२ ॥ मुजने देइ वेश ए मघलो, नवि जाणुं नजीक ते वेगलो ॥ गयो किहां ए नहीं ते नवलो, श्रीचंद्र अपर के पहेलो हो माय ॥ पि० ॥ १३ ॥ ते निसुणी नृपति सवि तेमे, पुरलोकने कहो करो केमे ॥ ए वातनी न करो जेडि, जेम पुत्रीनुं दुःख फेमे हो माय ॥ पि० ॥१४॥ जोयो पण किहांये न लाधो, रह्यो किहांये छपीने अलाधो ॥ एहवे तारक चट बोल्यो, श्रीचंद्र ए में गुण बोल्यो हो माय ॥ पि० ॥ १५ ॥ विलपंती पुत्रीने वारे, तुं खेद म कर बहु वारे ॥ मलशे जरता पुण्य हेते, परं केम उंललीश संकेते हो माय ॥ पि० ॥ १६ ॥ वामांग फुरकण आचारे, में दीठो जेणे आकारे ॥ मुद्रा दीधी छे मुजने, तो किशि चिंता नहीं छे तुजने हो माय ॥ पि० ॥ १७ ॥ पियुडो जिहां लगे नवि मलशे, तिहां लगे मुद्रा तुज फलशे ॥ अर्पिंशे तेहना पाया, मुद्रा मांहे नाम सोहाया हो माय ॥ पि० ॥ १८ ॥ सवि मदन पासेथी लीधुं, आभरण गजादिक सीधुं ॥ सचिवादिक सवि मली लेवे, पर वस्तु पोतानी न होवे हो माय ॥ पि० ॥ १९ ॥ कहे राणी मुद्रा माहरी, आपो ते अमने धारी ॥ कहे ते लेइ गया दीसे, इम निसुणी राणी विकसे हो माय ॥पि० ॥ २० ॥ जीवंतो मदनने राख्यो, कांइ धन देइ निज करी राख्यो ॥ ए पण राजानो बेटो, पर दुःख एणी परे मेटो हो माय ॥ पि० ॥ २१ ॥ राजा पुरलोक वखाणे, उपकृति शिरोमणि करी जाणे ॥ हवे नयर कुशस्थले प्रेखे, राजा निज प्रेख संपेखे हो माय ॥ पि० ॥ २२ ॥ तिहांथी किशि खबर न पाव्या, विलखा थइ पाछा आव्या ॥ कहे राजा हवे शुज दिवसे, मोकलीशे सवि ते देशे हो माय ॥ पि० ॥ २३ ॥ सुखशाता सहुने थावे, श्रीचंद्र वखो मन जावे ॥ पुत्री पण तेहिज ध्यावे, जाणे सवि शुज थइ आवे हो माय ॥ पि० ॥ २४ ॥ हवे क्षत्रिय वेश धरीने, चाल्या श्रीचंद्र मन्न करीने ॥ चंद्रादिक यशनो राशि, श्रीचंद्र चले परवाशि हो माय ॥ पि० ॥ २५ ॥ कोइक महा अटवी, आवी, रवि किरण न होवे प्रजावि ॥ जिहां पल्लिपतिना जोरा, गाम गामे परक ने चोरा हो माय ॥ पि० ॥ २६ ॥ बहु जाति जनावर बहुलां, मृग चित्रक शंबर शशलां ॥ बहु जातिना तरुवर राजी, होइ धीरज धर बहु राजी हो माय ॥ पि० ॥ २७ ॥ तिहां जाते तृषाये पीमे, उच्च देशे जोइ तिहां नीमे ॥ जलथानक दीठ संकेत, एकण दिशे जाय पंखी पोत हो माय ॥ पि० ॥ २८ ॥ एहवे एक दिशे अति जलके, तेजे रवि मंडल चलके ॥ तेजे अंधकार पणासे, चित्त चिंते ए शुं जासे हो माय

तत स्वामी मपडे जोयो, पण दीठो न क्यांये कोयो ॥ चिंते मन किणेही
धार्युं हो माय ॥ चि० ॥ ३० ॥ तत स्वामी मपडे जोयो, पण दीठो न क्यांये कोयो ॥ चिंते मन किणेही
धार्युं हो माय ॥ चि० ॥३१॥ एम चिंति हाथमां लेंइ, धारा तीखी तस जोंइ ॥
गीनाख्यो, किंया पड्यो किंया हाख्यो हो माय ॥ चि० ॥ ३२ ॥ पंखाजालनी उपरे धार्युं, कमलनाल
उपकार महिमी बुद्धि, थाय ए नीति प्रसिद्धि हो माय ॥ चि० ॥ ३३ ॥ हाहाहा
पंख ने वायुं ॥ पंखजाल मांहे नर रहीयो, अधो मुखे तस शिश छेदरियो हो माय ॥ चि० ॥
अकारज महोटुं, घर्युं घायुं पाप ए मोटुं ॥ नरके पण ठाम न पायुं, केम ए अपराधने धायुं हो माय ॥ चि० ॥
॥३४॥ एम आतम निंदा करतो, अज्ञानपणुं मन धरतो ॥ आव्यो तस नरनी पासे, तस करे दीठे खड्ग उघाडे हो
माय ॥ चि० ॥ ३५ ॥ हुं तुं अपराधी ताहारो, कर नेद हवे तुं माहारो ॥ ते बोल शके नहीं बोली, पाडुं कर
अति दीठे तोली हो माय ॥ चि० ॥ ३६ ॥ कर गंशाये जब तिहां मार्युं, जब पाड कुमरे धेर नाख्युं ॥ घणुं
खमीयो पाये नमीयो, ज्ञानविमल मते मन गमीयो हो माय ॥ चि० ॥ ३७ ॥ सर्व गाथा ॥ ५५२ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ ते पोहोनो परलोक, जाणी ते खग तिहां रह्यो ॥ ते दुःखथी धरे शोक, निराहार दिन निर्गम्यो ॥ १ ॥
खेड अगि ते हाथे, आगल चाले जेटले ॥ श्रांत थयो पमी रात्रि, पाम्यो वट एक तेटले ॥ २ ॥ शयनने ढूंते
कुमार, जोड मारी नायगा ॥ देखे कुल गंधार, वट कोटर शाखा घणे ॥ ३ ॥ चिंते चित्तमां एम, कोड
अध्यग मूतो हशे ॥ पहेलां कीधो नेह, आये उपर जोया जिगे ॥ ४ ॥ उघाडे ते द्वार, तिहां कोटर एक
देखीयो ॥ वांकुं काउ तृणेण, ते परहो करी पेखीयो ॥ ५ ॥ धरी साहस मनमांहे, पेठो ते वट विवरमां ॥
आगल एक निवास, देखी अचरिज नरमां ॥६॥ दोहा ॥ शिला उघाडी विधुं करे, देखे तव सोपान ॥ उतरीयो
हसये पडी, आगल विवर उद्दाम ॥ ७ ॥ देखे तेहमां मोटकुं, भुवन एक पाताल ॥ झिगमिग धन पुरीयुं,
रतन दीपके जमाल ॥ ८ ॥ उपर नमि मणि खचित, मंडप एक विचित्र ॥ रत्नसिंहासन मांडीयुं, बेठा कुमर
जह तत्र ॥ ९ ॥ तिहां एक अपरछ पारणुं, सहेजे उपके जाम ॥ रत्न शय्याये बानरी, दीठी एक अभिराम
॥ १० ॥ ते देखी मन चिंतवे, ए तो अचरिज दीठ ॥ अनीहरा देखी बानरी, नयचिंता मांहे पइठ ॥ ११ ॥
शय्या मूकी गुरतमां, लागी कुमरने पाय ॥ वस्त्रांचल आकर्षीने, बेसाडे तिणे ठाय ॥ १२ ॥ कहे कुमर तुं

गानपी, पेटाये दीगंत ॥ पानरी रूपे किम थवे, अपरिज एह महंत ॥ १३ ॥ एह उदंतने जाणवा, इच्छावंत तुं आज ॥ पाल मेलजो समजीये, तो कोइ सीझे काज ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ५४६ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥

॥ पायुं सयायुं वयर हुं माहारुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे कपिनी रुदती थकी रे, कर संज्ञाये तेय ॥ जिती मांहे ने आवीउ रे, देखाडे ने जेथ ॥ देखाडे नजर संकेत ॥ १ ॥ कौतुकी कुमर कलानिलो रे, साहसीया शिरदार ॥ तेहीज धरणीना धणी रे, अवर ते कायर मार ॥ कौ० ॥ ए आंकणी ॥ ते संज्ञा लेइ कुमर ते उठीयो रे, जोइ तो कुंपा दोय दीठ ॥ लीधा ते निज हाथमां रे, अंजन दोय उत्किष्ट ॥ कौ० ॥ २ ॥ एक कालुं एक उजलुं रे, निरखीने चिंते कुमार ॥ तव पानरी संज्ञा करे रे, श्यामांजन नयन संचार ॥ कौ० ॥ ३ ॥ ते अंजन महिमा थकी रे, कन्या थइ अभिराम ॥ दिव्य रूप वेश धारिणी रे, करती कुमरने सलाम ॥ कौ० ॥ ४ ॥ कुमर कहे जडे तुं कोण ने रे, कोणे एम कीधुं काम ॥ थानक ए ने केहनुं रे, कोणे लोपी धर्मनी माम ॥ कौ० ॥ ५ ॥ हर्ष लज्जा संकर थइ रे, भाखे कुमरी वयण ॥ हेमपुराधिप जाणीये रे, मकरध्वज जित मयण ॥ कौ० ॥ ६ ॥ मदनावली तेहनी प्रिया रे, मदनसुंदरी सुता तास ॥ मदनपालथी न्हानमी रे, वेहेनी गुणह निवास ॥ कौ० ॥ ७ ॥ मात पिताने वाहली रे, पामी यौवन नाव ॥ नरनां लक्षण जाणती रे, निर्लक्षण नावे दाय ॥ कौ० ॥ ८ ॥ बत्रीश लक्षण सुंदरु रे, करवो वर में तेह ॥ एह प्रतिज्ञा में करी रे, वर वरीये गुणगेह ॥ कौ० ॥ ९ ॥ हवे एक दिन मुज बांधवो रे, प्रियंगुमंजरी रूप ॥ देखीने रागी थयो रे, प्रगट्यो विरह सरूप ॥ कौ० ॥ १० ॥ ते तो श्रीचंद्रागिणी रे, राधावेधनो कार ॥ तिल तुष राग ते नवि धरे रे, मदन उपर निर्धार ॥ कौ० ॥ ११ ॥ मुज बंधव रागे पहेलमो रे, थइ नीसरी गयो क्यांय ॥ एक पखो जे नेहलो रे, ते तो दुःखी होय प्राय ॥ कौ० ॥ १२ ॥ एक दिन हेमपुरेशनी रे, सभा मांहे सुखकार ॥ गायन गुण गावे घणा रे, प्रतापसिंह कुमार ॥ कौ० ॥ १३ ॥ कोइक अपूर्व श्रीचंद्रनो रे, यश समीर उपन्न ॥ मागणरेणु साहमी करे रे, दीन व्यंजन निष्पन्न ॥ कौ० ॥ १४ ॥ इत्यादिक बहु गुण सुणी रे, आण्युं तस बहु मान ॥ मंत्री शुं करे मंत्रणुं रे, मुज पाणिग्रह काम

॥ कौ० ॥ १५ ॥ तेणे कुंवर जोईने रे, तो जोता पशु कोय ॥ कल्याणनुं धन धन कहे रे, पद्मण दर्शन जोय ॥ कौ० ॥ १६ ॥ एहवे धू ससरा गइ रे, गयो संयुत वन मांहि ॥ कुसुम केलि परमां रही रे, लग आव्यो कोइ मांहि ॥ कौ० ॥ १७ ॥ माणीने व्यारी दिसा रे, काम तणी दुर्वांग ॥ आप कलत्रथी मीहने रे, मूकी एणे निरंग ॥ कौ० ॥ १८ ॥ पुत्र विचारे कश्या जाली रे, दिशा दशा आज तंग ॥ मामथी खेचा गयो रे, नग पत गई मत्र लंग ॥ कौ० ॥ १९ ॥ तेनी एम पुत्र देखीने रे, ते कहे म कर तुं दुख ॥ रत्नपूर नगर तुं जाई रे, पुत्रने मली कर सुख ॥ कौ० ॥ २० ॥ गोत्री सुणे मली सुतने रे, वाहेर काढ्यो केर ॥ मणि तरण-पुर माहे रे, दीधुं तेणे मनमोर ॥ कौ० ॥ २१ ॥ शेठ परिवार ज्यां गयो रे, फालकेरने काम ॥ एक दिन तरणों तिहां गयो रे, नगर कुसुमपुर नाम ॥ कौ० ॥ २२ ॥ सैन्य महोटुं दीठुं तिहां रे, गज रथ तुरग अपार ॥ तिहां नद खेलतो रही रे, मोहन पर्यंक मझार ॥ कौ० ॥ २३ ॥ कुसुम कीडा करणी गयो रे, गणी पशु ते परिवार ॥ मधुर पंखी जाणनी रे, जनक पर्ण आड सार ॥ कौ० ॥ २४ ॥ पद्मिनी तेनी हुं थयो रे, रागी पण नहीं जाण ॥ एक दिन तिहां जातो गयो रे, पण कुलमानो नहीं जाण ॥ कौ० ॥ २५ ॥ शीलरत्न पद्मिनी पाली रे, रत्न देह अजेन ॥ तेणे करी माहरुं शिवपणुं रे, मारुं न थयुं अंग ॥ कौ० ॥ २६ ॥ कुमारी थइ देशे फरे रे, करी जोई तेह समान ॥ तुं देखी कर्णे नारनी रे, में आणी एणे जाण ॥ कौ० ॥ २७ ॥ तुं परणीश एने सुजने रे, देह पात्रादिक नद ॥ तिण अंजन करी मानवी रे, किहां गयो ते दुख ॥ कौ० ॥ २८ ॥ त्रीजे दिन ते आवीयो रे, करी पुत्र मानव रूप ॥ देह मोदक प्रगट कुंजरा रे, गयो मामथी अनूप ॥ कौ० ॥ २९ ॥ आज मध्याह्ने पुत्र यामरे रे, प्रभ अंजे कुमार थाय ॥ आवतां कुमरी माणीने रे, विधा मागन जाण ॥ गयो वन मांहे थाय ॥ कौ० ॥ ३० ॥ तुष राये वा पुत्र दिने रे, आवीन तुं निरधार ॥ पाणिग्रहणने कारणे रे, करी नगरा आगार ॥ कौ० ॥ ३१ ॥ रे तेणस तुं जड थयो रे, तुं पुत्र ज्ञान समान ॥ तेम परणीश तुं पालीशा रे, जगत में कर्यु भरी दान ॥ कौ० ॥ ३२ ॥ एम त्रिगुणी दुगीने गयो रे, मानरी करीने आन ॥ तुष रानजी ने वही नइ रे, पखाले आपणो आज ॥ करतो अधम अज्ञान ॥ कौ० ॥ ३३ ॥ मे माहराके गीतक कर्युं रे, एणे कहो तुमे जो मोण ॥ केम दहा आवतुं थयुं रे, कहो पणि चरित्र न गोप्य ॥ कौ० ॥ ३४ ॥ माहणिक शिरो-

कोइ मूकीये रे, आ मूको दुःख ठाम ॥ ते हमणां आवतो हशे रे, दर्शन तस दुःख धाम ॥ कौ० ॥ ३६ ॥ ज्ञानविमल मति चिंतवी रे, कहे हवे तास जवाप ॥ मन चिंते जे गतदिने हएयो रे, चूकुं सघलुं पाप॥कौ०॥३७॥

॥ दोहा ॥

॥ चिंते चंद्रकला धणी, चिंतित चित्त विचार ॥ पलक मांहे करे अन्यथा, ऐ ऐ कर्म प्रचार ॥ १ ॥ कहे नडे हुं पथिक छुं, धन अर्जनने काज ॥ कुशस्थलथी आवीयो, दरिद्र वशे त्यजी लाज ॥ २ ॥ वट देखी उपर चढ्यो, शयन हेत तिहां एक, कोटर देखी पेसीयो, जावत ए जू एक॥ ३ ॥ ते मांहे तुज पेखते, पाम्यो अचरिज चित्त ॥ में म्हारुं वीतक कह्युं, पूछ्या तणे निमित्त ॥ ४ ॥ कृशोदरि कुमारिका, दुःख म धरे मन- मांह ॥ खग परणशे ए वातनो, वधतो छे उछाह ॥ ५ ॥ ते माटे जज धीरता, लख्युं न मिटे कोय ॥ कर्म थकी वलीयो नथी, सचराचर जीय लोय ॥ ६ ॥ एम निसुणी कहे कन्यका, प्राणनाथ अवधार ॥ मुज जाग्ये पाउधारिया, करवा मुज उद्धार ॥ ७ ॥ पहेलां में कीधो हतो, एहवो चित्त विचार ॥ जे नर बत्रीश लक्षणो, लक्षित ते जरतार ॥ ८ ॥ तेह प्रतिज्ञा माहरी, पूरण थइ छे आज ॥ पाणिग्रहण थकी होवे, एम मन वंछित काज ॥ ९ ॥ कहे कुमर जो लक्षण होये, तो शे फरीये देश ॥ एकाकी एणे वेशमां, किश्यो लक्षणनो निवेश ॥ १० ॥ कुमर कहे लक्षण किश्यां, कोण तस लहे विचार ॥ सुखीयाने सवि सांपडे, भायाना जंकार ॥११॥ कर्म खाये लक्षण रहे, एहवो लोकनो न्याय ॥ लक्षण व्यंजन वारता, शास्त्र मांहे कहेवाय ॥ १२ ॥

॥ ढाल वारमी ॥

॥ नमणी खमणीने गय गमणी ॥ ए देशी ॥

॥ कहे कनी लक्षण बत्रीश, देखी रूप बहुत सुजगीश ॥ शरीर मांहे आकार विशेष, जिणथी शुजाशुज फलने पेख ॥ १ ॥ पंच दीर्घ चार ह्रस्व कहीजे, सूक्ष्म पंच उन्नत चार लीजे ॥ सत अरुण त्रण पोहोला जाणो, त्रण आगंध गंजीर त्रण आणो ॥ २ ॥ भुज नेत्र अंगुल जिह्वा नासा, पंच दीर्घता जाय विलासा ॥ पृष्ठ कटि पुरुषचिह्न ने जंघा, ह्रस्वताये करी शोजा रंजा ॥ ३ ॥ दंत त्वक् नख पर्व ने केशा, ए सूक्ष्म कीणा सुचि देशा ॥ कूख अंश शिर पाद ए चार, उन्नत पण होवे शिरदार ॥ ४ ॥ पाणि चरण तख तालु रसना, नेत्र

जाक हृदय मुख पृथुल होये अनमी ॥ ५ ॥ नीच
प्रांत नख दंत ने वचना ॥ नख रक्ते सप्तांग नृप लक्ष्मी, जाक हृदय मुख पृथुल होये अनमी ॥ ५ ॥ लक्षणनुं देह जणावे, कीकी कच ए श्याम
रसन स्वर जाग अगाध, नित्य होवे तस जस निराबाध ॥ ए लक्षणनुं देह जणावे, कीकी कच ए श्याम
वनाये ॥ ६ ॥ कर पद रेखाने आकारे, बत्रीशना वतीया सुनचारे ॥ ते पण सामुद्रिकमां बोल्या, ते पण
वयण थकी तेणे खोल्यां ॥ ७ ॥
॥ छप्पो ॥ छत्र कमल धनु चक्र, वाजि स्वस्तिक ने तोरण ॥ रथ अंकुश ने कूर्म, सिंह ध्वज पादप वारण ॥ कमलाकर ने चक्र,
मत्स्य यव प्रासाद, यूप पर्वत ने दर्पण ॥ चामर सर सुभ माल, वृषभ कमंडलु पूरण ॥ बत्रीश लक्षण बोलीये, किहां कलश लक्षि वखाणीये ॥ १ ॥
नील शिखि मत्स सिंधु ए जाणीये ॥ बत्रीश लक्षण बोलीये, किहां कलश लक्षि वखाणीये ॥ १ ॥
॥ पूर्व ढाल ॥ कीकी केश होये जसु काला, जिहां जाये तिहां सुख सुगाला ॥ तनु शोभावी वदन सुकु-
माला, ते मांहे नासा अतिहि विशाला ॥ ८ ॥ तेहथी अधिक वली नयननी शोभा, रूपे तेहने मोहे रंभा ॥
वाजे तस घर भेरी भंभा, वचन सुणे जे होवे गतदंभा ॥ ९ ॥ देह वर्णथी अधिक कोमलता, तेहथी अधिक
कही वचन कोमलता, तेहथी अधिक गंभीर गुण भाख्या, सत्त्वमांहे सघला गुण दाख्या ॥ १० ॥ ए सर्व
लक्षणनी जाण, जाणंता शी करो छो पिछाण ॥ वली एहवुं अशि करे जस होवे, ते सामान्य नर कदही न
जोये ॥ ११ ॥ काकुं काकुं शुं बोलावो, कायर सत्त्वे नवि चलावो ॥ प्राणनाथ पति जीव तुं माहरुं, आनंद
कुमरिजन ए निरधार ॥ १२ ॥ रागविचारनुं नहीं मुज काम, पितल संगे पण मन न विसराम ॥ माहरे एक
शरण छे ताहरुं, पाणिग्रहण करो हवे माहरुं ॥ १३ ॥ आज प्रभाते ते आवेशे, तमे एक कीजो दुःख देशे ॥
अपर ठाम किहांयक हवे जइये, जेम दुर्जन लखनी दृष्टे नवी रहीये ॥ १४ ॥ यतः ॥ शकटं पंचहस्तेन,
दशहस्तेन वाजिनं ॥ हस्ति हस्तसहस्रेण, देशत्यागेन दुर्जनः ॥ १५ ॥ ढाल ॥ अथवा जेम तुमचे मन
भावे, मुजने शी हवे चिंता थावे ॥ सिंह तणे थंके जे बेसे, तेहने श्वापद भय श्यो देशे ॥ १६ ॥ परणवानी
सामग्री सघली, भेलवी छे विवाहनी पहेली, मध्य दिने लग्न अछे शुभवेला, गंधर्व विवाह करी करो लीला
॥ १७ ॥ एम वली वयण सुणी कहे कुमरो, देखीये ते सब कहेवो अमरो ॥ अरे भीरु मनमां भय म करे,
देव गुरु धर्मनुं नाम ज समरे ॥ १८ ॥ पण इहां वेगां केम जाणीजे, जे मध्याह्ने लगन आणीजे ॥ सा कहे
घरने निकट अघट छे, तिहां वातायने एक तट छे ॥ १९ ॥ लघु बारी छे तिहां सर्व जणाय, रात्रि दिवस

भिमाण जणाय ॥ एणी परे प्रीति गोठि करीने, उपवास पारणुं कीधुं तेनीगरीने ॥ २० ॥ मध्याह्ने थयो तस विवाह, ते कुमरीने कुमर ते नाह ॥ नागरवेली क्रमुक तरु योगे, शोभे तेम तेहना संयोगे ॥ २१ ॥ सा कहे स्वामी मन केम नाव्यो, तव वृत्तांत ते सकल जणाव्यो ॥ पापी आपणे पापे पचाय, कवी कहे जिम सरज्युं तेम थाय ॥ २२ ॥ यतः ॥ कुमंत्रैः पच्यते राजा, फलं कालेन पच्यते ॥ इंधनैः पच्यते तापः, पापी पापेन पच्यते ॥ १ ॥ एक दिवस तिहां रहीने लेवे, सार सार जे रत्न मदेवे ॥ कुंपी दोय अंजननी लेइ, चाल्यां तिहांथी करीने दोइ ॥ २३ ॥ नीसरी बाहिर शिक्षा दृढ दीधी, निधि भूमि थापीने रक्षा कीधी ॥ चाल्या तिहांथी साहस साथे, चंद्रहास करवाल ले हाथे ॥ २४ ॥ केशर परे अटवी उलंघे, ग्राम एक आव्युं श्रमभंगे ॥ सरपाले आवी उतरीयां, आनंद लीला मंगल भरीयां ॥ २५ ॥ कहे प्रियाने ए वनमांहे, पाका करो जमीये उछाहे ॥ ते कहे पाक करुं हुं स्वामी, सामग्री मेलवो मन कामी ॥ २६ ॥ आरामिक नर पासे अणावे, घृतपूरणनी सामग्री जणावे ॥ पूप अपूप करया थयी बहुला, शाक पाक विधि मांड्या पहुला ॥ २७ ॥ हवे प्रताप नृप सुत करी स्नान, भूषण भूषित शुभ वसन परिधान ॥ तीर्थाभिमुख थइ देव वंदे, चैत्यवंदन करतो आनंदे ॥ २८ ॥ विधि पंचांग करी परणाम, उत्तरासंग योजित सुखधाम ॥ दोइ करकमल भालस्थले जोमी, भणे जिनगुण मद मत्सर छोमी ॥ २९ ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥ परमानंद प्रकाशभास, भासित भव पीला ॥ लोकालोक लोकवे, नितु एहवी लीला ॥ भाव विभावपणे करी, जेणे राख्यो अलगो ॥ तक परे पय मेलवी, तेहथी नवि वलगो ॥ तेणी परे आतम भावने ए, विमल कर्यो जेणे पूर ॥ ते परमातम देवनुं, दिन दिन वधतुं नूर ॥ १ ॥ नामे तो जगमां रह्यो, थापना पण तिमही ॥ द्रव्ये भव मांहे वसे, पण न कले किमही ॥ भाव थकी सवि एकरूप, त्रिभुवनमें त्रिकाले ॥ ते पारंगतने वंदीये, त्रिहुं योगे स्वभावे ॥ पावे पावन गुण थकी ए, योगखेमंकर जेह ॥ ज्ञानविमल दर्शने करी, पूरण गुणमणि गेह ॥ २ ॥ इति

॥ ढाल पूर्वली ॥ एम चैत्यवंदण नमुत्थुणं, कहि भाव थकी नमिऊणं ॥ एहवे तस मुद्रा पेखे, नाम वांची सफल जनु लेखे ॥ ३० ॥ वैताढिक मुखथी जे निसुण्यो, कुशस्थल पुरवासी पभण्यो ॥ श्री श्रीचंद ते एहीज दीसे, रूप विद्या कला गुणगीसे ॥ ३१ ॥ हरखी पणि हीयमा मांहे, कह्यो न जाये तेह उमाहे ॥ औदार्यादिक

जे गुण धारी, श्रीचंद्र एम थइ निरधारी ॥३२॥ कहे स्वामीजी जोजन करीये, पछी नियमनुं स्मरण कारये ॥ पंच परमेष्ठि पद संजारी, गुनवेळा ए संप्रति धारी ॥ ३३ ॥ कहे कुमर प्रिये कहुं ए वाण, जोजन ते मधं माधाऊं ॥ कोइ अतिथि जो नजरे आवे, तस दीजे तो मनि सुख थावे ॥ ३४ ॥ मरवाळे दिशाने जोतां, चेड्डु चेठां सुणय पनोतां ॥ पुण्यवंत मनोरथ फळतां, कांइ चेळा नहीं योग मिळंतां ॥ ३५ ॥ तस जाग्य वळे तिहां दीठं, मुनियुगल अमृतथी मीठुं ॥ जेम चंदने चकोर किशोर, रवि चकवाने जेम घन मोर ॥३६॥ ज्ञानविमल मुनीश्वर तेह, थम कम नामे चेड्डु जोमे ॥ प्रतिलाजे मुनिने जरपूर, शाळ दाळ सिता घृतपूर ॥३७॥सर्व गाथा॥१३६॥

॥ दोहा ॥

॥ जमवारो कृतारथ गणे, पोहोंचावीने साथ ॥ आवे जोजनने जणी, बेहु तिहां निर्बाध ॥ १ ॥ यशु जणे गाये तुंजीने, प्रिया समेत सुचंग ॥ पाछळे यावे साधुनी, पासे गयो मनरंग ॥ २ ॥ यशुजी मुनिने आगळे, चंदे करी प्रणाम ॥ चिंतवित सुपात्रनो, दुर्लभ योग ए ताम ॥ ३ ॥ दान सुपात्रे अवसरे, शुद्ध शुद्ध निराबाध ॥ अविश्रांते समाधि मरणने, अजव्य जीव नवि लाध ॥ ४ ॥ उत्तम पात्र सुसाधु जे, सुज श्रावक मध्य पात्र ॥ अविरति सम्यग्दृष्टि जे, तेहि जघन्य कहुं पात्र ॥ ५ ॥ रत्न कनक रजत मृत्तिका, लोह सम पांच ए पात्र ॥ जिन मुनि श्रावक समकिती, मिथ्यात्वी पण मात्र ॥ ६ ॥ यतः ॥ काव्ये सुपत्तदाण० ॥ १ ॥ उत्तम पत्तं साहु, मज्झिम पत्तं च सावया जणिया ॥ अविरय सम्मदिठ्ठी, जहन्न पत्तं मुणेयव्वं ॥ २ ॥ दोहा ॥ एम वाणी मुनिनी सुणी, कहे सुजने अपराध ॥ लाग्यो एक खग में हण्यो, जेम मृगने हणे व्याध ॥ ७ ॥ अटवीमां अज्ञानथी, कोइ कर्मने जोर ॥ लागुं पाप ते हृदयमां, खटके काळजनी कोर ॥ ८ ॥ साल परे ते अति घणुं, साले छे नित्य नित्य ॥ प्रायश्चित्त तस आपीये, मुनिवर आणी प्रीति ॥ ९ ॥ कहे मुनि रे पुण्यात्मा, प्रमाद थकी होये पाप ॥ निविड पण सुजने पापजीरुता, महोटो पश्चात्ताप ॥ १० ॥ तिणथी पाप ते जायशे, वळी अरिहंतने ध्यान ॥ निर्मळ मने जे कीधां ते टळे, तो सहुना कोण मान ॥ ११ ॥ अरिहंत चैत्य करावीये, दीजे तस उपदेश ॥ निर्मळ मने ध्यावये सदा, न रहे पापनो लेश ॥ १२ ॥ यदुक्तं ॥ श्री सिद्धांते ॥ महारंजीआए महापरिग्गहिआए कुण महारेणं पंचिंदिय वहेणं, जीवा नरया उववाए कम्मंपकरंति ॥ कहाणंते जीव सुहदीहाउयत्ताए कम्मंप-

कर्मणां मोयणाणं पाणं सद्दाणां गुणोच्चरणा॰ ॥ महारंभ पमाणं माइस्स धदिणा धर्मेगिणा जायणाणुणा- गिणा॰ ॥ आयंतराणं मणुयोणं विकरणेणं मरणं पाणं साइमं साइमेणं पदियाणेणा एवं खलु जीवा गुरुदी- हाउ मणाउ कम्मपकरेंति लवसियाकोसस्सा कडाणं कम्माणं मुक्खो अवियइत्ताणो अवेदन्ना ॥ इत्यादि ॥

॥ दोहा ॥ ते वाणी सांहहं पाप ए, रहेशे नहीं लगार ॥ मुनिवयण एम सांनली, हरख्यो चित्त मकार ॥ १३ ॥ लक्षण नाटारंभे करी, लखीये छे शुभ तेज ॥ महोटा नृपति प्रनावको, जावी जो बहु हेज ॥१४॥ ते वाणी समकितने जजो, धर्म थाजो थिर खोज ॥ अमने ए उपदेश छे, अवर न अमने खोज॥१५॥सर्व गाथा॥६५१॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ मोरा साहेब हो श्रीशीतल नाथ के, विनति सुणो एक मोरडी ॥ ए देशी ॥

॥ कहे मुनिवर हो संसारमां सार तो, समकित छे जेणे मेहरो ॥ तस पाखे हो शोजे नवि धर्म के, देव विना जेम देहरो ॥ १ ॥ सुरमांहे हो जेम इंदो जाण के, ग्रहगणमां जेम चंद्रमा ॥ जेम गिरिमां हो मंदरगिरि तुंग के, महिला वृंदमां जेम रमा ॥ २ ॥ नवि देवा हो मांहे जिनचंद के, तेम समकित नवि धर्ममां ॥ तस पाखे हो नवि किरिया कर्म के ॥ जव नाटकना जर्ममां ॥ ३ ॥ चिंतामणि हो वली सुरतरु वृंद के ॥ सुरगवि पारस पाहाणमां ॥ निधिरयणा हो इत्यादि सुवस्तु के, समकित उपम अयाणमां ॥ ४ ॥ प्राये बहुला हो कीधा नवि धर्म के, दानादिक जिनपूजना ॥ अनंता हो जवचक्र मकार के, जव उछेदे न नीपना ॥ ५ ॥ यतः ॥ पायं अणंत देउल, जिणपडिमा कारिआय जीवेण ॥ असमंजस वित्तीए, नवि लद्धो दंसणलवोवि ॥ १ ॥ सम्मत्तं परमं तत्तं, सम्मत्तं परमो गुरु ॥ सम्मत्तं परमो देवो, सम्मत्तं परमं पयं ॥ २ ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ धर्म सुरतरु हो कह्युं ए मूल के, धरण देवलनुं पीठ छे ॥ धर्म प्रवहण हो कह्युं पयठाण के, सवि गुण मणिनिधि दीठ छे ॥ ६ ॥ ते समकित हो होय आतम जाव के, अथवा वली उपदेशथी ॥ चउअण राम हो वली मोहनी सग के, क्षय उपशम उपशम क्षय थकी ॥ ७ ॥ ए साते हो प्रकृति क्षय जाण के, उप- शम मिश्र लहे वखे ॥ समकितथी हो होये गुण परगहके, दोष अनादि पडे टले ॥ ८ ॥ जेणे जीवे हो एक फरस्युं समकित के, तेह अर्ध पुद्गल करे ॥ जवमांहे हो आशातना होय के, जिन प्रमुखनी ने करे ॥ ९ ॥

चरकृष्टी हो दर्शन आराध के, चारित्र संयुत जो होवे ॥ नव आठे हो नियमा ते जीव के, शिवपद नयशान
जोये ॥ १० ॥ पामीने हो जे हारं नेहू के, काल अनंत फरी लहे ॥ जग प्रामि हो किमही नवि जाय तो,
रत्नत्रयमां धुर कहे ॥ ११ ॥ ज्ञान दर्शन हो होय एकी जाय तो, जो तेहमां चारित्र नले ॥ तो पामे हो शिव-
पद क्षणमांहे के, नयकुल संकट नवि टले ॥ १२ ॥ जेम शारदे हो होये कमल विभाय के, तेम समकित विणु
नवि क्रिया ॥ चतुरंगिणी हो सेना सज्ञ होय के, नायक विणु एहवी किया ॥ १३ ॥ सह पामे हो न तरं
जेम तरुणज के, अगुल्ल अगाध समुद्रमां ॥ तेम समकित हो पामे नयपार के, यद्यपि होय अतिगुत्रमां ॥१४॥
जेम प्रहरण हो पामे होये शूर के, हीणो नर संग्राममां ॥ जेम पावक हो विण इंधण होय के, हीण तेम
जिण ठाममां ॥ १५ ॥ तेम समकित हो पामे विभाय के, किरियाये नहीं निर्जरा ॥ तस चारित्र हो शुद्धबंध
उपाय के, यद्यपि पहे कष्ट नरा ॥ १६ ॥ विणु समकित हो करयुं अनुष्ठान के, तेल्हाणा पायक समुं ॥ जेम
वहिरा हो आगल जे गान तो, अंधारे नाटक समुं ॥ १७ ॥ नूम संभण हो गृतसंभन प्राय के, जिहां मिथ्या-
गति नवि गम्युं ॥ गुणकारी हो होये ते पण कृत्य के, मंदमिथ्यात्वे जे रम्युं ॥ १८ ॥ मुले नाग्ये हो अने
समकितवंत के, आपापणा अभिमानथी ॥ केइ शूरा हो एम वयणना आय के, पण सूना ते ज्ञानथी ॥ १९ ॥
ते माटे हो जाणीजे तेह के, आचरणा होये सहजथी ॥ करे किरिया हो धर्मादिक जेह के, ते निराशंसना
गहनथी ॥ २० ॥ नय गुणथी हो होये यद्यपि रिक के, तोये परनयथी टरे ॥ धर्म कार्ये हो होये विधिनो
संग के, आगल जिन आणा करे ॥ २१ ॥ जेम गणधर हो मुनि सुविहित वाणी के, सूत्र सुणवुं तिहांथी करे ॥
परसंगे हो नहीं निज गुण लेश के, परगुण गुणया नित्य धरे ॥ २२ ॥ कोइ अविरतिवंत हो न धरे पच्चक्खाण
के, आचार फलदाकरा ॥ पण निषे हो मन चरणने आगे के, नयगुरु जाणे किंकरा ॥ २३ ॥ कोइ विरतिनो
हो होये छद्मस्थान तो, तास सहाय करे पणुं ॥ दंतादिक हो परमतना देख के, मन ललचावे न आपणुं
॥ २४ ॥ अणु सरिखो हो जे परउपकार के, ते मेरु समान करी गणे ॥ विसारे हो नवि कोइ उपकार के,
शाके परदुःखने हणे ॥ २५ ॥ रागी दोषी हो न गणे ते देव के, दोषी वयण न सांभले ॥ जिहां संवर हो ते-
हीज तत्त्वनंथ के, आश्रव नव मन अटकले ॥ २६ ॥ इंद्रियसुखने हो देखे गुणनकि के, मनथी पण नवि
मागने ॥ कर्मनिर्जर हो देते करे धर्म के, प्रभावनादिक गुण ठवे ॥ २७ ॥ इत्यादिक हो होये सहज प्रमाण

के, ते तो अंगे न देखीये ॥ कह्यं समकिती हो अमे बुं जगमांहे के, माया शुरु ए देखीये ॥ २८ ॥ उते समकिते हो हैत्या तस आउ के, नरक तिर्यंचगति वारणो ॥ सुरनरगति हो समकित युत होय के, परण गंयुत शिवसुख घणो ॥ २९ ॥ पूर्वबंधे हो ओ आयु न होय के, एणी रीते जाणीये ॥ बध्धायु हो नर तेहने होय के, चउगति भ्रम पण आणीये ॥ ३० ॥ इत्यादिक हो बहु अर्थे विचार के, समकित केरा शास्त्रमां ॥ कह्यं केता हो सुण राजकुमार के, दृढ होजो समकित गात्रमां ॥ ३१ ॥ विजय नृपनी हो हरिवल नृप नीम के, कथा कहीजे नामथी ॥ पडिकमणा हो शृंखथी लही तेह के, वलि जाणे समकित नामथी ॥ ३२ ॥ कह्यो समकित हो दृढ चित्त मजार के, जिनमत जाणे ते रागीयो ॥ डोलायो हो मोहे न लगार के, वरचित्त वरनागीयो ॥ ३३ ॥ प्रायश्चित्त हो लेइ गुरु पास के, थयो निःशल्य गुरु वयणथी ॥ ज्ञानविमलनी हो मते जेहने रंग के, अविचल समकित सयणथी ॥ ३४ ॥ सर्व गाथा ॥ ६०३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुरुवचन अंगीकरी, प्रणमी गुरुना पाय ॥ प्रिया सहित सुखचैनथी, आगल चाल्यां जाय ॥ १ ॥ अनुक्रमे जातां आवीयुं, नयर कल्याणपुर नाम ॥ सस देशनो अधिपति, अन्ने गुणविक्रम नाम ॥ २ ॥ तेह नगरमां चैत्य छे, रुंकखरा अभिराम ॥ जाणे मेरुथी आवीयुं, कनक शृंग तेणे ठाम ॥ ३ ॥ चैत्यमांहे जइ जिन नमे, करे मधुर स्वरे गीत ॥ एहिज तत्त्व करी लहे, जिनवरसुं बहु प्रीत ॥ ४ ॥

॥ अथ जिनस्तुति ॥ राग वसंत ॥ सारंग ॥

॥ जिनराज हमारे दील वस्या, किम वस्या किम वस्या किम वस्या ॥ जि० ॥ ज्युं घन मोर चकोर किशोरने, पंकजशा प्रेम मन वस्या ॥ जि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ वीतराग तुम मुद्रा आगे, अवर देव कहीये किस्या ॥ जि० ॥ रागी दोषी कामी क्रोधी, जे होये तेहोनी शी दिशा ॥ जि० ॥ २ ॥ आधि व्याधि जरनी प्रसरा, अगदी ते सघलां नस्यां ॥ जि० ॥ जेणे तुम सेव लहीने छोडी, तेणे मधु मधा परे कर घस्या ॥ जि० ॥ ३ ॥ मोहादिक अरियण गया दूरे, आप जयथी ते खस्या ॥ जि० ॥ ताली देइ नयण सदागम, प्रमुखा ते मदि मन धस्या ॥ जि० ॥ ४ ॥ [illegible]

अमारे एह शरीरे, हरख रोमांचित उल्लस्यां ॥ जि० ॥ ५ ॥ मिथ्यामत छरने बहु प्राणी, जे इव थिर करवे मस्या ॥ जि० ॥ ते इवे ज्ञानविमल प्रभु पामी, परम सुधारस में लस्या ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति गीतं ॥

॥ दोहा ॥ एम सवी बाहेर आवीयो, प्रिया सहित कुमार ॥ तिहां नर नारी पगे पगे, जोवे अनिमेष विचार ॥ ५ ॥ कोइ कुमर कोइ सुंदरी, कोइ चिवर पटकूल ॥ कोइ मुख कोइ आजरण तनु, कोइ कुंडल शस्त्र अमूल ॥ ६ ॥ वर्णन करता नागरा, मांहोमांहे विशेष ॥ पुर उद्यान मांहे जइ, सजे जोजन सुविशेष ॥ ७ ॥ प्रिया सहित सरोवर तटे, बेठा जइ तरु ठाय ॥ पति आदेशे मा जमे, यावत् करी पट लाज ॥ ८ ॥ तेहवे कोइ आवीयो, कापालिक नर एक ॥ कुमर पासे उजो रही, निरखे फरी फरी टेक ॥ ए ॥ बत्रीश लक्षण सुंदरु, देखी हरख्यो चित्त ॥ कार्यसिद्धि इवे थायशे, योगी चिंते मित्त ॥ १० ॥ लक्षणने ए मारिशो, नहीं गुण विक्रम रूप ॥ एम चिंती बोलावीयो, कुमरने कहे प्रतिरूप ॥ ११ ॥ परगुण ने निज दोषना, विरला होवे जाण ॥ परकार्यने सधारवा, विरला परदुःख जाण ॥ १२ ॥ यतः ॥ विरला जाणंति गुणा, विरला पिछंति अप्पणो दोसा ॥ विरला परकज्जकरा, परदुःखे दुखिया विरला ॥ १ ॥ विरला जये धीरा, विरला पावंति निपुणा नेहा ॥ विरला अतकुहिहिं, कीकिया परगुहे विरला ॥ २ ॥ दोहा ॥ निगुणी कुमर कहे इस्युं, कुण तुं किहयुं ते काम ॥ कहे खर्पुरानो अवुं, योगी त्रिपुरानंद नाम ॥ १३ ॥ गुरुमुखथी विद्या ग्रही, परोपकारने हेत ॥ कंचन नरने साधवा, जमुं देश संकेत ॥ १४ ॥ कोइ न दीठो तेहवो, जे उत्तर साधक थाय ॥ इहां तुं दीठो लक्षणे, उपकारीने अमाय ॥१५॥ वपु लक्षण कांते करी, प्रमत्त थयुं मुज मन्न ॥ थाये तो तुजथी हुवे, तुज सम को नहीं अन्न ॥ १६ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

रसीयानी देशीमां ॥ श्रीउवज्झाय बहु श्रुत नमो जावशुं ॥ ए देशी ॥

॥ कहे रे कापाली योगी कुमरने, उपकारी शिरदार ॥ राजेसर ॥ चंदन तरु जो फल हीणो कह्यो, तोपण तनु थारे करे उपकार ॥ रा० ॥ १ ॥ वात विचारी करतां गुण होये, अविचारे मन ताप ॥ रा० ॥ दुर्जन जनम केम करी लेखीये, लखमले पूरव पाप ॥ रा० ॥ वा० ॥ ए आंकणी ॥ २ ॥ कृष्णागरु निज दाह-

पर्नुं म्भी, करी परिमल तणी धार ॥ रा० ॥ एम सज्जनने सहज धकी होये, परदुःख भंजण श्रास ॥ रा० ॥ वा० ॥ ३ ॥ ते माटे हुं पण तुम प्रार्थु, हो मुज विद्याना सहाय ॥ रा० ॥ श्राज निशाये उत्तर साधकुं, जेम ए कारज थाय ॥ रा० ॥ वा० ॥ ४ ॥ यतः ॥ पर पत्थण पवन्नं, मा जणणिं जणेसि एरिसं पुत्तं ॥ माउ-यरेवि धरिज्जइ, पुरथण नंगो कर्ज जेणं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ हवे कोइ अवणी एहवो गुत जणे, मागे परने कर जोमी ॥ रा० ॥ माग्युं न दीये दीणो तेहथी, एहवो न जणाय रे हो ॥ रा० ॥ वा० ॥ ५ ॥ कुमर कहे हुं जोइये साधतां, ते कहे निशि शमसान ॥ रा० ॥ नरशवथी ते विद्या साधशे, तुम सरखे अजिराम ॥ रा० ॥ वा० ॥ ६ ॥ बीजी सामग्री सवि मेळवी, मेळवतां नहीं वार ॥ रा० ॥ कुमर कहे जो एम तो तिहां जइ, कर सामग्री तैयार ॥ रा० ॥ वा० ॥ ७ ॥ योगीये जइ सामग्री मेळवी, जे जे जुगति रे होय ॥ रा० ॥ अग्निकुंरुमां नरशव प्रमुख बहु, कृष्ण चतुर्दशी होय ॥ रा० ॥ वा० ॥ ८ ॥ हवे श्रावी सवि वात प्रिया प्रत्ये, कही जेम जाखी रे तेम ॥ रा० ॥ कहे स्वामी एहथी नवि विससो, ए कूरु कपटनी रे सीम ॥ रा० ॥ वा० ॥९॥ तिहां तमने जावा हुं नहीं दीउं, जये करी धूजते श्रंग ॥ रा० ॥ निर्घृण निर्लज्ज कुटिल हुये पणुं, स्यो तेहनो करो संग ॥ रा० ॥ वा० ॥ १० ॥ एम मांहोमांहे वचन परंपरा, करतां श्रावी रे राति ॥ रा० ॥ महीं घरगोखे बेठी ते प्रिया, थाशे जिहां परजात ॥ रा० ॥ वा० ॥ ११ ॥ कुमर कहे सवि सुंदर होयशे, जेहनुं निर्मळ चित्त ॥ रा० ॥ त्रिकरण योगे जे छे निर्मळा, पग पग मळे तस वित्त ॥ रा० ॥ वा० ॥ १२ ॥ मलिनाशयने दुःख परंपरा, सुहणे सुख नवि होय ॥ रा० ॥ परउपकृति करतां नवि कंपीये, विघन किश्युं नवि होय ॥ रा० ॥ वा० ॥ १३ ॥ राज्य प्राण लक्ष्मी सवि कारीमि, जातां न लागे रे वार ॥ रा० ॥ पण जे वाचा निज मुख जाखीया, ते मत जाउ लगार ॥ रा० ॥ वा० ॥ १४ ॥यतः॥ राज्यं यातु श्रीर्यो यातु, यातु प्राणा विनश्वराः ॥ परं या स्वयमेवोक्ता, वाचा मा यातु शाश्वती ॥ १ ॥

जावार्थः—राज्य जाओ, लक्ष्मी जाओ, जेनो नाश थाय छे एवा प्राण जाओ, परंतु पोताना मुखमांथी निकळेली वाणी निरंतर म जाओ.

॥ पूर्व ढाल ॥ दुःख म धर मनमांहे माननी, श्रीनवकार प्रजाव ॥ रा० ॥ शुन होशे सघलुं जावियखे, चिंता मन नवि ल्याव ॥ रा० ॥ वा० ॥ १५ ॥ वृक्ष उपर रहेजो निर्जयपणे, वानरी रूपे रे नारि ॥ रा० ॥ यद्यपि

तुं मनमांहे दुःख धरे, पण कार्य करशुं निरधार ॥ रा० ॥ पा० ॥ १६ ॥ एम कही पानरी करीने ते गयो, लेइ करवालने हाथ ॥ रा० ॥ योगी पासे तिहां समशानमां, सामग्री सवि साथ ॥ रा० ॥ कुंडमें नरशव हाथ ॥ रा० ॥ पा० ॥ १७ ॥ कुमर कहे निर्भय थइ साधजे, हुं तुं उत्तर साध ॥ रा० ॥ योगी जाप होम विधिशुं करे, कुमर रह्यो निराबाध ॥ रा० ॥ पा० ॥ १८ ॥ निशीथ समये योगी कहे इस्युं, सांभळ वीर कोटीर ॥ रा० ॥ उत्तर दिशि वन एक महंत छे, तिहां मृत छे एक चोर ॥ रा० ॥ पा० ॥ १९ ॥ शाखा लंबित मृतक इहां आणशुं, जेम होये कारज सिद्ध ॥ रा० ॥ तेह वचन अंगीकरी तिहां गयो, साहसथी होये सिद्धि ॥ रा० ॥ पा० ॥ २० ॥ तिहां वट उपर चढी शवने ग्रही, असिये छेदी ते बंध ॥ रा० ॥ वटथी हेठुं शव ते नाखीयुं, फरी वळगुं वट गंध ॥ रा० ॥ पा० ॥ २१ ॥ पुनरपि वट उपर चढी साहसी, बंधन छेदीने लीध ॥ रा० ॥ अचरिज पामी मृतक करे ग्रही, उतरीयो धरी धैर्य ॥ रा० ॥ प्रतिज्ञा पूरण कीध ॥ रा० ॥ पा० ॥ २२ ॥ कुमारे खांधे केशर हाथमां, पथे आणे ते ठाम ॥ रा० ॥ अट्टहास करी ए हवे बोलीयुं, शब तेणे समये उद्दाम ॥ रा० ॥ पा० ॥ २३ ॥ रे सत्त्विक तुं नरपति पुत्र छे, एक कथा संभळाय ॥ रा० ॥ एम सांभळीने मौन धरी रह्यो, कुमर ते अचरिज पाय ॥ रा० ॥ पा० ॥ २४ ॥ शब कहे जो तुं हुंकारो दीये, तो कहुं हुं एक वात ॥ रा० ॥ पद्मावतीनी मौक्तिक जे अछे, दाखुं तस अवदात ॥ रा० ॥ पा० ॥ २५ ॥ तथाहि ॥ क्षितिप्रतिष्ठित नयरनो राजीयो, सुत गुणसुंदर सार ॥ रा० ॥ सुबुधि सचिव छे तेहनो गुणनिलो, प्रीति परम सुखकार ॥ रा० ॥ पा० ॥ २६ ॥ वनक्रीडा योगेदी नीसर्या, पोहोंता महा अटवीमांहे ॥ रा० ॥ तृषाक्रांत थये सर एक पामीया, पाळे यक्षायतन मांहे ॥ रा० ॥ पा० ॥ २७ ॥ ते जळपान करी मंत्री थयो, अश्वनो रक्षक ठाम ॥ रा० ॥ नृपसुत सरोवरे मीला कारणे, गयो सर तट सुखधाम ॥ रा० ॥ पा० ॥ २८ ॥ तिहां क्रीडंति निरखे कन्यका, कर जाह्युं एक पद्म ॥ रा० ॥ नृपसुत देखी पद्मने फरसीयुं, करदंत श्रुत सद्म ॥ रा० ॥ पा० ॥ २९ ॥ संज्ञा करी एम गेहे हर्षशुं, सा पोहोंती निज ठाम ॥ रा० ॥ कुमरे ते सवि सचिवने दाखव्युं, थयो पहनो हतधाम ॥ रा० ॥ पा० ॥ ३० ॥ मंत्रिये निज बुद्धे ते अटकळ्युं, कहे सुणो पहनो मर्म ॥ रा० ॥ दंता नामे नयर ते जाणीये, नामे पद्मावती शर्म ॥ रा० ॥ पा० ॥ ३१ ॥ कर्णदेव राजानी नंदिनी, तुजशुं धरे अनुराग ॥ रा० ॥ हरख्यो कुमर समित्र तिहां गयो, आरामिक गृहे लाग ॥ रा० ॥ पा० ॥ ३२ ॥ मालणी मुखे

करी लाग जाणवीनुं, मनोहर कुमारे जे दीठ ॥ रा० ॥ ते दहा आव्यो जे दहे सुं कह्यो, शिक्षा गुरु गुरु रुठ ॥ रा० ॥ वा० ॥ २३ ॥ ते मालणीनुं शिर दणी रीसथी, चंदननीने रे हाथ ॥ रा० ॥ निष्कासी ते आवी मनि करुं, विश्रम्भी थइने अनाथ ॥ रा० ॥ वा० ॥ २४ ॥ मित्र कहे में एहवुं जाणीनुं, मित पंचमी नीने पाणि ॥ रा० ॥ मस्तके मारी ते मित पंचमी, दिवसे मिळण मन आण ॥ रा० ॥ वा० ॥ २५ ॥ मनमां हरखी मुदा उतला, नाटके थइ एक धाम ॥ रा० ॥ ज्ञानविमळ मति मंत्रीनी अछे, तेहथी सीझशे काम ॥ रा० ॥ वा० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ३४७ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर कहे तें केम लही, पंचमी अवधि प्रमाण ॥ सित चंदन पंचांगुली, शिर दणी एणे अहिनाण ॥ १ ॥ पंचमी दिन जब आवीयो, पछी मालणीने कहे ताम ॥ जाउं तिहां मालण कहे, हवे न जाउं तस धाम ॥ २ ॥ उलथाली छल्ले करी, छल्य करे सवि काम ॥ बलात्कार मूकी तिहां, कही वात लेइ नाम ॥ ३ ॥ कुंकुम हस्ते गालमां, देइ प्रबल चपेट ॥ कोण ते तेहने पंथ स्यो, आवणनो नहीं सेट ॥ ४ ॥ अपमानी ते अति घणी, उतारी गृहपूंठ ॥ रज्जुजोगथी उपडी, भूमिथी जाली मूठ ॥ ५ ॥ मालण जइने सवि कह्युं, प्रीतली आवी आज ॥ पण हवे जाया नहीं करुं, जो कांइ होशे लाज ॥ मंत्री तो सघलुं लहे, कहे दमणां करो विरोध ॥ स्तुधर्मे छे ते जणी, पाके न छलुके अंब ॥ ७ ॥ कुंकुम लरखी अंगुली, चारे हणीयो गाल ॥ पूंठे पाछी पर तणी, तस पंथे एह चाल ॥ ८ ॥ नवमी निशि तेणे पंथथी, पोहोंतो राजकुमार ॥ हरखी तेहने देखीने, रमे तस साथ कुमार ॥ ९ ॥ कुमरी कहे केम जाणीयो, गूढ हृदयनो भाव ॥ मुग्धपणाथी तेणे कह्यो, ए सवि मित्र प्रभाव ॥ १० ॥ हर्षे करी जमाडीयो, करी आदर बहुमान ॥ देवर काजे आपीया, विष मोदक मन वाम ॥ ११ ॥ कुमर निज थानक आवीयो, दाखी सघली वात ॥ मोदक तमने आपीयो, तुम नामे हरखे पात ॥ १२ ॥ कहे सुबुद्धि नाम माहरुं, नवि जाणे स्यो राग ॥ मुग्धपणाथी एणे कह्यो, पण दहो गूढ अथाग ॥ १३ ॥ एम शंका लही चित्तमां, उग्यो सूर प्रभात ॥ मोदक लेइ पासे ठव्यो, शोच करे निज गात ॥ १४ ॥ एहवे माखी मृत लही, देखी लह्यो विषमर्म ॥ भूमिमांहे ते पाडीयो, देवरने सुख शर्म ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ ३६३ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥

॥ हमीरियानी देशी ॥

॥ मंत्री कुमरने शीखवे, एणी परे करजो विचार ॥ कुमरजी ॥ रात्रे जाउं तिहां एम करो, जे हुं कहुं ते विचार ॥ कु० ॥ चतुर ते नर जंत्र नहीं, जाणं नवि परपंच ॥ कु० ॥ पण मजननथी मानुं नवि होये, मत्र न करे मनप्रपंच ॥ कु० ॥ च० ॥ ए आंकणी ॥ कुमर निशाये तिहां गयो, रमतां थोडी रात ॥ कु० ॥ निद्रावश परगमें, गूणी करी परभात ॥ कु० ॥ च० ॥ २ ॥ जंघाये रेखा त्रण करी, त्रिशूल तणे आकार ॥ कु० ॥ नेउर छेदी आवीयो, निज घर राजकुमार ॥ कु० ॥ च० ॥ ३ ॥ ते प्रभाते योगी आया, गया समशान मझार ॥ कु० ॥ मंत्रि गुरु शिष्य राजनुं, जाणे मंत्र प्रचार ॥ कु० ॥ च० ॥ ४ ॥ शिष्य गयो कनकापणे, वेचे नूपुर तेह ॥ कु० ॥ मूल्य दीयो मुज एहनुं, बहु मूल्युं छे एह ॥ कु० ॥ च० ॥ ५ ॥ ते नूपुर वणिके ग्रही, गोहीलाद्दुं नृप पास ॥ कु० ॥ उंडरणीशुं निज नाम ते, पूछे ए केम तुज पास ॥ कु० ॥ ६ ॥ ते कहे हुं जाणुं नहीं, गुरु जाणे ए वात ॥ राजाजी ॥ राजाये गुरु तेडावीयो, कहो एहनो अवदात ॥ गोसांइ ॥ च० ॥ ७ ॥ ए किहांथी तुम पामीयुं, गुरु कहे आज मसाण ॥ राजाजी ॥ डाकिण एक आवी तिहां, उरकट जोर प्रमाण ॥ राजाजी ॥ च० ॥ ८ ॥ में तेहने चरणे ग्रही, रह्युं नूपुर मुज हाथ ॥ राजाजी ॥ रेखा त्रण जंघाये करी, गूली ते गइ नाथ ॥ राजाजी ॥ च० ॥ ९ ॥ केहवी छे ते जाणवा, जूए अंतःपुरमांहे ॥ कु० ॥ दोष सहित सुता उंडरणी, चिंते नृप मनमांहे ॥ कु० ॥ च० ॥ १० ॥ केम निर्दोष आये हवे, पूछे योगी राय ॥ राजाजी ॥ कहे योगी विद्या अने, निर्दोषी ए थाय ॥ राजाजी ॥ च० ॥ ११ ॥ कहे राजा मुज पुत्रीने, निर्दूषण करो लेग ॥ पावुजी ॥ तो हुं जाणुं तुमे उपगारीया, आपी दाखुं येव ॥ गुरुजी ॥ तुमे जो महोटा देव ॥ पावुजी ॥ ॥ च० ॥ १२ ॥ कहे योगी आज रात्रिमां, एहनो कीजे उपाय ॥ राजाजी ॥ मंत्रित वस्त्र दीयुं माहरूं, तेणे बांधो मुख पाय ॥ राजाजी ॥ च० ॥ १३ ॥ नयणे पाटा बांधवा, घेसारी रथ मांहि ॥ राजाजी ॥ निज जट माणे मूकीने, पूरव दिशि तरुमांहि ॥ राजाजी ॥ च० ॥ १४ ॥ कर बांधीने देशने, अंते मूकी जाय ॥ राजाजी ॥ जट ते फरी जोवे नहीं, न कहे कनीने आय ॥ राजाजी ॥ च० ॥ १५ ॥ आठ याम लगे वनमांहि,

फरशे ब्रह्माचार ॥ राजाजी ॥ तो ए निर्दोषा थशे, ए उपाय मनोहार ॥ राजाजी ॥ च० ॥ १६ ॥ पत्नी उत्सवशुं आणजो, निज घरमांहे एह ॥ राजाजी ॥ तुमने पण सुख थायशे, निर्दूषण थशे देह ॥ राजाजी ॥ ॥ च० ॥ १७ ॥ एम कही वेहु निज घर गया, शीखवी एहवी वात ॥ कु० ॥ राजाये ते कन्या मूकी, वनमांहे तेणि रात ॥ कु० ॥ च० ॥ १८ ॥ हवे तुरंगे चढी वेहु जणा, तुरत ते वनमां जाय ॥ कु० ॥ तस बंधन छेदी करी, लेइ निजपुर ते जाय ॥ कु० ॥ च० ॥ १९ ॥ पंथे सुबुद्धिने सा कहे, ए शुं कीधुं काम ॥ देवरजी ॥ कहे देवर हुं नवि लहुं, ए जोजाइनां काम ॥ भाभीजी ॥ च० ॥ २० ॥ विषमोदकथी जो उगर्या, तो ए आवी बुद्ध ॥ भाभीजी ॥ एम जाणी हवे राखजो, निर्मल चित्त विशुद्ध ॥ भाभीजी ॥ च० ॥ २१ ॥ राते वनमां आवीयो, पुत्री जोवा काज ॥ कु० ॥ जोइ पण दीठी नहीं, मुता सुता कहे राज ॥ कु० ॥ च० ॥ २२ ॥ हृदये स्फोट थइ नृप मूओ, शब कहे एहवी भाख ॥ कु० ॥ हत्या लागी कहो केहने, कनी नृप कुमर मित्र दाख ॥ कु० ॥ च० ॥ २३ ॥ जो जाणीने नवि कहे, तो हत्या तुज होय ॥ कु० ॥ एहवुं शब भाषित सुणी, चित्त विमासीने जोय ॥ कु० ॥ च० ॥ २४ ॥ हत्या नृपतिने शिरे, चिहुमां जोतां थाय ॥ मृतकजी ॥ केम कुमरी महोटी करी, कहो केम तेणे रहाय ॥ कु० ॥ ए नृपति अन्याय ॥ मृतकजी ॥ च० ॥ २५ ॥ एम कुमर वयणां सुणी, वरू वेठो शब जाय ॥ कु० ॥ ए वहुलो हठ देखीने, कुमर चिंते मनमांहे ॥ कुणपजी ॥ ॥ च० ॥ २६ ॥ तव कुमरने वलीय कथा, कहेवाने करेय विचार ॥ कुणपजी ॥ अचरिजकारी लोकने, सुणतां चित्त चमकाय ॥ कुणपजी ॥ च० ॥ २७ ॥ ७९० ॥

॥ तजाया ॥ ढाल ॥ राग नूपाल, देशी लखणियानी, जाति चोपाइनी ॥ नवि नवि नगरीमां वसेरे सोनार ॥ ए देशी ॥ गंगाधरने करी जुहार, कहे कथा शब तेणीवार ॥ नगरी जोगवती छे नाम, कामी मन लागे अभिराम ॥ १ ॥ रूपसेन नामे नरपति, मनमानी स्त्री नवि हती ॥ पंजरामांहे रहे शुक एक, बारु कलाविचक्षण छेक ॥ २ ॥ एक दिन नृपते शुक पूछीयो, कांइ जाणे छे एम सूचीयो ॥ कीर कहे हुं जाणुं सर्व, कहे नृप एहमां श्यो तुज गर्व ॥ ३ ॥ जो जाणे छे तो कहे मुज योग, कोण कन्या मुज आवे जोग ॥ कीर कहे मगधाधिप तणी, सुरसुंदरी नामे बहु गुणी ॥ ४ ॥ ते ताहारी नार्या होयशे, प्रेमे वदन कमल जोयशे ॥ तेणे पण पुत्री छे सारिका, चंद्रप्रजा नामे सुखकारिका ॥ ५ ॥ मदनमंजरी पुत्री कहे, मुजने योग्य कोइ वर लहे ॥ सारि-

काजे पण सुमने टालीया, कपटेन निजमां गालीया ॥ ६ ॥ ते निगुणीने थइ रागिणी, सखीने यात जणावी। राणी ॥ पटराणीयें जणाव्यो नृप, एहवे आव्यो मंत्रिय अनूप ॥ ७ ॥ मंत्रिये सघळी जणावी वात, शंकेनी थयो नृप साक्षात ॥ यानी कन्या शुन मुहूर्ते, परण्यो राजा कन्या प्रते ॥ ८ ॥ चंद्रमना सारिका लेइ माथ, मदनमंजरी परणी निज नाथ ॥ अनुक्रमे निज नगरीयें आवीया, शुकने पंजरमां लावीया ॥ ए ॥ मनइच्छित जय साधन मळे, विरह तणां तव दुःखडां टळे॥ ते नवि पुण्य तणा सुपसाय, काळ न जातो जाणे राय ॥ १० ॥ हवे एक दिन जाणे शुकराज, शूकी निरखी मनरें माज ॥ रे सुंदरी यौवन लोचने, नोग न इच्छे तुं तुज मने ॥ ११ ॥ सार संसार मांहे ने नोग, नोगवीयें मळते संयोग ॥ ए तन धन मन यौवन आय, चंचळ ने पण नोग पसाय ॥ १२ ॥ यतः ॥ संसारे सर्वजीवानां, नोगप्राप्तिफलं शुनं ॥ गतं ते जीवितं नीरु, जीवनं च निरर्थकं ॥ या न वेत्ति सदा पुंसां चतुराणां रतिप्रदं ॥ १ ॥

नावार्थः—संसारने विषे सर्व जीवने नोगप्राप्तिनुं फळ ते शुन छे. तो हे नीरुण स्त्री! तारुं जीवित निरर्थक गयुं. जे स्त्री, चतुर पुरुषो संबंधी रतिने देनारा सुखने न जाणे छे तेनुं जीवित निरर्थक गयुं एम जाणवुं ॥

एम निगुणी योली सारिका, पुरुष नोग वांछुं नहीं शुका ॥ तव कहे सूको ते शया जाणी, नर विणु नारी दोनागिणी ॥ १३ ॥ कहे सारिका तें साचुं कह्युं, पण में शास्त्रे एहवुं लह्युं ॥ लोनी वंचक नर होये प्राहि, पहुला कपटी ने जग मांहि ॥ १४ ॥ यतः ॥ स्वार्थनिष्ठा मुखे मिष्टाः, क्रोधिणः परवंचकाः ॥ मायाविनः कृतघ्नाश्च, निर्दयाः पुरुषाः पुनः ॥ १ ॥ एम निगुणी शुक कहे ते खरुं, एहथी निश्चय नहीं चित्त धरुं ॥ स्त्री पण होये कुधारिणी, पतिघातक मसोटी पापिणी ॥ १५ ॥ यतः ॥ अनृतं साहसं माया, मूर्खत्वमतिलोनता ॥ अशौचं निर्दयत्वं च, स्त्रीणां दोषाः स्वनावजाः ॥ १ ॥ जयस्य बीजं नारकस्य, द्वारमार्गस्य, दीपिका ॥ शुचां स्थानं कलेर्मूलं, दुःखानां खानिरंगना ॥ २ ॥

नावार्थः—खोटुं योलवुं, साहसकर्म, अत्यंत माया, मूर्खपणुं, अति लोभपणुं, अपवित्रपणुं अने निर्दयपणुं, ते सर्व दोष स्त्रीओने स्वभावथीज होय छे ॥ १ ॥ संसारनुं बीज, अने नरकद्वारना मार्गमां जवाने दीवी, शोकनुं स्थान, क्लेशनुं मूळ अने दुःखनी खाण ते स्त्री छे.

॥ पूर्व ढाल ॥ एम विवाद मांहोमांहे थाय, राजा राणी लगे वात जाय ॥ वाद तणुं ए दाखो मूळ, सारिका

कहे सुणो वादलुं मूख ॥ १६ ॥ कथा कहे तिहां शूडी एक, सुण राजन् मुज वात विवेक ॥ कांचनपुर नामे
एक नयर, महाधन शेठ वसे अति महेर ॥ १७ ॥ धनक्षय नामे छे तस पुत्र, परण्यो पुण्यवर्द्धन पुरी तत्र ॥
उत्तम शेठ तणी दीकरी, परणीने मूकी गयो फरी ॥ १८ ॥ काले महाधन पाम्यो काल, पोहोंतुं धन सवि
व्यसने आल ॥ तदनंतर गयो तरुणी पास, केटलाएक दिन रह्यो उल्लास ॥१९॥ नूपण सहित लेइ जामिनी,
परे आवे पाछो थइ धनी ॥ सासरीया वोलावी वल्यां, दंपती दोय चले तिहां मल्यां ॥ २० ॥ अर्ध पंथ ते
आव्या जिसे, उद्धस ग्राम वचे आव्युं तिसे ॥ तव पति कहे इहां जय छे घणो, वचन एक माहारुं प्रिय सुणो
॥ २१ ॥ नूषण वस्त्र सवि मुजने आप, निर्जय ठामे तेहने थाप ॥ पछी आगल जोइ शुज साथ, चालीशुं
एम बोल्यो नाथ ॥ २२ ॥ एम कही वस्त्र विजूषण ग्रही, अंध कूपमां नाखी ते सही ॥ दुष्ट तेह निज पुर
आवीयो, पाप पंकमां नवरावीयो ॥ २३ ॥ हवे सुणजो ते स्त्रीनी कथा, वाटे पथिक बहु जाता हता ॥ कूपांत-
रमां जायग थरो, पडतां एक दिशे रही उल्लसे ॥ २४ ॥ शब्दवेधथी काढी तेणे, पूछी कथा तव एहवुं जणे ॥
चोरे मम जर्त्ता बांधीयो, देइ प्रहरनं जर्जर कीयो ॥ २५ ॥ जीवे छे किंवा ते नहीं, ते जाणे परमेशर सही ॥
नूषण सघलां मुज अपहरी, अंध कूपमां नाखी करी ॥ २६ ॥ एम कही उत्तर वालीयो, पथिके ते उपद्रव
टालीयो ॥ अनुक्रमे आवी पीहर जणी, पूछे सवि किहां गयो तुज धणी ॥ २७ ॥ सर्व वृत्तांत कइपीने कह्यो,
सुण एक शोक संगे पण लह्यो ॥ आलिंगी हियडा जीतरे, पुत्री अंशे रखे दुःख धरे ॥ २८॥ सुख दुःख सवि
लहिये कृतकर्म, जोगवीये नवि तजीये धर्म ॥ जो जमाइ छे जीवतो, आवी मलशे तो गुणवतो ॥ २९॥ हवे
जमाइ धनक्षय नाम, जेहवुं नाम तेहवुं परिणाम ॥ नूषण हार प्रमुख धन सर्व, हाख्युं व्यसन वले गतगर्व
॥ ३० ॥ श्यामवदने ते केते काल, फरी आव्यो शुसरा घर चाल ॥ हरखी सुकुलिणी जामिनी, धन धन मुज
दहाडो जामिनी ॥ ३१ ॥ चिंते कंत नाखी जे कूप, ते ए दीठी नयणे अनूप ॥ केणी परे ए आवी जीवती,
माहरी वात कही हशे छती ॥ ३२ ॥ शंकाणो मनमां जेटले, परमांहे आण्यो तेटले ॥ शंक न करशो कांइ
लगार, ए सवि कर्म तणा उपचार ॥ ३३ ॥ शुज अशुज जे आपणे आचर्या, जे जे प्रत्ययनां ते उर्यां ॥ ते
जणी कांइ नहीं विषवाद, आणे जो मनमां आह्लाद ॥ ३४ ॥ एम निगुणी सुख विलसे तेह, स्त्री पण देखाडे
स्नेह ॥ मर्ममोस तणी वारता, न कहे उत्तम दोषना छता ॥ ३५ ॥ एक दिन कंते अवसर लही, रात्री जारी

॥ ३६ ॥ कहे मोरेका गजन अनवानी

जाणी नहीं ॥ मही गर्व नराग धन गाम, स्त्री मारी भारी निभाम ॥ ३६ ॥ जो उपकार करे मो
काली पुरुष तनी गंमार ॥ प्रलब्ध दीठो ने मांनस्यो, जेम गिर मीठाइमां मह्यां ॥३७॥ ते माटे
गमे, गोराग पुरुष प्रवीन नवि गमे ॥ ते माटे शुं पुरुषनो संग, मन नवि मांडुं तो रयो रंग ॥ ३८ ॥ ते माटे
निश्चय जाणजो, मय नर संगति विष नाणजो ॥ ज्ञानविमल गुरुनी ए वाण, जे धरशे तस कोडी कल्याण ॥३९॥

॥ दोहा ॥

॥ एह कथा पूरी कही, कहे मधुकर शुकराज ॥ तारं पथन कथा थकी, गुणीये श्रीनरराज ॥ १ ॥ प्राहि
॥ एह कथा पूरी कही, कर्म नर परिमाण ॥ २ ॥ राजि
गधु नरिना न होय, अने नरिना कहुं ते अजाण ॥ गकड शुभाशुभ अछ्यो, कर्म नर परिमाण ॥ २ ॥ राजि
अनीती पापनी, उदय थकी मतिवंद ॥ देहयो ते पाप कर्मथी, रयो करयो तस रंद ॥ ३ ॥ पण जे कुलवनथी
हग्या, ते नकरानी मानं नीति ॥ दूरे हारयो दही मल्ये, फुटी पीये ए रीति ॥४॥ पण अंतर ते अति घणा,
पानु नमुनां जाण ॥ एक गामथी नीपना, भूम दीव तम जाण ॥ ५ ॥ मारिका कहे ते हारीये, दोराओ कोड
नार ॥ मो नरिने नरिनुं मत्रे, जेम न होय उपर भार ॥ ६ ॥ एम नियुणी नारने कथा, शुक पिक मधुरी
गाम ॥ राजा राणी मानजो, श्रोता गेयक जाण ॥ ७ ॥

॥ श्लोक ॥ अश्वाः शस्त्राणि शास्त्राणि, वीणा वाणी नरश्च नारी च ॥ पुरुषविशेषं प्राप्ता, भवंति योग्या अयोग्या वा ॥ २ ॥
भावार्थ:—घोडा घोडामां, हाथी हाथीमां, लोढा लोढामां, काष्ठ काष्ठमां, पाषाण पाषाणमां, वस्त्र वस्त्रमां, स्त्री स्त्रीमां,
पाणी पाणीमां, मोटोंटु अंतर होय छे ॥ १ ॥ अश्व, शास्त्र, शस्त्र, विद्या, वाणी, वीणा, पुरुष अने स्त्री ते
ज्ञाता पुरुषने प्राप्त थये छते योग्य ते अयोग्य अने अयोग्य ते योग्य थाय छे.

ते दोहामां जे छाया श्लोक छे ते लखीये छैये ॥यथा॥ ये वंचिता धूर्तजनेन लोका, ते साधुलोकेपि न विश्व-
सन्ति ॥ दुग्धेन दग्धाः किल पायसेन, पिबंति फूत्कृत्य दधीनि तक्रं ॥ १ ॥
भावार्थ:—जे लोको धूर्त जने छेतर्या ते लोको साधु पुरुषनो पण विश्वास करे नहीं. जेम दूधे दाझेला मनुष्य दही तथा
छाशने पण फूंकीने पीये छे.
हस्ती दाणे वाजी, अंतरं महदंतरं ॥१॥ काष्ठे काष्ठे कृनिर्दिया,
वाजीवारणलोहानां, काष्ठपाषाणवाससां ॥ नारीपुरुषतोयानां, अंतरं महदंतरं ॥१॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ परपोडानी देशीमां ॥ जिनवर परघोरे पढीया जेणीवार ॥ ए देशी ॥

॥ कंचनपुर नगरी, निवसे सागरदत्त ॥ तस अंगज श्रीदत्त, नामे पुण्यपवित्त ॥ श्रीपुरनो वासी, सोमदत्त शेठनी जाणी ॥ दुहिता जयश्री छे, परणी श्रीदत्ते आणी ॥ १ ॥ परणीने मूकी, पितर गृहे ते नारी ॥ क्रियाणक भरी प्रवहण, चढीयो ते समुद्र मझारी ॥ हवे पाछल वनिता, यौवन पामी चंग ॥ देखाडे नव नव, कामी जनने रंग ॥ २ ॥ यतः ॥ यौवनमुद्गमसमये, करोति लावण्यगतिं कुरूपेपि ॥ दर्शयति पाककाले, लिंबफलं चापि माधुर्यं ॥ १ ॥

भावार्थः—युवावस्थाना अग्र समयने विषे कुरूप होय ते पण लावण्य गतिने प्राप्त थाय छे, जेम लींबडानी लींबोली पण तेना पक्व समयने विषे माधुर्यपणाने प्राप्त थाय छे.

॥ पूर्व ढाल ॥ एक दिन सौधोपरि, निरखे ते राजपंथ ॥ कोइ पुरुष युवानने, देखी विषय उमंथ ॥ रूपाला पुरुषने, देखी व्याकुल थाय ॥ प्राये असतीनां, लक्षण एम जणाय ॥ ३ ॥ यतः ॥ सुरूपं पुरुषं दृष्ट्वा, भ्रातरं पितरं सुतं ॥ श्रवते योनयः स्त्रीणां, मामपात्रमिवांजसा ॥ १ ॥ अग्निकुंभसमा नारी, घृतकुंभसमो नरः ॥ संपर्काद्द्रूयते नित्यं, किं पुनः स्ववशाः स्त्रियः ॥ २ ॥

भावार्थः—स्वरूपवान एवा भाइ, बाप, पुत्रने जोइने स्त्रीने काम उत्पन्न थाय छे अने मन पीगले छे ते केनी पेठे तो के जले करी माटीनुं काचुं पात्र जेम पीगले ॥ १ ॥ अग्निना कुंभ समान नारी छे अने घृतना कुंभ समान पुरुष छे माटे ते बेहु एकठां थवाथी जेम घृत पीगल्या विना रहेतुं नथी, तेम स्त्री अने पुरुष एकांतमां रहेवाथी पुरुषनुं मन पीगल्या विना रहेतुं नथी तो पोताने वश स्त्री होय तो तेमां शुं ज कहेवुं ! ॥ २ ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ सखी मालती नामे, मोकली ते नर पासे ॥ संकेत कहाव्यो, एकांते तस आसे ॥ मालाकारिणी गेहे, हुओ तस संयोग ॥ एम प्रतिदिन मलतां, वाध्यो विषयनो जोग ॥ ४ ॥ अनुक्रमे परतटथी, घरे आव्यो श्रीदत्त ॥ स्त्री तेडण आव्यो, श्वशुर गृहे लेइ वित्त ॥ जयश्री हवे पतिने, देखी मनमां चिंते ॥ केम करुं केम जाउं, कहे सखीने वृत्तांत ॥ ५ ॥

॥ यतः ॥ चिंता चिता समा नास्ति, चिंता चैव गरीयसी ॥ सजीवं दहते चिंता, निर्जीवं दहते चिता ॥ १ ॥ तथा च ॥ अतिप्रजल्पो निरंकुशत्वं, भर्तुः प्रवासः स्वच्छंदलीलागमनं च, स्वजातः शीलविमुक्तका इमे ॥ २ ॥ चिंता भुजंगी परिदश्यमानं, संमूर्छितं चित्तमिदं मदीयम् ॥ शश्वत्कृतं पश्यति जातकस्य, नो जीवते वाक्सरणामृतेन ॥ ३ ॥

भावार्थः—चिंता जे छे ते चिता समान नथी परंतु चिंता चिताथी वधारे पराक्रमवाली छे, कारण के चिता जे छे ते जीवरहित मनुष्यने बाले छे अने चिंता जे छे ते जीवसहित मनुष्यने बाले छे ॥ १ ॥ एक अत्यंत बोलवुं, निरंकुशपणुं, पोताना स्वामीनुं प्रवास जावुं, पोतानी इच्छा प्रमाणे ज्यां त्यां जवुं, सासी ईर्ष्या, स्वैरिणी स्त्रीनो संग, एटलां वानां स्वभावथीज शीलविभंग करनारां छे ॥ २ ॥

॥ किं बहुना ॥ ढाल पूर्वली ॥ आगतने स्वागत, पूछी बहु परे तास ॥ जामाता जमाडी, शयन कराव्युं वास ॥ पतिस्नेहवश वचने, जेम जेम बहु आश्वासी ॥ तेम तेम तस बहु दुःख, वेधे मन जेम दास ॥ ६ ॥

॥ यतः ॥ स्नेहं मनोभवकृतं जनयंति भावाः, नाभीभुजस्तनविभूषणदर्शितानि ॥ वस्त्राणि संयमनकेशविमोक्षणानि, भ्रूक्षेपकंपितकटाक्षनिरीक्षणानि ॥ १ ॥

भावार्थः—नाभि, हाथ, स्तन, घरेणां, तेनुं देखाडवुं, तथा वस्त्रनी नीविने बांधवी तथा वारंवार छोडवी अने केशने छूटा मूकवा, भ्रकुटिये कंपित एवा कटाक्षे करी जोवुं ए सर्व भावो कामदेव कृत स्नेहने उत्पन्न करे छे.

॥ पूर्व ढाल ॥ एम करतां निद्रित, पति जाणीने उठी ॥ सखीने घरे जाता, जोइ जे हवे रुठी ॥ तब वाटे चोरे, जाती तेहवी दीठी ॥ मदनातुर चंचल, सहज कुशील उपीठी ॥ ७ ॥ तेणे स्थानक तेणे दिन, बहुदे संगम हुंते ॥ कोइ नर ने नारी, संगे प्रथम विरतंत ॥ तेहवा मांहे ते पण, कर्मसंयोगे आवी ॥ राजपुरुषने योगे, कर्मसंयोगे भावी ॥ ८ ॥ कोटवाले हणीउं, राजपुरुष चोर भ्रांते ॥ हवे कामातुर सा, देखे वितथ घर वाते ॥ ते मृतक आलिंगे, सुगंध द्रव्यशुं पूजे ॥ मुखचुंबन वारं, वार करे नवि धूजे ॥९॥ चोरे ते सघलो, दीठो काम विलास ॥ ए ए स्मरपरवश, मोह तणो ए पास ॥ तब यक्षे चिंत्युं, शब शरीरमां पेशी ॥ विलसुं ए स्त्रीने, पूर्ण करीने हौंशी ॥ १० ॥ यक्षे तस नासा, दंत संघाते त्रोडी ॥ जइ यक्ष वेगो, मृतक देह गयो

छडी ॥ हर्षिरे ते सखी, सखी गेहे ते जाय ॥ सखी आगल सघली, वात करे सा बनाय ॥ ११ ॥ यतः ॥ अन्यथा चिंतितं कार्यं, देवेन कृतमन्यथा ॥ मलिनीवरापूर्णेन, जलनी भलयंगता ॥ १ ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ तब सखी एम भाखे, जब लगे सूर न उगे ॥ तव लगे पति पासे, जा तुं यह निगुण ॥ गुरुतर शब्दे शुं, तेहने तेमण काज ॥ बस पूठे तस्कर आवे, जिहां न उगे दिनराज ॥ १२ ॥ एम सखीनां वयणथी, पति पासे जब जाय ॥ तब ते रोवा लागी, कुटुंब मह्युं सवि आय ॥ रे निर्लज निठुर, अरे कुकर्मना कारी ॥ निरपराध पुत्रीने, केम नासिका अपहारी ॥ १३ ॥ निगुणी जामाता, चिंते ए शुं अंग ॥ अणचिंतित आवी, लाग्युं पाप प्रसंग ॥

॥ यतः ॥ न विश्वसेद्भूपे शूद्रे, कृष्णे चैव न ब्राह्मणे ॥ न विश्वसेत् कृष्णसर्पे, काये नैव च विश्वसेत् ॥ १ ॥ मद्यपाः किं न जल्पंति, किं न भक्षंति वायसाः ॥ कवयः किं न बुध्यंति, किं न कुर्वंति पांसुलाः ॥ २ ॥

भावार्थः—राजामां, शूद्रमां, कागडामां, काला ब्राह्मणमां, काला सर्पमां, अने शरीरमां विश्वास करवो नहीं ॥१॥ मद्यपानी शुं बकता नथी? कागडा शुं भक्षण करता नथी? कवियो शुं जाणता नथी? पांसुला स्त्री शुं करती नथी? अर्थात् ए, सर्व करे छे॥१॥

॥ पूर्व ढाल ॥ एम सहु मलीने, कीधो जमाय अन्याय ॥ अनुक्रमे नृप आगले, कह्यो प्रजाते धाइ ॥ १४ ॥ यतः ॥ दुर्बलानामनाथानां, बालवृद्धतपस्विनां ॥ अन्यायपरिभूतानां, सर्वेषां पार्थिवो गतिः ॥१॥ अश्वप्लुतं वारिदगर्जितं च, स्त्रीणां चरित्रं पुरुषस्य भाग्यम् ॥ अवर्षणं चापि हि वर्षणं च, देवो न जानाति कुतो मनुष्यः॥२॥

भावार्थः—दुर्बल, अनाथ, बाल, वृद्ध, तपस्वी तथा अन्यायथी पराभव पामेला जनो, ए सर्वने राजा जे छे तेज गति छे ॥ १ ॥ अश्वनो दोडती वखते थतो शब्द, मेघनो गर्जारव, स्त्रीयोनुं चरित्र, अने पुरुषनुं भाग्य तथा वरसादनुं वरसवुं, अथवा नहि वरसवुं, तेने देव न जाणी शके तो मनुष्य क्यांथी जाणी शके? ॥ २ ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ सवि वात जणावी, साची पण मन नावी ॥ कारण पण तेहवां, जेहवुं होये भावी ॥ राजपुरुषे आण्युं, एहवो निश्चय कीध ॥ जामाता दुष्टे, सतीने कलंक ए दीध ॥ १५ ॥ वध आदेश दीधो, कीधो को न विलंब ॥ एहवे ते चोर तिहां, आव्यो पूछे खंब ॥ कहे राजन निसुणो, एहनो सवि संबंध ॥ सुणी धर्मी जन कहे, एह पुरुष नहीं वध्य ॥ १६ ॥ राजाने महोटुं, पुण्य प्रजा जे राखे ॥ अधिकारी तेहिज, पुण्यकरणी जे दाखे ॥ एम निसुणी राजा, जामाताने मेहेली ॥ हाणगारी हादेरमां, करतो बहुविध केली ॥ १७ ॥

गगने आरोपी, ते पुण्यदाने नमाबी ॥ शिर मुंडी नाईरना, आगल कादली बजारी ॥ पुर गोधम द्वार,
कारी नारी निगोद ॥ ते पदनो पुरसा, करजो ते पण होय ॥ १७ ॥ यतः ॥ आवासः संशयानामभिनवनगरं,
दुर्नयानां निधानं ॥ दोषाणां सन्निधानं कपटशतमयं, क्षेत्रमप्रत्ययानां ॥ स्वर्गद्वारस्य विघ्नं नरकपुरमुखं, सर्व-
मायाकरंडं, स्त्रीयंत्रं केन सृष्टं विषममृतमयं, प्राणिनामेकपाशः ॥ १ ॥

भावार्थः—संशयने रहेवानुं स्थान, दुर्नयतानुं नगर, दोषनो भंडार, अविश्वासोनुं क्षेत्र, स्वर्गद्वारने विघ्नरूप, नरकपुरनुं मुख, सर्व मायाना करंडीयारूप, देखवामां अमृत सरखुं पण विषरूप अने प्राणीओने बांधवाना पाशरूप एवुं स्त्रीरूप यंत्र कोणे सरज्युं छे ? ॥१॥

॥ पूर्व ढाल ॥ इणे गेरी कीधी, वणी अपार कुशीली ॥ मुज जोगमां विख्याती, करी आगल मुज करणी ॥
पछी पण मूके, करो वचन विश्वास ॥ तेह नणी मुणो राजा, ए मति कर्मविलास ॥ १९ ॥ नारी पण एहवी,
हीये ते जगमांय ॥ पक्षपात न करजो, समनाये गुण थाय ॥ एम वीर कथानक, निगुणी कहे वेताल ॥ कहो
राजन पेहले, पाप अधिक ते थाय ॥ २० ॥ कहे राजा विदुषां, पापिणी नारी कहीये ॥ लोक नायो एहवुं,
शास्त्रमांहे पुण्य लहीये ॥ यतः ॥ गुरुरग्निर्द्विजातीनां, वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः ॥ पतिरेव गुरुः स्त्रीणां, सर्वस्या-
भ्यागतो गुरुः ॥१॥ स्त्रियो योनिप्रसर्गी हि, यतो योनिरनन्तरा ॥ धर्माधर्मविचारेषु, तस्मिन्पापं भवंति यत् ॥२॥

भावार्थः—ब्राह्मण जातिनो गुरु अग्नि छे, सर्व वर्णोना गुरु ब्राह्मण छे, अने स्त्रीना गुरु पति छे, अने सर्वना गुरु अभ्यागत छे.

॥ पूर्व ढाल ॥ वेताल सुणी एम, आवाणे थानके जाय ॥ एम बीजी कथानो, सार वाणीथी थाय ॥ अन-
दिन नप पामी, पाप मारो एम पाये ॥ पप ज्ञानविमल गुणे, शांतिगुणादिम गाये ॥ २१ ॥ इति कथा ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुरु गणपतिना पद नमी, कहुं त्रीजुं आख्यान ॥ साहसवी नृप गोतने, जगमां गरव प्रधान ॥ १ ॥
वर्धमान नामे नगर छे, तिहां गुरुदेव ते नूर ॥ एक दिन आख्यान मंडले, बेठो नगुरलुं पूर ॥ २ ॥ पूछे
दौवारिक प्रत्ये, राजा तेणे वार ॥ अन्य अनुज्ञपणे तथा, कोइ गेगे दरबार ॥ ३ ॥ कहे प्रतिहार सुणो
साहेबा, आगिळे नर नार ॥ निरानंद डुःखिया जना, ते बीजे दरबार ॥ ४ ॥

॥ यतः ॥ स्वेदजलमलक्लिन्ना, निरालंबा निराश्रयाः ॥ द्वारे तिष्ठंति देवेश, सेवका वृषणा इव ॥ १ ॥ पह्या- गच्छ स्वमुत्तिष्ठ, वद मौनं समाचर ॥ एवमाशाग्रहग्रस्तैः सेव्यंते धनिनोऽर्थिभिः ॥ २ ॥

भावार्थः—स्वेदजल युक्त मल तेणे करी आर्द्र, तथा निरालंब, निराश्रित एवा सेवको वृषणनी पेठे द्वारने विषे रहे छे ॥१॥ आव, जा, उभो था, बोल, मौन राख, एम धनवाननां वचन मानी आशा रूप ग्रहग्रस्त, पैसाना लोभी जनो धनवानने सेवे छे ॥२॥

॥ दोहा ॥ एणे समे दक्षिण पंथथी, वीरवर नृप पुत्र ॥ आव्यो सेवा कारणे, जाणी नृपति पवित्र ॥ ५ ॥ भेट थइ नृप सारिसी, राजा घे बहु मान ॥ पूछे केम आव्या अछो, कहो प्रयोजन नाम ॥ ६ ॥ वीरवर मुज नाम छे, आव्यो सेवा काज ॥ गुणी जननी जे सेवना, ते सुरतरु सम आज ॥ ७ ॥ ८८६ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ ते मुनि वाळक वंदीये रे लाल ॥ ए देशी ॥

॥ कहे भूपति हवे ते भत्ये रे लाल, शुं दीयुं तुजने वित्त ॥ सुण वाणी रे ॥ ते कहे सहस सोवन तणा रे लाल, गदीयाणा दीयो नित्य ॥ सु० ॥ साहसथी सवि संपजे रे लाल ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एम निसुणी भूपति कहे रे लाल, श्यो ताहारे परिवार ॥ सु० ॥ हय गय रथ पालादिका रे लाल, किश्या कुटुंब आचार ॥ सु० ॥ सा० ॥ २ ॥ ते कहे हुं सुत ने सुता रे लाल, भामिनीशुं छे चार ॥ सु० ॥ न मळे कोइ पांचमो रे लाल, सुणी हस्यां सर्व नर नार ॥ सु० ॥ सा० ॥ ३ ॥ नृपति चिंते चित्तमां रे लाल, एहने अल्प परिवार ॥ सु० ॥ धन तो मागे छे घणुं रे लाल, जणाशे फळ वार ॥ सु० ॥ श्यो हवे एह विचार ॥ सु० ॥ सा० ॥ ४ भंमारीने दाखीयो रे लाल, दीयो नित्ये ए वित्त ॥ सु० ॥ ए वरवीर राज पुत्रने रे लाल, भंमारी कहे तहत्त ॥ सु० ॥ सा० ॥ ५ ॥ ते पण भोजन वसनशुं रे लाल, गंध माल्य प्रमुख जे सर्व ॥ सु० ॥ योगवाइ करे गेहमां रे लाल, अवशेष जे रहे द्रव्य ॥ सु० ॥ सा० ॥ ६ ॥ ते ब्राह्मण भट चारणा रे लाल, दीन दुःखी दुर्बल अनाथ ॥ सु० ॥ ते सविहुं सान्निध्य करे रे लाल, आपे अवारित आथ ॥ सु० ॥ सा० ॥ ७ ॥ पछी भोजन आपे करे रे लाल, एम वाधे यशवाद ॥ सु० ॥ दातारी देवळ चढे रे लाल, मत धरो कोइ विषवाद ॥ सु० ॥ सा० ॥ ८ ॥ राते नृपनी चाकरी रे लाल, पोहोरायतनी जेह ॥ सु० ॥ खड्गधरी निज हाथमां रे लाल, सेव करे

धरी नेह ॥ सु० ॥ धीरपर एम गुण गेह ॥ सु० ॥ मा० ॥ ९ ॥ एक दिन मध्य रयणी गये रे लाल, चोकाये
तिहां राय ॥ सु० ॥ कोण जागे छे पोहोरीयो रे लाल, परवीर कहे हुं जगाय ॥ सु० ॥ मा० ॥ १० ॥ यतः ॥
आकारयति न स्वस्थो, विनिद्रो न प्रबुध्यते ॥ वक्ति न स्वेच्छया किंचि, त्सेवकः किल जीवति ॥ १ ॥
॥ पूर्व ढाल ॥ एम बहु दिनने आंतरे रे लाल, प्रभाये जागरुक तेह ॥ सु० ॥ सावधान सघले रहे रे
लाल, चाकरी चूके न जेह ॥ सु० ॥ मा० ॥ ११ ॥ यतः ॥ कष्टं जो सेवकानां तु, परार्थे प्राणुवर्तिनः ॥
स्वयंविक्रितदेहस्य, सेवकस्य पुनः सुखं ॥१॥ मौनान्मूकः प्रवचनपटुर्वातुलो जल्पको वा, क्षांत्या भीरुर्यदि न सहते
प्रायशो नाभिजातः ॥ धृष्टः पार्श्वे वसति च यदा दूरतो वा प्रमादी, सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥२॥
भावार्थः—अहो सेवकने मोटुं कष्ट छे कारणके परने माटे जीवनार, पोतानी मेळे देहनो विक्रय करनार, एवा सेवकने
सुख क्यांथी होय ! ॥१॥ जो सेवक न बोले तो तेने मुंगो छे एम कहे अने जो वधारे बोले तो तेने वायडो अथवा बहु बक-
वादी छे एम कहे, क्षमा राखे तो ते बीकण छे एम कहे, जो शांति न राखे तो कहे छे जे सारा कुळमां उत्पन्न थयेलो नथी,
पडखामां प्रतिदिन रहे तो तेने नीच कहे अने जो निरंतर दूर रहे तो तेने प्रमादी कहे, ए रीते चाकरीनो धर्म घणोज
विकट छे तथा ते धर्म योगीश्वरोने पण जाणवो मुस्केल छे ॥ २ ॥
जो मग सग सोनैयो दीये, तोहि न करे सेवा कर्म ॥ नरने नारी एम जाणे, शुं जीवितनुं शर्म ॥ ३ ॥
इत्यादिक बहु वखाणना छे ॥
॥ पूर्व ढाल ॥ एवे एक दिन राजा जाणे रे लाल, जागे छे रे धीर ॥ सु० ॥ हा स्वामी शुं आशि दीउं
रे लाल, कहे नृप सुण रे धीर ॥ सु० ॥ मा० ॥ १२ ॥ मध्य रयणीये मसाणमां रे लाल, रुदन करंती नार ॥
सु० ॥ काने शब्द सुणी तिहां रे लाल, जइ खबर करी शीघ्र धार ॥ सु० ॥ ए संशय मुज धार ॥ सु० ॥
मा० ॥१३॥ यतः॥ जानीयात् प्रेषणे भृत्यान्, बांधवान् व्यसनागमे ॥ मित्रमापत्तिकाले च, भार्यां च विभवक्षये ॥१॥
भावार्थः—कोइ स्थाने कार्य माटे मोकल्यो होय ते कार्यनी सिद्धिथी चाकरनी परीक्षा थाय छे, अने दुःख पडवामां
बांधवोनी परीक्षा थाय छे, आपत्तिकालमां मित्रनी परीक्षा थाय छे, वैभवक्षयमां भार्यानी परीक्षा थाय छे ॥
॥ पूर्व ढाल ॥ आदेश लेइ राजाननो रे लाल, शब्द तणे अनुसार ॥ सु० ॥ गयो तिहां दीठी रोवती रे
लाल, नारी रंभा आकार ॥ सु० ॥ मा० ॥ १४ ॥ राजा पण तस पूठे गयो रे लाल, छंडी अंधारो पट ॥

गु० ॥ मनु मम करणी देखवा रे लाल, उपकृति गुण गहगह ॥ गु० ॥ १५ ॥ पूछ्युं कोण तुं केम रोये रे लाल, शुं दुःख छे मुज आज ॥ गु० ॥ कहे हुं नृप लक्ष्मी थयुं रे लाल, रुदन करुं तुं एणे काज ॥ गु० सा० ॥ १६ ॥ आज थकी त्रीजे दिने रे लाल, मरशे पुरपति एह ॥ गु० ॥ तेणे दुःखथी दुःखिणी थयुं रे लाल, रोउं हुं निःसंदेह ॥ गु० ॥ सा० ॥ १७ ॥ वीर कहे को उपाय छे रे लाल, न मरे नयरनो नृप ॥ गु० ॥ जो नयर देवीने बलि दीये रे लाल, नृप सम नर अति रूप ॥ गु० ॥ सा० ॥ १८ ॥ राजपुरुष निज पुत्रनुं रे लाल, शिर छेदी निज धाय ॥ गु० ॥ तो नृप शत वरिसां लगे रे लाल, चिरंजीवे जाये संताप ॥ गु० ॥ सा० ॥ १९ ॥ परवीर एम वयणां सुणी रे लाल, आव्यो आपणे ठाम ॥ गु० ॥ नृप पण पूठेथी आवीउ रे लाल, हवे जो जो वीरनां काम ॥ गु० ॥ सा० ॥ २० ॥ उठाडी सुत भामिनी रे लाल, कह्युं सघळुं वृत्तांत ॥ गु० ॥ हुं तो नृपतिने कारणे रे लाल, छंमीश तनु ए महंत ॥ गु० ॥ सा० ॥ २१ ॥ ते भणी तुं पीयर जइ रे लाल, ए छे माहरी शीख ॥ गु० ॥ पतिवचने जे चालवुं रे लाल, ते पतिव्रतानी शीख ॥ गु०॥सा०॥२२ ॥

॥ यतः ॥ ते पुत्रा ये पितुर्भक्ताः, स पिता यस्तु पोषकः ॥ तन्मित्रं यत्र विश्वासः सा भार्या पतिवाक्यगा॥१॥

भावार्थः—जे पोताना पिताना भक्त ते पुत्र जाणवा अने पुत्रादिकनुं पोषण करे ते पिता जाणवो, जेमां विश्वास आवे ते मित्र जाणवो, पतिनी वाणीमां रहे ते स्त्री जाणवी ॥

आर्त्ते आर्त्ता दुःखे दुःखिता, प्रोषिते मलिना कृशा ॥ मृते म्रीयेत या नारी, सा स्त्री ज्ञेया पतिव्रता ॥ २ ॥

भावार्थः—पोतानो स्वामी आर्त्त होय तो ते आर्त्त थाय, अने पोतानो स्वामी दुःखी होय तो ते दुःखी थाय, पोतानो स्वामी मरण पामे तो पोते मरण पामे, ते स्त्री पतिव्रता जाणवी ॥

मितं ददाति हि पिता, मितं भ्राता मितं सुतः ॥ अमितस्य हि दातारं, भर्तारं को न पूजयेत् ॥ ३ ॥

भावार्थः—पिता छे ते पण प्रमित देनारो छे, भाइ प्रमित देनार छे, पुत्र पण प्रमित देनार छे, अमित दानोना देनारा पोताना स्वामीने कोण न पूजे ? अर्थात् सर्व पूजे ॥ ३ ॥

न दानैः शुध्यते नारी, नोपवासशतैरपि ॥ अव्रतापि भवेच्छुद्धा, भर्तृमद्गतमानसा ॥ ४ ॥

भावार्थः—अनेक दानोए करीने नारी शुद्ध थती नथी, सहस्र उपवासोथी पण शुद्ध थती नथी, परंतु व्रत न करनारी एवी पण नारी पोताना स्वामीना कहेवा प्रमाणे चालवाथी शुद्ध थाय छे ॥ ४ ॥

जर्णारमारादि गतं न त्यजेत्सा महासती ॥ ५ ॥ अन्यं नरं न
मनोगतुं न यंतु च, पितरौ त्रोतसौ तथा ॥ आक्रोशिता नो कुर्वंन नोष्यते सा महासती ॥ ६ ॥ अंधलं कुब्जकं च, कुष्ठ-
गस्वति, स्वसारगोपरैरपि ॥ आकोशिता नो कुर्वंन नोष्यने सा महामती ॥ ७ ॥ एष धर्मो मयाख्यातो, नारीणां परमा
गत्यागितीहित ॥ आपदूगतं निजं नाथं, न त्यजेत् सा महासती ॥ ७ ॥ एष धर्मो मयाख्यातो, नारीणां परमा
नति ॥ नान्यथा प्रियते येन सा याति नरके ध्रुवं ॥ ८ ॥
भावार्थः—पुत्रनो त्याग करे, पोताना शुभेच्छक माता पितानो त्याग करे, परंतु आपत्तिमां आवेला पोताना स्वामीनो जे
त्याग न करे, ते महा सती स्त्री जाणवी ॥ ५ ॥ स्वभावथीज दृष्टिगोचर थयेला पर पुरुषने जोवे नहीं, कोपायमान करे छते
पण करे नहीं तेम तेवे स्वो स्वामीनी सामे बोले नहीं ते महा सती जाणवी ॥ ६ ॥ आंधलो, कुबडो, कोढीयो, व्याधियुक्त
होय तथापि आपत्ति प्राप्त थयेला एवा स्वामीनो त्याग न करे ते महा सती जाणवी ॥ ७ ॥ आ धर्म में कह्यो ते नारीनी
परम गति छे. ते जे ते प्रमाणे न चाले, सो ते स्त्री नरकमां जाय ॥ ८ ॥
॥ अतोऽहमपि स्वदीयनाथं गच्छामि ॥ इति श्रुत्वा पुत्रेणोक्तं ॥
भावार्थः—हुं पण मारी माताने साथे छुं ए प्रकारे सांभलीने,
॥ पूर्व ढाल ॥ जो सुत मुजथी मानने रे लाल, चिरंजीवित जो थाय ॥ सु० ॥ तो मुज सुख शोजा चढे रे
लाल, जगमां सुजन गवाय ॥ सु० ॥ मा० ॥२३ ॥ दुहिता पण एम जागती रे लाल, जीवाडो नरराय ॥सु०॥
सुत मुजथी सहुने हवो रे लाल, तेम कुलाद्र थिर थाय ॥ सु० ॥ मा० ॥ २४ ॥ दयिता दुहिता सुत पिता रे
लाल, सहु मर्णा एम मत्त ॥ सु० ॥ देवी राजा चिंतवे रे लाल, एहनो जीवित धन्य ॥ सु० ॥ मा० ॥ २५ ॥
यतः ॥ या या संपद्यते बुद्धिः, सा मतिः सा च भावना ॥ सहायास्तादृशा ज्ञेया, यादृशी भवितव्यता ॥ १ ॥
भावार्थः—जेवुं थवा कारण होय तेवी बुद्धि पण प्राप्त थाय छे, मति पण तेवीज प्राप्त थाय छे, अने तेवीज भावना प्राप्त
थाय छे तथा सहाय पण तेवाज प्राप्त थाय छे ॥ १ ॥
॥ पूर्व ढाल ॥ एम चिंति देवी आगले रे लाल, आवी कहे सुण एम ॥ सु० ॥ जीवित नृपति सत परखवुं
रे लाल, कीजो निशदिन नेम ॥ सु० ॥ मा० ॥ २६ ॥ एम कही गई केदीगुं रे लाल, निज सुत केकं शिशा
॥ सु० ॥ पत्रि देवे देवीकरे रे लाल, मन धरी अधिक जगीश ॥ सु० ॥ मा० ॥ २७ ॥ नाद गवायो देवीने रे
लाल, नृपी बेठे शीघे पवेन ॥ सु० ॥ मा जायो सत्रे कीडां थकी रे लाल, जो लिपि आवे अगन ॥ सु० ॥मा०

॥ २० ॥ दोहो ॥ अरथी आये संपजे, पुत्र शरीरे होय ॥ मामी जायो जो संपजे, जो कलीयुं यश होय ॥१॥
माये पण एम आचर्युं रे लाल, देखी चिंते परवीर ॥ सु० ॥ कुटुंब हवे एम नीपनुं रे लाल, तो हुं पण धरुं
पीर ॥ सु० ॥ सा० ॥ २९ ॥ हवे कंचने शुं काम छे रे लाल, एम कही करे शिर छेद ॥ सु० ॥ राजा एम
देखे तिहां रे लाल, मनमां पामे खेद ॥ सु० ॥ सा० ॥ ३० ॥ धिक् माहारा ए राज्यने रे लाल, परप्राणे छह-
पाय ॥ सु० ॥ धिक् माहारा जीवितव्यने रे लाल, ए असमंजस थाय ॥ सु० ॥ सा० ॥ ३१ ॥ यतः ॥ पर-
प्राणैर्निजप्राणान्, सर्वे रक्षंति जंतवः ॥ निजप्राणैः परप्राणान्, रक्षंति विरला जनाः ॥

भावार्थः—पारका प्राणोए करीने पोताना प्राणनी रक्षा तो सर्वे जीव करे छे, परंतु पोताना प्राणोए करी परनी रक्षा तो
कोइक वीरला पुरुष करे छे ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ एम चिंति छुरिका ग्रही रे लाल, छेदे गले नृप जाम ॥सु०॥ तेणे सत्त्वे सुप्रसन्न थइ रे लाल,
कुलदेवी राखे माम ॥ सु० ॥ सा० ३२ ॥ अमृतरसे चारे छांटीया रे लाल, सज्ज थया सुकुमाल ॥ सु० ॥
परवीर मनमां चिंतवे रे लाल, धन जस उपकृति ढाल ॥ सु० ॥ सा० ॥ ३३ ॥ यतः ॥ क्षमी दाता गुणग्राही,
स्वामी पुण्येन लभ्यते ॥ अनुरक्तः शुचिर्दक्षः, स्वामिन् भृत्योपि दुर्लभः ॥ १ ॥

भावार्थः—क्षमावान, दाता, गुणग्राही, एवो स्वामी पुण्ये प्राप्त थाय छे। अने हे स्वामी ! मायाळु, पवित्र तथा डाह्यो एवो
चाकर पण दुर्लभ होय छे ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ हवे प्रजाते परवीरने रे लाल, राज्य अर्ध देइ प्रेम ॥ सु० ॥ सन्मान्यो घणुं सज्जने रे लाल,
कशवटी लमे हीरा जेम ॥ सु० ॥ सा० ॥ ३४ ॥ कहे वेताल हवे रायने रे लाल, सत्त्वाधिक एहमां कोण
॥ सु० ॥ भूप कहे नृप साहसी रे लाल, बीजा एहथी गौण ॥ सु० ॥ सा० ॥ ३५ ॥ कहे वेताल केणे कारणे
रे लाल, एहवी छे जग रीति ॥ सु० ॥ स्वामि काजे सेवक दुःख सहे रे लाल, न सहे स्वामि सेवक हेत ॥सु०
॥सा०॥यतः॥ स्वाम्यर्थे सेवकाः प्राणान्, त्यजंति तृणवत् युगे ॥ परं स्वामी स्वभृत्यार्थे, प्राणान् त्यजंति दुर्लभः॥१॥

भावार्थः—स्वामीने माटे सेवको तृणनी पेठे पोताना प्राणनो त्याग करे छे, परंतु सेवकने माटे स्वामी प्राणनो त्याग
करनारो दुर्लभ छे ॥

॥ पूर्वी ढाल ॥ एम मुणी निज ठामे गयो रे लाल, एह कथा वेताल ॥ सु० ॥ ज्ञानविमलथी सांभळो रे
लाल, प्रगटे गुण सुकुमाल ॥ सु० ॥ मा० ॥ ३७ ॥
॥ ढाल ॥ माहारा ने ताहारां करहलां, चरतां एकण हार ॥ लगारा ॥ ए देशी ॥
॥ एम त्रण दृष्टांत सांभळी, दृढ करी जेहवे जाय ॥ कुमरजी ॥ धैर्य धरी निज चित्तमां, करे करवाल
धराय ॥ कुमरजी ॥ एम त्रण वार थये कह्युं, चोथी वेळा जब थाय ॥ कुमरजी ॥ चतुर ते नर जळे नहीं
॥ ३० ॥ पाणी कहे चकथी छेद, हाथ दृढ करी जब जाय ॥कु०॥ तेहवे हाथ वळी बोलीयो, वचन कहे निर्भय
॥ कु० ॥ च० ॥ ३९ ॥ अहो तुं राजाधिराज छे, चतुर विचक्षण जाण ॥ कु० ॥ शुं कापालिक वयणडे, लागो
थयो छे अयाण ॥ कु० ॥ च० ॥ ४० ॥ ए धूर्त निर्दाक्षिण्य, निर्लज्ज ने निःकृपाल ॥ कु० ॥ ए लिंगी कूड
कपटना, मायाना महाजाल ॥ कु० ॥ च० ॥ ४१ ॥
॥ गुजथी ए साधन करे, पण होली लहे कोड ॥ कु० ॥ हाथ वाणी एम सांभळी, चिंते धरी अंदोह ॥कु०
॥ च० ॥ ४२ ॥ एहवामां आवी तिहां, गधगया एक नारी ॥ कु० ॥ पूछे कुमर तुं कोण अछे, कहे गद्गद
स्वर धारी ॥ कु० ॥ च० ॥ ४३ ॥ आंसुये धरणी सिंचती, मुख नीशासा मूक ॥ कु० ॥ आ पुरथी दक्षिण
दिशे, नंदी गामे वसुं हूंक ॥ कु० ॥ च० ॥ ४४ ॥ मुज पति दरिद्रपणा थकी, चोरी करे विचार ॥ कु० ॥ अवर
उपाय लहे नहीं, दुर्नर नरसुं ते नार ॥ कु० ॥ च० ॥ ४५ ॥ एक दिन आरक्षक नरे, घट बांधी कस्यो घात
॥ कु० ॥ जन मुखथी एम सांभळी, आवी करवा यात्र ॥ कु० ॥ च० ॥ ४६ ॥ मा कहे तुमे पणे हाथे, शुं
करशो शुन काम ॥ कु० ॥ चेम्बी समशाने कुंभमां, कुमर कहे ए काम ॥ कु० ॥ कंचन नरने काम ॥ कु० ॥
च० ॥ ४७ ॥ वळी जे तुं कहे ते करुं, वारंवार कहे नारी ॥ कु० ॥ चंदने हाथ आलेपीयो, कीधी शुन जय-
धार ॥ कु० ॥ च० ॥ ४८ ॥ एम करतां हाथे नारीनुं, नाक ग्रह्युं अति दुष्ट ॥ कु० ॥ रोती स्त्री गामे गइ,
कुमर चिंते ए कष्ट ॥ कु० ॥ च० ॥ ४९ ॥ ज्ञानविमल सूरि एम कहे, कष्ट होवे सुख काज ॥ कु० ॥ जेहने
धर्म चिंतामणि, ते नर मणि शिर ताज ॥ कु० ॥ च० ॥ ५० ॥ सर्व गाथा ॥ ९५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते हाथ लेइने कुमर ते, आव्यो योगी पास ॥ अग्निकुंडने आगळे, मूके रहे वास पास ॥ १ ॥ विधिज-

वशुं न्हवरावीयो, कुसुमादिकशुं पूज ॥ मंमल मांहे सुवरावीयो, शव शिर रही अधूज ॥ २ ॥ योगी ते साहामो रह्यो, सन्मुख रह्यो कुमार ॥ योगी कहे साधन करुं, रहेजो हवे एक तार ॥ ३ ॥ कुमरे तनु रक्षा करी, बेठो थइ सावधान ॥ सिद्धारथ तंडुल वहु, होमे कुंममां ताम ॥ ४ ॥ जेम जेम शव छांटे कणे, तेम उठे देव प्रजाय ॥ थरहुं परहुं जोइ करी, सूचे शव समजाय ॥ ५ ॥ कुमर सिंहावलोकने, जोवे सघलुं तेह ॥ योगी पूछे धीर तुं, कांइ जपे छे नेह ॥ ६ ॥ कुमर कहे हुं ए जपुं, जो त्रिकरण निर्मल चित्त ॥ कार्यसिद्धि थाउ तेहने, ए पजणुं नित्य नित्य ॥ ७ ॥

॥ यतः ॥ यथा चित्तं तथा वाचा, यथा वाचस्तया क्रिया ॥ चित्ते वाचि क्रियायां च, साधूनामेकरूपता ॥ १ ॥

जावार्थः—जेवुं चित्त तेवी वाणी अने जेवी वाणी तेवी क्रिया, चित्तमां, वाणीमां अने क्रियामां साधु पुरुषोने एकता थाय छे.

॥ दोहा ॥ ते निगुणी योगी कहे, कहे धीरता धीर ॥ अष्टोत्तरशत तंडुले, शव छांट्यो तेणे धीर ॥ ८ ॥ त्रण वार एम विधि कर्यो, पण शक्य न जाणे कोय ॥ नाक अग्र मुखमां अछे, तेणे विधि पूर्ण न होय ॥ ९ ॥ चिंता गुरु शव मुख कहे, अरे दुष्ट योगीश ॥ अरे मुग्ध तुं हवे मुझे, मुज कर छेडुं शीश ॥ १० ॥ तुं द्विज पहने स्थानके, साधन निष्फल न होय ॥ एम कही योगीने ग्रही, कुंममां नाखे तेय ॥ ११ ॥ सुर शवमांहे संक्रमी, नाख्यो अग्नि मझार ॥ हा हा हा नृप सुत करे, न थयुं कार्य लगार ॥ १२ ॥ सुर गयो शवथी नीसरी, योगी कंचन नर थाय ॥ जाग्य वली होये जेहने, तेहने सवि वश थाय ॥ १३ ॥ कुमर शक्य न जाणीयो, न थयुं परनुं काज ॥ हा हा ए शुं नीपन्युं, न थयुं में कांइ साहाज ॥ १४ ॥ एम चिंती शव अग्निमां, पेखी करे संस्कार ॥ सुवर्ण पुरुष पण गोपव्यो, कुमरे तेणीवार ॥ १५ ॥ प्रिया पास परजात ते, परम प्रमोदे जाय ॥ अंजनशुं करी सुंदरी, वात कही सवि त्याय ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ ७३१ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ कंत तमाकु परिहरो ॥ ए देशी ॥

॥ ते निगुणी हर्षित थइ, ए दुर्जय कर्युं काम ॥ मोरा लाल ॥ कंचन नर ते केहथो, किस्यो तस गुण

विघन थयुं विसराल ॥ मो० ॥ ध० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ कुमर कहे गुण तेहनो, विधे पूजीजे एह ॥ मो० ॥
अंग चतुष्टय खीजीये, वसे ढांके तस देह ॥ मो० ॥ ध० ॥ ३ ॥ वळी प्रजाते तेहवा होये, शिर रागीजे एक
॥ मो० ॥ दिन दिन नवखां नीपजे, एहवां गर्व प्रतीक ॥ मो० ॥ ध० ॥ ४ ॥ देतां खातां खरचतां, होये
खमसी अखूट ॥ मो० ॥ कंचन नरना प्रजावथी, जेम सुलमीनां घूंट ॥ मो० ॥ ध० ॥ ५ ॥ पण प्रिये ए धन
वापरे, नहीं मम कीमे मन ॥ मो० ॥ हिंसा अनुबंधी अछे, वळी अन्याय कुमन ॥ मो० ॥ ध० ॥ ६ ॥ आध
अणुमत संकना, हेतु ए व्यापार ॥ मो० ॥ जोगोपजोगज एहनो, करवा नहीं व्यवहार ॥ मो० ॥ ध० ॥७॥
कृपालुनी कृपालुता, न रहे मन परिणाम ॥ मो० ॥ तेह नाणी ए देखीने, नवि पोहोंचे मन हाम ॥ मो० ॥
ध० ॥ ८ ॥ एम दंपती निज वारता, करतां लागी वार ॥ मो० ॥ जोवाने उत्सुक थया, आगल देशाचार
॥ मो० ॥ ध० ॥ ९ ॥ एहवे क्रीडा कारणे, आवे गुण विभ्रम रूप ॥ मो० ॥ मरणाले ते देखीने, दंपती रूप
अनूप ॥ मो० ॥ ध० ॥ १० ॥ अवलोकी आंबा तले, गवराये बेठो राय ॥ मो० ॥ इयं कोइ बंदी देशांतरी,
नृप आगे गुण गाय ॥ मो० ॥ ध० ॥ ११ ॥

तथाहि ॥ काव्यानि ॥ जे परनारी सहोदर जाणीये, अपति लक्ष्मी परे नवि आणीये ॥ मागण मनवंछित
ने सुरतरु, जयो ते श्रीचंद्र सुदंकरु ॥ १ ॥ निरखीडं जेणे शून्य पुर चंदा, मांहे जइ राक्षस जीतीयो मुदा ॥
चरणयुगम तणां चंपावीयां, करी किंकर ते पुर गावीयां ॥ २ ॥ कुंभलपुरनुं लेइ राज्य सुता परणी तिहां, पंक-
सुनीने नामे वास्युं सुचंद्रपुर जिहां ॥ राधावेध धानुर्वेद धनुः प्रमुख कळा, सीखाये जे शिक्षित देहा, जयो
मिरिचंद ते ॥ ३ ॥ इत्यादिका गुणाः ॥ पुनः ॥ काव्यं ॥ स पद्मिनीकांत अनंतधैर्यो, जीयाचिरं नृपप्रतापगिं-
रुजः ॥ प्रियंगुमंजर्यनमद्य चारु, विचारवार्त्ता च विधाय नाथं ॥४॥ त्रिलोचनाधीश सुता विनिर्मिता, पद्मा-
प्रियतपत्रविशालनेत्रा ॥ जालंधरक्ष्मापि येन कसुमा, स श्रीकरः श्रीवरचंद्रचंद्रः ॥ ५ ॥

नावार्थः—श्रीपद्मिनीना कांत, अत्यंत धैर्यवान् प्रियगुमंजरीए मनोहर अनेक वार्त्ताओ पूछीने पछी स्वामीपणाए वरीने जेने
नमस्कार कर्यो ते प्रतापसिंह राजाना पुत्र श्रीचंद्र, उत्कृष्टपणाने पामो ॥ १ ॥

॥ जग शिरे जरे धारा दूषनी, रायणवृक्ष तले हिव धंधुनी ॥ चंद्रलेखा परणी जेणे प्रेमशुं, तेह श्रीचंद्र
घणुं घणुं नेहशुं ॥ ६ ॥

॥ ढाल पूर्वली ॥ इत्यादिक गुणकीर्त्तना, विस्तारे गुण श्रेणि ॥ मो० ॥ बंदीजन मुख सांजली, रंज्यो राजा तेण ॥ मो० ॥ ध० ॥ १२ ॥ अचरिज लही राजा कहे, अरे वैतालिक मुख्य ॥ मो० ॥ कहे तुमे किहांथी आविया, वात कहो सवि दक्ष ॥ मो० ॥ ध० ॥ १३ ॥ कहे कुंभपुरथी आवीयो, तिहां तस चरित्र पवित्र ॥ मो० ॥ निसुणीयुं ते में जाखीयुं, करया जीह पवित्र ॥ मो० ॥ ध० ॥ १४ ॥ हवे वीणापुर पत्तने, जाउं बंधुनी पास ॥ मो० ॥ नरवर राणा राजीया, दीये तस धन उल्लास ॥ मो० ॥ ध० ॥ १५ ॥ पारितोषिक लेइ चालीयो, ते गायन गुणखाण ॥ मो० ॥ मदना पण हर्षी घणुं, कहे पतिने एम वाण ॥ मो० ॥ ध० ॥ १६ ॥ नाथ तुमे साचुं जण्युं, वैदेशिक तुं जेह ॥ मो० ॥ ते सवि आज में सांजल्युं, चरित्र कांइ गुणगेह ॥ मो० ॥ ध० ॥ १७ ॥ कहे पति सांजल हे प्रिये, श्रीचंद्र बहु छे नाम ॥ मो० ॥ कोण जाणे केहो कह्यो, शुं आपणे ने काम ॥ मो० ॥ ध० ॥ १८ ॥ प्राणनाथ कहेता नथी, हजी लगे मननी वात ॥ मो० ॥ हसीने एक उत्तर कहे, निर्धारे छे वात ॥ मो० ॥ ध० ॥ १९ ॥ सुवर्ण मुद्रिका आपणी, आपे अर्थीने ताम ॥ मो० ॥ राजा पुरमांहे गयो, बंदी करे प्रणाम ॥ मो० ॥ ध० ॥ २० ॥ प्रिया सहित हवे चालीया, वीणापुर उद्देश ॥ मो० ॥ मार्गे जातां आगले, मल्यो तस्कर निवेश ॥ मो० ॥ ध० ॥ २१ ॥ दिव्य रूप ते दंपती, देखी विस्मित नयण ॥ मो० ॥ असि करालने देखीने, पूछे तुं छे कोण ॥ मो० ॥ ध० ॥ २२ ॥ ए असि दीये तुं मुजने, कुमर कहे फरी वयण ॥ मो० ॥ सज कर असि तुं ताहरी, जूमि पड्यां नहीं रयण ॥ मो० ॥ ध० ॥ २३ ॥ देखाडी वल आपणुं, पछी आपुं करवाल ॥ मो० ॥ सुणी वचन एम आकरां, गयो तस्कर तेणी वार ॥ मो० ॥ ध० ॥२४॥ रीसे धमधमतो थको, स्त्री असि लेयण काज ॥ मो० ॥ राजाने ते जणावीयुं, आव्यो पूछे सजी साज ॥मो० ॥ ध० ॥ २५ ॥ विकट कटक ते देखीने, मदना वदे सुणो स्वामि ॥ मो० ॥ इयो ए पाछल तुमुल छे, दीठुं कटक जोयुं जाम ॥ मो० ॥ ध० ॥ २६ ॥ मनमां जय तुं मत धरे, रहे मुज आगल हेव ॥ मो० ॥ नहीं विहस्त वधु हस्तशुं, सज्ज होये ततखेव ॥ मो० ॥ ध० ॥ २७ ॥ असि स्त्री तस्कर लेइने, किहां जाइश रे रांक ॥ मो० ॥ हणो हणो बांधी लीयो, कहे एम वचन लमाक ॥ मो० ॥ ध० ॥ २८ ॥ हवे कुमर साहामो थइ, सिंहनाद करे ताम ॥मो०॥ कायरना प्राण थरहर्या, मांड्यो तिहां संग्राम ॥ मो० ॥ ध० ॥ २९ ॥ गज तुरग रथ जट घणा, मांहोमांहे पतंत ॥ मो० ॥ केइ मुआ केइ अधमुआ, केइ जीव लेइ नासंत ॥ मो० ॥ ध०

॥ ३० ॥ केइ कहे कौतक आवीया, हारी जननी लाज ॥ मो० ॥ तखार कहे पायी आवीया, आपणे कोइ न काज ॥ मो० ॥ ध० ॥ ३१ ॥ मरणे मातनी घोरली, जेम आषाढो मेह ॥ मो० ॥ जननी जायो ते कोण जे, गत जनम गयो अछेह ॥ मो० ॥ ध० ॥ ३२ ॥ जेम मनमांहे हरि एकलो, श्वापद जीते बीज ॥ मो० ॥ तिम प्रताप ते महेश्वमां, कीधा मनि अपहीज ॥ मो० ॥ ध० ॥ ३३ ॥ पुण्यवंती जे नर अछे, तस ए केती वात ॥ मो० ॥ ज्ञानविमल सूरि एम कहे, राखे पेशाचक यात ॥ मो० ॥ ध० ॥ ३४ ॥ सर्व गाथा ॥ १०११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे ए कोइ मनुष्य छे, हरि पक्षी खग राय ॥ किंवा विद्याधर अछे, किणही कह्यो न जाय ॥ १ ॥ काक नासे जेम दश दिशे, नाठी सेना तेह ॥ चार तेज तखार मनि, गया पाछा फरी गेह ॥ २ ॥ देखामात्रे जीतीया, वैरीना जेणे राशि ॥ प्रिया पूछे तुज कंतना, जय जय जणे वखाण ॥ ३ ॥ किहां पंथे किहां वन पंथे, किहां हरखे किहां वेग ॥ आप सुखे एम चालतां, करी धरी ते जिन तेम ॥ ४ ॥ कौतुक जोतो अति घणां, प्रिया प्रेमने मेल ॥ नागवती अनुखी थके, नित्य नित्य करतो केल ॥ ५ ॥ सर्व गाथा ॥ १०१६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ नंदावलानी देशीमां ॥

॥ हवे अनुक्रमे पुर जोवतो रे, नदी सरस्वतीने तीर ॥ सिद्धपुरे जब आवीया रे, धीर वीर कोटीर ॥त्रूटक॥ धीर वीर कोटीर सुहावे, सिद्धपुर देखी सुख पावे ॥ तेह शहेरनो एह आचार, सुणजो कहुं हवे तेह विचार ॥ जी राजेसरजी रे ॥ १ ॥ करी त्रिकरणनी शुद्धि दिलमां धरजो रे ॥ लोकोत्तर द्रव्यनुं दूषण वारजो रे ॥ ए आंकणी ॥ जैनशिखर छे महोटको रे, महिमाना भंडार ॥ तीरथ केरुं नाम छे रे, शुचि शकावतार ॥ त्रू० ॥ शकावतार तीर्थ छे साचुं, जगतमांहे जेम कंचन आछुं ॥ देश देशना बहु जन आवे, यात्रा करेया बहु सुख पावे ॥ जी० ॥ २ ॥ वस्त्र अक्षत फल द्रव्यनी रे, पूजा करे बहु भक्ति ॥ एम अनेक जन देशना रे, जेहने जेहवी शक्ति ॥त्रू०॥ जेहने जेहवी शक्ति अनुसारे, जाये देशना संघ जिहां रे ॥ चोवटीया मली ते देवद्रव्य, वहेंची लीये ते मलीने कुर्नव्य ॥ जी० ॥ ३ ॥ देव संबंधी द्रव्यथी रे, संयोगे सवि लोक ॥ निर्धन थया ते

पुरजना रे, दीना जेम निशि कोक ॥ भू० ॥ थोक घणा घरमांहे दीसे, पण साहारी जेम माखण लुसे ॥ तेणी परे सघला थया विछाया, कोइने सुत नहीं कोइने नवि जाया ॥ जी० ॥ ४ ॥ तिहां श्रीचंद जब आवीया रे, थइ जोजन चार ॥ देखी पुर ते एहवुं रे, जाण्युं इंगित आकार ॥ भू० ॥ इंगिताकारे चित्तमां धार्युं, पूछी लोकने पछी निर्धार्युं ॥ कहे इहां रही जोजन नवि करवुं, अशनादिक एहनुं नवि लेवुं ॥ जी० ॥ ५ ॥ जिन-प्रासादे आवीया रे, अति उत्तुंग उदार ॥ जाणे मेरु शिखरडे रे, कीधा इहां अवतार ॥ भु० ॥ सार कोरणी चित्तनी हरणी, पंचाली छे जिहां बहु वर्णी ॥ तेजे थंजीये जिहां तरणी, जिनप्रतिमा समकित गुण धरणी॥जी०॥६॥

हवे श्रीचंदकुमर स्तवना करे छे ॥ ढाल ॥ अवधे आवजो रे नाथ ॥ ए देशी ॥ राग विहागको ॥

॥ मनमां आवजो रे नाथ, हुं थयो आज सनाथ ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ जय जिनेश निरंजनो, जंजनो जवदुःख राशि ॥ रंजनो सवि जवि चित्तनो, मंजणो पापना पाश ॥ मनमां० ॥ १ ॥ आदि ब्रह्म अनूप तुं, अब्रह्म कीधा दूर ॥ जवभ्रम सवि जांजी गया, तुंहि चिदानंद सनूर ॥ म०॥ २ ॥ वीतराग जाव न आवही, जिहां लगे मुजने देव ॥ तिहां लगे तुम पद कमलनी, सेवना रहो ए टेव ॥ म० ॥ ३ ॥ यद्यपि तुमो अतुली बली, यशवाद एम कहेवाय ॥ पण कवज आव्या मुज मने, ते सहजथी न जवाय ॥म०॥ ४ ॥ मन मनाव्या विणु माहरुं, केम बंधथी छूटाय ॥ मनवंछित देतां थकां, कोइ पालवके न जलाय ॥ म० ॥ ५ ॥ हठ बालनो होये आकरो, ते लहो छो जिनराज ॥ जाजुं कहावे शुं होये, गिरुआ गरिब निवाज ॥ म० ॥ ६ ॥ ज्ञानवि-मल गुणथी लहो, सवि जविक मनना जाव ॥ तो अक्षय सुखलीला दीयो, जेम होये सुजस जमाव॥म०॥७॥

॥ ढाल पूर्वली ॥ एम बहु पुण्यप्रमोदथी रे, नति थुति वंदन कीध ॥ प्रिया प्रत्ये प्रेमे कहे रे, इहांथी कांइ न लीध ॥ भू० ॥ सीधादिक सवि इहां नवि लेवुं, देवद्रव्य खाधानी जेहवुं ॥ मनमांहे ए महोटी शंका, लोक दीसे छे जेहवा रंका ॥ जी० ॥ ७ ॥ पुर बाहेर ते आवीने रे, वृद्ध पुरुष तेडावे ॥ कहे कुमार ते नयरमां रे, नूर न कांइ जणावे ॥ भू० ॥ जणावे ए जीर्ण प्रासाद, देखी उपजे छे आह्लाद ॥ कण देवकुं वध्युं प्रमादे, तेणे करी वधतो छे विषवाद ॥ जी० ॥ ८ ॥ देवद्रव्य संबंधथी रे, जे करे धननी वृद्धि ॥ ते धनथी कुल क्षय होये रे, गति नरके जाय बुद्धि ॥ भू० ॥ बुद्धि नाश होये देव रुणाथी, देव रुणुं कह्युं अशुज पणाथी ॥ मशिकुंचीशुं जे पर धोले, देवद्रव्यनो करे निज धन भेले ॥ जी० ॥ ९ ॥ अनंत संसारी ते कह्यो रे, जे देव-

द्रव्यने नाश ॥ बहुल संसारी ते कह्या रे, जे जिनद्रव्य होहाय ॥ शृ० ॥ आय व्यय जे नवि संभाळे, देव-
न्यायमार्ग द्रव्य उवेखा जाळे ॥ ते पण होये संसारी कहीये, जाणंतो पण जे नवि कहीये ॥ जी० ॥ १० ॥
ऋद्धि वधे वळी जिनआणथी रे, देवद्रव्य करे वृद्धि ॥ ते तीर्थंकरपद लही रे, पामे बहुली सिद्धि ॥ शृ० ॥
नाणमां काची, थाये गुणी जनमांहे साची ॥ प्रभु साथे मन थाये पाछी, कीर्ति कमळा तस होये ताजी ॥ जी०
॥ ११ ॥ देवद्रव्यने जमतां रे, वळी परस्त्री संग ॥ सात वार सातमी गये रे, होये वळी हीनांग ॥ शृ० ॥
संग तेहनो होये अजाणे, तोपण होये निज गुणनी हाणे ॥ आगममांहे एहवी वाण, उत्तम नर ते करेय
प्रमाण ॥ जी० ॥ १२ ॥ यतः ॥ चेइयदव्वविणासे, रिसिघाए पवयणस्स उड्डाहे ॥ संजइ चउत्थभंगे, मूलग्गी बोहिलाभस्स ॥ १ ॥
जिणपवयण वुड्ढिकरं, पभावगं नाणदंसण गुणाणं ॥ रक्खंतो जिणदव्वं, परित्तसंसारीओ होइ ॥ ३ ॥
जिणपवयण वुड्ढिकरं, पभावगं नाणदंसण गुणाणं ॥ वड्ढंतो जिणदव्वं, तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥ ४ ॥
॥ ढाल पूर्वली ॥ चैत्यद्रव्य विणासने रे, करे वळी ऋषिनो घात ॥ साधवी शीलव्रत खंडना रे, वळी
प्रवचन उपघात ॥ शृ० ॥ घाते प्रवचन जे उड्डाहे, अवर्णवाद करे जे पडाहे ॥ बोधिबीज मूळे अग्नि ते थाये,
जिनगणधर गुण कहे एम आवे ॥ जी० ॥ १३ ॥ यतः ॥ चेइयदव्व विणासे, रिसिघाए पवयणस्स उड्डाहे ॥
संजइ चउत्थभंगे, मूलग्गी बोहिलाभस्स ॥ १ ॥
॥ पूर्व ढाळ ॥ जमे तथा उवेखे वळी रे, श्रावक जे जिनद्रव्य ॥ प्रज्ञाहीन ते जव जवे रे, पापकर्मी दुर्भव्य
॥ शृ० ॥ द्रव्य न पामे दरिद्र न भागे, पंथमांहे न कोइ लागे ॥ पगीया ढोर परे ते नासे, जवजव ते दुःख
पणाशे पामे ॥ जी० ॥ १४ ॥ यद्यपि देव गुरु ज्ञानने रे, निश्राये नहीं द्रव्य ॥ तोहे पण तस थापना रे,
करी पंच गुरु-जनिक वळी करी द्रव्य ॥ शृ० ॥ द्रव्य होये ते वधे रागे, जिनप्रतिमादिक थापन लागे ॥
अथवा वळी व्यापारमां रे, पापवृत्ति जिहां नवी लागे, तस वळी अनुसर अवगा दागे ॥ जी० ॥ १५ ॥
आय व्यय नवि तेहनो अवगो, आप धनेथी न थाय ॥ तेहमां लेश न भेळवे रे, थाये रहे निर्मोय ॥ शृ० ॥
उत्सूत्र नाखी देवद्रव्य करे पावगो ॥ जिनआणे एम द्रव्य वधारे, तो तीर्थंकरपदने धारे ॥ जी० ॥ १६ ॥

प्यनुं रे, जे नर होये खानार ॥ ते नर बोधि लहे नहीं रे, रुखे चौगति संसार ॥ त्रू० ॥ सार कह्युं ए प्रवचन मांय, जेम संकाश श्रावक संजवाय ॥ अणजाणे कांकणी अगीआर, देवद्रव्यनी रही गेह मोझार ॥ जी० ॥ १७ ॥ तेह जणी चौगति रुल्यो रे, जमीयो बहु संसार ॥ केवलीथी निज कर्मनी रे, वीतक लही तिण वार ॥ त्रू० ॥ धारी मनमां अजिग्रह कीधो, देवद्रव्य दूष्यो परसीधो ॥ जोजन वस्त्र परिग्रह टाली, करुं व्यापार देवद्रव्य दीधुं पाली ॥ जी० ॥ १८ ॥ लाख कोमी धन मेलीयां रे, कीधा देव निमित्त ॥ एम पातकथी छूटीयो रे, सिद्ध थयो अनिमित्त ॥ त्रू० ॥ चित्तमांहे धरी एहवी वात, न करवो देवद्रव्य उपघात ॥ अवर न एह समो उपपात, देवद्रव्य खाये तेह विजात ॥ जी० ॥ १९ ॥ ए संक्षेपथी दाखीउं रे, कहे तो कहीये विस्तार ॥ जो मनमांहे ए रुचे रे, सावधाने सुणो सार ॥ त्रू० ॥ सार एह ठे तत्त्वविचार, सांजलीने विरमीजे सार ॥ ते कहे स्वामी हितकरा दाखो, शंक न कांइ मनमां राखो ॥ जी० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ १०४७ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ कहे श्रीचंद्रकुमार, तेको चोवटीया वडा ॥ गाममांहे जे चार, हित आणीने हेजशुं ॥ १ ॥ दाणीघरशुं प्यार, गदतुं ए मातुं अठे ॥ पण लोकोत्तर द्रव्य, ते हरणथी नरके गठे ॥ २ ॥ लौकिकमांहे एम, देणुं कांइ न नंजीये, करी मसकती जेम तेम, दीजे तो किहांये न गंजीये ॥ ३ ॥ देव ज्ञान गुरु खेत्र, ए जगमां महोटां कह्यां ॥ साधारण पण तेम, तेहनुं ऋण नवि राखीये ॥ ४ ॥ दूषण महोटां तास, शास्त्रमांहे बोल्यां अठे ॥ जेम पाम्यो संकाश, श्रावक चरित्र जो मन रुचे ॥ ५ ॥ ते कहे दाखो तेह, जेणी परे जाण्यो होये तुमे ॥ केम थयो दुःखनो गेह, केम छूटो सुखीयो थयो ॥ ६ ॥ दाखे ते संबंध, कुमर तेहोने आगले ॥ मांहे ज्ञानादि प्रबंध, दृष्टांते तस दाखवा ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ शारद बुधदायी ॥ ए देशी ॥

॥ गंधलावती नयरीये, सम्यग्दर्शने शुद्ध ॥ सुमहित धार व्रत, क्रिया जावित शुद्ध ॥ जीवाजीवादिक, तत्त्वविचारनो जाण ॥ उजय काले आवश्यक, करतो जाव प्रमाण ॥ त्रूटक ॥ आण वहे जिननी विधि सेतो-

तप करतो संतोषी ॥ मिथ्यामायतन सकल छोकने, सात खेत्रे पुण्यपोषी ॥ श्रावक गुण श्रावक गुणभरियो, संकाश नामे कहीये ॥ कहेणीयें रहेये परने कहेये, सावधान ते रहीए ॥ १ ॥ ढाल ॥ तग नयरे चैत्य ते, शक्रावतार इति नाम ॥ तिहां आवे बहु जन, यात्रातीरथ काम ॥ देवद्रव्य घणुं तिहां, उपजे तस रागेव ॥ संकाशने आवे, बहु मली तसगेव ॥ ध्रु० ॥ सेवा पण ते चैत्यनी करतो, कालांतरे धनवृद्धि करतो ॥ लेश छदया वृत्तिकादिक, आपे तस काले अनुसरतो ॥ एक दिन अशुभ कर्मने उदये, देवद्रव्य खवाणो ॥ पण तेहने मन पश्चात्ताप, गर्हा निंदा नाण्यो ॥ २ ॥ ढाल ॥ मिथ्यापणाथी, अन्य न पूछे कोइ ॥ तस नामुं लेखुं, न करे न राखे जोइ ॥ नस्युं देवद्रव्य जाणी, देखा मन नवि थाये ॥ आयुःक्षये मरीने, नरकगति दुःखीयो थाये ॥ ध्रु० ॥ जाये तिहां नरके बहु वेदन, दस विध तो सवि नरगे ॥ रोग शोग सकल छहू नय समकाले, अपइठाणे नरगे ॥ नित्य तिमिर वसा मांस रुधिरना, कर्दमनुमि अमेध्य ॥ जाणे को थने पण अधिकी, सर्जे अनेक परिवध्य ॥ ३ ॥ यतः ॥ दसविह वेयण निरए, सी १ उसिण २ खु ३ पिवास ४ कंडुहिं ५ ॥ जय ६ सोग ७ परवसत्तं, ८ जरोय ९ वाहीय १० दसमो य ॥ रोगसंख्या गाथा ॥ पण कोमी अड-सठी, लखा नव नवइ सहस पंचसया ॥ चुलसी अहिया निरये, अपइठा छंमिवाहीउ ॥ १ ॥ ढाल ॥ जलता अंगारा, परे वज्रकुंभी कुंभ ॥ तेहमां पोलंता, करुण स्वरे करी तुंब ॥ तिहां पुंजे नकत्र करे, पुंखी आलिं-गावे ॥ धग धगता तरुओं, तातां करीने पावे ॥ ध्रु० ॥ लयरावे तिहां खार देइने, आप मांसना लंक ॥ असि-पत्र वनमांहे गजवंधन, छेदन करे छहंक ॥ वैतरणीमांहे अवतारे, सोळ नारशत सहस ॥ देइ माथे जोर जोवर अति तीखा, वेध आरना सहस ॥ ४ ॥ अंकन पूठे गाढन, खड्ग तोमर ने कुंते ॥ मोचे ने नेदे, परमा-धामी अत्यंते ॥ कर्णाक्रम करे छग, उत्पाटन छेद वेध ॥ पापड परे कुट्टण, अग्निमां धाले जिम मेध ॥ ध्रु० ॥ ऊर्ध्वपाद अधोवदन ने, जिह्वा तालु प्रमुखना नेद ॥ ढंक कंक लोहतुंड जे पक्षी, करडे ते बहु नेद ॥ इत्यादि बहु वेदन नरगे, सातें पणी परे करीउ ॥ एवे तिहांथी तिर्यंचनी गतिमां, आवीने अवतरीयो ॥ ५ ॥ अथ ति-र्यग्गतिदुःखं ॥ कर्णादिक नेदन, नारवहन रज्जु बंध ॥ कुश अंकुश मांजन, बहुल प्रहार प्रबंध ॥ नासादिक वेधन, अंकन तरस ने नूख ॥ शीत ताप ने वातह, पंककलणनां दुःख ॥ ध्रु० ॥ सुख नहि तिल मात्र तिहां किम, नरक नहि पण सरखो ॥ पंचेंद्रिय गर्भज संमूर्छिम, विगलेंद्रिय पण परखो ॥ जलचर थलचर खेचर

कइ, दुःख सहेतो निरधार ॥ तिहांथी संमूर्छिम मानव थसी, गर्भज नर अवतार ॥ ६ ॥ देवद्रव्यनो क, प्राये सुरगति नवि थावे ॥ जो थावे तो पण, अशुभ आभियोगिकपणुं पावे ॥ इर्ष्याविषवादी, माया र्नुं गेह ॥ अपराध धरंतो, अल्पायुष्यपणुं तेह ॥ भू०॥ जेह होय नरथी पण हीणो, किल्बिषीना भव पामे॥ अभिमानिनी कायमांहेथी, कांडे वज्र परे बहु दामे ॥ अशुचि ठामे अशुचि वलवालो, विविध दुःख अनुसरतो ॥ संकाश तो सुरगति नवि पाम्यो, पण बीजा भवे धरतो ॥ ७ ॥ इति प्रक्षेप गाथा ॥ ढाल ॥ शिर कर पग नासा, ओष्ठ जीभ ने कान ॥ छेदन कारागृह, वसवुं दास निदान ॥ वध बंध आतंकह, शोक दारिद्र अपमान ॥ तिल मात्र मनोरथ, सीझे नहीं किण गान ॥ भु० ॥ मान नहीं भव एम असंख्यह, भ्रमण करीने पावे ॥ तगरापुर मानवभव अनुक्रमे, इभ्य पुत्र तिहां थावे ॥ जात मात पिता मरण, लक्ष्मीनो नाश ॥ थयो लोक मांहि अति निंदित, पुर्ण नहीं किहां भोजन आश ॥ ८ ॥ दोभागी रोगी, सोगी दुःखनो गेह ॥ निज उदर भर नो, तेहनो पण संदेह ॥ अनुक्रमे तिहां केवली, आव्या वनमां जाणी ॥ वांदी निज अशुभनुं, निमित्त नाणी ॥ भू० ॥ जाते संकाश तणे भवे, देवद्रव्यनो नाश कीधो ॥ अगीयार कांकणीनो ते तेहथी, थयो प्रसिद्धो ॥ निसुणीने ते आतम निंदे, हा हा अनार्य हुं कुमति ॥ निर्लज कायर पापात्मा हुं, यो सुमति ॥ ९ ॥ मानवभव पामी, अरिहंत धर्म न जाण्यो ॥ सिद्धांत सुणीने, साचो मन नवि । हुं लोभी मूढो, निज कुलनो अंगार ॥ नगरमांहे अधम हुं, न कर्यो धर्म लगार ॥ भू० ॥ सार देवव्य ते में भखीयो, लखीयो कर्मविपाक ॥ कहो स्वामी हवे केणी पेरे छूटुं, जेम होये भव परिपाक ॥ ज्ञानी क जे देव तणुं रुण, आपे जो सवीश ॥ करे न्याये व्यापारे उपार्जी, तो छूटे दुःखपाश ॥ १० ॥ ढाल ॥ अभिग्रह, भोजन वसन प्रमाण ॥ अधिकुं सवि थाये, ते सवि देवद्रव्य जाण ॥ तिहां हुं जोडुं, त्रोडुं ख कर्म ॥ गुरुमुख एम अभिग्रह, करी पाम्यो जिनधर्म ॥ भू० ॥ एम करतां जे धन व्यापारे, ध्वज थाय ॥ पण ते सघलुं चैत्यद्रव्यने, अर्थे सुपरे जोभाय ॥ एम करतां बहु कोडि उपाये, अनेक प्रासाद कराव्यां ॥ सात क्षेत्रमांहे निज विधिशुं, सर्व समक्षे वाव्यां ॥ अनुक्रमे संजम लेइ तप तपियो, केवली थइ शिव पाम्या ॥ ते संकाशे ज्ञानविमल गुरुथी, दुःख दोहग सवि वाम्यां ॥ ११ ॥ इति देवद्रव्योपरि संकाश कथा समाप्त ॥ सर्व गाथा ॥ १०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वळी एहीज उपर सुणो, सागर शेठ दृष्टांत ॥ चैत्यद्रव्य भक्षण रक्षणे, ते सुणजो भवि संत ॥ १ ॥ देव-द्रव्ये निज द्रव्यनो, नवि कीजे संबंध ॥ ते पण होये दुःख दायकुं, परभव होये अनुबंध ॥ २ ॥ ते धनथी कुळ क्षीण होये, मरी नरगमां जाय ॥ दुःख दोभाग लहे भव भवे, निश्शूक हृदय ते थाय ॥ ३ ॥ यदुक्तं ॥ देवद्रव्येण या वृद्धिर्गुरुद्रव्येण यद्धनं ॥ तद्धनं कुलनाशाय मृतोऽपि निरकं व्रजेत् ॥ १ ॥ अन्यायदेवपाखंडि, संबंधाद्धनमीहते ॥ स मषीकूर्चकैर्धाम, धवलीकर्तुमीहते ॥ २ ॥ वरं च ज्वलने वेशो, वरं च विषभक्षणम् ॥ परं चाग्निरिद्रव्येण, संबंधो नैव कारयेत् ॥ ३ ॥

भावार्थः—देवद्रव्ये करी धननी वृद्धि अने गुरुद्रव्ये करी जे धननुं एकठुं करवुं, ते धन सर्व कुलना नाशने माटे जाणवुं; अने ते धननो उपार्जन करनार मृत्यु पामे, त्यारे नरकमां गमन करे ॥१॥ अन्यायना, देवालयना अने पाखंडीना संबंध थकी, जे मनुष्य धनोपार्जननी इच्छा करे छे ते मनुष्य मशना कुचाथी पोताना धामने धोळुं करवानी इच्छा करे छे एम जाणवुं ॥ २ ॥ अग्निमां प्रवेश करवो ते उत्तम, तथा विष खावुं ते सारुं, परंतु देवद्रव्य साथे संबंध करवो ते सारो नहि ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥ कहे दासो ते जाणीये, दोष विशेषनी वात ॥ कहे कुमर हवे तेहनो, समनेहे साक्षात् ॥ ४ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ सामी सोहाकर श्रीसेरीस ए ॥ ए देशी ॥

॥ साकेत नयरे, सागर धनी वसे ॥ परमार्हत् ते, जिनमते उल्लसे ॥ त्रू० ॥ उल्लसे तिहांकणे चैत्य मोहोटुं, संघ आवे अति घणा ॥ तिहां चैत्यद्रव्य अनेक थाये, कांइ तिहां न रहे मणा ॥ सागरदत्तने दक्ष जाणी, धर्मी ने पक्षपातीयो, सर्व श्रावक मळी सोंपे, चैत्य धन जिनरागीयो ॥ १ ॥ कर्मकराने, तुमे धन आपजो ॥ नाणुं लेयुं, नवि तुमे राखजो ॥ त्रू० ॥ राखजो एम कह्युं सकल मळीने, सुणी ते लोभी थयो ॥ रोकडुं धन कर्मकरने न आपे, वस्तुनो ग्राही थयो ॥ गुड तेल घृत धन वस्त्र मोंघां, मूल्य लेइ ते जिनधने ॥ तस लाभ आपण पास आवे, सूग ते नाणे मने ॥ २ ॥ रूपक केरो, भाग एंशी तणो ॥ ते काकिणीनो, नाम श्रुते सुण्यो ॥ त्रू० ॥ गण्यो एक हजार केरो, लाभ तेहने घर रह्यो ॥ एम घोर कर्म उपार्जी मरीने, नरकमांहि ते गयो ॥

तिहां थकी जलमनुज थइने, अंडथोल लेवा मिषे, वज्र घरटामांहि पीद्यो, मरी बीजी नरके वसे ॥ ३ ॥ तिहांथी चवीने, मोहोटो मत्स्य थयो ॥ पंचसय धन, म्लेछे संग्रह्यो ॥ ञू० ॥ ग्रही सर्व ते अंग छेदी, महा कदर्थनाये मस्यो ॥ चोथी नरके एम जवांतरे, मत्स्य थइ सात नरके फस्यो ॥ वे वार नरके सात एणी परे, मत्स्य जवने सांतरे ॥ एक सहस काकिणी देवद्रव्यह, जख्याथी एणी परे फिरे ॥ ४ ॥ तदनंतर वली संत निरंतरे ॥ चार हजार कूतर जव करे ॥ ञू० ॥ फरे एम वली जुंरू सूकर, मेष देरूक मृग शशो ॥ शवर शृगाल बिलाड मूषक, नकुल गृह कोकिल वस्यो ॥ ग्रह मत्स्य जुजंग ने वींछी क्रमियो, विष्ठामांहे उपन्यो ॥ हजार एक जव सर्व गणवा, एह फल ते नीपन्यो ॥ ५ ॥ पुढवी अप् तेज, वायु वनस्पति ॥ शंखज लौका, कीटिक पन्नगसी ॥ ञू० ॥ जेसी माखी दंश मशका, भ्रमर मत्स्य कछुप खरा ॥ महिष वेसर करज वृषज ने, तुरग गज ने चीतरा ॥ ते लक्ष संख्याये जवे तिहां, अग्निशस्त्र घाते मरी ॥ एम जमत दुष्कृत कांइ छीणुं, लह्यो नरजव एम फरी ॥ ६ ॥ नयर वसंते, वसुदत्त वसुमती ॥ कोटिध्वज छे, तस घरे उतपत्ति ॥ ञू० ॥ रतिगर्ज आव्यो जेटले, ते सर्व धन नाशी गयुं ॥ जन्म दिवसे पिता पंचम, वर्ष जननी मृत्यु थयुं ॥ नाम दीधुं तस निःपुण्यक, लोके मलीने तेहनुं ॥ रंक परे ते वृद्धि पामे, दर्शन शुज नहीं जेहनुं ॥ ७ ॥ एक दिन दीठो रे, मातुल तेहने ॥ नेहे आएयो रे, निज घर रंकने ॥ ञू० ॥ तेहने घर चोर पेठा, धन गयुं सवि तेहनुं ॥ एम एक दिन जस गेह वासे, लूंटाये घर तेहनुं ॥ एम जलती गाडर परे जाणी, मूर्तिवंत उपद्रवा ॥ तेहने कोइ वसती नापे, दुःख पामे एहवां ॥८॥ एम उजागो रे, गयो देशांतरे ॥ तामलीप्ते रे, विनयंधर शेठ घरे ॥ञू०॥ फरे तिहांकणे नृत्य थइने, जह्युं घर तिणहीज दिने ॥ काढीयो हरुक्या श्वाननी परे, चिंतवे हवे इश्युं मने ॥ निज कर्म निंदे वली विचारी, स्थानांतरे जाग्य उघडे ॥ एम जाणी समुद्र तीरे, जइ प्रवहणमां चडे ॥ ए ॥ यतः ॥ कम्मं कुणंति लवसा, तेसि मुदयंमि परवसा हुंति ॥ रुख्खं दुरहइ सवसा, निव्वुडइ परवसो तत्तो ॥ पूर्व ढाल ॥ नृत्य अजावे रे, धन शेठे संग्रह्यो ॥ कुशले खेमे रे, प्रवहण दीपे गयो ॥ ञू०॥ जयो मनमां खुशी चित्ते, जाग्य आज थकी फल्युं ॥ मुज चडे पण पोत साजुं, रह्युं एह विघन टल्युं ॥ दुर्दैवने हवणां ए विसर्युं, पण पाछा वलतां जांजशे ॥ दैवानुसारे थयुं तिमहिज, वायु परचंड वाजशे ॥ १० ॥ फलक पामी ते, निष्- एयक नीकल्यो ॥ कोइक गामे रे, तस ठाकुरने मल्यो ॥ ञू० ॥

तेहज दिवसे अन्य नहि, नतिए मारी पाडी ते ॥ जिहां
ठाकुर मार्यो तस पुत्र जाणी, बांधी पाछे आणव्युं ॥ निर्भागी नर, जिहां जाये तिहां ॥ आपद् आवे, संग
थकी नवि मही काढ्यो, देह आल ने माल ते ॥ ११ ॥ जिहां लोकने आनंद होये, तिहां पण तस आपदा ॥ दीपालिका दिने सहु खुशी,
न मूके किहां ॥ चू० ॥ जेम ताडीयो तडकाया छत्रक, बीली तरुमूले गयो ॥ फल पड्युं अने ताल्य फुटी,
पण शूर्पक कूटाये सदा ॥ महोत्सवेऽप्यपुण्यानां, विपदः स्युर्न संपदः ॥ जना नंदंति दीपाल्यां, हंति
गुणकेन दुःख थयो ॥ १२ ॥ यतः ॥ कश्चित्खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणैः संतापितो मस्तके, वांछन् स्थानमनातपं विधिवशात् तला-
सर्वेपि शूर्पकम् ॥ १ ॥ ल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणैः संतापितो मूर्ध्न गतो, धावन् स्थानमनातपं विधिवशात् तला-
पितो मस्तके ॥ तत्राप्यस्य महाफलेन पतता भग्नं सशब्दं शिरः, प्रायो गच्छति यत्र दैवहतकस्तत्रैव यांत्यापदः ॥२॥

भावार्थः—महोत्सवने दिवसे पण निःपुण्य जनने विपत्तिओ आवी पडे छे तेमां संशय नथी, जेनी पेठे लोक दीवालीने
दिवसे सर्व मनुष्यो आनंद पामे, परंतु शूर्पकने सर्व जन ते दिवसे हणे छे ॥ १ ॥ कोइ एक ताल्यीयो मनुष्य सूर्यना किरणथी
पोताना मस्तकमां ताप पामतो छतो बीली वृक्ष, छायानुं स्थानक जाणीने ते बीलीना झाडना मूलमां गयो. त्यां पण ए
बीली वृक्षना मोटा फलना पडवा थकी शब्दायमान थइने माथुं फुट्युं, माटे निःपुण्य पुरुष जे ठेकाणे जाय छे ने ठेकाणे आप-
त्तिओ एतः आवे छे ॥ २ ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ एणी परे करिढुं, सहुन एक छमति ॥ थानके दुःखी छे, करी घणु मानति ॥ चू० ॥ त्रिति
नरकर अनत जल, स्वचक परचक मारवी ॥ एम अनेक विघन हेते, काढीयो घरबारथी ॥ महा अटवीमांहे
पोढींतो, गम हिमसलक यक्ष परे ॥ एकाग्र मन माये आराध्यो, एकवीस उपवास करे ॥ १३ ॥ तूठो यक्ष,
ते कहे नरक सुणो ॥ संध्याये माहारे, घरने आंगणे ॥ चू० ॥ सुणो सोवन पिछ शोभित, सहुन एक तो मोर
ने ॥ ते नाच करतां एक पिछुं पडे, ते ग्रहे नवि जोर ने ॥ दिने दिने एक पिछ ग्रहतां दरिद्र ताहरुं जायशे॥
एम यक्ष वयणां सुणी हरख्यो, चिंते चिंतित थायशे ॥१४॥ एम नित्य ग्रहतां रे, नवाणुं थयां ॥ सोवन पिछां रे,
तेणे संग्रह्यां ॥ चू० ॥ रहुं एक दुष्कर्म प्रेर्यो, चिंते मनमांहि इस्युं ॥ एटला दिन थया एम करतां, हवे अर-
थमां केम पढुं ॥ तो एक मूठे सर्व ग्रहीये, पिछ एम मन चिंतवे ॥ धन कर्युं जब मूठि घाले, केकी काक
रूपे होवे ॥ १५ ॥ पूर्वे ग्रह्यां ते, नाठां पिछडां ॥ कर्म विना ते, कारिज वांकडां ॥ चू० ॥ वांकडुं मन करी चिंते,
धिग् उतावल माहरी ॥ हजी लगे दुःख पार नाव्यो, शुभ दिशा नवि अनुसरी ॥ विषवाद पामी फरे जिहां

तिहां, पहने ज्ञानी मुनि मल्या ॥ जेहनुं पाछल अनुजवधुं ते, सर्व तत्र तिहां सांजल्या ॥ १६ ॥ कहे हवे स्वामी, प्रायश्चित्त मुऊ दीयो ॥ देवद्रव्यनो रे, जक्षण में कीयो ॥ मू० ॥ देवुं होवे जेम जामे, मुनि कहे जद्रक सांजलो ॥ देवद्रव्य शत अधिक आपो, विधि रक्षण छटकल्यो ॥ विधि वलित्र करो ते वधारो, आप जोगे न आणयो ॥ निर्वाह मात्रे वसन जोजन, अधिक तेह तो जाणयो ॥१७॥ एहनो गुरुमुखे, अनिमह आदरी ॥ श्रावक धर्मे, निश्चल मन करी ॥ मू० ॥ फरी सघले विधि व्यापारे, धन मेली दिये देवनुं ॥ शत एम त्रूटे कर्म त्रूटे, पाछलुं नित्यमेवनुं ॥ सहस काकिणी जाम दस लख, दिये थोडा काळमां ॥ एम अनृण थइ बहु द्रव्य पामी, गयो निज पुर तालमां ॥ राज्य मान्य इभ्य थइ प्रासादे, सर्व गामे चिंतवे ॥ तिहां सुपरे रावे विहां वधारे, महा पूजा रचना ठवे ॥१८॥ एम करंते रे, जिन नाम बांधीयुं ॥ अवसर जाणी रे, संयम साधीयुं ॥ मू० ॥ बांधीठे पुण्य प्रमाण गीतारथ, थया दिये देशना ॥ अरिहंत जक्तिनो अतिहि अतिशय, प्रथम थानक सेवना ॥ सर्वार्थसिद्धि देव हुआ, महाविदेहे सिद्ध थया ॥ श्रीज्ञानविमल सूरि वयणथी, ए जाव जव्य जने लह्या ॥ १९ ॥ इति देवद्रव्यजक्षणे रक्षणे वृद्धिकरणे सागरदत्त श्रेष्ठिकथा संपूर्ण ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे गुरु सुणो सांजलो, ए देवद्रव्य विचार ॥ हवे ज्ञान साधारण द्रव्यना, तेहना कहुं अधिकार ॥१॥ तेह पण एहज जेहवा, दोष कह्या श्रुतमांहि ॥ जे निःशूकपणुं करी, खाये ते पशु प्राहिं ॥ २ ॥ लेखे जोतां देवथी, वधतुं ज्ञाननुं क्षेत्र ॥ दोष लाज पुण्य पापना, देखावे श्रुत नेत्र ॥ ३ ॥ केवलज्ञान थकी लह्युं, अधिकुं छे श्रुत ज्ञान ॥ स्वपर बोधनुं हेतु छे, संप्रति समय प्रधान ॥ ४ ॥ कर्मसार पुण्यसारनी, कथा सुणो अजि-राम ॥ साधारणना द्रव्यनी, परिणति एम प्रधान ॥ ५ ॥ सर्व गाथा ॥ ११०० ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ ऊखमीनी देशी ॥ अथवा गोडी रागमां ॥ एक दिन महाजन आवे ॥ ए देशी ॥

॥ जोगपुरे धनशेठीह, चोवीश कंचन कोडीजी ॥ धनवती कूखे ऊपना, सुत प्रसवे तिहां जोडीजी ॥ त्रूटक ॥ पहु कोमलुं कर्मसार नामे, पुण्यसार सोहामणा ॥ माता पिता प्रिये तेहनां, अहोनिशि करे जामणां ॥ एकदा

जनक पूर्जीउं, एक नैमित्तिक ते एम कहे ॥ बिहु पुत्र मांहे पुण्य भोजागी, दोनागी जेहनुं उदे ॥ १ ॥ ज्योतिष जोइ निमित्तिजे, कहे ए जे कर्मसारजी ॥ जड प्रकृति निर्बुद्धिजे, निर्धन निर्भागीसारजी ॥ ध्रु० ॥ सार धन ए सर्व खोसे, सर्व उपाय नहीं लागे ॥ पुण्यसार पण होसे पहलो, पण कला कुशल जिके ॥ पूर्वावस्थाए बेहु गुणीया, पामसे धन अति घणुं ॥ एम निमित्तिक वयण निसुणयुं, मन थयुं तस हूमणुं ॥ २ ॥ अनुक्रमे अध्यापक कने, मूके बिहुने सारजी ॥ पुण्यसारे शीखी कला, कर्मसार मूढ जाणजी ॥ ध्रु० ॥ जाति बहुविध करी पढावे, पण तेहने मुख नवि चढे ॥ इहां पाठक कोइनो नवि दीसे, कृत कर्म ते आवी नडे ॥ अनुक्रमे यौवन प्राप्त बेहु, कन्याने परणावीया ॥ महोत्सवने ए अने सोहिलुं, गयुं धनना जावीया ॥ ३ ॥ मांहोमांहि बेहु नडे, जनक करे तव विमजी ॥ कंचन कोडी बार जे देइ, गृहस्थी सुप्रमनजी ॥ ध्रु० ॥ सुप्रमन्न मन करी लिये संजम, पितर स्वर्ग गति गया ॥ हवे कर्मसारने पूर्व दुष्कृत, कर्म ते उदये थयां ॥ तेहथी वाणिज्य मांड्यो, जेथी होवे धनहाण ए ॥ स्वजन लोके वारीया पण, आपमति मन नाण ए ॥ ४ ॥ थोडा दिनमां गीगमी, कंचन कोडी बारजी ॥ पुण्यसारनी पण तस्करे, लीधी रात्र प्रचारजी ॥ ध्रु० ॥ सार धन ते बिहुए खोयो, थया निर्धन बिहु जणा ॥ स्वजनादिके पण तेह छांड्या, कोपीया ने हूमणा ॥ परणी पण जे आप महली, तेह पण पीहर गइ ॥ निर्भाग्य निर्धने निर्बुद्धि, लोक ख्याति पछी थइ ॥ ५ ॥ धन विण मान न पामजे, धन विण गुण नहीं गणाजी ॥ धन विण साचुं जो कहे, तोहि न माने वयणांजी ॥ ध्रु० ॥ कहेण पण नवि कोइ माने, विना मान ते पामरा ॥ पुत्र दारा अने पुत्री, होये अरियण तेहथा ॥ दोष ते गुणरूप थाये, होये जो घर लक्ष्मी घणी ॥ गधो जो शुज गेह पावे तो, होय उंच पदवी धणी ॥ ६ ॥ यतः ॥ अत्रियंपि जणो धणवंतयस्स, सयणत्तं पयासेइ ॥ आतणबंध गेणवि, लज्जिज्जइ जाण विहवेण ॥ १ ॥ गुणवंपि निगुण-चिय, गणिज्जइ परियणेण धणविहुणो ॥ दक्खयाइ गुणेहिं, अलियपवि विगिज्जइ सयणा ॥ २ ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ अनुक्रमे देशांतर गया, अपमानीता पेखजी ॥ पृथक् पृथक् शेठ घरे रह्या, करता बहुविध सेवजी ॥ ध्रु० ॥ शेठ जेह घर कर्मसार रह्यो, ते कृपण ने जड़ वे ॥ जे मूल्य थोडुं तेह नापे, आपे तो छेतरे ॥ बहु सेवथी पण कांइ न मिल्युं, द्रव्य कांइ करदिंका ॥ धीजाने धन किमपि मिळीयुं, पण गयुं भूर्स विसर्दिका ॥ ७ ॥ एम बिहु ठामे सेवा करे, किहां धातुर्वाद लनिपादजी ॥ सिद्ध रसायन रोहिणा, पवन गमने न

माकरजी ॥ धू० ॥ विषवाद पामे तेहथी पछी, मंत्र तंत्र साधन करे ॥ रुदंति रसकूपिकोपल, पारमादिक बहु करे करे ॥ एकेक एकादश प्रमाणे, वार उपक्रम बहु कर्या ॥ कुबुद्धे विपरीत विधिथी, प्रथम ते तो नवि फल्या ॥ ८ ॥ जिम जिम उपक्रम ए बहु करे, तिम तिम पामे कष्टजी ॥ बीजे पण इमहिज कर्युं, पामे द्रव्य विशिष्टजी ॥ धू० ॥ शिष्ट गुणथी तेह पामे पण, तस्करादिक नीगमे ॥ एम करतां बेहु एक दिन, भ्रांति चिंते वने जमे ॥ अनुक्रमे वाहण चढी पाम्या, रत्नद्वीप रत्नीयामणो ॥ रत्नदेवी सत्य प्रत्यय, जाणीने साचुं नण्यो ॥ ९ ॥ दुःख पोतानुं दाखवी करी, मरणांतनी सीमजी ॥ बेठा धांधे ते आगले, करी अशनादिक नीमजी ॥ धू० ॥ तीम अभिग्रह करो आगम, तेह अंते एम कहे ॥ नथी जाग्य तुमचुं एम सुणीने, कर्मसार उठी वहे ॥ पुण्यसार एकविंशति, कर्या उपवास जेटले ॥ चिंतामणिसुर रत्न दीधुं, देवीये तिहां तेटले ॥ १० ॥ पश्चात्ताप करे घणुं, मनमां ते कर्मसारजी ॥ कहे पुण्यसार खेद मत करे, ए आपणने निर्धारजी ॥ धू० ॥ सार चिंतित होशे तुज मुज, प्रीत करी जहाजे चढ्या ॥ जुओ कर्मयोगे तिहां संकडपड, एहवा आवीने अड्या ॥ राका शशांकनो उदय देखी, वृद्ध बंधव बोलियो ॥ प्रगट करी ए रत्नचिंता, मणि तेज कलोलीयो ॥ ११ ॥ जोइनुं तिण समये रत्न ते, देखे शशिनुं तेजजी ॥ एक पासे चिंतारत्ननुं, तेज ते एहथी वेजजी ॥ धू० ॥ तेजथी बिहु जाम परतां, दृष्टिनी थइ व्यग्रता ॥ पड्युं चिंतारत्न करथी, महि मनोरथ संगता ॥ समदुःख पाम्या बेहु जणा, एम आवीया आपण पुरे ॥ कृतकर्मने अनुसारे बेहु ते, सयण पण दुर्मन धरे ॥ १२ ॥ एक दिन फरता आवीया, ज्ञानी गुरुने पासजी ॥ निज निर्धनना हेतुने, पूछे धरी उल्लासजी ॥ धू० ॥ उल्लास आदी कहे ज्ञानी, पाछले जव बेहु हुता ॥ चंद्रपुरे जिनदत्त जिनदास, दोउशुं परमार्हता ॥ अन्यदा श्रावक सर्व मलीने, ज्ञानद्रव्य साधारणं ॥ द्रव्यरक्षा हेत आपे, करो उपद्रव वारणं ॥ १३ ॥ तिहां जिनदत्त निज पुस्तिका, लखवा हेते आपेजी ॥ अन्य द्रव्यना अजाणथी, ते मांहेथुं तिहां थापेजी ॥ धू० ॥ व्यापारे मनमां एम धरी, पण ज्ञान केहे द्रव्य छे ॥ एम चिंतवी वार डामह, लेखकने दिए मन रुचि ॥ बीजे तो मनमां एम चिंत्युं, साधारण द्रव्ययोग्यता ॥ सप्त क्षेत्रे काम आवे, आपणने पण योग्यता ॥ १४ ॥ यतः ॥ जिणभवण बिंब पुत्थय, संघ सरूवाइ सत्त खित्ताइ ॥ विविहं धणंपि जायं, शिव फलयमहो अणंत गुणं ॥ १ ॥

॥ पूर्व ढाळ ॥ हुं पण श्रावकमां अछुं, तो शो ताम विचारजी ॥ वार काम तेणे वापर्या, पर कामे आगाढ

व्यवहारजी ॥ प्र० ॥ व्यवहार गह्यो जस्यो जेणे, अरथ द्रव्य अनारथी ॥ आयुष पूरी प्रथम नरके, गया ते पाप प्रभावथी ॥ ए सघळुं पोते नहीं नीवे, जगगुरुना अति घणुं ॥ एहना दूषण बहु बोलया, शास्त्रमांहि जेना तणुं ॥ १५ ॥ यदुक्तं ॥ श्लोक ॥ भक्षणे प्रभास्वं मा मति कुर्यात्, प्राणैः कंठगतैरपि ॥ अग्निदग्धाः प्ररोहंति, प्रभावदग्धा न रोहंति ॥ १ ॥ प्रभास्वं ब्रह्महत्या च, दरिद्रस्य च यद्धनं ॥ गुरुपत्नी देवद्रव्यं च, स्वर्गस्थमपि पातयेत् ॥ २ ॥ प्रभास्वं साधारणं द्रव्यमित्यर्थः ॥

भावार्थः—कंठमां प्राण आवे तोपण ज्ञानद्रव्यनो अने साधारण द्रव्यनो भक्षण करवो नहीं, अग्निना बाळेला बीज फरीने उगव पाय, परंतु देवद्रव्यथी दाझ पामेला प्राणी फरीने सिद्धि पामे नहीं ॥ १ ॥ ज्ञानद्रव्य, साधारण द्रव्य, ब्रह्महत्या, दरिद्रनुं धन, गुरुपत्नीनुं गमन, देवद्रव्य ए सर्व स्वर्गमां गयेला प्राणीने पण पाडे छे.

॥ पूर्व ढाळ ॥ प्रथम नरकथी नीसरी, थया कुजातिनी जातजी ॥ बीजी नरके नारकी, शुभ थइ त्रीजीने आतजी ॥ प्र० ॥ पाप थइ एम नवांतर करी, सात नरके उपना ॥ इम दु ति भवांतरि पण लिहि, तेणे इणी परे नीपना ॥ चार सहस जव इम एकेके, पहुत दुःख तिहां अनुक्रमे ॥ बहु छीण दुःखत करी माहे, अथा कुमतो दुःखिया थयो ॥ १६ ॥ द्वादश भावना जोगथी, बार कोडी धन हाणीजी ॥ द्वादश बार बहु उपकारी, ज्ञान थइ पाये हाणीजी ॥ प्र० ॥ व्याधि दुःखनी भवी इण नय, दाग दारिद्र घर घरे ॥ ज्ञानाशातनाए कर्म भारने, बुद्धि बलमें नवि स्फुरे ॥ मन थकी ज्ञानने दीठने ते, अमन के मूंगे मने ॥ वचनथी जे ज्ञान हीले, मूक बोबड गद गने ॥ १७ ॥ कायथी ज्ञान अवहेलना, जे करे तेह दरिद्रजी ॥ रोगी सोगी वियोगीया, आधि व्याधि समुद्रजी ॥ प्र० ॥ अमुक रोगी जन्मरोगी, नानकुळ भवनो होये ॥ तेम साधारण देव केरी, अवज्ञा पाली परे होये ॥ चैत्यद्रव्य आशातनाए, बोधिबीज दुर्लभ कह्यो ॥ एणी परे ज्ञानी वचनथी तेणे, तहत्ति करीने सद्दह्यो ॥ १८ ॥ श्रावकधर्मने आदरी, प्रायश्चित्त लिये तेहजी ॥ द्वादश व्रत सहज गुण देता, थेबु करे दम तेहजी ॥ प्र० ॥ तेहे जहने वणीज मांड्यो, व्यवसाय आदरी ॥ नियम लाधो तेणी वेळा, विगय सगिने परिहरी ॥ जेम जेम दुष्कृतनी भीणता होय, द्रव्य तेम वाधे घणो ॥ विशु जाणे तेम ज्ञान साधारण, द्रव्य पावनो वलिवणो ॥ १९ ॥ अनुक्रमे तेह धनी थया, विशु जगने कोडी धारजी ॥ कंचननी तेहने मडी, करे बहु ज्ञानभंडारजी ॥ प्र० ॥ साधारण बहु साधर्मी जनने, दीनने उद्धारतो ॥ परिपूर्ण श्रावकधर्म पाळी,

सुखे यम साधता ॥ वाधते जावे वही केवल, शिव गया सुख जिहां घणां ॥ वली अजर अमर निष्कलंक निरुपम, नाम छे जेहनां घणां ॥ २० ॥ तेह जणी ज्ञान साधारण, ऋव्यने राखी जेहजी ॥ ते प्राणी सुखीयो होइ, जाये फुःख अछेहजी ॥ ऋ० ॥ देह निर्मल बुद्धि सारी, विजय जारी ते लहे ॥ जे ऋव्य लोकोत्तर कह्यो, ते तास बहुमाने वहे ॥ साधु पण ए ऋव्य केरी, उपेक्षा करतो थको ॥ संसार बहुल अनंत रुलवा, शास्त्रमांहे एहवो थको ॥ २१ ॥ जिन जिन घर परिजोगने, अर्थे जिन ऋव्य आवेजी ॥ ते पण न्यायथी निपन्यो, मलिन फुगंछित जावेजी ॥ ऋ० ॥ आवे न तेवुं ऋव्य जिनने, लोक निंदित जे होवे ॥ कोइ हेत ऋव्यांतरे कह्यो जे, जिनगृहे वली ते ठवे ॥ तप जप उजमणादिक तणो, अथ ऋद्धिवंत जने मली, ॥ जक्तिथी जे ऋव्य कल्प्यो, अंग संगे ते वली ॥ २२ ॥ ज्ञान अरथ ज्ञान हेतुए, लिखन लिखावन कोसेजी ॥ तेह पण आपण निश्राये, थापे ज्ञान निवेशोजी ॥ ऋ० ॥ लवलेश मात्रे अपर खेत्रे, तेह धन नवि आणवुं ॥ कोइ हेते देवऋव्य थकी, पण ज्ञान अधिकुं जाणवुं ॥ तेम साधारण ऋव्य जाणो, ऋद्धिवंत नर मली कयुं ॥ धर्मक्षेत्र एम नाम थापी, ते साते सघले वावखुं ॥ २३ ॥ सात खेत्रमांहे गुरु ऋव्य छे, अने वली धनी जने कीधुंजी ॥ वेषादिकने कारणे, गुरुसहाये लीधुंजी ॥ ऋ० ॥ दीधुं न कोइने तेह जावे, जावनाना वश थकी ॥ वृद्धि करंतो साधन, लाज पामे, तीर्थंकरनां वयणथी ॥ ए ऋव्यनी आशातना जे, करे तेणे विराधिया ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तेणे ते नवि साधीयां ॥ २४ ॥ ते जणी जे करो धर्मनी, करणी दिलमां आणीजी ॥ अविधि आशाता टालीने, जे करशे जवि प्राणीजी ॥ ऋ० ॥ नाणीनां ए वचन जाणी, तहत्ति करी जे सद्दहे ॥ श्रीज्ञानविमल सूरींद वाणी, शास्त्रथी एहवी कहे ॥ सुणी एम श्रीचंद्रकुमरे, कही एहवी संकथा ॥ शेठीया वात कहे साची, चित्त धरी एहवी वृथा ॥ २५ ॥ इति ज्ञानसाधारणऋव्यजक्षणरक्षणोपरि कर्मसारपुण्यसारकथा संपूर्णा ॥ ॥ ढाल पूर्वली ॥ चंजाउलानी ॥ ते जणी सुणो जाइआ रे, हित जाखुं हुं प्रेम ॥ देवऋणथी छूटीए रे, तेम करो जेम होय क्षेम ॥ ऋ० ॥ तेम करो हवे एह उपाय, छूटो ऋणथी जेम सुख बहु थाय ॥ हित शिक्षा कही आगल चाले, राज मराल परे जुवि माले ॥ २६ ॥ जी० ॥ सुंदर गामे जइ जिम्या रे, सामग्री सवि मेल ॥ सुखे तिहां वासो वस्या रे, करता मननी केल ॥ ऋ० ॥ केलि करंता थये प्रजाते, चाल्या मदना लेइ संघाते ॥ आगल कानन मोहोटं आव्यं, दिवालोप संध्याये जाणाव्यं ॥ जी० ॥ २७ ॥ [illegible]

कहे गाम दूर ॥ चरण तांहरा नवि चाले रे, तिहां देखे वट अति नूर ॥ शृ० ॥ पुर पत्र फल छाया गहरी, पंथीनो आश्रम जिम गहरी ॥ शुं उतावळनुं छे काम, कुमर कहे इहां करीये विश्राम ॥ जी० ॥ २० ॥ वट तळे साथरणो करे रे, सावधान रहे तेह ॥ प्रथम जाम कुण सा सुवे रे, कुमर जाग्यो अति स्नेह ॥ शृ० ॥ ध्येय संभारे त्रीजे पाले संभारे, जागे सुंदरी पति परिवारे ॥ चोथे पाले करी सा सुती ॥ कुमर जागतो रहे निर्भ्रांति ॥ जी० ॥ २९ ॥ जो इम सावधानशुं रे, दिशि विदिशी जे चार ॥ पहुरामां उत्तर दिशे रे, दीठो तेज अंबार ॥ शृ० ॥ सार रत्न परि चित्तमां लावे, ते जोवाने केम जावे ॥ किहां नजीक किहां दूरे थावे ॥ तेज तणो जे मर्म न पावे ॥ जी० ॥ ३० ॥ आगळ जातां जोवतां रे, तेज थयुं विसराळ ॥ पाछे पगे पाछो वळे रे, जाण्युं एह इंद्रजाळ ॥ शृ० ॥ आळ एह मनमांहे लावि, साथरे आवी प्रिया बोलावी ॥ कहे प्रभात थयो उठो वहीये, परिमल पसर्यो कमळने वहीये ॥ जी० ॥ ३१ ॥ ताम्रचूड तरु उपरे रे, बोले मधुरी वाण ॥ शीतळ मार्ग प्रभातनो रे, उठो थयुं विहाण ॥ शृ० ॥ जाणपणे कहे कुमर तिहां रे, उत्तर पाछो न दिये सगारे ॥ चिंते मन निद्रा परभाते, सूकतां होये स्त्रीनी जाते ॥ जी० ॥ ३२ ॥ यतः जणणीजणुणचि- पछिम निद्दा सुनागियं वयणं ॥ मणइहं माणुसगं, पंच विकुलेविं मुंचंति ॥ १ ॥ श्री चंद्रोवाच ॥ यतः ॥ प्रोज्जृंभते परिमलः कमलावलीनां, शब्दायते क्षितिरुहोपरि ताम्रचूडः ॥ मार्गस्तथापि सुकरः खलु शीतल- त्वादुत्थीयतां सुनयने रजनी जगाम ॥ १ ॥

भावार्थः—श्री चंद्र कहे छे. कमळपंक्तिनो परिमल प्रसरे छे, वृक्षोनी उपर वेगीने कुकडा बोले छे. तेथी चालवानो मार्ग टाढो पोहोर होवाथी सुगम छे, माटे हे कमळ नयनवाळी स्त्री, रजनी तो व्यतीत थइ, माटे उठ ॥

॥ पूर्व ढाळ ॥ दिण पमरी वळी प्रिया प्रते रे, बोलावे धरी नेह ॥ ए मृग तृण चरवा जाणी रे, पंखी गगनमां जेह ॥ शृ० ॥ पळये तरणि उदयाचल लगे, मानीना मनोरथ नवि पूगे ॥ उठो चालीजे हवे आगे, करतां आण्यदशा वळी जागे ॥ जी० ॥ ३३ ॥ यतः एते व्रजंति हरिणास्तृणभक्षणार्थं, भूपि विधातुमथ यांति हि पक्षिणोमी ॥ शृंगं स्पृशत्युदयभानुमतो गिरस्या, मुत्थीयतां सुनयने रजनी जगाम ॥ १ ॥

भावार्थः—हे स्त्री ! आ हरिणो तृण भक्षण माटे चाल्यां जाय छे, पक्षीओ पण चण लेवा माटे जाय छे अने सूर्य पण उदयाचल पर्वतना शिखरोना शृंगोने स्पर्श करे छे. माटे हे रुडा नेत्रवाळी स्त्री, रात्रि व्यतीत थइ, तेथी उठ ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ प्रिया पडुत्तर नवि दिये रे, कुमर जोइ ते ठाम ॥ तिहां दीठी नहीं सुंदरी रे, चिंते कांइ विराम ॥ ध्रु० ॥ हाम धरीने सघलो जोवे, थयो प्रजात मन अति दुःख होवे ॥ ए उद्योत मिषे कोइ देव, अपहरी ए हमणां सयमेव ॥ जी० ॥ ३४ ॥ हा हा शुं करती हशे रे, किम रहशे मुज पाखे ॥ केम करे ते उपरे रे, घल कोइनुं नवि दाखे ॥ ध्रु० ॥ राखे जिम तेणी परे रहीये, मन फरसे नवि वाणीये कहीये ॥ स्वप्नाचार पण जिहां नवि पहोंचे, हेला मात्रमां ते विधि सूचे ॥ जी० ॥ ३५ ॥ अघटित ते सुंदर घमे रे, जाजे सुघटित काम ॥ जेह ल्लाखतखमां लख्युं रे, ते थाये जग काम ॥ ध्रु० ॥ नाम मात्र पण शोक न करवो, धैर्य करी मनमांहे रहेवो ॥ सुख दुःख कर्मवशे सवि सहेवुं, कायर थइ कोइ आगे न कहेवुं ॥ जी० ॥ ३६ ॥ यतः ॥ यत्कदापि मनसा न चिंत्यते, यत्स्पृशंति न गिरः कवेरपि ॥ स्वप्नवृत्तिरपि यत्र दुर्लजा, हेलयैव विदधाति तद्विधिः ॥ १ ॥ अघटितघटितानि घटयति, सुघटितघटितानि जर्जरीकुरुते ॥ विधिरेव तानि घटयति, यानि पुमान्नवाचिंतयति ॥ २ ॥ गाहा ॥ जं चिय विहिणा लिहियं, तं चिय परिणमइ सयल लोयस्स ॥ इय जाणे विणु धीरा, विहुरे विन कायरा हुंति ॥ ३ ॥

जावार्थः—जे कार्यने कोइ दिवसे मन थकी न चिंतवन थाय, जेने कविनी वाणी पण स्पर्श न करी शके, ज्यां स्वप्नानी वृत्ति पण दुर्लभ छे, ते कार्यने विधि छे ते रमतमात्रमां करे छे ॥१॥ विधि छे ते अघटित कार्यने करे छे, घटित कार्यने अघटित करे छे. जे पुरुष चिंतवन करे छे विधि तेने अन्यथा करे छे ॥ २ ॥ जे विधिये लखेलुं छे तेज लोकने परिणाममां आवे छे; ए जाण्या विना धीर पुरुष पण कायर थइ जाय छे ॥ ३ ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ चित्त उत्सुकता टालीने रे, चिंते बहुल उपाय ॥ उद्यमथी सवि नीपजे रे, शोके चिंता बहु थाय ॥ ध्रु० ॥ आय व्यय सवि कर्मने हाथे, निमित्त मात्र छे पर ते साथे ॥ सुरतरु छोडी बाउल दीये बाथ, कर्म छोडी लीये अवरने नाथ ॥ जी० ॥ ३७ ॥ पूर्ण मनोरथ केहना थया रे, केहेने अखंडित सुख ॥ कुल कलंक केहने नवि थयां रे, कुण जनम्याने मृत्यु न दाख ॥ ध्रु० ॥ शोचे जरिउं फुट्युं कुमाये, उग्यो तेहिज घली आथमाये ॥ एहवी नीति जगनी चित्त आवी, ज्ञानविमल गुरु वचने जावी ॥ जी० ॥ ३८ ॥ सर्व गाथा ॥ १०५४ ॥

॥ यतः ॥ कस्य स्यान्न स्खलनं, पूर्णाः सर्वे मनोरथाः कस्य ॥ कस्येह सुखं नित्यं, दैवेन न खंडितः कोवा ॥१॥

भावार्थः—केवुं स्मरण थयुं नथी, केना मनं मनोरथ पूर्ण थाय छे, केने आ लोकमां निरंतर सुख मळे छे, अने देवे कोने मंडित कर्यो नथी? अर्थात् ते सघळां पुण्यनां जनने माटे छे.

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ सिंह सिंहकुमार, हाथी तो पण जेतव्यो ॥ मनमां करी विचार, आगळ जाता संचर्यो ॥ १ ॥ दोहा ॥ अनुक्रमे जातां आवीयुं, नगर कनकपुर नाम ॥ सरपाळ पट इंद्रजे, हग एक सोहे जाम ॥ २ ॥ राने मेवा शत होय, पुण्य समागम जाण ॥ ते अवसर जे नीपन्युं ॥ सुणजो ते उद्दाम ॥ ३ ॥ अपुत्रियो ते नगरनो, श्रीकनकध्वज राय ॥ अकस्मात् कोइ शूळथी, मरण लह्यो निण ठाय ॥ ४ ॥ राज्याधिष्ठायक सुरी, मन्त्रिने आगामी नेह ॥ राज्य योग्य कोइ मेळवो, आणी नर गुणगेह ॥ ५ ॥ पंचदिव्य परगट करो, सुरी वयणथी तेह ॥ जरिनी जग शिर कळशनो, करे अभिषेक प्रसिद्ध ॥ ६ ॥ ते राजाने जाणजो, सहु गामनां देश ॥ एम करतां बाहिर गयां, पंचदिव्य तेणी वार ॥ एणी परे दिन पण नहीं गया, गाममां करे सन्निवेश ॥ ७ ॥ करेणु कांइ टाळीजे, कळश तुरग हेषार ॥ चामर छत्र श्रीचंद्रने शिर धारे, करे अभिषेक विचार ॥ ८ ॥ सूतो हतो सिंहपे, शुं सुहणो के साच ॥ कहे प्रधान प्रजा सवे, अमचा चंद्रीजने, कीधो जयजयकार ॥ ९ ॥ सहु गामनो देश ए, कनकपुर तिहां मुख्य ॥ कनकध्वज नृप पुहतलो, परलोके नाथ तो पाण ॥ १० ॥ पंचदिव्यना देवथी, सुरी वचन अनुसार ॥ अम नाम्ये शुभे नृप थया, कह्यो नाथ महनृपस्थान ॥ ११ ॥ नृप पुत्री कनकावती, करो करग्रह नाम ॥ सहु मनु मन्त्रि एम चीनवे, पूरो अम मन आशकार ॥ १२ ॥ नृप पुत्री कनकावती, धरो करग्रह नाम ॥ सहु मनु मन्त्रि एम चीनवे, पूरो अम मन आश ॥ १४ ॥
॥ १३ ॥ हसित वदन कल्याण करी, भूषण भूषित अंग ॥ नाम सुजाप जाणीयुं, श्रीचंद्र नामे चंग
हर्षित मद राग्ये रम्या, कुमरी रही वामांग ॥ करग्रह अने राज्यमह, अद्भुत कीधो रंग ॥ १५ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ रहो रहो रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥

॥ पूर्वसंचित पुण्ययोगने, हर्ष वधामणी होत लाल रे ॥ उचित दान दीये मर्गने, बंदी मोचनं कृत गोत लाल रे ॥ १ ॥ पुण्य पखी सिंघ चिंतव्यां, आवी मळे नहि वार लाल रे ॥ पुण्य निपुणाने होवे, अणचिंतित

उपपात लाल रे ॥ पु० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ देव पूजादिक कार्यनां, गीत गान बहु हर्ष लाल रे ॥ करमोचन धन देशना, कीधां अतिशय वर्ष लाल रे ॥ पु० ॥ ३ ॥ प्राज्य राज्य उत्सव थयो, जेम सुरपति अभिषेक लाल रे ॥ लखमण सचिव कहे अन्यदा ॥ धरी मनमां बहु नेक लाल रे ॥ पु० ॥ ४ ॥ प्रभु तुम उत्तमता लही, सदाचार संकेत लाल रे ॥ ढांकीये रवि दाबीये, तेज न दाबे खेत लाल रे ॥ पु० ॥ ५ ॥यतः॥ आचारः कुलमाख्याति, देशमाख्याति जाषणं ॥ संभ्रमः स्नेहमाख्याति, रूपमाख्याति जोजनं ॥ १ ॥

भावार्थः—आचार छे ते कुलने कहे छे, भाषण छे ते देशने कहे छे, संभ्रम छे ते स्नेहने कहे छे, रूप छे ते भोजनने कहे छे.

॥ पूर्व ढाल ॥ तोहे पण नरनारीए, गायने गाते गीत लाल रे ॥ मात पिताना नामनी, हौंश रहे छे नित्य लाल रे ॥ पु० ॥ ६ ॥ तेह वयण गुणी नृप कहे, सत्य लोकने ताम लाल रे ॥ हरिबल माछीनी कथा, पुण्य वधे गुण ग्राम लाल रे ॥ पु० ॥ ७ ॥ जिम हरिबल गयो एकलो, नयरी विशाला नाम लाल रे ॥ परण्यो त्रण नृपकुंवरी, कुणे कह्यो वंश ने नाम लाल रे ॥ पु० ॥ ८ ॥ धैर्योदार्य गुणे करी, कीर्त्ति तणे विस्तार लाल रे ॥ लंकागमनादिक बहु, कीधां काम उदार लाल रे ॥ पु० ॥ ९ ॥ तेणी परे इहां पण जाणजो, नामादिक शुं काम लाल रे ॥ गुण जोवा उत्पत्ति किसी, कमल तणां शां नाम लाल रे ॥ पु० ॥ १० ॥ ज्ञाति आडंबरनो किशो, परमारथ गुण साध्य लाल रे ॥ कुसुम काननुं शिर धरे, निज मल तजे दुस्साध्य लाल रे ॥ पु० ॥ ११ ॥ कुलक्रमथी लक्ष्मी न होये, लिखित न दीसे कोय लाल रे ॥ वीरजोगी जे वसुंधरा, खड्गथी नृप वश होय लाल रे ॥ पु० ॥ १२ ॥ तेणी परे मंत्री सांजली, नामादिके शुं काम लाल रे ॥ केवल गुण जग जोइए, जाति वंश शुं नाम लाल रे ॥ पु० ॥ १३ ॥ नृप वयणां एम सांजली, मंत्री चिंते एम लाल रे ॥ उत्तम निज वदने करी, निज गुण कहेवा नेम लाल रे ॥ पु० ॥ १४ ॥ हवे एक दिन ते नयरमां, आव्यां गायनवृंद लाल रे ॥ वीणापुर जाया जणी, कलिरव प्रमुख महेंद लाल रे ॥ पु० ॥ १५ ॥ राजसुताने स्वयंवरे, जाता पंथी लोक लाल रे ॥ गायन गाया मांमीयुं, श्रीचंद चरित्र सुछेक लाल रे ॥ पु० ॥ १६ ॥ कवित छप्पो ॥ नयर कुशस्थल इश, सूर्यवती राणी कंतह ॥ प्रतापसिंह जस नाम, तेज प्रताप महंतह ॥ शोक्य पुत्रनी भीति, रीति जाणीने मूके ॥ निज वाडीमां फूल, पगरमां बुद्धि न चूके ॥ लक्ष्मीदत्त शेठें ग्रह्यो, लही वृद्धि तिहां अति घणी ॥ कयुं नाम श्रीचंद्र तस, कला सर्व तेणे जणी ॥ १ ॥ राधावेध विधान, पद्मिनी

नीगरीयो त्रे विदेश, नाग्यवती गुणनो
वती जंपे परणी ॥ श्रीणारथने दान, तुरग रथ जाय न वरणी ॥ देइ दान तेहने बहु, कहे तुम्हो तस छेहणो ॥ गुन्न
आगर ॥ इत्यादिक गुण गान, गांनवी हरख्या नागर ॥ देइ दान तेहने बहु, कहे तुम्हो तस छेहणो ॥ इत्यादिक गुण बहु कला, गीत अने बहु
कहे अम नायके, देइ दान तस जस वह्यो ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ इत्यादिक गुण बहु कला, गीत अने बहु
नाग लाल रे ॥ आवाणी गंनवाणीया, कहेतां लहे उल्लास लाल रे ॥ पु० ॥ १७ ॥ हर्ष मनात थये आवीया,
लम्बणा गता मझार लाल रे ॥ पूछे नृप निशि केम नावीया, ते कहे करीय जुहार लाल रे ॥ पु० ॥ १८ ॥
स्वामी गायन आवीया, तेणे गायां अवदात लाल रे ॥ श्रीचंद्र पद्मिनीनो पति, प्रतापसिंह नृप जात लाल रे
॥ पु० ॥ १९ ॥ जेम गुणयुं मयं कह्युं तेणे, हमी सुणी कहे नृपाल लाल रे ॥ नीचे मुले हुइ पड्यो, ए वानमां
कांइ न आल लाल रे ॥ पु० ॥ २० ॥ लम्बमाण मंत्री चिंतवे, माहे पड्डिज जाण लाल रे ॥ उत्तम निज गुण
मांनवी, नीच वदन विलखाण लाल रे ॥ पु० ॥ २१ ॥ एम विचार पर मंत्रीने, देखी नृप तेणी वार लाल रे ॥
चतुरंग दल लेइ चालीया, रमवा वनह मझार लाल रे ॥ पु० ॥ २२ ॥ तिहां बहु क्रीडा खेलनी, खिडगे
जेम मधु माग लाल रे ॥ अश्व खेलावी बहु परे, श्रम लही करे आश्वास लाल रे ॥ पु० ॥ २३ ॥ गार गह
कार तरु हेठले, बेठा नृप मंत्रि साथ लाल रे ॥ जात्य तुरग जोइ जुजुआ, करगे वली निज हाथ लाल रे ॥
पु० ॥ २४ ॥ एहवे पश्चिम दिशि थकी, दीठो आवत एक लाल रे ॥ पंथिक खंध त्रे लाकडी, धूल धूसर
अतिरेक लाल रे ॥ पु० ॥ २५ ॥ क्रमुकर चित्त निद्रा पुटी, कर काली त्रे चंग लाल रे ॥ पट्टबंध चरणे अने,
वगन कह्यां उछ्रंग लाल रे ॥ पु० ॥ २६ ॥ नीरक्कमंक्तु गाडीगुं, दूर देशांतरी कोय लाल रे ॥ जाणीने चोला-
वीयो, कोण त्रे नटने कहे जोय लाल रे ॥ पु० ॥ २७ ॥ नृप पासे ते आणीयो, सुनटे जेणी वार लाल रे ॥
देखी नृपति हरख्यो घणुं, वरसे आंसु धार लाल रे ॥ पु० ॥ २८ ॥ विण बादल वर्षा थयो, अहो अहो फल
पिण फुल लाल रे ॥ पूरव पुण्य फल्युं अहो, दीठो नयणे अमुल्य लाल रे ॥ पु० ॥ २९ ॥ एम बोलंतो
उलख्यो, दीसे त्रे गुणचंद्र लाल रे ॥ नृपे उठी आलिंगीउ, जिम देखी चकोर ने चंद्र लाल रे ॥ पु० ॥ ३० ॥
श्रीचंद्र पदकज सीचीउ, हर्ष जले करी ताम लाल रे ॥ गुणचंद्रे नावस्यले, प्रणमे गुण मणि धाम लाल रे
॥ पु० ॥ ३१ ॥ बेठो यथोचित थानके, मनमां हर्ष न माय लाल रे ॥ मंत्री प्रमुखे जाणीउ, ए नृपतिनो
मलाय लाल रे ॥ पु० ॥ ३२ ॥ आदरशुं बहुल नम्या, नृपसला नृपति समान लाल रे ॥ श्रीचंद्र पूछे गुणचं-
द्रने, एकलो आव्यो पणे थान लाल रे ॥ पु० ॥ ३३ ॥ कुशलस्थल कदा मूकीयुं, कुण पंथ पावन कीध लाल

रे ॥ पिता पासे वरथात हे, कहो सवि वात प्रसिद्ध लाल रे ॥ पु० ॥ २४ ॥ तव गोजाइ किहां अछे, जे जे थयो अवदात लाल रे ॥ गुरु पाठया पछी ने कहो, ज्ञानविमल सुख शात लाल रे ॥पु० ॥२५॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

॥ बहु गोजसतो हवे कहे, श्रीगुणचंद्र कुमार ॥ तुम आदेशथी ते निशे, कर्यो लेप्यक व्यवहार ॥ १ ॥ पण गुरु देहे ऊपन्यो, जुंनागम अंग जंग ॥ थये प्रजात तुम घर गयो, आणी अधिको रंग ॥ २ ॥ तिहां तुमने दीठा नहीं, ऊपन्यो मन विषवाद ॥ चंद्रकला पासे गयो, चिंतातुर निशवाद ॥ ३ ॥ तुरु मुरु प्रनु नथी दीसता, कहो स्यवर मुरु तेह ॥ बहु पुब्युं पण नवी कहे, रुदती कंपित देह ॥ ४ ॥ गदगद वाणी एम कह्यो, आमूळे वृत्तांत ॥ ते निसुणी कुःखियो थयो, नयणे नीर ऊरंत ॥ ५ ॥ मुरुने मूकीने गया, दाख्यो नहीं अपराध ॥ चिंतामणि परे दोहिलो, कहीये केणी परे लाध ॥ ६ ॥ चंद्रकला कहे कुःख न करे, तुमने पितर वियोग ॥ न करुं तिणे हंते करी, न करो मनमां शोग ॥ ७ ॥ मुरुने एम जाखी गया, गुह्य न कहीश कोइ पास ॥ मित्र विना तुं केहने, ते जणी धरो आश्वास ॥ ८ ॥ एम सुणी कुःख पाम्यो घणुं, अहोरात्रि पितु पास ॥ वसिउं पण रसिउं घणुं, तुम मळवानी आश ॥ ९ ॥ तेवार पछी ज्ञानी तणां, वचनथी लही आनंद ॥ गोजाइने पितृ घरे, साथे करी सखी वृंद ॥ १० ॥ पोहोंचाडीने तुम तणी, खबर लहेवा जाम ॥ महेंद्रपुरथी आवीयो, सुंदर मंत्री ताम ॥ ११ ॥ अन्य वेश धरी नीकळ्या, शुद्धि कही सवि तेण ॥ वळी कुंडलपुरथी सचिव, बुद्धि विशारद जेण ॥१२॥ जिहां जे जे सवि निपन्युं, तस मुखथी लह्युं तेह ॥ सूर्यवती पण सांजळी, हर्ष धरे बहु नेह ॥१३॥ ते दिनथी अजिग्रह कर्या, मोदक आज घृतपूर ॥ प्रमुख न खेवा तिहां लगे, देखीश सुत सुखनूर ॥ १४ ॥ गर्जवती छे सूर्यवती, ए हवणांनी वात ॥ स्वजन श्रेष्ठी राजा प्रमुख, कुशल खेम सुख शात ॥ १५ ॥ तुम वियोग एक कुःख अछे, अपर कुःख नवि कांय ॥ महेंद्र मंत्रिना मुख थकी, जाण्यो तुमचो राह ॥१६॥ प्रतापसिंह नृपे एणी दिशे, बहु जट प्रेख्या हेव ॥ तुम गवेषण कारणे, मागुध करता सेव ॥१७॥

॥ ढाल पचीशमी ॥

॥ तुमे पीतांबर पहेर्यांजी मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥

॥ हुं पण प्रजुने नेहेजी ॥ साहिब सोजागी ॥ निकळीयो घरे निज देहेजी ॥ वाल वडनागी ॥ धनंजय

जिहां थापीजी ॥ गा० ॥ शील नवागण आपीजी ॥ षा० ॥ १ ॥ कुंडलपुरमां आवीजी ॥ गा० ॥ चंद्रलेखा
निहां थोवापीजी ॥ षा० ॥ गवि जाली नेहनी वातजी ॥ गा० ॥ तिहां रहो प्रण रातजी ॥ षा० ॥ २ ॥
तिहांथी माहेंद्रपुर आव्योजी ॥ गा० ॥ मुलोचनाने आप जणाव्योजी ॥ षा० ॥ तिहांथी हेमपुरे गुण जाणी-
जी ॥ गा० ॥ तिहां गुणी मदनावल पाणीजी ॥ षा० ॥ ३ ॥ तिहां महा अचरिज कीधुंजी ॥ गा० ॥
रमां परणी परने दीधुंजी ॥ षा० ॥ कांतिपुर मांहे आव्योजी ॥ गा० ॥ प्रियंगुमंजरीए गुन जणाव्योजी
॥ षा० ॥ ४ ॥ तिहांथी आ दिशे आवीजी ॥ गा० ॥ तिहां वाट बहु पंथ नावीजी ॥ षा० ॥ एक पंथे
गुनदने मेहेलाजी ॥ गा० ॥ एम निहुं दिशे जाणी मेहेलाजी ॥ षा० ॥ ५ ॥ पुर नगर वने गुण जोतोजी
॥ गा० ॥ तवे थवे दुःख धरतोजी ॥ षा० ॥ वली पंथी मुखथी सुणीयोजी ॥ गा० ॥ श्रीचंद्र नामे नृप
गुणीयोजी ॥ षा० ॥ ६ ॥ नवतत्व देशनो स्वामीजी ॥ गा० ॥ देव सान्निध्य प्रभुता पामीजी ॥ षा० ॥ में
मन निश्चय कर्यो एवोजी ॥ गा० ॥ नहीं अपर कोइ एह जेवोजी ॥ षा० ॥ ७ ॥ हवे त्वरितपणे चाल्यो-
जी ॥ गा० ॥ पाली मगन थयो थयो चालोजी ॥ षा० ॥ एकाकी पादचारीजी ॥ गा० ॥ पण धरती अति
घणी न्यारीजी ॥ षा० ॥ ८ ॥ एम नगरमां आव मैं दीठाजी ॥ गा० ॥ प्रभु साम्या अमृतथी मीठाजी
॥ षा० ॥ कृतकृत्य थयो गुण पाम्योजी ॥ गा० ॥ पंथ जनित गयि दुःख वाम्योजी ॥ षा० ॥ ९ ॥ जिम
गति परिगह गही लाधेजी ॥ गा० ॥ परमानंद करी साधेजी ॥ षा० ॥ त्यारे तव दुःख चित्त नवि आवे-
जी ॥ गा० ॥ तिम प्रभु दीठे सुख पावेजी ॥ षा० ॥ १० ॥ मंत्रि सामंत शेठ प्रमुखाजी ॥ गा० ॥ अवदात
सुणी नवि दुःखाजी ॥ षा० ॥ गुणचंद्र पवनथी पामीजी ॥ गा० ॥ कुलवंशादिके नहीं खामीजी ॥ षा०
॥ ११ ॥ समभाव मैत्री मन चिंतेजी ॥ गा० ॥ नवे आव्यो गुणचंद्र मित्रजी ॥ षा० ॥ नाम्यवशे एहवा
मळीयाजी ॥ गा० ॥ नवि ओळखा संशय टळियाजी ॥ षा० ॥ १२ ॥ एम नवि वृत्तांत जणाव्याजी ॥ गा० ॥
ववानथी नयरमां आव्याजी ॥ षा० ॥ गुणचंद्र मली दुःख काप्यांजी ॥ गा० ॥ महामात्य पदे ते थाप्या-
जी ॥ गा० ॥ १३ ॥ सुख शातावे राज्य ते पालेजी ॥ गा० ॥ एक गहना मनमांहि सालेजी ॥ षा० ॥ श्रीचंद्र
नृपतिने तेडेजी ॥ गा० ॥ वली पूरव पुण्यने हेडेजी ॥ षा० ॥ १४ ॥ जिहां वरते सुख सुगालजी ॥ गा० ॥
संसारे मोटी दानशालाजी ॥ गा० ॥ समकित मूल धर्म दीपावेजी ॥ गा० ॥ वली जीव अमार पलावेजी

॥ सा० ॥ १५ ॥ वली सात व्यसनन वरावजो ॥ सा० ॥ दुःस्थित जनने सधरावेजी ॥ वा० ॥ जिन चैत्य उत्तंग करावेजी ॥ सा० ॥ वली जीर्णोद्धार समरावेजी ॥ वा० ॥ १६ ॥ एणी परे शुन्न करणीने करताजी ॥ सा० ॥ ज्ञाननक्ति सदा आचरताजी ॥ वा० ॥ ज्ञानविमल गुरु क्रम वंदेजी ॥ सा० ॥ अहोनिशि वधे परमानंदे जी ॥ वा० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ ११४२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मित्र मड्ये सुख उपन्युं, जिम तरश्यां टाढुं नीर ॥ विरहव्यथा ते पृथा थइ, सुखीयुं थयुं शरीर ॥ १ ॥ जेहने जेहनी इष्टता, ते मिले होय संतुष्ट ॥ वाहालां जे आवी मले, होये पुण्यनी पुष्ट ॥ २ ॥ एम सुखमां वसतां थकां, आव्यो मास वसंत ॥ संयोगी नर सुरतरु, सरिखो छे अत्यंत ॥ ३ ॥ संत सहु हेते करी, आवे उपवन मांहि ॥ शीतल पवन प्रवाहथी, संचरे तरुवर छांहि ॥ ४ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥

॥ राग वसंत ॥

॥ हवे एक दिन श्रीचंद्र नृमिकंत, गुणचंद्र मित्र संयुत ॥ मयमत्त महंत मिलंत संत, कहे आयो खेलीजे वसंत ॥ १ ॥ हवे गुहरी मोहरी वनराइ तंत, मानुं आयो ऋतुराज वसंत ॥ तिहां ताल तमाल हिंताल पुंग, मानुं ध्वज पटे उचवियां सुचंग ॥ २ ॥ निर्झरण झरण रव ताल तंत, पकझंदा नीसाणां गुऊंत ॥ अंकुरित सवि उपवन नृ फुरंत, मानुं प्रमदा प्रमुदित संग कंत ॥ ह० ॥ ३ ॥ तिलक परुण अशोक खंति, प्रमदा पद पड्पा अजिलपंत ॥ तरुवर तरुणशुं आलिंगंत, लता ललना ललित हृदय खंत ॥ ह० ॥ ४ ॥ गुल्मादिक घणघण सुमनस जे हसंति, मनु अधर ते पल्लव चारु पंति ॥ पंचवर्णी फूटी चुदिपंति, तिहां विटप वदनने मनु चुंबंति ॥ ह० ॥ ५ ॥ कुसुम पात्रे एके पीयंत, मधुर मधुकरी मकरंदवृंत ॥ तिहां हरिण हरिणी कपोल श्रंत, श्रृंगे सुकुंऊने खणंत ॥ ह० ॥ ६ ॥ करी गंडुश जल नरी दीयंत, करिणी वदने निज करी महंत ॥ चकवा चकवी किसलय करी अंत, देवत सुखमां धरी प्रेमवंत ॥ ह० ॥ ७ ॥ एम प्रमुदित पंखी जीव यंत, निरखीने कामी जन धसंत ॥ तिहां पंच बाण बाणवल महंत, नृमिदेशे अनिवारित फुरंत ॥ ह० ॥ ८ ॥ उन्माद मोहन ने तापनंत, शोषण ने मारण पंचमंत ॥ पंचमस्वर कोकिल कलरवंत, [illegible] नर कामवंत ॥

रु० ॥ ९ ॥ रोगी वियोगी दुःख दीयंत, संयोगी अमृतरस पीयंत ॥ शीतल मलयाचल अनिलवंत, सुगंधसुं शिकरने करंत ॥ रु० ॥ १० ॥ विरहिणी कहे ए भुयंगक्षित, तरूगार ए तेहना काण करंत ॥ रु० ॥ किंशुक कुसुम मनु पल अगंत, तिण हेते पलाश विरहिणी जाणंत ॥ रु० ॥ ११ ॥ संयोगिणी पल्लव तस लीयंत, करे शेखर सुंदर वेशवंत ॥ देखनकुं अति रूपवंत, परं निर्गुण गंध न ते दहंत ॥ रु० ॥ १२ ॥ मानिनी मानने नेह ग्रंत, मनुं आयो वसंत नृप माजवंत ॥ मदन मतंगज परे चढंत, तिहां विविध कुसुम सेना सजंत ॥ रु० ॥ १३ ॥ शुक कोकिल मोर मेना शकुंत, कल कूजित केलि कला लवंत ॥ योगी पण हृदये अरहंत, शुं जाणीयें मन थिर केम रहंत ॥ रु० ॥ १४ ॥ बकुल ने चोलगिरी यागंत, दश दिशि परिमल पसरंत ॥ शिशिर ऋतुये जे घात करंत, मनुं तेह अवस्थाने हरंत ॥ रु० ॥ १५ ॥ वीणा डफ मधुअरी भलु बजंत, अबल गुलाल अबिर उडंत ॥ नरी कोली गोरी होरी खेलंत, फगुणना फागुआ गीत गंत ॥ रु० ॥ ॥ १६ ॥ पिचरकी केशरकी भरंत, मादल मधुमाला गले ठवंत ॥ अधर सुधारसने पीयंत, प्रेमप्याले दंपती मलिय पंत ॥ रु० ॥ १७ ॥ मालति एक नवि जो विकसयंत, तो शी कणिम थोयंमी वसंत ॥ वेली जाइ जूइ मदमहंत, विचे चंपकमाला कुसुम धरंत ॥ रु० ॥ १८ ॥ एणी युगते लीला हरियंत, विरुद ऋतुराज तणो धरंत ॥ जोली माजने मानिनी आय मंत, गले कंदली आलिंगन दीयंत ॥ रु० ॥ १९ ॥ एणे समये सूर्यवती कुमारी, खेड साथे सोहय सपरिवार ॥ कीडे एम विविधे वन विहार, दीये दान अवारित शुं निर्धार ॥ रु० ॥ २० ॥ मनु नृतल शचिपति अनुकार, संगीत नाटकना धोंकार ॥ सुख लीले निगमे दिवस सार, ज्ञानविमल गुरु शिर आणाधार ॥ तिणथी नितु होयत जयजयकार ॥ रु० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ११६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एणी परे बहु विध दर्शना, पसरया अधिक आणंद ॥ श्रीचंद्र गुणचंद्र बेहु ल्या, जिम मधु मास माकंद ॥ १ ॥ ज्ञान गोष्ठीरस रंगमां, जातो न जाणे काल ॥ एहिज उत्तम संगनो, फल साक्षात विशाल ॥ २ ॥

यतः ॥ गीतनादविनोदेन, कालो गच्छति धीमतां ॥ व्यसनेन हि मूर्खाणां, निद्रया कलहेन च ॥ १ ॥

भावार्थः—बुद्धिमाननो काल गीत, नाद अने विनोदे करी जाय छे अने मूर्खनो काल व्यसने करी, निद्राए करी अने कजीए करीने जाय छे.

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ देशी कडखानी ॥

॥ आतमा हित करी धैर्य धरी धर्म करी, कर्मना मर्मनी कोडि नांजे ॥ सकल सुख अनुसरे प्राणीउं नव तरे, धर्म नव तरणनो प्रवर कहाजे ॥ आ० ॥ १ ॥ धर्म ते त्रिजगनो एक आधार ठे, सडुपयोगे कर्यो धर्म तारे ॥ धर्म ते द्रव्य ने नावना योगथी, अशुन सवि हेल मात्रे निवारे ॥ आ० ॥ २ ॥ संत ते सत्य करी धर्मने सद्दहे, धर्म ते संत आधार कहीए ॥ एम अन्योन्य आश्रय थकी धर्मनी, वासनाये कर्मनी कोडि दहीये ॥ आ० ॥ ३ ॥ धर्मनुं मूल ते परम संतोष ठे, विषय जयथी सदा तेह थावे ॥ विषयनी जय होये तप अने दानथी, तेह अनिदान निर्जर कहावे ॥ आ० ॥ ४ ॥ तेह तप कीधलो पूर्व नव निर्मलो, आंबिल वर्द्धमानानिधानो ॥ ऐरवत क्षेत्रमां तेह श्रीचंद्र नृप, सुख लह्यो नरतमां सावधानो ॥ आ० ॥ ५ ॥ सूरि श्रीज्ञानविमले एम नाखियुं, पूर्ण अधिकार ए थयोथ त्रीजो ॥ शुद्ध नावे करी नविय सुणो हित धरी, एह सम अवर रस नहींय दूजो ॥ आ० ॥ ६ ॥ यतः ॥ जगद्धर्माधारं समसडुपयोगि स्थिरतनु, र्दसत्सत्यासंतस्तदपि सुखसंतोषवशगं ॥ ससंतोषः प्रेषद् विषयविजयोपार्जितजय, स्तपःसाध्यः सोपि प्रनयति तपो वैनवमिदं ॥ १ ॥ सर्व गाथा ॥ ११७७ ॥

॥ इति श्रीचंद्रनृप संबंधप्रबंधे कुशस्थलनिर्गमन १ राक्षसनिग्रहण २ कुंडलपुरराज्यप्रापण ३ चंद्रलेखापाणिग्रहण ४ महेंद्रपुरगमन ५ सुलोचनालोचनपटुकरण ६ तस्करनिग्रह गुटिकांजनादिविशिष्टवस्तुप्रापण ७ प्रियंगुमंजरीपित्रूगोष्ठिकथनपूर्वककरग्रहण ८ मदनपालमनोरथविफलीकरण ए कांतिपुरोपवने प्रियंगुक्षीरनिर्करण तत्पाणिग्रहण १० विद्याधरखड्गप्रापण तद्घातन ११ मदनापाणिग्रहण १२ साधुयुगलसमागमन १३ तद्दानप्रदीपन धर्मश्रवण सम्यक्त्वस्थिरीकरण १४ स्वर्णपुराद्यनेकवस्तुप्रापण नवलद्देशराज्यसंजन कनकवतीवधाहकरण १६ गुणचंद्रमिलणाद्यनेककौतुक प्रयासगमनचर्याया १७ आनंदमंदिरनाम्नि रासके श्रीज्ञानविमलसूरीश्वरविरचिते तृतीयोऽधिकारः संपूर्णः ॥

॥ अथ चतुर्थोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ मंगलमाला विस्तरे थये, आदि शक्ति उदाम ॥ आगम नामे जे थर, प्रगटे अनुपम धाम ॥१॥ तेह शक्ति जे शारदा, व्यापि त्रिभुवन मांह ॥ ते विण बुधजन नहीं, गायनने उछाह ॥ २ ॥ तेह शक्ति प्रभु पद रमे, पद्मावती बलीन ॥ धरणेन्द्र भगवंत विभु, सेवा करे विलीन ॥ ३ ॥ ते श्रीपार्श्व परमेश्वर, प्रणमुं प्रेम सवाय ॥ कहुं चोथो अधिकार हवे, श्रीजो जेम सुख थाय ॥ ४ ॥ दान शील तप ए नवां, पण भावे भाविक होय ॥ सो शिवसुख फल दीये, जग मांहि एम जोय ॥ ५ ॥ धर्म अर्थ वली काम जे, एह त्रिवर्ग जग सार ॥ धर्म मोक्ष जे इच्छीये, तो भावे धर्म उदार ॥ ६ ॥ धर्म वर्गने साधवा, जिम भावे धर्मध्यान ॥ ते माटे गुरुराजजी, कृपा करी बहु मान ॥ ७ ॥ सावधान सुण श्रोतजन, जिनमिथ्या जे पूरपूर ॥ तिम गुण गेहे मन रोहमां, सहना ममरे पूर ॥ ८ ॥ एक दिन मित्र सहित थइ, अश्वगुणज शिखी शीख ॥ कल्याण मंत्रीने देखनी, जलामल बहु दीख ॥ ९ ॥ कहे तुं व्यापीन पुरुषमां, विनय काम करेय ॥ ए मनि जनपद प्रभुजनी, भारी मदद करेय ॥ १० ॥

॥ ढाल पेहेली ॥

॥ राग आशावरी ॥ नायक मोह नचावीयो ॥ ए देशी ॥

शील जलामल देखने, पाम्या श्रीचंद गुणचंद रे ॥ मूलगो देश ते पुरुषमां, चाले जेम अश्वमेघ रे ॥ अहो अहो तेहनी प्रभुता, कुशलता होये देह रे ॥ तेह निरखि नरनारीने, तेह तो पुण्यनुं गेह रे ॥१॥ अहो० ॥ ए आंकणी ॥ विकट अटवीमांहे गया, जोतां नेत्रना तार रे ॥ नगगाउ गुणो कामनी, पूज्य शरीर प्रमाण रे ॥२॥ अहो० ॥ अधिकार जोने पीडियो, एकाकी निराधार रे ॥ करुणा करी पडिलाभ करे, बहु औषध उपचार रे ॥ ३ ॥ अ० ॥ पूरे निशोनी साधवी, विधिपोषध निहांथी आण रे ॥ कालान्तरे जन साधने, देश कार करम जाण रे ॥ ४ ॥ अहो० ॥ दर्शन पद अनुकूल नले, दीये जे सुख नाम रे ॥ अंत अवस्थाये सुख मना, मनीषा भारी धाम रे ॥५॥ अहो० ॥ जग निर्देषक उपकारीया, सुख मम नर जग मांहि रे ॥ रत्नमनी

तिणे कारणें, पृथिवी नाम धराय रे ॥ ६ ॥ अहो० ॥ यतः ॥ दोइ पुरिसे धरइधरा, अहवा दोइ विधारिया धरणी ॥ उवयारे जस्स मइ, उवयारो जं न विसरइ ॥ १ ॥ याचमानजनमानसवृत्तेः पूरणाय वत जन्म न यस्य ॥ तेन भूमिरतिभारवतीयं, न द्रुमैर्न गिरिभिर्न समुद्रैः ॥ २ ॥

भावार्थः—याचना करनारा माणसनी मनोवृत्तिने पूरवा माटे जेनो जन्म नथी, तो खेदकारकज छे; कारण के तेना जन्म थकी भूमिने भार लागे छे. झाडो थकी, पर्वतो थकी अने समुद्रो थकी भार लागतो नथी, परंतु तेना जन्मथी भार लागे छे.

॥ ते जणी मुज पासे अछे, वर पारस पाषाण रे ॥ भुवनमांहे ते दोहिलो, दउं हुं तेह प्रहाण रे ॥ अहो० ॥ ७ ॥ कहे कुमर हवे तेहने, उपकार करी कुण हार रे ॥ उपकृतिथी उपगारनो, इहे तेह गमार रे ॥ अहो० ॥ ८ ॥ वलतुं भाखे कापडी, लांपडी वात म बोलो रे ॥ चापडी मांहे शुं अछे, वापडी तनुं शुं खोलो रे ॥ अहो० ॥ ९ ॥ ठगीनुं नथी चालतो, तुम सम अवर न ठाम रे ॥ पात्र जाणीने आपीये, लीयो जेम करुं प्रणाम रे ॥ अहो० ॥ १० ॥ जेहना फरस थकी होवे, लोहादिक सवि धातरे ॥ सुवर्णपणुं ते उपल लहे, दुर्जन एहनी जात रे ॥ अ० ॥ ११ ॥ मेदिनी अनृण करावजो, करजो दीन उद्धार रे ॥ मुज मठ एक करावजो, महिमा जैन विहार रे ॥ अहो० ॥ १२ ॥ बहु हठ करी पारस दीये, निकामो तेणे तेह रे ॥ मृत ठामे तस मठ कराव्यो, पाल्युं वचन धरी नेह रे ॥ अहो० ॥ १३ ॥ अनुक्रमे आघा चालीया, आव्युं एक उद्यान रे ॥ वंशजाल दीठी तिहां, अष्टोत्तर शत पर्व मान रे ॥ अहो० ॥ १४ ॥ पक्क सरल उन्नत अछे, शास्त्रोक्त लक्षण युत रे ॥ तेह विदारीने लीये, मौक्तिक युगल पवित्त रे ॥ अहो० ॥ १५ ॥ मित्र प्रत्ये नृप एम कहे, वृद्ध मणि नर जाणी रे ॥ नारी ते छे लघु मणि, नर मादा नामे जाणी रे ॥ अहो० ॥ १६ ॥ एहनो गुण ते जाणीये, नर राखीजे पास रे ॥ नारी धन लेइ आपीये, परने करी विश्वास रे ॥ अहो० ॥ १७ ॥ नारी नर पासे आवे, पण ए धन छे दुष्ट रे ॥ परने छेतरवा भणी, न करे काम ए शिष्ट रे ॥ अहो० ॥ १८ ॥ तिहांथी आघा चालीया, मेहेली पालीनो अंत रे ॥ श्री पर्वतगिरि तुंग छे, कनकाजिधपति तंत रे ॥ अहो० ॥ १९ ॥ गिरि देखीने मोहीया, जोवे ते चोपखेर रे ॥ गिरि गव्हरने वनद दरी, तरुवन राजि समीर रे ॥अहो०॥२०॥ तृषाक्रांत थया जिस्ये, जोवे जलनां ठाम रे ॥ तेण समे तरुणी रुदती सुणी, तस दुःख मेटण काम रे ॥अहो० ॥२१॥ ते जोयाने ते गया, विषम ठामे गिरिभंग रे ॥ दुःखणी निलडी देखीने, पूछे दुःखनुं अंग रे ॥अहो०॥

॥ २२ ॥ वली जलस्थानक पूछीयुं, देखीने उत्तम होय रे ॥ जलजूत खोदलो कुंड जे, आणउ आगा हाय रे ॥ अहो० ॥ २३ ॥ तेणे जल ते पीधुं नही, अनुचित कुल व्यवहार रे ॥ निहाळे जलस्थानक कर्युं, तिहां गया दोय कुमार रे ॥ अहो० ॥२४॥ स्नान पान करी सुख लह्यां, आवी बेठा तरुछाय रे ॥ नव तेहनुं कुण पूछीयुं, कहे किराती तिण ठाय रे ॥ अहो० ॥ २५ ॥ ए श्रीगिरिने आगले, दूरे वीणापुर नयर रे ॥ पद्मनाभ नर तेहनो, ते नयरने पासे वली नयर रे ॥ अहो० ॥ २६ ॥ तेहनो नृप तेहने घरे, एक जे गोत्रज कुंत रे ॥ चोरे अपहर्यो अन्यदा, पण आव्यो पोतनो संत रे ॥ अहो० ॥ २७ ॥ तम गुजदे मम पति भण्यो, चोर ते हुंतो अन्य रे ॥ समजाव्यो समजे नही, तेह नरेश्वर शून्य रे ॥ अहो०॥२८ ॥ ते देखानी जती नथी, अने वली सुनुं आज रे ॥ तेणे दुःखे रोउं छुं दुःखिणी, कहुं कर्म जंजाल रे ॥ अहो० ॥ २९ ॥ कहे श्रीचंद्र नहे सुणो, जे अयकुंत ते आणो रे ॥ तुरत रिस करी आणीओ, करस्यो पारस पाषाणो रे ॥ अहो० ॥३०॥ अभियोगे कंचन घट करी, दीधो निजकी हाथ रे ॥ ते लेइ राजाने दीधो, जोडाव्यो प्राणनाथ रे ॥ अहो० ॥ ३१ ॥ निष्कारण उपगारीया, चिरंजीवो ए संत रे ॥ मनि वृत्तांत पतिने कह्यो, हर्ष्यो किरात अत्यंत रे ॥ अहो० ॥ ३२ ॥ श्रीचंद्र तिहांथी चालीया, वीणापुरमां जाय रे ॥ गढ मढ मंदिर प्रमुखनी, शोभा निरखी सुख थाय रे ॥ अहो० ॥ ३३ ॥ सूर्यवती सुत सुंदरु, मित्र ने चरणे विंजे रे ॥ चंद्रिकाये बेठा आवीने, देखी नयर मन रीझे रे ॥ अहो० ॥ ३४ ॥ हवे तिहां पूर्व मालिका तणो, जीव जहां उपन्यो रे ॥ पद्मनाभ नृप अंगजा, पद्मश्री थइ धन्यो रे ॥ अहो० ॥ ३५ ॥ मंत्रि सुता कमलश्रीया, साथे परम जे नेह रे ॥ चेंडु क्रीडा करी शहेरमां, आवंती समनेह रे ॥ अहो० ॥ ३६ ॥ निज घरे ते जातां अने, बेठा श्रीचंद्रने दीठ रे ॥ मोही थकित थइ रही, ज्ञानविमल मति जिठ रे ॥ मत्रिरां पूरण इष्ट रे ॥ अहो० ॥ ३७ ॥ सर्व गाथा ॥ ५७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण वेळाये हाथथे, चायना चंदन छेह ॥ कर्पांसुं मशिया नर्तुं, निज सखी हाथे देह ॥ १ ॥ लेह गइ राजा आगले, किस्युं ए सुण सुकाणहार ॥ कहे सखी आ पुरनो धणी, पद्मनाभ नृप सार ॥ २ ॥ पद्मावती तेहनी प्रिया, पुत्री पद्मश्री नाम ॥ तेणे मूक्युं छे तुम भणी, गलत करो करे सगाम ॥ ३ ॥ तेह सुणी नृप

चिंतवं, न जोगने काज ॥ किंतु निजाशय दाखवा, ए सवि कीधो साज ॥ ४ ॥ अथवा दक्ष परीक्षता, हेते गूथ्युं आहे ॥ एम चिंतीने कनीनिका, मुक्ता मूके ते मांहे ॥ ५ ॥ सखी विसर्जी ते गइ, करे कचोळुं दीध ॥ हरखी कन्या चित्तमां, जाण्युं कारज सिद्ध ॥ ६ ॥ वली त्रुटां कुसुम मोकले, कनी कुमरने ताम ॥ पाठां गुंथी मोकल्यां, नृपति ठे मन अन्निराम ॥ ७ ॥ कहे गुणचंद्र एह शी कथा, नृप कहे सुण परमार्थ ॥ चंदन परे घर नर जलुं, एह सहरे घर सार्थ ॥ ८ ॥ मुक्ता रत्न परे माहरुं, थानक जावी जाण ॥ एह समस्या दाखवी, कुमरी आशय जाण ॥ ए ॥ त्रुटक कुसुम परे थवुं, निर्गुणने असहाय ॥ गुणयुत नरनी संगते, माला शीश धराय ॥ १० ॥ एहवुं सूच्युं जाणीने, आगू नव स्नेह निबंध ॥ नृप पुत्रीये घर वर्यो, मंत्रिपुत्री एम अनुबंध ॥ ११ ॥ तेणे तेह विलोकीयो, तेणे पण तिहां तेह ॥ बेहु जण दृष्टिसरागथी, बाध्यो प्रबल सनेह ॥ १२ ॥ हवे ते पुत्री बेहु गइ, निज निज गेह मझार ॥ पितरने नाव जणाववा, हर्षित हृदय मझार ॥ १३ ॥ एहवे पद जोतो थको, पाठल आयो किरात ॥ निज स्त्री केरां वयणथी, रोमांचित थयुं गात ॥ १४ ॥ वेदिकाये वेठा देखीया, चरणे करी प्रणाम ॥ आ हुं ते तुं जिल्लको, तुम्हो दीधुं जीवित दान ॥ १५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ सकल सदाफल आपे ए ॥ ए देशी ॥

॥ आग्रह करी बहु जावे ए, निज गामे ते लावे ए ॥ जावे ए, उलट धरी उद्यानमां ए ॥ १ ॥ द्राख सहकारनी साख ए, शुज फल केरां लाख ए ॥ चाखे ए, स्वाद करी ते बेहु जणा ए ॥ २ ॥ पूछे नृप हवे वात ए, ए बहु फलनी जात ए ॥ केम थात ए, हेमंत ऋतुए कहो एवमां ए ॥ ३ ॥ कहे शबर सुणो स्वामी ए, फलनी जाति बहु पामी ए ॥ नामी ए, शीशे कर जोडी जणे ए ॥ ४ ॥ एणी गिरे शिखर ठे पंच ए, एक अति उंच ए ॥ प्रपंच ए, मातर शिखर तणो घणो ए ॥ ५ ॥ कोण इशान तेहनी सुरी, विजयाधिष्ठायिनी प्रवरी ॥ अति खरी, ए गिरिनी सहाय करे ए ॥ ६ ॥

॥ अथ किरातकृत स्तवना ॥ चरणाली चामुंमा रण चडे ॥ ए देशी ॥

॥ चरणाली पाली नवि पुले, सिंह यानादि नव रोले ॥ जिजया विजयाधिक रातडी, नयने करी झशमन

शोभे ॥ च० ॥ १ ॥ महा माया आदि शक्ति छे, मातंगी चंगी देह ॥ चीत खुशी महु करे मही, राणे रायराणनेह ॥ च० ॥ २ ॥ धज बंधी धरतीमां घणो, गुण गंभी धनुष टंकार ॥ दुर्जन जन दोषी क्षयाग जे, तेहने काम परे वकार ॥ च० ॥ ३ ॥ श्रीगिरि पर्वत रत्नवासिका, गोपालिका गावे गीत ॥ चत्रि वाहुल जोग खेचे घणा, मणा किणिय नहीं बहु नीत ॥ च० ॥ ४ ॥ मुक्ताफल हारनी पंतिशुं, मनुं तारा महगण ज्योति ॥ गीत गगनाङ्गणनर्तिता, दाखंती कुशमन ज्ञाती ॥ च० ॥ ५ ॥ परमेश्वरी शंबरी शंकरी, शर्वाणी सुखकर साय ॥ जगपती जवानी जासुरी, जगदंबा अंबा माय ॥ च० ॥ ६ ॥ रक्त चंदन सिंदूर रंगशुं, चर्चीजे चाकम चोल ॥ चत्रि पूजा पूजित पार्वती, त्रिपुरा तारा रंगरोल ॥ च० ॥ ७ ॥ शुभ नयन कटाक्ष निरखीया, परखीया पोख्या महु पाता ॥ तेजाळा पाशाळा जगतना, ते माता छे सुखशाता ॥ च० ॥ ८ ॥ इति किरातकृत विजया गीतं ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ ते सुरी चीत्तने आगले, तरुअर एक महाफले ॥ तस फल, स्वादु अमृतने धिग करे ए ॥ ७ ॥ ए पर्वत अति तुंग छे, एक मारगनो संग छे ॥ तिहां प्रसंग छे, मुझ विणु अवर न कोइनो ए ॥ ८ ॥ गृह वचनथी शुं थशुं, परतु कोशादिक छे बहु ॥ निर्धशुं, ए गिरिनी नथि वातदी ए ॥ ९ ॥ साठ धारो आगल चालं, वहु मनोरथ चाहुं ॥ निर्वाहुं, ते कहीने सुभो शिर धरीए ॥ १० ॥ मित्र सहित नृप गिरि चढे, साथे किरात चढ्यो ढडे ॥ अति गूढे, गुहा शृंगवन अति घणां ए ॥ ११ ॥ एक अढे तिहां पट्टवल, नरियुं छे निर्मल जल ॥ उत्पल, कमलपरिमल वासीयुं ए ॥१२॥ सामित्र नृपति स्नान आचरे, सरस महाफल वावरे ॥ अति रवरे, विजया सुरीना शिखरथी ए ॥ १३ ॥ पक्क अफक जे गोळानी, आम्र कर्दमनी बहु घनी ॥ अति घणी, कदली नालेरी तणी ए ॥ १४ ॥ खजुरी राजादनी, जंबू जंबीरी घण घणी ॥ सुरधणी, आगल आवी ढोयया ए ॥ १५ ॥ मधु माधुर्य पूरियां, बीजपूर बहु चूरियां ॥ अंकूरियां, जाम नारिंग तणां फलां ए ॥१६॥ दाडिम फणस ने खारेकी, क्षीरामलक मेवा मळी ॥ आमिली, आंबली पीलू पीलुकांए ॥ १७ ॥ करणां वथ्थणां अति घणां, गुंदां शृंगाटक बदरीनां ॥ टिमरीनां, वासुकी चिर्जट तणा ए ॥ १८ ॥ मृद्विकासव पानक, निर्मल जल शिलानक ॥ आनक, परे गुंजे निर्झरणां तिहां ए ॥ १९ ॥ एला लविंग लवलादलां, नागवल्ली तणां दलां ॥ कोमलां, जातिकोश शुभ केवडा ए ॥ २० ॥ जाइ जुइ मालती, कुंद मचकुंद सोहायती ॥ जायती,

ति आगल . ॥ २१ ॥ ते सघलां सफलां कस्यां, प्रसन्न करी सवि ते धस्यां ॥ शिर धस्यां, चंपक
ती ए ॥ २२ ॥ नूधरे नूधर नावीयो, चित्तमांहि अति गावीयो ॥ जणावीयो, तिणे किरात सवि
२३ ॥ लही आदेश सुरी तणो, वाश्यो नगर सोहामणो ॥ अति घणो, महिमा जाण्यो गिरि तणो
ए । समये श्री जिनवर तणुं, अति उत्तंग सोहामणुं ॥ चोगुणुं, करावीशे निज घर थकी ए ॥ २५ ॥
दिन केताएक तिहां रही, जिनने शीख देइ सही ॥ तुरंग वही, चाश्या आगल वेहु जणा ए ॥ २६ ॥ पंथे
आतप पीमिया, सरोवर पाले संठिया ॥ कुंठिया, मने नहीं वेहु जणा ए ॥ २७ ॥ एहवे एक अध्वग तिहां,
आवे कुमर अठे जिहां ॥ कहे किहांथी, आव्या तस पूठीयुं ए ॥ २८ ॥ तस कर पंजर एक छे, कीरयुगल
मांहे रुचे ॥ किहां गछे, पूछे ते पंथी प्रते ए ॥ २९ ॥ कीरयुगल बोलावीउं, शास्त्र निपुण एम नावीउं ॥ पामीउं,
चित्त प्रमोद प्रते घणुं ए ॥ ३० ॥ पूछे किहां ए पावीयो, अथवा विक्रये लावीयो ॥ सोंपावीयो, कुणही कोइने
देजथी ए ॥ ३१ ॥ ते कहे नंद नयर धणी, हरिषेण राजा बहु गुणी ॥ तेह तणी, तारालोचना नंदनी ए
॥ ३२ ॥ वीणापुर नृप नंदिनी, पद्मश्री छे गुणधणी ॥ तेह तणी, सखी छे तिणे तेहने ए ॥ ३३ ॥ कीरयुगल
ए मोकल्युं, मुज हाथेथी अटिकल्युं ॥ तिहां नल्युं, चित्त मांहोमां तेहनुं ए ॥ ३४ ॥ मुज मुखे तेणीये कहा-
वीयो, स्वयंवर दिने जे नर आवीयो ॥ लावीयो, ते कर्मे ताहरे वर गुणनिलो ए ॥ ३५ ॥ माहरे पण वर ते
वरवो, ए निश्चय मने एम धरवो ॥ निस्तरवो, जमवारो तुज प्रीतिशुं ए ॥ ३६ ॥ अध्वगे ए वार्त्ता कही, कीर-
युगलने संग्रही ॥ गह गही, चाश्यो वीणापुर नणी ए ॥ ३७ ॥ नृप अनेक तिहां आवशे, स्वयंवर मंडप
ोजावशे ॥ पावशे, अति बहु मान नृपति तणां ए ॥ ३८ ॥ ते दिन उपर जाइशुं, स्वयंवर नेला थाइशुं ॥
आयशुं, एहवो चित्तमां नावीयो ए ॥ ३९ ॥ एहवे कोइ आवी कहे, स्वयंवर मंरूप निर्वहे ॥ कृत बहु, उछव
वीणापुर होवे ए ॥ ४० ॥ स्वयंवर देखणने हेते, मित्र सहित नृप बहु हेते ॥ संकेते, जाए तिहां उलट धरी ए
॥ ४१ ॥ नृप सामंत मंत्रीसर, बेठा अनेक राजेसर ॥ केसर, चर्चित अंग सुगंधलां ए ॥ ४२ ॥ विस्मय देखी
पामीया, ए कुण आव्या धामीया ॥ कामीया, स्वयंवरमंरूप देखवा ए ॥ ४३ ॥ ग्रहगणमां जिम चंद्रमा, तेज-
वंतमां अर्यमा ॥ नहीं समा, एहना गुणथी आगला ए ॥ ४४ ॥ ज्ञानविमल मति जेहनी, पुण्य दिशा होये
तेहनी ॥ मेहनी, परे ते सहुने सोहामणा ए ॥ ४५ ॥ सर्व गाथा ।

॥ दोहा ॥

॥ मंदर मांहि आवीया, जब श्रीचंद्र कुमार ॥ हरि गैतालिके उचरूया, बोले जयजयकार ॥ १ ॥ दाने कीर्त्ति वधे घणी, दाने दोलत होय ॥ दान थकी तुं दीधुं हतुं, अफल न थाये कोय ॥ २ ॥ यतः ॥ काव्यं ॥ पात्रे पुण्यनिबंधनं तदितरे दीने दयाख्यापकं, मित्रे प्रीतिविवर्धनं रिपुजने वैरापहारक्षमं ॥ नृत्ये भृत्यजने च यशस्करं नरपतौ सन्मानसंपादकं, भट्टे चारणभिक्षुकाय दानमफलं श्रीचंद्र न क्वापि ते ॥ १ ॥

भावार्थः—पात्रमां दीधेलुं दान पुण्यने बांधनारुं छे तथा दीन जनने दीधेलुं दान दयाने देखाडनारुं छे, मित्रने आपेलुं दान प्रीति वधारनारुं छे, वैरी जनने दान आपेलुं होय ते वैरना नाशने करनारुं छे, पंडितने दीधेलुं दान यशकारक छे, राजाने दीधेलुं दान सन्मानने संपादन करनारुं छे, चाकरने दीधेलुं दान आपणी पर भाव भरनारुं छे; माटे हे श्रीचंद्र ! तमारुं आपेलुं दान कांइ निष्फल नथी.

॥ छंद हाटकी ॥ जे परनारी सहोदर सुंदर, दुःखित जन आधार ॥ जे कायर नर शरणागत पर, वज्र पंजर अनुकार ॥ १ ॥ जे निष्कारण मेघ तणी परे, करता बहु उपगार ॥ ते श्रीचंद्र सदा जयवंतो, अर्थित सुरतरुकार ॥ २ ॥ दोहा ॥ एम निसुणी नृप उघाणे, दीधुं तस बहु दान ॥ उचित न चूके सज्जन ते, जेहने जेह प्रधान ॥ ३ ॥ कहे मित्र प्रते राजवी इहां, रहेवाथी नहीं काम ॥ एम चिंती उपर दिसे, चाल्या निशि पश्चिम याम ॥ ४ ॥ मध्ये रात्रि एक पहोरे, सूता निर्भय चित्त ॥ परभाते उठ्या जिसे, नृप कहे मित्र पवित्र ॥ ५ ॥ मेरुगिरि सुरतरु तळे, कोइ अद्भुत रही आवी ॥ लक्ष्मी वा कुळदेवता, मारी अंक सुख लावी ॥ ६ ॥ गांभति दीठुं स्वप्न ए, कोइ अद्भुत फल थाय ॥ इहां कांइ संशय नहीं, कोइ मोटा सुख थाय ॥ ७ ॥ एम कही पंथे चालीया, अटवीमांहे जाय ॥ आगळ जातां एक स्त्री, दृष्टि गोचरक थाय ॥ ८ ॥ तयथी चकित परलोपना, लक्षणलक्षित देह ॥ नव्य श्यकण अंशुक धर्यां, करतां नीर नीरेह ॥ ९ ॥ वेग थकी ते आवती, सधव मगर्जी गार ॥ श्रीचंद्रे निरखी नयन, अमृतांजन अनुकार ॥ १० ॥ सहुगा देखी चालीया, साथ धरी उत्साह ॥ पद प्रणमीने एम कहे, एणे ठामे किम माय ॥ ११ ॥ आवो आवो मातजी, म करो दुःख लगार ॥ तव सघळा नाठी गया, कहया मनोरथ सार ॥ १२ ॥ केम एकलडां केम इहां, आव्यां पणीवार ॥ नाग्य अमारायी सह्यां, जाण्यां अम संसार ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ १३३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

आज निहेजो रे दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥

॥ तेह वचन सुणी देखी कुमरने, हरखी हृदये अत्यंतजी ॥ यक्षने चैत्ये रे मंडप आवीने, बेसे जेहवे संतजी ॥ १ ॥ सयण सखाइ रे जाग्यवशे मले, रानमांहे होये लीलाजी ॥ जाग्ये वाहलां रे वहेलां हलिमले, होये वयण वसीला जी ॥ स० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ श्रीचंद्राभिध दीठी मुद्रिका, देखी ओलखी हरखेजी ॥ पूछे श्रीचंद्र कहो तिहां, सुरगुरु सरिखो परखेजी ॥ स० ॥ ३ ॥ लेइ उत्संगे रे हर्ष नयन जले, न्हवरावी तस अंगजी ॥ गाढ स्वरसुं रुदन करे घणुं, लूवे वस्त्र सुचंगजी ॥ रूपे जीत्यो अनंगजी ॥ स० ॥ ४ ॥ कहे सुण वाहाला रे सूर्यवती अछुं, जाणे ए हुं मायजी ॥ तुं सुत माहरो रे बार वरसे थयो, मेलो जाग्यपसायजी ॥ स० ॥ ५ ॥ पाहानो छूटो रे हर्ष प्रकर्षथी, आलिंग्यो दृढ होयजी ॥ हर्षे घहेली मली ए मावडी, श्रीचंद्र सन्मुख जोयजी ॥ स० ॥ ६ ॥ कहे श्रीचंद्र एकाकीपणे, अरण्य वसनो जावजी ॥ एह अवस्था रे आवी किणी परे, घनमांहि कुण लावेजी ॥ स० ॥ ७ ॥ आप चरित कहे सूर्यवती तिहां, आप विवाहथी मांडीजी ॥ गणक निमित्त शशि सुहणादिके, इंदुपान नृप रथवाडीजी ॥ स० ॥ ८ ॥ जनमनाम मुद्रा सुमवाटिका, मोचन गुरवच जाणीजी ॥ ज्ञानी साधु वचने सवि आगलुं, चरित कहे सवि वाणीजी ॥ स० ॥ ९ ॥ अनुक्रमे हमणां रे गर्जप्रजावथी, दोहद विषमो थावेजी ॥ रक्त दीर्घिकामांहि नाहवुं, क्रीडा करुं उछाहेजी ॥ स० ॥ १० ॥ ते दोहलो नृपे सचिव जणावीयो, लाक्षारसने प्रपंचेजी ॥ वावमांहे हुं बहु परे क्रीडतां, जट रह्या पासे न संचेजी ॥ स० ॥ ११ ॥ रमी विरमीने थाकी तटे रही, आमिषभ्रांति रक्त वस्त्रेजी ॥ जारंड पंखी रे नज्ञ लेइ गयो, सुजट विफल थयां शस्त्रजी ॥ स० ॥ १२ ॥ भ्रमण करी अहोरात्रि ते पंखीये, आवी शिला परे मूकेजी ॥ नमोऽर्हत् वाणी परे बोलती, कुल व्यवहार न चूकेजी ॥ स० ॥ १३ ॥ शुद्धि ने शान वेहु किहां ए गइ, खग वयनी परे बीठजी ॥ रात निगमी रे एक दरीमांहे, दुःखीयां नयण न निठजी ॥ स० ॥ १४ ॥ चाली प्रजाते रे दुष्ट श्वापद तणा, शब्द सुणी जय पामीजी ॥ कंपती दोडती श्वास जरी घणुं, आ अटवी में पामीजी ॥ स० ॥ १५ ॥ जाग्यवशे संप्रति सुत तुमे मल्या, हर्ष जलधि थयो पूरजी ॥ आज अभिग्रह सवि

पूरा थया, दीठो सुत सुख नूरजी ॥ म० ॥ १६ ॥ सुक सुक गिरह वाणुं दुःख आकरुं, सुक पिताने धारोजी ॥ ते तो ज्ञानी रे जाणे मन तथा, कंम तस काल गमारोजी ॥ म० ॥ १७ ॥ सुणीयां स्वामी केरां वयणडां, स्तुति करवाने आगोजी ॥ स्वामी माहारे रे पुण्यतरु फल्यो, सुमचो निरखो जागोजी ॥ म० ॥ १८ ॥ धन्य कृतपुण्य रे कृतकृत्य हुं थयो, नयणे दीठी माहीजी ॥ यादव पाने रे जलधर वृष्टि थइ, पुण्यनी थामी जाहीजी ॥ म० ॥ १९ ॥ काम सुधारस नवनीत ते ज्ञानी, तेह तेहनो सारजी ॥ माता केरे हृदय पवनुं पिये, पहुंतुं प्रीतिमां सारजी ॥ म० ॥ २० ॥ यतः काव्यं ॥ कष्टा गर्भभरवहनमये दुःखमस्युमशून्यं, पथ्याहारैः स्नपनविधिभिः स्तन्यपानप्रयत्नैः॥ विष्टामूत्रप्रभृतिमलिनैः कष्टमासाद्य माता, त्रातः पुत्रः कथमपि यथा स्तूयते सैव माता ॥१॥

भावार्थः—प्रथम गर्भना भरवानां दुःख धारण करनारी अने अत्यंत तदनंतर पथ्य आहार वडे, स्नानविधियोए, तथा स्तनपानादिक प्रयत्नोए, विष्टामूत्रादिक मलिनतानां सहन करवाए, एम हरकोइ प्रकारनां दुःख सहन करीने जे माताए पुत्रनी रक्षा कराय छे ते माता जगतमां वखणाय छे तेमां शुं नवाइ !

श्रीगुणचंद्रे रे सकल चरित्र कह्युं, पद्मीना अधिकारजी ॥ सूर्यवती माता तव हरखीयां, नृप कहे शो विस्तारजी ॥ २१ ॥ म० ॥ एहवे आव्यो रे जन अवलोकतां, पगले पगले जामजी ॥ अश्व सहित वेगा येतु निरखीया, हरख्या करीय प्रणामजी ॥ २२ ॥ म० ॥ ते पोहच्या कहे मंत्री नृप अछे, आयो आयो पथजी ॥ मंत्री ॥ तव पुरुष सहित गये, मलीया हरखी तेथजी ॥ २३ ॥ म० ॥ तेजाले त्याले करी दीपतो, देखी नृप करे [illegible]जी ॥ तेम अपधारो रे बुद्धिसागर नामे, सचिव हुं तन मन सामजी ॥ सचिव अछुं गुण धामजी ॥ २४ ॥ म० ॥ [illegible] रे नृपति पद्म नामे ॥ तस पुत्री जे तुमे दीठी जी ॥ ते तुमशुं छे अति अनुरागिणी, थइ [illegible]जी ॥ २५ ॥ म० ॥ तुज पुत्री पण अनुरागिणी थइ, तुम मंत्रिने देखेजी ॥ एम जाणीने रे [illegible], शक्तिकरण संतोषेजी ॥ २६ ॥ म० ॥ जोयां सघले पण नवि पेखीया, तेणे मनमां विलखा-[illegible] ॥ [illegible] रे अति आणंदीया, करो कृपे अम्ह प्रसादजी ॥ २७ ॥ म० ॥ स्वयंवरे पण बहु नृप [illegible] नावेजी ॥ कहे राजा ओलगीश कहो केणी परे, लक्षणथी सुप्रकाशेजी ॥ [illegible] ॥ [illegible] तिहां कणे आणीशुं, ताराशोभनाये जेहजी ॥ पद्मश्रीने मूकशुं प्रीतिथी, सगा[illegible] ॥ [illegible] ॥ पद्मश्री नृप अंके ते रही, कीरयुगल लीये हाथेजी ॥ देखी मूर्छा पामी

श्र ते पणुं, कीर गारिका साथेजी ॥ ३० ॥ स० ॥ चेतन पामी शीतल वायुथी, ताते पूछी वातजी ॥ केम ए देखी रे मूर्छाने लही, कहे मुज सांजरी जातजी ॥ ३१ ॥ स० ॥ नयर कुशस्थल पाठल हुं हती, सूर्यवतीने पासेजी ॥ कावर हुं हती कोटि दीपनी, जिनधर्म करुं उल्लासेजी ॥ ३२ ॥ स० ॥ अठाइ महोत्सवने अवसरे, श्री आदिदेव प्रसादेजी ॥ जे दीठो ते नरवर धारीयो, करी अणसण आह्लादेजी ॥ ३३ ॥ स० ॥ ते इहां आव्यो दीठो में सही, धार्यो वर में तेहजी ॥ अवर न धारुं मन मांहे कदा, जो होये गुणनो गेहजी ॥३४॥ स० ॥ एम कहीने रे अशन ते नवि करुं, न पीये नीर लगारजी ॥ एहवे हरिजट्ट आव्यो एम कहे, ते दीठो स्वयंवर मझारजी ॥ ३५ ॥ स० ॥ राते मुजने रे एह परठ करी, मोकलीयो बलयुतजी ॥ तुम्हने दीठा रे जाग्यपले करी, आवी करो पवित्रजी ॥ ३६ ॥ स० ॥ सूर्यवती राणी पण उलखी, चाह्यां थइ ससनेहेजी ॥ तिहां आव्या तस पुर धणी आवीयो, मलीयां हर्षसनेहेजी ॥ ३७ ॥ स० ॥ एहवामांहे हरिजट्ट बोलीयो, गाइ तस गुणग्रामजी ॥ ज्ञानविमल सूरि जाखे एहवुं, सुख लहे पुण्य निदानजी ॥ ३८ ॥ स० ॥ सर्व गाथा ॥ १३० ॥

हरिजट्टेनोक्तं ॥ कवित उप्पो ॥ पूर्वे कुशस्थल नयर, जिननयने देखी ॥ सारिका कहे निदान, चारु जिनधर्मने पेखी ॥ अणसण करी थइ इन्द्र, नयर वीणापुर राजा ॥ पद्म पद्मावती कंत, पद्मश्री पुत्री ताजा ॥ प्रथमा निज पुन्ने करी, पठी जातिस्मरणे पेखीयो, ते श्रीचंद्र जयो चिरं, आज नयणे में निरखीयो ॥ १ ॥ गाहा ॥ गन्नेवर वीरसुए, सोणियरइ मोहले तया जाये ॥ जारंसेणाणीया, सिरिगिरि पासंमि जा मुक्का ॥ ॥ १ ॥ सा सूरियवइ जणणी, मिलिया वरिसे दुवालसे जरस ॥ सिरिपवयस्स नियमे, सो निवइ जयउ सिरिचंदो ॥ २ ॥ कणयपुरे कणयन्नय, धूया कणगाउ दीइ सहरुं ॥ पालइ सुराइ दीणं, नवलक्ख पहुय सिरिचंदो ॥ ३ ॥ इत्यादि ॥ सर्व गाथा ॥ १४७ ॥

॥ दोहा ॥

सूर्यवती एम सांजली, आपे तस महा दान ॥ कहे जननी मुज देखतां, करो पाणिग्रह मान ॥ १ ॥ मात तणो आग्रह लही, कीधो तिहां विवाह ॥ पद्मश्री तारालोचना, परणी बहु उत्साह ॥ २ ॥ कमलश्री मंत्रीसुता,

पुण्यपसाये तेम ॥ ३ ॥ कहे चेटक नृप गण प्रत्ये, पद्मश्रीनी
परणी गुणचंद्रेण ॥ मंगल वरत्यां अति घणां, ॥ तेणे श्रीचंद्र नृपति थयो, ते तो गुणगुं स्याम ॥ गण
नेत ॥ तस पावले मालिका हती, पद्मश्री वरदंत ॥ ४ ॥ कहे नरवाहन नृपति सुणो, एहनो पण संबंध ॥ कहे करुणारसना
कमलश्री गुणचंद्रने, फिरयुं मेहनुं धाम ॥५॥ ते विमलाचले जाय ॥ जप तप ध्यान थकी तिहां;
धणी, पुरवी पूर्व प्रबंध ॥ ६ ॥ धरण गणक पहेलां कह्यो, समाधान मरणे करी, नरजव करी छवी
कल्याणाय मूकाय ॥ ७ ॥ श्रीदेवी पेहेली प्रिया, धरणे मारी जेह ॥ जिनदत्ता ते जनमते, थाशे थइ अनिराम ॥ ए ॥
तेह ॥ ० ॥ सुंदर शेठ तणी सुता, नंदपुरे वर नाम ॥ शत्रुंजय यात्राये जाय ॥ १० ॥ करतो
गोपन पामी पण पति, इछा वरयें न थाय ॥ जनक साथे संघ लेइने, ॥ ११ ॥ जातिस्मरण तिहां
तीर्थनी सेवना, धरणे दीठो जाम ॥ पूरव नयना योगथी, मन प्रसन्न थयुं ताम ॥ धरणे पण कर्यां खामणां, संधाणो
सनेह, जाणी धरण निज कंत ॥ विधिपूर्वक पण सेवतो, देखी राग अत्यंत ॥ तीर्थ नक्ति महिमा थकी, गुणचंद्र थयो
नही प्रेम ॥ धरणे अणसण आदर्युं, संलेषना करे एम ॥ १२ ॥ जिनदत्ता मरीने थइ, संप्रति कमलश्री एह ॥
निराबाध ॥ पालणे मलधारिणी, धरती चित्त समाध ॥ १३ ॥
पाणिग्रहण थयुं एहने, ए पण पूर्व सनेह ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ १एए ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ सुंगिया गिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥

एम सुणी गणधर तणां वयणां, कहे चेटक राय रे ॥ कर्म कीधां सुकृत दुष्कृत, ते जोगवे क्षय थाय रे ॥१॥
जागीने एम जाय प्राणी, जाणीए जिनधर्म रे ॥ नेह आतमजायथी लहे, परम पदनां शर्म रे ॥२॥ जागी० ॥
ए आंकणी ॥ हवे श्रीचंद्र तिहां राजा, थया प्रौढ प्रताप रे ॥ करे धर्मनां क्षेत्र पुष्टां, टाले व्यसनना व्याप रे
॥ ३ ॥ जा० ॥ हवे कुशस्थल पुरे मूके, करती नृप बहु प्यार रे ॥ बुद्धिसागर सचिवने सचि, कहे एम समा-
चार रे ॥ ४ ॥ जा० ॥ रत्नपुरे लक्ष्मण मंत्रीने, कही इहांनी शुद्धि रे ॥ पछी पिताने साथ जइने, सकल
करेगी शुद्धि रे ॥५॥ जा० ॥ श्रीगिरिने निवारके तिहां, कही मोयन स्वामी रे ॥ चंद्रपुर तिहां नयर वास्युं, तुंग
मंदिर श्रेणि रे ॥ ६ ॥ जा० ॥ गढ मठ विशाला पोल तोरण, वापि सर आराम रे ॥ कूप यूपने थूज बहुली,

गजराजा ताम रे ॥ ७ ॥ जा० ॥ मध्यभूने चार द्वारे, चंद्र जिनतु दीप रे ॥ महोदय पद देने तेहनुं, चंद्रपति नाम दीप रे ॥ ८ ॥ जा० ॥ सीम फरती सर्व पामी, गाम ठाम निवेश रे ॥ ते किरानने कृत्यकारी, मापीओ दीर्घ देश रे ॥ ९ ॥ जा० ॥ स्वर्गस्वालीन परम पुरुष, यौगथी मति जनि रे ॥ धर्मयानके करे मंडित, पुण्यकरणी सीम रे ॥ १० ॥ जा० ॥ दानशाला धर्मशाला, चैत्यशाला शाल रे ॥ न्यायधर्मनी पंडा बांधे, तेजे तापकाळ रे ॥ ११ ॥ जा० ॥ हवे एक दिन दानशालाये, पथिक आव्यो एक रे ॥ राय पूछे विदेशी आव्यो, वदे वरदानपुरथी छेक रे ॥ १२ ॥ जा० ॥ कनकपुरमांहे यइने, आवीयो हुं आज रे ॥ ते नगरनो स्वामी विदेश, गयो छे निज काज रे ॥ १३ ॥ जा० ॥ मंत्री सुमणण राज काजे, अन्ने वहु मानपान रे ॥ पण ते नुपनुं कटक छेड, आवीदो परी मान रे ॥१४॥ जा० ॥ गुणविभ्रम नृप मवत यइने, देशरोध करेइ रे ॥ सैन्य चतुरंग मुख मंत्री, चदो मन्मुख छेइ रे ॥१५॥ जा० ॥ एम पंथक वयण निसुणी, करी गूढ विचार रे ॥ पद्मनाज प्रमुख नृपनि, साथे गुणचंद्र मार रे ॥ १६ ॥ जा० ॥ प्रयाणक त्रिक माथे आगे, चालीदा छेइ सैन्य रे ॥ चंद्रहाम झनि तान आप्युं, जन प्रजाव न दैन्य रे ॥ १७ ॥ जा० ॥ ते योजाची बल्या पाछा, फरी धीगिरे जाय रे ॥ गाम नगर जे आर वस्यां, निरखी वहु सुख थाय रे ॥ १८ ॥ जा० ॥ चार सैन्ये कोइ गामे, वस्यां रात्रे आय रे ॥ नष्टचर्याये श्रीचंद्र नृप, पथिकशालाये जाय रे॥ १९ ॥ जा० ॥ तिहां आगम एक बोहतो, करे मत्री मनि वान रे ॥ गतदिने हुं कुंतलाविध, पुरे रहीयो राति रे ॥ २० ॥ जा० ॥ सुपन रोठ जे कृपण तेहने, चार सुत वहु चार रे ॥ मध्य रात्रे तेह लठी, करे स्नान शृंगार रे ॥ २१ ॥ जा० ॥ गइ वाटमांहि शमी तरु, तेह उपर बेसे रे ॥ गइ किहां ए पात्री आवी, हुं रह्यो नये ते देश रे ॥ २२ ॥ जा० ॥ तिहां थकी हुं आज आव्यो, जोयण पंच ते गाम रे ॥ तेह प्रवृत्ति श्रीचंद्रनी सुणी, कर्युं मन उद्दाम रे ॥ २३ ॥ जा० ॥ सैन्य मूकी तिहां पहुता, अदृष्ट गुटिकायोग रे ॥ मांज वेताय सुधनने घरे, रजनी रहे गत शोग रे ॥ २४ ॥ जा० ॥ मध्य राते चार वहूवर, चढी तरु करी यान रे ॥ मांहो मांहे कहे किहां जावुं, वहे एक करी मान रे ॥ २५ ॥ जा० ॥ गतदिने जे वात निसुणी, तेह जोवा हेत रे ॥ दीप कर्कोटके अचरिज, आज जे संकेत रे ॥ २६ ॥ जा० ॥ चालुं एम कही चाली, जही योगिनी मंत्र रे ॥ श्रीचंद्र पद्म नर भूत इव चढ, रहो जोवा मंत्र रे ॥ २७ ॥ जा० ॥

सुस्थान मूकी, जोइ पुर निःसंग रे ॥ २० ॥ जा० ॥ नृप पण तेणे पंथे पुरमां, क्रीडाने जाय रे ॥ विविध थानके गइ ते पण, नृप मन अचरिज थाय रे ॥ २९ ॥ जा० ॥ कूवे नृपति सिंह द्वार जागे, विविध यंत्रनी जाति रे ॥ प्रौढ मंडपमांहे चित्रित, दीपिकाद्भुत कांति रे ॥ ३० ॥ जा० ॥ विविध मुक्ताफल विराजित, पाद पीठ प्रधान रे ॥ मध्य सिंहासन देखी चिंते, विजय विमान जाणे निदान रे ॥ ३१ ॥ जा० ॥ नृपति देखी चित्त चिंते, जोग्य वस्तुने योग्य रे ॥ शून्य सिंहासन न शोभे, महावीरने जोग्य रे ॥ ३२ ॥ जा० ॥ शयन आसन यान वाहन, शस्त्र शास्त्रासन पान रे ॥ एम साधारण सहुने, जेम पुण्यवंत निधान रे ॥ ३३ ॥ जा० ॥ मुख थकी गुटिका निकासी, वेगे निर्भय होय रे ॥ खड्ग हाथे सत्त्व साथे, गिरिशिखर हरि परे जोय रे ॥ ३४ ॥ जा० ॥ पासे तस एक थाल जडीयो, नागवल्लीदलेण रे ॥ तास स्वादन करी आदर्शे, जोवे वदन चिरेण रे ॥ ३५ ॥ जा० ॥ पडदामां जवनिकांतरे, पुरुष बेठा दश रे ॥ आवी जय जय रवे पोढ्या, जाणे थया परतक्ष रे ॥ ३६ ॥ जा० ॥ केइ नर वाजित्र वाजे, केइ करे संगीत रे ॥ केइ कहे पुण्य जाग्य अम्हचां, ज्ञानविमल सूरि हेत रे ॥ फलया सुकृत संकेत रे ॥ ३७ ॥ जा० ॥ सर्व गाथा ॥ २३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे सुजटे परिवर्यो, आव्यो ग्रामाधीश ॥ निरखी श्रीचंद्र छवीया, प्रणमे नामे शीश ॥१॥ ग्रामाधीशे गुणरने, खेड उच्छरंगे गाय ॥ ज्योति झगामग कुमरतनु, देखी विस्मय थाय ॥२॥ अम्ह जाग्ये तुम्हो आवीया, त्रिण वाहल त्रिण गाज ॥ परमानी परे निपन्युं, तुम्ह दर्शन महाराज ॥ ३ ॥ कहे हुं कर्कोट द्वीपनो, रविसन नामे राय ॥ नव पुत्री ने माहरे, तेहनां ए नाम सुहाय ॥ ४ ॥ अथ नामानि ॥ कनकसेना १ कनकप्रजा, २ कनकमंजरी नाम ३ ॥ कनकाजा ४ कनकसुंदरी, ५ कनकमाला ६ गुणखाण ॥ ५ ॥ कनकरमा ७ ने मनोरमा, ८ स्वर्णाजा ९ इति नाम ॥ यौवन पामी देखीने, चिंतातुर थयो ताम ॥ ६ ॥ यतः ॥ जातेति पूर्वं महतीथ चिंता, कस्मै प्रदेयेति ततः प्रवृद्धा ॥ दत्ता सुखं स्थास्यति वा नवेति, कन्यापितृत्वं किल हंत कष्टम् ॥ १ ॥ गाहा ॥ जम्मंतीए सोगो, वड्ढंति एव वड्ढए चिंता ॥ परणीया ए दंडो, जुवतिपिया निच्चिओ डुलियो ॥ २ ॥ निय घर सोहा, पर गेह मंडणी, कुलकलंक कलिज्जवर्णं ॥ जेहिं न जाया धूया, ते सुहिया जीवलोगम्मि ॥ ३ ॥

नाथा. १—प्रथम कन्याना पिताने दीकरी उत्पन्न थाय, त्यारेज चिंता थाय, पछी योग्य वरने देवी ए चिंता थाय. तेने दीधा पछी वली सुखथी रहेशे के नहीं रहे? एम चिंता थाय, माटे कन्याना पिताने हा! मोहोटुं कष्ट छे ॥ १ ॥ पाछली बे गाथानो भावार्थ सरल छे माटे लख्यो नथी.

॥ दोहा ॥

॥ सज्जामांहे निमित्तियो, पूछ्यो में एक वार ॥ ए सखिनो वर एक होशे, किंवा जिन्न जरतार ॥ ७ ॥ तेणे जोइने एम कह्युं, ए सखिनो वर छे एक ॥ कोइ परद्वीपथी आवशे, मोहोटो नरपति छेक ॥ ८ ॥ नाम ठामनुं मुज नहीं, एहवुं निर्मल ज्ञान ॥ पण अहिनाण कहुं अछुं, जाणी निमित्त अनुमान ॥ ९ ॥ दशमी दिननी मध्यनिशे, आवी मलशे तेह ॥ करो सामग्री लग्ननी, वेला लीध सुसनेह ॥ १० ॥ सजी सामग्री तस कहे, दिन पण तेहिज आज ॥ ए सिंहासन अलंकर्युं, सीधां वंछित काज ॥ ११ ॥ संप्रति सुंदर लग्न छे, दोष अढार निकलंक ॥ कन्यानो करग्रह करो, जेम रोहिणी मृगांक ॥ १२ ॥ बहु आग्रहथी नव कनी, करपीडन तत-काल ॥ ते निरखणने आवीया, नगरलोक असराल ॥ १३ ॥ चार वहू जे शेठनी, जोवा आवी जाम ॥ ते देखीने तें कहे, अहो योग्य अभिराम ॥ १४ ॥ चिंते कुमर ए जायशे, तो इहां रह्यो केम करेश ॥ ए साथे जाउं तो जलुं, शूनो छे मुज देश ॥ १५ ॥ एम चिंती पानेतरे, वस्त्रांचले लखे एम ॥ प्रतापसिंह नृपसुत अछुं, श्रीचंद कुशस्थले खेम ॥ १६ ॥ कुंकुमशुं अक्षर वली, लखी विवाहनी केलि ॥ सौध ऊर्ध्व जूमे जइ चिंते न करुं जेलि ॥ १७ ॥ कनकसेना करमुद्रिका, देइ लेइ निज वेश ॥ वपुचिंतानो मिष करी, निसरीया, परी वेश ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥ २५८ ॥

॥ ढाल पांचमी. ॥

॥ नव गज फाटो घाघरो रे, दश गज फाटो चीर रे ॥ हठीला वयरी, धसमस पके गोरी घाघरे हो लाल ॥ ए देशी ॥ शमी तरु पासे आवीया रे, जेहवे धरीय उमाह रे ॥ हठीला राणा ॥ जलुं तुम्हारुं जाग्य छे हो लाल ॥ पहेलां आवी पद्म वर्णनी रे, दीठो तेणीए तेह रे हठीला राणा ॥ १ ॥ ज० ॥ योगिनी खर्परा ने उमा-रे, चारे पद्मर तेह रे ॥हठी०॥ खर्परा उमयाने कहे रे, ए चारे यद्मू कृपणने गेह रे ॥ हठी० ॥ २ ॥ ज० ॥

ए दुःखिणी मननी दुःखी रे, एक दिन गइ तस धाम रे ॥ ह० ॥ निजाजोजन बहु दीधुं रे, गुणी हुं तेणे बहु माम रे ॥ ह० ॥ ३ ॥ ज० ॥ एहने पिया झीलवी रे, तेणे मन गमतुं थाय रे ॥ ह० ॥ अरे जन्रे ए उमगा अने रे, दिाहणी मल्हारी मन जाय रे ॥ ह० ॥ ४ ॥ ज० ॥ प्रथम धणी नाठे हुतो रे, अपर पति मुज गइ कीध रे ॥ ह० ॥ ए अम्ह नगति न्रे पणुं रे, जाण्यो ए पण सिद्ध रे ॥ ह० ॥ ५ ॥ ज० ॥ अपरिज जोया इहां आवीया रे, नखे मलीयां मोरी माय रे ॥ ह० ॥ हवे किहां जाशो ते कहो रे, यद्भुअर कहे यही धाय रे ॥ ह० ॥ ६ ॥ ज० ॥ योगिनी कहे अमे जायशुं रे, कुशस्थल पुरे आज रे ॥ ह० ॥ यद्भुअर पूछे तिहां शुं अने रे, कौतुक मेरी माय रे ॥ ह० ॥ ७ ॥ ज० ॥ गर्पशा कहे तेहनो धणी रे, प्रतापसिंह राजान रे ॥ ह० ॥ सूर्यवती तेहनी प्रिया रे, ते हमणां माधान रे ॥ ह० ॥ ८ ॥ ज० ॥ डोहोलो तेहने उपनो रे, गर्न तणे अनुसार रे ॥ ह० ॥ नाठे रुधिर नरी वावडी रे, पूरो बुद्धि प्रचार रे ॥ रंगिली राणी ॥ ९ ॥ ज० ॥ नरी अलतारस वावीशुं रे, पमन थयां तस रक्त रे ॥ रं० ॥ अपहरी नारंड पंखी रे ॥ ह० ॥ तेण वियोगे दुःखी राजियो रे, मरवा करे न्रे पंखी रे ॥ ह० ॥ १० ॥ ज० ॥ चिता रचावीने दाजतो रे, राखशे न्रे मंत्रि परिवार रे ॥ ह० ॥ आज लगे ते जीवशे रे, अने प्रभाते थये पार रे ॥ ह० ॥ ११ ॥ ज० ॥ सूर्यवतीना पुत्रने रे, देशो ए माहारुं राज रे ॥ ह० ॥ मंत्रियने कही उद्यानमां रे, गोत्रदेवी आगे करी गाज रे ॥ ह० ॥ १२ ॥ ज० ॥ काष्ठजक्षण करशे सही रे, तदा कहेशे कोइ देव रे ॥ ह० ॥ तेवारे राजा रखशो मुझे रे, मगरिवार [illegible] रे ॥ ह० ॥ १३ ॥ ज० ॥ तेह विनोदने जोयवा रे, जाशुं अमो उजमाल रे ॥ ह० ॥ एम सुणी मूकी [illegible] गर्पशा रे, यद्भुअर गइ ततकाल रे ॥ ह० ॥ १४ ॥ ज० ॥ तरुतले आवी चिंतवे रे, जइए आपणे ते [illegible] रे ॥ ह० ॥ [illegible] ते यामिनी रे, तो होये जोया काम रे ॥ ह० ॥ १५ ॥ ज०॥ मुज जाण्ये योगिनी [illegible] रे, [illegible] रे ॥ ह० ॥ विघन निवारुं नातनुं रे, तो सही पहुंतो जाग रे ॥ रंगिली राणी ॥१६॥ ज० ॥ [illegible] रे, गुप्तिकाजनने योग रे ॥ ह० ॥ क्षणमां कुशस्थल पामीया रे ताउ, देखे [illegible] रे ॥ ह० ॥ १७ ॥ ज० ॥ [illegible] सामग्री करी रे, दीठी तेणी वार रे ॥ह० ॥ अदभूत वेषे [illegible] रे, [illegible] रे ॥ ह० ॥ १८ ॥ ज० ॥ हवे गुरु ग्नान मज्जन करी रे, गोत्रदेवी [illegible] रे ॥ ह० ॥ [illegible] रे, [illegible] आग रे ॥ ह० ॥ १९ ॥ ज० ॥ पहुचे तेह

निमित्तियो रे, कहे करी उंचो हाथ रे ॥ रंगिली० ॥ परख परख तुं मतिमंत रे, तेह सुणे भूनाथ रे ॥ ह० ॥
॥ २० ॥ ज० ॥ राजा तेहने विधे भक्ती रे, पूजी प्रणमी पाय रे ॥ रं० ॥ कांइ जाणे छे किंवा मुखरता रे लाल,
दाखो कोइ उपाय रे ॥ ह० ॥ २१ ॥ ज० ॥ तिथिपत्र जोइ स्वरज्ञानथी रे, जाणुं तुज दुःख भूप रे ॥ रं० ॥
मन चिंतव्युं सवि जाणीये रे लाल, अमो छुं ब्रह्मस्वरुप रे ॥ ह० ॥ २२ ॥ ज० ॥ सूर्यवती छे जीवती रे,
शुभ ठामे पुत्र समेत रे ॥ रं० ॥ थोडा दिनमांहे हवे रे लाल, मलशे तुजने हेत रे ॥ ह० ॥ २३ ॥ ज० ॥ दिन
अष्टकमां आवशे रे, कुशल खेम समाचार रे ॥ ह० ॥ सचिव प्रमुख हरख्या घणुं रे, तुम्ह वाणी सुधायी
सार रे ॥ रं० ॥ अम्हने दीध आधार रे ॥ रं० ॥ २४ ॥ ज० ॥ गोत्रदेवीए आणीयो रे, एह निमित्तक रत्न रे
॥ रं० ॥ सत्यवचन ए थायशे रे, करजो एहना यत्न रे ॥ रं० ॥ २५ ॥ ज० ॥ चेटालीसुरीने स्तवी रे, पेसारे
पुरमांहि रे ॥ ह० ॥ उत्सव साथे निमित्तियो रे, आवे नृपति उत्साह रे ॥ रं० ॥ २६ ॥ ज० ॥ हवे छानो श्रीचंद
वनमां गयो रे, तरु योगिनी नवि दीठ रे ॥ ह० ॥ मनमां चिंते माहरे रे, कार्य थयुं मन इष्ट रे ॥ जनक उग-
रीयो विशिष्ट रे ॥ रं० ॥ २७ ॥ ज० ॥ मध्याह्ने भूल्यो थयो रे, योगी योगनुं ध्यान रे ॥ रं० ॥ राजाये
विधिशुं जमावीयो रे, पूछे नृप योगनिदान रे ॥ रं० ॥ लघुवये शुं थयुं ज्ञान रे ॥ रं० ॥ २८ ॥ ज० ॥ कहे
योगी ध्यान साधवा रे, करवा परउपगार रे ॥ रं० ॥ साधीये लघुवये तो भलुं रे, संतना ए आचार रे ॥
॥ रं० ॥ २९ ॥ ज० ॥ पण जठर पिठर केके परख्युं रे, ते पूरे होय समाधि रे ॥ रं० ॥ अन्न ते देह आधार
छे रे, देहथी बुद्धि अगाध रे ॥ रं० ॥ ३० ॥ ज० ॥ तेहथी तत्त्वचिंता होवे रे, तेहथी उपजे ध्यान रे ॥रं०॥
ध्यानथी लय गुण उपजे रे, तेहथी होय एक तान रे ॥ रं० ॥ ३१ ॥ ज० ॥ यतः ॥ देहः स्नेहः स्वरमधुरता,
बुद्धिलावण्यलज्जाः प्राणानंगः पवनसमता क्रोधहानिर्विलासाः ॥ धर्मः शास्त्रं सुरगुरुनतिः शौचमाचारचिंता,
भक्तापूर्णे जठरपिठरे प्राणिनां संभवंति ॥ १ ॥

भावार्थः—मनुष्यनुं जो भात थकी पेट भरयुं होय तो, देह, स्नेह, स्वरनुं मधुरपणुं, बुध्धिनुं लावण्य, लज्जा, प्राण, कामदेव, वायुनी समता, कोधनो नाश, अनेक विलास, धर्म, शास्त्र, देवगुरुने प्रणाम, पवित्रता, आचारनी चिंता, ए सर्व संभवे छे ॥ १ ॥

तेह भणी अन्न ते जोइए रे, अवर ते भोगविलास रे ॥ रं० ॥ योगीने भवसुख भासिया रे, ए तो कर्मना

गाय रे ॥ रं० ॥ ३२ ॥ ज० ॥ ते जाणी योगने सेवीये रे, योग ते परम रसांग रे ॥ रं० ॥ योग ते शुद्ध परिणामे सधे रे, साधते अष्टांग रे ॥ रं० ॥ ३३ ॥ ज० ॥ यम नियम प्रणिधानशुं रे, आसन प्राणायाम रे ॥ रं० ॥ प्रत्याहार ने धारणा रे, ए अष्टांग योग नाम रे ॥ रं० ॥ ३४ ॥ ज० ॥ एहना भेद अछे घणा रे, जाणे ते होये जाण रे ॥ रं० ॥ ज्ञानविमल गुरु सेवथी रे लाल, लहीए तस मंडाण रे ॥ रं० ॥ ३५ ॥ ज० ॥ सर्व गाथा ॥ २०३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे योगी गुरुने करी, पवनसाधना भेद ॥ निद्रा विकथा हास्य, आसन केरा भेद ॥ १ ॥ ए चारे जये साधीये, ध्यानारंभ विचार ॥ प्रणवबीज संभारीये, एहनां स्थान उदार ॥ २ ॥ आधार लिंग नाभि हृदये, कर कमले कंठदेश ॥ ए स्वरस्थानक जाणीये, पत्र होय सुविशेष ॥ ३ ॥ छोडे चार दश दश दले, द्वादश षट्दलसी चार ॥ ए संख्याये वर्णना, जाणीजे आधार ॥ ४ ॥ यतः ॥ आधारे लिंगनाभौ हृदि करकमले कंठदेशे ललाटे, द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश दश दलेद्वादशार्द्धे चतुष्के ॥ नासांते बालमध्ये डफ कठसहिते कंठदेशे स्वराणां, सिद्धं प्रणवबीजं सकलसहितं ब्रह्मरूपं नमामि ॥ १ ॥ अस्यार्थः—गुदमूले आधारचक्रं चतुर्दलं ॥ तत्र च शषसः मध्ये हकारः ॥ १ ॥ लिंगमूले स्वाधिष्ठानचक्रं षड्दलं षट्कोणयुतः ॥ २ ॥ नाभौ मणिपूरकं चक्रं दशदलं ॥ ३ ॥ कमहृदये अनाहतचक्रं द्वादशदलं ४ कंठे ग्रीवायां विशुद्धिचक्रं षोडशदलं ॥ अ आद्य प्रमुख स्वर स्थापना ॥ ललाटे आज्ञाचक्रं अदर्पं प्रणवः अनादिबीजं ॥ इत्येतत्पुरुषाकारमयं प्रणवबीजं शिरसि प्रणवः चतुर्दश स्वराः ललाटे ककारादिव्यंजनपर्यंतद्वात्रिंशद्दलं द्विधारं षोडशदलमित्यर्थः यरलवशषसहक्षं षट् चक्रमध्ये द्वादशारं इत्यादि गुरुगम्यं ज्ञेयं ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहोनिश एहवी धारता, विविध योगिनो मेल ॥ नैमित्तिक साथे करे, दिवस गमे एम गेल ॥ ५ ॥ ए अंगज ने साहसे, मन नवि जाणे कांय ॥ लघुवयथी पण योगनो, पूर्ण लहे आम्नाय ॥ ६ ॥ एणे निज जन्मनुं साधीयुं, फल पण जाणे राय ॥ नैमित्तिक पण नयरमां, सर्व जोवे नवि थाय ॥ ७ ॥ पधारे जाये निज घरे,

पधारे धीपुर आय ॥ पधारे रात निज गातना, पूछे सुख समुदाय ॥ ८ ॥ हवे जयादिक चिंतवे, प्रिया दुःखथी राय ॥ आपणही मरतो हुतो, टलती सहेजे बलाय ॥ ए ॥ पण ए नैमित्तिया थकी, चिरंजीवित थयो नूप ॥ पण आपण मन चिंतव्युं, केम होशे अर्थरूप ॥ १० ॥ चार मांहे एक योजीयो, आठ दिवसनी सीम ॥ कुशल देगनी धारता, आवशे ए नीम ॥ ११ ॥ चार दिवसमां कीजीए, लाख तणुं घर एक ॥ पंचम दिवसे रायने, पंगारीजे छेक ॥ १२ ॥ शुभ मुहूरत अपवर्गमां, थापीजे जिहां नूप ॥ धार देइने जगावीये, अनल महाचिनूप ॥ १३ ॥ कार्य सीजशे आपणुं, राज्य होशे निज हाथ ॥ पण जाणे नहीं बापडा, पुण्य अने जस साथ ॥ १४ ॥ तस मातुं नवि निपजे, जो करे कोडि उपाय ॥ परने जेहवुं चिंतिये, तेहवुं निज घर थाय ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ २०९ ॥

॥ ढाल ७मी ॥

॥ करतां सेती प्रीति सहु होंशे करे रे ॥ सहू ० ॥ ए देशी ॥

हवे ते मंत्र प्रभाव, सुणो अदृश्य थइ रे के ॥ सुणो अदृश्य थइ ॥ जोइ मर्म रहस्य ते, थानकमां जइ रे के ॥ था० ॥ तेह कुमरनी कुबुद्धि, जतुगृह मांडियुं रे के ॥ ज० ॥ पूज्य विनय व्यवहार, पणुं सवि छांडियुं रे के ॥ प० ॥ १ ॥ अवधूते पण ताम, प्रतिज्ञा केलवी रे के ॥ प्र० ॥ आवी निज उतारे, सुरंग योग मेलवी रे के ॥ सु० ॥ जिहां लगे लाखनुं गेह, तिहां लगे ते करे रे के ॥ ति० ॥ कोइ न जाणे तेम, बिहुं घरने धरे रे के ॥ बि० ॥ २ ॥ चार दिने थयो पूर्ण, आवास ते लाखनो रे ॥ आ० ॥ पंचम दिने शुभ मुहूर्त्त, जोइ पंच साखीनो रे के ॥ जो० ॥ हवे नृप ते घरमांहि, पेसे अवधूतशुं रे ॥ पे० ॥ कुमर जयादिक जाणे, वेहुने धूतशुं रे ॥ वे० ॥ ३ ॥ देइ धार निज गेहनुं, नृपति निमित्तियो रे के ॥ नृ० ॥ सुख दुःख केरी वात, करे एक चित्तियो रे के ॥ क० ॥ एहवे प्रेर्यो अग्नि, दावानल सारीखो रे के ॥ दा० ॥ ते जाणी कहे नूप, असमंजस ओलख्यो रे के ॥ अ० ॥ ४ ॥ तव ज्ञानी अवधूत, सुणो नृप ताहरा रे के ॥ सु० ॥ राज्य लुब्ध ए पुत्र, वैरी तुज माहरा रे के ॥ वै० ॥ तेणे ए कीधुं काम, आपणने मारवा रे के ॥ आ० ॥ कहे राजा हवे केम, आपोपुं तारवा रे के ॥ आ० ॥ ॥ ५ ॥ तातहत्याना कारक, धिक ए नंदना रे के ॥ धि० ॥ कहे राजा हवे आप, उगारवुं केम मना रे ॥ उ० ॥

कहे योगी जिम राखे, आप महामती रे के ॥ आ० ॥ विषय दावानलमांहि, ...
॥ ६ ॥ तेम आगणे छगरलुं, कीमी चिंता नथी रे के ॥ कि० ॥ देखाडी ते सुरंग, सुरंगे तानथी रे के ॥ ॥ गु० ॥ परजलीयो जव अनल, महाबले पवनने रे के ॥ म० ॥ कहे योगी पादमहार, दीधो पणे गमे रे के ॥ दी० ॥ ७ ॥ ज्ञानी महित ते नृप, सुरंगमां निकल्या रे के ॥ सु० ॥ जीवित दानना दायक, सुधा अटकल्या रे के ॥ सु० ॥ पहये खागनुं गेह, नरम थयुं परजली रे के ॥ न० ॥ ते सांभली नृप चित्त, चि- घन गयुं गहु टली रे के ॥ चि० ॥ ८ ॥ अहो अहो ज्ञानीनुं ज्ञान, अमान गुणे नरुं रे के ॥ अ० ॥ नृप प्रशंसे वारंवार, एहिज चिंते धरुं रे के ॥ ए० ॥ ए योगीना संगमथी, हुं उगर्यो रे के ॥ हुं० ॥ धिग् धिग् सुत परत्यक्ष, ए वंश मेलो कर्यो रे के ॥ ए० ॥ ९ ॥ एम चिंती निज धाम, गयो मन सुख करी रे के ॥ ग० ॥ नृप निमित्तक मृत्यु, वात ए विस्तरी रे के ॥ वा० ॥ हाहाकार अपार, थयो ते नयरमां रे के ॥ थ० ॥ त्रण छपारे ताम, जयादिक पयरमां रे के ॥ ज० ॥ १० ॥ चारे चार कषाय, करे अति दुर्गमा रे के ॥ करे० ॥ आवी नगरमां ताम, करे कही संभ्रमा रे के ॥ क० ॥ सचिव प्रमुख पुरलोक, थया सवि आकुला रे के ॥ थ० ॥ राजवरग सुख, निमर्गथी व्याकुला रे ॥ नि० ॥ ११ ॥ शोकाकुल सवि लोक, थोक थोके मिल्या रे के ॥ थो० ॥ न होय कामनो मेल, जेम नाश ने धाकुला रे के ॥ जे० ॥ किहां हाहारव धुंव, रुदित किहां पीटणां रे के ॥ ८० ॥ किहां नहि गान ने तान, न चंदन छांटणां रे के ॥ न० ॥ १२ ॥ देखी एणी परे नयर, निमित्तिक तव कहे रे के ॥ नि० ॥ स्वामी तुम व्रते लोक, कहे एम निर्वहे रे के ॥ क० ॥ हणीयुं पुर ए गर्व, लूंटारा ए लूंटशे रे ॥ लूं० ॥ भांडागार अपार, क्षणेकमां लूटशे रे के ॥ ह० ॥ १३ ॥ निसुणी ए योगी वयण, राजा तव धसमस्यो रे के ॥ रा० ॥ अंगरक्षकने तेमीया, जाणी चित्त हस्यो रे ॥ जा० ॥ जीवंतो निज स्वामी, जाणी भट धाइया रे के ॥ जा० ॥ मूर्च्छागत जिम जंतु, फरी जीवित पाइया रे के ॥ फ० ॥ १४ ॥ थइ सबल सुपक्ष, करे रण नमिया रे के ॥ क० ॥ काष्ठ पंजरमां चार, जयादिक खेपीया रे के ॥ ज० ॥ जेम संजलण कषाय, दहे ध्यान पंजरे रे के ॥ द० ॥ मुनिवर आप स्वरूप, लहीने संचरे रे के ॥ ल० ॥ १५ ॥ शिर परे चामर छत्र, सुशोभित नृप थइ रे के ॥ सु० ॥ नैमित्तिक युत तखत, बेठा ते गह- गही रे के ॥ बे० ॥ सुख पाम्या सवि लोक, गइ शोक आपदा रे के ॥ गइ० ॥ घर घर मंगल माल, थइ

सुखसंपदा रे के ॥ थइ० ॥ १६ ॥ कंचन कोमि रतन,यतन करी दीये रे के ॥ य० ॥ पण नैमित्तिक तेह, लेश पण नवि लीये रे के ॥ ले० ॥ कही मुख एवी वाणी, कार्य थया पछी रे के ॥ का० ॥ लेशे सुणो महाराज, नथी अमो लालची रे के ॥ न० ॥ १७ ॥ करी उपकारने इहे, तस उपगारडो रे के ॥ त० ॥ ते तो न संत कहाय, होय लोजी जडो रे के ॥ हो० ॥ वली लइ योगना दंज, होये जो लोजीयो रे के ॥ हो० ॥ ते तो धर्म पिशाच, मोहादिके थोजीयो रे के ॥ मो० ॥ १८ ॥ वली एहवी लौकिक नीति जे, प्रीति होये घणी रे के ॥ प्री० ॥ तस धन केरी आश ते, परनी नवि गणी रे के ॥ प० ॥ लेयण देयण रीति ए, प्रीति कारमी रे के ॥ प्री० ॥ नूपति एहवी वात, अम्होने नवि गमी रे के ॥ अ० ॥ १ए ॥ तव कहे नूपति निमित्तक, ए साचुं कह्युं रे क ॥ ए० ॥ पण में तुमथी जीवित, विहुं वारे लह्युं रे के ॥ वि० ॥ अर्ध राज्य लीयो स्वामि, अनृण मुजने करो रे के ॥ अ० ॥ तुम्हो गे मोहोटा संत, ए विनति चित्त धरो रे के ॥ ए० ॥ २० ॥ वारंवार कहे नृप, लीये नवि योगीयो रे के ॥ ली० ॥ परउपकारी शिरोमणि, सुकृतनो जोगीयो रे के ॥ सु० ॥ एम करतां दिन सात, वोल्या हुवे जेटले रे के ॥ वो० ॥ करजी सैन्य राजा द्वारे आवीयुं, सुणीयुं तेटले रे के ॥ सु० ॥ बुद्धिसागर परधान, दौवारिके विनव्यो रे के ॥ दौ० ॥ २१ ॥ नृप तणो आदेश, लही मांहे श्व्यो रे के ॥ लही० ॥ गुप्तवेष ते कुमर, देखी मन हरखीयो रे के ॥ दे० ॥ बुद्धिसागर ए मंत्री, आपनो परखीयो रे के ॥ आ० ॥ २२ ॥

॥ ढाल ॥

नदी यमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥

॥ राजा पूछे ताम, किहांथी आवीया ॥ मूकी आगल पत्रने, आप जणावीया ॥ तुम्ह नंदन श्रीचंद, नरेशनो हुं अछुं ॥ बुद्धिसागर नाम, मंत्रि तेहने बहु रुचुं ॥ २३ ॥ सूर्यवती पुत्रवंती, कुशल खेमे अछे ॥ नृप अछे श्रीचंद्र, ते गुणचंद्र युक्त छे ॥ जयवंतुं तस राज्य, प्रवर्त्ते छे घणुं ॥ शोजानो समुदाय, कहो केतो नणुं ॥ २४ ॥ कनकपुर छे एक, श्रीचंद्र राजा तणुं ॥ तिहां छे लखमण मंत्रि, लीयुं तस जामणुं ॥ तेहने मलीने आज, आव्यो हुं तुम पदे ॥ विग्रह छे तेणे नयर, उदंत ते सवि वदे ॥ २५ ॥ श्रीचंद्र गुणचंद्र होय, पाणिग्रहण करे ॥ बे कन्या श्रीचंद्रने, गुणचंद्र एक वरे ॥ एणी परे सघली वात,

आणावी मादरे ॥ सीजी जाणे तिगाम, मुणी मनमां गहे ॥ २६ ॥ सेन पाणीने गाम, दीधे मझुने फरे ॥ सेन प्रधान सेनापति, मझुद शिर धरे ॥ माणी पुत्रनी भाति, सुणी आनंदिया ॥ पहूते मोहना सहितह, प्रमुख ते वंदिया ॥ २७ ॥ नमिजीने ते नरित्र, पवित्र कलां घणां ॥ दीधां तिहां बहु दान, नहीं काइ मणा ॥ पुत्र प्रियानी शुद्धि, लही उत्सव करे ॥ नगरमांहे आनंद, मनावन विस्तरे ॥ २८ ॥ नेह धर्म-जय नाम, श्रीचंद्रनो सारथी ॥ तेहने मेत्री एम, कहे पाणु प्रारथी ॥ चंद्रकलाने आणवी, गिरिकाना घर थकी ॥ श्रीगिरि नयर तेह, थायेगी गुणथी ॥ २९ ॥ तिणुणी एम आदेश, धनंजय चालीयो ॥ तिहां जइ कीध आदेश, तेणे गति चालीयो ॥ चंद्रकला परिवार, सहित आणी तिहां ॥ श्रीगिरि वासु सुंदर, मनोहर ते तिहां ॥ ३० ॥ पहुवाणादि विनोद, थयो ते नाटकथी ॥ जय कल्याणविध हुली, आसन थंत आमदनो ॥ आयोरण समुदाय, ते सूर उमाकीया ॥ गज पर ढाटना पाट, सवे उपाकीया ॥ ३१ ॥ करे मदना गुजगार, कपाट ते भंजीया ॥ जला जला शूर सुभट, ते तेणे गंजीया ॥ सुंदारन आगार, जिम्यो जेह सिंधुनो ॥ तिणुणी धीरे नृप, कहे ए सिंधुर बंधनो ॥ ३२ ॥ पर उपर चढी राय, जणे गजने ग्रहो ॥ अंकुश तोमर आदि जे, शस्त्र धरी रहो ॥ एम सुभटने एम, पर कोइ नाग मुणे ॥ जाणा न होवे समर्थ, रहे नहीं को मुणे ॥ ३३ ॥ रथ तुरग नर नारी, पशु पेखे जिसे ॥ होवे सन्मुख होइ, ते तेली गति नते ॥ तेम मंदर मथाण, मथ्यो दरीयो हरी ॥ तेणी परे मथियुं नहेर, कहेर करे करी ॥ ३४ ॥ राजद्वारे आव्यो, कुंअर मद नरो ॥ नृप परिवारे जीवित, संशय चित धर्यो ॥ पहुचे ते आपभूल, गयो गज अतिके ॥ सा सा पारे नृप, ए गज ते अतिके ॥ ३५ ॥ गजशिक्षानो दक्ष, पोताने चीतरे ॥ पशु देखतां तुरत, करी ते वश करे ॥ एको गजने खंभ, ते बंधी मुणे ग्रही ॥ ज्ञानविमल मति तेहनी, जीते ते सही ॥ ३६ ॥ सर्व गाथा ॥ २४४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गज उच्छरीयो तेहने, पालन काज तुरत ॥ पण ते थिर थइने रह्यो, यद्यपि ते उन्मत्त ॥ १ ॥ कल पदथी पुर बाहिरे, काढ्यो ते गजराज ॥ नर उन्मूले खोकने, धीवरराये करी गाज ॥ २ ॥ एहवो महा अटवी मध्ये, त्रण दिवस थया जाम ॥ निर्भद थइ गिरि गहिपे, आव्यो तिहां उदाम ॥ ३ ॥ सरोवर सोहोंडे

देखीनुं, नर य प्रमरनां धाम ॥ उतरीयो गजरकंपथी, श्रीचंद्र परी उछाग ॥ ४ ॥ नाइ जल पीये गडी, धरी स्वानाविक वेश ॥ नाने गज घोडावीयो, पदयी चढ्यो सम्यो वेष ॥ ५ ॥ हवे राजा निज वड धइ, पाछल आवे जाम ॥ गर्थ जोयो पटे मली, नवि दाधुं तस नाम ॥ ६ ॥ परजाते नृपने कह्युं, किहांय न लाधी शुद्धि ॥ राजा मनमां दुःख धरे, संजारी तस बुद्धि ॥ ७ ॥ गजरत्न गयुं ते दुःख नथी, वली चित्ते नहीं खेद ॥ पण हानी उपगारीयो, नर गयो ते बहु खेद ॥ ८ ॥ त्रण वार जीवित दीयुं, कह्यो नगर उपगार ॥ में कांइ विनय न साचव्यो, धिक् म्हारो जमवार ॥ ९ ॥ निर्गोजीने से होये, उपगारे करी मान ॥ जाव जीव लगे तेहनो, विनय करीजे जाम ॥ १० ॥ एम राजा स्तवना करे, निंदे अविनय आप ॥ चिंतामणि गयो हाथथी, वेग टखे सवल संताप ॥ ११ ॥ ए दुःख केहने दाखीये, पश्चात्ताप विलाप ॥ करतो धरतो तस गुणा, चित्तमां ध्यावे जाप ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ ३५६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ कंकणनी देशी ॥

॥ आवटके कंकण लीयो रे नणदी कंकणनुं नहीं मूल ॥

॥ कंकण मोल लीयो ॥ ए देशी ॥

हवे गज खंधे ते चढ्यो रे ॥ राउजी ॥ जाय रे वनमां जाम ॥ गजने वश कीयो ॥ तिहां पल्लीपति आवीयो रे ॥ रा० ॥ शबर मह्या उद्दाम ॥ गज० ॥ १ ॥ तेहवो कुमर तेहवो करी रे ॥ रा० ॥ निरखी अद्भुत वेश ॥ ग० ॥ ते हाथी लेवा जणी रे ॥ रा० ॥ शबर आव्यो ते देश ॥ ग० ॥ २ ॥ हकारी जाये किहां रे ॥ रा० ॥ मूकीये सिंधु रतन्न ॥ ग० ॥ बाण वरसे ते जिल्लमा रे ॥ रा० ॥ करता अतिहि प्रयत्न ॥ ग० ॥ ३ ॥ देखी कुमर गाभो थयो रे ॥ रा० ॥ वंचे तेहनां बाण ॥ ग० ॥ संज्ञा करी गजराजने रे ॥ रा० ॥ गज त्रे चतुर सुजाण ॥ गजने लारि लीयो ॥ ४ ॥ तरु उन्मूखी शाखा ग्रही रे ॥ रा० ॥ खेड उपखना खंभ ॥ ग० ॥ नाखे तट परे जिल्लडा रे ॥ रा० ॥ ताड्या तेह प्रचंड ॥ ग० ॥ आपे रह्यो अखंड ॥ ग० ॥ शबर शस्त्र रात खंड ॥ ग० ॥ ५ ॥ एकले आप बले बली रे ॥ रा० ॥ जीत्या मयगल जिम ॥ ग० ॥ हरि आगल जिम

॥ गा० ॥ ६ ॥ निमांटी गवि दीयता रे ॥ रा० ॥ कहो तेहनूं ...
जंगुका रे ॥ रा० ॥ नाठा मेली भीत ॥ गा० ॥ ६ ॥ तिवांटी नवि दीयता रे ॥ गा० ॥
॥ गा० ॥ जोने नासि गंजाणुं रे ॥ रा० ॥ जयरीयो आवी धाय ॥ गा० ॥ ७ ॥ कोणे अमाग निडगा रे ॥
रा० ॥ जीत्या लीलामांहि ॥ गा० ॥ ते देखीने गेहच्यो रे ॥ रा० ॥ धरती एम मनमांहि ॥ गा० ॥ ८ ॥ एहवे
निडपति सुता रे ॥ रा० ॥ मोहनी नामे जेह ॥ गा० ॥ देखी मोही कहे तातने रे ॥ रा० ॥ आ नवे पति
मुज एह ॥ गा० ॥ ए ॥ अवर धणी इच्छुं नहीं रे ॥ गा० ॥ ते सुणी तेहनो तात ॥ गा० ॥ आवी कुमरने पग
नमी रे ॥ रा० ॥ कर जोडी कहे वात ॥ गा० ॥ १० ॥ तुम्हे मोहोटा छो नृपति रे ॥ गा० ॥ खमजो अम अपराध
॥ गा० ॥ तुम्हने वरे ए मुज सुता रे ॥ गा० ॥ अंगीकरो निराबाध रे ॥ गा० ॥ ११ ॥ नृप कहे निडराजीया रे
॥ रा० ॥ गुण एक वयण ए वाण ॥ गा० ॥ हुं क्षत्रिय तुम्हे निडगा रे ॥ रा० ॥ किहां मरकत ने काच ॥ गा०
॥ १२ ॥ राजकन्याने सूकीने रे ॥ रा० ॥ केम परणीश हुं एह ॥ गा० ॥ एह विचार करंतडां रे ॥ रा० ॥
पुत्र होये कहीयनुं गेह ॥ गा० ॥ १३ ॥ मोहिनी तव पडघुं कहे रे ॥ रा० ॥ तुमे कह्युं ते गर्व प्रमाण ॥ गा०
॥ पन्न गुरुरायने गडे रे ॥ रा० ॥ ते आणो गुणग्याण ॥ गा० ॥ १४ ॥ श्रीचंद्रे तव आपीयुं रे ॥ रा० ॥ पन्न
पोतानुं नाम ॥ गा० ॥ तव पादुका हृदये धरी रे ॥ रा० ॥ पूरीश मननी आश ॥ गा० ॥ १५ ॥ तुम्ह घर बाहेर
निर्भयपणे रे ॥ रा० ॥ किहां रही करे वलि काम ॥ गा० ॥ चिंकरी हुं अहने रहुं रे ॥ रा० ॥ एम राखीश
मन ठाम ॥ गा० ॥ १६ ॥ जो एम विनति न मानशो रे ॥ रा० ॥ तो करुं अग्निप्रवेश ॥ गा० ॥ मोहनीनां
एम वयणडां रे ॥ रा० ॥ सुणीने धर्यो नेह लेश ॥ गा० ॥ १७ ॥ निज पादुका आपी तिणे रे ॥ रा० ॥
निडु करे विवाह ॥ गा० ॥ ए अर्थे जे मेळव्युं रे ॥ रा० ॥ जे धन ते मेल्हो नाह ॥ गा० ॥ १८ ॥ गज रथ
अश्व ने पायका रे ॥ रा० ॥ रत्न मौक्तिक पटकूल ॥ गा० ॥ आणी आगळे छोड्यां रे ॥ रा० ॥ कुमर कह्यो
अनुकूल ॥ गा० ॥ १९ ॥ तिहां सुवेग रथ तुरंगशुं रे ॥ रा० ॥ देखी हरख्यो चित्त ॥ गा० ॥ ते दृय प्रठु
देखी करी रे ॥ गा० ॥ हरख्या निर्धन जेम वित्त ॥ गा० ॥ २० ॥ प्रणाम करे प्रेमशुं रे ॥ रा० ॥ करज्या
आप करेण ॥ गा० ॥ अंगीकरया रथ तुरगने रे ॥ रा० ॥ संप्रति गयुं अयेण ॥ रा० ॥ २१ ॥ पूछे ए
निडाथी छता रे ॥ रा० ॥ ए तो अद्भुत वात ॥ गा० ॥ निडु कहे ए मांनजो रे ॥ रा० ॥ ए पाछी जे जग वि-
ख्यात ॥ गा० ॥ २२ ॥ कुंडलपुर पद्मिनी वसे रे ॥ रा० ॥ तेहना तुं अम्हे निडु ॥ गा० ॥ चोर तणी आजी-

। रा० ॥ धाड करुं करी लीह ॥ ग० ॥ २३ ॥ एक दिन मार्गे जायतां रे ॥ रा० ॥ गायन केरां वृंद ॥ ग० ॥ ते पासे रथ ए हतो रे ॥ रा० ॥ हय संयुत राजेंद्र ॥ ग० ॥ २४ ॥ ते गायन नाशी गया रे ॥ रा० ॥ रथ आव्यो अम्ह पास ॥ ग० ॥ ते दिनथी हय दुबला रे ॥ रा० ॥ दुःखीया मूके निःश्वास ॥ ग० ॥ २५ ॥ अहोरात्रि नयणे झरे रे ॥ रा० ॥ नीर तणा परवाह ॥ ग० ॥ ए सवि मोहनीना अछे रे ॥ रा० ॥ द्रव्य ने सुजट अथाह ॥ ग० ॥ २६ ॥ में सवि ए कह्युं अछे रे ॥ रा० ॥ करमोचनने काज ॥ रा० ॥ पण ए हय केम दुःखीया रे ॥ रा० ॥ ते कहो अम्हने राज ॥ ग० ॥ ॥ २७ ॥ कहे कुमर शबरेशने रे ॥ रा० ॥ ए माहारे हुती आथ ॥ ग० ॥ वायुवेग महावेग ए रे ॥ रा० ॥ सुवेग नामे रथ साथ ॥ ग० ॥ २८ ॥ हमणां पण ए लेइशे रे ॥ रा० ॥ जेम ए सुखीया थाय ॥ ग० ॥ वीजुं तो पाछल जाणशे रे ॥ रा० ॥ एम जाखे नरराय ॥ ग० ॥ २९ ॥ वली ए सुजटमांहि अछे रे ॥ रा० ॥ क्षत्रिय जयकुंजर नाम ॥ ग० ॥ तेहने तिहां सारथि कह्यो रे ॥ रा० ॥ हाथीने जलावे ताम ॥ ग० ॥ ३० ॥ कहे पहने लेइ थापजो रे ॥ रा० ॥ कुशस्थलने देश ॥ ग० ॥ अथवा वली कुंडलपुरे रे ॥ रा० ॥ थापजो कही संदेश ॥ ग० ॥ ३१ ॥ संप्रति माहरे जायवुं रे ॥ रा० ॥ कनकपुरे छे काम ॥ ग० ॥ मुझनाम जणावीयुं रे ॥ रा० ॥ ज्ञानविमल गुणधाम ॥ ग० ॥ ३२ ॥ सर्व गाथा ॥ ३०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हितशिक्षा तेहने, हित जाणी कहे सार ॥ उत्तम संगति गुण करे, लहीए शुज आचार ॥ १ ॥ केताएक नर एहवा, स्वारथना सवि यार ॥ पण उत्तम निस्वारथे, करता छे उपकार ॥ २ ॥ धर्म समान न को अछे, हितकारी जगमांह ॥ जवसमुद्र तरवा जणी, धर्म ते पोत अथाह ॥ ३ ॥ मानव जव पामी करी, नवि जाणे जे धर्म ॥ ते दुःखीया जव जव रुले, नवि पामे शिवशर्म ॥ ४ ॥ पापमूल हिंसा अछे, ते तजतां सुख थाय ॥ हिंसा नरक दुःखदायिनी, हिंसा जव दुःख दाय ॥ ५ ॥ सर्व गाथा ॥ ३११ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ हिंसा मूल अछे आरंज, आरंजे वाधे बहु दंज ॥ परप्राणी निज परे देखीए, तो संसारने उवेखीए

॥ १ ॥ तेहमां पढी भक्त दर्श विशेष, जाणी आरंभ कीजे लेश ॥ धारीजे जिननां कल्याण, वळी पंच पर्व तणां अहिठाण ॥ २ ॥ यदुक्तं ॥ श्राद्धदिनकृत्ये ॥ जाई निहीमा मज्झो, कालिदि अञ्ञयागरो ॥ किंवा कल्लाणगे अत्ता, जोगनाहाण संनियं ॥ १ ॥ सिद्धांतेप्युक्तमस्ति ॥ अट्ठमी चउदसी पुणिमाय, तह अमावासा हवइ पर्व, ॥ मासंमि पव्वछक्कं, तिन्निय पव्वाइं पक्खंमि ॥ १ ॥ बीया दुविहे धम्मे, पंचमी पंचणाणणाणंदं ॥ अट्ठमी अट्ठकम्म महणी, चउदसी चउद्द पुव्वाइं ॥ २ ॥ विष्णुपुराणे ॥ चतुर्दश्यष्टमी चैव, अमावास्या च पूर्णिमा ॥ पर्वाण्येतानि राजेंद्र, रविसंक्रांतिरेव च ॥ १ ॥ तैलस्त्रीमांससंभोगी पर्वस्वेतेषु यः पुमान् ॥ विण्मूत्रभोजनं नाम, प्रयाति नरकं मृतः ॥ २ ॥ ए बे श्लोकना अर्थरूप चोपाइ ॥ तेमां दरेक चोपाइ पूरी थइने जे अंक आवे, ते अंक चोपाइनी संख्याना जाणवा, तथा ते पछीना जे करेला अंको छे ते श्लोकनो अर्थ ज्यां पूरो थाय तेना जाणवा. ॥ विष्णु पुराणे पण जाणीयां, पर्व चार पढीज दाखीयां ॥ जिण दिवसे सूरज संक्रमे, तिण दिन हिंसाथी ते नरके जमे ॥ ३ ॥ १ ॥ पर्वदिने तेल मांस स्त्रीजोग, जेह करे ते दुर्जन लोक ॥ तस भोजन विट् मूत्र समान, नरके जाये तेह निदान ॥ ४ ॥ यदुक्तं महाभारते ॥ घातकश्चानुमंता च, भक्षकः क्रयविक्रयी ॥ लिप्यंते प्राणिघातेन, पंचाप्येते युधिष्ठिर ॥ ३ ॥ यावंति पशुरोमाणि, पशुगात्रेषु भारत ॥ तावद्वर्षसहस्राणि, पच्यंते पशुघातकाः ॥ ४ ॥ श्लोकार्थस्य चोपाइ ॥ महाभारत मांहे हिंसा तणी, गयखे लिप्यते तिणेराज भणी ॥ घातक आज्ञादायक वळी, अनुमंता ने भक्षक भणी ॥ ५ ॥ क्रयविक्रयना कारक जेह, ए पापतणा घातक तेह ॥ हिंसाने पापे पचाय, नरकमांहे सुण युधिष्ठिर राय ॥ ६ ॥ ३ ॥ जेटला पशुतनुए रोमराय, तेटला हजार वरस समुदाय ॥ पशुघातक ते नरके जाय, तेहमांहे ते दुःखे पचाय ॥ ७ ॥ ४ ॥ मनुस्मृतिमां ए कहियां सर्व, हिंसा टाळो इहां करे गर्व ॥ ब्रह्मचारी एह वागरे होय, ते द्विज ब्रह्म लहे हित होय ॥ ८ ॥ उक्तं च ॥ महाभारते शांतिपर्वणि ॥ यूपं छित्वा पशून् हत्वा, कृत्वा रुधिरकर्दमं ॥ यद्येवं गम्यते स्वर्गे, नरके केन गम्यते ॥ ५ ॥ मार्कंडेयपुराणे ॥ जीवानां रक्षणं श्रेष्ठं, जीवा जीवितकांक्षिणः ॥ तस्मात् समस्तदानेभ्यो, ऽभयदानं प्रशस्यते ॥ ६ ॥ तत्रैव मार्कंडेयपुराणे ॥ पुष्पाण्युक्तान्यष्टौ ॥ अहिंसा प्रथमं पुष्पं, पुष्पमिंद्रियनिग्रहः ॥ सर्वभूतदयापुष्पं, क्षमापुष्पं विशेषतः ॥ ७ ॥ ध्यानपुष्पं तपःपुष्पं ज्ञानपुष्पं तु सप्तमं ॥ सत्यं चैवाष्टमं पुष्पं, तेन तुष्यंति देवताः ॥ ८ ॥ यदुक्तं महाभारते ॥ मूकांधकुष्ठपंगादन्, ये सदा ज्ञानिनस्तथा ॥

पुत्र्य रर्स्ति, ते नराः स्वर्गगामिनः ॥ ९ ॥ आतपार्दा च ये प्रंति, ते वै नरकगामिनः ॥ जीयानां सर्वथा कार्या, रक्षा धर्मपरायिणा ॥१०॥ यदुक्तं ॥ विंशत्यंगुलमानं तु, त्रिंशदंगुलमायतौ ॥ तद्वस्त्रं द्विगुणीकृत्य, गालयित्वा पिबेज्जलं ॥ ११ ॥ तस्मिन्वस्त्रस्थितान् जीयान्, स्थापयेज्जलमध्यतः ॥ एवं कृत्वा पिबेत्तोयं, गायति परमां गतिं ॥१२॥ दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं, वस्त्रपूतं पिबेज्जलं ॥सत्यपूतं वदेद्वाक्यं, मनःपूतं समाचरेत् ॥१३॥ सप्तग्रामेण यत्पापं, अग्निना भस्मसात्कृतं ॥ तत्पापं जायते तस्य, मधुबिंदुप्रभक्षणात ॥१४॥ विष्णुपुराणे ॥यतः॥ ग्रामाणां शतके दग्धे, यत्पापं जायते किल । तत्पापं जायते पार्थ, जलस्यागलिते सति ॥ १५ ॥ संवत्सरेण यत्पापं, कैवर्त्तस्येव जायते ॥ एकाहे न तदाप्नोति, अपूतजलसंग्रही ॥ १६ ॥ यः कुर्यात्सर्वकर्माणि, वस्त्रपूतेन वारिणा ॥ स मुनिः स महासाधुः, स योगी स महाव्रतः ॥१७॥ यदुक्तमितिहासपुराणे ॥ अहिंसा परमं ध्यानं, अहिंसा परमं तपः ॥ अहिंसा परमं ज्ञानं, अहिंसा परमं सुखं ॥ १८ ॥ अहिंसा परमं दानं, अहिंसा परमो दमः ॥ अहिंसा परमो यज्ञो, अहिंसा परमं शुभं ॥ १९ ॥ तमेव ह्युत्तमं धर्मं, अहिंसा धर्मलक्षणं ॥ ये चरंति महात्मानो, विष्णुलोकं व्रजंति ते ॥ २० ॥ यदुक्तं कूर्मपुराणे ॥ नगपक्षग्रंथे ॥ अजक्ष्याणि ह्यजक्ष्याणि, कंदमूलं विशेषतः ॥ नूतनोदयपत्राणि, वर्जनीयानि सर्वतः ॥ २१ ॥ मद्यपाने मतिभ्रंशो, नराणां जायते खलु ॥ न धर्मो न दया तेषां, न ध्यानं न च सत्क्रिया ॥ २२ ॥ मद्यपाने कृते क्रोधो, माने लोजश्च जायते ॥ मोहश्च मत्सरश्चैव, दुष्टभाषणमेव च ॥ २३ ॥ वारुणीपानतो यांति, कीर्त्तिकांतिमतिश्रियः ॥ विचित्रा चित्ररचना, वांछंति कज्जलादिव ॥ २४ ॥ नृतासंवसरीनर्त्ति, रारटीति शशोकवत् ॥ दाहज्वरार्त्तवद्भूमौ, सुरापो लोलुठीति च ॥ २५ ॥ इत्यादियोगग्रंथे ॥ मद्यं पीत्वा ततः कश्चित्, मांसं च स्पृहयेन्नरः ॥ कश्चिद्वधं करोत्युक्त, जंतुसंघातघातकः ॥ २६ ॥ मद्ये मांसे मधुनि, नवनीते तक्रतो बहिः ॥ उत्पद्यंते विपद्यंते, सुसूक्ष्मा जंतुराशयः ॥ २७ ॥ पुत्रमांसं वरं भुक्तं, न तु मूलकभक्षणं ॥ भक्षणान्नरकं याति, वर्जनात्स्वर्गमाप्नुयात् ॥ २८ ॥ आगमेप्येवमेव ॥ मक्षिमिव मसंमिव, एतनीयंमि चउप्पय ॥ उपक्कंति असंखेया, तवन्नातन्न जंतुणो ॥ २९ ॥ मार्कंडेयपुराणे ॥ यतः ॥ यो ददाति मधु श्राद्धे, मादनो धर्मलिप्सया ॥ स याति नरकं घोरं, स्वादकैः सह लंपटः ॥ ३० ॥ तथैव इतिहासपुराणे ॥ यस्तु वृंताककालिंग, मूलकानां च भक्षकः ॥ अंतकाले स मूढात्मा न स्मरिष्यति मां प्रिये ॥ ३१ ॥ यस्मिन् गृहे

गदस्याधी, मूत्रकं पश्यते जनैः ॥ श्मशानतुल्यं तद्वेश्म, पितृभिः परिवर्जितं ॥ २२ ॥ पद्मपुराणे ॥ यतः ॥
मौनं मासमध्ये तु, मुक्तादिकं तथैव च ॥ नश्यमाणं जयेष्वन्नं, मांसतुल्यं युधिष्ठिर ॥ २३ ॥ मनुर्षः ॥ अस्तंगते
दिवानाथे, आपो रुधिरमुच्यते ॥ अन्नं मांससमं प्रोक्तं, मार्कंडेन महर्षिणा ॥ २४ ॥ चत्वारो नरकद्वाराः, प्रथमं
रात्रिभोजनं ॥ परस्त्रीगमनं चैव, संधानानंतकायकः ॥ २५ ॥ ह्यनानिपत्रगंकोच, धंदरोभिरया गतः ॥ न कु-
र्वंति तथा रात्रौ, भोजनं तु विशेषतः ॥ २६ ॥ अथाऽभक्ष्यनामानि ॥ गाथा ॥ महु मज्जं मंसं णवणिय, पंचु
बरी रयणीभुत्त संधाणं ॥ विस हिम करगा मट्टी, कच्चगोरस विदल संभाइ ॥२७॥ पुल्फिय चोली कणगो, अणाय
फलाफुल वुच्छ बहुबीइ ॥ इय बावीस अभक्खे, पच्चक्खियरस पणाफले ॥ ३० ॥ पंगोट विद्रविकाउ, मरीगण
कणग गुंदाइ ॥ गणपणवितु मेवर, गंगेरुय पकगोल्हेय ॥ ३९ ॥ पाण मठर कुठंबइ, जंबु टिंबरु अपक्करस
जंटे ॥ पाडहोडिमउय पामणी, गुरुपेढारे नुलूणतिले ॥ ४० ॥ नविलेसिचधारे, जलगलिय मगलयाभित चमूरे
॥ कुदिणुदवृरियरागुण, उधंत पगिनेय तिले ॥ ४१ ॥ अमविमियं मन्न यं, नहु नुंजे कालवेलइ दह्या ॥
गममणो न हु नस्से, देव गुरुदिठि गयने य ॥ ४२ ॥ अथानंतकाय गाथा ॥ सव्वाउ कंदजाइ, सुरणकंदो य
वज्जकंदो य ॥ आलू तह पिंडालु, अव हरिद्दाळ कच्चूरो ॥ ४३ ॥ सतावरी विराली, कुमारी तह थोहरी
गलोइया ॥ विसलसुणं वंस करिल्ला, गज्जर तह लोयणं लोढा ॥ ४४ ॥ गूयर सूयरवल्ली, मजमा रुक
विष्णुलाय नमिकल्ला ॥ महयकोमल पिंली, पढाति आणंताई ॥ ४५ ॥ नाथं मातर्हिशालीनां, नाशनं स्मृतिनो-
दितं ॥ प्रातरादोजनं कुर्यां, दग्निहोत्रमोविधिः ॥ पृथिव्यामप्यहं पार्थ, वायावग्नौ जलेऽप्यहं ॥ वनस्पति
गतश्चाहं, सर्वमात्मयं जगत् ॥ ४६ ॥ तस्मां सर्वगतं ज्ञात्वा, न हिंसेत कदाचन ॥ अहं सर्वस्य तुल्यत्वं, नजानि
कदपमोक्षिताः ॥ ४७ ॥ इति परमते श्लोका उक्ताः ॥

॥ चोपाइ ॥ शांतिपर्वमां पहेले पाद, हिंसा बोली महाविषाद ॥ प्राणीघाते जो धर्म ने स्वर्ग, तो अधर्मनो
कुण स्थानक मार्ग ॥९॥ यज्ञथंभ छपासी पशु हणी, रुधिर कर्दम करी नृमिका घणी ॥ एम कीधे जो स्वर्ग जाय,
तो नरकनी कोण उपाय ॥ १० ॥ ५ ॥ वली मार्कंडेय पुराणे कह्युं, सर्वोत्कृष्ट जीव रक्षण कह्युं ॥ सर्व जी-
वने जीवित व्हाल, मरण मागवी दुःख अपार ॥ ११ ॥ सर्व दानमां अभय प्रधान, जेहथी लहिए स्वर्गविमान
॥ मखरविरोध ते नाये नहि, एक अहिंसा उत्तम कही ॥ १२ ॥ ६ ॥ अष्ट पुष्पकी पोट्यां तिहां, प्रथम

थ . सा इंद्रिय दम जिहां ॥ संजूत दया ने क्षमा ॥ ७ ॥ ध्यान ज्ञान सत्य तप ते आगमा ॥ १३ ॥ एह फुल जे वरत सदा, तेहने अमर तुसे थइ मुदा ॥ ८ ॥ १४ ॥ वली महाजारते बोल्युं अडे, ते तो युधिष्ठिरने मन रुचे ॥ जू माकण लीख दंश ने मसा, जे तनुने पीडे जीव वस्या ॥१५॥ पुत्र पेरे ते पाले जेह, स्वर्गे जाये मानव तेह ॥ ए ॥ देइ आतप तस पीडा करे, ते प्राणी नरके संचरे ॥ १६ ॥ पाणी गलतां जयणा कही, उत्तर मीमांसामांहे लही ॥ १० ॥ विश अंगुल माने अने त्रीश, लांबुं पहोलुं गलणुं जगीश ॥ १७ ॥ पटवस्त्र ते बेवड करी, गले नीर जतनाये धरी ॥ संखारो जुजुउं धरो, खारां मीठां जेल मत करो ॥ १८ ॥ ११ ॥ जे जे जलनां होये ठाम, ते तेहमां मूकीये अजिराम ॥ जेवारे पीजे पाणी जलुं, ते तिवारे गलवुं निर्मलुं ॥ १ए ॥ १२ ॥ जूंये पग जोइ मूकीये, वस्त्रपूत जल पीवुं न चूकीये ॥ सत्यपूत वाणी बोलीये, मन पावन कारज खोलीये ॥ २० ॥ १३ ॥ मधुबिंदु न खाइए आप, एहना बोल्यां मोहोटां पाप ॥ सात गाम बाले जे होय, एक मधुबिंदु जक्षणे जोय ॥ २१ ॥ १४ ॥ अणगल घट पाणी वावरे, सात गाम ते ज्वालण करे ॥ तेह पापथी परजवे थाय, नारक कूतर बगल विलाय ॥ २२ ॥ १५ ॥ माछी वरस लगे मांडे जाल, पाडे मच्छ कच्छ सुकुमाल ॥ एक दिन अणगल नीरे पीध, एटलुं पाप बोल्युं परसिद्ध ॥ २३ ॥ १६ ॥ सर्व कार्य गल्या जलशुं करे, ते निश्चे स्वर्गे संचरे ॥ ते योगी मुनि साधु सुजाण, एहवुं बोल्युं विष्णु पुराण ॥ २४ ॥ १७ ॥ जीव अहिंसा परम ते ध्यान, परम तप उत्कृष्टुं दान, ज्ञान परमपद परम ते यज्ञ, जविप्राणी रहो तेहमां मग्न ॥२५॥ १ए ॥ जेह अहिंसा पाले धर्म, नवि बांधे ते वैरनुं कर्म ॥ जेह अहिंसाने आचरे, विष्णुलोकमां ते संचरे ॥ २६ ॥ २० ॥ वली अजक्ष्य जक्षवां नहीं किमे, अजक्ष जखंतो नरके जमे ॥ कंदमूलनां मोहोटां पाप, पार्थने कहे हरि आपो आप ॥ २७ ॥ २१ ॥ मद्यपी लोक अकारज करे, जलां काम ते नवि आचरे ॥ ज्ञान शौच तप बल ने बुद्धि, न रहे तेहनी कांही शुद्धि ॥ २८ ॥ २२ ॥ मतिभ्रंश थावे अति घणो, क्रोध मान मद मत्सर तणो ॥ मोह छुष्ट जापणता घणी ॥ न गणे नारी परनी आपणी ॥ २ए ॥ २३ ॥ कांति कीर्त्ति मति श्रीनो नाश, जिम चित्रामनो काजले नाश ॥ २४ ॥ जूत परे ते नाचे मुदा, आराट आक्रंद पाडे सदा ॥ ३० ॥ जे मद्यपीने मांसने मुणे, मांसाहारी परने हणे ॥ २५ ॥ अरे पार्थ हरि जाणे जे जन्न, ते मुजने न संजारे अधन्न ॥ ३१ ॥ २६ ॥ मद्य मांस मधु ने नवनीत, कन्हाद रुधिर पुट तक्र प्रतीत ॥ एहथी बाहेर जव नीसरे,

अनंत जंतु उपजे ने मरे ॥ ३२ ॥ २७ ॥ हिंसायकत मांस कहाय, मांस थकी धर्मथकी जाय ॥ दुःखागार कह्युं ते मांस, तेह जाणी न करो आशंस ॥ ३३ ॥ २८ ॥ २९ ॥ तिल सर्षप माने जहे जेह, निश्चे नरकगामी होय तेह ॥ यावत् चंद्र दिवाकर होय, तिहां लगे पाप न छूटे सोय ॥ ३४ ॥ वली इतिहास पुराणे कह्युं, हरिये ते ते पार्थे सदह्युं ॥ जे श्राद्ध मधुपिंड दीये, पिंतें धर्म तणी मति हीये ॥ ३५ ॥ ते त्यादकशुं नरगे जाय, सात वार वली अंत्यज मांय ॥ श्रावे व्यसन सघलां तेहने, मांससुरा नक्षण जेहने ॥ ३६ ॥ ३० ॥ वली शृंताक कालिंग मूलका, कंदमूंद तणा नक्षका ॥ अंतकाले सघळुं वेगलो, गौरीने कहे इश्वर गुणनिलो ॥ ३७ ॥ ३१ ॥ मूलो जेहने घरे पकाय, ते समशान सम घर कहेवाय ॥ पितर तेहथी अलगा रहे, एम मार्कंड ऋषीश्वर कहे ॥ ३८ ॥ पद्मपुराणे विदलना दोष, ते टाली करो पुण्यनो पोष ॥ गोरस काचा माष ने मुग, प्रमुख विदल जो नखे निस्सूग ॥ ३९ ॥ मांस समान ते थाये सही, पार्थ आगे हरिये वात कही ॥ ते जाणीने जो वर्जीए, तो नवि नव दुःखने तरजीए ॥ ४० ॥ ३३ ॥ रयणीजोजने लागे पाप, लहीए मोहोटा अति संताप ॥ ते मार्कंड पुराणे साख, पूज्र पार्थ हरि कहे मुख आप ॥ ४१ ॥ रवि अस्त पामे जिण समे, अन्न मांस जल रुधिर होय तिमे ॥ ३४ ॥ चार नरक केरां हे बार, रयणीजोजन ने परनार ॥ ४२ ॥ अथाणां जेहमां बहु काल जेहमां जीव सणी होये जाल ॥ पहुनां बोहयां हे बहु पाप ॥ तेह खावाना न करो व्याप ॥ ४३ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ हवे अनक्ष्यनां बोलुं नाम, अनंतकाय तिम वली निदान ॥ वड पीपल उंबरनां फलां, कतुंबर ने वली पीपरा ॥ ४४ ॥ मद्य मांस मधु माखण हीम, करला तुच्छ फलां विषनीम ॥ माटी सर्व राइनोयणां, बहुबीजां अने वली रींगणां ॥ ४५ ॥ अनंतकाय अथाणां लाग, चलित रस घोलवरां त्याग ॥ ३७ ॥ अजाण्यां फल फूल सवाद, जाणी नर न करे आस्वाद ॥ ४६ ॥ अनंतकाय बोहयां बत्रीश, न जखे तेह नर लहे जगीश ॥ ३८ ॥ वज्रकंद सूरणनो कंद, आई हलद्र विरहाली कंद ॥ ४७ ॥ आलु कचूरो ने कुंआर, लोढां लसण अने थोहार ॥ गिरिकर्णी ने वंश करेल, लूणी कंद सतावरी मेल ॥ ४८ ॥ आर्द मोथ आलु गाजरी, रतालु पिंडालु खरी ॥ मूला विरुहा अमृतवल्लि, लूणा तरुनी अंतरछालि ॥ ४९ ॥ थेग वथुलो सुरि आंबली, सिलोफा ने सूयर सली ॥ आलु ने कोमल सवि पत्र, गलो पल्यंक भूमिका छत्र ॥ ५० ॥ ए सघलाने जे परिहरे, ते निश्चे नवसायर तरे ॥ अदत्ता दान नवि लीजे सही, चोरी व्यसन नरक गति कही ॥ ५१ ॥ स्मृतिमां कह्या

छे सर्व निषेध, एहनो विवेक राखीजे वेध ॥ सांजे प्रभाते अति न करे शयन, मध्याह्ने पण तेहिज जतन ॥ ५२ ॥ मध्य टाळी जे भोजन करे, ते दिज अग्निहोत्र विधि परे ॥ ४७ ॥ मित्रद्रोह स्वामीनो द्रोह, तेम विश्वासघात संदोह ॥ ५३ ॥ कीधा गुणनो जे करे घात, तेहने नरक तणो उतपात ॥ गाम गाम छे जीवसमुदाय, व्यापक विष्णु छे सघळे गाय ॥ ५४ ॥ ते मारे दुहवाये हरि, एह वात स्मृतिमांहे खरी ॥ ते जाणीने करवी दया, जेम थइए ठाकुरनी मया ॥ ५५ ॥ अरे शबरेसर सुणो संघात, सोये वाते एकज वात ॥ जो एहनो विरमण कीजीए, ज्ञानविमल मति गुरुवच पीजीए ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम उपदेश देइ घणो, शबर कर्या अनुकूल ॥ धर्म तणे रस रंगिया, जेम पाशीत पटकूल ॥ १ ॥ चिंतामणि सम तुम तणो, दर्शन वचन विलास ॥ जडे पधार्या भाग्यथी, पोहोती अम्ह मन आश ॥ २ ॥ कहे कुशस्थल स्थानके, जाउं जेवारे वेग ॥ तिहारे ए कनी मुजट मुख, अंगी करशुं नेग ॥ ३ ॥ एम कही बहु शिक्षा देइ, लेइ मुवेग रथ ताम ॥ माथे कुंजर सारथी, चाल्या निज पुर गाम ॥ ४ ॥ वाटे संध्याने समे, कुंडलपुर उद्यान ॥ उद्याने रथ मूकी गया, नगरविलोकन काम ॥ ५ ॥ जोतां जोतां बाहिरे, यक्ष तणो छे ठाम ॥ तिहां अइ सूतो स्थिर मने, कुमर लेइ प्रभुनाम ॥ ६ ॥ एहवे आवी नृपसुता, सरस्वती इति नाम ॥ सामग्री विवाहनी, ते लेइ अभिराम ॥ ७ ॥ गुनामिका सुरूपिणी, बेहु सखी छे साथ ॥ सूतो देखीने कहे, उठ उठ प्राणनाथ ॥ ८ ॥ श्रीदत्त सुत मोहामणा, वरीए कनी सुजाण ॥ उठ्यो आळस छोडीने, कनी परणी तिण ठाण ॥ ९ ॥ जेहने माथे सुकृत छे, ते जाणो तिहां जाय ॥ करतल दीपकनी परे, लक्ष्मी होय सहाय ॥ १० ॥ यतः ॥ यद्यपि कृतसुकृतलवः प्रयाति गिरिकंदरांतरेषु नरः ॥ करकलितदीपकलिकां, विलोक्य लक्ष्मीस्तमनुयाति ॥ १ ॥

भावार्थः—जो सुकृतनो लेश पण करनारो प्राणी, गिरिगुफामां जाय छे तो त्यां पण तेना हस्तमां रहेली दीपकलिका समान रेखा जोइने लक्ष्मी तेनी पछवाडे जाय छे.

परणीने पाछां फरी, सुता थइ निश्चिंत ॥ ते पति प्रत्ये कहे एहवुं, सुण सुण वचन एकांत ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ ५०० ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ करेलणां घड देने ॥ ए देशी ॥

॥ प्रनो पाहिर करनी अने, चालो तेणे वेगी ॥ कोइक देशे जाइए, जिहां न लहे कोइ निवेश ॥ १ ॥ चचन अम्ह गुण से रे ॥ नहीं इहां रहेवा लाग, चिंतो एम महाजाग ॥ वच० ॥ ए आंकणी ॥ कहे कुमर गंप्रति अने, रयणी अंधारी घोर ॥ चाला पण न चली शकुं, शो एवमो करो शोर ॥ वच० ॥ २ ॥ करनी हांकी न जाणीये, एलो पंथ नीशूल ॥ जोकाव्यो कूके नहीं, ए गुल्लनो प्रतिकूल ॥ व० ॥ ३ ॥ यइ प्रनाते जाणशे, गनली हिशिनो मर्म ॥ नपत्रां माये आवशे, कीधां शुनाशुन कर्म ॥ व० ॥ ४ ॥ वचन गुणीने एहवुं, चिंते मनमां बाल ॥ जाण्यो इतो ते ए नहीं, ए कोइ अवर जंजाल ॥ व० ॥ ५ ॥ रत्नप्रदीपे जोइने, कहेवा लागी तेह ॥ चंदनालिस नालस्थले, कोण जो तुमो गुणगेह ॥ व० ॥ ६ ॥ कुशस्थलथी आवीयो, तुं अम्ह पाहिणिहार ॥ तुमो कोण जो किहांथी आवीया, शो नय ने कहो मार ॥ व० ॥ ७ ॥ एक नगरी कहे गांजलो, अरिमर्दन पुरराय ॥ सुता तेहनी ए चहणी, अर्था करे गदाय ॥ व० ॥ ८ ॥ एक दिन जनक छलंगमां, बेठी देखी आम ॥ मंत्रीने कहे ए गमो, वर जुउ पुरुष प्रधान ॥ व० ॥ ९ ॥ एहवे एक याचक तिहां, बोल्यो कही गुणग्राम ॥ कुशस्थल पुर राजीयो, प्रतापसिंह जस नाम ॥ व० ॥ १० ॥ तस सुत शेठ घरे वस्यो, श्री श्रीचंद्रकुमार ॥ दाता नोक्ता मालगी, गुणमणि रयण नंडार ॥ व० ॥ ११ ॥ गंप्रति रीमावी गयो, ते नररत्न अमूल ॥ ते सुणी नृप मौने रह्यो, पण मनमां अनुकूल ॥ व० ॥ १२ ॥ तेहवे रयणीये अन्यदा, यक्ष सुपनमां आवी ॥ कन्याने कहे एहवुं, चिंता कांइ न लावी ॥ व० ॥ १३ ॥ आज थकी दिन पांचमे, लमवेलाये जाणी ॥ वर आणीने मेलवुं, म करीश मनमां काणि ॥ व० ॥ १४ ॥ तेह स्वप्न अम्ह आगले, कह्युं एणे धरी प्रेम ॥ ते निगुणीने अम्हे कह्युं, ते गुणजो धरी खेम ॥ व० ॥ १५ ॥ एहज पुरमांहे मंत्रिनो, पुत्र अने श्रीदत्त ॥ ते कुमरीनो रागीयो, पण कुमरीने न चित्त ॥ व० ॥ १६ ॥ तेणे अम्हने लोभावीयां, लोने लक्षण जाय ॥ कूट बुद्धि करीने कह्युं, कुमरी आगल आय ॥ व० ॥ १७ ॥ श्रीदत्ते पण एहवुं, स्वप्न खरुं जे देव ॥ ते निगुणी कन्या कहे, पछवाणी थइ देव ॥ व० ॥ १८ ॥ ते पापी नाग्नी दयो, एम कही गयलो साज ॥ तिशे मेलीने आवीया, पण

नवि सीधुं काज ॥ वितथ सरयनगाज ॥ व० ॥१ए॥ कांइक संभ्रम जाणीने, राख्यो पिताये गेह ॥ आवणने दीधो नहीं, तस कर्मे दीधो बेह ॥ कपटनुं केतुं देह ॥ व० ॥ २० ॥ एम सुणी नृपसुता कहे, हुं वंची तुमने तेण ॥ ते अनिष्ट वर नवि थयो, वंची नवि कर्मेण ॥ व० ॥ २१ ॥ नाग्य अछे हजी माहरुं, तुम्हने दीधा यक्ष ॥ तुह्मीज वर मन मानीया, रूपे काम प्रत्यक्ष ॥ व० ॥ २२ ॥ पण आपण इहां रहेतां थकां, करशे पिता अनर्थ ॥ तेह नयथी किहांयक जाइए, सीझे आपणो अर्थ ॥ व० ॥ ॥ २३ ॥ ते निसुणी कुंवर कहे, ते पण मानव रूप ॥ हुं पण मानव रूप अछुं, शो नय करो मन नूप ॥ व० ॥ २४ ॥ जोइए ते कहेवो अछे, वल कहेवुं छे तास ॥ नावी होय ते निपजे, शुं होय नयथी नाश ॥ व० ॥ २५ ॥ थयुं प्रनात सजस्से करी, धोवे निज मुख जाम ॥ नानु परे नाल देखीने, हरखी कन्या थयुं मन ठाम ॥ व० ॥ २६ ॥ एहवे यक्ष अर्चक तिहां, आवी दीठुं सर्व ॥ तुरत जइ नूप वीनव्यो, चढीयो नृपतिने गर्व ॥ व० ॥ २७ ॥ नृप आदेशे आवीयो, चतुरंग बल तेणे ठाम ॥ ते देखी कंपे कनी, कहे पति कर मन ठाम ॥ व० ॥ २८ ॥ नडे मन वीये मती, ए वराक कुण मात ॥ शुं जाउं ए उपरे, ए नट कायर गात ॥ व० ॥ २ए ॥ पाठल मंत्री आवीयो, कहे रे कोण तुज स्थान ॥ न कहे कांइ नामादिके, गणे न किणने ज्ञान ॥ व० ॥ ३० ॥ हक्का करीने हांकीया, नाठा जंबुकिनाश ॥ एहवे नूपति आवीया, लेइ सैन्य प्रकाश ॥ व० ॥ ३१ ॥ कनी कहे ए तात छे, शुं करशे मुज एह ॥ न जाणीये ए नीति छे, कोणशुं कीधो नेह ॥ व० ॥ ३२ ॥ प्रियाने हर्ष करवा नणी, देखाडे निज नाम ॥ मुज्ञामांहे देखीने, हरखी परखी ताम ॥ व० ॥ ३३ ॥ रत्नसार लेइ करी, कांइक प्रियाने हाथ ॥ देइ अंजन करी वानरी, लीधी तेहनी आथ ॥ व० ॥ ३४ ॥ सखी ते साहामुं जोइ, केम जीतशे ए साथ ॥ जन सविने ठेकी गयो, साहामो थइ नूनाथ ॥ व० ॥ ३५ ॥ आगल ते पाठल करे, पाठल करे ते पास ॥ केइ हाथे केइ पायशुं, केइ नाखे निःसास ॥ व० ॥ ३६ ॥ मंथाणे दधिने मथे, तेम चमू दधि ताम ॥ नृपतिने आवी अड्यो, जाणे कोइ हरि उद्दाम ॥ व० ॥ ३७ ॥ आरोही गज उपरे, पाड्यो नृपने जोर ॥ लेइ खड्गने बांधीयो, करता यह्नु जन सोर ॥ व० ॥ ३८ ॥ नीसरीयो ते रण थकी, पसर्यो तस जसवाद ॥ ज्ञानविमल गुरु सान्निध्ये, हवे सघलो विखवाद ॥ व० ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे एक बंदी जने, देखणीयो श्रीचंद ॥ चोंके कर जंचा करी, जय जय तुं जेम इंद ॥ १ ॥ गाथामांहि गुण कहे, जेहनां सत्य चरित्र ॥ गुणीना गुण पढतां थकां, रसना होय पवित्र ॥ २ ॥ नत्वादि ॥ चोर सिद्धार्थ जेणं, बंचविया चाउपुत्त विरह दुहा ॥ वहिया निययिय गहिया, सो धीरो जयउ सिरिचंदो ॥ १ ॥ कुंडल-पुररस रज्जं, चंदमुहराय कनि परिणयणं ॥ जगरूवयणओ सिद्धिय, चंदपुर वासिये जेण ॥ २ ॥ सो कुंडलपुर अहिवइ, सिरिचंदो जयउ पयावसिंह सुयो ॥ संकुसउ जम्म नस्सा, जस्सो नत्तीइ पावनस्से ॥ ३ ॥ सुगडं जेणय महिंदणयरे, राय नणंगिजए ॥ दोहा ॥ इत्यादिक गुण कीर्त्तना, सुनीने दे बहुमान ॥ पूर्ण कृपा ते बंदीने, कुमर गमयनो जाण ॥ जड वनमां रथ थंभीने, वेगे गइया तेणीवार ॥ वान साम डीआ करे, अहो सुकृत भंडार ॥३॥ मचिंध बंधन छोडीयां, हवे अरिमर्दन राय ॥ बंदीथी श्रीचंद सुणी, आनंद अधिक न माय ॥४॥ धीर वीर मानी अहो, कन्यानो पति जाय ॥ तेमी थावे ते इहां, जेम सुजने गुण थाय ॥ ५ ॥ चोरमेर ते नीसर्या, तेमयाने चोखार ॥ पण किहां ए पाम्यो नहीं, जेम चातक सुख वारि ॥ ६ ॥ देगी पुत्री वातरी, झरती नयणे नीर ॥ सखी मुखथी मचि सांभळ्यां, नाम पराक्रम धीर ॥७॥ राजा तस गुणने सांभ, कहे वत्से म धरतुं दुःख ॥ गुनागुन कोशाल्यते, मूकी तुज करुं सुख ॥८॥ एम कहे जटने उचित दइ, आव्या नगर मझार ॥ विवाह उत्सव अधिकशुं, विस्तारशुं तेणीवार ॥ ९ ॥ सर्व गाथा ॥ ४५१ ॥

॥ ढाळ दशमी ॥

॥ हुंगलो नशो ॥ अथवा रामपुर बेंजी माहीए ॥ ए देशी ॥

॥ हवे तिण दिन जातां थकां, सुन शकुने हे श्रीचंद नरिंद तो ॥ कोड अटरी आरी घणे, घर बेठे हो निशि रहे आनंद तो ॥ १ ॥ पुण्यवंत सोभागीयो, सुखकारी हे ते जाग दीदार तो ॥ पग पग नवनिधि संपजे, नवि पामे हे ते दुःख लगार तो ॥ पु० ॥ ए आंकणी ॥ पंखो आप सुख गायरे, तिहां जागे हे कुंजर ते सहाय तो ॥ पछे ते सुतो सारथी, आप जागे हो करी गदा सज्झाय तो ॥ २ ॥ पु० ॥ एहवे मृदु मादल ध्वनि, सुणि उठ्यो हो ते दिशि उदेशा तो ॥ सुरत जणावीने चढ्यो, ते म्यरने हे थाती हृदि

देश मो ॥ ३ ॥ पु० ॥ आगल एक गिरिने वने, तेमांहे हे ठे यक्षनुं चैत्य तो ॥ मंडपद्वार दीधां अन्ने, मांहे नाचे हो श्रीचंद्रचरित्र तो ॥ ४ ॥ पु० ॥ ते निसुणी मन चिंतवे, ए अचरिज हो दीसे ठे कांइ तो ॥ गुण श्रीचंद्र कुण गायना, गुणगाने हे रह्यो घार छिपाय तो ॥ ५ ॥ पु० ॥ कपाटछिद्रे ते जुवे, तव देखे हे मदनसुंदरी त्यांहि तो ॥ कन्या आठ समेत ठे, हइए हरख्यो हे तप्यो पामी आह्लाद तो ॥ ६ ॥ पु० ॥ संगीत कले शीखवे, ताल मूर्छना हे ग्रामनो स्वर दान तो ॥ मदना कन्याने तिहां, नृत्यादिके हे हस्तकनां मान तो ॥ ७ ॥ पु० ॥ तेह प्रजाते नीसरी, आठ कन्या हे लेइ परिवार तो ॥ जाणुं थयुं जे प्रिया मली, एम चिंति हे थयो पूठे कुमार तो ॥ गुटिकानो हे करी वदन प्रचार तो ॥ ८ ॥ पु० ॥ गिरिदरी विवरमां पेशीयो, मणि दीपे हे कहे ज्योति झाकझमाल तो ॥ नयर पातालमां पेखीयो, जोवाने हे थयो ते उजमाल तो ॥ ए ॥ पु० ॥ गोपक उपर मदना रही, सुणो सहीयो हे एक माहरी वाच तो ॥ वाम नयन फुरके घणुं, पतिमेलो हे थाय तो ए साच तो ॥ १० ॥ पु० ॥ अथवा संदेशो तेहनो, इहां आवे हे एहनो निरधार तो ॥ रत्नचूडा सखी मुख्य ठे, ते कहेवा हे लागी तेणी वार तो ॥ ११ ॥ पु०॥ मुजने पण वाम नेत्रनी, थाये चेष्टा हो मनने सुखदाय तो ॥ जे दिनथी इहां आव्यां तुमो, तप कीधां हे आंबिल समुदाय तो ॥ १२ ॥ पु० ॥ तपथी मन इप्सित होवे, जे दुर्गम हे ते सहेलुं थाय तो ॥ तुम्ह तपना प्रजावथी, जाणीजे हे हवे मन सुख थाय तो ॥ १३ ॥ पु० ॥ एहवे कोइ सखी आवीने, रत्नवेगा हे तुम्ह माता जेह तो ॥ तेणे ठे जोजन जणी, सहु आवो हे करुं जामे नेह तो ॥ १४ ॥ पु० ॥ कहे मदना जूखी नथी, तुम्हे जाओ हे वेहेन करो जुक्ति तो ॥ ते कहे सुम विना नवि जमुं, एहवे माता हे आवी करे उक्ति तो ॥ १५ ॥ पु० ॥ हे पुत्री केम जिमती नथी, आ शुं आली हे कहे मदना ताम तो ॥ अंगे रति किहांय न उपजे, तिण हेते हे नहीं जोजन काम तो ॥ १६ ॥ पु०॥ सखी कहे मुज पुत्री ए नवि, तुज जर्त्ता हे वखो एणीए तेह तो॥नैमित्तिकनां वयणथी, राज्य लहीशे हे तेहथी गुणगेह तो ॥ १७॥ पु० ॥ हुं दुःखिणी दोजागणी, अटवीमांहे हे मृत्यु लह्यो जरतार तो ॥ स्थानभ्रष्टता निपनी, दुःख लहीए हे खण्युं किरतार तो ॥ १८ ॥ पु०॥ विद्यासाधनने गया, देवरसुत हे तस खबर न कांय तो ॥ कुलस्थलनी पण शुद्धि नहीं, इहां आव्या हे दिनकटणी थाय तो ॥ पु० ॥ १ए ॥ तुं तो शाणी जाणती, केम पाये हे हठ करी दुःख काज तो ॥ जेहथी टाढक पामीए, तेहथी हो होये सघलुं काज तो ॥ २० ॥ पु० ॥

तेह् जणी जोजन कीजीए, नवि कीजे हे कोइने अंतराय तो ॥ तोहे पण हव मूके नहीं, लगी तेहने हे उलंगे थाय तो ॥ २१ ॥ पु० ॥ रोवे तस दुःखे दुःखिणी, प्रीतमडी हो जगे पखी होय तो ॥ प्रीति ते परम बंधन अछे, एणे बंधने हे बांध्यो सहु कोय तो ॥ २२ ॥ पु० ॥ ते जाणी कुमर मन चिंतवे, जे हणीयो हे मगने अणजाण तो ॥ तेहनी ए पदी अछे, पण रागिणी हे मारे विपे जाण तो ॥ २३ ॥ पु० ॥ वैर तो मुजसुं नवि वहे, एम जाणी हो पुर बाहेर ताम तो ॥ रूप प्रगट करी आपणुं, वेसराव्यो हो वेत्रीये तेणी ठाम तो ॥ २४ ॥ पु० ॥ मुद्रिका दीये ते वेत्रीने, मांहे मूक्यो हे हरख्यो ते कुमार तो ॥ सुवेगा आवी तिहां, अति सुंदर हे देखी आकार तो ॥ २५ ॥ पु० ॥ कोण तुम्हो किहांथी आवीया, एम पूछे हे जन कहे श्रीचंद्र तो ॥ तेटले मदना मलीसुता, आवीने हे ओलखीयो अमंद तो ॥ २६ ॥ पु० ॥ हर्षे धाइने कहे, अरे अंबे हे वधामणी देय तो ॥ तुज जामाता आवीयो, जस इछा हे करता नित्यमेव तो ॥ २७ ॥ पु० ॥ हरखी ते विद्याधरी, मांहे तेडी हे शुणे श्रीचंद्र राय तो ॥ जाग्यबले इहां आवीया, ए मदना हे सगती थहो राय तो ॥ २८ ॥ पु० ॥ सखी आदेशे पुत्रिका, आठे ठवे हे तस गले वरमाल तो ॥ हवे नृप पूछे विद्याधरी, आस्थित केम हे केम दुःख विकराल तो ॥ २९ ॥ पु० ॥ हे हे वीर शिरोमणि, विद्याधरी हे कहे सुणो एक वात तो ॥ वैताढ्ये एक नगर छे, मणिभूषण हे नामे विख्यात तो ॥ ३० ॥ पु० ॥ रत्नचूड राजा तिहां, युवराजा हो मणिचूड इति नाम तो ॥ रत्नवेगा महावेगा वेहु, अमो तेहनी हे तरुणी उद्दाम तो ॥ ३१ ॥ पु० ॥ रत्नचूडा ने मणिचूलिका, पुत्र एहना हे पुत्री छे चार तो ॥ रत्नकांतादिक जाणीये, जाणेजी हे ए सुंदराकार तो ॥ ३२ ॥ पु० ॥ एकदा गोत्र विद्याधरे, सुग्रीवे हे छत्तरने नाथ तो ॥ कूड करीने काढीया, ते वेहु जीती हो राज्य कीधुं हाथ तो ॥ ३३ ॥ पु० ॥ सर्व लेइ धन आपणुं, सकुटुंबे हे ए नगर पाताल तो ॥ रहीए कहीए केहने, दुःख सहीए हे मानव सुकमाल तो ॥ ३४ ॥ पु० ॥ हवे रत्नचूड निज देश वालवा, तस हेते हे अटवीमां जाय तो ॥ चंद्रहास विद्या साधवा, विधिपूर्वक हे रही अधोमुखी थाय तो ॥ ३५ ॥ पु० ॥ गुणहिंके जे तिहां मारीयो, ते देखी रे अम्हे थयां विस्माय तो ॥ तेहनी प्रेत क्रिया करी, फरी आव्यां हो रहीयां इण ठाय तो ॥ ३६ ॥ पु० ॥ रत्नचूड पितुसु दुःखथी, रत्नध्वज हे अटवीमां फीरंत तो ॥ रत्नचूडा जाइ पडो, तिहां दीठो हे मदनानो कंत तो ॥ ३७ ॥ पु० ॥ अजुआलानो भ्रम करी, इहां आणी हे मदना

तेणी वार तो ॥ थापी में पुत्री करी, हीरवंती हे रहे शुज आचार तो ॥ ३८ ॥ पु० ॥ पति चरित्र नित्ये कहे, अनुरागिणी हे कीधी ए घाल तो ॥ तिहां निश्चय एहवो कस्यो, पति करयो हे एही अवर ते आल तो ॥ ३९ ॥ पु० ॥ कायर मनागत बहु करे, पण सुकृतीने हे आवे स व काज तो ॥ चाखे दांत रस जीन्न ले, तेम ए ताहरे हे थइ जोगने साज तो ॥ ज्ञानविमलथी हे हवे साधशे काज तो ॥ ४० ॥ पु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे एक दिन मणिचूरु खग, पूछे निमित्तक जाण ॥ गयुं राज्य केम आवशे, केम अम्हने गुणखाण ॥ १ ॥ आठ कन्यानो कोण हशे, वर केहवो महाराय ॥ कहे निमित्तिक आठ कनी तणो, एक वर होशे इण ठाय ॥ २ ॥ ते महा सत्त्व गुणी वली, वालशे ते तुम राज ॥ अप्रतिचक्राने साधने, होये योगी सुख काज ॥ ३ ॥ ते निसुणी बेहु गया, रत्नचूल मणिचूल ॥ विद्यासाधन उमह्या, षट्मासी तस मूल ॥ ४ ॥ वचन पवित्र साधन बहु, जाणी सुरगिरिये जाय ॥ नंदन वनमांहे अछे, चार मास तस ठाय ॥ ५ ॥ शेष बे मासी थाकती, अछे अवधि संकेत ॥ जाग्य थकी तुम्हे आवीया, परणो कनी धरी हेत ॥ ६ ॥ आग्रहथी श्रीचंद नृप, घरे कन्याने ताम ॥ तेह सहित जोजन करे, जोजन पछी लहे नाम ॥ ७ ॥ खगी कहे, केम एकला आव्या इहां शे योग ॥ निज चरित्र तेहने कहे, जेहवो उचितने योग ॥ ८ ॥ रत्नवेगा कहे इहां रहो, सुखे करी मन ठाम ॥ मणिचूलागम जिहां लगे, जावी हितने काम ॥ ९ ॥ कहे श्रीचंद माता तम्हो, कह्युं ते सर्व प्रमाण ॥ पण माहारे बहु कार्य छे, ए अविलंब प्रमाण ॥ १० ॥ तुं उत्सुक उतावलो, कार्यनो अपरवार ॥ कनकपुरे जावा अछुं, दीयो आज्ञा कार्य विचार ॥ ११ ॥ विद्या साधी आवे यदा, तदा जणावजो तेह ॥ जावीजाव होशे सही, मन धरजो निःसंदेह ॥१२॥ जलुं थयुं आज माहरे, जे तुम्ह संगति मेल ॥ थयुं जेम पय ने सिता, ए कोइ पूर्व शुज लेख ॥ १३ ॥ खगी कहे मदना तणो, विरह म पडजो स्वामी ॥ ते जणी ए अंगीकरी, जाश्यो पछे निज ठाम ॥ १४ ॥ ते कहे माता ए सही, सर्व अछे स्वाधीन ॥ पण तुम्ह राज्य स्थिति पछी, होशे सर्व अदीन ॥ १५ ॥ हमणां सवि इहां रहो, कहेवुं न घटे कांय ॥ मदनाने साथे ग्रही, आवे श्रीचंद राय ॥ १६ ॥

वेदन टाली ॥ १७ ॥ अम्हने रहेवुं नवि घटे, आवीनुं तुम्ह साथ ॥ पतिव्रताने पति गमी, अवर न थोवी आथ ॥१८॥ कहे श्रीचंद्र मंत्रिसे रहं, पति कहुं करे ते प्रमाण ॥ अवधि कही जेम तेम करी, तिहां राणी देइ पाणि ॥ १९ ॥ दीधुं मन लीधुं वयण, सीधुं जाणी काज ॥ कीधुं निज मनमानीयुं, पीधुं जेम मधु गजराज ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ आमणरा योगी ॥ ए देशी ॥

शीख लेइने श्रीचंद्र चाल्या, सगी प्रमुख पाछा वाल्या रे ॥ होजो तुम्हने वारु ॥ आव्या तेह वडे जिहां सूता, सज्जित रथ संयुता हो ॥ हो० ॥ १ ॥ चाले कनकपुर उद्देशी, गुनदेशी गुजवेशी हो ॥ हो० ॥ पथी वात करे मांहोमांहे, गही गही निज भुज मांहोमांहि हो ॥ हो० ॥२॥ जातां जातां अटवी आवी, दीठी रत्नपुरी चित्त भावी हो ॥ हो० ॥ तिहां उपवनमां जइ बेठा, तिहां बहु जनने दीठा हो ॥ हो० ॥ ३ ॥ तेह नगरनो नायक पेख्यो, गज रथ तुरंगे लेख्यो हो ॥ हो० ॥ एक पासे चय अनल चितूणी, तस पासे एक कली धूणी हो ॥ हो० ॥ ३ ॥ दुःखे पीसी हृदयमां भीडी, जेम व्यंजन माथे मीठी हो ॥ हो० ॥ एक पासे अद्भुत नर बांध्यो, तलारे ते सांध्यो हो ॥हो०॥४॥ ते देखी रथ श्रीचंद्र राखे, तरुतले ए शुं मुग जाखे हो ॥हो०॥ वनपालकने श्रीचंद्र पूछे, ए प्रबंध कहो शुं छे हो ॥ हो० ॥ ५ ॥ ते कहे मंत शिरोमणि निपुणो, रत्नपुरी नगरी ए पत्तणो हो ॥ हो० ॥ पद्मसिंह छे तेहनो राजा, हेमवती प्रिया ताजा हो ॥ हो० ॥ ६ ॥ पुत्री हंसावली छे एहवे, शेष संबंध कहे जेहवे हो ॥ हो० ॥ तेहवे कुमर रथ अद्भुत जाणी, मूक्यो सचिव कहे पाणी हो ॥ हो० ॥ ७ ॥ एहवे हरिबंधु अंगद आव्यो, देखी श्रीचंद्रने सुख पाव्यो हो ॥ हो० ॥ ओलखीने तेहनो यश बोले, कोइ नहीं श्रीचंद्र तोले हो ॥ हो० ॥ ८ ॥ यतः ॥ कणगजायरस रज्जं, पुत्तीकणगावली य कणगपुरे ॥ विलसइ सुर दिणंदो, नयलख्य वइ सुसिरिचंदो ॥ १ ॥ वीणाठरम्मि धरियो, सुयजीव पउमगिरि नियसुणहिं ॥ जाइसर उवलक्खिय, सिरिचंदो जयउ जिण चंदो ॥ २ ॥ वर्णो ॥ श्रीगिरि पर्वत कूट, पंच छे अतिहि उतंगा ॥ गिरिपुरी विजया नामे, प्रथम छे शिखर सुचंगा ॥ सदाफल सहकार, सार छे तेहने

धावे ॥ अतिशोभे अतिगुंड, कनकनी न्याय विराजे ॥ मध्य कूटे हे जिनगेह कूट पुण केवीनुं ठाम छे, निम्न
राय स्तवक करशो, ते श्रीचंद्र मनमां हर्षे ॥ १ ॥ यछी श्रीपर्वत शृंग, चंद्रपुर पट्टण धारयुं ॥ विजयदेवि
आपेह, जेह गुरुजाण विचारयुं ॥ पुर मध्ये एक चैत्य, प्रथम जिननुं मणि केरुं ॥ चोबारुं अति चारु, जोयतां
जावे मेरु ॥ धर्म कर्म करता पण अमयारो सफलो करे ॥ ते श्रीचंद्र नरिंदजी, कीर्त्ति जगमां विस्तरे ॥ २ ॥
हाथ पूर्वली ॥ वैरीमुखथी श्रीचंद्र जाण्यो, सचिव जइ तेमी आण्यो हो ॥ हो० ॥ पुत्रीयुत नृप सन्मुख जावे,
नृप जाणी श्रीचंद्र आवे हो ॥ हो० ॥ ए ॥ नति थुति करी मांहोमांहे जे, श्रीचंद्र पण बहु तेजे हो ॥ हो०॥
उचित स्थान मदनाने मूके, बेठो विनय न चूके हो ॥ हो० ॥ १० ॥ कन्याने दुःख कारण पूछे, वज्रसिंह
नृप नवि सूचे हो ॥ हो० ॥ नयखास देशनो कनकसेन नृप, कनकावती सुतारूप हो ॥ हो० ॥ ११ ॥ मुज पुत्री
हंसावली नाम, तेह साथे सखीपणुं अभिराम हो ॥ हो० ॥ ते देशना स्वामी तुम हुआ, वर कनकावलीना
हुआ हो ॥ हो० ॥ १२ ॥ ते निसुणी मुज पुत्री भाखे, कहे एहवुं सहुनी साखे हो ॥ हो० ॥ जे कनकावलीए
पति धार्यो, में पण ते अंगीकार्यो हो ॥ हो० ॥ १३ ॥ ते जाणी हवे विश्रुत मंत्री, मोकल्यो एम आमंत्री
हो ॥ हो० ॥ लक्ष्मण मंत्रीथी वात तुमारी, परदेश गयानी अवधारी हो ॥ हो० ॥ १४ ॥ आवी सचिवे ते
वात जणावी, सुणी कनी बहु दुःख पावी हो ॥ हो० ॥ अहोनिश तुमचुं नाम संभारे, गयवुं ते भाग्य अनु-
सारे हो ॥ हो० ॥ १५ ॥ हवे कुंडलपुर नृपनो बेटो, कपट कुविद्यानो पेटो हो ॥ हो० ॥ हंसावलीनो ते
थयो रागी, चंद्रसेनने कुमति ते जागी हो ॥ हो० ॥ १६ ॥ पुत्रीनी ए प्रतिज्ञा जाणी, तुम्ह विदेशे एम चित्त
आणी हो ॥ हो० ॥ विण पूछे त्यांथी निसरीयो, निशि कनकपुरे संचरीयो हो ॥ हो० ॥ १७ ॥ खबर लइ
तुमथी नवि तेले, कूट युद्धे करी एणे हो ॥ हो० ॥ एक नृत्यशुं एकलो आव्यो, श्रीचंद्र नाम धराव्यो हो ॥
हो० ॥ १८ ॥ वेश धरयो तुम्हचो रही छानो, दीये दान अने बहुमानो हो ॥ हो० ॥ तेह कपट तो अम्हे
नवि लहीयुं, श्रीचंद्र ए सत्य कहीयुं हो ॥ हो० ॥ १९ ॥ कन्या पण मनमां हरखाणी, जुओ कर्म तणी सहि
नाणी हो ॥ हो० ॥ करशो विवाह लगने योगे, पण सुख तो कर्मने भोगे हो ॥ हो० ॥ २० ॥ एहवे कोइक
वणिज इहां आव्यो, तेणे वृत्तांत जणाव्यो हो ॥ हो० ॥ ते वारे एहने कृत्यो ने बांध्यो, मनयंत्रित तस नवि
वाध्यो हो ॥ हो० ॥ २१ ॥ सर्व यथास्थित चरित्र ते जाण्युं, श्रीचंद्र नहीं ते आण्युं हो ॥ हो० ॥ शुं

कुंभकेश तणो सुत नामे, श्रीचंद्रसेन गजे अनिरामे हो ॥ हो० ॥ २२ ॥ ते जाणी पुत्री अड कुःखिणी, विवाद थयो विषमी करणी हो ॥ हो० ॥ मंत्री प्रमुख सचिव सवि दुःखीया, हवे केम थाये ते सुखीया हो ॥ हो० ॥ २३ ॥ एहवे मलयंगद नट आव्यो, तेणे शुभ गुणराशि गुणाव्यो हो ॥ हो० ॥ दुःखनिधुरा बाला जड-संज्ञा, थइ हती बहुचिंता हो ॥ हो० ॥ २४ ॥ काष्ठ जक्षण करवा थइ कामी, ते पण इहां ने हरामी हो ॥ हो० ॥ चोर परे ते बांध्यो दीसे, स्वोइ पणे जनम जगीशे हो ॥ हो० ॥ २५ ॥ अहो विश्वमघातीनी नवलता, अहो मूरता कामनी जडता हो ॥ हो० ॥ अहो दीर्घ अदर्शिता एहनी, अहो अज्ञानता अम्हनी हो ॥ हो० ॥ २६ ॥ यतः ॥ अति चतुरक चतायता, ते विणगामे काज्ञ ॥ कूप अकी जो नीपजे, तो न विलोवे अज्ञ ॥ काव्यं ॥ सहसा विदधीत न क्रिया, मविवेकः परमापदां पदं ॥ वृणुते हि विमृश्यकारिणं, गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ॥ १ ॥

जावार्थः—विवेक विना सहसा कांइ काम करवुं नहीं, कारणके अविवेक जे छे, ते परम आपत्तिनुं स्थानक छे; वली विचा-रीने काम करनार मनुष्यने तेना गुणोए करी लोभ पामेली एवी सर्व संपत्तिओ पोतेज आवी वरे छे.

॥ ते निसुणी कहे श्रीचंद्र राजा, वयरसिंह नृप मत्ये ताजा हो ॥ हो० ॥ एह तुमारो दोष न कोइ, विषम कर्मगति होइ हो ॥ हो० ॥ २७ ॥ जीव ने कर्म अनादि संबंध, समये समये नवो बंध हो ॥ हो० ॥ किहां एक बलीयुं कर्म किहांय, जीव ते बलीयो किहांय हो ॥हो०॥२८॥ यतः ॥ कत्थवि जीवो बलीयो, कत्थवि कम्माइ हुंति बलियाइं ॥ जीवस्सय कम्मस्सय, पुव निबध्धाइ वइराइं ॥१॥ तेहवी बुद्धि तेहवी सहाय, जेहवी जवितव्यता थाय हो ॥ हो० ॥ परम दुःख अगम्हन ते जाणी, करुणा ते उपर आणी हो ॥ हो० ॥ २९ ॥ बंधनथी छोडावी ते पासे, आव्यो नृप सुजानी उल्लासे हो ॥ हो० ॥ अरे स्त्रीने काजे ए शुं उग्र कीधुं, कुलने मेहेणुं दीधुं शे ॥ हो० ॥ ३० ॥ सुकुल जनमने एहवुं न घटे, जे कीजे ते जोगव्या विणु न मिटे हो ॥ हो० ॥ एम उपदेश देइने वाल्यो, बंधन दुःखथी उगार्यो हो ॥ हो० ॥ ३१ ॥ संत तणी करुणा सवि जगमां, विलसतां ते यगमां हो ॥ हो० ॥ लिखित लेख जे होये ललाटे, ते लही इहां कोय न पाके हो ॥हो०॥३२॥ कहे कन्याने एवे प्रतिबोधवं, जहे म म कर दुःख प्रबंधव हो ॥ हो० ॥ मानव जन्म ए दुर्लभ लहीये, हत्या कलंक न वहीये हो ॥ हो० ॥ ३३ ॥ मन चिंतव्यो नवि होवे नरता, वचन अंगीकृत पण निरता हो ॥ हो० ॥ पाणि-

गहणे जेह आदरीयो, ते नर्या नारीये परीयो हो ॥ हो० ॥ ३४ ॥ एक वार चढे काष्ठनी हांडी, पत्रे चढे पाये नांही हो ॥ हो० ॥ पण काये जस सज्जननी वाणी, जिम एक वार कहे वराणी हो ॥ हो० ॥ ३५ ॥ तेम कुअरी एक वार विवाही, फरीने ते अवर न थाइ हो ॥ हो० ॥ एह पण नृपति पुत्र छे ताजो, फरी वात करे हवे लाजो हो ॥ हो० ॥ ३६ ॥ यतः ॥ सकृज्जल्पंति राजानः सकृज्जल्पंति साधवः ॥ सकृत्कन्या प्रदीयंते त्रिण्येतानि सकृत् सकृत् ॥ १ ॥

जावार्थः—राजा छे ते पण एकज वार हुकम करे छे, साधु पण एक वार बोले छे, कन्या पण एकज वार अपाय छे, माटे त्रण वानां एकज वार थाय छे. अर्थात् ते त्रण वानां फरीने थातां नथी. ॥ १ ॥

पूरे दाख ॥ तेह जणी आपघात न करवो, वाल मरणे नवि मरवो हो ॥ हो० ॥ ज्ञानविमल गुरु वयण गंजावे, होये तस घर मंगल माल हो ॥ हो० ॥ ३७ ॥ सर्व गाथा ॥ ६६३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे हंसावली सांजलो, जे तुमे कह्युं ते सत्य ॥ पण कुलवंती मन धर्यो, तेहिज कंत प्रशस्त ॥ १ ॥ ते जणी मन वचने धर्यो, तेहिज होय प्रमाण ॥ कायाये पण मने नहीं, जेह नीपज्युं अजाण ॥ २ ॥ गीत नृत्य आचारमां, नवि गायुं तस नाम ॥ तो पण अंगीकृत होये, जो पश्चिम उगे जाण ॥ ३ ॥ विपर्यासवुद्धिये मयुं, साच जाणीने जेह ॥ ते विपर्यास टल्या थकी, शुं न मूकीजे एह ॥ ४ ॥ मणि भ्रांते काच संग्रह्यो, अपरीक्षकथी केण ॥ ते काच शोभी पाच खे, शुं तस कहो अयेण ॥ ५ ॥ तुम भ्रांते में कर ग्रह्यो, बुद्धि तुमारी लाज ॥ ते अपर जब जाणीयो, तब मूकतां शी लाज ॥ ६ ॥ मनमां वर्यो ते शोभीये, केवल भ्रांते कोय ॥ परस्यो नवि खेले होये, हृदय विमासी जोय ॥ ७ ॥ वली साहिब तुमे जे कह्युं, एहवी जगतनी रहि ॥ चोये मंगल वरतीये, तेहिज घर होये गूढ ॥ ८ ॥ ते तो अवरने जाणजो, कुल तरुणी नहीं एम ॥ वचन मने जे आदर्यो, ते पति अवरनो नेम ॥ ९ ॥ जे मनमांहि ध्याइयो, फल पण तेहवुं थाय ॥ देव आगे जे बलि कर्युं, ते जोजन नवि थाय ॥ १० ॥ बंध मोक्षनुं हेतु छे, मानवने मन एव ॥ आलिंगने सरखी होये, बहेन ने स्त्री स्वयमेव ॥ ११ ॥ दुष्कर मन व्यापार छे. मनते [illegible] ॥ —— एक मांहे मातमी, क्षणमां मोक्ष

प्रबंध ॥ १२ ॥ यतः ॥ आगमेनि ॥ मण वायारो गुरुओ, मण वायारो जिणेहिं पन्नत्तो ॥ अहणेइ गयमीर, अहवा सिद्धि पवाणेइ ॥ १ ॥ मन एव मनुष्याणां, कारणं बंधमोक्षयोः ॥ यथैवालिंग्यते नार्या, तथैवालिंग्यते स्वसा ॥ २ ॥

भावार्थः—मन छे ते मनुष्यने बंधनुं अने मोक्षनुं कारण छे, जे मने करी भार्यानुं आलिंगन थाय, ते मनेथी बेननुं पण आलिंगन थाय छे. अर्थात् पाप पुन्यना बंधननुं कारण मनज छे.

॥ पूर्व दोहा ॥ कहे श्रीचंद्र सुणो ते भले, पण्णु तणो परावर्त ॥ होये पण पिसाहिथो, नरनो न होये आवर्त ॥ १४ ॥ ॥ १२ ॥ माकर ग्रांते कूपमां, भंभनीनुं होये लूण ॥ ते जाणे पण अन्यथा, करवाने कहो कोण ॥ १४ ॥ मीठा पाणीने ग्रमे, कणिका म्हारे नीर ॥ मेथी पण मीठी न होय, तेम पिपाहित धीर ॥ १५ ॥ करमेलापक जेहनो, थयो ग्रांगे अथ जाण ॥ ते तेहनो भरतार थयो, अपरने परखी माण ॥ १६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ मरुदेवी माता एम भणे ॥ ए देशी ॥

॥ एम निगुणी कन्या कहे, सुणो साहिब मोरी वातजी ॥ पिता वाचाये तुम पख्या, अपर सवे नर तातजी ॥ एम० ॥ १ ॥ जो परणी पण नव करी, पण मुखे न कहुं ए कंतजी ॥ गती अथवा अगती अहुं, ते जाणे श्री भगवंतजी ॥ ए० ॥ २ ॥ एम करतां जो सुमो गणो, मुजने पर तरुणी भावेजी ॥ तो मुज शरण ए थय होसे, अथवा तपस्या अनुभावेजी ॥ ए० ॥ ३ ॥ अपर कार्य माहारे नहीं, कृत कर्म न छूटे किमहीजी ॥ जे अंतराय में बांधीयो, उदये आव्युं ते इमहीजी ॥ ए० ॥ ४ ॥ तिहां श्रीचंद्र एम सांभली, शील हृढता तास प्रशंसेजी ॥ निग्रह योग्य ते कुमर छे, पण अनुकंपा मन हिंसेजी ॥ ए० ॥ ५ ॥ मूकावी नृपने कहे, ए मोह तणी राजधानीजी ॥ जिणे प्राणी रोळव्या, सुण राजा रंक ने मानीजी ॥ ए० ॥ ६ ॥ धन जीवित जोग असाचना, अणतृपता गयला प्राणीजी ॥ गया जाशे अने जाय छे, करता ते चउ गति खाणिजी ॥ ए० ॥ ७ ॥ मदन पिशाच छळे सदा, मध्यत्रिवली पंथ विषालेजी ॥ पीवर कुच युग चोतरे, तरुणीनां नयण निहाळेजी ॥ ए० ॥ ८ ॥ यदुक्तं ॥ धनेषु जीवितव्येषु स्त्रीषु चाहारकर्मसु ॥ अतृप्ताः प्राणिनः सर्वे, याता या-

स्वंति यांति च ॥ १ ॥ गरयविषलित्रिपथि, वीपरकुचपत्वरे च पथइस्तां ॥ उच्चयति मदनपिशाचः, पुरुषस्य मनोपि च स्खलितं ॥ २ ॥

भावार्थः—धनमां, जीवितव्यमां, स्त्रीओमां, आहारकर्मोमां, सर्वे प्राणीओ अतृप्त गया छे, जाशे अने जाय छे ॥ १ ॥ चपल दृष्टिवाळी स्त्रीओना मध्य त्रिवळी रूप त्रण मार्गने विषे जाडा अने महोटा एवा कुच पर्वतरूप चोवटामां बेठो एवो कामदेवरूप पिशाच पुरुषना मनने स्खलित करे छे ॥ २ ॥

॥ पूर्व ढाळ ॥ पिष्टनी मधुनी गुड तणी, मदिरा कही तीन प्रकारजी॥ चोथी सुरा छे कामिनी, जेणे मोहियुं जगत ए सारजी ॥ ए० ॥ ए ॥ मदिरा तो पीधी मद करे, स्त्री मदिरा तो दीठे मोहेजी ॥ दृष्टि मदिरा आणीये, ते माटे तेह न जोवेजी ॥ ए० ॥ १० ॥ पंथ चार चोइया अछे, नारीना विषय प्रसंगेजी ॥ सु संकट ने विषम वळी, महापंथ समपंथ रंगेजी ॥ ए० ॥ ११ ॥ त्रण पंथे जावुं नहीं, समपंथे जावुं चोइयुंजी ॥ ते जाणीने आपणुं, शीयरत्न ते कंचन तोइयुंजी ॥ ए० ॥ १२ ॥ परस्त्री छे संकटपथा, विधवा ते विषमपंथ कहीयेजी ॥ महापंथ ते वेश्या कही, समपंथ ते निज स्त्री लहीयेजी ॥ १३ ॥ मंदरूप परस्त्री होये, तोहे पण विकृति करावेजी ॥ जेम आतुरने अपथ्य ते, मनमां सुखकारक थावेजी ॥ १४ ॥ वार्यो पण ते नवि रहे, हित शिख न मनमां आवेजी ॥ लाज मर्यादा कुल तणी, ते लोपी जिहां तिहां जावेजी ॥ १५ ॥ इंद्रियमां जीह मोहनी, कर्ममां व्रत बंभ जाणोजी ॥ गुप्तिमांहि मनोगुप्ति जे, ए चारे दुःखे जीताणोजी ॥ ए० ॥ १६ ॥ यतः ॥ अरकाणरसणी कम्माण, मोहिनी तहवयाण बंभवयं ॥ गुत्तिणय मणगुत्ती, चउरो दुखेण जिप्पंति ॥ १ ॥ पूर्व ढाळ ॥ पुष्प फळ सुरा मांसना, महिळाना रस जे छोमेजी ॥ मळताने वळी जाणता, जे विरमे ते नय मोमेजी ॥ ए० ॥ १७ ॥ ते दुष्कर कारक कह्या, जनमां वंदन योग्य तेहजी ॥ रत्नगर्भा पृथिवी कही, ते कारणे धरो धर्म नेहजी ॥ ए० ॥ १८ ॥ यतः ॥ पुप्फफळाणं च रसं, सुराइ मंसाण महिळियाणं च ॥ जाणंता जे विरया, ते दुक्करकारयं वंदे ॥ १ ॥ पूर्व ढाळ ॥ विमानवास छे सोहिलो, एक छत्रधरा राज्य सोहिलुंजी ॥ पण संसारमां जीवने, बोधि रत्न अछे घणुं दोहिलुंजी ॥ ए० ॥ १९ ॥ पंच विषय मणि गेह छे, ए तरुणी तरुण वय सोगेजी ॥ एहवामां जे थिर रह्या, मन वच तनु त्रिक योगेजी ॥ ए० ॥ २० ॥ यतः ॥ सुलहो विमाण वासो, एगछत्ता विमेइणी सुलहा ॥ दुलहा पुण जीवाणं, जिणंदवर सासणे बोही ॥ १ ॥ पूर्व ढाळ ॥

एम जिनधर्मनां वयणडां, निसुणी आयति हितकारीजी ॥ नृप मंत्रि प्रमुखा सवे, समकातमा बाह्मण नारीजी ॥ ए० ॥ २१ ॥ श्रीचंद्रने चरणे नमी, चंद्रसेन कहे गुण वाणीजी ॥ तुं मुज जीवित दायकुं, हुं किंकर दीधो शिर पाणिजी ॥ ए० ॥ २२ ॥ हंसावली पण एम कहे, पद्मउं तुमे मुज मन हरीयुंजी ॥ इवणां थकी धर्मदेशना, देइ गुणी मन उद्धरीयुंजी ॥ ए० ॥ २३ ॥ जीवद धमद तुमे थया, गुण वाणीने अनुमा-वेजी ॥ देव तो श्रीअरिहंत छे, दया मूल धर्म गुरु गुणो जाणेजी ॥ ए० ॥ २४ ॥ इवे गुणने शोजो निर्मलुं, शीलरत्न महा गुण जरीयुंजी ॥ शील परम तनुभूषणं, शीलें निर्मलकर नव तरीयुंजी ॥ ए० ॥ २५ ॥ शीलनी लीला जे अठे, ते त्रिभुवनमां न समायेजी ॥ शीलें सुर नर किंकरा, वळी जय जय नाद गाजेजी ॥ ए० ॥ २६ ॥ यतः ॥ सीलं चिय आभरणं, सीलं रूवं च परम सोहग्गं ॥ सीलं चिय पंडित्तं, सीलं चिय निरुवमं धम्मं ॥ १ ॥

जावार्थः—शील छे तेज आभरण छे, शील छे तेज रूप छे, शील छे ते परम सौभाग्य छे, शील तेज निरुपम धर्म छे ॥१॥

॥ पूर्व ढाल ॥ पद्मसिंह नृप इवे कहे, रूप लावण्य गुण बहु देखीजी ॥ धीर वीर कोटीरनो, मन वचन गुणो गुण पेखीजी ॥ ए० ॥ २७ ॥ हंसावली थिया हुतो, अम मनोरथ मनमां रहीयोजी ॥ कृपण धन त्रिपथा यावन, परे एहवे आवे वहीयोजी ॥ ए० ॥ २८॥ चंद्रावली लघु बहेन छे, एहनी तेहने तुमो परणोजी ॥ अम मनना मनोरथ फळे, तुमथी छे सोनागिणी धरणीजी ॥ ए० ॥ २९ ॥ हंसावली मदना तणे, आग्रहथी नृप पच मानीजी ॥ परणी कनी ते तिहांकणे, थइ आनंदमां राजधानीजी ॥ ए० ॥ ३० ॥ बहु संपद लेइ चढ्या, त्रिहुंशुं श्रीचंद्र राजाजी ॥ जेम रतिप्रीतिशुं स्मर रहे, वळी नयनशुं नासिका ताजाजी ॥ ए० ॥ ३१ ॥ तेम शोने ध्वनि पूरीयुं, दिगधक चमूने पूरजी ॥ तरणिपरे तेजाल छे, दिन दिन चढतुं छे नूरजी ॥ ए० ॥ ३२ ॥ नव लख जनपद सीमाये, छतारा आवी कीधाजी ॥ पद्मनाभ गुणचंद्रजी लक्ष्मण, साह्मा आव्या सीधाजी ॥ ए० ॥ ३३ ॥ निज पति देखी हरखीया, श्रुणे प्रणमे तेहना पायजी ॥ मांहोमांहि ते कहे, सुख दुःखना जे समुदायजी ॥ ए० ॥ ३४ ॥ चरित्र चढी श्रीचंद्रनुं, नृपराजे सघलुं दाख्युंजी ॥ ते सुणी सवि मन चिंतवे, ए पुण्य तणुं फल जाख्युंजी ॥ ए० ॥ ३५ ॥ इवे गुणचंद्र प्रणमी कहे, देव कुशले अरियण पीलोजी ॥ गुणविभ्रम नामे गयारसी, पंच सरिखो अवर न दीठोजी ॥ ए० ॥ ३६ ॥ एहने उपाय घणा दाखव्या, साम

दाम जेदना जेहजी ॥ ते कीधा पण वश नावे होये, जेम यलमां जलनी रहजी ॥ ए० ॥ ३७ ॥ हवे स्वामी तुमो आवीया, सवि वाते जयजयकारजी ॥ थाशे ए निश्चय अछे, ज्ञानविमल गुण आधारजी ॥ ए० ॥ ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ ७२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे स्वामी ए अम प्रते, जे पहेलां मुफ देय ॥ तेहथी हवणां दश गुणो, दंरू लेउं एम कहेय ॥ १ ॥ वली तुम राज्यनुं अर्ध दीयो, नहींतर जाउं विदेश ॥ एम जुलम करतो अछे, कहेवरावे संदेश ॥ २ ॥ हवे अम नाग्ये आवीया, पूज्य तुमारा पाय ॥ हवे अमो निश्चित छुं, हर्ष्यो सवि समुदाय ॥ ३ ॥ श्रीचंद्र नृप सविता घणुं, शोन्ने सैन्य आकाश ॥ चंद्रहास करमां ग्रह्युं, दीपे तेज प्रकाश ॥ ४ ॥ नायक माये सैन्यने, तेह न गंज्यो जाय ॥ दिन दिन होये दीपतुं, जेम दीवाली काय ॥ ५ ॥ गुणविभ्रमे पण सांजल्युं, आव्यो श्रीचंद्र राय ॥ कंप्या मनमां अति घणुं, चिंते हवे केम रहाय ॥ ६ ॥ ए प्रतापसिंह नृप तणो, नंदन वल उद्दाम ॥ केइक मनमां चिंतवे, हवे केम रहेशे माम ॥ ७ ॥ चतुरानन दूत मोकली, कहेवरावे परधान ॥ पहेलां तो जेम निपन्युं, तेहनुं किशुं निदान ॥ ८ ॥ ज्यारे जेवुं देखीये, त्यारे तेम वरताय ॥ वेला देखी आपणी, रहीये जोले जाय ॥ ए ॥ एम निसुणी पाछुं कह्यो, ते सामान्यने होय ॥ पण सिंहाने कोइ समे, हीनाधिक नवि जोय ॥ १० ॥ ते निसुणी राजा कहे, थाये रण सावधान ॥ सिंह शीयाल पटंतरो, लाजे शे तिण थान ॥ ११ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ राजा नहीं मिले ॥ ए देशी ॥

॥ हवे श्रीचंद्र नृप लेइ आदेश, चाड्या सवल दल लेता देश ॥ मोहोटा राजवी ॥ अहो मेरे सवल दिवाज, जेम घन आव्यो गाजवी ॥ ए आंकणी ॥ श्वापद परे केता लहे कंप, केता रे मनमां धरे अजंप ॥ मो० ॥ १ ॥ चित्रक परे केइ करे चितकार, शशक परे केइ करे सितकार ॥ मो० ॥ सूकर परे केइ मूके निःसास, मृग परे केइक पामे त्रास ॥ मो० ॥ २ ॥ कोलाहल थयो उठ्यो रणध्यान, जेम जलनिधि जेही उद्धान ॥

मों० ॥ केइ जुवे ताक गाक ने नाक, केइ हारणी मदे करता पाड ॥ मों० ॥ ३ ॥ केइ गंजार जनेक न गोल,
मों० ॥ केइ जुवे ताक गाक ने नाक, केइ शरणां मदे करता पाड ॥ मों० ॥ दूत जुवे श्रीचंद कहाय, गुणी गुणचिंत्रम अनामी राय ॥ मों० ॥
हणो हणो मुगे हाथे दे त्रान ॥ मों० ॥ दूत मुगे श्रीचंद कहाय, गुणी गुणचिंत्रम अनामी राय ॥ मों० ॥ ते हमणां शत गुण करी ठेरा,
॥ ४ ॥ पूर्वे कनकपुरना नृप पाग, दंक लीधा ते करी मोटा पाग ॥ मों० ॥ नवि आवे तो आवे गजा, जो तुजने होय जीवित कजा ॥ मों० ॥
गरल वक अडने शुं देश ॥ मों० ॥ ५ ॥ नवि आवे तो आवे गजा, जो तुजने होय जीवित कजा ॥ मों० ॥ ६ ॥ ते निगुणी गुणचिंत्रम नृप, अंनर कायर
तूं आव्यो गूरवतीनो पुत्र, हुं तुं गुजनुं यमनो दूत ॥ मों० ॥ ६ ॥ ते निगुणी गुणचिंत्रम नृप, अंनर कायर
पण वहि हड रूप ॥ मों० ॥ गजा यह आव्यो रणरंग, श्रीचंद पण आव्या करवाने नेन ॥ मों० ॥ ७ ॥
केइ हजरमां थाये संग्राम, शूरन पण मागी तिण ठाम ॥ मों० ॥ कोइ गंजारे स्त्रीनां रे नयन, घाणे हणातो
पण रहेनो गयन ॥ मों० ॥ ८ ॥ इहां तो कोइ न गाजी गयण, जीतुं तो कहेवाये वयण ॥ मों० ॥ कोइ कहे
गाहाणी मांकोटी जान, नेले इहां नागुं तो कहे रे विज्ञान ॥ मों० ॥ ९ ॥ एम लाजे केइ करे रे संग्राम,
गजी गजे तुरगी तुरगो रथी रथमान ॥ मों० ॥ सुर नर किन्नर फेरा थाट, छना रही जोवे ते ठाठ ॥ मों० ॥
॥ १० ॥ पंदा खाला परे जयथी जाण, न परे कोइने जोइ अहिनाण ॥ मों० ॥ गुणचिंत्रम गज चढी कोदंड,
हाथे लेइ धस धइ परचंड ॥ मों० ॥ ११ ॥ पदनाल नृप पद्मसिंह नृप, हरिषेण लखमण मंत्री अनूप ॥ मों० ॥
ए सचिने बंध्या निज थाण, गुणचिंत्रमे एम हारयुं पराण ॥ मों० ॥ १२ ॥ ते देखी श्रीचंद नृपाल, कोप्यो
काल कृतांत विकाल ॥ मों० ॥ कुंजरे चढी चंद्रहास कर लीध, धायो जाणे मनु मदिरा पीध ॥ मों० ॥ १३ ॥
वीरोनो सेनानो सिंधु, कोण तारे ते समये बंधु ॥ मों० ॥ जोवे असुर सवि ए शुं नरसिंह, एकलो नाहानो
अपत्र अबीह ॥ मों० ॥ १४ ॥ नवि लहीये ए किहांये दोट, करशे हरशे ए किहां चोट ॥ मों० ॥ लघु कलगुं
परगे जे थाण, ते फल न पके थाये हेराण ॥ मों० ॥ १५ ॥ एम करतां रिपु दिपनी पास, आवी पमाके गुन-
दने आग ॥ मों० ॥ गुणचिंत्रम कहे तुं जे बाल, कांरे नरे तुं मुधा हवे आल ॥ मों० ॥ १६ ॥ कहे श्रीचंद्र
भूल पशुये शुं थाय, किहां शृगाल किहां मृगनो राय ॥ मों० ॥ थूल कृशानुं महत्व हेतु न कोय, सत्त्व होये ते
माहागुं जोय ॥ मों० ॥ १७ ॥ घणा दिवस थया करतां अन्याय, कांडुं रे शाट्य दीयुं शिल पसाय ॥ मों० ॥
गुरु विण कोण देवे हित शीख, परणे नमी के मागीने लील ॥ मों० ॥ १८ ॥ तो मूकुं नहींतर तुज प्राण,
परयानो ताहारे संशय जाण ॥ मों० ॥ एम निगुणी गुणचिंत्रम राय, मूके खड्ग श्रीचंद शिर धाय ॥ मों० ॥

त्रीजो राग.

... कीधो पाय ॥ मो० ॥ तव पड्युं शतधा थइ खंभ, पण श्रीचंद्र मनु रह्यं रे अदंभ ॥ मो० ॥ २० ॥ धारबंध महिमा ए जाण, शस्त्र न लागे पुण्य प्रमाण ॥ मो० ॥ चंद्रहासथी करतो छेद, कीधो न कीधो शिरनो छेद ॥ मो० ॥ २१ ॥ उत्तम चित्तथी दया न जाय, कीजे जो गमी कोडि उपाय ॥ मो० ॥ धनुष्यपणछशुं कंठ आकर्ष, करीने गजथी पाड्यो निःकर्ष ॥ मो० ॥ २२ ॥ श्रीचंद्र सुजटे ग्रहीने रे ताम, गुणविभ्रम नृप बांध्यो अनाम ॥ मो० ॥ काष्ठपंजरमां दीधो वेग, गुणविभ्रमने करी उद्वेग ॥ मो० ॥ २३ ॥ श्रीचंद्र नृप दखे जय जय शब्द, उच्छलीउं जाणे नादथी अब्द ॥ मो० ॥ कहे इहां कोइनो नहीं छे चंक, कर्मे राजा कर्मे रंक ॥ मो० ॥ २४ ॥ जे जेहवुं करे तेहवुं तेह, पामे इहां नहीं कोइ संदेह ॥ मो० ॥ ज्ञानविमल सूरिनी ए वाण, सघले सुख लहे पुण्य प्रमाण ॥ मो० ॥२५॥ सर्व गाथा ॥७६१॥

॥ दोहा ॥

॥ तास सैन्य सवि लूंटीयुं, सार सार धन जाण ॥ जेम व्रजमां मही लुंटीयुं, कान्हड लोका थाण ॥ १ ॥ खट नृप जे एहवा हता, ते आवी लाग्या पाय ॥ सेवे कर जोडी सदा, थुणे तुं मोहोटो राय ॥ २ ॥ सात देश कह्याणपुरे, निज आज्ञा वर्त्ताय ॥ मंत्री प्रमुख सवि थापीया, पोताना जे कहाय ॥ ३ ॥ त्यांथी आघा संचर्या, नव नृप लइ साथ ॥ नव निधि पति परे शोजतो, लेइ बहु बहु आथ ॥ ४ ॥ श्रीचंद्र चंद्रकला विशद, जयश्री कंठ शृंगार ॥ पेसारो पुरमां कीयो, उत्सव अनेक प्रकार ॥ ५ ॥ हवे जननीपद प्रणमवा, उत्कंठित थयो राय ॥ बे तरुणी साथे ग्रही, नृपे प्रणमित पाय ॥ ६ ॥ मारगमांहे आवतां, श्रीगिरि पर्वत पास ॥ चंद्रपत्तनमां सांजळ्युं, सुणतां थयो उल्लास ॥ ७ ॥ सूर्यवतीये सुत जण्यो, वर्द्धापनिका दीध ॥ उत्सव कीधो देशमां, साहामीवात्सल्य कीध ॥ ८ ॥ गीत नृत्य मंगल धवल, तरियां तोरण बार ॥ बंदीजन मूकावीया, सघले शत्रुकार ॥ ९ ॥ गुणविभ्रम नृप बंदीथी, मूकी दीये सन्मान ॥ श्रीचंद्र पद प्रणमी कहे, हुं तुम किंकर मान ॥ १० ॥ खमज्यो मुझ अपराध ए, जे तुम साथे थयो देव ॥ तुं गुणरागी तुं गुणी, तुं साक्षात् नरदेव ॥ ११ ॥ एम गुणीने पामे उवी, चंद्रपुरे जइ ताम ॥ जननी पदपंकज निरखतो, हर्षे अति अभिराम ॥ १२ ॥ मंत्रि नृप सामंत सवि, वली बहूभार अभिराम ॥ तेह सघले जननी नमी, रत्नगर्भा गुण धाम ॥ १३ ॥

श्रीचंद्र कंठ चरित्र सवि, गेलवाल्युं करी हर्ष ॥ माता पण दीयें नामणां, श्रीचंद्र गुण उत्कर्ष ॥ १४ ॥ लघु भ्राता उत्संग लेइ, नेह नयणे निरखेय ॥ नाम हवे मल्लीह इति, विधिपूर्वक ठवेय ॥ १५ ॥ नृप अवर लेख मोकली, तेड्या इहां जेह ॥ प्रीतिदान गज तुरग रथ, दीये तेहने भरी नेह ॥ १६ ॥

॥ ढाल चोदमी ॥

साहिब बाहु जिनेसर वीनवुं ॥ ए देशी ॥

॥ हवे एक दिन आनंदथुं, लेइ चतुरंग अदैन्य हो ॥ साजन ॥ चंद्रकला पद्मिनी प्रिया, वामांग वरचंद्र गेन्य हो ॥ सा० ॥ १ ॥ श्रीश्रीचंद्र नरपति जयो, अति अद्भुत शुभ कर्म हो ॥ सा० ॥ ठाम ठाम गंधर्व गावें, टाले अशुभना मर्म हो ॥ सा० ॥ श्री० ॥२॥ सूरा राज धनंजय वली, आव्या लेइ ऋद्धि हो ॥ सा० ॥ मांहोमांहे हरखीया, देखी बहु पर सिद्धि हो ॥ सा० श्री० ॥ ३ ॥ माता पण आनंदीयां, देखी सुत सोजाग हो ॥ सा० ॥ निर्वां सहुने रहेवा देले, आपे वडेरी राज हो ॥ सा० श्री० ॥४॥ वामांग मातुलने करे, सघले ठाम अधिकार हो ॥ सा०॥ धनंजय सेनापति करे, अवर अंगरक्षक परिवार हो ॥ सा० श्री० ॥ ५ ॥ पट्टदेवी राणी चंद्रकला, सत्र नामे जे चित्र हो ॥ सा० ॥ कुंजरनो अधिपति करी, शिक्षा दीयें निःशल्य हो ॥ सा० श्री० ॥ ६ ॥ ते श्रीगिरि पर्वत श्रावीया, हवे श्रीचंद्र नृपाल हो ॥ सा० ॥ नृप सचिवे साथे लेइ, ऋद्धि तत्कालमाल हो ॥ सा० श्री० ॥७॥ श्री जैनचैत्ये आवीया, प्रणमे प्रथम जिणंद हो ॥ सा० ॥ रोमांचित कंचुक पणे, जेम पुष्पित मकरंद हो ॥ सा० ॥ श्री० ॥ ८ ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥ राग धन्याश्री ॥ आज महारा प्रभुजी

साहामुं जोयो, सेवक कहीने बोलावो ॥ ए देशी ॥

॥ आज माहारा साहिब सुनजर करीने, सेवक साहामुं निहालो ॥ जन्म कृतारथ जेणि परे थाये, ताते कलिमल टालो रे ॥ आ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नवनव संचित दुःकृत दुर्गति, पातक पंक पखालो ॥ जेह अनादि अशुद्ध अपावनता, गहन प्रथिलता गालो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ प्रभु तुम नाम ध्यान थिरताये, न होवे अरति छवालो ॥ पर आशा पाशा विपरेली, मम ताये परजालो रे ॥ आ० ॥३॥ जक्त वत्सल शरणागत पंजर,

प्रमुख बिरुद संजालो ॥ मैत्रीजावे त्रिजुवन राखो पण, सेवकने प्रतिपालो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ आजथी प्रजु-दर्शने करी जाणुं, दीधो दुर्गति तालो ॥ पाप अन्यंतर दुशमन जोरे, जन्म मरण नय टालो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ प्रजु तुम पदकजरजने तिलके, शोजित जाल सुहालो ॥ ज्ञानविमल गुण उदय अधिक होय, गगनि सूर्य सुगालो रे, वृद्धि तणो वरसालो रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति साधारण जिनस्तवनं ॥

॥ ढाल पूर्वली ॥ जिन प्रणमीने चालीया, कुशस्थल नयर उद्देश हो ॥ सा० ॥ मान ज्ञान प्रिया मिलशुं, मोटी शुद्धि वल देश हो ॥ सा० श्री० ॥ ए ॥ गज रथ तुरग ने पालखी, करम वेसर महिष गोण हो ॥ सा० ॥ सुजट प्रमुख बहु सैन्यशुं, अवर कहो ए सम कोण हो ॥ सा० श्री० ॥ १० ॥ सैन्यवर्णनं ॥ शेष सीदाये कछप नमे, कोड दीपे धरा मांहि हो ॥ सा० ॥ अंबुधि दोले गिरि गरे, दिग्गज कंदे त्यांहि हो ॥ सा० श्री० ॥ ११ ॥ कुराक्षोदित अश्वे जल करे, अगाध सिंधु रजे थाय हो ॥ सा० ॥ गहन ने प्रांगण पंक करे, रवि पण रजशुं ढाय हो ॥ सा० श्री० ॥ १२ ॥ यतः ॥ शेषः सीदति कूर्मराट् विलपति क्षोणीतलं मज्जति, कुप्यंत्यं-बुधयः पतंति गिरयः क्रंदंति दिग्दंतिनः ॥ शुष्कं व्योमतलं दिशः कलुषिता, रुद्धो रविः पांशुना, यके नम्य चमूस्थले जलमहो त्रैलोक्यमप्याकुलं ॥ १ ॥

जावार्थः—ते सैन्यना जोरे करी शेषनाग भार न खमवाथी सीदाय छे, अने पृथ्वीनी नीचे रहेला देवनी पेठे कच्छप दुःख पामे छे, अने पृथ्वीतल जलमां डूबे छे, समुद्रो क्षोभ पामे छे, पर्वतो पडे छे, दिग्गजो आक्रंद करे छे, आकाशतल शुष्क थइ गयुं छे, दिशाओ मूखरी थइ गइ छे, अने रवि पण धूडे करी आच्छादित थइ गयो छे; अने तुरंगोनी खुरीयोथी खोदायेलुं पृथिवीस्थल जलरूप थइ गयुं छे. वाधुं शुं कहीए, पण ते सैन्ये करी त्रणे लोक आकुल व्याकुल थइ गयेला जणाय छे ॥ १ ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ किहां शाला किहां मठ प्रपा, किहां वली दानुकार हो ॥ सा० ॥ पौषधशाला सदव्रती, किहां वली जैन विहार हो ॥ सा० श्री० ॥ १३ ॥ पग पग तीरथ थापता, आव्या कनकपुरमांहि हो ॥ सा० ॥ कोइक दिन तिहां काणे रही, आव्या कल्याणपुर वाहि हो ॥ सा० श्री० ॥ १४ ॥ गुणविभ्रम नरपति तिहां, उत्सव करे अपार हो ॥ सा० ॥ गुणवती पुत्री तेहनी, परणे श्रीचंद्र कुमार हो ॥ सा० श्री० ॥ १५ ॥ सद-ना वयणथी जाणीयो, स्वर्ण पुरुष वृत्तंत हो ॥ सा० ॥ सुणी सहु अचरज पामीया, धन धन ए नरकंत हो ॥ सा० श्री० ॥ १६ ॥ ते नृप ने वली स्वर्ण नर, लेइ सघलो साथ हो ॥ सा० ॥ पाम्या अटवीमां ते वली, जिहां

अंतर्मणि गृह आय हो ॥ मा० श्री० ॥ १७ ॥ सार रत्न तिहांथी ग्रही, चाल्या आगे आवे हो ॥ मा० ॥
रत्नचूड मृत्युआनके, अरिहंत चैत्य करावे हो ॥ सा० श्री० ॥ १८ ॥ तिहांथी कांतिपुरे आवीया, तिहां नर-
सिंह राजान हो ॥ सा० ॥ पुर प्रवेश महोत्सव करे, मज्ञ थइ सावधान हो ॥ मा० श्री० ॥ १९ ॥ कांति
पासे वडगाम छे, वसे त्यां गुणधर नाम हो ॥ मा० ॥ पाठक पंडित प्रणमवा, जाये श्रीचंद्र सत्रिय ताम हो ॥
सा० श्री० ॥ २० ॥ गुरु गुरुपत्नी पद नमी, करे भेटणुं अति चंग हो ॥ मा० ॥ तस सुत तस बांधव हता,
सत्कार्यां मनरंग हो ॥ मा० श्री० ॥ २१ ॥ नृसिंह नृप प्रियंगुमंजरी, राणी साथे थाय हो ॥ मा० ॥ त्यांथी
आघा संचर्या, हवे हेमपुरे जाय हो ॥ सा० श्री० ॥ २२ ॥ त्यां मकरध्वज भूप छे, मदनपालनो बाप हो ॥
सा० ॥ वात मदनसुंदरीनी लही, हर्ख्यो त्यां बेहु आप हो ॥ सा० श्री० ॥ २३ ॥ तेणे पण बहु उत्सव कीयो,
साथे लेइ चाल्यो राय हो ॥ सा० ॥ कांपिल्लपुरवरे आवीया, तिहां जितशत्रु राय हो ॥ मा० श्री० ॥ २४ ॥
तेणे प्रवेश उत्सव घणो, कीधो सीधो काज हो ॥ मा० ॥ माताना आग्रह थकी, परणे श्रीचंद्र राज हो ॥
सा० ॥ श्री० ॥ २५ ॥ कनकवती मुख चार जे, कन्या छे जुदी जुदी जेह हो ॥ सा० ॥ ते परणीने चालीया,
(वच्चे विणारव गायने,) सवे आवी ससनेह हो ॥ मा० श्री० ॥ २६ ॥ वर्णननुं कवित्त ॥ पो तुंग तुरंग खुर
खुण, पुहवी तल थाणे थापे ॥ कुंतमोत द्विप कुंज, मौक्तिकण बीजने वापे ॥ धरे श्रीचंद्र नरेंद्र, तुऊ कर
खड्ग कुटुंबी ॥ लोकत्रय जय मंरूप, मांरूवे आप विलंबी ॥ कीर्त्तिलता जे ताहरी, प्रसरती थइ त्रिभुवन फरे ॥
ते कहो किण परे दाखीये, एमज यश तुज विस्तरे ॥ १ ॥ यतः काव्यं ॥ वल्गत्तुंगतुरंगनिष्ठुरखुरक्षुण्णे रण-
क्ष्मातले, निस्त्रिंशद्विपकुंजमौक्तिककणव्याजेन बीजावली ॥ खड्गस्ते वपति स्म कुंडलपते लोकत्रये मंडपान्,
प्राप्ता प्रौढमनल्पकीर्त्तिलतिका गुल्मस्य निष्पत्तये ॥ १ ॥
भावार्थः—हे राजन्, दोडता अने उंचा एवा जे घोडा तेनी निष्ठुर खरीओए करी खोदेली एवी जे पृथ्वी तेने विषे वाववा
माटे मदोन्मत्त हाथीना कुंभस्थलने भेदवा थकी नीकलेलां मोतीओने बीजरूप कर्यां छे अने हे कुंडलपुरपति, तमारुं खड्ग
त्रण लोकमां व्याप्त थयेला जय मंडपमां तमारी सत्कीर्त्तिरूप लताओ फलने माटे फेलायेली छे ॥ १ ॥
दुहा ॥ तुम कृपाण करते हुते, जेह पड्युं रज रेत ॥ तेहनो यम तस उगटणे, सर्प ते क्रूर संकेत ॥ १ ॥
अस्यार्थश्लोकः ॥ यतः ॥ त्वत्कृपाणविनिर्माणे, शेषद्रव्येण वेधसा ॥ कृताः कृतांतसर्पास्तु, तद्वर्त्तनवर्त्तिभिः ॥१॥

भावार्थः—हे श्रीचंद्र ! तमारुं खड्ग वनतां वनतां जे भूको पड्यो तेनो विधाताए यमराजा वनाव्यो एम लागे छे, तथा ते खड्गना उगटणनो मेल पड्यो, तेना विधाताए सर्पो वनाव्या. आ ठेकाणे आ सर्व उत्प्रेक्षा करी छे.

॥ पूर्व ढाल ॥ इत्यादिक स्तवना करी, श्रीचंद दीये प्रीतिदान हो ॥ सा० ॥ पंच लक्ष सोवन दीये, वस्त्राभरण अमान हो ॥ सा० श्री० ॥ २७ ॥ गायने रथ ते ओलख्यो, कह्यो सघलो समाचार हो ॥ सा० ॥ तेह विसर्ज्यो धन ग्रही, गयो उतारे तिण वार हो ॥ सा० श्री० ॥ २८ ॥ राते तस्करे आवीने, लीधो गायन माल हो ॥ सा० ॥ प्रभाते आवी पोकारीयो, कह्यो यथास्थित न आल हो ॥ सा० श्री० ॥ २९ ॥ ते निसुणी श्रीचंद्र नृप, जितशत्रु नृप सामुं जाले हो ॥ सा० ॥ चोरे धन लीयुं ते किशुं, कहे कर जोडी जाले हो ॥ सा० श्री० ॥ ३० ॥ स्वामिन् चोर इहां कणे त्रण छे, ते नवि आवे ग्राह हो ॥ सा० ॥ तेणे नगर सत्रि मुसीउं, चरित्र छे तास अथाह हो ॥ सा० श्री० ॥ ३१ ॥ एम सुणी वली चमणुं दीए, गायनने धन राय हो ॥ सा० ॥ ते उतारे फरी गया, दाने याचक खुशी थाय हो ॥ सा० श्री० ॥ ३२ ॥ निशे श्रीचंद्र गुटियोगथी, अदृश थइ पुर मांह हो० ॥ सा० ॥ जमतां जमतां पेखीया, त्रण नर केरी ग्रांह हो ॥ सा० श्री० ॥ ३३ ॥ जेम मुनि एकाग्रता गुटि थकी, वश करवा त्रण योग हो ॥ सा० ॥ संयम नयरमांहि फरे, ज्ञानविमल गुण जोग हो ॥ सा० श्री० ॥ ३४ ॥ सर्व गाथा ॥ ७२१ ॥

॥ दोहा ॥

नीरखी जोतां तेहमां, उलखीया वेहु चोर ॥ रत्नखुरो ने लोहखुरो, त्रीजो तो ने उेर ॥ १ ॥ मन माने ते इहां हुउं, जोइए हवे शुं काज ॥ करशे तेहने जोयवुं, आलस न करवुं आज ॥ २ ॥ एहवे लोहखुरो लवे, राजाये डगणो माल ॥ दीधो छे ते लीजीये, आपण थइ उजमाल ॥ ३ ॥ वज्रजंग हवे बोलीयो, शुं भिक्षुक लूंटे थाय ॥ सांजलीये छे एहवुं, जे आव्यो ने राय ॥ ४ ॥ लल कोशे सोवन पुरुष ने, ते लीजे जो आज ॥ तो वीजी चोरी किसी, लीके आपणुं काज ॥ ५ ॥ तुजमां ने अवस्वापिनी, विद्या हुं धन गंध ॥ तुझ जन्मजमां एकलो, एक वार संवंध ॥ ६ ॥ दीठुं नयणे न विसरे, शब्दवेध पण एम ॥ तोशुं आपणथी अने, कांइ अगम्य कहो केम ॥ ७ ॥ लोहखुरो कहे ते खरुं, पण ए मोसोटा राय ॥ न्यायी धर्मी ने भाग्य-

धणी, राजा मुगुट कहाय ॥ ८ ॥ जे माटे ए नृप तणुं, छेद न ताके कोइ धन ॥ उधमने अफलो होये, मानो गुरु वचन ॥ ९ ॥ एम संताणुं ते करी, चोंहुं मंत्री भूप ॥ केइने ते संपत्ता, गायनगृह प्रतिरूप ॥ १० ॥ माण्या प्राण ते छद्मी, देइ यासिकने छंप ॥ गायनने घर ते गया, कृष्य दीधे धन शुद्ध ॥ ११ ॥ मर्म जाण राजा प्रथम, गयो गायन घर ताम ॥ दीठुं गयतुं तेहनुं, करणी चोरी काम ॥ १२ ॥ ते धन केइने पड्या, गिया छेद नगकाव ॥ जगिगृहे धन पेखीनुं, उपर शिखा पिशाव ॥ १३ ॥ दृढ करी धन पुर माहिरे, गुता सजनी आवी ॥ चोगीनो भेद केइने, गुण संयोगने न्याय ॥ १४ ॥ राजा पण नवि ते जोड, गयो घर तेणी वार ॥ प्रभाते ते गायने, आवी कह्यो पोकार ॥ १५ ॥ स्वामी धन माहारुं हर्युं, धनगुं दीधुं जेह ॥ गुरु अनापना योगथी, नाठ्यो दारिद्र तेह ॥ १६ ॥ दोष किशो दातारनो, जो कर्मे नवि होय ॥ रत्न गये सुरे संपदा, शोकर कालकूट जोय ॥ १७ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥

॥ कोडलो कंत धूंपलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ इणे आख्यान मना मनी रे लो, करी शेषाली नयण रे ॥ कुशलस्थल राय ॥ जितशत्रु नृप सन्मुखे रे लो, जोड कहे मधुरां वयण रे ॥ कु० ॥ १ ॥ स्त्रीपालक होये राजथी रे लो, न गहे परनुं तेज रे ॥ कु० ॥ तेजी न लगे गाजणो रे लो, न गहे रवि शशि हेज रे ॥ कु० ॥ स्त्रीपालक० ॥ ए आंकणी ॥ २ ॥ अरे ताहरी प्रतिष्ठा किशी रे लो, जे एम पुर मुसाय रे ॥ कु० ॥ जिहां जन सुख पामे नहीं रे लो, ते शो नृपति कहाय रे ॥ कु० ॥ स्त्री० ॥ ३ ॥ जिहां राजा अंध राजा अने रे लो, होडीनो राजा जेम रे ॥ कु० ॥ तेहथी पण हीणो जिहां रे लो, परजा न पामे खेम रे ॥ कु० ॥ स्त्री० ॥ ४ ॥ जितशत्रु नृप नीचुं जोइ रे लो, जो धरती दीये माग रे ॥ कु० ॥ तो पेसुं एम चिंतवे रे लो, जोवे चिहुं दिशि लाग रे ॥ कु० ॥ स्त्री० ॥ ५ ॥ आप करे थीकुं मली रे लो, कहे कोइ जाणो तेह रे ॥ कु० ॥ मना मनख गुणीने रहा रे लो, नवि जाणे कोइ तेह रे ॥ कु० ॥ स्त्री० ॥ ६ ॥ शाप उपाय करी प्रहे रे लो, ए चोरीनी आव्य रे ॥ कु० ॥ तब पिवाइ पहेरामणी रे लो, दीये एम जाणे जणाय रे ॥ कु० ॥ स्त्री० ॥ ७ ॥ मनाजन कहे रायजी रे लो, एम पीरां पड्यु वार रे ॥ कु० ॥ दीधां

लीधा थयकां थयां रे लो, जेम खलने उपगार रे ॥ कु० ॥ रढी० ॥ ८ ॥ इवणां तुम आगल अहे रे लो, एहवो कोइ न धीर रे ॥ कु० ॥ सर्व सचिंता थइ रह्या रे लो, नृप मंत्री सुजट जे धीर रे ॥ कु० ॥ रढी० ॥ ॥ ९ ॥ एम मध्याह्न थया जिसे रे लो, माता कहेवरावे संदेश रे ॥ कु० ॥ देवपूजन ने जोजने रे लो, होये अगूर निवेश रे ॥ कु० ॥ रढी० ॥ १० ॥ सहु जल्युं वेसी रह्युं रे लो, ते जणी आवो वेग रे ॥ कु० ॥ क्षुधा सम नहीं वेदना रे लो, क्षुधाथी होये उद्वेग रे ॥ कु० ॥ रढी० ॥११॥ यतः ॥ या सद्रूप विनाशिनी श्रुतहरी पंचेंद्रियोत्कर्षिणी, चक्षुःश्रोत्रललाटदैन्यकरणी वैराग्यमुत्पादिनी ॥ बंधूनां त्यजनी विदेशगमनी चारित्र-विध्वंसिनी, सेयं बाधति पंचभूतदमनी प्राणापहारी क्षुधा ॥ १ ॥

जावार्थः—सारा रूपने नाश करनारी, सांभलेलाना स्मरणने नाश कारक, पंचेंद्रियोने खेंचनारी, आंख, कान, ललाट तेने दीन करनार, वैराग्यने उत्पन्न कारक, सगाने त्याग करावनारी, परदेश मोकलनारी, चारित्रने नाश करनारी, पंच महाभूतने दमन करनारी, प्राणने हरनारी, एवी जे क्षुधा छे ते हाल मने बाध करे छे.

॥ कवित्त ॥ ज्यो जब असशन तब रंग, ताम तप संयम तपीये ॥ जब असशन० ॥ जाप गायित्री जपीये ॥ जब असशन० ॥ ताम हसी नारी बोलावे ॥ जब असशन० ॥ तास घर धर्म सुहावे ॥ अन्न देव सवि आगलो, अन्न विण कांइ न संजरे ॥ कविराज एणी परे उच्चरे, अन्नोषधि सविहुं शिरे ॥ १॥ दुहो ॥ अन्न विण पहिन परहुणो, अन्न विण काय न पोष ॥ अन्न विण घडीय न जीवियें, अन्न विण मूआ न मोक्ष ॥ १ ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ मंत्री मुखे ते जणावीउं रे लो, माहारे अभिग्रह एह रे ॥ कु० ॥ वीकुं मह्या विण नवि जमुं रे लो, निश्चय जाणो एह रे ॥ कु० ॥ रढी० ॥ १२ ॥ ते जणी मा तुमो सहुअने रे लो, जमाडजो ए मुज आण रे ॥ कु० ॥ पूर्ण प्रतिज्ञा ए थये रे लो, जमशुं ए मंडाण रे ॥ कु० ॥ रढी० ॥ १३ ॥ कहे गुणचंद्र स्वामी एहवुं रे लो, सहसा न कहीये एम रे ॥ कु० ॥ चोरी प्रगट किहां रे हुशे रे लो, नवि लहीये ते तेम रे ॥ कु० ॥ रढी० ॥ १४ ॥ ते सुणी वेगे उठीया रे लो, साथे सवि राजान रे ॥ कु० ॥ वन क्रीडाने कारणे रे लो, आव्या जिहां उद्यान रे ॥ कु० ॥ रढी० ॥ १५ ॥ तिण पासे मठ मोटको रे लो, तिहां वेठा योगी पच पंच रे ॥ कु० ॥ तेहमां त्रण ते देखीया रे लो, तांबूले रक्त मुख संच रे ॥ कु० ॥ रढी० ॥ १६ ॥ राजा बेठा मठ वेदिका रे लो, तेडाव्या योगी सर्व रे ॥ कु० ॥ आशीर्वाद देइने रह्या रे लो, उजा आगल करी गर्व रे ॥

कु० ॥ रही० ॥ १७ ॥ कहो तुममां योगी केहा रे लो, जोगी कुण कहेवाय रे ॥ कु० ॥ मरकटकुं करी हेजशुं रे लो, पूछे तेहुने राय रे ॥ कु० ॥ रही० ॥ १८ ॥ ते कहे अमो योगी अछुं रे लो, जोगी तुमो महाराय रे ॥ कु० ॥ कहे राजा तांबूलनी रे लो, शोना केम मुख थाय रे ॥ कु० ॥ रही० ॥ १९ ॥ ते जणे शाममुखा थया रे लो, अपरना मुख शित होय रे ॥ कु० ॥ पापी शंकाये सदा रे लो, आपे मुद्रित जोय रे ॥ कु० ॥ रही० ॥ २० ॥ मृगंकाथी बांधीया रे लो, ते गुणचंद्र कुमार रे ॥ कु० ॥ नमो अर्हंताणं कहीने गया रे लो, राजा ते महेल मझार रे ॥ कु० ॥ रही० ॥ २१ ॥ कहे राजा ए मठमां घणा रे लो, आवे बहुला पंथि रे ॥ कु० ॥ ते जणी धर्मशाला करो रे लो, मठ पासे मोहोटी उमंग रे ॥ कु० ॥ रही० ॥२२ ॥ नृप आदेश थकी खणे रे लो, पृथिवि मलीय सुभट्ट रे ॥ कु० ॥ शिला उपाडी हेठे खणे रे लो, भूमिगृह देखे सुघट्ट रे ॥ कु० ॥ रही० ॥ २३ ॥ हेम माणिक रत्नादिके रे लो, काढी कीधा ढग्ग रे ॥ कु० ॥ ओळखीने लीउं आपणुं रे लो, जे जेहनुं धन वग्ग रे ॥ कु० ॥ रही० ॥ २४ ॥ स्वामी ए धन चोरी तणुं रे लो, पहेलां पत्रे सर्व रे ॥ कु० ॥ एहनो कोणे टाल्यो नहीं रे लो, प्रभु विण चोरनो गर्व रे ॥ कु० ॥ रही० ॥ २५॥ अहो अहो नाग्य पडूरता रे लो, अहो अहो बुद्धिनो जोर रे ॥ कु० ॥ अहो मतिका धीरता रे लो, वश कीधा जेणे चोर रे ॥ कु० ॥ रही० ॥ २६ ॥ एम बहु जन प्रणमे थुणे रे लो, लोकोत्तर गुण देख रे ॥ कु० ॥ वीणारवादिक जे नरा रे लो, कहे लीधो धन संपेख रे ॥ कु० ॥ रही० ॥२७॥ जितशत्रु नृपने वश कर्या रे लो, तेणे सभे त्रणे चोर रे ॥ कु० ॥ विविध प्रहारे ताडिया रे लो, पाडु प्रमुखे जोर रे ॥ कु० ॥ रही० ॥ २८ ॥ पण तस पासे न नीकल्युं रे लो, चोर तणुं अहिनाण रे ॥ कु० ॥ तलार सुभटे ते आणीया रे लो, शूलि देवण अहिनाण रे ॥ कु० ॥ रही० ॥२९॥ कृपावंत श्रीचंद्रजी रे लो, आवी तेहने पास रे ॥ कु० ॥ पूछे तुमो कुण कुण अछो रे लो, कहो सत्य जो जीवित आश रे ॥ कु० ॥ रही० ॥ ३० ॥ पण तोहे साचुं नवि जणे रे लो, तव कहे अभय वात रे ॥ कु० ॥ अहो लोहखुरा केम नोळखे रे लो, मुझने तुं केम घात रे ॥ कु० ॥ रही० ॥ ३१ ॥ पुत्री सहित तुने मूकीओ रे लो, जीवतो महेंद्रपुर सीम रे ॥ कु० ॥ तुझमां छे अवस्वापिनी रे लो, निद्रा विद्या सीम रे ॥ कु० ॥ रही० ॥ ३२ ॥ रत्नाकर प्रते नृप जणे रे लो, आम्र तणां फल खात रे ॥ कु० ॥ ते सवि तुझने विसर्युं रे लो, कहे त्रीजो कुण ए जात रे ॥ कु० ॥ रही० ॥ ३३ ॥ किशुं स्वरूप छे तुम तणुं रे लो,

अंतःपुरे, सहित नृपति मंडाण रे ॥ ज्ञा० ॥ २२ ॥ तिलकपुरे सुत मिलणे, तुरत प्रयाणे जाय रे ॥ पंथे पंथिकने प्रीणता, दाने दोलत थाय रे ॥ ज्ञा० ॥ २३ ॥ नृप आदेशे व्यवहारीयो, लक्ष्मीदत्त सकुटंब रे ॥ करी सामग्री एकठी, गयो रत्नपुरे अविलंब रे ॥ ज्ञा० ॥ २४ ॥ जनकनुं आगमन सांजली, श्रीचंद्र पण लेइ रूद्ध रे ॥ तिलकपुरेथी चालीया, सन्मुख जावा वुद्ध रे ॥ ज्ञा० ॥ २५ ॥ पंथे बेहु दल मल्यां, वाजे वाजित्र नाद रे ॥ हर्ष प्रकर्षे तिहां वध्या, जेम शिखी घनने नाद रे ॥ २६ ॥ श्रीचंद्र गजथी उतरी, प्रणमे पिताना पाय रे ॥ जनक ते गजथी उतरया, बेहु दल रह्या तिण ठाय रे ॥ ज्ञा० ॥ २७ ॥ सिंहासन मंडावीयुं, बेठा प्रतापसिंह राय रे ॥ निज उत्संगे थापीया, हर्षे श्रीचंद्र राय रे ॥ ज्ञा० ॥ २८ ॥ हृदय स्थले आलिंगीयो, शिर देशे वली चुंबे रे ॥ चिरकालीन विरह तणुं, दुःख सघलुं गयुं तुंबे रे ॥ ज्ञा० ॥ २९ ॥ वियोग वह्निने समावया, वरसे हर्षांसुनुं नीर रे ॥ सूर्यवती पण तिहां मिल्यां, जेवी हेमा हार रे ॥ ज्ञा० ॥ ३० ॥ चंद्रकलादिक वहुअरो, निज निज सखी परिवार रे ॥ श्वशुर तणा पदकज नमे, दीये आशिष उदार रे ॥ ज्ञा० ॥ ३१ ॥ पद्मनाजादिक जूपति, लेइ लेइ जेटण हाथ रे ॥ गुणचंद्रादिक मंत्रवी, सवि प्रणमे जूनाथ रे ॥ ज्ञा० ॥ ३२ ॥ कनक कुंडल राज्यना, सचिव जे छे अधिकारी रे ॥ लक्षण ने विशारदा, ते प्रणमे मनोहारी रे ॥ ज्ञा० ॥३३॥ वामांग ने वरचंद्र ने, सेनानी धनंजय नामे रे ॥ मदनपालादिक जे हता, प्रणमे सवि शिर नामे रे ॥ ज्ञा० ॥ ३४ ॥ रत्नकोश कंचननरो, पारस उपल जे सार रे ॥ नरमादा मुक्ताफला, ते आगल कीध उदार रे ॥ ज्ञा० ॥३५॥ रथ सुवेग गंधगज अछे, पिता आगल सवि मूके रे ॥ सर्व साखे जक्ते करी, विनयी विनय न चूके रे ॥ ज्ञा० ॥ ३६ ॥ मतिराजादि प्रधान छे, प्रतापसिंहना जेह रे ॥ तेणे सवि कुमरना पद नम्या, आणी नेह रे ॥ ज्ञा० ॥ ३७ ॥ वहूअर सासुने पाय नमे, सेंज्ञादिक सखी सर्व रे ॥ मांहोमां सवि विनति करे, मूकी मनना गर्व रे ॥ ज्ञा० ॥३८॥ सहुने आनंद उपजे, सहु मनोरथ सिद्धा रे ॥ ज्ञानविमल सूरि एम कहे, धनना लाहा लीधा रे ॥ ज्ञा० ॥ ३९ ॥ सर्व गाथा ॥ ९३० ॥

॥ दोहा ॥

हवे गुणचंद्रना मुख थकी, सकल श्रीचंद्र चरित्र ॥ राजा मनशुं रीजयो, कीधा कान पवित्र ॥ १ ॥ निज

[illegible], [illegible] ॥ श्रीसंघ [illegible] पद [illegible], [illegible] नाथ ॥ २ ॥ स्वामी [illegible]
[illegible], [illegible] ॥ देखी [illegible] जिनो, [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] ॥ जिन [illegible] जे, ते [illegible] ॥४॥ आज ते [illegible], [illegible]
[illegible] ॥ [illegible], [illegible] ॥ ५ ॥ निमित्त [illegible], [illegible]
[illegible] ॥ [illegible], [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible], [illegible] ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible], ते नैमित्तिक [illegible] ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] ॥८॥ [illegible], जिन [illegible] ॥ [illegible],
[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible], [illegible] ॥ [illegible], [illegible]
[illegible] ॥ १० ॥ [illegible], [illegible] ॥ [illegible], [illegible] ॥ ११ ॥
[illegible], [illegible] ॥ [illegible], [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] ॥ [illegible], [illegible] ॥ १३ ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] ॥ [illegible], [illegible] ॥ १४ ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] ॥ [illegible], [illegible] ॥ १५ ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] ॥ [illegible], [illegible] ॥ १६ ॥

॥ [illegible] ॥

॥ [illegible] ॥

॥ [illegible], [illegible] ॥ [illegible], [illegible]
॥ १ ॥ [illegible], [illegible] ॥ [illegible], [illegible] ॥
[illegible] ॥ २ ॥ [illegible], [illegible] ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] ॥ [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible], [illegible] ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible], [illegible]

॥ साथे नृप तेणे पण प्रणम्यो, विधि वंदन गुणगायजी ॥ स० ॥ ५ ॥ श्रीचंद्र सहित प्रताप-सिंह, धरा आवी सोहजी ॥ सूर्यवती पासे लक्ष्मीपती, सवकुश्चर पद हेवजी ॥ स० ॥ ६ ॥ मांहोमां जे हर्ष जयपि तिहां, कहस्यो गुणने न मायजी ॥ हृदयमां हिमे श्रीचंद्र देखी, ते जाणे जिनरायजी ॥ स० ॥ ॥ ७ ॥ सिंहपुर दीपशिखापुरी राजा, गुणगांग ने दीपचंद्रजी ॥ आव्या ते महुने घणुं जाव्या, मले थांहे श्रीचंद्रजी ॥ स० ॥ ८ ॥ अगण्य पुण्यधन तिलकमंजरी, तेहनो कीध वियाहजी ॥ प्रतापसिंह राजाये कीधो, श्रीचंद्र मन उत्साहजी ॥ स० ॥ ९ ॥ सकल मनोरथ थया संपूरा, ते सुत योगनी स्थनाजी ॥ पूर्व सुकृत फल उदय संयोगे, होये एहवी परिणमनाजी ॥ स० ॥ १० ॥ श्रीचंद्र कंठे ठवी वरमाला, दिन दिन पसरी तेहजी ॥ यश सौरज समूह महकंती, कुसुम कुसुम फल गेहजी ॥ स० ॥ ११ ॥ अनुक्रमे सर्व लेइ संघाते, आवे रत्नपुर पासजी ॥ तिहां लविंग एलाहार हुरा, मंडप बहुल विलासजी ॥ स० ॥ १२ ॥ अंबुधि तट नाना तरुछाया, तिहां पट मंडप गेहजी ॥ मातपिता मेलो थयो तिहां कण, वासे मेलकपुर तेहजी ॥ स० ॥ १३ ॥ प्रतापनगर अंबुधि तट वास्युं, जनकराजाने नामेजी ॥ प्रताप नामे नाणुं तिहां थाप्युं, स्वर्ण रूप्यनुं तामजी ॥ स० ॥ १४ ॥ हवे कर्कोटक दीपथी आवे, पंच शत पोत महंतजी ॥ रविप्रभ राय तणी जे तनया, कनकसेनादि नव तंतजी ॥ स० ॥ १५ ॥ वंधुर सिंधुर सहस दशकहुं, त्रिगुणा हय रथ जाण-जी ॥ कोटि सुभट संयुत बलवत्तर, जलधि तटे संठाणजी ॥ सा० ॥ १६ ॥ तेणे समये प्रतापसिंह राजा, उद्याने करे केलजी ॥ कर्कोट दीपथी आव्या जाणी, गज रथ हय भट वेलजी ॥ स० ॥ १७ ॥ ते जोवाने सवि नर आव्या, पूछे तेहनी वातजी ॥ किहांथी आव्या किहां लगे जाशो, शी छे तुमची जातजी ॥ स० ॥ ॥ १८ ॥ रविप्रभ नृप सुत बोल्यो तिहां कण, आशासथी इहां आव्याजी ॥ नयर कुशस्थले जावा मन छे, प्रतापसिंह नृप पासेजी ॥ स० ॥ १९ ॥ तस सुत श्रीचंद्र छे गुणे गिरुओ, तस नवपत्नी एहजी ॥ मातुल साथे करमोचननुं, धन तेहनुं छे तेहजी ॥ स० ॥ २० ॥ ते एकाकी तिहां कण आवी, परणीने गया ताम-जी ॥ आप जणावी अक्षरनुं लखी, देइ मुद्रांकित नामजी ॥ स० ॥ २१ ॥ पिता आदेश लहीने आव्यो, बहेनने मूकवा हेतेजी ॥ एहवो कोण मलु छे ते लोवे, धीर वीर छे श्वेतेजी ॥ स० ॥ २२ ॥ ते निगुणी हृष्या [illegible]

अमारो पण ते ने स्वामी, तेहनो जनपद गामजी ॥ एहवुं जाग्य सौजाग्य अपरनुं, नवि दीसे यत्नु माम-
जी ॥ म० ॥ २४ ॥ ते निसुणी कनकध्वज हरख्यो, खाग्यो प्रतापसिंह पायजी ॥ स्वामी ए सवि ऋद्धि
तुमारी, सुत उपार्जित आयजी ॥ म० ॥ २५ ॥ ते समृद्धि ते कन्या देखी, ते सुत चरित्र विशेषजी ॥
[illegible] नवि अद्भुत पाम्या, फलियं जाग्य निरेषजी ॥ म० ॥ २६ ॥ तिहांकणि राये सजा मंडावी,
[illegible] फीधजी ॥ सपरिवार सुतने तेडीने, सामंत प्रमुख परे खीधजी ॥ स० ॥ २७ ॥ गुणचंद्रादि
[illegible] तेडी, नरे श्रीप्रतापसिंह रायजी ॥ तेमी आयो इहां श्रीचंद्रने, कस्रहंस परे ते आयजी ॥ स० ॥
[illegible] ते परणंगे पेसारे, आवे सूर्यवती मायजी ॥ वधू प्रमुख परिवार संघाते, देखीने सुख
[illegible] कनकसेन श्रीचंद्र नमीने, नृपपुत्री नव जेहजी ॥ आगल आणी उनी राखी, पति
[illegible] सागर गातु मातृक सवि देखी, हरखी मनमां तामजी ॥ तस मातुल
[illegible] ॥ म० ॥ ३१ ॥ कनकसेने सवि वात जणावी, गज रथ हय जट
[illegible] उदारजी ॥ म० ॥ ३२ ॥ केम गया तिहां केणि परे
[illegible] ए स्थान गते गा, देश तणी कोइ जोसीजी ॥ स० ॥ ३३ ॥
[illegible] गुरुथी जाएयो, कुशलस्थ नृप अव-
[illegible] गुणचंद्रजी ॥ तेह चरित्र ते सर्व प्रकाश्युं,
[illegible] निमाण तहे माय तायजी ॥ गम-
[illegible] राजाये तेणि
[illegible] सुगरलने,
[illegible] ॥ म० ॥ ३७ ॥ तेह
आलिंगन दीधे रे [illegible] जिननो पोगजी ॥
कंचन कुसुमनुं गार रे [illegible]
१ रे, पर्ण अढारनी ५

॥ दोहा ॥ सोरठी ॥

॥ कुमर कहे कर जोमी, दास अछुं हुं तुम तणो ॥ तुम पद प्रसादनी होंमि, कवण करे कहो ते जाणो ॥ १ ॥ जे शोजा मुक होय, तुम आगल पालां पुले ॥ ते छत्र धरे नवि होय, राज्ये विनयविरुद टले ॥ २ ॥ तिहां केटलोएक काल, रहीने आगे संचरे ॥ कीधा बहु सत्कार, देश दीये वासंतिका ॥ ३ ॥ दोहा ॥ हवे सूर्यवतीनी वाणिथी, आवे सिंहपुरमांहि ॥ चंद्रकला हरखी घणुं, मातुल लही मनमांही ॥ ४ ॥ पाठला जवनी जूमिका, गुणचंद्र देखे जाम ॥ जातिसमरण ऊपन्युं, पहेला जन्मनुं गाम ॥ ५ ॥ श्रीचंदे तिहां पूठीयुं, मूर्छा-लंज निदान ॥ गुणचंद्रे सहु देखतां, सघलुं कह्युं प्रधान ॥ ६ ॥ तास पत्नी कमलप्रिया, जातिसमरण लह्युं तेण ॥ बेहु जणे जव संजारीयो, सर्वे जाण्युं जेण ॥ ७ ॥ ए धरणो निमित्तिउं, तीर्थाराधन पुण्य ॥ बे हत्याथी ठूटीयो, थयो गुणचंद्र ए धन्य ॥ ८ ॥ श्रीदेवी ए स्त्री हती, धरणे मारी जेह ॥ जिनदत्ता बीजे जवे, थइ श्राविका तेह ॥ ९ ॥ जन्म थकी ब्रह्मचारिणी, नमस्कार प्रजाव ॥ कमलश्री ए स्त्री थइ, आव्यो बेहुने सम-जाव ॥ १० ॥ सोमदेवादिक जे हता, अपर ते सवि प्रतिबुद्ध ॥ उमा खर्परा किहां गइ, न लही तेहनी शुद्धि ॥ ११ ॥ सर्व प्रशंसा तिहां करे, कहे नमस्कार प्रजाव ॥ तीर्थाराधन गुण घणा, लोक समक्ष निसुणाव ॥ १२ ॥ तिहां शुजगांग राजा दीये, जामाताने प्रेम ॥ चतुरंग दल वियाहनुं, जे चोहयुं ते तेम ॥ १३ ॥ चंद्र-वतीना पाय नमी, चाल्या सवि लेइ साथ ॥ दीपशिखापुरे आवीया, प्रतापसिंह नरनाथ ॥ १४ ॥ जिहां पहेला परण्या हुता, सूर्यवतीने राय ॥ तिहां मातामह पद नमे, श्री श्रीचंद्र नृप आय ॥ १५ ॥ शिर चुंबी आलिं-गियो, बेसाड्यो उत्संग ॥ जेम गौ वाठे वाठमो, अधिक अधिक धरी रंग ॥ १६ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ तोरे कोडडे विदर्जी परणुं कुंवरी रे ॥ ए देशी ॥

॥ मातामह एणी परे जाणे रे, परेलां अजाणे कीधो रे ॥ वियाह उत्सव आमंबरे रे, चंद्रकलानो प्रसिद्धो रे ॥ हवे मननी रुखी रे ॥ पोहोती आज जगीशो रे, रूमे रंगे रुखी रे ॥ जी आपुं बगशीसो रे ॥ १ ॥ हवे० ॥ ए आंकणी ॥ में कहीयुं ते तुम्ह सांजरे रे, कर फरस्यो तुम्हे पहलो रे ॥ पहथी बहु नृपनी कनी रे,

कर महनो ए गुण पहनो रे ॥ २ ॥ हर्ष० ॥ ते नाणी हर्षे करी दायनो रे, घमणो देइ सरगुं रे ॥ आपुरा यत्र गुम्ह जाग्य जे रे, हरि ने सहीना गरगुं रे ॥ ३ ॥ हर्ष० ॥ तिहां कनकदगनी गुना रे, करवती जे नाम रे ॥ जेणे कागत नागी गोमथी रे, आप जणाव्युं ठुं नाम रे ॥ ४ ॥ हर्ष० ॥ अति उत्सवशुं आदरे रे, परणे श्रीचंद्र तेहने रे ॥ आगलथी नवि चिंतित हुवे रे, पुण्य सत्याइ ने जेहने रे ॥ ५ ॥ हर्ष० ॥ कैताएक दिन तिहां रहा रे, कीये नव नवीय रसाळो रे ॥ जेम नाटकमें नीरखो रे, पोहची पछे परनाळो रे ॥ ६ ॥ हर्ष० ॥ मागे आज्ञा पवया तणी रे, कुशस्थल पुरे जाया रे ॥ पर आवणने उमाया रे, पंथे प्रयाण मनाया रे ॥ ७ ॥ हर्ष० ॥ मपाठ आगे पध्या रे, ताल पगाय ठहेया रे ॥ धगमगता धीरा धगे रे, आगल जाये कहेया रे ॥ ८ ॥ हर्ष० ॥ जंगलमां मंगल करे रे, लोकाने सुखदायी रे ॥ कनकनी कोमी वरगता रे, परता धर्म पसाइ रे ॥ ९ ॥ हर्ष० ॥ दीन दुःखी माधारता रे, यारे व्यगन पत्नी मात रे ॥ विघन सकल जाये देशनां रे, न करे को केहनी तांत रे ॥ १० ॥ हर्ष० ॥ कुशस्थलमां वाजीयां रे, जांगी ढोल निशाण रे ॥ आव्या अम्ह नयरी धणी रे, आज नजिक प्रयाण रे ॥ ११ ॥ हर्ष० ॥ गोहय आये मामही रे, धवल मंगल वधु गाये रे ॥ गुमी नेजा फरहरे रे, वाजां ताजां वजाये रे ॥ १२ ॥ हर्ष० ॥ जेरी तुंगल नफेरीयां रे, सरणाइ गहगाट रे ॥ मादल ताल कंसालमां रे, बंदीजनना ठाठ रे ॥ १३ ॥ हर्ष० ॥ हाट सवे शणगारीयां रे, गलीए फूल भीछायां रे ॥ धूप घटी मगटी करे रे, चाम चूगल गवि याछां रे ॥ १४ ॥ हर्ष० ॥ सिंदूरे शणगारीया रे, माला मय-गल मद पूरता रे ॥ गांयेलां गवि गजा करतां रे, दारिद्र दोहग चूरतां रे ॥ १५ ॥ हर्ष० ॥ मुखकमल अयल अलंकर्यां रे, गायारथ चकडोल रे ॥ चोके चोके चंद्रुआ रे, बांध्या करी रंग रोल रे ॥ १६ ॥ हर्ष० ॥ पोल पोल जे नर तणी रे, नारीनी थयी श्रेणी रे ॥ तेमनुं नयरी मलया नाणी रे, तुजालिंगन तेणे रे ॥ १७ ॥ ॥ हर्ष० ॥ जे वातायन विकस्यां रे, ते जाणे पुरी निज नाथ रे ॥ आवंताने ते जोइने रे, खीमुख दर्पण लेइ हाथ रे ॥ १८ ॥ हर्ष० ॥ जे घरश्रेणी धजा फरे रे, ते जाणे नृपने तेडे रे ॥ आवो स्वामी उतावला रे, हारे आलिंगन दीजे रे ॥ १९ ॥ हर्ष० ॥ एम बहुविध आडंबरे रे, पेसे नयरी मझार रे ॥ वधावे मुक्ताफले रे, कंचन कुसुमशुं सार रे ॥ २० ॥ हर्ष० ॥ छत्र चामर एम विंजते रे, शेठ सेनापति मंत्री रे ॥ चतुर चार वर्ण आवीया रे, वर्ण अढारनी पंति रे ॥ २१ ॥ हर्ष० ॥ चिरं नंद जय जीवजो रे, सहस्र लाख कोमी वरगां रे ॥

॥ दोहा ॥ सोरठी ॥

॥ कुमर कहे कर जोमी, दास अछुं हुं तुम तणो ॥ तुम पद प्रसादनी होंकि, कवण करे कहो ते जणो ॥ १ ॥ जे शोजा मुज होय, तुम आगल पाळां पुले ॥ ते ठत्र धरे नवि होय, राज्ये विनयविरुद टले ॥ २ ॥ तिहां केटलोएक काल, रहीने आगे संचरे ॥ कीधा बहु सत्कार, देश दीये वासंतिका ॥ ३ ॥ दोहा ॥ हवे सूर्यवतीनी पाणिथी, आवे सिंहपुरमांहि ॥ चंड्रकला हरखी घणुं, मातुल लही मनमांही ॥ ४ ॥ पाठला जवनी नूमिका, गुणचंड देखे जाम ॥ जातिसमरण ऊपन्युं, पहेला जन्मनुं गाम ॥ ५ ॥ श्रीचंडे तिहां पूठीयुं, मूर्छा-लंज निदान ॥ गुणचंडे सहु देखतां, सघलुं कह्युं प्रधान ॥ ६ ॥ तास पत्नी कमलप्रिया, जातिसमरण लह्युं तेण ॥ बेहु जणे जव संजारीयो, सर्व जाएयुं जेण ॥ ७ ॥ ए धरणो निमित्तिउ, तीर्थाराधन पुण्य ॥ वे हत्याथी ठूटीयो, थयो गुणचंड ए धन्य ॥ ८ ॥ श्रीदेवी ए स्त्री हती, धरणे मारी जेह ॥ जिनदत्ता वीजे जवे, थइ श्राविका तेह ॥ ए ॥ जन्म थकी ब्रह्मचारिणी, नमस्कार प्रजाव ॥ कमलश्री ए स्त्री थइ, आव्यो वेहुने सम-जाय ॥ १० ॥ सोमदेवादिक जे हता, अपर ते सवि प्रतिबुद्ध ॥ जमा खर्परा किहां गइ, न लही तेहनी शुद्धि ॥ ११ ॥ सर्व प्रशंसा तिहां करे, कहे नमस्कार प्रजाव ॥ तीर्थाराधन गुण घणा, लोक समक्ष निसुणाव ॥ १२ ॥ तिहां जुजगांग राजा दीये, जामाताने प्रेम ॥ चतुरंग बल विवाहनुं, जे बोल्युं ते तेम ॥ १३ ॥ चंड्र-वतीना पाय नमी, चाल्या सवि लेइ साथ ॥ दीपशिखापुरे आवीया, प्रतापसिंह नरनाथ ॥ १४ ॥ जिहां पहेला परण्या हुता, सूर्यवतीने राय ॥ तिहां मातामह पद नमे, श्री श्रीचंड नृप आय ॥ १५ ॥ शिर चुंबी आलिं-गियो, बेसाड्यो उत्संग ॥ जेम गौ वाटे वाठको, अधिक अधिक धरी रंग ॥ १६ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ तोरे कोडडे विदर्जी परणुं कुंवरी रे ॥ ए देशी ॥

॥ मातामह एणी परे जणे रे, पहेलां अजाणे कीधो रे ॥ विवाह उत्सव आमंबरे रे, चंड्रकलानो प्रसिद्धो रे ॥ हवे मननी रुली रे ॥ पोहोती आज जगीसो रे, रुमे रंगे रुली रे ॥ शी आपुं बगशीसो रे ॥ १ ॥ हवे० ॥ ए आंकणी ॥ में कहीयुं ते तुम्ह सांजरे रे, कर फरस्यो तुम्हे पहेलो रे ॥ पहथी बहु नृपनी कनी रे,

कर मद्दनो व गुण मद्दनो रे ॥ २ ॥ हवे० ॥ ते नाणी हवे करी दायजो रे, पमणो देइ हरखुं रे ॥ अनुक्री पत्र गुण्ड नाम्य ने रे, हरि ने पमीना परखुं रे ॥ ३ ॥ हवे० ॥ तिहां कनकदपनी सुता रे, रूपवती ने नाम रे ॥ तेणे कागळ नाख्यो गोखथी रे, आप आयाव्युं हर्युं ताम रे ॥ ४ ॥ हवे० ॥ अति उत्सवशुं आदरे रे, परणे श्रीचंद्र तेहने रे ॥ आगळथी मन्त्रि चिंतित हुवे रे, पुण्य सगाइ ने जेहने रे ॥ ५ ॥ हवे० ॥ केतापक दिन तिहां रह्या रे, दीये नव नवीय रमाळो रे ॥ जेम जाह्नवे नीरनो रे, गोहवी थई परनाळो रे ॥ ६ ॥ हवे० ॥ मागे आज्ञा चलवा तणी रे, कुशस्थळ पुरे जावा रे ॥ घर आवणने उमह्या रे, पंथे प्रयाण मनावा रे ॥ ७ ॥ हवे० ॥ वधाउ आगे वध्या रे, लाग पसाय लहेवा रे ॥ धगमगता धीरा धमे रे, आगळ जाये कहेवा रे ॥ ८ ॥ हवे० ॥ जंगलमां मंगळ करे रे, लोकाने सुखदायी रे ॥ कनकनी कोडी वरसता रे, भरता धर्म वधाइ रे ॥ ९ ॥ हवे० ॥ दीन दुःखी साधारता रे, वारे व्यसन वळी सात रे ॥ विघन वलय जाये देशनां रे, न करे थो केहनी तांत रे ॥ १० ॥ हवे० ॥ कुशस्थळमां वाजीयां रे, जांगी ढोल निशाण रे ॥ आव्या अम्ह नयरी धणी रे, आज नजिक प्रयाण रे ॥ ११ ॥ हवे० ॥ गोहय आवे सामही रे, धवल मंगळ वधु गावे रे ॥ गुडी नेजा फरहरे रे, वाजां ताजां वजावे रे ॥ १२ ॥ हवे० ॥ भेरी भुंगळ नफेरीयां रे, सरणाइ गहगाट रे ॥ मादळ ताळ कंसाळमां रे, बंदीजनना ठाठ रे ॥ १३ ॥ हवे० ॥ हाट सवे शणगारीयां रे, गलीए फूल बीछायां रे ॥ धूप घटी प्रगटी करे रे, चारु चूगळ सवि वाळ्यां रे ॥ १४ ॥ हवे० ॥ सिंदूरे शणगारीया रे, माता मयगळ मद पूर्या रे ॥ साबेलां गवि सज्ज कर्यां रे, दारिद्र दोहग चूर्यां रे ॥ १५ ॥ हवे० ॥ मुखकमल अचल अलंकर्यां रे, तापारथ चकचोळ रे ॥ चोके चोके चंदुआ रे, बांध्या करी रंग रोळ रे ॥ १६ ॥ हवे० ॥ पोळ पोळ जे नर तणी रे, नारीनी वळी श्रेणी रे ॥ तेमनुं नयरी मळवा भणी रे, भुजालिंगन लेणे रे ॥ १७ ॥ ॥ हवे० ॥ जे वातायन विकस्यां रे, ते जाणे पुरी निज गात्र रे ॥ आवंताने ते जोइने रे, स्त्रीमुख दर्पण लेइ हाथ रे ॥ १८ ॥ हवे० ॥ जे घरश्रेणी धजा फरे रे, ते जाणे नृपने तेमे रे ॥ आवो स्वामी उतावळा रे, कारे आलिंगन नीठे रे ॥ १९ ॥ हवे० ॥ एम बहुविध आडंबरे रे, पेसे नयरी मझार रे ॥ वधावे मुक्ताफळे रे, कंचन कुसुमनुं मार रे ॥ २० ॥ हवे० ॥ छत्र चामर एम विंजते रे, सोळ सेनापति मंत्री रे ॥ चतुर चार वर्ण आशीशा रे, वर्णं अढारनी पंक्ति रे ॥ २१ ॥ हवे० ॥ चिरं नंद जय जीवजो रे, सहस्र लाख कोडी वरसां रे ॥

दीवे भाविक लाभ थया है, पूज्यो भरह जगीशा है ॥ २२ ॥ द० ॥ भाज नमो ॥ गणधरो है, भाज मनोरथ फलीया है ॥ भाज देवाल भावी पड़े है, पुन नाल वेधू मलिया है ॥ भुलित श्रावक आदीसर है, ताज साता स्वरीया है ॥ पुण्य दोहग निर्दलीया है ॥ २३ ॥ द० ॥ गजावे ढोले मधू गणो है, नेह गजरते निहाले है ॥ पत्रालोक पचोर जे है, श्रीचंद्र पंकने गायो है, करे करे पलाय निहाले है ॥ २४ ॥ द० ॥ मधू गुणीजे ले एहेरवी है, महर थवी राम तेजे है ॥ उत्तर देव पधारयो है, तमने तेजा तेजे है ॥ २५ ॥ द० ॥ लव श्रीचंद एम चिंतवे है, विनतडी अवधारो है ॥ गुणि सवी दो पूजीजे है, नव निजगाति धुमावे है ॥ २६ ॥ द० ॥ जो मोहडो तोडे बांधवा है, निते न थवा वांछि है ॥ कहुर लिखी भीडी जावडी है, ए तमाजो मांहि है ॥ २७ ॥ द० ॥ सम्यक भलिदि पधारज्यो है, गवाले नवे न दीवो है ॥ जेवो जेवो दरशावत है, मधुर ध्वनि दीधो है ॥ २८ ॥ द० ॥ जो चेहनाने जेरीनुं है, करे गुणोग गुण पुनादे है ॥ प्रीति संबीधो है, तेवे प्रीति पमाडे है ॥ २९ ॥ द० ॥ तेम तमाम तमालल है, मुझे मन पणि धरवी है ॥ भाव भालीजे भाखी प्रभु मूकीये है, मुझ्यो पाप कलो गवही है ॥ ३० ॥ द० ॥ एम श्रीजिननी विनति है, भावी मुख्या भाव है ॥ अवादिक निज बांधवा है, पहेरावा भवेवाट है ॥ ३१ ॥ द० ॥ भावालिबा करतां थता है, गतनी लावे आवे है ॥ भरह मरता भवपालीवा है, ए बीजी तो आवे है ॥ ३२ ॥ द० ॥ आतम करे भति भाली है, ए अस्मार विनोद है ॥ ते भाली विस्तार मन करो है, तमो गतमा मोद है ॥ ३३ ॥ द० ॥ मन भाव जेवी भजे है, ध्यावे नेहना दीजो है ॥ पन्न ने ते पहेली भोजना है, गालमो भत भीनीभीन है ॥ ३४ ॥ द० ॥ भावो भावना तेमजु है, भावी निवजावा है ॥ इतनिवान गुण तमजी है, मुन मावे मधु- भरणा है ॥ ३५ ॥ द० ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवे मलिपूर रमानना, विवास वेधू तेह ॥ संनिधि नीहोला तना, निवा भावी नेह ॥ १ ॥ भावथा मवर वालनधार, भाव भवी मति माम ॥ कलाना विराहवी, श्रीचंदना भवदाम ॥ २ ॥ दवी भावी मरजी गता, निमसी ते ...... ॥ —री गमतां भति धन्नु, तेम धनवी धन धेघु ॥ ३ ॥ वरी विमानने भावीया,

कुशस्थळे उद्यान ॥ उतरतां ते देखीनें, द्योतित दश दिशिमान ॥ ४ ॥ परषदा मांहे बेठु मल्या, श्रीचंद्रने दीये मान ॥ मांहोमांहे तुति नुति करे, कहे निवाव निदान ॥ ५ ॥ अरिजय करवा मारथ्यो, श्री श्रीचंद्रकुमार ॥ मात पिता शेठ शेठाणी, जायानो परिवार ॥ ६ ॥ वळी केटलाएक नृपशुं, चाले विमाने बेसी ॥ आकाशे अति हर्षशुं, टाळे या अरि मेसि ॥ ७ ॥ पातालह नगरे जइ, सामग्री सवि लेइ ॥ सवि वैताढ्यगिरि गया, निसाणे घोर देइ ॥ ८ ॥ वाजित्रने नादे करी, बधिर करे दिशिजाग ॥ ते पुरि मणिचूडण वने, उतरे नृप महाजाग ॥ ए ॥ एहवे ते वनमां विशद, पटकेरा समुदाय ॥ शोजासंकुल नूमिका, देखे श्रीचंद्र राय ॥ १० ॥ पूछे प्रत्ययी नर मत्ये, घर मुखे लही वृत्तंत ॥ ए वनमांहे उतरया, महाजन संत ॥ ११ ॥ श्री धर्मघोष मुनीश्वरु, सुधा शमदमवंत ॥ आचारिज आचारना, गुणमणि यतनावंत ॥ १२ ॥ ते निसुणी मन चिंतवे, मुनिदर्शननो योग ॥ पूरण नाग्यवळे होये, थाये पापवियोग ॥ १३ ॥

॥ ढाल ठंगणीशमी ॥

॥ हो मतवाले साजनां ॥ ए देशी ॥

सुमीवादि विद्याधरा, ए सुणे मुनिनी वाणीजी ॥ आव्या ने उलट धरी, नवा नवा नवि प्राणीजी ॥ १ ॥ पूज्यो नर एम विनवे, सुणो तुम्हो महाराजाजी ॥ तुम्हो पण सूरिना पद नमी, थाओ तेजे ताजाजी ॥ २ ॥ पू० ॥ ए आंकणी ॥ ते सुणी श्रीचंद्र नरपति, यति नायकने वंदेजी ॥ सकल ऋद्धि परिवारशुं, आणी मन आणंदेजी ॥ ३ ॥ पू० ॥ पंचाभिगम साचवी, सचित्त द्रव्यनो त्यागजी ॥ अचित्तनो अभिग्रह लीये, मन एकाग्रता लागजी ॥ ४ ॥ पू० ॥ गुरु दीठे धरे अंजली, एकपट उत्तरासंगेजी ॥ खड्ग छत्र ने मुकुट वाहन, चामर तजे नृप लिंगजी ॥ ५ ॥ पू० ॥ देइ तीन प्रदक्षिणा, खमासमण दुग देइजी ॥ इच्छाकार निमंत्रणा, पाठ मुखे पन्नणेइजी ॥ ६ ॥ पू० ॥ गुरु नमी यथोचित थानके, बेठा तिहां सकुटुंबजी ॥ बुद्धि आठ गुण संयुते, सुणे देशना अविलंबजी ॥ ७ ॥ पू० ॥ तद्यथा ॥ शुश्रूषा गुरुसेवना, अथवा सुणवा इच्छाजी ॥ श्रवण ग्रहण ने धारणा, उहा विचार विविच्छाजी ॥ ८ ॥ पू० ॥ अपोह ते नयनी चालना, अर्थविज्ञान निरधारजी ॥ तत्त्वज्ञान ते स्वरूपनुं, जाणवुं ए अनुसारजी ॥ ए ॥ पू० ॥ ए आठे गुण मेळवी, गुरुमुख पंकज

पेखेजी ॥ अति तृषिता जिम अमृत मले, हर्षे तिम जनु देखेजी ॥ १० ॥ पू० ॥ तेणे समये ते सूरीश्वरु, तपनो महिमा जाखेजी ॥ सजा आगल साची गिरा, समय शास्त्रनी साखेजी ॥ ११ ॥ पू० ॥ दरिद्र अज्ञान पराजव्यो, नीच कुले अवतारजी ॥ दासपणुं रोगीपणुं ए तपथी, न होये लगारजी ॥ १२ ॥ पू० ॥ यतः ॥ न नीचैर्जन्म स्यात् प्रजवति न रोगव्यतिकरो, न चाप्यज्ञानत्वं विलसति न दारिद्र्यलसितं ॥ पराजूतिर्न स्यात् किमपि न दुराप किल यत, स्तदेवेष्टप्राप्तौ कुरुत निजशक्त्यापि सुतपः ॥ १ ॥

जावार्थः—हे भव्य जीवो! स्वशक्त्यनुसार तप करो; कारणके जे तपथी, नीच कुलमां जन्म नथी थतो, रोग नथी थतो, अज्ञानपणुं आवतुं नथी, दारिद्र नथी आवतुं, तथा कोइ ठेकाणे पराभव थतो नथी. वली जे तपथी कांइ पण पदार्थ प्राप्त थया विना रहेतो नथी; माटे तेज तप इष्ट प्राप्तिने माटे करो ॥ १ ॥

॥ तप प्रजावथी संपदा, सघली सेजे आवेजी ॥ निःश्रेयस संपद पामीये, श्रीचंद्र परे सुख थावेजी ॥ १३॥ पू० ॥ आव्या जाणी श्रीचंद्रने, देशना दीये विशेषजी ॥ सिंधुलहरी ठे जटकती, पण वधती चंदनी रेखजी ॥ १४ ॥ पू० ॥ तद्यथा ॥ गाथा ॥ जरहखित्तंमि नयरे, कुसत्थखे निव पयावसिंह पिया ॥ सूरियवइय पुत्तो, सरहंसो जयउ सिरिचंदो ॥ १ ॥ जस्स य गप्जवयारे, जणणी सुमिणंमि पासइ मयंकं ॥ सिरिव्रत्तं करकमलं, मणिमय जिणजवण कारवणं ॥ २ ॥ जोहि मुक्को जणणी, सवत्ती सुय सजासाजसाहरणो ॥ गिहुव यणपुप्फ पूजो, वणियणि हरखियो तइया ॥३॥ सुरदिण सुमिण जोगा, लह्नी दत्तेण लह्नीवइ पऊणा ॥ गहिऊण तऊ स गिहे, लिंऊ सो कुमार सिरिचंदो ॥ ४ ॥ सूरियवइए पजणइ, रह्ना सुरीपुत्त विरह समयंमि ॥ जट्ट सिरिचंय सुत्रो, धारस वासम्मि तुह मिलही ॥ ५॥ वर पउमगप्जगोरा, वयरजालदंतपंति रमणिज्जो ॥ जाणुयजाख जाणु, पहुइ पवहं सिरिचंदो ॥६॥ इत्यादि ॥ ढाल पूर्वली ॥ एम चरित्र यथायोग्यता, जाख्युं श्रीमुनिराजेजी ॥ यचमां तहज पूठीयुं, तिहां विद्याधर राजेजी ॥ १५ ॥ पू० ॥ कहे सूरि सुमित्र नृपो, ते ए अग्रे श्रीचंद्रजी ॥ जेहनुं चरित्र अमो जाखियुं, सुणियुं तमो निसंद्रजी ॥ १६॥ पू० ॥ ए प्रतापसिंह जूपति, ए सूर्यवती मायजी ॥ चंद्रकलादिक ए वहू, ए गुणचंद्र सहायजी ॥ १७ ॥ पू० ॥ ते निसुणी खग सवि मले, हर्षित होय प्रसंगजी ॥ धीजा पण आवी मल्या, जेम मानस सर हंसजी ॥ १८ ॥ पू० ॥ हवे श्रीचंद्र नृप विनये, वंदी गुरुना पायजी ॥ पाउल पुण्य कीधुं कीधुं, दाखो करी सुपसायजी ॥ १९ ॥ पू० ॥ तव जाखे मुनिपति

तिहां, ध्यान धरी जब धीरजी ॥ ऐरवत क्षेत्रमांहे सुण्यो, नरवर पाम्या पोषधीजी ॥ २० ॥ पू० ॥ तिहां
ज्ञानिय नरकायनुं, ता बीजुं जावें जाशेजी ॥ तिहांथी अच्युतेंद्र थइ, इहां श्रीचंद्र नृप थाशेजी ॥ २१ ॥
पू० ॥ यथा ॥ एकदिन निर्मळ चंदन, सर्वसिद्धिप तवस माहण्या ॥ अच्युत देवो जाशे, तव गयाहि राग
सिरिचंदो ॥ १ ॥ कहे ते जिनवरथी कहो, करी कृपा जगतानजी ॥ कहे जिनवरथी दाखवो, सुणजो गणु मा-
कारानजी ॥ २२ ॥ पू० ॥ जंबुद्वीप ऐरवते क्षेत्रे, कुसुमी नामे नयरीजी ॥ राजा जयदेव नामे अछे, तेणे धरा
जीता वैरीजी ॥ २३ ॥ पू० ॥ जयादेवी तेहनी प्रिया, तस सुत ते नरदेवजी ॥ पंडित पासे मोकल्यो, भण-
वा मनरंगजी ॥ २४ ॥ पू० ॥ चंदन नामे सचिव छे, नृपनो मित्र गुणधामीजी ॥ पद्मावती तस प्रिया,
नंदन सुत गुणधामीजी ॥ २५ ॥ पू० ॥ ते बेउ नीशाळे जाते, मांहोमांहे अति नेहोजी ॥ सकळ कला
शीखी थया, कुमर किया गुण गेहोजी ॥ २६ ॥ पू० ॥ यौवन वय ते पामीया, बेहु मळीने मन जाणेजी ॥
अथ क्षितिप्रतिष्ठित नयरनो, प्रजापाळ नृप सोहांयेजी ॥ २७ ॥ पू० ॥ देवी राणी तस सुता, अशोकश्री प-
मृगजी ॥ ते पण यौवन कुसुमने, पामी तेम गुण जमराजी ॥ २८ ॥ पू० ॥ स्वयंवरमंडप मांडियो, कुंकुम-
पत्री मेलीजी ॥ तव अनेक भूपालीया, नृपथी कागळ लेखीजी ॥ २९ ॥ पू० ॥ नरदेव नृपसुत आवीयो,
चंदन मित्र संग साथजी ॥ अनुक्रमे कन्याना योगथी, जोडी सकळ सनाथजी ॥ ३० ॥ पू० ॥ पूरव जनम सने-
हथी, चंदन वरीयो आणीजी ॥ नरदेव मनमां हरखीयो, मित्रनी ए मळी नारीजी ॥ ३१ ॥ पू० ॥ प्रजापाळ
नृपें आरती, आलेजी श्रीफळाजी ॥ नरदेवने परणावीने, उत्सव करीय महानाजी ॥ ३२ ॥ पू० ॥
ज्यारे ते आपण पुरे, मुनिना बिहु वदे छीणाजी ॥ अपर नृप पण निज स्थानके, पोहोता अति घणुं प्रीणा-
जी ॥ ३३ ॥ स्वर्गतणी रीति छे, संबंध होय ते परणेजी ॥ ज्ञानविमळ सूरि एम कहे, बीजा नृप नक्षि-
जाणेजी ॥ ३४ ॥ पू० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नरदेवने परणवा वळी, दूरे थया तट भाग ॥ प्रारब्ध कर्मना उदयथी, गयो देशांतरे याग ॥ १ ॥ पंथ
गोप पुत पण जती, एकलीने गयो जाम ॥ ज्ञान थयो तिहां अति घणो, नमिन करतां उद्दाम ॥ २ ॥ कोणप-

पुरमां आवतां, जलधि थयुं तोफान ॥ वीज वादलना योगथी, जग्न थयुं एक यान ॥ ३ ॥ कर्मसंयोगे पामीयुं, चंदने पाटीयुं एक ॥ तस संयोगे नीकल्यो, जलधि मांहेथी ठेक ॥ ४ ॥ चार पोत देवयोगथी, शबर बंदिरे जाय ॥ तिहां मुक्ताफल नीपजे, तेणे तेह पूराय ॥५॥ बारे वरसे आवीयो, कोणपपुर तट कंठ ॥ ज्ञमतां ज्ञमतां बहु दिने, जेम गज मदियो मेठ ॥ ६ ॥ निज पुर पासे आवीयो, कर्मथी चंदन शेठ ॥ पहेलां आव्यो तेहथी, जग्न पोतनो शेठ ॥ ७ ॥ फलक योगथी तेणे कही, जग्न पोतनी वात ॥ ते निसुणी दुःखीया थया, शेठ मित्र निज जाति ॥ ८ ॥ अशोकश्री तेहनी प्रिया, ते पण दुःखिणी थाय ॥ जलधितीर जोवरावीयुं, पण चंदन किहां न लहाय ॥ ए ॥ ते जणी सात वरसां पछी, पलटी विधवा वेष ॥ पहेल्यो जन अनुवादथी, कृशता तनुनी पेखी ॥ १० ॥ हवे द्वादश वर्षांतरे, चंदन आव्यो देश ॥ हर्षित शेठ सुसर वहू, पौरलोक सुविशेष ॥ ११ ॥ हर्षजले न्हवरावतो, देतो यथोचित दान ॥ चंदन निज घर पामीयो, जेम मुनिसंयम ध्यान ॥ १२ ॥ अशोकश्री कृत धर्म तरु, फलियो एह निदान ॥ सहु प्रशंसा एम करे, वाधे हर्ष प्रधान ॥ १३ ॥ काले नरदेव नृप थया, चंदन थया प्रधान ॥ शेठ मुख्यपणे एह छे, राज्ये मेढी समान ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ११०२ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ राग मारु ॥ जायन पयाळानी जाति ॥ लज्जा तुं राखे हो खंघडा हो, पूरव तणा पठाण ॥ ए देशी ॥

॥ हवे तिण पुर तिण समे हो, आव्या ज्ञानसूरींद ॥ जे छे श्रुत अतिशय घणा हो, वनमां महिम दिणंद ॥ हवे तिण समये तिण पुरवरे हो, मूर्तिमंता धर्म गिरींद ॥ देइ दर्शनने जविने तारता हो, जेम चकोराने चंद ॥ १ ॥ हवे० ॥ ए आंकणी ॥ नृप शेठ ने नागर नागरी हो, श्रीकांता नृप नारी ॥ अशोकश्री साथे आवीया हो, करे विधि वंदन सार ॥ २ ॥ हवे० ॥ नमीने सवि बेठा यथोचित थानके हो, सूरि दीये धर्माशीष ॥ तिहां प्रारंजे गुरु धर्मदेशना हो, निरुपकार वगशीश ॥ ३ ॥ हवे० ॥ जेम तक्रथी नवनीत उद्धारीये हो, पंकेथी जिम पद्म ॥ जिम अमृत उद्धरीये जलधिथी हो, जेम मुकता वंश सद्म ॥ ४ ॥ हवे० ॥ तेम नरजवथी धर्म उद्धरीये हो, धर्म ते परम छे सार ॥ दुर्गति पडतां रडतां चिहुं गति हो, धर्म ते करेय उद्धार ॥ ५ ॥ हवे० ॥ यथा ॥ तक्रादिव नवनीतं, पंकादिव पद्मममृतं जलधेः ॥ मुक्ताफलमिव वंशात्, धर्मः सारं मनुष्यजन्मात ॥ १ ॥ संसारे मानुष्यं सारं, मानुष्यके च कौलिन्यं ॥ कौलिन्ये धर्मित्वं, धर्मित्वे चापि सदयत्वं ॥

भावार्थः—छाश थकी जेम माखण उत्पन्न थाय छे ते सार छे, कपासमांथी जेम कमळ उत्पन्न थाय छे ते सार छे, समुद्र थकी जेम अमृत उत्पन्न थाय छे ते सार छे अने वांसडा थकी जेम मोती उत्पन्न थाय छे ते सार छे, वळी मनुष्यभव थकी जे धर्म थाय ते सार छे ॥ १ ॥ संसारमां मनुष्यपणुं छे ते सार छे मनुष्यपणामां कुलीनपणुं छे ते सार छे, कुलीनपणामां श्राविकपणुं छे, ते सार छे, श्राविकमां सद्व्रतपणुं ते सार छे ॥ २ ॥

॥ देशना अंते नृप पूछे सूरिने हो, कोण कर्म थयो वियोग ॥ अशोकादिक हे पण पुनरपि हो, कोण कर्म होय संयोग ॥ ६ ॥ दुवे० ॥ गुरु कहे सुण नृप निज कर्मथी हो, नावे पर कृत कर्म ॥ फल शुभाशुभ स्वकृत जोगवे हो, एहीज धर्मनो मर्म ॥ ७ ॥ दुवे० ॥ कयही मेरु चळे अनल शीतलो हो, पश्चिम उगे भाण ॥ पर्वत शिखा उपर उगे पद्मिणी हो, पण न चळे कर्म विनाण ॥ ८ ॥ दुवे० ॥ यतः ॥ उदयति यदि भानुः पश्चिमायां दिशायां, प्रचलति यदि मेरुः शीततां याति वह्निः ॥ विकसति यदि पद्मं पर्वताग्रे शिलायां, तदपि न चलतीयं भाविनी कर्मरेखा ॥ १ ॥ आर्या ॥ आरोहतु गिरिशिखरं, समुद्रमुल्लंघ्य यातु पाताले ॥ विधिलिखिताक्षरमालं, फलति कपालं न भूपालः ॥ २ ॥ सुखदुःखानां कर्त्ता, न कोपि कर्त्ता स्वयं विना कश्चित् ॥ तस्मात् सुकृतदुष्कृत, सुजयं स्यात्मा परमबंधुः ॥ ३ ॥ कृतकर्मक्षयो नास्ति, कल्पकोटिशतैरपि ॥ अवश्यमेव भोक्तव्यं, कृतं कर्म शुभाशुभं ॥ ४ ॥ कर्मणो हि प्रधानत्वं, किं कुर्वंति शुभाग्रहाः ॥ वशिष्ठदत्तलग्नोपि, रामः प्रव्रजितो वने ॥ ५ ॥ संपदि यस्य न हर्षो, विपदि विषादो रणे च धीरत्वं ॥ तं त्रिभुवनस्य तिलकं, जनयेज्जननी सुतं विरलं ॥ ६ ॥ ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्मांडभांडोदरे, विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तः पुनः संकटे ॥ रुद्रो येन कपालपाणिपुटके भिक्षाटनं कारितः, सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने तस्मै नमः कर्मणे ॥ ७ ॥

माथे श्लोकनो एकत्र भावार्थः—जो कदाचित् सूर्य पश्चिम दिशामां उगे, मेरु चळायमान थाय, अग्नि शीतलताने पामे, पर्वतना अग्रे शिलामां कमळ उगे, तोपण भविष्यत्ना कर्मरेखा छे ते चळायमान थती नथी ॥ १ ॥ कदाचित् पर्वत शिखरनुं आरोहण करो, समुद्र उल्लंघन करीने पाताळमां जाओ, तोपण विधिए लिखित अक्षरवाळुं कपाळ फळे छे परंतु राजा फळतो नथी ॥ २ ॥ सुख दुःखना करवामां पोता सिवाय कोइ पण बीजो नथी. माटे सुकृत अथवा दुष्कृत करवामां आत्माज कारण छे, बीजो कारण कोइ नथी ॥ ३ ॥ कोटिकल्पे करी पण करेला कर्मनो भोगव्या सिवाय छुटको थतो नथी. माटे अवश्य करेलुं शुभाशुभ कर्मज भोगववुं पडे छे ॥ ४ ॥ कर्म ते प्रधान छे, तेमां शुभ ग्रहो शुं करशे! जुवो, वसिष्ठे दीधेला राज्यासनना मुहूर्त-

पाला श्रीरामचंद्रजी पण वनवासमां गया ॥ ५ ॥ संपत्तिमां जेने हर्ष नथी, विपत्तिमां जेने शोक नथी, रणने विषे धीरपणुं छे, ते त्रिभुवनना तिलकरूप पुत्रने कोइक माता जणे छे ॥६॥ जे कर्मे ब्रह्माने ब्रह्मांडनां प्राणीरूप पात्रो घडवामां कुंभार समान निर्माण करेला छे, जे कर्मे विष्णुने दशावतार ग्रहण करवारूप संकटमां नाख्या, वली जे कर्मे शिवजीने कपालरूप पात्र हाथमां ग्रहण करावी भिक्षा मगावी; वली जे कर्मे सूर्यने आकाशने विषे भ्रमण कराव्युं एवा ते कर्मने हुं नमस्कार करुं छुं ॥ ७ ॥

॥ ढाल पूर्वली ॥ एहवी तिहां कीधी करुणी देशना हो, ते जणी शो विखवाद ॥ धर्म करीजे धींगा धसमसी हो, मूको सकळ प्रमाद ॥ ९ ॥ हवे० ॥ इहांथी त्रीजे जव पाछले हो, सुलस नामे शेठ ॥ कुलपुत्र कहो तुं हुतो हवो हो, राखी तो घरसूत्र ॥ १० ॥ हवे० ॥ ते जवे ए अशोका वल्लजा हो, कुलपुत्रक कनी जाण ॥ नामे जद्रा वखाण, सुलस ने जद्रा ए बे तिहां हो, परण्या पुण्यप्रमाण ॥ ते जव होंशे कर्म बांधीयुं हो, वियोगनिमित्तनुं हाण ॥ ११ ॥ हवे० ॥ सुलसजवे पण ए जद्रा प्रिया हो, चोवीश वरस वियोग ॥ तिहारे पण ए कर्मना उदयथी हो, इहां नवि करवो शोग, कर्मे जीत्यो सवि लोग ॥ १२ ॥ हवे० ॥ वली सुलसे फिरतां एक समे हो, नर बूड्यो रसकूप ॥ तेहने काढ्यो रज्जुप्रयोगथी हो, ते पुण्य अतुल अनूप ॥ १३ ॥ हवे० ॥ पांचसें आंबिल सुलसे कर्यां हो, जद्र प्रिया पण तेह ॥ पांचसें वमणां तिण आंबिल कर्यां हो, अंतर रहित अछेह ॥ १४ ॥ हवे० ॥ तेणे ते तपना महिमा थकी हो, पाम्या बेहु सुरलोग ॥ तिहांथी चवी जद्रा नृपसुता थइ हो, सुलस ते चंदनयोग ॥ १५ ॥ हवे० ॥ पूरव नेहे चंदनने वर्यो हो, ते अवशेषित कर्म ॥ तस अनुजावे इहां वियोग थयो हो, ए कृतकर्मना मर्म ॥ १६ ॥ हवे० ॥ जे रसकूपथी नरने काढीयो हो, तेणे तपस्या कीध ॥ स्वर्ग लहीने तुं हवे नृप थयो हो, मित्रपणे सुप्रसिद्ध ॥ १७ ॥ हवे० ॥ एम सुणी वीतक चंदन बोलीयो हो, कहो जगवन् हजी कर्म ॥ छे कोइ मारे सूरि कहे अछे हो, एहीज अपर के कर्म ॥ ते दाखो मुज मर्म ॥ १८ ॥ हवे० ॥ कर्म अमारां प्रजु केम जायशे हो, ते दाखो हो उपाय ॥ सूरि कहे जो सकल कर्म नाशनो हो, हय बांछो मनमांय ॥ १९ ॥ हवे० ॥ तो तप करो तुमे आगम वयणनो हो, श्री आंबिल वर्द्धमान ॥ तेहथी निकाचित कर्मना मर्मनो हो, नाश होशे असमान ॥ २० ॥ हवे० ॥ उंली उंली उपवास संपूरणे हो, आंबिल चढते जाण ॥ शत उंलीने माने ए तप संपजे हो, अविलंबे लहे निर्वाण ॥ २१ ॥ हवे० ॥ गुरुवाणी हिये आणी आदरे हो, चंदन प्रिया समेत ॥ ते तप मांड्यो बेहु निराशंसथी हो, सबाने पण

हित हेत ॥ २२ ॥ कृपे० ॥ धावमाता अने पालक मावडी हो, हरि नामे सेठ दास ॥ पाकोगमनी नारी गोत्र न हो, मांहे सब उछाह ॥ २३ ॥ कृपे० ॥ कोलाहिक मेंदु कोइक आनथी हो, कोइ प्रीते कोइ जाय ॥ बहु जाणे माहन्यो पण थयो हो, अदत्त ने पूरो पूर्ण स्वभाव ॥ २४ ॥ कृपे० ॥ ए तप मोहोदुं शमताने मल्युं हो, गुरुत्त हीने शिवगुण ॥ जो जो कदापि ते जपे शिवगुण नवि थइ हो, तो नियमागुरगुरुजन ॥ २५ ॥ कृपे० ॥ पूत दृषि पूरा नक पधार ते गुणकी हो, ग्याय स्वाय रम गयं ॥ नृतगृहे पण जग इश्चा नहीं हो, पारणादिकने गयं ॥ २६ ॥ कृपे० ॥ दंपतीयं ते तप विधिनुं आराधियुं हो, नरदेव मित्र ने नेह ॥ तेणे पण तप स्वाया बहु करी हो, कइ शुन न मुग्ग गुग एह ॥ २७ ॥ कृपे० ॥ तप संपूर्ण विधिशुं उजमे हो, मास देवे शिणगार ॥ गुणनी पोषणा अनुजनी तोरणा हो, कीधी तेणे बहु सार ॥ २८ ॥ कृपे० ॥ संयम अंते सेइ काल करी हो, थया अच्युतेंद्र ॥ अशोकश्री पण तप सामानिक सुर थइ हो, जाणे जेम धर्मेंद्र ॥ २९ ॥ कृपे० ॥ अच्युतेंद्र चवि श्रीचंद्र तु थयो हो, तारो मित्र सुर जेह ॥ चंद्रकला जे तरुणी ताहरी हो, थइ पूरवले नेह ॥ ३० ॥ कृपे० ॥ नरदेव ते पण नयमांहे नमी हो, सिंहपुरे थयो मित्र ॥ धरण नामे ते शत्रुंजय सेवते हो, थयो गुणचंद्र अति दीप्र ॥ ३१ ॥ कृपे० ॥ दास अने धावमाता जे पालवी हो, ते थया पुण्यने योग ॥ लक्ष्मीदत्त लक्ष्मीवती जेणे तुं पालियो हो, पूर्व स्नेहने योग ॥ ३२ ॥ कृपे० ॥ गोत्र नारी ते सुर चइने थइ हो, राजसुता सुत नारी ॥ मुख्य जय ते थया जोगिनी हो, नीली मोहिनी अवतार ॥ ३३ ॥ कृपे० ॥ एह चरित्र सवि पूरव जव तणुं हो, सांभलुं भरी बहु हेज ॥ ज्ञानविमल मति सूरीश्वर थकी हो, वधीयुं धर्मनुं तेज ॥ ३४ ॥ कृपे० ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते सुणी सुणने उपन्यु, जातिसमरण सेण ॥ सूरिए कह्युं तेम परगटे, दीठा नयना नेण ॥ १ ॥ चंद्रकलादिक जे प्रिया, तेले पण निज नव दीठ ॥ लिये पण तेम दीक्षा, गुरुवचन लागां मीठ ॥ २ ॥ सुग्रीव नामनी जे सुता, जातिसमरण योग ॥ रत्नवतीयें स्नेहथी, श्रीचंद्र वर्यो गतशोक ॥ ३ ॥ श्रीचंद्रे पण स्वामीया, विद्याधर ते सर्व ॥ रत्नचूड पण अपराध जे, गुरुवाले तजी गर्व ॥ ४ ॥ तिहां मणिचूड रत्नध्वज, नमे मांहोमांहे ॥ बहु संपाले, थापीने, वेगाथे पुरमांहे ॥ ५ ॥ दक्षिण उत्तर श्रेणिना, विद्याधरना राय ॥ सेइ निज

धन ने सुता, आवी श्रीचंद ते परणाय ॥ ६ ॥ रत्नचूला ने रत्नवती, मणिचूला मणिमाल ॥ रत्नकंतादिक अपर जे, खगपुत्री सुकुमाल ॥ ७ ॥ बहु परणे बहु उत्सवे, करमोचन बहु दीध ॥ विद्या गगन ते गामिनी कामरूपिणी सिद्ध ॥ ८ ॥ एक शत दश अधिका अछे, जे विद्याधर नूप ॥ सुग्रीवादिक ते मली, उत्सव करे अनूप ॥ ९ ॥ विधिशुं श्रीचंद नूपने, सिद्धिशृंग शुन्न वाम ॥ विद्याधर चक्रीपणुं, विस्तरथी दीये नाम ॥ १० ॥ यात्रा शाश्वत चैत्यनी, विविध प्रकारे करेइ ॥ माता पिता परिवार युत, मनमां हर्ष धरेइ ॥ ११ ॥ नगरी विद्याधर तणी, जोइ सकल धरी प्रेम ॥ विद्याधरशुं परिवर्यो, शोने मणि जेम हेम ॥ १२ ॥ विद्याधर वर सैन्यशुं, करे विचित्र आकाश ॥ रत्नकांति सौदामिनी, चमके नूषण नास ॥ १३ ॥ निशाणध्वनि गीतशुं, गंजे अरिजन तास ॥ मद करता मातंगशुं, सिंचे नूतल वास ॥ १४ ॥ शुक्लध्वज बगली फुरे, दारिद्रताप विलास ॥ सघले सस्य वधारतो, शोषे कुमतिजवास ॥ १५ ॥ सज्जन मोर उल्लासतो, श्रीचंद नृप जलधार ॥ अपर राजगृह तेजनो, संधे सर्व प्रचार ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ ११६१ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ अंधरीयोने गाजे हो, नटियाणी राणी अंब चूए ॥ ए देशी ॥

॥ आवे कुशस्थल नयर, साज सामहीने हो ॥ चंद्रकलाना वाहाला रायजी ॥ रंनाथंन उन्नावी, तोरण बंधावे हो ॥ गोरीना वाहाला रायजी ॥ १ ॥ मंचोनमंच मंमावे, स्वस्तिक पूरावे हो ॥ चंद्रक० ॥ श्रीखंम कुंकुम घारि, शेरी उटकावे हो ॥ गोरीना० ॥२॥ सार शृंगार सफार, सज्जन पहिरावे हो ॥ चंद्र० ॥ मुक्ताफलनी माल, कंठे ठवरावे हो ॥ गो० ॥ ३ ॥ अदत्त पात्र अपात्र, कर ग्रही वधावे हो ॥ चं० ॥ बंदीजनना थाट, नाट कवितायें गावे हो ॥गो० ॥४॥ नावे गाये नव नव गीत, दान अवारित पावे हो ॥ चंद्र० ॥ खेचर नूधर वृंद, परवरीयो परिवारे हो ॥गो०॥ ५॥ गोखे जोखे वेसी, नागर जन निरखे हो ॥चं०॥ सेवी तो सवि लोक, कोक दिवाकर देखी जेम हरखे हो ॥ गो० ॥ ६ ॥ एम पेसे पुरमांहि, बांही ग्रहीने हो ॥ चं० ॥ आवी बेठा तखत, बखत आधीने हो ॥ गो० ॥ ७ ॥ हवे कुंमलपुर राय, पोले पेसारे हो ॥ चं० ॥ करी प्रणाम सुखदाय, आगल बेसारे हो ॥ गो० ॥ ८ ॥ मोहोटां नेटण मूके, आगल वानरी मूके हो ॥ चं० ॥ सन्धने

करी प्रणाम कहे ताम, अपराध खमजो हो ॥ चं० ॥ ज
थयुं अचरिज, जोयाने हुके हो ॥ गो० ॥ ए ॥ कोण ए कीदयो अपराध, पूछे गजानन हो ॥ चं० ॥
कीधो अणजाण, ते मचि सहेजो हो ॥ गो० ॥ १० ॥ हवे जनकनो लही आदेश, कृष्णांजन नेत्रे
ते कहे आप चरित्र, करी निज कोमल मन हो ॥ गो० ॥ ११ ॥ प्रभु सांगे श्रीचंद्र, विन-
हो ॥ चं० ॥ नयनांजनथी तेणि वार, सुरसुंदरी गम सहु देखे हो ॥ गो० ॥ १२ ॥ सगरा साभू पाय,
तहीने माने हो ॥ चं० ॥ लज्जाये नीचे वदन, नमतीने मन गमती हो ॥ गो० ॥ १३ ॥ अरिमर्दन नृपाल,
नमीने अंतःपुरे हो ॥ चं० ॥ जावे मलीयो माथ, सुख पूरे दुःख चूरे हो ॥ गो० ॥ १४॥ हवे आवे
निज सुतने ते निंदे हो ॥ चं० ॥ आव्यो ते मदनपाल, श्रीचंद्रना पद वंदे हो ॥ गो० ॥ १५ ॥
निखनी माथ, मोहनी नामे निश्री हो ॥ चं० ॥ लेइ रतन अंबार, सुभट सहु नेत्री हो ॥ गो० ॥ १६ ॥
श्रीचंद्र नृप भरतार, गेह वनावीने रहे हो ॥ चं० ॥ श्रीजिन धर्म प्रधान, वास ब्रह्मचारिणी वहे हो ॥ गो० ॥
॥ १७ ॥ पादुकाने प्रणाम, करती निगमती हो ॥ चं० ॥ सफल जनम करे एम, जयजय उतरती हो ॥ गो०
॥ १८ ॥ शिवमती ब्राह्मणी जेह, तस पतिने आपे हो ॥ चं० ॥ नायकपुरनो देश, हरी धन आपे हो ॥ गो०
॥ १ए ॥ ते धन सघले गाम, खरचे ने अर्चे हो ॥ चं० ॥ धणी थया तस देह, अपर ते कोशे विरचे हो ॥
गो० ॥ २० ॥ विद्यावले मचि देश, साधे ने वली वाधे हो ॥ चं० ॥ विद्याधरने सहाय, त्रणे खंडे साधे हो ॥
॥ २१ ॥ चतुरंगी दल बल बुद्धि, अनिनव शचीपति हो ॥ चं० ॥ पूरे प्रजानी आश, रामने गाती हो ॥
गो० ॥ २२ ॥ जे जे इछे चित्त, ते ते मचि आवे हो ॥ चं० ॥ देश दीक्षामांहे, कीर्त्ति जगावे हो ॥ गो० ॥
॥ २३ ॥ कंचन नरने योग, पारसपाषाणे हो ॥ चं० ॥ दुःजन दरिद्रता नाश, जग कीधो निज पाणे हो ॥
गो० ॥ २४ ॥ षड्ऋतु जोगविलास, विविध रसे माणे हो ॥ चं० ॥ जाणे जिणि परे दास, षट् शत्रुना सुर
आणे हो ॥ गो० ॥ २५ ॥ हवे चिंते मनमांहि, प्रतापसिंह नृपति हो ॥ चं० ॥ करीये राज्याभिषेक, करीये
अधिपति हो ॥ गो० ॥ २६ ॥ सघलुं वंछित थाय, पुण्य सखाइ हो ॥ चं० ॥ ज्ञानविमल सूरिराय, कहे
सुखदाइ हो ॥ गो० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोल सहस जनपद धणी, गज रथ तुरग सुभट ॥ हरि परे प्रभुता जोगवे, गिरुउ गुणगह गट्ट ॥ १ ॥

रुदिन शुनयेला लगन, विधिशास्त्रोक्त प्रमाण ॥ ते खग नगपति साखशुं, करे अजिषेक मंमाण ॥ २ ॥ एवं प्रमाणे पूर्ण होइ, मोहोटो राज्याजिषेक ॥ निपजावे बहु मेलवी, ठेक पुरुष सविवेक ॥ ३ ॥ श्रीराजाधिराज कस्या, श्री श्रीचंद नरेश ॥ एक छत्र महि जोगवे, टाले सकल कलेश ॥ ४ ॥ पटदेवी चंद्रकलाविधि, सर्व अधिक ते थापी ॥ पट्टराणी तेहथी अधो, सोल अवर तिहां ठापी ॥ ५ ॥ पट्टराज्ञीनामानि ॥ कनकावलीने पद्मगिरी, मदनसुंदरी जाण ॥ रत्नचूला ने रत्नवती, प्रियंगुमंजरी जाण ॥ ६ ॥ मणिचूला तारालोचना, गुणवती चंद्रमुखी जेह ॥ चंद्रलेहा तिलकमंजरी, कनका कनकावती नेह ॥ ७ ॥ सुलोचना ने सरस्वती, वली तस हेठे गोल ॥ एम बत्रीश पट्टराणीयो, साथे करे कल्लोल ॥ ८ ॥ तेहथी हेठे सोलसय, राणीनो परिवार ॥ चंद्रावली रत्नावली रत्न, कांता धनवती सार ॥ ९ ॥ लावण्यरूप सौजाग्यनी, केलि निकेतन तेह ॥ तेह साथे पण अति घणो, राखे जाखे नेह ॥ १० ॥ चतुरा कोविदा आदे देइ, जोग तरुणी पांच हजार ॥ प्राच्य जोगकर्मे मली, जोगवे तेह उदार ॥ ११ ॥ चक्रवर्त्ती परे नवनवां, करी विद्यावले रूप ॥ निज इच्छाये विलसता, तेम तेम श्रीचंद नृप ॥ १२ ॥ हवे सुग्रीव खगने दीये, उत्तर श्रेणिनुं राज्य ॥ रत्नध्वज मणिचूडने, दक्षिण श्रेणिनुं राज्य ॥ १३ ॥ जय विजयादिक बंधुने, दीधा केता देश ॥ चारेने सुखीया कस्या, टाल्या सर्व कलेश ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ १२०२ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ अढीयानी देशी ॥

॥ महिमंडलमां प्राज्य, धर्म तणुं साम्राज्य, पसराव्युं तेणे ए, हर्ष धरी घणो ए ॥ १ ॥ जिनना धवल विहार, मानुं नूजामिनी उरहार, तुंग तोरण कस्यां ए, जिनबिंबे जस्यां ए ॥ २ ॥ शतगमे शत्रुकार, नहीं कोइ मुख नाकार, पुण्कर जलधरु ए, के दाने सुरतरु ए ॥ ३ ॥ हवे श्रीचंद विद्याधर चक्रवर्त्तीना परिवारनी संख्या लखीयें छीयें ॥ मंत्री सोल हजार, देश तणा अधिकार, सोंप्या तेहने ए, धर्मरुचि जेहने ए ॥ ४ ॥ सोल सय मुख्य प्रधान, जे वली बुद्धिनिधान, सुमत धारकु ए, पाप निवारकु ए ॥ ५ ॥ महामंत्रीश्वर सोल, लखमण प्रमुख अमोल, श्रावकगुण जस्यो ए, राधि शिर ते कस्यो ए ॥ ६ ॥ एक श्री गुणचंद मित्र, सहु शिर तेह

सचित्र, शुभ कुंभ एकठा ए, मद्दियां गामटां ए ॥ ७ ॥ आप छतरतो तेह, ताणे यक्षु जे तेह, सचि सचिवादिक ए, रहे नहना थका ए ॥८॥ अथ चतुरंग दळसंख्या ॥ लाख चेंतालीश नाग, दशकोडि तुरंगम लाग, रथ शकट फरलडा ए, येगर तेटला ए ॥ ९ ॥ सुभट अडतालीश कोडि, धनुर्धरनी करे होडि, कर जोडी रहे ए, आणा शिर वहे ए ॥ १० ॥ सेनानी समुदाय, धनंजय मुख्य कहाय, ते पाखे रहे ए, सेनापिरति वहे ए ॥ ११ ॥ चेंतालीश हजार, तुंग मालाध्वज सार, चाटे गगनने ए, हसे मनु ईन्द्रने ए ॥१२॥ नरवाहन जे यान, ते ध्वज संख्यामान, शिबिकादिक घणे ए, परिकर एम भणे ए ॥ १३ ॥ वाजित्र ते परमाण, नहि संख्या नीशाण, जाणथी अधिक ते ए, तेजनो पुंज ते ए ॥ १४ ॥ अमर छत्रना धार, अंगरक्षक सुखकार, पार न पामता ए, नित्य शिर नामता ए ॥ १५ ॥ कुंजरादिक जे खवास, पासे रहे उल्लास, सेवा सारता ए, रिपुनय धारता ए ॥ १६ ॥ हरितारक जे भट्ट, कविजन केरा थट्ट, सवना अहोनिशे ए, दान तणे वशे ए ॥ १७ ॥ वीणावत्यादिक सार, गायनना परिवार, नित्य नित्य थोवगे ए, धन देइ कला घगे ए ॥ १८ ॥ साइना सम राम, जोडी जामिनी जाम, जाणे प्रीतिथी ए, राजानी नीतिथी ए ॥ १९ ॥ वरताने अमारी, नहीं कांइ मरकी मारी, इति उपद्रवा ए, नाठा करी रया ए ॥ २० ॥ व्यसन निवारे दूर, सज्जन वंछित पूर, धर्मनी नीक ते ए, दया सघळे रहे ए ॥२१॥ त्रस घस करी धन देय, वरतावे जस जेय, वर्ण अढारमां ए, जिनधर्म मारमां ए ॥ २२ ॥ पोढी पौषधशाल, तेम मठ पर्व विशाल, घन वाडी समां ए, चैत्य यश निलयमां ए ॥२३॥ एकेक गोकुल हजार, ए सवि संख्या सार, कहीए केटला ए, जीर्ण समारे तेटला ए ॥ २४ ॥ माता पिता परिवार, जिहां विधिपूर्वक आचार, तीर्थनी यातरा ए, गरुरनी मातरा ए ॥ २५ ॥ बोधबीजनी वृद्धि, दर्शन ज्ञाननी शुद्धि, जिहां फरो नीपजे ए, जे याबापद भजे ए ॥२६॥ साधर्मिक वात्सल्य, नित्ये होये निःशल्य, गुणि आचारीया ए, शास्त्र संस्कारीया ए ॥ २७ ॥ वाजे अमारीनो ढोल, जिहां न देवाये पोल, जय जांजी गया ए, जयने जय थया ए ॥ २८ ॥ चाड चूगल ने चोर, न रह्यां तेहनां जोर, जोरे तस्करा ए, नासे निर्भय धरा ए ॥ २९ ॥ नित्ये विविध प्रकार, पूजा सत्तर प्रकार, जिनघरे आवते ए, गुणिजन गावते ए ॥ ३० ॥ गिरि गिरि गामो गाम, कोइ न एहवुं ठाम, जिहां जिनमंदिर ए, न होये सुंदरु ए ॥ ३१ ॥ अनृण करी सवि ग्राम, देइ दान निःसीम, षट् आवश्यकां ए, करे उद्यम थकां ए ॥ ३२ ॥ ज्ञान तणा भंडार, कीधा

तद्दया पार, कोण संख्या करे ए, सघळे विस्तरे ए ॥ ३३ ॥ पाळे जिननी आण, दुःस्थित भोज भेराण, पूज्य पूजे सदा ए, पितर प्रणमे मुदा ए ॥ ३४ ॥ वावे धन शुभ खेत, सज्जनशुं बहु हेत, राखे सर्वदा ए, विहडे नवि कदा ए ॥ ३५ ॥ कुव्यापार निषेध, टाळी पापनो वेध, पञ्जपर्वे करे ए, ध्यान भलुं धरे ए ॥ ३६ ॥ जे करे धर्मनां काम, श्रद्धा गुणे अभिराम, जिन आणा थकी ए, भक्तिनी रुचि छकी ए ॥ ३७ ॥ इत्यादिक आचार, करता शुभ व्यवहार, जिनशासन लही ए, ज्ञानविमल सूरे कही ए ॥ ३८ ॥ सर्व गाथा ॥ १२३८ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ एम करतां बहु काळ, जातो पण जाण्यो नहीं ॥ धर्म अर्थ उजमाळ, काम अर्थ त्रय साधता ॥ १ ॥ चंद्रकळानी कुख, चंद्रस्वप्न सूचित थयां ॥ अंगज गत जस दुःख, पूर्णचंद्र नामे कह्यो ॥ तस जन्मोत्सव तुंग, कीधा देशमां अति घणा ॥ अवर राणीने चंग, पुत्र अनेक सोहामणां ॥२॥ शोभे नृप ते साथ, श्रीचंद्र चंद्र परे सदा ॥ पण निकलंकी आथ, माणे बहु परे सर्वदा ॥ ४ ॥ हवे नृपति महा मल्ल, पत्नी शशीकळा तणी ॥ प्रेमकळा इति नाम, लावण्यरूप कळा घणी ॥ ५ ॥ बंधु एकांग वरवीर, तेहने परणावे तिहां ॥ अति उत्सव नरधीर, मन मोजे माणे बहु ॥ ६ ॥ एम करतां सकुटुंब, वासर जाये सुखमां ॥ करे धर्म अविलंब, श्रावकनो अति हर्षमां ॥ ७ ॥ धर्म नरेसर राज्य, दीपाव्युं अति निर्मलुं ॥ राजऋषि परे रूड, न्याय रीते पाळे भलुं ॥ ८ ॥ हवे तेणे समये उद्यान, मुनिने वृंदे परिवर्या ॥ आवे सूरी प्रधान, सुवृत सूरि अलंकर्या ॥ ९ ॥ जाणे धर्मना पुंज, मूर्त्तिमंत सोभागीया॥ उतरीया वनकुंज, चरणकरण गुण रागिया ॥१०॥ तत्स्वोपज्ञप्रक्षेप ॥

॥ ढाल ॥

॥ हुं तुज साथे नहीं बोलुं माहारा वाहाला रे ॥ ए देशी ॥

पंच महाव्रत दशविध यतिधर्म, सत्तर संयम भेद पाळेजी ॥ वैय्यावच्च दश नवविध ब्रह्मह, वाणी भली अजुवाळेजी ॥ १ ॥ ज्ञानादि त्रय बारे भेदे, तप करे जे अनिदानजी ॥ क्रोधादिक चारेनो निग्रह, ए चरण- सित्तरी मानजी ॥ २ ॥ इति चरणसित्तरी ॥ चउविध पिंड वसति वस्त्रपात्र, आहार निर्दूषण ते लेवे जी ॥ सुमति पंच वळी पडिमा बारह, भावन बारह सेवेजी ॥ ३ ॥ पंचविस पडिलेहणा पण इंद्रिय, विषय विका-

रथी धारेजी ॥ त्रण गुप्ति ने चार अनिपण, इत्यादिक संभारेजी ॥ ४ ॥ करणसित्तरी पडवी संचे, गुण अनेक वळी धारेजी ॥ संयमी साधु ते तेहने कहिये, बीजा नवि नाम धारेजी ॥ ५ ॥ ए गुण विणु प्रभुग्या बोली, आजीविकाने तोलेजी ॥ ते षट् काय असंयमी जाणो, धर्मदास गणि बोलेजी ॥ ६ ॥ ज्ञानविमल गुरु आण धरीने, संयम शुद्ध आराधोजी ॥ जेम अनोपम शिव सुख साधो, जगमां सुजश वाधोजी ॥ ७ ॥ इति चरणकरण सित्तरी० ॥ दोहा सोरठी ॥ आवी नावे दीप, चलणाके प्रभावणी ॥ मनु तुम्ह वंछित सिद्ध, आव्या सूरि महागुणी ॥ ११ ॥ दीसे थयाड ताम, मन इच्छित धननिधि पणी ॥ जन्म तरंग जो नाम, जोणवता गुटे नहीं ॥ १२ ॥ प्रतापसिंह नृप ताम, हरख्या गुरु आगम सुणी ॥ ज्युं केकी घननाम, आवे तव वंदन भणी ॥ १३ ॥ गांतःपुर श्रीचंद्र, मित्रादिक साथे करी ॥ शेठ शेठाणी जेह, आवे ते उलट धरी ॥ १४ ॥ नमी सागीश्वर पाय, बेसे यथोचित स्थानके ॥ विधिपूर्वक नर राय, नायक परे पद संचरी ॥ १५ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ लाख फ्लोली शरयटे नाखुं, साधुं सुंयायण धाल्यां रे मारी मही रे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ धर्मज्ञान दीये आचारिज, मांडे देशना मोहोटी रे, सुणो नायी राजा ॥ आठे धर्म हवे ताजा रे ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ ए संसारमां सुख करी जाणे, तेहनी मति तो खोटी रे ॥ सु० ॥ १ ॥ एह संसारमां धर्म सार छे, धर्म ते जे जिरादांगे रे ॥ सु० ॥ जे करतां शिव सुख पामीजे, नासे कर्मना अंश रे ॥ सु० ॥ २ ॥ तेह धर्म जिने द्विविध प्रकारे, भाख्यो नयनिश्चितकार रे ॥सु०॥ सर्वविरति देशविरतिन नामे, अणगार ने सागार रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ त्रिविध करण योगे पचख्खाणे, पंच महाव्रत जाणे रे ॥ स०॥ दशविध यति प्रमुखज धर्मह, पंचाचार प्रमाणे रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ पंच समिति त्रण गुप्ति परखो, सरखो न पहवी बीजो रे ॥ सु० ॥ शीघ्रमेव शिवगतिने आपे, वीतराग नाये सिरखजो रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ आ संसारमांहे ए आवे, उत्कृष्टो आठ वारे रे ॥ सु० ॥ गुणी संयमनी ए रीत जाणो, अगुणी अनंतीवारो रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ अवर धर्म श्रावकनो कहीए, सम-कित ने देशविरति रे ॥ सु० ॥ विरतिरहित पण विरति न आवे, विषय कषायनी सरती रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ निःशंकादिक निरतिचारे, समकित गुणने धारे रे ॥ सु० ॥ जिनपूजा बहुविध विधसेती, करतो निज भव

गारे रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ पूजाथी होये चित्त समाधि, चित्त प्रसन्ने शुज्ज ध्यान रे ॥ सु० ॥ ध्यानथी होये मोक्ष अनोपम, मोक्षे सुख असमान रे ॥ सु० ॥ ए ॥

॥ यतः ॥ पूयाए मणसंती, मणसंतीए सुहावहं झाणं ॥ सुहझाणाउ मुक्खो, मुक्खे सुक्खं अवाबाहं ॥ १ ॥

॥ पूर्व ढाल ॥ ते पूजा ठे डुविध प्रकारे, द्रव्य जाव सुविचारे रे ॥ सु० ॥ द्रव्य तणा ठे जेद अनेकह, पण अमत्तर प्रकारे रे ॥ सु० ॥ १० ॥ सार सार जे द्रव्य जगतमां, ते पूजामां ल्यावे रे ॥ सु० ॥ ते द्रव्यपूजा पूरण करतो, अच्युत कड्प लगे जावे रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ अंग अग्रपूजामां ते सवे, जावपूजामां जेली रे ॥ सु० ॥ उत्कृष्टी जावपूजामां संयम, साधतां होय शिववेली रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ यतः ॥ उक्कोसं दवपुए, आराहिय जाइ अचुयं जाव ॥ जावत्थवेण पावइ, अंतर मुहुत्तेण निवाणं ॥ ढाल पूर्वली ॥ जिन नमन चित्त-मने ध्याने, फलना पार न लहीए रे ॥ सु० ॥ तोही पण जनने समजाया, ए गाथाथी लहीए रे ॥ सु० ॥१३॥ यतः ॥ गाहा ॥ मणसा होइ चउत्थं, छठं फलं उठियंमि संजवइ ॥ गमणस्स य आरंजे, होइ फलं अठमो वासो ॥ १ ॥ गमणे दसमं तु जवे, तह चेव डुवालसंमि किंचि गए ॥ मग्गो पक्खोवासो, मासो वासं च दिठेण ॥ २ ॥ संपत्ते जिणजवणे, पावइ छम्मासीयं फलं जीवो ॥ संवछरियं च फलं, दारपए संठियो लहइ ॥ ३ ॥ पायाहिणेण पावइ, वरिससय फलं तउ जिणे महिए ॥ पावइ वरिस सहस्सं, अणंतपुणं जिणे थुणिए ॥ ४ ॥ तत्र च ॥ सयं पमज्जेण पुणं, सहस्सं च विलेवणे ॥ सहस्सं अप्पिया माला, अणंत गीय वाइअं ॥ ५ ॥ ए गाथा प्राकृतबद्ध पूर्वाचार्यकृत दशसहस्र पद्मचरित्रने विषे ठे ॥ ढाल पूर्वली ॥ ते जणी जिनपूजाथी लहीए, तीर्थंकर पद रूडां रे ॥ सु० ॥ समकित ने देशविरतिनी शोजा, ए श्रुतवचन न कूडां रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ वली देशविरति बार व्रत धारी, ते श्रावकगुण जारी रे ॥ सु० ॥ श्रावकनी करणी शुद्ध करतो, लहे शिवगतिनी नारी रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ द्रव्यपूजाथी वधती जाणो, जावपूजा संवर रूपा रे ॥ सु० ॥ ते तो साधुधर्मने योग्या, आगल करे अरूपा रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ मणिमय जिनघर स्वर्णनी प्रतिमा, करावे यद्यपि जावे रे ॥ सु० ॥ ते पण तप संयमने तोले, द्रव्यपूजा ते नावे रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ यतः ॥ कंचण मणिसोवाणं, थंज सहस्स सयं सुवण्ण तलं ॥ जो कारिज्जइ जिणहर, तउवि तव संजमो अहिउं ॥ १ ॥ पिंमस्थ पदस्थ अने रूपस्थ, रूपातीत चउजेद रे ॥ म० ॥ जन्मराज्य श्रामण्यावस्था, ए पिंमस्थना जेद रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ पदस्थ ते

केवळज्ञानावरण्या, काय्य मरण के प्रतिमा रे ॥ गु० ॥ क्यातीत ते सिद्धावस्था, ए गति धर्मध्याननो महिमा रे ॥ गु० ॥ १ए ॥ तेह नाणी जे दिलमां आवे, तेह धर्म चित्त धारो रे ॥ गु० ॥ जे मद्दिये ते निर्मळ चित्ते, भरतां जय निसारो रे ॥ गु० ॥ २० ॥ एम श्री ज्ञानविमळ गुरुवाणी, सुणी हरख्या मनि प्राणी रे ॥ गु० ॥ हवे धर्म होंसे उजमाळा, प्रतापसिंह नृपाळा रे ॥ गु० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ १२७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रतापसिंह राजा हवे, मन वैरागी संत ॥ सूर्यवती आदि सहु, राणी अवर गुणवंत ॥ १ ॥ लक्ष्मीदत्त लक्ष्मीवती, मतिराजादि प्रधान ॥ हियमां हेजे उजमाळां, संयमने सावधान ॥ २ ॥ घर आवी नावी मने, ए संसार असार ॥ जीवितनुं फळ एह छे, जे लीजे संयम भार ॥ ३ ॥ अछाइ महोत्सव करे, पूजा विविध प्रकार ॥ दीये दान अवळकपणे, जेम पुष्कर जलधार ॥ ४ ॥ श्री श्रीचंद्र नरपति तणी, मागे अनुमति तेह ॥ सहस पुरुषनुं वाहिए, करे शिबिका तेह ॥ ५ ॥ प्रत्येके पणी पेरे करे, उत्सवनुं मंडाण ॥ दीक्षा लेइ गुरुपाद कने, शुभ दिन शुभ प्रमाण ॥ ६ ॥ गुरु पण संयम तस दीये, विनयी दक्ष सुशिष्य ॥ ग्रहणा ने आसेवना, शिक्षा धारे दक्ष ॥ ७ ॥ केइ तिहां समकित आदरे, देशविरति ले केइ ॥ पणी परे श्रीसूरीश्वरे, ज्ञान मधुर लिहां लेइ ॥ ८ ॥ पत्नी सहित श्रीचंद्र नृप, लीये समकित अनुकूळ ॥ बार व्रत श्रावक तणां, ते पण शिवतरु मूळ ॥ ए ॥ नित्य प्रत्ये अभिग्रह लीये, नियम तणा परिमाण ॥ ते केताइक दाखवुं, नाम थकी तस ठाण ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ १२८२ ॥

॥ ढाळ चोवीशमी ॥

॥ साहीजी हो जानिरो कारण मारे को नहींजी ॥ अथवा वीर वखाणी राणी चेलणा ॥ ए देशी ॥

॥ हवे समकितने आदरेजी, आठ आचार समेत ॥ निःशंक निःकंख प्रमुखथीजी, चार आगार, उपेत ॥ १ ॥ साधुजी तरण तारण तुम्होजी, अम्ह परिणामे उद्धार ॥ काजे कल्याणरस पूरियाजी, प्रजो तुमारा उपगार ॥ सा० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ देव अरिहंत निर्दोषियाजी, सुगुरु रत्नत्रय धार ॥ धर्म ते तम कह्यो आदरोजी, एह मुज समकित सार ॥ ३ ॥ सा० ॥ एह मुज यावज्जीव एजोजी, तत्त्वरूपे ग्रहुं एम ॥ जक्ति

तो गुणिपद विणु नहींजी, जव फले तो नहीं नेम ॥ ४ ॥ सा० ॥ हुं करुं श्री जिन सेवनाजी, पूजन करुं त्रण काल ॥ उजय टंके करुं नियमनाजी, ग्रहण संक्षेप उदार ॥ ५ ॥ सा० ॥ तेम षड्विध आवश्यक करुंजी, डुविध त्रिविध प्रकार ॥ त्रणसय सज्जाय काउस्सग्गनोजी, एक सहस गणुं ते नोकार ॥ ६ ॥ सा० ॥ लास्य प्रताप दिन दिन प्रतेजी, सात क्षेत्रे मली थाय ॥ वावरुं नित्यनुं धन सदाजी, धर्मे न करुं अन्याय ॥ ७ ॥ सा० ॥ तंबोल पान जोजन वलीजी, वाहण शयन दुगनी तिद ॥ मैथुन थूंक ने जूवटुंजी, दश आशातन नहीं नीति ॥ ८ ॥ सा० ॥ चुलसी आशातन जे कहीजी, टालवा खप करुं तास ॥ समकित बोल सगसठी ठेजी, अंगे आणेवा उल्लास ॥ ९ ॥ सा० ॥ चतुरशीत्याशातनानां प्राकृतकाव्यानि ॥ खेलं केलि सकलाकला कलयं, तंबोल मुग्गालयं गाली कंगुलिया सरीर धुवणं केसं नहे लोहियं ॥ जत्तोसं तय वित्तवंत दमणं विस्सामणं दामणं अन्निसेवणं रंधणं परिरकणं निस्सिहिया जंजणं ॥ इत्यादि श्राद्धविधिथी जाणवुं ॥ हवे समकितना सडसठ बोलनी गाथा लखे ने ॥ यतः ॥ चउसद्दहणा तिलिंगं, दसविणय तिसुद्धि पंचगयदोसं ॥ अठपन्नावण जूसण, लरकणपंचविहसंजुत्तं ॥ १ ॥ ठविहजयणागारं, ठन्नावणन्नावियं च ठठाणं ॥ इय सत्तसठी लरकण, नेय विसुद्धं च सम्मत्तं ॥ ढाल पूर्वली ॥ अवर पाखंम ने लिंगीयाजी, जे लौकिक कहे देव ॥ तेहनी सेवना नवि करुंजी, दान देवा तणी टेव ॥ १० ॥ सा० ॥ एणी पेरे समकित हुं सदाजी, पालवा खप करुं स्वामि ॥ अविधि आशातना टालवाजी, वधतो करुं परिणाम ॥ ११ ॥ सा० ॥ यतः ॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिण पन्नत्तं तत्तं, इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १ ॥ ढाल पूर्वली ॥ वली देव ज्ञान गुरुद्रव्यनोजी, जिहां थयो होय परिजोग ॥ तास संगति नवि आदरुंजी, नवि तस अर्थनो योग ॥ १२ ॥ सा० ॥ प्रथम अणुव्रत हवे आदरेजी, स्थूल प्राणातिपात ॥ विरमण जे त्रस जीवनुंजी, निरपराध नवि करुं पात, राजनीते तथा पात ॥१३॥ सा० ॥ स्थूलमृषावाद विरमण धरुंजी, जिनमत जेम न हेलाय ॥ तेणी परे बोलवा खप करुंजी, साम दाम जेद दंम थाय ॥ राजनीतिना चार उपाय, तिहां पण जूठ बोलाय ॥ १४ ॥ सा० ॥ अदत्त चउविधमांहे एकनुंजी, स्थूल विरमण करुं स्वाम ॥ ते पण निरपराधी तणुंजी, जेहथी समकित न होये वाम ॥ १५ ॥ सा० ॥ चोथे स्वदारसंतोषनोजी, परणित स्त्रीपरिमाण ॥ अवरनुं शील काया थकीजी, जावजीव पम मंमाण, पर्वदिने तास पच्चरकाण ॥ १६ ॥ सा० ॥ पंचमे व्रत परिग्रह

तणुं जी, नवविधनो रे विशेष ॥ त्रण खंड मंडल जे थयोजी, नियम ते अपर अशेष ॥ १७ ॥ सा० ॥ दिशि-
विरमण अथ एक गाढनुंजी, ऊर्ध्व वैताढ्य पर्यंत ॥ तिहुं त्रण खंडनी भूमिकाजी, तीर्थयात्रादि अधिकांत
॥ १८ ॥ सा० ॥ जोग ॥ उवजोगमांहे सदाजी, तेहनुं एम परिमाण ॥ अनर्थ अनंतकाय सर्वनुंजी, जाव-
जीव पच्चक्खाण ॥ १९ ॥ सा० ॥ तद्यथा ॥ सव्वाउ कंद जाइ, सूरणकंदो य वज्जकंदो य ॥ अल्लहलिद्दाय तहा,
अद्दं तह अल्ल कच्चूरो ॥ १ ॥ सत्तावरी विराली, कुंआरी तह थोहरी गलोइ य ॥ ल्हसणं वंस करिल्ला,
गज्जर तह लूणउं लोढी ॥ २ ॥ गिरिकणि किसल पत्ता, खीरसूय थेग अल्लमुत्थाय ॥ तह लोण रुक्खछल्ली,
खिल्लहडा अमयवल्लीय ॥ ३ ॥ महु मज्ज मंस नवणीय, पंचुंबरी रयणीभुत्त संधाणं ॥ विस हिम करग मट्टी,
कच्च गोरस विदलवत्ताइं ॥ ४ ॥ तुच्छफलं चलियरसं, अणंत फल फुल्ल तुच्छ बहुबीए ॥ इय बावीस अनक्के,
वज्जा वज्जियव्व पत्त फले ॥ ५ ॥ पंपोट विल्ल विकाइम, रिंगण य कागस गुंदाइ ॥ खसखस पिलू गंडर, गंगेटय
पत्त गोहहोय ॥ ६ ॥ रायण मउर कुलिंगड, जांबु टिंबरु अपक्क करमंदे ॥ वाइंगणी मडुय धामणी, गुरु बोरे
कच्चतूण तिल्ले ॥ ७ ॥ नवि जेमि उच्च धारे, जल गलिये मसण्ण फलं च समुद्दे ॥ कुदिणुदय द्दिय फागुण,
उड्ढंत नेमि नेव तिल्ले ॥ ८ ॥ अपरिमिय मन्नायं, नहु भुंजे फाल वेल एकइथा ॥ गममाणो नहु जक्के, देव-
गुरु दिट्ठि गयणे य ॥ ९ ॥ अंगाल वणह साडिय, भाडय फोडेइ कम्मजीवणयं ॥ तह दंत लक्ख रस विस,
केसह गायज्ज वणिज्जं ॥ १० ॥ कम्मं च जंतपिल्लण, निल्लंछण सर दहाइ सोसणयं ॥ दवदाण असइ पोसं, पण रस
एयाइ वज्जेमि ॥ ११ ॥ इत्यं पूर्वकथितमस्ति ॥ ढाल पूर्वली ॥ एम गाथा प्रमाणे धरयांजी, जोग उपभोग
व्रत जेह ॥ वस्त्र आभरण परिमाणनुंजी, प्रतिदिने जे लिहां तेह ॥२०॥सा०॥ आठमे अनर्थ विहुं विधेजी,
प्रथम व्रतनो ए भंग ॥ तेणि परे चउविध वर्जनाजी, गुण करे पंचमूल संग ॥२१॥सा०॥ आर्त्त रौद्र अपध्यान
विहुंजी, पापोपदेशनुं दान ॥ वली प्रमादे जीके आचरणजी, तेम वली हिंस्रप्रदान, अधिकरण होये निदान
॥ २२ ॥ सा० ॥ शस्त्र मुशल अग्नियंत्रनुंजी, ओषध मंत्र मूल तंत्र ॥ जैपग्य काठ तृण सुखडुंजी, जीवनां
गुज्झनर तंत्र ॥ २३ ॥ सा० ॥ काउनकण चोर ने मतीजी, जोयवुं तास निषेध ॥ जेहथी कामना गुण वधे-
जी, तेह सेवण प्रतिषेध ॥ २४ ॥ सा० ॥ सर्वथी एह भारी अछेजी, एह टल्ये मोहनी जाय ॥ दुष्कर एहने
टालवांजी, जे अनाभोगमां जाय ॥२५॥सा०॥ निल्ये टालुं एहवी भावनाजी, पण ते दोहेलुं सधाय ॥ ते भणी

उच्चरेजी, पडिक्कमणे पोसह ठाय ॥ २६ ॥ सा० ॥ धर्मना कार्यमांहे मनेजी, नाणवो अनरथ दंड ॥ नवम सामायिकने करुंजी, अहो रति चार अखंड ॥ २७ ॥ सा० ॥ दशमे देशावगाशिक व्रतेजी, व्रत छठाने परिमाण ॥ पण पर्वांक्तुने रयणीयेजी, गमन करुं पञ्चरकाण ॥ २८ ॥ सा० ॥ चउदश नियम नित्य साचवेजी, सचित्त इग्गाग ये जाणी ॥ विगय तिन फुड फल वारनांजी, शयण आसण अन्न जाणी ॥ सा० ॥ २९॥ धज्ज दश दिवसमां भोजनोजी, रात्रिनो होय चोविहार ॥ कारणे द्रव्य तिग अचित्तनांजी, लेवा ते अणाहार ॥ सा० ॥ ३० ॥ पोषधव्रत चउ पर्वनाजी, नवि करुं पापव्यापार ॥ नित्य संविभाग व्रत आदरुंजी, धाइ जे अणुव्रत धार ॥ अतिथि ते वर अणगार ॥ सा०॥ ३१ ॥ न्यायगं कल्पनीय जे होयेजी, तेम श्रद्धाये सत्कार ॥ षडविध एणी पेरे साचवुंजी, धारमुं व्रत सद्धार ॥ सा० ॥ ३२ ॥ एणी पेरे वार व्रत शक्तिसुंजी, आदरुं ताम अतिचार ॥ होये पंचोत्तरि समकित तणाजी, पांच ते जे अतिचार ॥ सा० ॥३३॥ पंच वली धर्म संलेखनाजी, सर्व गमे होये तेह ॥ एम पंचाशी अतिचार तेजी, जाणवा पण न आचरेह ॥ ३४ ॥ सा० ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप तणाजी, आठ आठ ने वार ॥ तेम तेम वीर्य आचारनाजी, शत एक चोवीश सार ॥ ३५ ॥ सा० ॥ एह अतिचारनी वर्जनाजी, तप करुं पाचुं आचार ॥ एम दुग तिग करण योगथीजी, एहवां व्रत हजो धार ॥ सा० ॥ ३६ ॥ हवे न डीसी कहे छे ॥ राय गुरु गण बल सुर तणाजी, अभियोग ने रे नियोग॥वृत्ति कांतार आजीविकाजी, ए षट् छंडीना योग ॥ सा० ॥ ३७ ॥ शेष आरंभ सघले वलीजी, त्रस अने थावर जीव ॥ शक्तिथी तास यतना करुंजी, प्रतिदिन सहिजे सही जीव ॥ ३८ ॥ सा० ॥ अरिहंत सिद्ध मुनि आपिनीजी, देव समकित गुरु साख ॥ चार आगारना यत्नथी जी, उच्चरे गुरुमुखे जाख ॥ ज्ञानविमल सूरि सास ॥ सा० ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुणनाधारक गुरु कन्हे, श्री श्रीचंद्र भूपाल ॥ वार व्रत एम पडिवजे, मेहली अवर जंजाल ॥ १ ॥ हवे सम्यक्त्वरूप कल्पतरु वखाणे छे ॥ समकित मूल जीव थडथा, गुणव्रत जिहां केदार ॥ व्रत समुदाय शाखा

फलित हुए ए जिह ॥ ३ ॥ यतः ॥ सम्मत्तमूलो गुणआलवालो, सिक्खप्पवालो वयगंधमालो ॥ गिहत्थधम्मो
फलेह मे मासय मुक्खमुक्खे ॥ १ ॥ एम गृही धर्मने आदरी, प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ प्रतापसिंह
परकप्पकरको, राजा प्रमुख, नवदीक्षित समुदाय ॥ ४ ॥ साधु सकल वली सूर्यवती, प्रमुख साधवी जेह ॥ प्रत्येके मुनि स्तुति
करी, करे आंसु घण नेह ॥ ५ ॥ चित्ते गुण संभारतो, घर पोहोतो श्रीचंद्र राय ॥ चंद्रकला राणी प्रमुख,
नागर जन समुदाय ॥ ६ ॥ संभारे जे गुण घणा, प्रजापालादिक जेह ॥ वली ते मुनिगण परिवर्या, देशी
वध्यो सनेह ॥ ७ ॥ केइ श्रीचंद्र नृप अनुमति, गुरु पण करे विहार ॥ साधु साधवी परिवर्यो, उपकृत जिम
दिनकार ॥ ८ ॥ भूतलने पावन करे, वर्षी देशना धार ॥ विविध सस्य निपजावतां, बोधबीज दातार ॥ ९ ॥
नवदीक्षित अणगारने, शिक्षा अनेक प्रकार ॥ सारण वारण चोयणा, पडिचोयणा प्रकार ॥ १० ॥ केइक
पूरव श्रुत भणे, केइक अंग अग्यार ॥ सांगोपांगे अभ्यासे, विनय तणा भंडार ॥ ११ ॥ सुमति गुप्ति नित्य
साचवे, चरण करण गुणधाम ॥ विषय कषाय निवारता, साधे संयम काम ॥ १२ ॥ मात पिता धन्य तेहनां,
धन्य तेहना अवतार ॥ द्रव्य भाव संयम तणा, गुण साधे निर्धार ॥ १३ ॥ छठ अठम तप आदरे, केइ करे
उग्र विहार ॥ आतपनादिकने सही, केइ वहे प्रतिमा चार ॥ १४ ॥ केइक अभिग्रह अति करे, केइ तप चार
प्रकार ॥ गुणपदवीने पदे चढ्या, एणी परे ते अणगार ॥ १५ ॥

॥ ढाल पचीशमी ॥

॥ वीर सुणो मोरी विनति ॥ ए देशी ॥

उपगारी अणगारजी, नहीं जेहने हो मद मोह विकार ॥ शम दमवंता साधुजी, क्रोध मानने हो नहीं
लोभ प्रचार ॥ १ ॥ उपगा० ॥ जस दर्शने हो होये कोडि कल्याण, नामे नवनिधि संपजे, गयां जेहनां हो
दुरित अहिठाण ॥ उ० ॥ ए आंकणी ॥ गुरु कहे शिष्यने हितकरी, तुमो यतना हो करजो निरधार ॥
जयणा धर्मनी मावडी, वली जयणा हो धर्म पालणहार ॥ २ ॥ उ० ॥ तप जपनी वृद्धि नीपजे, जयणाथी हो
होये मोक्ष तुरत ॥ जयणा ते जीव तणी दया, होये दर्शन हो वली ज्ञान संयुत ॥ ३ ॥ उ० ॥ दर्शन ज्ञान
चारित्रनो, जिहां एकठो हो होये संयोग ॥ ज्ञान क्रिया शिव साधने, एह मोहोटो हो जयणानो योग ॥ ४ ॥

. ० ॥ तप जप करे बहु आकरा, पण जयणा हो न होये घटमांय ॥ तो तिल तूस परे ते होवे, सुसढ परे हो जेम चारित्रनी ठांय ॥ ५ ॥ छ० ॥ एम निसुणी चेटक नृप कहे, प्रभु कोण थयो हो जेहनुं सुसढ नाम ॥ कृपा करी ते दाखवो, प्रस्तुतनुं हो पछे कहेजो नाम ॥ ६ ॥ छ० ॥ कहे गौतम गणि हितकरी, कथा तेहनी हो सुणो चेटक राय ॥ श्रेणिक आगल जेम कही, श्रीवीरे हो जे देशनामांय ॥ ७ ॥ छ० ॥ मूकी विकथा पातकी, पर तांतकी हो ठंको हित जाणी ॥ निद्रा आलस परिहरी, कान देइने हो सुणजो रे सुजाण ॥ ८ ॥ छ० ॥ यतः ॥ गाहा ॥ सुडु चिंतंवं कुणतो, जयण विहूणो न पावए सिद्धिं ॥ सुसढुव लहइ दुःखं, किंपुण जीवो तवविहूणो ॥ १ ॥ तप करतो पण ते लह्यो, त्रिण यतना हो जव केरुं दुख ॥ तप करे ने यतना नहीं, शुं कहेवुं हो ते केम लहे सुख ॥ वली तेहने दोयलो होये मुरक ॥ ए ॥ छ० ॥ अथ सुसढ कथा प्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ सिद्धारथ गुण जेहने, सिद्धारथ नृप जाति ॥ शासन नायक वीरने, नमी कहुं सुसढ अवदात ॥ चाल पूर्वली ॥ राजग्रही चैत्य गुण शील, समोसर्या हो श्रीजिन वर्द्धमान ॥ चउद सहस्र अणगारशुं, प्राति-हारनी हो संपद अभिराम ॥ १० ॥ छ० ॥ पर्षदमांहे प्ररूपता, यति हेते हो यतनानो धर्म ॥ यतना धर्मनी मांय छे, यतना थकी हो लहीए शिवशर्म ॥ ११ ॥ छ० ॥ चालवुं बेसवुं सूयवुं, वली भुंजवुं हो भाखवुं सवि काम के ॥ यतना पदशुं साचवे, तो साधे हो मुनि संयम धाम ॥ १२ ॥ छ० ॥ छिद्र अंजलिमांहे जेम गले, जल तेम गले हो कृत प्रौढां पाप ॥ आप गुणी निर्मल होये, वली तेहनी हो जग मोहोटी छाप ॥ १३ ॥ छ० ॥ यतना रहित संसारमां, फरे बहु परे हो दुःखीयो निरधार ॥ सुसढ परे बहु तप तपे, पण नवि लहे हो ते भवनो पार ॥ १४ ॥ छ० ॥ हवे गौतम केहेवा छे ते कहे छे ॥ भद्रक गुण वध रागीयो, वली जाण्या हो सवि विनयना भेद ॥ संपूर्ण श्रुत ज्ञानना निधि, गणि गौतम हो छे नाम अखेद ॥ १५ ॥ छ० ॥ अर्थ लहे सघला स्वये, पण सांभले हो धरी विस्मय चित्त ॥ अंजलि जोडी विनयशुं, जिनवयणे हो हरखे करी नित्य ॥ १६ ॥ छ० ॥ जेम राजानां वयणमां, प्रजा शिर धरे हो आणी बहु मान ॥ तेम गुरु भाखित सांभले, वली पभिवजे हो जे विनयी सुजाण ॥ १७ ॥ छ० ॥ ते गौतम प्रणमी कहे, प्रभु दाखीये हो ते सुसढ संबंध ॥ किहां थयो केम ते दुःख लह्यो, यतना विना हो लह्यो भव अनुबंध ॥ १८ ॥ छ० ॥ तव कहे स्वामी कृपा करी, सवि श्रमणने हो उद्देशी ताम ॥ सजल जलद अनुकारिणी, विस्तारिणी हो देशना अभिराम ॥ १९ ॥ छ० ॥

नरने अवंती देशमां, एक शेठ ते हो मंडुक इति नाम ॥ विप्र एक तिहां कणे वसे, सुज्ञशिव अने हो तेहनुं अभिधान ॥ २० ॥ च० ॥ जन्मदारिद्री दोभागियो, निःकृप अने हो नहीं करुणागात्र ॥ यक्षयशा तस नारजा, तेहने थयो हो एक दिन गात्रात ॥ २१ ॥ च० ॥ गर्भ थयो ते दुःख करे, बेटी जणी हो सुज्ञसिरी तस नाम ॥ जनम लेत माता मुइ, जुओ कर्मनां हो ए विषमां काम ॥ २२ ॥ च० ॥ कर्मथी सुख दुःख संपजे, वली कर्मथी हो सोभाग दोभाग ॥ कठिण कर्मथी अति घणां, आवी मले हो सवि कर्मविपाक ॥ २३ ॥ च० ॥ कहे गौतम स्वामी शुं कर्युं, इण दारिका हो किस्युं कर्म कुकर्म ॥ जातमात्र जननी मुइ, प्रभु दाखीये हो तेहनां कृत कर्म ॥ २४ ॥ च० ॥ ज्ञानविमल मति वीरजी ॥ कहे तेहनो हो पूरव वृत्तांत ॥ संत धरीने सांभले, गणिधरमुणि हो इंद्रभूति महंत ॥ २५ ॥ च० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इह भरते भरतें तिहां, धरणीप्रतिष्ठित नयर ॥ अरिमर्दन राजा तिहां, दूरे इति ने वयर ॥ १ ॥ सुज्ञसिरीनो जीव ते, पाछले भवे नृप नार ॥ वरकंता नामे भली, रूप कला गुण सार ॥ २ ॥ एक दिन तेणीये चिंतव्युं, पाप मने करी एम ॥ शोकय तणो सुत जो मरे, तो मुज आवे खेम ॥ ३ ॥ मुज सुतने तो सयल ए, राज्य होये निःशंक ॥ जो वली शोकय मरे कदा, तो भोग सकल मुझ संग ॥ ४ ॥ एम दुर्ध्यानथी बांधियुं, अशुभ कर्म तेणे नार ॥ नरि भवे दुःख अनुभवी, तिरक दुःखनी मारी ॥ ५ ॥ सुज्ञसिरी ए ते थइ, गोयम कर्मप्रयोग ॥ चिंतित मात्रतणे फले, मुइ माता इह तेण ॥ ६ ॥ जो चिंतितथी एम थयुं, तो शुं कृतनुं पाप ॥ जेह विपाकने अनुसरे, कडुआ तास विपाक ॥ ७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥

॥ पावा किसनपुरी, तुझ विण गढीयां छजर परी ॥ ए देशी ॥

॥ हे गौतम ए जीव अशेष, दुःखीयो सुखीयो होये कर्मविशेष ॥ जो जो कर्मदशा ॥ कर्म करे ते काम किस्यां ॥ जो० ॥ छपुर्नु दीसे बंधन काल, तास विपाक होये असराल ॥ जो० जो० ॥ १ ॥ जेम रण ध्यान मिथुन ने लाज, प्रेमव्यसन ए अंते आणावे राज ॥ जो० ॥ हिंसादिक अदत्त अबंभ, परिग्रह मेला करी करी

न ॥ जो० ॥ २ ॥ मधु मद्य मांस सुरा परदार, रयणीभोजन प्रमुख अनाचार ॥ जो० ॥ इत्यादिक बहु
आश्रवधार, सर्व तो लहे नरकप्रचार ॥ जो० ॥ ३ ॥ जे दुःख सहे ते कह्यां नवि जाय, थोडाथी ते अति बहु
थाय ॥ जो० ॥ हवे ते सुज्ञसिवो भूदेव, जीवावे ते धूया स्वयमेव ॥ जो० ॥ ४ ॥ चाटु वच बोलीने त्यांहि,
बहु नारीनां थण लेइ पाय ॥ जो० ॥ अति कष्टे करी सा जीवाय, वधतां दिन दिन दुजगा थाय ॥ जो० ॥
५ ॥ आठ वरसनी थइ सा बाल, तेहवे पड्यो बार वरषी दुःकाल ॥ जो० ॥ ते दारुण रणथी अधिकाय,
जननुं मान महत्व सवि जाय ॥ जो० ॥ ६ ॥ जाय सयणना सर्व सनेह, लाज मर्यादा जस कीर्त्तिनी रेह ॥
जो० ॥ धर्माधर्मनो नहीं होय विवेक, जे वारे वाधे भूखनो अतिरेक ॥ जो० ॥ ७ ॥ भक्ष्याभक्ष्यनो नहींय
विचार, छंडे मात पिता परिवार ॥ जो० ॥ जाति भातिनो नहीं व्यवहार, मातंगघरे पण करे आहार ॥ जो०
॥ ८ ॥ एवो कराल देखीने दुःकाल, सुज्ञसिवो द्विज चिंते तेणे काल ॥ जो० ॥ क्षुधा महामह भंगुर देह,
ग्रंथक मात्र धन नथी मुज गेह ॥ जो० ॥ ९ ॥ कांइ नथी जे ते वेचीने आप, अन्न रल लइ करुं प्राण थाप ॥
जो० ॥ तो परदेशे जइ परघर काज, करीने जठर भरुं शी तस लाज ॥ जो० ॥ १० ॥ परदेशे जावाने थयो
उजमाल, पण संबल विणु श्यारे हवाल ॥ जो० ॥ पीडे बहु क्षुधा राक्षसी अभिभूत, एम चिंते थइ भैरव
भूत ॥ जो० ॥ ११ ॥ मारी एह सुताने हेव, खाउं आमिषशुं प्राण धरेव ॥ जो० ॥ वली चिंते मन युक्त न
एह, वेचुं नगरमां केणहिक गेह ॥ जो० ॥ १२ ॥ धिक् धिक् मुजने निठुर आप, हा हा में चिंतव्युं महापाप
॥ जो० ॥ जे चिंतित दुष्टपणे मन चंड, ते दावानलथी अतिहि प्रचंड ॥ जो० ॥ १३ ॥ एम चिंतित कोइ
इभ्यर गेह, मूल्ये वेची लीये कण तेह ॥ जो० ॥ गोविंद द्विज श्रावक ऋद्धिवंत, आढक कंगुने मूल्य करी तंत
॥ जो० ॥ १४ ॥ हवे सुज्ञसिव वंजण नाम, ज्ञाति धिक्कारथी न रह्यो गाम ॥ जो० ॥ नरविक्रयी सघले अप-
मान, पामे एहवुं अठे निदान ॥ १५ ॥ ज्ञानविमल गुरु गुणमतिवंत, तेहवां काम न करे दुरंत ॥ जो० ॥ ते
भणी दुःखनुं करण दुष्काल, जेम तेम जाय तो चूके जंजाल ॥ जो० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे ते द्विज भमतो हुतो, दुर्जयना संस्कार ॥ पाम्यो तिहां पण लोकनां, वेचे लेइ लेइ धाव ॥ १ ॥ ...

कीधी हुं घणुं दिलगीर ॥ १ ॥ साहेबजी० ॥ हुं तो नरकी रे पडवा दिन नांह, हुं तो जाणतो रे सुण सुगुणी राइ ॥ में तो कीधी रे पापशील वांहि, थइ पंखी को गुनवचन सुणाइ ॥ सा० ॥ ए आंकणी॥ मोहथी नरतन हारीयो, में पर्युं न समकित रत्न ॥ जे मोक्षगमनुं बीज छे, नवि कीधो रे वळी ताम प्रयत्न ॥ सा० ॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि न आचरी, जिनराजपूजा द्रव्य भाव ॥ त्रिकाळ जिन स्तुति नवि करी, जे जगतारणि रे तरवा नाव ॥ सा० ॥३॥ पच्चक्खाण न आदर्यो, नवि कर्यो विविधशुं धर्म ॥ सामायिक पोसह नवि कर्यां, कर्यां तो नव रे हुंत शिथिल न कर्म ॥ सा० ॥ ४ ॥ शक्तिए न कीधुं तप घणुं, वळी पर्वतिथि तहि नांहि ॥ पर काजने परवश थइ, नवि ज्ञाननो रे अभ्यास मनमांहि ॥ सा० ॥ ५ ॥ परमोद केवळ आणीयो, जाणीयो, नहीं कांइ सार ॥ सज्झाय ध्यान न सेवीयां, नवि जाण्यो रे कांइ पंचाचार ॥ सा० ॥ ६ ॥ किंबहुना विषये रांचे में पोषीयो पापकुटुंब ॥ धर्मअंश जेणे सेव्यो नहीं, एम हार्यो रे नरतन अविलंब ॥ सा० ॥ ७ ॥ जो कारमे नहि सरस्यां, जे बहु घोर दुःख दातार ॥ ए कुटुंब सयणां अनुसरी, दुःखदायी रे ए जीव संसार ॥ सा० ॥ ८ ॥ निष्कारण उपगारीयो, जीवलोके धर्म सहाय ॥ ए परम बंधव सम सयण ए, हितकारी रे सुण निर्वृति-दाय ॥ सा० ॥ ९ ॥ निश्चय थकी ए सुण दीये, ते धर्म टाळे कर्म ॥ ते देव गर्भथकी होय, इम आदके रे छंडुं तेहनो मर्म ॥ सा० ॥ १० ॥ ए सामग्री होहेली, चतुरंग कहेयो दुर्लभ ॥ ए धर्म ध्रुव अक्षय अछे, मधुगामी रे नहीं जेहमां दंभ ॥ सा० ॥ ११ ॥ जे आयुषे साधीए, ज्ञान दर्शन चरणना योग ॥ कर अंजलि जळ परे जाय छे, ए जीवित रे वळी दश होय जोग ॥ सा० ॥ १२ ॥ बळ वीर्य पण दिन दिन घटे, जेम जाजके मृद-नांग ॥ धूणसढ़काठ तणी परे, ए असार जेह शरीरनो पिंड ॥ सा० ॥ १३ ॥ तप नाण चारित्र नवि चर्यां, वळी कर्यां आश्रव पंच ॥ माळ स्यंच जाणी विषयमां, अनाचारना रे कीधा बहुळा प्रपंच ॥ सा० ॥ १४ ॥ जरा राक्षसीने मुखे पड्युं, ए देह रोगनुं गेह ॥ बाळपणमां तरुणी तणी, छळिपाले रे में कीधो नेह ॥ सा० ॥ १५ ॥ ते तरुणमां रागी होइ, ते वृद्धनाये वैराग ॥ पळित शिर थयो पिंडीयो, मुखे लाळ रे गतदशन विभाग ॥ सा० ॥ १६ ॥ जळबिंदु चंचळ जीवितं, क्षणरंग नेगुर देह ॥ मूर्छा किनी ए उपरे, ए कुबडा रे नारीनो नेह ॥ सा० ॥ १७ ॥ ते नारी मूरखीने गमे, ए पाप करम अथ संग ॥ जरा न आवे ज्यां लगे, नहीं देह रे वळी रोगनो संग ॥ सा० ॥ १८ ॥ ज्यांगी न इंद्रियविषयनी, जिहां लगे बुद्धि विलास, तिहां लगे उद्यम धर्मनो, करे

ज्येष्ठ पुत्र वेश्या साथे, जोगवतो एम अनीति ॥ सा० ॥ ७ ॥ ते० ॥ रोषारुण नयणां करी, जणे सुत जननीने देखी ॥ सा० ॥ जा जारे इहांथी फरी, नहीं तो मारीश तुज संपेखी ॥ सा० ॥ ए ॥ ते० ॥ एम अनिष्ट वयणां सुणी, मन माहणी लहे विखवाद ॥ सा० ॥ मूर्छित प्रसक धरणी ढली, जेम काष्ठ निश्चेष्ठ प्रमाद ॥ सा० ॥ १० ॥ ते० ॥ ते निसुणी गोविंद धणी, सिंचे चंदन शीतल नीर ॥ सा० ॥ मूर्छाकारण पूछीयुं, सा पत्नणे प्रतिपक्ष नीर ॥ सा० ॥ ११ ॥ ते० ॥ स्वामी हुं तंडुल हेते, वाल्हा गइ घरे पुत्र अकज्ज ॥ सा० ॥ देखी तस खर पण सुणी, लही मूर्छा में अज्ञ ॥ सा० ॥१२॥ ते० ॥ सुहजावे जातिस्मरण लह्युं,में शुज जावे करी जत्त ॥ सा० ॥ संख्याता जव पाछला, जेणे संज्ञीनां लहे तत्त ॥ सा० ॥ १३ ॥ ते० ॥ तेणथी प्रेम सवे गयो माहरो, सज्जन बंधु धन जाव ॥ सा० ॥ स्वारथीआ सहुए अछे, ए तो पुज्जल सवि परजाव ॥ सा० ॥ १४ ॥ ते० ॥ जेहने ढंढे पालीये, तो तस राखे प्रीति ॥ सा० ॥ न सरे स्वारथीया करी, वाल्हा स्वामी धरे अप्रीति ॥ सा० ॥ १५ ॥ ते० ॥ जे परथी निज नवि होये, जो कीजे घणो प्रतिबंध ॥ सा० ॥ ज्ञानविमल मति जेहनी, वाल्हा ते जाणे सवि धंध ॥ सा० ॥ १६ ॥ ते० ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रत्यक्ष ए देखीये, कीधा अनेक उपाय ॥ कूड कपट परवंचना, तप दानादिक नाय ॥१॥ उयर धर्यो नव मास त्यां, जन्मे कष्ट संताप ॥ धनव्यय कीधो बहु परे, उत्सव तणे प्रताप ॥ २ ॥ मूत्र पुरीष पखालवा, सह्या अनेक प्रकार ॥ मिष्टाहारे पोषियो, स्नानाभ्यंगन सार ॥३॥ नेहे घेली हुं थइ, एहवा सुतने काज ॥ एम जुवणने पमामीयो, एह हेते कर्यां अकाज ॥४॥ एम मनमांहे चिंतवी, पुत्रप्रतिष्ठा हेत ॥ स्नेही जन आशा फली, काल गमुं सुख हेत ॥५॥ शरीरजोग पर जोगनी, इच्छा तजी सुत काज ॥ तेणे सुते हुं निर्दली, जुठे जुठे एह अकाज ॥६॥ दीठुं में प्रत्यक्षथी, एहनुं दुष्ट चरित्र ॥ वचने पण सुख नवि थयुं, एहवो ए अपवित्र ॥७॥ सर्व गाथा ॥

॥ ढाल अष्ठावीशमी ॥

॥ पूर्वे सुकृत न में कीयां ॥ ए देशी ॥

॥ राग वैराडी ॥ माहणी एम मन चिंतवे, सुतकाज में एह शरीर ॥ जोग थकी पण वंचीयुं, पण पखे रे

२ ॥ मो० ॥ योगसंग्रह बत्रीश छे, तेहमां ए पहेलो हो ॥ निःशल्यपणे शेठ अनुसरे, तप तोहीं पाये वहेलो हो ॥ ३ ॥ मो० ॥ प्रायश्चित्त गुरुदत्त जे, कीधुं सुविशेषे हो ॥ शुद्ध चरण आराधीयुं, वधीयुं पुण्य अशेषे हो ॥ ४ ॥ मो० ॥ शक्र अगमदिनी थइ, तिहांथी चवी थाये हो ॥ ए माहणी सुखद योहणी, तेणथी सिद्धि पावे हो ॥ ५ ॥ मो० ॥ फरी पूछे यती गौतमो, पूर्वे ए समणी हो ॥ कुंती केम ते हारवो, ए वात मनगमणी हो ॥ ६ ॥ मो० ॥ प्रभु कहे ए केतक नये, गणाधिक प्रवरो हो ॥ परिस संसारी जाणीए, पण कर्मथी नवरो हो ॥ ७ ॥ मो० ॥ मायानी छाया थइ, तेणे खीवेद बांध्यो हो ॥ गणपति पण कोइ कर्मने, जोरे चरण न साध्यो हो ॥ ८ ॥ मो० ॥ सकल पापनुं ठाम छे, विबुध जन ए निंदे हो ॥ कलिकलुषनी खाणी छे, तप चरण निकंदे हो ॥ ९ ॥ मो० ॥ अपयश कलंक निधान छे, ए माया मूके हो ॥ गोयम पणे तेणे समें, प्रवचन प्रतिकूले हो ॥ १० ॥ मो० ॥ एहवी माया दाखवी, पण सूरीये नवि कीधी हो ॥ अणु मात्र माया तणी, छाया नवि लीधी हो ॥ ११ ॥ मो० ॥ पण पहेलां ए नरतमां, चौद रत्ननो स्वामी हो ॥ अन्य दिवस देशना सुणी, जगनीति तेणे पामी हो ॥ १२ ॥ मो० ॥ सुगुरु पासे संयम ग्रही, आगम अन्यासे हो ॥ थयो गीतारथ सूरिपद लह्यो, शुभ गुणने प्रकाशे हो ॥ १३ ॥ मो० ॥ सारण वारण चोयणा, गच्छ जती परिवासे हो ॥ युगप्रधान गुण धारीनो, शासन अजुआले हो ॥ १४ ॥ मो० ॥ तोहे पण अतिकर्मनो, विपाकने गहेने हो ॥ दंपीपणे ते उपनो, जिन मायाने वहने हो ॥ १५ ॥ मो० ॥ कहे गोयम प्रजो पणे नये, माया नवि कीधी हो ॥ तो केम देवीपणुं लह्युं, कहो वात प्रसिद्धि हो ॥ १६ ॥ मो० ॥ सुणी गोयम पणे माहणे, कीधी हती माया हो ॥ लाग नवने आंतरे, ज्ञानविमल मने ध्याया हो ॥ १७ ॥ मो० ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

॥ क्षितिप्रतिष्ठित पुर अछे, सुंदर गुण मणिधाम ॥ श्री समान्य नरेंद्र छे, नामे जनने मान्य ॥ १ ॥ रुपी नामे तेहनी, पुत्री परम गुणपात्र ॥ लावण्ये मानुं परे रमा, रंनादिकने मात्र ॥ २ ॥ अनुक्रमे तरुणपणुं लही, परणावी सा पाउ ॥ सुरत दुःकर्मना योगथी, जर्त्ता पाम्यो काउ ॥ ३ ॥ शोकविधुर दोनागिणी, विधवा वेश अनिष्ट ॥ पामी तेणे अति घणुं, वेदे कृत ए कष्ट ॥ ४ ॥ तेहनी दुःखणी देखीने, कहे पिता शुभ वाल ॥ वत्से

तणो ए सघलो जंजाल ॥ ५ ॥ कीधां कर्म न छूटीए, वशमो जेहनो बंध ॥ ब्रह्मदत्त नरजव थयो, राख परग लगे अंध ॥ ६ ॥ उदये आव्युं जोगव्यां, विणु छूटी नवि जाय ॥ कर्मप्रकृतिने आगले कोणही जोर न थाय ॥ ७ ॥ ते जणी चिंता अपहरी, करी थिरताये मन ॥ कर्म कठिनने निर्दले, करतुं दान ने पुण्य ॥ ८ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥

॥ देशी लूहरनी ॥

॥ कहे जनक ते एहवुं हो, के पंचशे पुर दीयुं ॥ पुत्री तुम्ह आपुं हो, के थिर करी निज हियुं ॥ एहवुं जे थाये हो, के ते धन्य पुण्य तणे ॥ जाग्ये ते करजो हो, जिनवरने जवणे ॥ १ ॥ नित्य नित्य जिनपूजा हो, के विविध परे विरचो ॥ धर्मक्षेत्र सुखेत्रे हो, के वारु वित्त खरचो ॥ वली पूजा ढोवो हो, के कल्याणक दिवसे ॥ तीरथनी यात्रा हो, के संघादिक हरषे ॥ २ ॥ वली श्रावक श्राविका हो, के साधर्मिक जक्ते ॥ विधिपूर्वक शोधो हो, के सघलो निज शक्ते ॥ परलोकने साधो हो, के तेहने पहिरावी ॥ वरवस्त्र विजूषण हो, के कीजे शोजावी ॥ ३ ॥ वली समणा समणी हो, के आराधो दोइ ॥ न्यायादिक प्रासुक हो, के कल्पनीय जे होइ ॥ श्रद्धा सत्कारे हो, के वसति प्रमुख नवधा ॥ आपीने गारो हो, के आपने जेम सुधा ॥ ४ ॥ दीन अनाथ गिलाणा हो, के तेहने उगारो ॥ वली दुःखीया दारिद्री हो, के तेहने साधारो ॥ निर्मल शील पालो हो, के उत्तम कुल पामी ॥ श्रावक धर्म आराधो हो, के न करो तिहां खामी ॥ ५ ॥ एम करणी करतां हो, के परजव जेम न खहो ॥ विधयादिक वेदन हो, के दुःखकरां दूर दहो ॥ एम जनकनां वयणां हो, के सुणीने सा बाला ॥ जंपे नारी नयणां हो, के जलनुं जेम वाहाला ॥ ६ ॥ कहे ए तनु केरो हो, के कोइ विशास नथी ॥ नवि खहीए पिताजी हो, के कोइनुं कोइ नथी ॥ दिनकर परे उजलो हो, के वंश अछे तुम्हचो ॥ तिहां कोइ कलंके हो, के मलिन ज्युं शशिकूचो ॥ ७ ॥ ते जणी मुज दीजे हो, के काष्ठजक्षण केरी ॥ आणा जेम साधो हो, के कीर्त्ति अधिकेरी ॥ कूम कपटनी नलिका हो, के वलया परे वांकी ॥ निज इच्छाये चाले हो, के घडया अहिराकी ॥ ८ ॥ गिरि नदी परे चाले हो, के नीची वक्र गति ॥ चपला परे चपला हो, के

सम्यक्‍ ॥ जिम रजनी विरामे हो, के निःस्नेही दीपशिखा ॥ क्षणमां बहु रंगी हो, के जाणे
आशय कुष्टमति ॥ जिम रजनी विरामे हो, के निःस्नेही दीपशिखा ॥ ए सहजना दोषा हो, के विषयनी घणमेहा ॥
मंजरेखा ॥ ए ॥ जड़ गाढ़ग माया हो, के अशुचि स्पृहा गेहा ॥ ए सहजना दोषा हो, के काष्ठ दीयो जाणी ॥ १० ॥
तुं यह यह जाणीये हो, के अवगुणनी खाणी ॥ तेह जाणी करी करुणा हो, के बुद्धि विवेक जुआ ॥ अहो तनु
तेह सुणी नृप चिंते हो, के धन धन एह भूआ ॥ युवती जन इहा हो, के भूआ रत्न गणो ॥ ११ ॥ सुत शील विनयित
निर्ममता हो, के वंश कलंक तणो ॥ जय राखे केहवो हो, के ए ने नारीमणि ॥ ए तनया जगरे हो, के सर्व उदारी
हो, के नमणी गयगमणी ॥ जिहां लगे मुज गेहे हो, के ए ने नारीमणि ॥ नथी सुत जो माहारे हो, के तो पण पुत्र परे ॥
करु ॥ कहे राजा एहवुं हो, के तुजथी सुख धरुं ॥ १२ ॥ नथी सुत जो माहारे हो, के धर्म करो नावे ॥ जेम नव नव वेरा हो,
माहारे शुं तनया हो, के राखुं हृदय परे ॥ जिनराजे भाख्यो हो, के धर्म करो नावे ॥ तो गयं पलंगा हो, के जाला-
के क्षणमां गयतां जावे ॥ १३ ॥ जो जखण प्रवेशे हो, के स्वर्गवास शिव पामे ॥ तो गयं पलंगा हो, के केइक सुख खाणी
गही काजे ॥ दान शील तप भाखो हो, के कारण एह कह्यां ॥ एह करतां प्राणी हो, के पुत्री तुंही रमे ॥ जेम मेघनी
॥ १४ ॥ ध्यानानले दाजे हो, के कर्मनी कोडि गमे ॥ रत्नत्रय योगे हो, के अग्नियें जाये वली ॥ १५ ॥ करी चित्त प्रसन्न
गाला हो, के पवने जाये रली ॥ जेम काष्ठ समुदाये हो, के तप क्रियानुसरो ॥ वली दुष्कर तप ते हो, के गुण
हो, के तप जप करण करो ॥ बहु अभ्यंतर बहु बाहिर हो, के कांइ नथी कुमणा ॥ १६ ॥ आंबिल वर्द्धमानो हो, के कनकावली
रत्नावलि घणा ॥ जिनशासन मांहे हो, के श्रेणि प्रतर घणां ॥ लघुसिंहनिक्रीडित हो, गुरु कीलितया ॥ जय यवर
रत्ना ॥ वलि गुणरत्नावली हो, के श्रेणि प्रतर घणां ॥ लघुसिंहनिक्रीडित हो, के पडिमा सत्तमीया ॥ अठमी नव
गज्ज पडिमा हो, के भद्रमहा भद्रतया ॥ १७ ॥ वली सर्वतोभद्रा हो, के भिक्षु तणी भाखी ॥ वली पंच कल्याणिक
नवमी हो, के दशमी इग्यारशीया ॥ तिम बारस प्रतिमा हो, के सिद्धना चक्र तणो ॥ वली योग कराया
हो, के दिन तप आगम भाखी ॥ १८ ॥ स्थानक वीश वोइया हो, के कर्म सूरण भणो ॥ राधन दर्शनना हो, के चरणाराध्य
हो, के इंद्रिय जय निगुणो ॥ संसारनो तारण हो, के तप बहुधा भेदे ॥ वली अभिग्रह चउविध हो, के जिन आणा
भणो ॥ १९ ॥ एम आगमे भाख्यो हो, के जश कीर्ति अर्थे ॥ ते तप नवि करतो हो, के इंद्रिय गुण व्यर्थे ॥ २० ॥
भेदे ॥ इह जय ने परभव हो, के केवल भेद करे ॥ विनयादिक वधते हो, के ते भव सिंधु तरे ॥ एम तपनी करणी
करीने निर्जरा होते हो, के केवल भेद करे ॥ विनयादिक वधते हो, के ते भव सिंधु तरे ॥ एम तपनी करणी

हो, के निर्झर गुण धारे ॥ शिवमंदिर पामे हो, के त्रिविध दुरित वारे ॥ २१ ॥ निज हठ शठ छोमी हो, के श्रावक धर्म करो ॥ श्रगदमहने मूकी हो, के मुज हित शीख करो ॥ एम कही नृप सोंपे हो, के कंचूकीधर गरने ॥ श्रावक व्रत धारे हो, के जाणे पास गमो घरने ॥ २२ ॥ सोंप्युं जव चित्ते हो, के रूपी राय कनी ॥ त्रिसंध्ये जिन श्ररचे हो, के खरचे खम्मी घणी ॥ जणे श्रुत करे तपने हो, के सामायिक पोसा ॥ विहुं टंक श्रावश्यक हो, के करी टाळी दोषा ॥ २३ ॥ दीए दान विचित्रे हो, के चित्त उदार करी ॥ दुःस्थित साधारा हो, के वारे व्यसन फिरी ॥ नित्य चित्त संजारे हो, के वयणां श्रमीय समां ॥ ज्ञानविमल सूरिनां हो, के न परे कांइ तमा ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ १६२२ ॥

॥ दोहा सोरठो ॥

॥ एम करतां बहु काळ, धर्म तणे रंगे करी ॥ निर्गमती सा बाळ, जाणे तत्त्व ए फरी फरी ॥ १ ॥ हवे कोइ समय प्रमाण, मरण लह्यो नृप जनक ते ॥ सुख समाधि गुह जाण, पुत्र पखे नृप दिन केते ॥ २ ॥ मंत्री सेनापति शेठ, मळी विचार कियो इस्यो ॥ निर्वहशे ए नेठ, श्रपर न कोइ ए जिस्यो ॥ ३ ॥ दोहा ॥ एम चिंती राज्ये ठवे, श्रापी सुतनो वेश ॥ रूपी राजा सहु कहे, पाळे नीतिए देश ॥ ४ ॥ श्रावी बेसे तखत ते, लीये मुजरो धरी प्रेम ॥ श्रंतर नेद न को लहे, शीळ गुणे करी हेम ॥ ५ ॥ हर्ष हुवे सवि लोकने, पाळे न्याये राज्य ॥ सांज सवे मेळी करी, राखे रणनी लाज ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥

॥ कळाळणी महारो राजिंद जोळव्यो हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ सुहासणी ॥ हवे एक दिनने श्रवसरे हो लाल ॥ दुर्जय काम विकार ॥ सुहासणी ॥ काम दशाने श्रागले हो लाल, याये गति मति हार ॥ सु० ॥ १ ॥ विषय थकी नवि गंजीये हो लाल, विषय ते तीखी श्रसिधार ॥ सु० ॥ तेणेथी शीळ न छेदीए हो लाल, तेहनो धन्य श्रवतार ॥ सु० ॥ विषय० ॥ ए श्रांकणी ॥ यौवन वयना जोरथी हो लाल, यौवन मोहोडुं नूत ॥ सु० ॥ वळीयाने पण ए ठवे हो लाल, सुरनरने पुरुहूत ॥ सु० ॥ २ ॥ वि० ॥ सामंतसुत गुण रत्न छे हो लाल, शीळ सनाह तस नाम ॥ सु० ॥ सविकार नयणे निरखीयो हो लाल, बहु वेळाये तेणे ताम ॥ सु० ॥ ३ ॥ वि० ॥

गीरुआ गुणें मनु चंदमा हो लाल, देह कांति दिनकार ॥ गु० ॥ स्यानिशय गुणे करी हो लाल, जाणिने पण
मनोहार ॥ गु० ॥ ४ ॥ चि० ॥ शील रयण जतिन मनु हो लाल, गच्छालस्य विचार ॥ गु० ॥ जाणे आगम
मर्मने हो लाल, न करे पासंथी प्यार ॥ गु० ॥ ५ ॥ चि० ॥ अस्थिमिंज रंगी पणुं हो लाल, जिनमतनो ते
जाण ॥ गु० ॥ ते जोवो गगननी इच्छिथी हो लाल, तेणे खलुं तेम विनाण ॥ गु० ॥ ६ ॥ चि० ॥ जाणवुं
मनावे परमर्श हो लाल, जोयुं भरीय विकार ॥ गु० ॥ खाणमांहे पण खेरीए हो लाल, कामी नेह विकार ॥
गु० ॥ ७ ॥ चि० ॥ यद्यपि न करे पगारथी हो लाल, तो पण कामी दृष्टि ॥ गु० ॥ ज्ञानी रहे निरांयकी हो
लाल, जेम प्रज्ञानी वृष्टि ॥ पुष्कर जलधर वृष्टि ॥ गु० ॥ ८ ॥ चि० ॥ कुमरे मनमांहे चिंतियुं हो लाल,
संदीपुं पणे शील ॥ गु० ॥ जिन वचनां पण आगमण्यां हो लाल, उपदेश कीधो अदील ॥ गु० ॥ ९ ॥ चि० ॥
जग परतांपजो नवि गण्यो हो लाल, न गणी मनानी लाज ॥ गु० ॥ कलंकित कर्यो निज आतमा हो लाल,
विण शीलवजार अकाज ॥ गु० ॥ १० ॥ चि० ॥ शील परम सौभाग्य छे हो लाल, शील परम छे रूप ॥ गु० ॥
शील परम जीवित अछे हो लाल, शील गणे नवि नूप ॥ ११ ॥ चि० ॥ कुलकने शील राखवुं हो लाल,
प्राण गजे पण एह ॥ गु० ॥ प्राणधारण स्थिति विश्वने हो लाल, पण गंजने शीलसुं नेह ॥ गु० ॥ १२ ॥
चि० ॥ तो हवे हमणां हुं करुं हो लाल, जोयो मरणे पण ॥ गु० ॥ मना मध्ये बेठा हुता हो लाल, एम जय
सर्वे दरशन ॥ गु० ॥ १३ ॥ चि० ॥ जेणे मनमांहे चिंतव्युं हो लाल, गुज उपर विपरीत ॥ गु० ॥ तो
एकाकी गुजने हो लाल, देखी करे ए अनीत ॥ गु० ॥ १४ ॥ चि० ॥ तिहां कोण आवी आवशे हो लाल,
महर नगर गुरु पंथ ॥ गु० ॥ इहां पगनुं गुणवुं नहीं हो लाल, ए मना थइ गुज अंधु ॥ गु० ॥ १५ ॥
चि० ॥ वली गुज निमिषे ए गुणा हो लाल, उत्तम कुलनी जाति ॥ गु० ॥ पदशे नयजल सिंधुमां हो लाल,
प्रोतीप्रकार प्रमाण ॥ गु० ॥ १६ ॥ चि० ॥ संप्रति गुजने योग्य छे हो लाल, देशांतरनी यात्र ॥ गु० ॥ अथ-
वंदे प्रभुनमा रहुं हो लाल, करे आगम गुण पात्र ॥ गु० ॥ १७ ॥ चि० ॥ एम चिंती कुंजी गयणने हो लाल,
जिन प्रतिमाने जुहार ॥ गु० ॥ पाहयां गगन मगे करी हो लाल, सज्जन ए आधार ॥ गु० ॥ १८ ॥ चि० ॥
प्राण छतां राजी नहीं हो लाल, राजी रहे आधार ॥ गु० ॥ ज्ञानविमल गुरु सान्निध्ये हो लाल, सघले जय-
जयकार ॥ गु० ॥ विरहो जेणे आधार, ते नर जगमां सार ॥ गु० ॥ १९ ॥ चि० ॥ सर्व गाथा ॥ १६५७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आतां आतां आवीने, हिरण छकर नयर ॥ चिंते इहां रहेतुं हवे, मळशे वर गुरु मेहेर ॥ १ ॥ वली ए नयर तणो धणी, नरपति सुग्रीव खास ॥ विचारसार नामे छजे, सेवीये तस माम ॥ २ ॥ यान विचार करतां थकां, प्रतिबूझीये तेह ॥ सुगुणाने सुगुणो मळे, वाधे आग्रो नेह ॥ ३ ॥ एम चिंती नृप पासे गयो, करी प्रणाम तव राय ॥ गुणे रजाणो राजीयो, पासे ठवे ते पाय ॥ ४ ॥ दिन दिन ज्ञाननी गोष्ठिशुं, करी रीझवे राजान ॥ आणे जणग्र जो मळे, तो वाधे बहु वान ॥ ५ ॥ पंडितनी खातु जशी, नहीं मूरखनी वात ॥ ए वातांथी सुख उपजे, ते वातांथी दुःख थात ॥ ६ ॥ एक दिन पूछे कुमरने, कोण पुर कोण तुम नाम ॥ ए भूख छे बेहुनी, तुम्हे करे ए अभिराम ॥ ७ ॥ कोण स्वामी तुम्हे सेवीयो, एता कावने मीन ॥ तव कुमरे मनि हासीशुं, पुर कुण नाम असीम ॥ ८ ॥ जे राजा मे सेवीयो, मुआ तेहनी एह ॥ कहे नृप शब्द करणे कह्यो, जेम मन उपजे नेह ॥ ९ ॥ सर्व गाथा ॥ १६९६ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥

॥ कान्हजी मेवोने कांबडी रे ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर जाते सुणो राजीया रे, जे मुखाये नाम ॥ तेहनुं नाम न लीजीए रे, विगर जमे गुणधाम ॥ १ ॥ निगुणो अमारी वातडी रे ॥ रातनी एहवी एह ॥ जातमीए पके जातडी रे, चापडीमां दीए छेह ॥ निगु० ॥ ए आंकणी ॥ चक्षु कुशील ए जाणीए रे, जेहने नयन विकार ॥ नाम ग्रह्याथी तेहने रे, होये दुरित प्रचार ॥ २ ॥ नि० ॥ अणछुंजे नाम न लीजीये रे, तेहनुं हेतु कुमार ॥ दाखो तिहां कहे कुमरजी रे, जो लीजे नामाचार ॥ तो तिण दिन न मळे आहार ॥ ३ ॥ नि० ॥ विस्मय उही राजा कहे रे, देखीजे ए न्याय ॥ तत्काल अणारी रमशनी रे, बेठो तिहां सुखाय ॥ ४ ॥ नि० ॥ परिकर संयुत जीमवा रे, मळ्या मनि तेह ॥ हरिख कर मही कोडीदो रे, मुख सन्मुख धरी नेह ॥ ५ ॥ नि० ॥ कहे राजा तव कुमरने रे, चक्षु कुशीलनुं नाम ॥ लेतां विघन जो आवशे रे, दिव्य प्रजावे ताम, जोजन करतां जाम ॥ ६ ॥ नि० ॥ जो दृष्टि शस्त्र ए नामथुं रे, तो थाये सवि परिवार ॥ आदरशुं चारित्रने रे, एहवो कर्यो निर्धार ॥ ७ ॥ नि० ॥

आहार करे या छमासिया रे, जेहवे ते राजान ॥ तेहवे कुमरे जाणीयुं रे, मज्जु कुशील स्त्री नाम ॥७॥ नि०॥ अहिडे कृत नरजयें पणे रे, वीधुं जेहवे नाम ॥ तेणु समे प्रवचन देवीए रे, चिंतुं उपयोगे ताम ॥ ८ ॥ नि० ॥ अधिक मयण म होजो पहनुं रे, मनशुं साधे काम ॥ तुरत आव्युं परयल तिहां रे, गज रथ हय अतिगाम ॥ १० ॥ नि० ॥ राजधानी वींटी जिसे रे, गोयम तेहवे नृप ॥ प्रतिबोध्यो मलय उद्दी रे, अजुन देखी अनूप ॥११॥ नि० ॥ प्रणमी कुमर नाठो जिसे रे, चिंते मनमां एम ॥ स्वामी विना देश नवि रहे रे, तो नाशीने केम ॥ १२ ॥ नि० ॥ कूक करे हमणां इहां रे, तो स्वामीनुं काम ॥ सुधरे जगमां जस होये रे, स्वामी जगमां माम ॥ १३ ॥ नि० ॥ पचख्खुं प्रथम व्रत में अजे रे, न घटे मुजनुं मुक ॥ इहि कुशीलना नामथी रे, पाम्युं संकट मुक ॥ १४ ॥ नि० ॥ तो हुवे सागारी करुं रे, अणशणने करुं आज ॥ त्रिविधे शीलनुं पारणुं रे, करी राखुं हुं लाज ॥ १५ ॥ नि० ॥ निर्मल शीलधर पुरुषने रे, विष ते अमृत थाय ॥ जलण ते जल थल जलनिधि रे, संकट विकट ते जाय ॥ १६ ॥ नि० ॥ एम चिंती मन धर्मने रे, करीने शील सहाय ॥ जो हुं कुशील मनथी हुवुं रे, तो एण मन्य हणाय ॥ १७ ॥ नि० ॥ जो सुशील त्रिविधे हुवे रे, तो बंधुपणे होजो एह ॥ नमो जिणाणं मुखे भणी रे, चालीयो सन्मुख धरी नेह ॥ १८ ॥ नि० ॥ दीठो सुभटे आवतो रे, कहे ते एह नरनाह ॥ कुमर भणे हुं नरपति रे, करी कर छंचो उत्साह ॥ १९ ॥ नि० ॥ जो पल वीर्य तुम्हने होवे रे, तो दीयो मुजने प्रहार ॥ एम निसुणी ते आवीया रे, करता किलरवकार ॥ २० ॥ नि० ॥ जाणे यममूर्त्ति धरा रे, मदरण नामनुं कोट ॥ चोट दीये ते रीसे भर्या रे, उमाहतां दिल दोट ॥ २१ ॥ नि० ॥ हणो हणो एम जाणता मुखे रे, आवे कुमरनी पास ॥ तव गोयम तेणे अवसरे रे, पसर्यो शील सुवास ॥ २२ ॥ नि० ॥ शासन देवीये थंभिया रे, जेम लखियां चित्राम ॥ काष्ठ परे निश्चेष्ट थया रे, सुभट सवे तेणे ठाम ॥ २३ ॥ नि० ॥ प्रत्यक्षे गगने रही रे, भाखे देवी एम ॥ हर्षे भरे निर्जर थइ रे, वयणां बहु धरी प्रेम ॥ २४ ॥ नि० ॥ कदही उगे पुरुषपर्यता रे, लोपे जलधि मर्याद ॥ विधु तातो रवि शीतलो रे, कदही होये अविसंवाद ॥ २५ ॥ नि० ॥ पण सुशीलना शर्मनो रे, न हुवे ताग प्रमाद ॥ निर्मल शारद शशि परे रे, जेहना शील संवाद ॥२६॥ नि० ॥ परम पवित्र ते पुरुषथी रे, पावन होये त्रिभुवन ॥ सर्वोत्तम गुणनो निधि रे, जग त्रिकरणशुद्ध मन ॥ २७॥ नि० ॥ ज्ञानविमल गुण जेहना रे, दीपे जेम जग भाण ॥ ते भणी शीलवंत गुण तणो रे, प्रणमो पद निर्वाण ॥ २८ ॥ नि० ॥ सर्व गाथा ॥ १६०३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते तणी तामस जाय सवि, ठंमीने सवि योध ॥ शील सन्नाहने पदे नमो, देवी दीये एम बोध ॥ १ ॥ पुष्पवृष्टि शिर उपरे, कीधि दशार्द्धज वर्ण ॥ शील तणी उद्घोषणा, सुणतां चारे वर्ण ॥ २ ॥ हवे कुमर मूर्छा लह्यो, लही चेतन क्षणमांहे ॥ जातिसमरण उपन्युं, अवधिनाण पण त्यांहि ॥ ३ ॥ एहवे अवसरे नृपति, कुमर निरखण काज ॥ चारण ऋषिने प्रणमवा, नगरथी जावे लेइ साज ॥ ४ ॥ जात्य तुरंगम उपरे, चढियो गिरिमां जाय ॥ कंदरमां पेखे जिसे, कुमर रूप तेणे ठाय ॥ ५॥ दक्षिण करशुं आपणे, करतो शिरोपरि लोच ॥ निज प्रभुने कहिया विना, टाली सवि संकोच ॥ ६ ॥ सपरिवार राजा तिहां, पेखे कुमर मुणिंद ॥ छत्र धरखुं शिर उपरे, सौधर्माधिप इंद ॥ ७ ॥ १६ए० ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥

॥ नणदल बिंदली दे ॥ अथवा सीता तो रूपे रुडी ॥ ए देशी ॥

॥ कनककमले मुनि बेठा, राजा मन लागे मीठा हो ॥ धन धन मुनिराया ॥ प्रणमे जस सुरनर पाया हो ॥ १ ॥ धन० ॥ ए आंकणी ॥ ओहिनाणे चले उपदेशे, सुणे सवि नवि शुन्न लेशे हो ॥ २॥ धन० ॥ असंख जनमनी वात, कहे सुख दुःखना अवदात हो ॥ धन० ॥ ३ ॥ जेम थयो समकित लाज, थयो तेह दाखे जेम आज हो ॥ धन० ॥ ४ ॥ गुरु वंदी नृप सुणे धर्म, लीए संयम छेदे कर्म हो ॥ ध० ॥ ५ ॥ परिवार लीये पण दीक्षा, पाले द्विविधे हितशिक्षा हो ॥ ध० ॥ ६ ॥ तेम वली परचक्रनो भूप, लीये संयम अप्रतिरूप हो ॥ धन० ॥ ७ ॥ तदनंतर चउविह देवा, आवी करे मुनिनी सेवा हो ॥ ध० ॥ ८ ॥ दुंदुन्नि गयणंगण वागे, सवि दुरित उपद्रव जागे हो ॥ ध० ॥ ए ॥ आकाशे वदे इम वाणी, धन कुमर मुनि गुणखाणी हो ॥ धन० ॥ १० ॥ स्तुतिपाठे एणी परे स्तवता, मनमांहे प्रमोदने वहता रे ॥ धन० ॥ ११ ॥ अथ साधुस्तुतिः ॥

॥ राग जयजयवंती ॥ जय जय नमिय चरण, दुर्धर धरीय चरण, रोग सोग जर मरण हरण मुनिराज हे, त्रिज्य जंतु संताणसरण, दमिता दुःकरण करण, अशरण शरणकृत नविकाज हे ॥ १ ॥ जय जय त्रिज्य दुर्जन मोह, लघुकृत मान लोह, विजित कपट कोह, अदोह अमाय हे ॥ पम्हिोहिय नविअ लोय, तिहुयण

छन्द मोह, हीरा जिणमन्द मोह, धर्म मल्हार के ॥ २ ॥ जय० ॥ गंधर मद स्यगाल मेह, श्रीवर्धमान छन्द मेह ॥ भर्मवन सिंचन मेह, शुभ गुणस्थान हे ॥ जगगुरु परिमित मेह, जिणराज रूप देह, गुरु पद गामी मेह, नये धनिनमान हे ॥ ३ ॥ जय० ॥ गंभीर रत्न गमीर, नव रस छलक्या नीर, कुमति मही मारगीर, मेरु गिरि धीर हे ॥ करुणा रस लीर नीर, निधि ऋद्धि सिद्धि कोटीर, संयम भ्राग्र कीर, गुंहली मीर हीर हे ॥ जय० ॥ ४ ॥ धन धन तोरी माय, धन धन गुरु ताय, जेणे उपरी गुंहली जाय, तिहुअण नाव हे ॥ ज्ञानविमल गुण गाय, गुरु मन गुंहली सुहाय, नामे नव निधि थाय, एहवा मुनिराय हे ॥ ५ ॥ जय० ॥ इति स्तुतिः ॥

ढाल पूर्वली ॥ गुरु सुरीना समुदाय, एम गायी निज नामे जाय हो ॥ भ० ॥ १२ ॥ दिनकर परे नव नव गेले, विचरे मुनि अति अप्रमत्त हो ॥ भ० ॥ १३ ॥ निज गोयम कीरत संभारे, नवि कमाने पोपन धारे हो ॥ भ० ॥ १४ ॥ ज्ञानविमल गुणे परिवरीहे, भवि नविगणना मन मोहे ॥ भ० ॥१५॥ सर्व गाथा ॥१२०८॥

॥ दोहा ॥

॥ इवे गौतम पूछे इस्युं, वंदी श्रीजिन वीर ॥ गुरुजन बोधि ए केम थशे, जाणिगमरत धीर ॥ १ ॥ जब जाणे श्री वीरजी, पूरण जये ए साधु ॥ सम गुण मणि कंचन दरद, गुण संयम निराबाध ॥ २ ॥ तेणे एक दिन अनाभोगथी, वचन तणो कस्यो दंभ ॥ ते प्रायश्चित्त आदरयुं, करयो अनिमद पंभ ॥ ३ ॥ मोनव्रत कर्युं तेणे, जिहां लगय वचन न येण ॥ आराधी संयम गुणे, प्रथम कल्प सुरगेण ॥ ४ ॥ तिहांथी चवीने संविगुन, थयो लीलग्राह ॥ गुरुनायोही आजगे, महानुनाय अथाह ॥५॥ सयंबुद्ध गुरु मानिये, लेवे संयम नार ॥ अवधिज्ञानी छपम गुणे, पच्चरीयो परिवार ॥ ६ ॥ परिमित आयु निज गणुं, जाणीने मुनिराय ॥ अजितादिक जिने पाविये, समेतशीखे जाय ॥ ७ ॥ पगमां मार्गे आवीयो, क्षितिप्रतिष्ठ नयर ॥ तिहां ते आवी समोसर्या, दाख्यां अजुन ने दयर ॥ ८ ॥ सुणी आगमन तेहनुं, सपरिवार नरराय ॥ रूपी नाना आवीयो, वंदनने तिण ठाय ॥ ९ ॥ सर्व गाथा ॥ १२१७ ॥

॥ ढाल चोत्रीशमी ॥

॥ मनवसियानी ॥ पाले हो हंजा साक थे गया हो राज, दीठडो नाद गुजाण ॥ मारी रेण छोलणां ॥ ए देशी ॥

॥ इवे विधिशुं वंदे नृपति हो राज, विगतमोह मुनिनाथ ॥ मारी मालूरा साधुजी ॥ महीपति वेगो

ने हो राज, सपरिवार लेइ साथ ॥ वा० ॥ १ ॥ दीए देशना जविका जणी हो राज, गुणजो प्राणी जाव ॥ ए अदगिक षजीपणुं हो राज, ए सोहिला लेहेवा जाय ॥ वा० ॥ २ ॥ पण जिनधर्म एक पामवो हो राज, दोहिलो ते जगमांय ॥ वा० ॥ ते तो सुगुरु विण नवि संजवे हो राज, जिम सुरतरु वर गांय ॥ वा० ॥ ॥३॥ सुगुरु सुदेव सुधर्म जे हो राज, ए तत्त्व त्रय रूप ॥ वा० ॥ निर्मळ जळ परे शुद्ध करे हो राज, ते अकलंक अनूप ॥ वा० ॥ ४ ॥ गुरु प्रसन्न थकी होये हो राज, जे जिन धर्मनी प्राप्ति ॥ वा० ॥ तेहथी दर्शन ज्ञानजो हो राज, चारित्रनो होये व्याप ॥ वा० ॥ ५ ॥ अथ सुदेववर्णनं ॥ दोष अढारथी वेगळो हो राज, देव कह्यो अरिहंत ॥ वा० ॥ चोत्रीश अतिशय संयुता हो राज, अनंत ज्ञान जगवंत ॥ वा० ॥ ६ ॥ अथ गुरुवर्णनं ॥ पंच महाव्रते पाळीयो हो राज, छत्रीश गुरुगुण युत ॥ वा० ॥ ७ ॥ आचार पंचाचारनो हो राज एहवो गुण पुणु नित्य ॥ वा० ॥ अथ धर्मवर्णनं ॥ जीवदयाये अलंकर्यो हो राज, जिनआणा अनुकूळ ॥ वा० ॥ विनय क्षमाए पाळीयो हो राज, ए धर्म ते कर्म प्रतिकूळ ॥ वारी० ॥ ८ ॥ इति ॥ जवसिंधुमां पडतां धर्यो हो राज, प्रवहणने अनुकार ॥ वा० ॥ ते धर्म दुविध जेदे कह्यो हो राज, अणगार ने आगार ॥ वा० ॥ ए ॥ सम तृण मणि रिपु रयणने हो राज, सर्व सावद्यने त्याग ॥ वा० ॥ साधु तणो धर्म तेहथी हो राज, तुरत लहे शिवपद लाग ॥ वा० ॥ १० ॥ समकितपूर्वक देशथी हो राज, विरति दुवादस जेद वा० ॥ अणुव्रत गुण शिक्षा वरु हो राज, अनुक्रमे होये जव छेद ॥ वा० ॥ ११ ॥ दान शीयल तप जावना हो राज, यथाशक्ति अनाशंस ॥ वा० ॥ अनुक्रमे शिवदेवे होवे हो राज, जिहां पंचाचार प्रशंस ॥ १२ ॥ एम सुणी नृप कहे सूरिने हो राज, तुम पद पोत में लद्ध ॥ वा० ॥ जव समुद्रमां पामीया हो राज, दुर्लज करुणासिंधु ॥ वा० ॥ १३ ॥ प्रजु हुं लोकने एम जणुं हो राज, अखिल पवित्र जे जाव ॥ वा० ॥ मरण प्रावे उपद्रव्यो हो राज, विषय कषाय जमाव ॥ वा० ॥ १४ ॥ तेहना उपशमथी जणी हो राज, दीवो दीक्षा मुज निर्मंथ ॥ वा० ॥ कहे गुरु एहवी वातमां हो राज, मम करशो पत्रि मंथ ॥ वा० ॥ १५ ॥ एहवे कामे न कीजीए हो राज, पाणी वळनो विलंब ॥ वा० ॥ घडीमां धर्मी उपजे होवे हो राज, जेम जळमां बिंबु प्रतिबिंब ॥ वा० ॥१६॥ पूछे सामंतादिक प्रत्ये हो राज, केम छे तुम्ह मन जाव ॥वा०॥ कहे सहु जेम नरनाथ जो हो राज, तेम धारो संयम जाव ॥ वा० ॥१७॥ जे तुम्हचे मन आवीशुं हो राज,

ते अम्ह मनमां प्रमाण ॥ वा० ॥ एणी परे सामंतादिक सवे हो राज, लीधे संयम नरराण ॥ वा० ॥ १८ ॥ रुप्पी राजा पण संयमी हो राज, थया तिहां मवि परिवार ॥ वा० ॥ गुरु कहे एहवी दोहली हो राज, गारुपी गुणकार ॥ वा० ॥ १९ ॥ इहां प्रमाद करवो नहीं हो राज, तदपि करी तेणी वार ॥ वा० ॥ दुविध शिक्षा ग्रही संवरे हो राज, रुप्पी साधुणी परिवार वा० ॥ २० ॥ गुरुवयणे ते रागीयो हो राज, पाले पंचाचार ॥ वा० ॥ ज्ञानविमल पदवी कला हो राज, पामे अतिहि उदार ॥ वा० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ११२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ अनुक्रमे अनुक्रमे विचरता, पहोता गमेत शैल ॥ विविध वृक्ष छाया घने, चंपक अंब ने केलि ॥१॥ सिद्ध नियघा जिनभुवन, बांधा तिहां जिनराज ॥ तेहने शुणीया आदरे, हर्षित हृदय गुरुराज॥ २ ॥ बहु नय संचित पाप दही, अजितादिक जिन सिद्ध ॥ ते वंदीने गहगही, नरभवनुं फल लीद्ध॥३॥ दुःखक्खय कम्मक्खय समाहि मरणं च बोहिलाभो य॥ दीयो मुजने ए प्रार्थना, कीधी तेणे निर्दंभ॥४॥ वंदी जिनने पर्वते, शिला पट्ट ग्रही एक ॥ मुनिजन परिकरे परिवर्या, लीधे संलेखन टेक ॥ ५ ॥ हवे रुप्पी समणी भणे, शील सन्नाह प्रसंग एम ॥ तपवन् मुजने पण दीयो, संलेखना धरी प्रेम ॥ ६ ॥ जाणे गुरु पूरव पाप जे, पंक पखाली शुद्ध ॥ पहेले आलोयण लीयो, संलेखना विशुद्ध ॥ ७ ॥ शुद्ध नीरे जिम शोभीये, चित्र तणी जेम रेख ॥ तेम निःशल्य थया पछी, जे कीजे ते विशेष ॥ ८ ॥ संलेखणा ने जोषणा, ए जिनशासन सार ॥ कर्मकषायनी संलेषणा, जोषणा शरीर आहार ॥ ९ ॥ यतः ॥ गाहा ॥ पडिसेवा पडिसेवग, दोसा गुणा गुरु गुणा तहय ॥ संमयिसोहाइ गुणा, समसणा जोयणा निरूव ॥ १ ॥

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल, कमला कयवासो ॥ ॥ ए देशी ॥

॥ अथ प्रथम द्वारस्यार्थः ॥ पापाचरण जे प्रतिसेवा ते पाप दश प्रकारे सेवाय ते ते कहे छे ॥ पडिसेवा कंदर्प दर्प, प्रमाद अणाभोग ॥ आतुर आपद शंकितार्थ, सहसातने योग ॥ १ ॥ भय प्रद्वेष अने विमंसा, ए दश भेदे थाये ॥ सापेक्ष वेदना तिहां, आलोयण थाये ॥ २ ॥ अस्यार्थः ॥ धावन वल्गन हास्य प्रमुख, ते दर्प कहीजे ॥ कुत्कुच्च कुत्सरी चेष्टना, ते कंदर्प कहीजे ॥ ३ ॥ मद्यादिक जे प्रमाद ते, अणाभोग विसरते

॥ क्षुधा तृषा रोगादिके, पीड्यो आतुर तुरते ॥ ४ ॥ ज्व्यादिक अप्राप्तिथी, चउविध आपदथी ॥ शंकित ते मद्दा कार्य करण, शंका न हुए जिणथी ॥ ५ ॥ अकस्मात् सहसात्कार, सिंहादिकनो जय ॥ क्रोधादिक प्रद्वेषथी, करे पाप ते निर्जय ॥ ६ ॥ विमंसा ते विचारणा, शिष्यादिके माया ॥ ए पद सेवे पापनां, अहिठाण ते थाया ॥ ७ ॥ इति प्रथम द्वार ॥

॥ पडिसेवक जे पापनो, तेहने ए दोष ॥ आलोयाण देतां हुतां, थाये जेह शोष ॥ ८ ॥ आकंपीने अनुमते, जंदिठ आलापे ॥ सूक्ष्म अथ वादरे, प्रच्छन्न प्रलापे ॥ ए ॥ शब्दाकुलने अवक्तव्यता, ए कथकना दोष ॥ तेहज पण तिहां टालता, होये दुरितनो शोष ॥ १० ॥ अस्यार्थः ॥ गुरुवादिकने जक्ति जाव, अनुकंपा लीये आलोयण ॥ अपराधादिक लहुं करी, गुरु चित्त संजोयण ॥ ११ ॥ ते अनुमान न जाणीये, दीठुं आलोइ ॥ पण अणदीठुं नवि कहे, वादर आलोइ ॥ १२ ॥ सूक्ष्म सुच्यादिक जिके, ते वहु वहु जाखे ॥ विश्वासादिक हेते जाणे, अपराधने आखे ॥ १३ ॥ प्रन्नन्न अव्यक्त स्वरे कहे, ममणाटा करतो ॥ अथवा शब्दाकुले कहे, करहा परे जणतो ॥ १४ ॥ अथवा वहु जन सांजले, तेहवी परे जाखे ॥ अगीतारथ आगल कहे, माया मन राखे ॥ १५ ॥ ए आलोयण लहे तेहना, दोष एहवा जाणी ॥ निःशल्य थइ प्रायश्चित्त लीये, धन्य ते जवि प्राणी ॥ १६ ॥ इति पमिसेवग द्वार वीजुं ॥ हवे आलोयण केहेवो पुरुष लीये तेहना गुण कहे ने ॥

॥ आलोयण लीये तेहना, गुण एहवा जोइये ॥ योग्यतानो धणी जे होये, तेणे कर्ममल धोइये ॥ १७ ॥ जातिवंत कुलवंत विनयी, उपशमी इंडिय जय ॥ नाण दंसण समग सोधी, लेवे थइ निर्जय ॥ १८ ॥ चरण युक्त तप करे शुद्ध, अंगीकृत जेहवो ॥ माया रहित अनाशंसताये, आलोयणे तेहवो ॥ १ए ॥ हवे दश पदना अर्थ एह, जातिवंत जे प्राय ॥ अनाचार मूल नवि करे, करे तो आलोये ॥ २० ॥ कुलसंपन्न जे प्रायश्चित्त, गुरुदत्त तपादिक ॥ दीधुं ते रुडी परे, पहोंचाडे मर्यादिक ॥ २१ ॥ विनयी ते गुरुवचन तथ्य, करी माने सवि साचुं ॥ जंबुं अधिकुं देखी शोधे, न करे मन काचुं ॥ २२ ॥ उपशमी मनमां नवि धरे, गुरुशुं मद मत्सर ॥ इंडियजय ति गारवादि, निर्लोज अनादर ॥ २३ ॥ नाणी कृत्याकृत्य लहे, दर्शन श्रद्धानी ॥ गुरुवचन अनुज्ञादिके, वरते सावधानी ॥ २४ ॥ माया कपट नियमी नहीं, तेणे हेते अमायी ॥ अनाशंसपणे पमिवज्युं, पाखे धर्म सहायी ॥ २५ ॥ इति गुणद्वार त्रीजुं ॥

॥ अथ गुरुगुण द्वार कहे छे ॥ हवे जे गुरु आलोयण आपे, ते गुरु केहवो होय ॥ आठ गुणे करी युक्त होवे, गणधरनी जेहवो ॥ २६ ॥ यतः ॥ आयारव मेहारव, ववहार वीलए पकुवीय ॥ अपरिस्सावि निज्जव, अवाय दंसी गुरु जाणीओ ॥ १ ॥ दर्शन ज्ञान चरित्र तप, वीरीय आचार ॥ पाले पळावे निज परे, गच्छनो आधार ॥ २७ ॥ व्यवहार पांच तणो जे जाण, आगम श्रुत आणा ॥ धारणा जित ए जाणीये तेहनां पहिचाणा ॥ २८ ॥ केवली मण ने ओहि पुव, चउदस दसपुवी ॥ नव पुवी लगे होये आगम, व्यवहार अपुवी ॥ २९ ॥ आचार प्रकल्प प्रमुख शेष, संपूरणतांइ ॥ श्रुत व्यवहार ए जाणीए, अनुदित प्रवाहि ॥ ३० ॥ देशांतर स्थित उभय सूरि, मळवाने इच्छे ॥ पण न मळ्या तदा गूढ प्रश्न, याचनाये पीछे ॥ ३१ ॥ नीक परे अन्यंतरे, मुनिने ते जाणी ॥ आणा नामे तृतीय ते, व्यवहार वखाणी ॥ ३२ ॥ गीतारथ गुरुथकी गद्यो, पूर्वथी अवधारी ॥ वांध्युं प्रायश्चित्त जेमने, करी जेहनुं जे धारी ॥ ३३ ॥ उत्तम आर्यविद्यादिक थम आचर पाते, तेम ते धारीने दीये, धारणा वहुजाते ॥ ३४ ॥ ए धारेने सम्मते, मूल गुण नवि लोपे ॥ सुविहित गच्छे जे गुणी, गीतारथ थत्रे ॥ ३५ ॥ जेम आतुरने पथ्य रूप, जिन आण दिपाये ॥ जित व्यवहार ते पंचमो, तस जाण कहावे ॥ ३६ ॥ ते व्यवहारी गुरु कह्यो, जे लज्जा वहतो ॥ नर तेहने करे उजमाल, लज्जा अति गुरुतो ॥ ३७ ॥ ते उव्वीलज जाणीये, गुरु पापना सोधी ॥ देशने पण होये समर्थ, ते पकुवी बोधी ॥ ३८ ॥ अपरिस्सावि अति गंभीर, केहना मर्म न दाखे ॥ कोइना कोइ आगल नवि कहे, बहुशुं मन राखे ॥ ३९ ॥ निर्जव ते पण दुर्वहे, सवले पण सरीखो ॥ आप सवारथ नवि गणे, गुरु कंचन परखो ॥ ४० ॥ नरकादिक दुःख दाखवे, पाप विपाक देखाडे ॥ ते अपायदंसी कह्यो, निज दुरित पखाडे ॥ ४१ ॥ कुल योगी ने थविर वृद्ध, पर्याये जेठो ॥ गीतारथ जिनशासने, होये जेह वरिठो ॥ ४२ ॥ समयमाने ववस्थ धरे, छेदादिक श्रुतनो ॥ जाण होये ते सुशील दृष्टि, रागी जिन मतनो ॥ ४३ ॥ वृद्ध परंपर संमता, जिन आणा लेखे ॥ गाढ अगाढ ने सह असह, पारतंत्र विशेषे ॥ ४४ ॥ द्रव्य क्षेत्र ने काल भाव, वली योग्यायोग्य ॥ पुरुषविशेषने ओळखे, वली ज्ञान आरोग्य ॥ ४५ ॥ एवो गीतारथ जोयवो, पार परस लगे काजे ॥ लेवथी सातसें जोयण तांइ, चउरंग निहाळे ॥ ४६ ॥ सर्व लोकमां सार अंग, चतुरंग ते जाणे ॥ ते चतुरंगना नाशथी, चउगइ दुःख माणे ॥ ४७ ॥ जेह अखंडित व्रत चरण, होये

जेहनां शुद्ध ॥ ते पासे व्रत दर्शनादि, लीये शोधी विशुद्ध ॥ ४७ ॥ एतादृश गुणयुत सुगुरु, जोइ ते पासे ॥ लज्जा गारव जय विमुक्त, थइ साचुं जाखे ॥ ४९ ॥ जेम बालक माय आगले, सवि काज अकाज ॥ सरल पणे तेम जाखतो, नवि शंका लाज ॥ ५० ॥ तेम आलोये जेह जव्य, न रहे तस शल्य ॥ पाप रोग जाये तेहना, माया मिथ्या शल्य ॥ ५१ ॥ आलोयणे गुण होये आठ, तेह हवे कहीये ॥ निशियादिक ग्रंथे जण्या, गुरुमुखथी लहीये ॥ ५२ ॥ इति ॥

॥ हवे आलोयण लीधे केटला गुण उपजे तेनुं पांचमुं द्वार कहे छे ॥

॥ यतः गाहा ॥ लहु आल्हाइ जणणं, अप्प परणिवित्ति अज्जवं सोही ॥ दुक्कर करण अढाइ, निस्सल्लं होइ सोहि गुणा ॥१॥ अथ गाथार्थ ॥ हलको थाये पापना, जरथी जेम जारे ॥ वाहक अपसन जारथी, मन शाता धरे ॥ ५२ ॥ गये पापे आल्हाद होये, जेम निरुज काया ॥ आतम विरति गुणे करी, न धरे पर माया ॥ ५३ ॥ अध्यपरनिवृत्ति एह, पर पुद्गल कहीए ॥ विषयादिकथी उसरे, त्रीजो गुण लहीए ॥ ५४ ॥ ऋजुता जाव वधे जिहां, ते अज्जव चोथो ॥ शोधीपणे रिपु जीती होय, जेम शरनो अबोधो ॥ ५५ ॥ दुष्कर करणं ए कहीयुं, मन वचन तनु यंत्रे ॥ आढा मर्यादा परम, बोली जेम तंत्रे ॥ ५६ ॥ होये निःशल्य प्रमोद पुष्ट, ए आलोयणना गुण ॥ जाणी जे जवि आदरे, कह्यो तेहिज निपुण ॥ ५७ ॥ आलोयण परिणामवंत, थइ उद्यम मंडे ॥ एम करतां ते अंतराले, जो प्राणने छंडे ॥ ५८ ॥ तो पण आराधक कह्यो, संसारने छेदे ॥ पण निधरोले न वर्त्तवुं, जो अंतर जेदे ॥ ५९ ॥ जो पण गुरुपद आवीने, निज दोष प्रकासे ॥ आलोयण लीये शुद्ध जावे, करे तेह उल्लासे ॥ ६० ॥ तो निःशल्य थइ करी, शिवसुखने पामे ॥ यद्यपि ते न लहे कदाच, तो वैमानिक कामे ॥ ६१ ॥ एणी परे आतम शुद्ध थाय, अपराध खमावे ॥ ए लक्षण छे जविकनां, शुज संतति आवे ॥ ६२ ॥ ज्ञानविमल गुरुराजनो, जो विनय अनुसरीए ॥ तो जवसायर सहजथी, लीलाए तरीए ॥ ६३ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम जाणी जे आपणो, विस्मृत करे जे शल्य ॥ तेहने पण एम शिखवो, कही दृष्टांत अमूल्य ॥१॥ संसारी संसारमां, फरीयो काल अनंत ॥ ते आलोयण दोषथी, एम बोले जगवंत ॥ २ ॥ कर्मबंध आवे नहीं, पहलो

॥ १५० ॥

नो वीतराग ॥ पण पारे पार नहीं, फल नग ते महानाग ॥ ३ ॥ आलोयणने दाखवे, एहवा जे दृष्टांत ॥ मलिन मन निर्मळ करे, त्यार देइ अर्थांत ॥ ४ ॥ जेम मणने औषध करे, त्यार देइ करे शोध ॥ तेम समीदिक दाखवी, निर्मळ करे प्रबोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल छत्रीशमी ॥

॥ प्रतिकुलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ जवि चेतो रे, लही मानव अवतार ॥ दश दृष्टांते दोहिलो, जवि चेतो रे ॥ ज० ॥ जो जाणो ए जव हारी, तो फरी एहेवो न मोहिलो ॥ ज० ॥ १ ॥ ज० ॥ कहेवुं तेहने एम, मनमां शल्य न राखशो ॥ ज० ज० ॥ शल्य महा दुःखदायी, जेम एक अश्वने दाखव्यो ॥ ज० ॥ २ ॥ ज० ॥ अश्व एक वर रत्न, जेम कोइक नृपने हुतो ॥ ज० ॥ ज० ॥ तेह अश्वने मनावे, संपद वधती नित्ती हुती ॥ ज० ॥ ३ ॥ ज० ॥ बीजा नवि राजान, ते नृपनुं मगर गहे ॥ ज० ॥ कहुं केनुं रे ॥ कोइ एहवो नर होये, जे तुरग लीये एम कहे ॥ ज० ॥ ४ ॥ क० ॥ पमह वजावे तेह, एक नर तिहां पडहो ज्ञे ॥ ज० ॥ क० ॥ ते तो जोइ तस मर्म, पण ते तुरग न निकले ॥ ज० ॥ ५ ॥ क० ॥ कलबल अनेक उपाय, करे पण ते पासे न आवही ॥ ज० ॥ क० ॥ तुरग ग्रहणने काज, ते अवकाश लहे नहीं ॥ ज० ॥ ६ ॥ क० ॥ तो तेणे अवसरे ताम, पगे कंटक घालीयो ॥ ज० ॥ क० ॥ नीसाणो तेणे शल्य, न भाखे तेह भरावीयो ॥ ज० ॥ ७ ॥ क० ॥ दिन दिन करतो नाश, थाको पीडो पण अश्व ते ॥ ज० ॥ क० ॥ देखी नृपति ताम, वैद्यने देखाडे अश्व ते ॥ ज० ॥ ८ ॥ क० ॥ वैद्ये जोयो तेह, पण कोइ रोग न अटकलशे ॥ ज० ॥ क० ॥ जाण्युं कोइ अव्यक्त शल्य, जेहथी थाशे दुःखशो ॥ ज० ॥ ९ ॥ क० ॥ लीधो जीलो पंक, लिंपाची थानकने छपक्यो ॥ ज० ॥ क० ॥ शल्य मंदो तेह, शस्त्र ताणीने पग जस्यो ॥ ज० ॥ १० ॥ क० ॥ नहराणीये काढ्यो साज, नक्ष थयो ते अश्व तिहां ॥ ज० ॥ क० ॥ ते नर थयो निराश, पमह ग्रह्यो निष्फल थयो तिहां ॥ ज० ॥ ११ ॥ क० ॥ एणी पेरे पीडो अश्व, शल्य तिहां गत नवि थयो ॥ ज० ॥ क० ॥ एणी परे साधु शल्य, अंतर अरि जे दुःख नवि गयो ॥ ज० ॥ १२ ॥ हवे बीजो दृष्टांत कहे छे ॥ क० ॥ अयता कंपक नाम, तापस फल लेवा गयो ॥ ज०

॥ क० ॥ अटवीमांहे तेण, नदी तटे मीणो तरु रह्यो ॥ ज० ॥ १३ ॥ क० ॥ ते फल खाधां तेण, पाम्यो शरीरे गीलाणता ॥ ज० ॥ क० ॥ पूछीयुं वैद्यने तेण, पण न कही तास निदानता ॥ ज० ॥ १४ ॥ क० ॥ वैद्ये कह्युं घृतपान, रोग निदान लह्युं नहीं ॥ ज० ॥ क० ॥ अधिक थयुं तस ग्लान, तापसने अंगे सही ॥ ज० ॥ १५ ॥ क० ॥ वली पूछ्युं तेणे वैद्य, फल जक्षण दोष सवि कह्यो ॥ ज० ॥ क० ॥ वमन विरेचन धूप, प्रमुख नेषज ते सवि सह्यो ॥ ज० ॥ १६ ॥ क० ॥ वैद्ये कीधो सज्ज, ग्लानता तस दूरे गइ ॥ ज० ॥ क० ॥ एणी परे आपण शल्य, कह्यो अकह्यो एणी परे थइ ॥ ज० ॥ १७ ॥ क० ॥ कीधो अदीधो दंरू, हैयरू दुःख उपजावतो ॥ ज० ॥ क० ॥ साधु ने श्रावक लोक, बेहु वर्गे सुख दुःख पावतो ॥ ज० ॥ १८ ॥ क० ॥ दीधो पूरण तेह, न करे तोपण दुःख दीये ॥ ज० ॥ क० ॥ अणदीधो दुःख हेत, एम बहु नेदे लही हीये ॥ ज० ॥ १९ ॥ क० ॥ दीधो दंड सुसाधु, करतो शाश्वत सुख लहे ॥ ज० ॥ क० ॥ अणउद्धरित जे साल, ते संसारनुं फल कहे ॥ ॥ ज० ॥ २० ॥ क० ॥ ए दंड लेवो डुर्लन, जेहथी नवजव सवि टले ॥ ज० ॥ क० ॥ एम जोणी नवि जीव, गीतारथसंगे मले ॥ ज० २१ ॥ क० ॥ ते जणी थले शल्य, उद्धर संयम निर्मलो ॥ ज० ॥ क० ॥ परनव नवि मूकाय ॥ क० ॥ परजव पापना आमलो ॥ ज० ॥ २२ ॥ क० ॥ ज्ञानविमल गुरु योग, पामी पाप न उद्धरे ॥ ज० ॥ क० ॥ ते निज डुष्कृत हेत, नवसायर लहु नवि तरे ॥ ज० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वत्से एणी परे जाणीने, आलोइजे पाप ॥ बाल नावथी जे थया, प्रगट प्रच्छन्ने आप ॥ १ ॥ तहत्ति कहीने पडिवजो, सवि गुरु केरां वयण ॥ वंदीने गुरु आगले, लामे जल नरी नयण ॥ २ ॥ दर्प कंदर्प प्रमादथी, अनाजोग सहसाकार ॥ सवि आलोयां डुरित जे, एक मूकी दृष्टि विकार ॥ ३ ॥ तदनंतर गुरु एम कहे, कांइ विसरायो तुज्ज ॥ सा कहे जनमथी आज तां, में जाख्युं सवि गुज्ज ॥ ४ ॥ तव गुरु कहे एक विसरीयुं, वत्से ते संनाल ॥ राग दृष्टि तें मुजने, सनामांहे निहाल ॥ ५ ॥ ते आलोवुं ताहरे, विसरीयुं ते कर्म ॥ ते नंदी आलोयजो, ए जाख्यो तस मर्म ॥ ६ ॥ ते निसुणीने चित्तमां, पेठो कोइ दंज ॥ आयते जेहने अशुन ले, शुं करे तस व्रत थंन ॥ ७ ॥ डुर्द्धर कर्मविपाक ले, जेहनां

फल किंपाक ॥ जाति श्वपाक कह्यो नलो, पण माठो कर्म विपाक ॥ ८ ॥ गंध न जाये लसणनी, जो नलधा
याम थगाम ॥ त्यम जल परें कृत कर्मनो, डुर्धर टलवो पाप ॥ ए ॥ सर्व गाथा ॥ १७२० ॥

॥ ढाल सातत्रीशमी ॥

॥ ए देशी ॥ मुज माथे नहीं चोतुं मारा वाह्ला, तें मुजने पीनारी जी ॥ राग दृष्टि में तुम्हने जोया, आस्थान
॥ एम निगुणीने कही गमणी, कहे स्वामी नेणी थारे जी ॥ नहीं मुज किंपी विकार जी ॥ तेहनी हुं आलोयण आवे,
सना मझारे जी ॥ शील परीक्षा हेते जोया, नहीं मुज किंपी विकार जी ॥ तेहनी हुं आलोयण आवे, एम
अनाचार के अतिचार जी ॥ १ ॥ मपर्तु शुद्ध थवुं हुं संप्रति, आलोयण ली एहनी जी ॥ माया
गुणी पण मनमां चिंते, माया जाणी तेहनी जी ॥ स्त्री स्वनावने धिग धिग होजो, गाढो अहो न गइ तोही
शुद्धनुं मूल जी ॥ तप जप नियम तणो खप करतां, रहेतां लिंग अनुकूल जी ॥ २ ॥ अहो अहो न गइ तोही
माया, गलीयो गुरु उपदेश जी ॥ नाठुं मूल पुण्य थयुं गलुं, पाम्यो आनिनिवेश जी ॥ शमी पठवे नेवुं कीधुं, माग
पंथ उवेख्युं जी ॥ नीर परें दृणीए संयमनुं, फल मायाये येधुं जी ॥ ३ ॥ फरणार्यत मुनीश्वरे फरीने, शुं
पोताथी ने अज्ञा जी ॥ मायाथी माये मल गमजो, एता दिननी पथज्ञा जी लक्ष्मणा नामा राजसुतानो, नव कांतार
दृष्टांत न सुणीयो जी ॥ मन चिंतित अतिचार न नाखे, लज्जा गारव मुणियो जी ॥ ४ ॥ नव कांतार
मांहि गा नमीयां, गमीयां डुःखमां जम्मा जी ॥ प्रतु ते लक्ष्मणा अज्ञा कहो ते, केणी परे बांध्युं कम्मा जी ॥
ताग चरित्र नव निगमह कारण, मारण रूपे दाखे जी ॥ वेदादिक ग्रंथे जे दाख्युं, तेहनी खेड़ गाखे जी ॥ ५ ॥
संप्रति कृंडायमर्पिणि पहेलां, चोवीशीथी पहेली जी ॥ एंशीमी चोवीशी ज्यारे, वात तिहांथी केहली जी ॥ ती-
र्थंकर चोवीशमो हुर्ज, गात हाथ तनु माने जी ॥ धर्मसिंह नामे तेणिवारे, नरत नृमि परधाने जी ॥ ६ ॥ धरणि
प्रतिष्ठित नयरे जंबु, दारुण नामे नृप जी ॥ श्रीमती नामे राणी तेहनी, शशिरूपे ते अनुप जी ॥ तेहने पुत्र
सुरूप ने सुगुणा, अने अनेक विवेका जी ॥ पण तेहने पुत्री नहीं कोइ, इच्छा तस अतिरेका जी ॥ ७ ॥ दाय
उपाय देवादिक माने, थइ तनया तस एका जी ॥ लक्षणा युक्त सुलक्षणा नामे, रूपे रंनाधिक रंकाजी ॥ कला चोसठ
तणी मन्न वागिणी, अनुक्रमे यौवन पामी जी ॥ ते देखीने नरपति चिंते, ए सम पति कोइ कामी जी ॥ ८ ॥ रूपे विस्मित

थइ जाखे, आस्थान सजामा बेमी जी॥ जो जो मंत्री सामंतादिक सुणो, वर जुओ कोइ सुवेशी जी॥तव सचिवादिक सहु एम जासे, स्वयंवर मंडावो जी ॥ गाम गामना गुणी बहु राजा, कुमर बहु तेमावो जी ॥ ए ॥ तव राजाये वरनो मंमप, रची राजानने तेडे जी ॥ चतुरंग सेनाए परवरिया, आव्या न करी जेम जी ॥ शुन मुहूर्त्त शुन्न वेला लगने, गा सित पखने पहेरे जी ॥ चंदन चर्चित गात्र ने चामर, छत्र शिर धरि मेहेरे जी ॥१०॥ उज्जल निर्मल कुसुमची माला, सुकुमाला सा बाला जी ॥ कामदीपिका परे ते दीपे, जूषण फाकफमाला जी ॥ चमक परे नृप चित्त अय खेंचे, चंचे मुगतामाला जी ॥ स्वयंवर मंमपमांहे आवे, फावे ते वरमाला जी ॥११॥ जंबुदाडिम नृपने वयणे, कंचुकी पुरुष देखाडे जी ॥ सवि राजाना वल धन देशह, चरित्र जलां ते जणावे जी ॥ नाम गोत्र कहेतां बहु नरपति, चित्तमां कोइ न गमीयो जी ॥ अनुक्रमे राजपुत्र एक परगट, गुण निगुणी चित्त रमीयो जी ॥ १२ ॥ तस गले कदली स्वयंवर माला, आरोपे ते लरकणा जी ॥ जय जय शब्द थयो स्वयंवरमां, गुण बोले शुन्न धिषणा जी ॥ ज्योतिष दान दीयां तस बहुलां, धन कण कंचन मोती जी ॥ निरखी परखी लक्षणवंतो, पतिने बहुपरे जोती जी ॥ १३ ॥ अशुन्न कर्मना उदयथी तेहनो, पति पंचत्वने पाम्यो जी ॥ कंकण बंध हजी नथी छूटो, तेहवे ए दुःख दाम्यो जी ॥ चोरीमांहे एहवुं दुःख देखी, हाहारव बेहु पक्षे जी ॥ पति संस्कार अग्निमां कीधो, स्वयंवर लोक समक्षे जी ॥ १४ ॥ विलपंती रोती ते लरकणा, निरखी जनक एम जासे जी ॥ मरण उपरे कांइ जोर न चाले, चक्री शक्रादिक विणासे जी ॥ किशलय दल कोमल आपण सत, तेहनुं इहां शुं चारो जी ॥ एम जाणीने वत्से सुलक्षणे, शोक संताप निवारो जी ॥ १५ ॥ धीरपणुं करी मनमां पुत्री, ए विधवा तन आव्युं जी ॥ सकल दुरित दौर्जाग्यनुं स्थानक, अपमंगल ए पाव्युं जी ॥ सवि सांसारिक काममांहेथी, लेखे काढी नाखी जी ॥ सासर पीयर बेहु गमे ते, दयली करीने राखी जी ॥ १६ ॥ ते जणी चित्त प्रसन्न करीने, निज कृत कर्म अहियासो जी ॥ दान दीयो ने जिनवर अर्चो, खरचो धन सुख वासो जी ॥ विधवा प्रोषितपतिक सतीने, जणवुं शास्त्रनुं सुणवुं जी ॥ संगति सुशील समणीनी कीजे, एहज चित्तमां सुणवुं जी ॥ १७ ॥ जिनमत कुशल जे वृद्ध कंचुकी नर, तेहनी पासे आपी जी ॥ लरकणाने गृहीधर्मे जोमी, कोडी गमे धन आपी जी ॥ अन्य दिने तस नयरे आव्या, जिनजषण [illegible]

सुहाया जी ॥ १७ ॥ धर्मदेशना निसुणण काजे, तिहां नरेंद्र पण आवे जी ॥ उद्यानपालके वधाव्यो ते, वधामणी बहु पावे जी ॥ सर्व ऋद्धि सवि सयणे संयुत, विधिशुं त्रिगडे पेसे जी ॥ त्रि प्रदक्षिण पंचांग नमीने, विधिशुं स्तवतो बेसे जी ॥ १८ ॥

॥ राग भैरव ॥ तुं जयो तुं जयो, तुंही जिनराज रे ॥ तुज थकी सवि सरे, जविकनां काज रे ॥ तुं० ॥ ॥ १ ॥ असुर सुर किंनर नर, किन्नर आदि रे ॥ चरणरज ताहरी, करे निज नाथ रे ॥ तुं० ॥ ए आंकणी ॥ मोह संदोह तम, तिमिर संसार रे ॥ दूर होये तुम्ह दर्शन दिनकार रे ॥ तुं० ॥ २ ॥ विमल गुणगण महोदीर निधि नीर रे ॥ चंद्रनिज रोहिणी रमण सम धीर रे ॥ तुं० ॥ ३॥ कमल दल नाल वर कोमल बांही रे, ताहरी देशना सुरतरु छांही रे ॥ तुं० ॥ ४ ॥ तरुण करुणारस सरस सुरसिंधु रे ॥ ताहरूं शासन त्रिभुवन बंधु रे ॥ तुं० ॥ ५ ॥ ज्ञानविमलादि गुण सहज घननीर रे ॥ जाय अरि वारवा तुंही वर वीर रे ॥ तुं० ॥ ६ ॥ इति गीतं ॥

॥ राग वसंत ॥ सकल समीहित दायक लायक, नायक तुं जिनराज ॥ सुर नर नायक पायक ताहरा, परिसेवे तुम पाय ॥ १ ॥ स० ॥ कलिमल वारण शिवसुख कारण, तारण जविनां चित्त ॥ गंगानीर पूरथर लागाधिक, उज्ज्वल निर्मल चित्त ॥ २ ॥ स० ॥ सजल जलद धारा सम वाणा, व्याल परे संसार ॥ ते तुमे विसरीयो दुःख दरियो, तरी गहेज अपार ॥ ३ ॥ स० ॥ जय जय तुं दूरीकृत संगुल, मंगल केलि निवास ॥ वासव पूजित चरण सरोरुह, सुरतरुकृत वास ॥ ४ ॥ स० ॥ दंतधरणी नोदन पर खेदन, सार सीर उपमान ॥ तुं जय ज्ञानविमल वरदर्शन, चरण करणनुं धाम ॥ स० ॥ ५ ॥ इति स्तुतित्रयं ॥ २ ॥

॥ ढाल पूर्वली ॥ एणी परे स्तवीने नरपति बेठो, बेठो सज्जाना मनमां जी ॥ जयनंदन जिन भवे उपदेशे, धर्मने नंदन वनमां जी ॥ नयस्वरूप एम नासे पामे, अनित्यतादिक जावे जी ॥ पवन प्रणोदित पद्मिनी दल जल, परे क्षणमांहे समावे जी ॥ २० ॥ प्रिय परियण संजोगा जोगा, आगर बहु दुःख केरा जी ॥ जीवलोकमां भावे दीसे, सवि सुकल अथवेरा जी ॥ शब्दादिकने अपार जोगा, ते पण जंगुर क्षणमां जी ॥ शोकानल तापे सवि तपीयो, जेम जलजोह न पामा जी ॥ २१ ॥ चक्रीने पण चक्र समो ए, जगतनुं चक्र ने जोतां जी ॥ अपरिचित काम जोगे जाये, निश्चे नरके रोतां जी ॥ इतर प्राणीनुं शुं कहेवुं नृप, निश्चे दुःखीया

॥ आप उदर भरवाने दीक्षा, दीक्षा केम ते लहशे जी ॥ २२ ॥ सुख संसारमां तिहां तुच्छ जातमें, आगे सुख निरुपाधि जी ॥ ओलो सो ते क्यांही न दीसे, ते जाणी बुध शिव साधे जी ॥ सिद्धमांहे निरुपाधि अतीद्रिय, सुख ते सादि अनंत जी ॥ ते सुख संयम धर्म आधीनह, एम बोल्या भगवंत जी ॥ २३ ॥ धन धन ते जे जिननी दीक्षा, कुशल लही आराधे जी ॥ अप्रमादपणे निराशंसता, मुलुत्तर गुण साधे जी ॥ एम उपदेश सुणीने राजा, जयजयथी उजागो जी ॥ शिवसुखनो रसीयो थइ जिनवर, चरणे आवे विरागो जी ॥ २४ ॥ पुत्र कलत्र परियण लेइ साथे, खलकणा साथे लेवे जी ॥ दीक्षा लही उत्साह धरीने, श्रीजिनना पद सेवे जी ॥ थविर मुनिने सोंप्या राजादिक, मुनिवरना परिवार जी ॥ खलकणा ते श्रमणीने सोंपी, दुविध शिक्षाने धारे जी ॥ २५ ॥ सारण वारण चोयण ने पडि, चोयण विविध प्रकारे जी ॥ विसरे ते संभारण सारण, वारण अकृत्यने वारे जी ॥ चोयण ते वचनादिके प्रेरण, न्यूनाधिकता जाखी जी ॥ पडिचोयण ते ईम आकरो, देवे प्रवचन साखी जी ॥ २६ ॥ एम संयम मर्यादा धरतां, केतोएक गयो काल जी ॥ संयम योग समाधि युगता, जगता नमता जाले जी ॥ गुणगुरु गुरुना ज्ञानविमल मति, साधे जिननी आणा जी ॥ पाळतां टाळतां बहुविधि, अतिचारनां ठाणां जी ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ १३५७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे एक दिन ते खलखणा, उद्देशादिक काज ॥ असज्झाइ जोवा भणी, वसति शुद्धिने साज ॥ १ ॥ प्रवर्तणीना वयणथी, करवाने अनुयोग ॥ जोवा जावे बाहेरे, कोइक कर्मने जोग ॥ २ ॥ चीडी मिथुन तिहां कीलतुं, दीठुं खलकणाए ताम ॥ कोलादिये रति केलि करे, जोइ नयण अभिराम ॥ ३ ॥ तरुणपणे उपर चडे, वारंवार धरी प्रेम ॥ खलकणा निर्लक्षण थइ, चित्तमां चिंते एम ॥ ४ ॥ पापकर्मना उदयथी, एह युगल कृतपुण्य ॥ स्वतंत्र उंदपणे रमे, काल जाये नहीं शून्य ॥ ५ ॥ पंख समारे लणक दीये, मुखमां घाले चूण ॥ दंपती रिझवर योगथी, अवर प्रेम कहो कोण ॥ ६ ॥ प्राण दीये परगटपणे, तो शी अवरनी वात ॥ मेथुरण संभारतो, शाता दीये साक्षात ॥ ७ ॥ ते संयोग न अनुभव्यो, अहेले गयो जमवार ॥ जिहां संकल्प सभे नहीं, तिहां रह्यो कारागार ॥ ८ ॥ एह रीते क्रीडा जोवतां, उपजे मनमां हर्ष ॥ मुजथी ए अति सुखीयां,

संवीयाथी हुं निःकर्म ॥ ९ ॥ जो मैथुन सेवा नहीं, मुजने सुख जो होय ॥ हो जाणे संयम शीयल, करण दान गुण्य शील ॥ १० ॥ संयतने जो जिनवरे, जोयुं पण प्रतिषिद्ध ॥ कीधुं पण कीधुं नहीं, पहली मन न निरुद्ध ॥ ११ ॥ मनथंदी मनुष्य थयुं, नहीं तस मैथुन दुःख ॥ रतिमया सेवा परे, बीजा लागे सुख ॥ १२ ॥ पछी मेरे तेणे एम जाणीयुं, पछी कुर्गतरमांय ॥ वासना आवी विषयथी, वैरागनीती त्यांय ॥१३॥ सर्व गाथा ॥१३११॥

॥ ढाल आठमीनामी ॥

॥ गिरिमां गिरुओ मेरु गिरि वडो रे ॥ ए देशी ॥

॥ धिग् धिग् मुजने गम सदगुण हुं पापिणी रे, लागुं ए मुज पाप ॥ मनथी रे तनथी रे, सेव्या विण लागुं पापुं रे ॥ १ ॥ जोतां सेव सोनाणुं मनडुं मारेक रे, तो जो होये संयोग ॥ निहारे रे तिहारे रे, केम धीरज टके ते जाणुं रे ॥ २ ॥ देवु विकारना मध्ये पण जस मन नवि कंपे रे, तेहज कहीए धीरां आगमां रे ॥ यगमां रे, संयम मारग ए नहीं रे ॥ ३ ॥ ते माटे यतिजनने जोयुं वारीयुं रे, जगथंते मुख तेह ॥ वयण रे सुन गुण रे, जाये ए जोतां थको रे ॥ ४ ॥ विष ने विषय बेहु जोतां अंतर ने घणो रे, विष खाधुं दीये मरण ॥ एक जये रे बहु जये रे, विषय चिंतनथी जय जये रे ॥ ५ ॥

॥ यतः ॥ एकवर्णातिरेकेण, विषविषयोर्महदंतरं ॥ विषं तु जदितं हंति विषयाः स्मरणादपि ॥ १ ॥

भावार्थः—विष अने विषय तेमां विषय ए पदमां एक छेल्लो यकार वधारे होवाथी ए बेमां मोटो अंतर थाय छे, कारणके विष जे छे ते तो भक्षण करे तेने जीवने मरण पमाडे छे अने विषय तो स्मरण मात्रथी मरण तुल्य करे छे.

॥ राग दोष जितमोही श्री वीतरागनी रे, आशातना में कीध ॥ मोटी रे खोटी रे, जाति कुशील अवला गाळी रे ॥ ६ ॥ अपने पण रतिवेगा सुख संयोगनी रे, दीठी न हृदय मझार ॥ विंसी रे गड वीती रे, हुं पडु आज घणो मने रे ॥७॥ हा हा हा एम वाणी मुखथी उच्चरे रे, फूटे हृदय ने पेट ॥ तामे रे पामे रे, निज तनु अनरथमां घणुं रे ॥ ८ ॥ ते धन्य मुनिवर दिव्य जोगे पण प्रारथ्या रे, नवि खोन्या तिल मात्र ॥ गात्रे रे गात्रे रे, त्रिभुवन आगे उभरो रे ॥ ९ ॥ कीधी मैथुन रति देवी में सही जोजना रे, तो मुजने महा पाप ॥ व्याप्युं रे थाप्युं रे, मुज पातक में ए जये रे ॥ १० ॥ एता काल लगे में शीलव्रत पाळीयुं रे, ते में तुरतुं

आज ॥ इण भावे रे भावे रे, एहवां पाप न पामीये रे ॥ ११ ॥ सकल लोकमां अखंडित शील विरुद्ध थयुं रे,
आजलाइ में भील ॥ लिगभे रे लणों रे, पण्णु कंचन गयुं धूळमां रे ॥ १२ ॥ तो हवे शल्योध्धरण करुं कोइक
कन्हे रे, एम मनमां आलोच ॥ करती रे निरति रे, वळी वासना आवी तिहां रे ॥ १३ ॥ प्रगटपणे कहेतां
नथी कोइ एम जाणशे रे, ए गरमी एणी वात ॥ खोली रे थोली रे, हवे मर्यादा शीलनी रे ॥ तोली रे केम
मुख देखाडी शकुं रे ॥१४॥ अणछित पापे शल्य हियामां राखती रे, नवि थाउ एतो शुद्ध ॥ पाले रे आले रे, जेम
दुर्गति होवे लेखपने रे ॥ १५ ॥ पाप तटीनो कूप सपनो इहां थयो रे, न्याय करुं हवे केम ॥ पेठी रे
ऊंडी रे, दुःखी पण संकट पडी रे ॥ १६ ॥ अथवा चिंतित मात्र ए दुरित आलोतां मुजने रे, नहीं कहेशे
कोइ दोष ॥ पोषो रे रोषो रे, मन विकल्पनो आकरो रे ॥ १७ ॥ मेल्युं होय तो लोकमां लज्जा पामीये रे,
मन तो छे दुराराध्य ॥ तेहमां रे जेहमां रे, अध्यवसाय घणा वसे रे ॥ १८ ॥ एम चिंती गुरु पासे जावाने
धरी रे, जातां कंटक पाय ॥ लाग्यो रे जाग्यो रे, शल्य अपर ए आकरो रे ॥ १९ ॥ चिंते मनमां शकुन ए
सुंदर नही रे, किहांथी कंटक जात ॥ एणे रे जेणे रे, अंतराय कर्युं आलोयणे रे ॥ २० ॥ तो मुज उपर
वीज पडो हवे केम नहीं रे, हृदय न फूटे कांय ॥ त्रूटे रे खूटे रे, जेम ए पाप अनुक्रमे रे ॥ २१ ॥ एहवामां
वळी मानशीले थांपी ते घणुं रे, चिंते मुज सम कोइ ॥ ख्याते रे जाते रे, सघळे निर्मळता गुणे रे ॥ २२ ॥
विमल कुळे उपनी कन्या हुं धनी रे, ए लघु शो अतिचार ॥ दाखुं रे राखुं रे, आपोपुं अणकहेणथी रे ॥
॥ २३ ॥ अकथे शल्ये दुःख परंपर अतिघणी रे, कहेतां लघुता होय ॥ माहरी रे धारी रे, एह वात मनमां
तेणे रे॥२४॥तो मन चिंते परव्यपदेशे पूछीये रे, प्रायश्चित्त गुरु पास॥ निजनुं रे बीजनुं रे, कहे ते सुणीने पखिजुं
रे ॥ २५ ॥ परनी साखे आलोये शुं निपजे रे, होय तपथी शुद्धि ॥ परखुं रे करखुं रे, दुष्कर तपथी शोधीने
रे ॥ २६ ॥ एम चिंतीने लक्ष्मणाये तप करवा तणी रे, कीधुं मन उजमाळ ॥ जाणी रे नाणी रे, ज्ञानविमल
मणि भाखशे रे ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ १७९९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उत्तम क्षमण कराववे, तेम नीवि तप जाण ॥ एकासणे बिआसणे, चौद वरस परिमाण ॥ १ ॥ माम-

समण माज पारणां, आंबिलशुं मीश वर्ष ॥ एम तप कीधां आकरां, पूर्ण वर्षागां वर्ष ॥ २ ॥ आवश्यक
आतापना, दिक किरिया समुदाय ॥ ते पण नित्य मूके नहीं, अदीन मनगा थाय ॥ ३ ॥ एम तप आचरतां
थकां, अथ एक दिन चित्तमांहि ॥ एहवुं आवी उपनुं, दुष्करणी नांही ॥ ४ ॥ सुधा में आतम सोषव्यो,
ए तपनुं करी कष्ट ॥ शल्य पण नवि छंडशुं, अज्ञान कयुं न विशिष्ट ॥ ५ ॥ धूं कृतार्थ धिग धिगपणुं, आर्त्त-
रौद्र धरी ध्यान ॥ शल्य सहित ते लक्ष्मणा, पामी मरण निदान ॥ ६ ॥ एकण नयरे छपनी, संकुचा इति
नाम ॥ दासी अइ वेश्या घरे, रूप गुणे अभिराम ॥ ७ ॥ कामी जन तेहने घणुं, इछे जोगने काज ॥ पण
अकाजे कुट्टिनी, विघन करे तस काज ॥ ८ ॥ निज भूआनी वृत्तिथी, काढी घरथी तेह ॥ वली मनमांहे
चिंतवे, ए छे रूपनुं गेह ॥ ९ ॥ सहु कामी जन एहने, इछशे निर्धार ॥ विनयी वचनें मीठडी, ते थाशे
होय नार ॥ १० ॥ त्यारे एह मनावशे, मुजने देशे दुःख ॥ तो कांइ एहवी करुं, जिहां ए न लहे सुख ॥ ११ ॥

॥ ढाल उगणचालीशमी ॥

॥ नंदनकुं त्रिशला हुलरावे ॥ ए देशी ॥

राग आशावरी ॥ जे सुविनीत सुनासी सुलक्षा, रूपवती जे होवे रे ॥ ते प्राये सहुने मनगमती, तेहने सहुए
जोवे रे ॥ १ ॥ देखो अणालोयण फल मलवट, शल्य महा दुःखदाइ रे ॥ कंटक तोमर प्रमुखे अन्य दोहिलां,
तो शुं कहेवुं मायी रे ॥ जावशल्ये गुण नहीं कांइ रे ॥ देखो० ॥ ए आंकणी ॥ एम चिंतवुं तेणीये कुट्टिनीये,
नाक कान हवे कापुं रे ॥ एम चिंतीने अफा सूती, जनम दुःखमां पूरी रे ॥ २ ॥ देखो० ॥ एहवे संकुचाने
सुपनमां, कोइ व्यंतरे एम दाख्युं रे ॥ कुट्टिणीने चिंतित रखे होवे, शा जागी सुपन मन राख्युं रे ॥ ३ ॥
दे० ॥ प्रातःकाल गणिकाथी बीहिती, नाठी जय मन पामी रे ॥ ते मासे जमतीए पाम्युं, खेडनाम नगर
अभिरामी रे ॥ ४ ॥ दे० ॥ तिहां धनाढ्य कुलपुत्रके दीठी, जागी काम अंगीठी रे ॥ मीठी लागे हृदयमांहे
आणी, घरमां करे छपिठीरे ॥ ५ ॥ दे० ॥ तेहेली स्त्री जे तेहने अनीठी, लागे तस छिद्र जोवो रे ॥ सोक्य-
वेद दुर्धर अति होवे, तिहां नवि वैर विगोवो रे ॥ ६ ॥ दे० ॥ संकुचाने देखी रीशे, उठीने ग्रही दारे रे ॥
चूकेल परे ते केके लागी, दातरडाशुं विदारे रे ॥ ७ ॥ दे० ॥ मीण करी तातुं तस गुह्ये, नामी वली मन चिंते

प्राण जाए एम करतां न मरे, तो वली पूरे खेते रे ॥ ८ ॥ दे० ॥ वली माहारा सुखने करी पराजव, अथवा अपरने थाये रे ॥ तो एहवुं करुं एहने दुःखणी, पति पण मुज पराक्रम जाणे रे ॥ ९ ॥ दे० ॥ ताती फोला करी श्रय केरी, संचारे योनि मांहे रे ॥ तेणे दुःखे सा मरणने पामी, हींमी बहु जवमांहे रे ॥ १० ॥ दे० ॥ खंमुघानुं कलेवर तेणे, निरनुकंपथी कीधुं रे ॥ खंमो खंम करी पशु पंखी, श्वानने वेंची दीधुं रे ॥ शोक्यनुं घर ते लीधुं रे ॥ ११ ॥ दे० ॥ एहवे कुलपुत्रक तिहां आव्यो, ते व्यतिकर सवि जाण्यो रे ॥ संवेगे पागित मनमांहे, वैराग्य रंग ते आण्यो रे ॥ १२ ॥ दे० ॥ धिग् धिग् ए संसार वासने, पास ते मोहोटो ए छे रे ॥ विषयामिषना अद्ध जे प्राणी, ते दुर्गतिमांहे गछे रे ॥ १३ ॥ दे० ॥ काम महाग्रह कुग्रह ग्रसिया, खसीया परे नवि जाणे रे ॥ कंडु तो पण लोही जरतो, खणतो मीठाश माणे रे ॥ १४ ॥ दे० ॥ विष हालाहलथी ए विषया, विरुआ जास विपाका रे ॥ अंते विरसा आपा तरसा, जेहवां फल किंपाका रे ॥ १५ ॥ दे० ॥ ते धन्य ते कृतपुण्य कहीजे, विषय विमुख जे थावे रे ॥ जाणीने ते धन्य जगमांहे, एम विरागता जावे रे ॥ १६ ॥ दे० ॥ स्त्रीचरित्रनी लही धिठाइ, मीठाइ नहीं जवमां रे ॥ एम चिंती कुलपुत्रक मुनिने, पासे गयो पुर वनमां रे ॥ १७ ॥ दे० ॥ वंदी जगते मुनिने घरनुं, सवि स्वरूप ते जाखे रे ॥ निरारंज निर्दंजपणाथी, दीक्षित थयो सहु साखे रे ॥ १८ ॥ दे० ॥ खंत दंत तप संजम जुत्तो, मुक्तिनो केवल अर्थी रे ॥ संयम अविकल सकल पालीने, निःसंगी थयो परथी रे ॥ १९ ॥ दे० ॥ कर्म गंठीना मर्म सवि जेदी, सिद्धि लह्यो सर्ववेदी रे ॥ उत्तम ते पर दुःख देखीने, होये संसार उछेदी रे ॥ २० ॥ दे० ॥ हवे ते लखणा जीव संसारे, जमतां बहु बहु वारे रे ॥ चक्रवर्त्तिनी स्त्रीरत्नपणे, उपनी तेह केवारे रे ॥ २१ ॥ दे० ॥ तिहांथी छठी नरके वसीयुं, तिहांथी वली जव फरतो रे ॥ श्वानपणे उपन्नो अधन्नो, मैथुन संज्ञाये निरतो रे ॥ २२ ॥ दे० ॥ पिंडारे ते गुह्य देशमां, शरे करी वेध्यो ताणी रे ॥ कृमिकुले लह्यो कुह्यो तुह्यो, वेदना लही अहिराणी रे ॥२३॥ दे० ॥ मरी वेश्या उयरे उप्पन्नो, सुतापणे तस जीवो रे ॥ गर्जमांहे बेह मासे मुओ, वेदन सहेतो अतीवो रे ॥ २४ ॥ दे० ॥ जव नवाणुं एणी परे गर्जमां, वसी वसी मरण पामे रे ॥ एम करतां दारिद्रे उपद्रुत, मानवनो जव पामे रे ॥ २५ ॥ दे० ॥ गर्जे उपन्ने जणत खवमां, एटले मुइ माय रे ॥ पिता पण बे मासे मुओ, एणी परे बहु दुःख पाय रे ॥ २६ ॥ दे० ॥

जनने धवरावे, पाजरुथा परे भीर थाये रे ॥ २७ ॥ दे० ॥ पणी परे ते बाळाने वधारे, अनुक्रमे थड मोहोटी रे ॥ प्रतिदिन भीर घंणी पीवे महुनां, हियमामांहे मोटी रे ॥ २८ ॥ दे० ॥ निर्दय कोणणी महुने गणती, अवळी गने ते थाले रे ॥ कर्मजाळ बांधीने पणी परे, कर्मथी कोणथी न थाले रे ॥ २९ ॥ दे० ॥ ज्ञानविमळ गुरु गणि पण तेहथे, कह्यो केणी परे करी थाले रे ॥ तेह जाणी आतम शुद्ध करजो, दुरगमां थाप वधारे रे ॥ ३० ॥ दे० ॥ सर्व गाथा ॥ १०३९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिहांथी मरी ते जय किध्यो, कोडा कोडी तियार ॥ क्षुधा तृषाये पीडियो, व्याधि वेदना अपार ॥ १ ॥ एम करतो थयो वध बंधन ने मारणा, दुःख पामे पशु थार ॥ दाखे के दावानरे, मरण लहे निरधार ॥ २ ॥ तिहांथी मरी धंनाण थयो, द्विजकुळे, निर्धनने दोनाग ॥ तिहांथी मरी देवीपणे, दुरभी व्यंतरी लाग ॥ ३ ॥ तिहांथी मात नवा लगे, थयो वळी चामुंडा देवी ॥ तिहांथी दुष्ट विलास थइ, गयो नरके ततखेव ॥ ४ ॥ तिहांथी क्रूर अनार्यमां, मनुज थयो महीष अति क्रूर ॥ तिहांथी मनुज ने मारतुं, तिहांथी नारक पूर ॥ ५ ॥ तिहांथी कुष्टी नर थयो, तिहांथी मालमी जाय ॥ स्त्रीनाथ॥तिहांथी मरी जडीव गयो, नहीं कांइ करुणा नाय ॥६॥ तिहांथी कुष्टी नर थयो, तिहांथी बांध ॥ ७ ॥ देवगवडा ते व्यावतां, पाणी कादवमांहि ॥ कागवनूका स्वामी गांणपणे थयो, गोणी वदण ते थाय ॥ ७ ॥ तिहांथी मकयवामां थयो, माप दृष्टिविष घोर ॥ पंचम नरके मरी आयती, मरण लही मा त्यांहि ॥ ८ ॥ एम जमीयो चउगति जये, पाम्यो दुःख अघोर ॥ लक्ष्मणा जीव ते आपणा, थयो, कर्म तणे ते जोर ॥ ९ ॥ कर्मवशे अधि तिरुक ॥ १० ॥

॥ ढाल चाळीशमी ॥

॥ वेगळे नार पणो ते राज ॥ ए देशी ॥

एम लक्ष्मणानो जीव फिरंतां, पदमनाभ जिन वारे ॥ आवंती चोवीशी मांहे, एकण गाम मझारे ॥ १ ॥ सुंधी नाशिका सुणजो नारि, एहवी गाथी यातां ॥ मनमां शदये थाय, बांधे नरकनां खातां ॥ ए आंकणी ॥ मरा गेह देहे छंपी लक्षणे, पशु छद्वेग पमाडे ॥ पिताने ते गामने लोके, सरप्यादीने नमाडे ॥ २ ॥ न० ॥

काजलशुं लींपी, लींपी चीवर फूटे ॥ तेम मारंती विरस वाजते, फूटो पडहो आगल कूटे ॥ ३ ॥ ज० ॥ एम विगोइ रानमांहिं ते, मूकी घूंका देइ ॥ कंदमूल फल नोजन करती, काल गयो एम केइ ॥ ४ ॥ ज० ॥ विषये पुती एक दिन सूती, शत्रु धर्ममां बाधी, छवुंदरीए एक दिन तिहां कणे, नाभि गुह्यमां खाधी ॥ ५ ॥ ज० ॥ एम चरतां ते सकल शरीरे, नखे छवुंदरी तींखी ॥ दुःख अतीव सहंती तिहां कणे, तोहे सुमति न शीखी ॥ पेट नरे घने नीखी ॥ ६ ॥ ज० ॥ नमतां नमतां एक दिन तिहां कणे, देखशे सा समोसरणं ॥ पद्मनान जिन केरुं कर्मे, सकल दुःखनुं हरणं ॥ ७ ॥ ज० ॥ श्रीजिननाथ विहारे क्षणमां, रोग शोक सवि जावे ॥ प्राणीना परगट ए महिमा, सुखीया सहुए थावे ॥ ८ ॥ ज० ॥ ते खुजिना नाठा सघला, रोग शोक तेण वेला ॥ श्रीजिनदर्शन होये ते धन्य वेला, ऋद्धि सिद्धिनी लीला ॥ ९ ॥ ज० ॥ वंदी जिनवरने पूछसे, पूरव जव पातकमां ॥ श्यां कीधां स्वामी ते दाखो, जेम लह्यां में एवमां दुःखमां ॥ १० ॥ ज० ॥ लख्खणा समणी केरा जवथी, अणआलोयण हेते ॥ पाप विपाक तणां फल दाख्यां, सांजली थइ ते चेते ॥ ११ ॥ ज० ॥ जवभ्रमणथी परितंता खुजा, लेशे तिहां कणे दीक्षा ॥ आप तणुं दुष्कृत आलोइ, चरण धर्म ग्रही शिक्षा ॥ १२ ॥ ज० ॥ आलोइ निःशल्य थइने, कर्ममयल सवि टाली ॥ लख्खणा जीव ते सिद्धि लहेशे, खुजी आप संनाली ॥ १३ ॥ ज० ॥ नावशल्य थोडुं पण बहु होय, अणआलोयुं हंतुं ॥ गारव प्रमुख अपगुणथी वधतुं, सहुथी ए छे निरतुं ॥ १४ ॥ ज० ॥ इति श्री लख्खणा दृष्टांत शीलसन्नाह मुनिए रुप्पी समणी आगल कह्यो ॥

ते माटे वत्से तुं जवमां, दुःख नवि लहे अति तींखां ॥ लख्खणा आर्यानी परे तेणे में, वचन कह्यां सुधा सरीखां ॥ १५ ॥ ज०॥ शीलसन्नाह मुनीश्वर बोल्या, नली परे आलोये ॥ पुत्री निज आतमने निर्मल, करी शिवगति जोवे ॥ १६ ॥ ज० ॥ बहुश्रुत पाठ पढी तुं वत्से, दुर्धर कृत तप आचरणा ॥ त्यां कोए शल्य अपलपीने, नहीं थाशे जवतरणां ॥ १७ ॥ ज० ॥ रानमांहे रोयुं जेम नाटक, अंधनी आगल अफल्युं ॥ बहेरा आगल जेम वातरुली, तेम मनशल्ये चारित्र विफल्युं ॥ १८ ॥ ज० ॥ चिरकाले धमीयुं ते कंचन, एक फूंकमां हारे ॥ काच काजे चिंतामणि कोइ, कोडी काजे कोण हारे ॥ १९ ॥ ज० ॥ चिंतामणिथी अधिक चरण छे, ते तें पाम्युं पाल्युं ॥ थोडुंहि नावशल्य राखीने, मूढपणे रजे डाल्युं ॥ २० ॥ ज० ॥ श्वइ

निःशल्य आरोपुं तारो, दंन थकी जमवारो ॥ मारयथी ए सान म हारो, कहुं वचन ए मारो ॥ २१ ॥
न० ॥ वार वार एम मारग वारण, चोयण कीधी बहुली ॥ पण नीगट कुंने गांट न लागे, नारे नाणनी गुहली ॥ २२ ॥ न० ॥ काले कुंने नीर न उहेरे, शिवल्या वग नवि हंसा ॥ लसण कपूरे न होये सुगंधुं, नय न होये संतुल अंशा ॥ २३ ॥ न० ॥ कालि धावल रंग न लागे, मेडक कमल न गंधे ॥ अभव्य उपदेशाने पण भिमदी, मूलथ्यो नवि प्रतिबोधे ॥ २४ ॥ तेम दुर्जनि पण कर्मप्रबंधे, नावे चित्तमां कांय ॥ ज्ञानगिमत प्रभु आण न माने, वचन न आवे दाय ॥ २५ ॥ न० ॥ सर्व गाथा ॥ १०७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूपी साधुनी एम सुणी, सद्गुरु केरी शीख ॥ कहे स्वामिन् तुम आगले, जड़ कहो शी दिख ॥ १ ॥ मात पिता राजा गुरु, देवादिक जे पूज्य ॥ ते आगल जड़ न जाणीये, नीतिशास्त्र ए गुरु ॥ २ ॥ तो शुं कहेवुं साधुने, नाणी नाणो आप ॥ वली नाणी गुरु आगले, कोण एहवो छे बाप ॥ ३ ॥ मद्दा सिंधु सरीखे कह्यो, गोपद सम तस तीर ॥ तिहां कोण पूरे वापडो, जेह न अति गंभीर ॥ ४ तुम्ह सरीखा उपदेश दीये, हित धरी प्रवचन सार ॥ जो नवि कहे निज शब्दने, तो शुं होये तस आंख ॥ ५ ॥ अथ ॥ निर्विकार निरमी तणे वचो, अज्ञा थोडी ताम ॥ तुम्हने निरख्या ते सांजरे, पण दृष्टिरागे नवि काम ॥ ६ ॥ जाण्युं काम में तुम्ह तणुं, शीलपसाय कहे लोक ॥ तेह परीक्षण काज में, तुम्हने कर्यो अवलोक ॥ ७ ॥ कामविकार न मातरे, दीठे नहीं लगार ॥ तुम्हो सामंतना वेटरा, तिहां केम राग प्रचार ॥ ८ ॥ एम कहेती मांगो गले, सामासरगे ताम ॥ शूल परे शाल्यित थड़, न रही परणनी माम ॥ ९ ॥ तेण वेलाये बांधीयो, खीनो नेह अगार ॥ ससनेह नाणे पण तजी, ते अज्ञा निरधार ॥ १० ॥ विद्युत्कुमार निकायमां, नोली वाहन रूप ॥ उत्पत्ती देवीपणे, सासाथी नमी नागकूप ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ १०८५ ॥

॥ ढाल एकतालीशमी ॥

राग धनाश्री ॥ गोडी ॥ जीवन रसो रहो सनतकुमार ॥ ए देशी ॥

॥ मिथ्यात्वी नारी दुर्गति दिशावना, दोनागिणी दुःखिणी ॥ दुर्गंधा मेली जमराली, काली ने निर्लक्षणी रे ॥

नयणो जुओ जुओ कर्मविपाक ॥ विषमा मोह मायाना ठाक रे ॥ सयणो॰ ॥१॥जु॰॥ ए आंकणी ॥ तरुणपणामां पण कोइ तेहने, कोइ नर नवि इच्छे ॥ एम आधि व्याधि ते पीमी, मरी तिरिमांहे गच्छे रे ॥ स॰ ॥ २ ॥ जु॰ ॥ तिहांथी मानुषणी थही नरके, तिहांथी तिरिगति पामे ॥ छेदाती जेदाती बहु परे, व्याधि परंपर कामे रे ॥ स॰ ॥ ३ ॥ जु॰ ॥ जूख तृषा व्याधि बहु पीडा, सहेती बहु बहु वारे ॥ दुःख पीमित सपजे अनादेया, जमती एम संसारे रे ॥ स॰ ॥ ४ ॥ जु॰ ॥ रुप्पी अज्ञाना जवथी मांमी, जमी एणी परे जव लाख ॥ त्रण जव जणा एणी परे कीधा, पामी न सुखनी सराख रे ॥ स॰ ॥ ५ ॥ जु॰ ॥ एम अकाम निर्जरणपणाथी, सहज धर्मगुण पामे ॥ मंद कषाय दंज तिहां तेहने, गुणो जनना गुण कामे रे ॥ स॰ ॥ ६ ॥ जु॰ ॥ नरजव पामी लेइ प्रव्रज्या, सूरि तणुं पद आव्युं ॥ प्रवचनने अनुसारे गच्छने, पाली पद शोनाव्युं रे ॥ स॰ ॥ ७ ॥ जु॰ ॥ पूरव जव मायाने बीजे, अग्रमहीषी थावे ॥ इंद्र तणी ते सुरी चवीने, तिहांथी चवी इहां आवे रे ॥ स॰ ॥ ८ ॥ जु॰ ॥ संबुक गामे माहणघरणी, थइ ते जाइ सरणा ॥ प्रतिबोधाणी सुलज बोधिथी, सिद्धि लही जव तरणा ॥ करी चारे तिहां सरणां रे ॥ स॰ ॥ ए ॥ जु॰ ॥ इति रुप्पी जवज्रमणा करी गोविंदद्विज थइ सिद्धि पामी तेनी कथा समाप्त ॥

॥ अथ श्री गौतम वीरने पूछे, थइ साहुणी सा रुप्पी ॥ सात आठ जव मूकी बहु जव, केम फरी कहो ते मरुपी रे ॥ स॰ ॥ १० ॥ जु॰ ॥ जवण गुरु तव जासे एणी परे, पणे कीधी तइए माया ॥ शीलसन्नाह सूरिये बहु कहीयुं, पण नवि चित्तमां आया रे ॥ स॰ ॥ ११ ॥ जु॰ ॥ माया विषवल्लीनी मूली, माया जयथल धूली ॥ माया चरणधर्मनी शूली, धन्य जेणे माया उन्मूली रे ॥ १२ ॥ जु॰ ॥ तेह कर्मविपाक उदयथी, लाख जवा लगे हिंडी ॥ जवमांहे दुःखजयनी छंमी, ए सम कोइ न जूंडी रे ॥ स॰ ॥ ॥ १३ ॥ जु॰ ॥ जो प तेणे जवे माया न करती, तो ते जवि सिद्धि लहती ॥ पण जावी तथा जव्यता आगे, कोइनी मति नहीं बलवंती रे ॥ स॰ ॥ १४ ॥ जु॰ ॥ एणी परे रुप्पीचरित्र सुणीने, जे नवि शल्य उद्धरशे, सूक्ष्म पण ते गौतम निसुणो, बहु संसारे फरशे रे ॥ स॰ ॥ १५ ॥ जु॰ ॥ जेम दधिमां नवनीत सार छे, फुंल तणुं जेम अणीये ॥ तेम जिनधर्मे निःशल्य करवुं, आलोयण ते जणीये रे ॥ स॰ ॥ १६ ॥ जु॰ ॥ हवे ते शीलसन्नाह मुनीश्वर, रुप्पीचरित एम देखी ॥ आ जन्मनुं शल्य उच्छेदी, जे आतमनो गवेषी रे ॥ स॰

...जु० ॥ उत्तर दिशि ईशान कोणे अथ, चैत्यवंदन चलणीने ॥ पडिलेहण मुहपत्ति पडिलेही, अंचित नमि
गुणीने रे ॥ म० ॥ १८ ॥ जु० ॥ साधुजने परवरियो तरीयो, पर्यंकासने बेसी ॥ आराधनानी विजयपताका,
लेवे निज मन हरखी रे ॥ स० ॥ १९ ॥ जु० ॥ त्रिभुवन पूज्य नमी अरिहंता, सकल कार्यसिद्धि सिद्धा
रे ॥ पंचविधाचारे सुपवित्रा, सूरि सुगुण समिद्धा रे ॥ म० ॥ २० ॥ जु० ॥ सूत्रारथ दायक उवझाया,
सुगुणा साधु सहाया ॥ ए पंचे परमेष्ठी शरणे, मनुं शिवसुख करी आया रे ॥ म० ॥ २१ ॥ जु० ॥ चार
कषाय तणो मल मूकी, करता चारे शरणां ॥ चार आहार पच्चखी चउ गति, भ्रमण कर्यां निस्तरणां रे
॥ स० ॥ २२ ॥ जु० ॥ पादोपगम अणसणने साधे, शुक्ल ध्यानमां वाधे ॥ मास लगे एहवुं आराधे,
साधु सहित निराबाधे रे ॥ म० ॥ २३ ॥ जु० ॥ शीलसन्नाह मुनीश्वर ईश्वर, वंदित चरण सरोजा ॥ शिव
पाम्या जिहां अक्षय अनंतां, अनुत्तर सुखनां मोजां रे ॥ म० ॥ २४ ॥ जु० ॥ ज्ञानविमल दर्शन चारित्रनां,
फल एहवां एम जाणी ॥ मायाशल्य काढी आलोयण, सूधा लीयो नवि प्राणी रे ॥ म० ॥ २५ ॥ जु० ॥
इति शीलसन्नाहमुनिरूपीसाहुणीचरित्रं समाप्तं ॥ १९१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ ह्वे गौतम प्रणमी करी, पूछे श्रीजिनवीर ॥ सुज्ञसिरी आहेरणी, तस प्रबंध कहो धीर ॥१॥ दीक्षित थइ के नवि
थइ, शो तेहनो अवदात ॥ कृपा करी ते दाखीये, सुणे नवि सवि साक्षात ॥ २ ॥ प्रभु कहे ते ह्वे
सुज्ञसिरी, जाती जनक संघात ॥ अंतराले ते अपहरी, गोकुलपतिए विजाति ॥ ३ ॥ कहे गोरस लेइ करी,
दीधुं न तंडुल मूल्य ॥ किहां जाय ले मुज लगी, दीसे वैरी तुल्य ॥ ४ ॥ संप्रति नहि आव तुं, गोकुलमां
मुज साथ ॥ जो सुविनीति थइ रहीश तो, पुत्री परे तुं आथ ॥ ५ ॥ सुज्ञसिरी तव गोकुले, साथे गइ तस
गेह ॥ सरलपणे निद्रा धरे, नील सहे देइ नेह ॥ ६ ॥ ह्वे द्विज सुज्ञसिवो तिहां, देशमां करी वाणिज्य ॥
नर पशु धान्य विक्रय करी, मेळ्युं धन अति गण्य ॥७॥ ते धननुं कंचन करी, कंचननां करे रत्न ॥ संचय करीने
राखीये, साधी घणो प्रयत्न ॥ ८ ॥ यतः ॥ धनानामर्जने दुःखं, दुःखं तदनुरक्षणे ॥ आये दुःखं व्यये
दुःखं, धिगर्थो दुःखभाजनम् ॥ १ ॥

अवलो पूछ्यो जुओ कर्मविपाक ॥ विषमा मोह मायाना टाक रे ॥ मरुदेवी० ॥ ४ ॥ जु० ॥ ए आठमी ॥ अड्ग-मगातो पशु कोइ सेहने, कोइ नर नवि देखे ॥ एम आधि व्याधि ते पीडे, बेहु विलिमांड गच्छे रे ॥ म० ॥ २ ॥ जु० ॥ तिहांथी मानुषणी थइ नरके, तिहांथी तिर्यगति पामे ॥ देवानी देवानी बहु परे, व्याधि परंपर वामे रे ॥ म० ॥ ३ ॥ जु० ॥ एम नृपा व्यापि बहु पीडा, मरेही बहु बहु वारे ॥ दुःख पीडित थयो अनादेया, जमतो एम संसारे रे ॥ म० ॥ ४ ॥ जु० ॥ स्त्री अज्ञाना जवमी मांकी, जमी एणी पेरे जव जाम ॥ जण जव हणा एणी परे कीधा, पामी न सुखनो मरास रे ॥ म० ॥ ५ ॥ जु० ॥ एम अकाम निर्जरणाथी, सहज धर्मगुण पामे ॥ मद कषाय दंज तिहां तेहने, हुणो अनना गुण कामे रे ॥ म० ॥ ६ ॥ जु० ॥ नरजव पामी लेइ प्रव्रज्या, सूरि तणु पद आव्यु ॥ प्रवचनने अनुसारे गच्छने, पाळी पद शोजाव्युं रे ॥ म० ॥ ७ ॥ जु० ॥ पूरव जव मायाने दोडे, अप्रमदीवी थावे ॥ इंद्र तणी ते सुरी चवीने, तिहांथी थयी इहां आवे रे ॥ म० ॥ ८ ॥ जु० ॥ संबुक गामे माहणघरणी, थइ ते जाइ मरणा ॥ प्रतिबो-धाणी सुजन बोधिथी, सिद्धि वरी जव तरणा ॥ करी चार तिहां सरणां रे ॥ म० ॥ ९ ॥ जु० ॥ इति स्त्री भवभ्रमण करी गोविंदद्विज थइ सिद्धि पामी तेनी कथा समाप्त ॥

॥ अथ श्री गौतम वीरने पूछे, थइ माहणी मा स्त्री ॥ नाम आठ जव मूकी बहु जव, केम फरी कहो ते परची रे ॥ म० ॥ १० ॥ जु० ॥ जवण गुरु तव जाखे एणी पेरे, एणे कीधी तइए माया ॥ शीघ्रमशाद सूरिवे बहु कहीयुं, पण नवि चित्तमां आया रे ॥ म० ॥ ११ ॥ जु० ॥ माया विषवल्लीनी मूळी, माया असत्य पूळी ॥ माया धरणपर्वनी शूळी, धन्य जेणे माया उन्मूळी रे ॥ १२ ॥ जु० ॥ तेह कर्मविपाक इहरथी, आत्म जवा छगे हिंडी ॥ जवमांहे दुःखजरनी ठंडी, ए मन कोइ न फूंडी रे ॥ म० ॥ ॥ १३ ॥ जु० ॥ जो ए तेणे जवे माया न करती, तो ते जवि सिद्धि वरती ॥ पण जावी तथा जव्यता आगे, कोइनी मति नहीं चाउरंती रे ॥ म० ॥ १४ ॥ जु० ॥ एणी परे स्त्रीचरित्र सुणीने, जे नवि शल्य उद्धरशे, पुरुष एम ते गौतम निसुणो, बहु संसारे फरशे रे ॥ म० ॥ १५ ॥ जु० ॥ जेम दधिमां नवनीत सार छे, धृत लहु जेम अणीये ॥ तेम जिनधर्मे निःशल्य करवुं, आलोयण ते जाणीये रे ॥ म० ॥ १६ ॥ जु० ॥ इवे ते शीघ्रमशाद सूरीश्वर, स्त्रीचरित्र एम देखी ॥ आ अस्थिर संवर उपेक्षी, जे आतमनो गवेषी रे ॥ म०

॥१७॥जु०॥ उत्तर दिश इशान कोण अथ, वैल्लगंदन गजलीने ॥ पक्खिलेहण गुरुणनि पारकडी, श्रीमद्ब नाम ॥ साधुनने परखदियो तरीयो, पर्यंकासने बेसी ॥ आराधनानी विजयपताका, मुणीने रे ॥ म० ॥ १८ ॥ जु० ॥ त्रिभुवन पूज्य नमी अरिहंता, सकल कार्यसिद्धि सिद्धा ठंग निज मन धरती रे ॥ म० ॥ १९ ॥ जु० ॥ सूत्रारथ दायक उपझाया, रे ॥ पंचविधाचारे गुणविशा, सूरि सुगुण सहित्वा रे ॥ म० ॥ २० ॥ जु० ॥ चार सुगुणा साधु महाया ॥ ए पंच परमेष्ठी थुणीने, मनुं शिवपुर करी आया रे ॥ म० ॥ २१ ॥ जु० ॥ चार कषाय सर्वो सब मूकी, करता चारे शरणां ॥ चार आहार पचक्खी चउ गति, भ्रमण कर्मां निवारणां रे ॥ म० ॥ २२ ॥ जु० ॥ पादोपगम अणशणने साधे, शुक्ल ध्यानमां माचे ॥ मास लगे एहवुं आराधे, साधु सहित निरावाधे रे ॥ म० ॥ २३ ॥ जु० ॥ श्रीक्षमाभाद मुनीश्वर इश्वर, वंदित चरण सरोजा ॥ शिव पामवा जिहां अनघ अनंता, अनुपम सुखनां मोजां रे ॥ म० ॥ २४ ॥ जु० ॥ ज्ञानविमल दर्शन चारित्रनां, पात्र कर्मा एम जाणी ॥ मायारहित करी आलोयण, सूधा थीयो नवि प्राणी रे ॥ म० ॥ २५ ॥ जु० ॥

इति श्रीक्षमाभद्रमुनिकणीनाकुलीचरित्र समाप्तं ॥ १११० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे गौतम गणधी करी, पूछे श्रीजिनवीर ॥ गुब्बगिरी आहेरणी, तस प्रबंध कहो धीर ॥१॥ दीक्षित थइ के नवि थइ, जो तेहनो अवदात ॥ कृपा करी ते दाखीये, सुणो नवि नवि साक्षात ॥ २ ॥ प्रभु कहे ते हवे सुब्बगिरी, जाणी जनक संघात ॥ अंतराले ते आवती, गोकुलपतिए त्रिजाति ॥ ३ ॥ कहे गोरस लेइ करी, दीधुं न तंदुल मूल्य ॥ किहां जाय ते गुज गणी, दीसे वैरी तुल्य ॥ ४ ॥ संप्रति नहि आप तुं, गोकुलमां गुज साथ ॥ जो सुविनीति थइ रहीश तो, पुत्री परे तुं आव ॥ ५ ॥ गुब्बगिरी तव गोकुला, साथे गइ तस गेह ॥ सरणाले तिहां चरे, चीन त्रड़ देइ नेह ॥ ६ ॥ हवे द्विज गुब्बगिरियो तिहां, देशमां करी वाणिज्य ॥ नर पशु भाव विक्रय करी, मेहुं धन अति गर्थ ॥७॥ ते धननुं कंचन करी, कंचननां करे रत्न ॥ संचय करीने राखीये, साधी घणो प्रयत्न ॥ ८ ॥ यतः ॥ धनानामर्जने दुःखं, दुःखं तदनुरक्षणे ॥ आये दुःखं व्यये दुःखं, धिगर्थो दुःखभाजनम् ॥ १ ॥

॥ एम करी ते धनी द्विज थयो, चिंते मनमां एम ॥ परदेशे बहु धन खद्युं, मन नवि उपजे प्रेम ॥ ए ॥ जे जणी गरण मुए होये, छुए देखी नरराय ॥ तेह धने शुं कीजीए, ते जणी नावे दाय ॥१०॥ एम चिंतवीने चालीयो, गुणगिरो निज देश ॥ अनुक्रमे अनुक्रमे आवीयो, ते गोकुल सन्निवेश ॥११॥ सर्व गाथा ॥१ए२२ ॥

॥ ढाल वेंतालीशमी ॥

अल्यानली देशी ॥ जनुं थयुं जे नर्म जागो, हेत लाधो हरि तणो ॥ ए देशी ॥

गुणगिरी हवे यौवन पामी, कामीनां मन मोहे ॥ जाणुं मनुं दधिकी ए तनया, दूसरी सिरी ज्युं सोहे ॥ कमलनयणी कमलवयणी, कमल कोमल पाणी ॥ पिकरवकंठी कंठी कठिनी, सरस सुधारस वाणी ॥ १ ॥ रति सम रूपा नागा दीवा, पीना पणथण युगला ॥ रागक्षीर नीरधीरस रंगे, तरण वहण उरु ममला ॥ जे शृंगार महारस वापी, थापी मदन महाराजे ॥ त्रिजुवन जीपन हेत हिये जे, शक्ति मनुं करी साजे ॥ २ ॥ एहवे दुकाल वेतालजक नाठो, पसत्यो सूथ सुगालो ॥ विषमापंथ हता जे तस्कर, तेह गया जंजालो ॥ कर्षुक लोकने हर्षनो कारक, वरषा व्याप्यो गगने ॥ जार सूर्य निज दयिता धरणी, ताप कढाव्यो तेहने ॥ ३ ॥ दयिता धरणी परनुं लागी, जाणी दीये तस मारे ॥ करहाटपद तणुं मनुं रजे, जर धाले मुखे वाये धारे ॥ शीत ग्रीष्म वेहु जारे विलसी, निज दयिता जे धरणी ॥ गर्जारव होकारे चपला, तरवारे जय करणी ॥ ४ ॥ मूर्छा पामी दयिता जाणी, शीतल पवनने नीरे ॥ छांटी माटी वर्षा मिलते, थइ अंकुरित नूरे ॥ हरियालां चरणां पहेरायां, गामोलां करी टीकी ॥ नदी नाहलां हार पहेराया, शोजावी प्रिया नीकी ॥ ५ ॥ दादूर नेउरना ऊंकारव, वग पंकिना चूमा ॥ शिखी नाटक परे चीर विविध वर, पहेख्यां दीसे रूमां ॥ चातक पिउ पिउ कलरव कूजित, पूजित मन्मथ राजा ॥ पूरण सरवर कुंडल मंकल, आलंकल धनु ताजा ॥ ६ ॥ यगरूपि नृपति पायम वेला, मुररिपु जलधिये सूता ॥ मनुं वर्षाऋतु नृपप्रिया संगे, रंगे प्रेमे खूता ॥ छत्राकारे शिलिंध्र छत्र धारी, केतक चामर ढाले ॥ एम बहु साज सजीने आव्यो, सुख समुदय वरसाले ॥ ७ ॥ शकट कटकनां चार रुंधाणा, फेरे धलाकी सुजाणा ॥ विरही जननां मन अकुलाणां, मानिनी मान गंजाणां ॥ खलहल वहेतां नाल प्रणाला, खलाये तरु खपटाणा ॥ विकसित नीप तिलकने बाणा, फरे

॥ एणी परे विलसीयो वरसालो, कादव कीचड आव्यो ॥ वरसे जोर घनाघन काली,
मदनना बाणां ॥ ८ ॥ एणी परे विलसीयो वरसालो, कादव कीचड आवे ॥ काल निगमया देते निशे,
सुखीया लागे सुगालो ॥ तेहवे समये गोकुलमांहे, आगल गाय अनावे ॥ मनगमतुं जो जोवन
सुकागियो तिहां आवे ॥ ए ॥ जोजन देते नमतो नमतो, गोकुलीने घेर आव्यो ॥ हृदयमांहे मीठी परे पेठी,
सुकागिरी तिहां दीठी ॥ चंदनचीत परे ते मीठी, सुकागिरी तिहां दीठी ॥ जाणे आवी मदननी
देवो, तो गयलो में पाम्यो ॥ चंदनचीत परे ते मीठी, मति अइ तिहां नम भीडी ॥ मार्यो मदनशरे मनुं
जागी काम अंगीठी ॥ १० ॥ रुपे रतिथी पण छकिठी, एणी अपर फनी देठी ॥ मुजने तो धन रात
दिठी, थयो छबंछ जेम जेठी ॥ प्रथम यौवन वयमांहे बेठी, माता पिता ए तारुरां ॥ मुजने तो धन दात
मूठी, जइ न शके ते उठी ॥ ११ ॥ जंपे रे जे तुजने दीये, माता पिता ए तारुरां ॥ एहवां तेहनां वयण
सुणीने, चित्तमां सुंदर जाणे ॥ १२ ॥ तणीये तेह रयणां मेली, कहे किहां धन ते देखाडो ॥ पंच रत्न
पट कंचन, आपुं एकण वारा ॥ रयण अवरने बहु धन आपुं, आपुं, तुजने पासे ॥ सुकागियो
देखाड्यां ततखण, कहे एह कीहयो पसाओ ॥ ते कहे ए इंटाला सरख्यां, ए धन केणे लेखे ॥ सुकागियो
कहे एहनो महिमा, जाणे तेह विशेषे ॥ १३ ॥ आयो पुरमां एहनो महिमा, देखाडीने सुणावुं ॥ तो ते साथे
पुरमां पोहोता, रयणनुं मूल्य जणाव्युं ॥ रयण परीक्षक नर जे हुता, तेण जइ नृपति पासे ॥ द्विज कहे रत्ननुं
मूल्य प्रकाशो, तव ते परीक्षक जाणे ॥ १४ ॥ तेह कहे एक रत्ननुं अमथी, मूल्य न कहीयुं जाय ॥ तो
पांचेनुं मूल्य केणी परे, मात्र करी कहेवाय ॥ तव राजा कहे द्विजने सुण रे, जव्य रत्न ए पंच ॥ मूल्य
किश्युं आपुं हुं तुजने, तेह पारिखयण पंच ॥ १५ ॥ द्विज कहे स्वामी प्रगट थइने, जेह आपो ते प्रमाण
॥ यद्यपि बहु मूलां छे तो पण, तुम्हे शो प्रीतिनुं ठाण ॥ दसगय कोडी कंचन आपी, हा कही तेणे
दीधुं ॥ उपर वली एहवुं तेणे माग्युं, राजाये ते पण दीधुं ॥ १६ ॥ ए पर्वतनी पासे गोकुल,
तिहां करशो अमे वास ॥ पंचविश जोयण जूमि अकर करी, दीयो पूरो अम आश ॥ राजाये ते
वहुत्ति जाणीने, रयशि कही जमि लीधी ॥ द्रविण प्रहीने गोकुले पोहोता, ममनी आशा सीधी ॥ १७ ॥
सुकागिरी परणी बहु जोगे, निश्चित कारिज कीध ॥ देह तणी छाया जेम जाया, विषयनी मदिरा पीध ॥ मूढ
हृदयना कांग न जाणे, तिरिखग सूरम पेठु सरखा ॥ लोनी कामी क्रोधी रोगी, मदीया अंध परे परिखा
॥ १८ ॥ एहवो काल गयो एम करतां, विषयाने अनुसरतां ॥ पण घेहुनुं मन एणी परे व्याप्युं, ए मध्यम

कृत्य करतां ॥ प्रबल पुण्यनो उदय होवे जब, तो समी मति सूजे ॥ ज्ञानविमल सूरि केरे वयणे, ते प्राणी प्रतिबूझे ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अन्य दिवसे तिहां आवीयो, मुनियुग विहरण काज ॥ ते निरखीने सुज्ञासिरी, उठी वंदन काज ॥ १ ॥ रुदन करे तिहां अति घणुं, पूछी सुज्ञासिवेण ॥ एवडुं दुःख शुं ने प्रिये, रुदन करे ने केण ॥ २ ॥ सा कहे गुज बालापणे, माहारी स्वामिनी जेह ॥ ते एहोने प्रतिलाभती, विविध वस्तु धरी नेह ॥ ३ ॥ पंचांगे प्रणमनपणे, करती धरती भाव ॥ ते मुनि देखी सांभर्युं, दुःख सांभरे अवसर पाव ॥ ४ ॥ सज्जन केमहि न वीसरे, ए उत्तमनुं चयन ॥ पण अवसरे ते साले घणुं, जब अहिठाणे अयन ॥ ५ ॥ यतः ॥ साजनीया साले नहीं, पण साले तस अहिठाण ॥ ढोखमीयो विसहर थयो, मंदिर थयां मशाण ॥ १ ॥ साजनीया विणु सुख जे, ते दुःख थइने दाजंत ॥ अन्न पान ने निद्रमी, करतां सुख न दीयंत ॥२॥ ते सज्जन केम वीसरे, जेशुं मान्युं मन्न ॥ सास पहेलां ते सांभरे, जेम भूख्याने अन्न ॥ ३ ॥ पियु ते मुजने सांभर्युं, देखी मुनियुग हेव ॥ ते दुःखथी रोदन करुं, दोहेली एहोनी सेव ॥ ६ ॥ फरी संभ्रांतपणुं धरी, पूछे तिहां तस कंत ॥ ते ताहरी कोण स्वामिनी, कहे तुं मुज्ज एकांत ॥ ७ ॥ तेणे चरित सवि पाछलुं, भाख्युं तिहां परगट्ट ॥ सुज्ञासिरी निज पेटमी, तेणे लही तदा परगट्ट ॥८॥ सुज्ञासियो हवे चिंतवे, ए शुं थयुं अकज्ज ॥ अहो अहो शुं नीपज्युं, धिग् धिग् मुजने अज्ज ॥ ए ॥ सर्व गाथा ॥ १९५३ ॥

॥ ढाल त्रेंतालीशमी ॥

म्हानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥

हुं अधन्य अपुत्रीयो रे, हुं अति हिम्मत हीण ॥ धिक् धिक् कर्मने रे ॥ विधिवशथी शुं नीपनुं रे, हुं दुःखीयो अति दीन ॥ धि० ॥ कर्म करे ते होय ॥ धि० ॥ कर्मथी बलीयो न कोय ॥ धि० ॥१॥ ए आंकणी ॥ राजा रांकपणे रे, रंकने करे वली राय ॥ धि० ॥ जीवने चौगति रोलवे रे, भाग अनंतमे त्रिकाय ॥ २ ॥ धि० ॥ हुं पापी पापे भर्यो रे, शो करुं हवे रे उपाय ॥ धि० ॥ अग्निमांहे पेसी मरुं रे, के गले फांसो खाव

॥ ३ ॥ धि० ॥ किंवा तनु तिल तिल करुं रे, वेदी करवत धार ॥ धि० ॥ के जम्प करुं ए अंगने रे, के गिरिथी पडुं निरधार ॥ ४ ॥ धि० ॥ किंवा घणना घायथुं रे, के पाणीनो फेर ॥ धि० ॥ मेर अंगारानी खायमां रे, जाली करुं अंग जेर ॥ ५ ॥ धि० ॥ के त्रानीने चामली रे, लेपवुं नारी न्यार ॥ धि० ॥ के सायर झंपा दीयुं रे, के तुफाना महुं प्रहार ॥ ६ ॥ धि० ॥ इत्यादिक चित्त चिंतवी रे, मुज पापीने कोय ॥ धि० ॥ मंमहे नहीं पावक विना रे, दहवुं ए हुं देह ॥ ७ ॥ धि० ॥ एम निश्चय मनमां धरी रे, नागो ते मुखे आप ॥ धि० ॥ जो जो लोका सांजले रे, ए पुत्री हुं बाप ॥ ८ ॥ धि० ॥ सुजाणिवो हुं यंजणो रे, जाति-पणे कर्मचंमाल ॥ धि० ॥ ए सुजाणिरी मुज वेटमी रे, एहमां कोइ न आल ॥ ९ ॥ धि० ॥ वेची वंजण मंदिर रे, छुर्जिरने अनुनाथ ॥ धि० ॥ कर्म अनाग्यता जोरथी रे, में परणी इहां आय ॥ १० ॥ धि० ॥ कुडुं कर्म कमालशुं रे, एहुं नवि मुज पुण्य ॥ धि० ॥ कुडुं केम हवे पापथी रे, एहवे हुं नुं अधन्य ॥ ११ ॥ धि० ॥ जन्मांतर संबंधनी रे, खबर पमे नहीं कोय ॥ धि० ॥ तेणे नेहे आवी मले रे, सम विषम तिहां नहीं जोय ॥ १२ ॥ धि० ॥ ए संसारनी जावना रे, थाय अनेक संबंध ॥ धि० ॥ पण आ जवे जनक सुता थइ रे, स्त्री पतिजोग संबंध ॥ ए तो कर्मनो बंध ॥ १३ ॥ धि० ॥ ते जणी मुज वयणां सुणो रे, रे लोका लोकपाल ॥ धि० ॥ मुज सम कोइ न पापीयो रे, हुं त्रिजुवननुं आल ॥ १४ ॥ धि० ॥ लोकनीति एहवी अने रे, जाति नीज कुल जास ॥ धि० ॥ जे कन्यानुं जाणीये रे, करीये तस परणवा आश ॥ १५ ॥ धि० ॥ ते पण में नवि चिंतव्युं रे, कीधुं ए अविचार ॥ धि० ॥ विषय तणा परवश थकी रे, अति अविरतिने न्यार ॥ १६ ॥ धि० ॥ माता वेहेन वेटी मुखे रे, उच्चारीये मुख जेण ॥ धि० ॥ उत्तम ते तेमहीज गणे रे, जावजीव नियमेण ॥ १७ ॥ धि० ॥ मुजने तो साक्षातथी रे, एक जवे दोय संबंध ॥ धि० ॥ हुं तो पशुथी अधिक नुं रे, विषयपडलथी अंध ॥ १८ ॥ धि० ॥ ए अकार्यथी आपणो रे, आतम पाड्यो नरक ॥ धि० ॥ दारुण दुःख तो चिहुं गति रे, किहाये न लेसुं फरक ॥ धि० ॥ १९ ॥ ते जणी मुजने जलण विना रे, नहीं कोइ पापने ठाम ॥ धि० ॥ एम कही धैर्य धरी तिहां रे, कहे ए करवुं काम ॥ २० ॥ धि० ॥ काष्ठ चिता मोहोटी रची रे, पुर बाहेर तेणी वार ॥ धि० ॥ आप निंदा करे नयनथी रे, वरसे आंसुधार ॥ २१ ॥ धि० ॥ मधु घृत ... जलण ते तस जाले नहीं रे, तिहां लोका एम जणंत ॥ २२ ॥ ... सिंची ... रे, ... पण न ... ॥ धि० ॥

धि० ॥ पाप छुष्ट निःकृष्टनुं रे, तेणे न दहे ठे एह ॥ धि० ॥ कहे हुं बुं अति पापीयो रे, ए पण न दहे ठेह ॥ २३ ॥ धि० ॥ एम धिकार घणो करी रे, दीये वहुलो मार ॥ धि० ॥ पाहनी मूठी कूपरे रे, पूठे शीश मकार ॥ २४ ॥ धि० ॥ दंपती वेहुने काढीयां रे, देशमांहेथी ताम ॥ धि० ॥ जनसमुदाये एम कहुं रे, अहो अहो मध्यम काम ॥ योग्य न एहनुं नाम ॥ २५ ॥ धि० ॥ कहे गौतम स्वामी तेहने रे, अग्नि न दाऊयो केम ॥ धि० ॥ एह ऽुष्कर्मा आकरो रे, केम धस्यो जलणे प्रेम ॥ २६ ॥ धि० ॥ कहे जगवंत जवितव्यता रे, वशथी मलीयो योग ॥ धि० ॥ निर्दाहक दारु मह्यां रे, चय रचतां कर्म जोग ॥ २७ ॥ धि० ॥ हवे ते चाह्यां परदेशमां रे, पाम्यां वहुत धिक्कार ॥ धि० ॥ गाममांहे त्यां पेसतां रे, दीठा श्री अणगार ॥ २८ ॥ धि० ॥ गोचरीनो खप कीजतां रे, रे, लीजतां शुद्ध आहार ॥ धि० ॥ ठीजतां कर्म कपायने रे, जींजतां शम जलधार ॥ २९ ॥ धि० ॥ तेहनी पूठे ते गया रे, वनमांहे धरी शान ॥ धि० ॥ पेखे तिहां सूरीश्वरा रे, ज्ञानविमल गुणधाम ॥ ३० ॥ धि० ॥

॥ दोहा सोरठो ॥

॥ जगदानंदन नाम, सूरीसर तिहां पेखीया ॥ चरण करण गुणधाम, दिवस सफल करी लेखीया ॥ १ ॥ सुर नर किन्नरश्रेणि, पायकमल जावे नमे ॥ हियके हर्ष धरेण, आप तणां ऽुष्कृत वमे ॥ २ ॥ जिम पावस घन मोर, शोर करे मनमोदशुं ॥ जेम चकवा लही जोर, ज्युं चकोर दधिनंदशुं ॥ ३ ॥ तेम हर्षित थइ तेह, चरण कमल युग वंदीयां ॥ प्रगटपणे धरी प्रेम, आरति अरति निकंदिया ॥ ४ ॥ सर्व गाथा ॥ १९०७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते देखीने चिंतवे, थइ उल्लसित रोमांच ॥ पाप आलोउं मुनि कने, सहेजे मह्यो मुज संच ॥ १ ॥ प्रिया सहित द्विज सुज्ञसिवो, प्रणमी तुरत वइठ ॥ तास चित्त जाणी करी, वचन कहे मुनि इठ ॥ २ ॥ कहे उपदेश सोहामणा, जेहवा मीशरी खंड ॥ सरस सुधारसथी अधिक, मीठा शेलडी खंम ॥ ३ ॥ हवे सुज्ञसिव ब्राह्मणने मुनि धर्मोपदेश आपे ठे ते कहे ठे ॥

॥ राग नहनारायण ॥ धर्म करो जवि धर्म करो, त्रिकरणयोगे धर्म करो, चरण धर्म प्रवहण अवलंबी, आ

नयणागर गुरु तरो ॥ प० ॥ १ ॥ ध्रुवपद ॥ योगिगणिके किरणप्रसारे, हृदयकमल विकसित करो ॥ ग्युं अनादिके चंतर अन्त, मिथ्यामत तम गीत नमरो ॥ प० ॥ २ ॥ दश दृष्टांत दुर्लभ पवन, आपो ए नर-नव गमगो ॥ तेह गुणा म म हारो नविया, फरी आगन नांही तूसरो ॥ प० ॥ ३ ॥ कर्म मर्मके मरार्थे होयन, कवही पारंक पगरो ॥ सो पग आलोयण शुद्ध होयन, जो होये जीउं सुगुरो ॥ जो मिले गुरु सुगुरो ॥ प० ॥ ४ ॥ ग्युं पूर्व निर्मल निर्मल जगमें, रयुं चारित्रको धर्म नरो ॥ अविचल गुण संननके हेते, पद पमा उगार धरो ॥ प० ॥ ५ ॥ विषय कषाय प्रमाद मदादिक, ए काढो कलिमल कचरो ॥ जन्म जरा मरणादिक भ्रमणा तजि, नवनवमांहे नाहि फरो ॥ प० ॥ ६ ॥ ज्ञानविमल गुण गुरुना पदकज, प्रेमे करीने ते अनुसरो ॥ परम निधानह ध्यान धरेंयुं, पहीज मंदिर पेसविसरो ॥ प० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ रागनट ॥ नविया ॥ एकदान अमन्धा, कर्मकी प्रकृति घना, तिणथें बहुत जना, नयमें नमतया ॥ पहीज मामंतया ॥ एक० ॥ १ ॥ अकाम अविरति मिथ्यात्व योगे, आलस प्रमाद जोगे, विषय कषाय संयोगे, करी उच आवंतिया ॥ तिहां स्थिति करत निर्जरा करण, अनंत पुद्गल नरण, कोइ यथाप्रवृत्ति करण, प्रकृति जावंतिया ॥ ए० ॥ २ ॥ तिहां अनादि कर्मग्रंथि, राग घन, पाउयोग जोगे न्यून, पूरण होत पुण्य, कोइ संविपकणिया ॥ अपूर्वकरण थाय, देयनकुं मग्ना थाय, आप दोषको पडि ग्रंथ, जेहवा घर शांय, कोइ संविपकणिया ॥ ए० ॥ ३ ॥ मिथ्यात्वको करे निकंद, तिहां लहे परमानंद, सिद्धि सुधा-पत्र प्रगटाय, नवि नव विरविया ॥ केइ निहां लहे ज्ञान, देश सर्व विरति आन, केइ पुण्य लहे दान, करी रस निगोद, आपरिमु जीविया ॥ केइ बहुल गुणश्रेणि, शिवपदकी निश्रेणि, ज्ञानविमल लहे जेणि, जयंत लहं-नय पामिया ॥ ए० ॥ ४ ॥ केइ बहुल गुणश्रेणि, शिवपदकी निश्रेणि, ज्ञानविमल लहे जेणि, जयंत लहं-तिया ॥ तेह नाणी नदनय प्रवर, फलो नवि नयमांहि घर, जिहां अनुनय पर, वधंत महंतया ॥ ए० ॥ ५ ॥ इति वैराग्यमय धर्मोपदेश जगदानंद सूरियें करो ॥

॥ दोहा सोरठो ॥

॥ प्राणी करे जे पाप, थाये आलोयणे उजलो ॥ जेम जल चारे ताप, गमल वस्त्र होये निर्मलो ॥ १ ॥ यद्यपि मलीन ए जीव, राग द्वेषने वश करी ॥ तप संयमे अतीव, शुद्ध होये निश्चे करी ॥ २ ॥ जेम मामलुं

सोवन, अनिल योगे ते शुद्ध होइ ॥ तेम ए आतम तत्र, जाव्युं पंक सवे धोइ ॥ ३ ॥ मूकी लाज जय मान, पाप कहे जे आपणुं ॥ प्रगट थइ सावधान, तेह करे जव कापणुं ॥ ४ ॥ कीजे पाप संहार, आलोइ रुमी परे ॥ लघु तरीये संसार, ए उपदेश हीये धरे ॥ ५ ॥

॥ ढाल चुम्मालीशमी ॥

॥ मोतिकानी देशी ॥ अथवा ॥ मया करी मुज तारो ॥ ए देशी ॥

॥ एम निसुणी सवि पाप प्रकाशे, आप कर्यां ते सघलां जासे ॥ साहिबा मुजने अब तारो ॥ गिरुआ गुरु पार उतारो ॥ १ ॥ सा० ॥ मया करी मुजने तारो, मोहना याये सुकृत जमवारो ॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥ थयो छुर्जिक्ष गयो परदेशे, वेची सुता जेहवे सन्निवेशे ॥ सा० ॥ २ ॥ प्रथम चिंत्युं में एहने मारुं, पिशित खाइने आतम धारुं ॥ सा० ॥ पछे तो मूल्ये ए वेची, गयो परदेशे तिहां जन वंची ॥ सा० ॥ कन्या बाल प्रमुखने जाली, वेची पुण्य कर्युं में खाली ॥ सा० ॥ बालपणाथी अकारिज करणी, ते सवि कहीयुं जिहां लगे परणी ॥ सा० ॥ ४ ॥ बालक परे ऋजुजावे सघलुं, पाप प्रकाश्युं करी मन सबलुं ॥ सा० ॥ ज्ञानातिशयी गुरुए सवि सुणीयुं, नाण बले तेहनुं मन मुणीयुं ॥ सा० ॥ ५ ॥ प्रायश्चित्त दीये विधि अनुसारे, ते पण जेम कह्युं तेम धारे ॥ सा० ॥ गुरु दीधो तप शिर जारे लीधो, शुद्ध जावे ते तेहवो कीधो ॥ सा० ॥ ६ ॥ ते तप नियम थयो जब पूरो, सुज्ञसिवो हवे पुण्ये पूरो ॥ सा० ॥ दीख दीयो हवे मुजने स्वामी, पत्नी सहित हुं छुं शिवकामी ॥ सा० ॥ ७ ॥ गुरु कहे संप्रति तादृशी जज्ञा, गुर्विणी माटे नहीं प्रव्रज्या ॥ सा० ॥ एम सुणी सुज्ञशिवो लीये दीक्षा, छुविध प्रकारे ग्रहे ते शिक्षा ॥ सा० ॥ ८ ॥ गुरु गुरु जक्ति युक्त तपकारी, छुष्कर चरण गुरु आणा धारी ॥ सा० ॥ निःप्रतिकर्म शरीर गत सादी, अगियाणीने विगत प्रमादी ॥ सा० ॥ ९ ॥ सूरि संघाते ते विचरंत, प्रायश्चित्त लेइ करे कर्मनो अंत ॥ सा० ॥ उयीश वरस ने तेरह दाहाका, जला जवाड्या चरण पताका ॥ सा० ॥ १० ॥ पादोपगमन अणसण आराधी, कर्म खपावीने मुक्तिज साधी ॥ सा० ॥ इति सुज्ञशिवो मोक्षं प्राप्तः ॥ कहे गौतम एणे पाप बहु कीधां, पण अंतगम् केवली थइ सुख लीधां ॥ सा० ॥ ११ ॥ कहो केम ते जगवन् मुज दाखो, करी कृपा तुम्ह चरणे राखो ॥ सा० ॥ प्रजु कहे गौतम एणे

मछराने, शुद्ध आलोयण करी बहु रागे ॥ मा० ॥ १२ ॥ गुरुदत्त प्रायश्चित्त जे धारे, ते आरोपुं तेणे तप सारे ॥ मा० ॥ दुस्तर गुरुध्यान पमाणे, नवनवसंचित दुष्कृत जाये ॥ मा० ॥ १३ ॥ तपथी आतम गुण अनुआवे, कर्मइंधन ते तप परजाले ॥ मा० ॥ अथ जाणे गौतम तेहनी नजा, तेणी वेला नवि दीध समग्गा ॥ मा० ॥ १४ ॥ इसो संबंध थयो तब आगे, दाखो स्वामी ने थयो जेम लागे ॥ मा० ॥ स्वामी जाणे ते छठी नरके, पोहोंची नवि पामी ते गरजे ॥ मा० ॥ १५ ॥ जाणे गौतम दो कर्म नारी, कुशीली वराके ते अद्र नारी ॥ मा० ॥ जिन कहे रौद्रध्यान अनुसारे, अध्यवसाय माठा तिहां पाये ॥ मा० ॥ १६ ॥ कहे गौतम शो अशु-भअध्यवसाय कीधां, जेथी नरक दुःख सह्यो अति गीधो ॥ मा० ॥ कहे जिन गर्भप्रसवने काले, चिंतव्युं मनमां एम जंजाले ॥ मा० ॥ १७ ॥ दुःख दीये गर्भ ए पाडुं प्रजात, विविध क्षार मेळवी करुं पात ॥ मा० ॥ एम अति रौद्रध्यान चिंतवती, दुःख भरी छठी नरके पोहोती ॥ मा० ॥ १८ ॥ ज्ञानविमल मति शुभ होये तेहने, आयति शुभ वेदवुं होये जेहने ॥ मा० ॥ कोण माठो नर कोण ने पाद, गयउं छे निज कर्मने साद ॥ मा० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मगध्यो ए सुत जंडीयो, तर पंकित जेवाय ॥ जात मात्र वेदने सह्यो, कुवरे अति विकराल ॥ १ ॥ ते पुत्रावतार उपरे, गृहस्यो तेणी वार ॥ मातानें जब उम्मलो, तब आव्यो कुमार ॥ २ ॥ मळी निज घरणीने दीधो, अपुत्रीयाने पुत्र ॥ कुलदेवीये आपीयो, ए आपण परसूत्र ॥ ३ ॥ जनम महोत्सव विस्तरे, कीधो सयणे साथ ॥ सुभद्र नाम तस थापीयो, माय ताय मन आथ ॥ ४ ॥ रूडा कुलाचारी अन्यमे, वधे नयणाने चित्त ॥ अनुक्रमे यौवन पामीयो, करे नवरसो नित्य ॥ ५ ॥ एक दिन तेण पुरे आवीया, मुनि गुणना अणगार ॥ ज्ञानादिक गुणगण भर्या, चरण करण भंडार ॥ ६ ॥ भव्य जीवोनी आगळे, कहेता श्रीजिनधर्म ॥ सुभद्दे ते मुनि निरखीया, कोइक पूर्व शुभकर्म ॥ ७ ॥ निसुणी तेहनी देशना, आव्यो मनमां संवेग ॥ दीक्षा लेइ [illegible] तजी नवि उद्वेग ॥ ८ ॥

॥ ढाल पीस्तालीशमी ॥

॥ राग काफी ॥ ॥ आज सखी मनमोहनां ॥ श्रीपास जिणंदा ॥ ए देशी ॥

॥ गुणद साधु गुरु सेवना, करे तप आराधे ॥ छट्ठम दशम दुवालसे, तप जपने साधे ॥ पास मासखमणो करे, गुरु पासे सेवे ॥ त्रण काल आतापना, यथाशक्ते लेवे ॥ १ ॥ अनुक्रमे कर्मवशे थयो, संजमथी शिथिलो ॥ शिक्षा ग्रहण करे नहीं, जेम तुरगो अवलो ॥ तप विणु अवर न लेखीये, संजममां कांय ॥ एक पखो एम ताणतां, स्याद्वाद न थाय ॥ २ ॥ तो गुरु वयण कहे इश्युं, वत्स आ संसारे ॥ शुद्ध चरण निर्धारे होये, यतना आचारे ॥ विण यतनाये तपने कह्यो, जिने काय कलेश ॥ सरण न होये बूडतां, जलशिंधुमां लेश ॥ ३ ॥ नाटक जेम अंध आगले, बहेराशुं वात ॥ रानमांहे रोवुं यथा, तेम तप संघात ॥ यतना विणु ते जाणीये, विण आंके मींडां ॥ मूरख जेम पाणि ठांमीने, ताके जेम ठांमां ॥ ४ ॥ अरुद लोया पापड न होये, जेम खरनां लींडां ॥ यतना विणु तप जाणीये, फूटां पंखी ईंडां ॥ यतना ते शुं दाखीये, कहो ते प्रभु अर्थ ॥ ते विणु तप जपने कह्यो, ते नहि परमार्थ ॥ ५ ॥ तव प्रभु कहे यतना तणो, परगट एम जाणयो ॥ अर्थ अनेक परे मुणी, मुनि दिलमां राखयो ॥ गुरु आणा करी आगले, शुचि ज्ञाननी दृष्टि ॥ संयम साधन साधवुं, जेहथी शिवसृष्टि ॥ ६ ॥ अहीं यतनाना अर्थनी गाथा कहे छे ॥ समिइ कसाय गारव, इंदियमय बंभचेर गुत्तीय ॥ सज्झाय विणय तव एग, सव्वीओय जयणा सुविहियाणं ॥ अस्यार्थः—पूर्व ढाल ॥ हेय ज्ञेय उपादेयशुं, ए मगधा धारे ॥ केइ आदरणा केइ छंडणा, यथायोग्य वधारे ॥ समिति पंचे समितो रहे, चउ कषायने छंडे ॥ गारव त्रणे दूरे करे, इंद्रिय पण मंडे ॥ ७ ॥ ए अशुभ थकी ओसारणा, शोभता शुभ ठामे ॥ मद आठे दूरे करे, कहुं तेहनां नामे ॥ जाति लाभ कुल रूपनो, बल सुत तप केरो ॥ ऐश्वर्य प्रभुता तणो, सहुंथी अधिकेरो ॥ ८ ॥ परजव ए हीणा लहे, जे मदनां ठाम ॥ बंभचेरनी वाडी जे, राखे नवी माम ॥ सज्झाय पचविध आदरे, दशविध करे विनयी ॥ तप बारे करे शक्तिथी, गुरु आणा मथयी ॥ ९ ॥ ज्ञान मुख्य किरिया करे, ते लहे भव पार ॥ वेजे दृष्टि शर ताणतो, धनुर्धर जस धारे ॥ १० ॥ आप बुद्धिये सुंदर कर्युं, ते सुंदर न होय ॥ जे गुरु वयण थकी कर्युं, ते शासने मोहे ॥ १० ॥

सुंदर बुद्धिकर्या, बहुयनि न गोदर्ह
यतः ॥ गाहा ॥ अणागमो किलिस्सइ, जइ करेइ अइ दुक्कराई तु बहुं ॥ गुरुआणाण विकर्या, अनाणी तवे यहुं
होइ ॥ १ ॥ अपरिच्छिय सुय निहसस्स, केवल मुक्किनसुय चारित्त ॥ तो नव नवि पावे ॥
पकइ ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ अल्प श्रुतने आपणे, जे छंदे चाले ॥ ते तप जो करे आकरुं, तो तव नवि पावे ॥
जेम जेम तप उद्यम करे, तें कष्ट अयाण ॥ धर्मदास गणि केरडुं, ए वयन प्रमाण ॥ ११ ॥ यतनापूर्वक
तप करो, जेम तपने पामो ॥ आणा यतना जो मळे, तो शिवसुख पामो ॥ एम गुरु वयण कह्यां घणां, पण
नवि मनियसिया ॥ यतना विण करे कष्टने, दुष्कर चित्त रजियां ॥ १२ ॥ वधी करीने करणा करी, गुरु
वयणां नाणे ॥ जो यतनाशुं तप करे, गुरु आणा माने ॥ तो अपरिज लहे गुरुतरा, अवरशुं शुं
कहेवुं ॥ मानव जन्म तणुं सदा, फल एणी परे लहेवुं ॥ १३ ॥ आलोयण मलिन करी, निज पाप
पलायो ॥ थोडुं पण तप आचरी, आतम अजुवाळो ॥ आप छंदे कीधुं थकुं, इह लोक न माडं ॥ कासकुसुम
परे परनवे, फल नहीं एम याडं ॥ १४ ॥ एणी परे विविध युगते करी, कह्युं पण नवि माने ॥ निरस्कार
कह्यो जाणीने, कहे आपी काने ॥ कहे मुज शोधी दीयो प्रहु, विविधशुं गुरु आपे ॥ आलोयण आडा
तणी, निज मनशुं थापे ॥ १५ ॥ विचरे गुरुनी साथ ते, करे तीव्र तपादिक ॥ केतो काल एम निर्वह्यो, न
लीए विगयादिक ॥ छठ्ठम दसमादिक, यावत छ मासा ॥ एम करतां कोइ कर्मने, वश थइ आशंसा ॥ १६ ॥
आप मति थयो तेहथे, प्रायश्चित्तह न करे ॥ शीतल जल परे चोमीयो, गुरुवयणां न अनुसरे ॥ पापाश्रवना
हारने, कंधी नवि जाणी ॥ शिथिल गडायना योगथी, थयो ताम अनाणी ॥ १७ ॥ कहे शोधी तपनो दीयो,
ते तप नो मोहेलो ॥ तपनी कोण मुज आगळे, कहे एम जेम घहेलो ॥ गुरुदत्त तप नवि आचरे, निज छंदे
चाले ॥ शीत दीवंता रीसवे, धरे मनमां आले ॥ १० ॥ अनुक्रमे गच्छथी काढीयो, अणयुगतो जाणी ॥
भनुप निर्जेर शरनी परे, थयो दुष्कृत खाण ॥ षट् कायजीव विराधतो, उग्र तप आचारी ॥ कार्याकार्य अवि-
चारतो, नवि जननो वीचारी ॥ १९ ॥ घणो काल एम निर्गम्यो, दुष्कर तप करतो ॥ यतना विणु चारि-
त्रनुं, नवि विरुद्ध लहेतो ॥ काल करी सुमठो थयो, सुर सोहम कल्पे ॥ इंद्र सामानिक ऋद्धिनो, पण गुण ते
थप्पे ॥ २० ॥ नरत क्षेत्रमां छपनो, तिहांथी चवी सुमठो ॥ वासुदेव थइ जायनो, पुढवी सत्तमीये होय
॥ मरी अनंतकायमां जशे, पछी चउगति सेवी ॥ २० ॥

दुष्करं तपकारी हुंतो, पण सुसढो फरशे ॥ संयमनी यतना विना, जवसिंधु न तरशे ॥ ज्ञानविमल गुरुनी तेणे, आणा जो न करी ॥ यतना विणु ते जव फिस्यो, चिरकाल ज्युं जमरी ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ २०६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे गौतम गणधर कहे, दुष्कर तप एणे कीध ॥ तो केम जवमां दुःख लह्यां, कारज कोइ न सिद्ध ॥ १ ॥ कहे स्वामी एणे मूलगुण, उत्तर गुणमां कोय ॥ यतना गुरु वयणां तणी, न करी तेणे बहु जव होय ॥ २ ॥ तप आचरण एहवां कस्यां, जो गुरु आणा जुत्त ॥ संयमथी जयणा धरत, तो होवत तसु युत्त ॥ ३ ॥ एहना तपनो जाग आठमो, जे करे ते शिव जाय ॥ जो यतनाये संजुत्तो, तो गुरु आणा ठहराय ॥ ४ ॥ जो ए यतना जुत होवे, तो ते जव शिव जात ॥ एम जाखे श्रीवीरजी, सुसढ तणो अवदात ॥ ५ ॥

॥ ढाल छेंतालीशमी ॥

॥ ऋषजनो वंश रयणायरु ॥ ए देशी ॥

॥ मास दुमास छ मासनां, वलीयां एहवां साधो रे ॥ तीव्र तपादिक सेवता, आतापना निराबाधो रे ॥ १ ॥ बलिहारी जिन आणने, आणा शिवसुखकारी रे ॥ संयम लेइने खप करो, यतनाये नर नारी रे ॥ ब० ॥ ए आंकणी ॥ नवदीक्षित जति जो होये, जे यतनानो रागी रे ॥ लाख अंशे पण तेहने, नावे कष्ट विजागी रे ॥ केवल तप तणो जागी रे ॥ २ ॥ ब० ॥ शमदम जयणाये हीएडा, जे यति लिंगने धारे रे ॥ ते नवि अरघे सुसाधुमां, तस चरण न जवजय वारे रे ॥ ३ ॥ ब० ॥ जेम तुष खंडन मंडन, मृतकने जेहवुं जासे रे ॥ तेम आणा यतना विना, तपथी जव नवि नासे रे ॥ ४ ॥ ब० ॥ बहु जण्यो बहुजने परिवस्यो, बहुमाने करी धोरी रे ॥ पण निश्चय नय यतना विना, तेम जिनशासन वयरी रे ॥ ५ ॥ ब० ॥ जिन आणा खंडन परा, तेहथी गृही पण रुडा रे ॥ आप छंदे जे चालता, तस तप सवि कूडां रे ॥ ६ ॥ ब० ॥ यतः ॥ जिण दिक्खंपि गहिउं, जयणविहूणा कुणंति तिव तवं ॥ जिणआणखंडगा जे, गोयम गिहिणोवि अज्ञहिया ॥ १ ॥ इति निशीथछेदचूर्णिगतोद्धृतसुसढकथायां ॥ ढाल पूर्वली ॥ एम जाणी जेम गुरु आगना, पूर्वक जयणा साधो रे ॥ जे जेम गुणनी वृद्धि होवे, तेम गुणठाणे वाधो रे ॥ ७ ॥ ब० ॥ तेह जणी यतना तणो, खप करो अइ

सावधानो रे ॥ हित काजे ए दाखीयुं, एह संबंध विधानो रे ॥ ८ ॥ ध० ॥ जेम राजगृही नयरमां, गौतम साधु करो, यतनानो सुणे मन करो, गौतम ने तेम दाख्युं रे ॥ ९ ॥ ध० ॥ पण निशीथनी आगल जाण्युं रे ॥ तेम चेटक नृपने कहे, गौतम में तेम दाख्युं रे ॥ १० ॥ ध० ॥ ज्ञान-टाली सच्चंदाचार रे ॥ यद्यपि चरित्रमां ए नथी, सुमद तणो अधिकार रे ॥ ११ ध० ॥ कलिक चूर्णिमां, जयणा उपर जाणीयो रे ॥ आलोयण शुद्धि उपरे, बहु मुनिये तिहां गुणीयो रे ॥ ११ ध० ॥ ज्ञान-विमल सूरि इम जणे, सुणजो सहु अणगार रे ॥ संयम अनिनव सुरतरु, शिवफल अनुभव सार रे ॥ कलित होये लहे पार रे ॥ १२ ॥ ध० ॥ ढाल पांचीशे ए जाणयो, सुमद तणो संबंध रे ॥ निसुणीने निःशल्य करो, आतम अनुभव बंध रे ॥ ध० ॥ जेम टले दुरितनो धंध रे ॥ ध० ॥ संजम शिवसुख संध रे ॥ १३ ॥ ध० ॥ इति सुमदकथा संपूर्णा ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीगुरुना वयणां सुणी, प्रतापसिंह ऋषिराय ॥ प्रमुख बहु यतनापरा, थया अवर समुदाय ॥ १ ॥ विनयी ने तप जप संयम खप करे, न धरे मनमां माय ॥ काम क्रोध मद मान जे, त्याजे जयना दाय ॥ २ ॥ किरिया करता विधि-लज्जालुआ, दयाधीर दमवंत ॥ दुर्धर तप आराधता, शम दम सूधा संत ॥ ३ ॥ ध्यान ज्ञानमां मग्न छे, जय पणे, साधे अक्रिय योग ॥ संजमना जोगी थया, जणथी होये अयोग ॥ ४ ॥ मयगल परे निल मलपता, नेहे कप-यहला फार ॥ लगन रहे निज जावमां, नहीं परजाव विकार ॥ ५ ॥ चोट करे कर्मोपरे, ध्यानानलना गोट ॥ उपाली टनो फोट ॥ सिंह परे दुर्द्धर्ष छे, देता परिसह दोट ॥ ६ ॥ चोट करे कर्मोपरे, ध्यानानलना गोट ॥ उपाली शामर्थ्यथी, चूरे जेम रजलोट ॥ ७ ॥ एणी परे केताएक कहुं, ते मुनि तणां वखाण ॥ प्रवचन मारग अनु-सरे, करे न ताणोताण ॥ ८ ॥ सर्व गाथा ॥ २००४ ॥

॥ ढाल सुडतालीशमी ॥

॥ राग रामग्री ॥ राय कहे राणी प्रत्ये ॥ सुनो कंताजी ॥ ए देशी ॥

राजऋषि रलियामणा ॥ सुणो सयणां जी ॥ प्रतापसिंह मुणराय ॥ मीठां वयणां जी ॥ नेहे नयणे तेहनुं

॥ मु० ॥ अमृत परे तारात्र ॥ मी० ॥ १ ॥ उद्गम दोष उत्पादना ॥ मु० ॥ सोल सोल पद जाण ॥ मि० ॥ एषणा दोष दश जे कह्या ॥मु०॥ पण जोजनना जाण ॥ मी० ॥२॥ दायक दायकथी होवे ॥ मु० ॥ आहार मंमली थाय ॥ मी० ॥ एम सुडतालीस पिंडना ॥ मु० ॥ षटविधथी ते थाय ॥ मी० ॥ ३ ॥ यतः ॥ गाथा ॥ सोलस उग्गम दोसा, सोलस उप्पायणा य जे दोसा ॥ दस एसणा य दोसा,, गासे पण मिलिय सगयाला ॥ इति ॥ एणी परे बहु तस जेद छे ॥ मु० ॥ ते टाले सवि दोष ॥ मी० ॥ ते पण संयम जार तणो ॥ मु० ॥ तेहवाने करे पोष ॥मी० ॥४॥ समिति समिता गुणवंता ॥मु०॥ गुप्ते गुप्ता साध ॥ मी० ॥प्रवृत्ति निवृत्ति समाचरे ॥ मु० ॥ सुख संयम निराबाध ॥ मी० ॥ ५ ॥ अजयदान बहु जीवने ॥ मु० ॥ देवा जवि सुख काज ॥ ॥ मी० ॥ दशविध वैयावच्च करे ॥ मु० ॥ विनय करे धरी लाज ॥ मी० ॥ ६ ॥ एणी परे साधनी मंमली ॥ मु० ॥ विचरे धरणी मांह ॥ मी० ॥ इंदु परे निर्मल हिये ॥ मु० ॥ हंस परे उच्छाह ॥ मी० ॥ ७ ॥ खड्गी विषाण परे एकला ॥ मु० ॥ वृषज परे जात थाम ॥ मी० ॥ सिंह परे दुर्धर्ष छे ॥ मु० ॥ परिसह झिपण काम ॥ मी० ॥ ८ ॥ जेह असंगी पंकज परे ॥ मु० ॥ गगन परे निरालंब ॥ मी० ॥ गुप्त इंद्रिय कच्छप परे ॥ मु० ॥ सौम्ये जेम शशिबिंब ॥ मी० ॥ ९ ॥ जात रूप कंचन परे ॥ मु० ॥ सर्वसह जेम जूमि ॥ मी० ॥ शारदजल परे निर्मला ॥ मु० ॥ जेहने आरायी सीम ॥ मी० ॥ १० ॥ वायु परे रहे अहोनिशे ॥ मु० ॥ अप्रतिबद्ध विहार ॥ मी० ॥ जारंड पंखी परे सवे ॥ मु० ॥ अप्रमत्त अणगार ॥ मी० ॥ ११ ॥ एहवा गुणना जे धणी ॥ मु० ॥ दंज रहित जस चित्त ॥ मी० ॥ ते प्रायश्चित्तने आलोइये ॥ मु० ॥ शुद्ध मने थइ नित्य ॥ मी० ॥ १२ ॥ आलोयण सूधी ग्रहे ॥ मु० ॥ होवे निरतिचार ॥ मी० ॥ दशविध प्रायश्चित्त धरे ॥ मु० ॥ यथायोगे श्रुत अनुसार ॥ मी० ॥ १३ ॥ यतः ॥ गाथा ॥ आलोयण पडिकमणे मीसविवेगे तहाय उस्सग्गे ॥ तवछेय मूल अणव, ढीएय पारंचिए चेव ॥ १ ॥ अस्यार्थः ॥ पूर्व ढाल ॥ निर्दिने जिन अपराधनुं ॥ मु० ॥ कहेवुं जे गुरु पास ॥ मी० ॥ तावन्मात्रथी शुद्धि होये ॥ मु० ॥ ते आलोयण खास ॥ मी० ॥ १४ ॥ गमनागमन रात कर धरडुं ॥ मु० ॥ यतनाये मुनिने होय ॥ मी० ॥ तिहां इरियादिक पडिक्कमे ॥ मु० ॥ ते पडिक्कमण बीजुं जोय ॥ मी० ॥ १५ ॥ राग दोषना वश थकी ॥ मु० ॥ जे प्रमादनुं पाप ॥ मी० ॥ आपे मिच्छा दुक्कड देइ ॥ मु० ॥ पछी गुरु ग्रत्ये मिश्र व्याप ॥ मी० ॥ १६ ॥

अनुक्रम शुद्ध शुद्धे थाई ॥ सु० ॥ शुद्ध छेदे तप त्याग ॥ श्री० ॥ जाण्या गया सेव्या पछी ॥ सु० ॥ ते विवेक
थोयानो भाग ॥ श्री० ॥ १७ ॥ कुस्वप्नथी दुःस्वप्नथी ॥ सु०॥ काउस्सग्ग करीए जेह ॥ श्री० ते ॥ काउस्सग्ग
प्रायश्चित्त पांचमुं ॥सु०॥ विनयादिक पंच भेद ॥श्री० ॥१८॥ जीवहिंसादिक कीजीए ॥ सु०॥ चोथ छठ अठमादि ॥
श्री० ॥ तप प्रायश्चित्त छट्ठं कह्युं ॥ सु० ॥ दोष आकुट्टी प्रमाद ॥ श्री० ॥ १९ ॥ नवगर्वी अगमर्यों या ॥
सु० ॥ पात्र वृद्ध ने ग्लान ॥ श्री० ॥ धर्म रहित पुनः पुनः सीवे ॥ सु० ॥ तप ते करे अप्रमाण ॥ श्री० ॥
२० ॥ अपवाद सेवे निःकारणे ॥ सु० ॥ क्रमागी तप योग ॥ श्री० ॥ अतिचार जाते पणे ॥ सु० ॥ उत्कृष्ट
तप अतिक्रम ॥ श्री० ॥ २१ ॥ पंचदशक अहोरात्रिनो ॥ सु० ॥ करे पर्यायनो छेद ॥ श्री० ॥ ते छेद नामे
सातमो ॥ सु० ॥ प्रायश्चित्तनो भेद ॥ श्री० ॥ २२ ॥ वध पंचेंद्रियनो करे ॥ सु० ॥ संकल्पे निर्दय ॥
श्री० ॥ मर्थवाद वहतां थई ॥ सु० ॥ दर्प स्त्री सेवन ॥ श्री० ॥ २३ ॥ पंचाश्रव उत्कृष्ट सेवे ॥सु०॥ संकल्पथी
वारंवार ॥ श्री० ॥ कारणनुं वली अनुमते ॥सु०॥ मंत्र तंत्र यंत्र प्रचार ॥ श्री० ॥२४॥ मांसपात गर्भपातादिके
॥ सु० ॥ मूल कह्यं व्यवहार ॥ श्री० ॥ जिहां फरी व्रत आरोपणा ॥ सु० ॥ ते आठमुं मूल नाम धार ॥श्री०॥
२५ ॥ अति संक्लिष्ट आशय थकी ॥ सु० ॥ निर्दय दीर्घ प्रहार ॥ श्री० ॥ उत्कृष्ट पदे नाणथ सेवे ॥ सु० ॥ तप
अनवस्थाप्य व्यवहार ॥ श्री० ॥ २६ ॥ आचार्य पाघडने होवे ॥ सु० ॥ तेहने कहे गणधार ॥ श्री० ॥ पण
लिंगे गण नायकं ॥ सु० ॥ अज्ञानादिक नवि धार ॥ श्री० ॥ २७ ॥ रहेतुं एकाण वसतिमां ॥ सु० ॥ नहीं
आहार संचार ॥ श्री० ॥ शिष्य शिष्यादिक वांदवा ॥ सु० ॥ पण अनुकूल तप ताप ॥ श्री० ॥२८॥ श्रीजो चोथ
छठ अठमादि ॥ सु० ॥ शिशिरे छठ अठम दशमादि ॥ श्री० ॥ पर्षिये अठम दशम दुवालसे ॥ सु० ॥
एम करे आहार ॥ श्री० ॥ २९ ॥ निर्लेप जल पारण करे ॥ सु० ॥ जघन्यथी पट् वर्षे ॥ श्री० ॥
उत्कृष्टथी बार वर्षमां ॥ सु० ॥ करे धरी मनमां हर्ष ॥ श्री० ॥ ३० ॥ पण महाव्रत नवि थापीये ॥ सु० ॥ ए
नवमुं प्रायश्चित्त ॥ श्री० ॥ गुरु दायकले ए होये ॥ सु० ॥ अपरने नहीं ए रीत ॥ श्री० ॥३१॥ जिन जिनमत
आशातना ॥ सु० ॥ करे पापनी मत जेह ॥ श्री० ॥ सेवे नृपनी राणीने ॥ सु० ॥ मुनि नृपनो वध थाय ॥
श्री० ॥ ३२ ॥ तेहने पारांचिक थाये ॥ सु० ॥ दशमुं कहीए तेह ॥ श्री० ॥ गणधरादिक कृत अद्वी जोयणे
॥ श्री० ॥ जिनवरकनी पदे भेद ॥ श्री० ॥ ३३ ॥ महापराक्रम गुरुने होये ॥ सु० ॥ पूर्वे कह्युं तप जेह ॥

१० ॥ तेह त्रिकाळे आदरे ॥गु०॥ दशविध प्रायश्चित्त एह ॥ मी० ॥ २५ ॥ थिविरकल्पीने दश होय ॥ गु० ॥ आठ होय जिनकल्प ॥ मी० ॥ निर्ग्रंथने होय पढम चोथुं ॥ गु० ॥ स्नातकने एक विवेकनो कल्प ॥ मी० ॥ उगणीस दशम उद्देशके ॥ गु० ॥ वृत्तिमां एह विचार ॥ मी० ॥ ज्ञानविमळ गुरु वयणथी ॥ गु० ॥ सुणीये ते अधिकार ॥ मी० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा २१२२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इत्यादिक यतना घणी, करता उग्र विहार ॥ सामाचारी दशविधा, चक्रवाल व्यवहार ॥१॥ यतः ॥इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवस्सिया निसिहिया ॥ आपुच्छणा पडिपुच्छणा, छंदणा य निमंतणा ॥१॥ उवसंपया य काले, सामाचारी भवे दसविहाओ ॥ एएसिंतु पयाणं, पत्तेय परुवणं वुच्छं ॥ २ ॥ अस्यार्थः—दोहा ॥ इच्छा गुरुनीय वर्त्तवुं, वितथे मिथ्याकार ॥ तहाकार गुरु आणनी, ए त्रण समये आचार ॥ २ ॥ गमने होवे आवश्यका, निसिहि आगमण ठाण ॥ कार्य संकल्पे आपृच्छना, पडिपृच्छा कार्य करणने ठाण ॥ ३ ॥ वृद्ध विनये अनुछंदणा, छंदना याचना काल ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र पद, अनुयोगादिक काल ॥४॥ गणथी गणांतरमां जवी, जे लीजे संयम हेत ॥ ते दशमी उपसंपदा, ए दशविध संकेत ॥ ५ ॥ ए चक्रवाल ते चक्र परे,- संयम रथने काज ॥ वार वार ते सेवतां, वाधे संयम राज ॥ ६ ॥ कवित छप्पो ॥ आवश्यक दुगवेळ, तेम सज्झायनुं करवुं ॥ पडिलेहे सवि वस्तु, ध्यान शुभ चेहनुं धरवुं ॥ भिक्षागोचरी काल, तेम अप्नत्तछ पच्चक्खाणे ॥ आगमन जिन ठाण, निर्गमन ते वसे ठाणे ॥ निशिदिन ते बेसवुं, तुयट्टण सयनने जाणीये ॥ ए दशविध सवि साधुनी, सामाचारी आणीये ॥ १ ॥ यतः ॥ आवस्सिय सज्झाये, पडिलेहण झाण भिक्खु अभत्तट्ठे ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे निसियण तुयट्टेय ॥ १ ॥ पूर्व दोहा ॥ ए ओघे करीने कही, सामाचारी नित्य ॥ साधवीने सवि साधुने, धरवा करण सुपवित्त ॥ ७ ॥ सर्व गाथा ॥ २१३० ॥

॥ ढाल अडतालीशमी ॥

पांडव पांचे वांदतां ॥ मन मोहे रे ॥ अथवा वाणी वाणी जिन तणी ॥ ए देशी ॥

पंचाचार विचारता, धरी धरणें धोरी धीर रे ॥ आपणने अंगीकरे, वली परने पळावण वीर रे ॥त्रूटक॥ म
निरधि परे गंभीर सकळ गुण, मोहता मनधीर रे ॥ मन मोहे मोहन वेली भविक नडि, मोहता भव तीर रे ॥
१ ॥ ढाळ ॥ ज्ञानाचार ते आठ छे, पण ज्ञान तिहां श्रुत मुख्य रे ॥ तथथा ॥ गाथा ॥ काले विणए बहुमाणे,
उवहाणे, तह अनिण्हवणे ॥ वंजण अथ्थ तदुभये, अठविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ अस्यार्थः— पूर्व ढाळ ॥
चउ संध्या वरजी भणे, नवि अक्षर श्रुत जे दश रे ॥ त्रूटक ॥ वली सूत्र कालिक चउ याम आद्यंत, प्रहर
द्वय दिनमान रे ॥ तेम रयणीये पद प्रमाण भणे, काले थइ सावधान रे ॥ २ ॥ ढाळ ॥ विनय करे ज्ञान
ज्ञानीनो, ज्ञानाभ्यासीनो तेम रे ॥ ज्ञानोपगरणनो वळी, शुचि शोभित होये जेम रे ॥त्रू०॥ तेम होये शोभित
भव्य आशातना, टाळतो धरे नेह रे ॥ दीये बहु आदर मान कहिविध, पाळतो गुण गेह रे ॥ ३ ॥ ढाळ ॥
बहुमान ते अंतर हृदयमां, निज प्राणथी अधिकी प्रीत रे ॥ गुरु ज्ञानी ज्ञान उपरे, उपधान तपोविधि रीत रे ॥
त्रूटक ॥ विधि रीते मुनि ते योग वही भणे, सूत्र ते सुविनीत रे ॥ श्रावकने उपधान परमेष्ठी, प्रभृति कह्यां
पद रीत रे ॥ ४ ॥ ढाळ ॥ गुरु ओळवणा नवि करे, जेहथी पाम्यो श्रुत ज्ञान रे ॥ गुरु अपलापी भारी
कह्यो, भवि शास्त्रमां ते अज्ञान रे ॥ त्रू० ॥ अज्ञानी भारी कर्म निकाचित, बंधना कर्मरूप रे ॥ होय राग-
भने चंडालगते, तेही अनाविदरूप रे ॥ ५ ॥ यतः ॥ एकाक्षरप्रदातारं, यो गुरुं नैव मन्यते ॥ श्वानयोनिशतं
गत्वा, चांडालेष्वपि जायते ॥ १ ॥

भावार्थः—एक अक्षरने पण भणावनारा गुरुने जे मनुष्य मानतो नथी ते मनुष्य सोवार श्वान योनिमां अवतार
लइने अंते चांडाल योनिने विषे उत्पन्न थाय छे ॥ १ ॥

॥ ढाळ पूर्वली ॥ भव्य जन ते सूत्र खरो भणे, ह्रस्व दीर्घ उदात्तानुदात्त रे ॥ स्वरित प्लुत सानुनासिके,
निरनुनासिक स्थान प्रयात रे ॥ त्रू० ॥ वळी स्थान अमान प्रमाण यथाविधि, उच्चरे शुद्ध पाठ रे ॥ हीनाधिक
पद रीति यति भूलि, अक्षरे नहीं शाठ रे ॥६॥ ढाळ ॥ संप्रदायी गुरु मुख थकी, वळी आगमनो करे अर्थ रे
॥ नयगंम भंग प्रमाणथी, मोळे पदे नवि होये व्यर्थ रे ॥ त्रू० ॥ नवि होय जिनमत व्यर्थ तेणी परे, भाखतो
शुद्ध अर्थ रे ॥ सूत्रार्थ बेहु शुद्ध जिहां तेहथी, विपरीत अर्थ अनर्थ रे ॥ ढाळ ॥ ज्ञानाचार ते आठ छे,
द्रव्य क्षेत्र काळ ने भाव रे ॥ शुचि तनु उपगरणादिके, होये द्रव्यथी ज्ञान उपाय रे ॥ त्रू० ॥ तेम क्षेत्रथी

र मान अशुचि, अन्नावथी करे शुद्ध रे ॥ औदारिक वैक्रिय ज्ञेद असज्झाइ, दावथी गुण लब्ध रे ॥ ढाल ॥ कालमां संध्यादिक कह्यो, जावथी अधिकरण शांत रे ॥ एणविध ज्ञानाचारनो, विधि पाले तेह महांत रे ॥ ज्रू० ॥ पाले ते संत महंत दर्शना, चारने महाधीर रे ॥ वीतरागे कह्युं ते सत्य प्रतीते, आठ आचारने हिए हीर रे ॥ ए ॥ यतः ॥ निस्संकिय निक्कंखिय, निवितिगिज्ञा अमूढदिठीय ॥ उववूह थिरीकरणे, वज्ञलप्पज्ञावणे अच ॥ १ ॥ अस्यार्थः-पूर्व ढाल ॥ निःशंकित देश सर्वथी, जिनशासननुं श्रद्धान रे ॥ निःकांक्षित अन्य दर्शन तणो, विस्मय देखी नवि तान रे ॥ ज्रू० ॥ नवि ध्यानमां वांछे ते फले, संशय नहीं धर्ममांहि रे ॥ तनु वस्त्रादिक म्लान देखी, डुगंछा नहीं धरे ज्याहि रे ॥ १० ॥ ढाल ॥ निवितिगिछाये जाणीये, वली दृष्टि न होये मूढ रे ॥ कुशलपणुं जिनशासने, नय ज्ञंग ते जाणे गूढ रे ॥ ज्रू० ॥ तेह अमूढज दृष्टि कही, स्तवनाये कही उपबृंहणा ॥ शक्ति पतितने ठामे थापे, वली समकिते थिरि कारणा ॥११॥ ढाल ॥ वात्सल्य गुण ते डुःखनो, उद्धरण कारण निर्माय रे ॥ प्रज्ञावना ते जिनशासन तणी, शोज्ञा वधती जिहां थाय रे ॥ज्रू०॥ जिहां थाय ते दर्शनाचार विशोधी, तणी कही जिनराय रे ॥ सांज्ञोगिक जे साधु महामुनि, केरका समुदाय रे॥ १२ ॥ ढाल ॥ चारित्राचार जे आठ छे, पाले ते थइ सावधान रे ॥ ते कहे छे ॥ यतः ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायवो ॥ १ ॥ अस्यार्थः ॥ ढाल ॥ समिति पंच त्रण गुप्ति जे, प्रवर्त्तन निवर्त्तनां मान रे ॥ ज्रू० ॥ अनुमान करण प्रमाण इरिया, जापेपणा आदान रे ॥ परिष्ठापनिकाधिक एषणा, समिति सदा मतिमान रे ॥१३॥ढाल॥ आलंबन काल मार्गणा, जयणा चउ इरिया जाण रे ॥ सत्यासत्य सत्यामृषा,असत्यामृषा चउ ज्ञाषा ठाण रे ॥ज्रू०॥ चउठाणे एषण होइ उक्रम, उत्पादना तेम अन्य रे॥ पिंम ग्रासना ज्ञेद प्रकारे, जो लीये शुज्ञ मन्न रे ॥ १४ ॥ ढाल ॥ तेम आदाना निक्षेपना, द्रव्य क्षेत्र काल ज्ञावे चार रे ॥ परिष्ठापनिका एणे विधे, ए समितिना अनेक प्रकार रे ॥ ज्रू० ॥ चार ज्ञेद सत्यादिके होय, मनो वच गुप्ति ने प्रतिरूप रे ॥ कायगुप्ति डुविध तेम जाणी प्रवर्त्तन, निवर्त्तना तस रूप रे ॥ १५ ॥ ढाल ॥ ए आठे माता कही, प्रवचननी शास्त्र मकार रे ॥ अथवा प्रवचन सवि एहमां, मायुं देते निरधार रे ॥ ज्रू० ॥ सार संयम सुत उपजावे पालणा, पण करे निरमाय रे ॥ करे निर्मलता शोधी मातापणुं, तेणे धरे मुनिराय रे ॥ १६ ॥ ढाल ॥ प्रणिधान

चित्त एकाग्रता, ज्ञान दर्शन चारित्र योग रे ॥ गुणनो होवे एहने जी, तेहने होवे चारित्र जोग रे ॥ भू० ॥ उपयोगे जे सावधान थइ, समितो रहे सदाकाल रे ॥ गुप्तो ते मन परिणामे सदा, शुजने वहे सुकमाल रे ॥ १७ ॥ इति ॥ ढाल ॥ बार जेदे तपाचार जे, बाह्य अत्यंतर ठ ठ होय रे ॥ तिहां ते तपनी गाथा कहे जे ॥यतः॥ अणसण मूणोयरिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ ॥ कायकिलेसो संली, णया य बज्झो तवो होइ ॥ १ ॥ अस्यार्थः—॥ ढाल ॥ चउविध आहारनो त्याग जे, ते अणसण बहुविध जोय रे ॥ भू० ॥ वली होवे उणोदरी बहुविधि, निज आहारनी यथाशक्ति रे ॥ गाथाथी जाण कवल ते, विचारनी करे व्यक्ति रे ॥ १८ ॥ ढाल ॥ वृत्तिसंक्षेप द्रव्यादिके, ग्राम पुरुष प्रमुख बहु जेद रे ॥ अभिग्रह सवि अंतर जये, ए मांहे न पामे जेद रे ॥ भू० ॥ अति गेदे नहीं रस त्याग ते विगइ, निविग तणो रस जेद रे ॥ उत्कृष्ट संक्लिष्ट जे द्रव्य ते तज, जेदे घणो तपि तेह रे ॥ १९ ॥ ढाल ॥ कायकिलेश आतापना, लोचादिक परिसह धीर रे ॥ संलीनता अंगोपांगनी, आसनादिकनी धरे धीर रे ॥ भू० ॥ करे ए बहुविध बाहेर तपनी, अहोनिशे मुनिलोक रे ॥ हवे बहुविध जे अत्यंतर ते पण, अन्यासे गतशोक रे ॥ २० ॥ यतः ॥ गाथा ॥ पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ॥ झाणं उस्सग्गो विय, अब्भिंतरओ तवो होइ ॥ १ ॥ अस्यार्थः ॥ पूर्व ढाल ॥ प्रायश्चित्त पूर्व जण्यां, दशविध करे तापनी सेव रे ॥ विनय ते चउविध जाणियो, ज्ञानदर्शनचरणनी सेव रे ॥ भू० ॥ नित्यमेव करे स्वयमेव चोथो, उपचारनो वली जेद रे ॥ अन्युत्थान आसन प्रमुखाश्रित बहु, व्यवहारनो नहीं खेद रे ॥ २१ ॥ ढाल ॥ शुज मन वच काय जोमतां, सात जेदे ते पण थाय रे ॥ तप उपकार प्रतिरूप ए, जोमंतां दशविध थाय रे ॥ भू० ॥ निर्मायपणे एम विनयनां रूप, अने घणां श्रुतमांहे रे ॥ दशवैकालिकनी निर्युक्तिमांथी, गुरुनां में उत्साहे रे ॥ २२ ॥ वेयावच्च ते व्याधि परिसह थकी, उद्धरण सहायनुं रूप रे ॥ विनय थकी ते अधिक छे, दशविध ते जे अनुरूप रे ॥ भू० ॥ प्रतिरूप न तेहने कोइ देशे, तहनुं करे थइ शूर रे ॥ आयरियादिक दश पद गाथाथी, चित्त धरे मुनि धीर रे ॥ २३ ॥ यतः ॥ आयरिय उवज्झाये, थेरे तवसी गिलाण सेहे य ॥ साहम्मियकुल गण संघ संगयतमिह कायव्वं ॥ १ ॥ वेयावच्चं नियमं, करेह उत्तम गुणधरे नाणं ॥ सव्वं किरपमिवाइ, वेयावच्चं अपमिवाइ ॥ २ ॥ पमिगरसमयमावा, नासइ चरण सुयं अगुणणाए ॥ न हु वेयावच्चं चिय, सुहोदयं नास ए कम्मं ॥ ३ ॥ ढाल पूर्वली ॥ जेद

नली अंग जेहनुं, धरे नेम श्रीजे वेयावच रे ॥ एहना बावन जेद छे, तेर पदनो चउविध थाय रे ॥ सू० ॥ जक्ति बहुमान गुणवर्णनने, आशातना करो हाण रे ॥ ए मचि अंतर्गत नही तिहां, यातना मन आण रे ॥ २४ ॥ यतः ॥ तित्थयर सिद्ध कुल गण, संघ किरिय धम्मनाण नाणीणं ॥ आयरिय थेर उवज्झाय, गणिणं तेरस पयाणं ॥ २ ॥ ढाल ॥ लोकोपचार विनय कह्यो, वली पणविध कोइक ग्रंथ रे ॥ सज्झा अर्थ काम जय नवी, ए सवि जयता परिगंथ रे ॥ सू० ॥ परिमंथो टालक मोक्षनो विनय, पंचमो सुखदायी रे ॥ इत्यादिक बहु जेदे विनय वैया, घणे रमो जाता जाइ रे ॥ २५ ॥ ढाल ॥ हवे सज्झाय पणविध कह्यो, वाचन ते सूधे पाठ रे ॥ सूत्रार्थ संशय थको, परने पूछन पृच्छा गाठ रे ॥ सू० ॥ बहु गाठे जएयानुं मारण ते परा, वर्त्तना जयवंत रे ॥ तत्त्वार्थनुं विचार चिंतन, अनुप्रेक्षा गुणवंत रे ॥ २६ ॥ ढाल ॥ सूणवुं जे सूत्रार्थनुं, सावधानपणे परी प्रीति रे ॥ अथवा धर्मनुं जाखवुं, ए धर्मकथानी नीति रे ॥सू०॥ प्रीतिनुं एम सज्झाय करीने, करावता पर पामे रे ॥ करता तेहनुं महाय प्रथम, कर्म वारता ते गुणराशि रे ॥ २७ ॥ ढाल ॥ अंतर्मुहूर्त्त एकाग्रता, ते ध्यान उद्मस्थने जाण रे ॥ केवलीने योग रुंधना, होवे जे अयोगी गुणठाण रे ॥सू०॥ गुणठाणे ते होवे बहु जेदे, शुन कह्या जिनराज रे ॥ धर्मने जेदे चारित्र ते, निर्वह्या सुख काज रे ॥ २८ ॥ यतः ॥ अंतो मुहुत्त मित्तं, चित्तावत्थाण मेगवत्थुम्मि ॥ उउमत्थाणं झाणं, जोग निरोही जिणाणं तु ॥ १ ॥ इति ॥ ढाल ॥ आर्त्त रौद्रध्यान यद्यपि, छे तो पण अशुन निदान रे ॥ ते त्रण गुप्तिमां धारता, मुनि तो तिहां नहीं माव- धान रे ॥ सू० ॥ सावधान होवे शुनध्याने संवर, धर मुणि शुनमत्त रे ॥ मैत्री प्रमोद करुणा ने उपेक्षा, चारे धरे ते ते धत्त रे ॥ २९ ॥ ढाल ॥ जेम घन संघाते मह्यां, होवे पवनथी ते विसराल रे ॥ तेम शुनध्यानना योगथी, नासे वली कर्मनां जाल रे ॥ सू० ॥ जेम आले कंचन मल टले सवि, निर्देखे हणमांहि रे ॥ तेम आतमनी शुद्धि जाणनल, ने वधे परवाहि रे ॥ ३० ॥ ढाल ॥ जे जे योग जिनशासने, वर्ते छे ते सवि होय रे ॥ दुःखक्षयने कारणे, जो शुनध्यान संयोगी जोय रे ॥ सू० ॥ शुनध्यान विना ते अहित अजव्य, निश्चय परे जगमांहे रे ॥ जो ध्यान तणे परजाय अशुन, शुन परे हणमांहे रे ॥ ३१ ॥ ढाल ॥ ध्यानश- तकमां एहना, जे आवश्यक निर्युक्ति रे ॥ चिंता ने वली जावना, लक्षण आलंबन जक्ति रे ॥ सू० ॥ शक्ति शुद्धि ध्याननी मोहने, मापीए तत्काल रे ॥ चंड ने प्रसन्नचंद एकामुन, केवली सुकुमाल रे ॥ ३२ ॥ ढाल ॥

कायोत्सर्गे ध्यान तातवी, करीए जो होय विशुद्ध रे ॥ कार्य निरीहन भेदथी, पण भेदे करे ते शुद्ध रे ॥ ३० ॥ अविशुद्ध ते करीए अशुद्ध ते, श्रीज्ञानविमल मति धरी न्याय रे ॥ एम आचार विशुद्धनुं सेवतनी, व्रती ते जय नाद रे ॥ ३३ ॥ सर्व गाथा ॥ २१६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीर्य ते आतम शक्तिनो, समर्थपणानो योग ॥ ते दुविध बाल पंडिते, तिहां बाल वीर्य नहीं जोग ॥ १ ॥ जो संवर करणी तणो, सामर्थ्य पंडित वीर्य ॥ अकुंठित होवे वण योगनो, मंदरगिरि परे धैर्य ॥ २ ॥ ते वीर्याचार त्रिहुं विधे छे ॥ यतः ॥ अणिगूहिय बलविरिओ, पडिक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो ॥ जुंजइ अ जहा-थामं, नायव्वो वीरियायारो ॥ दोहा ॥ अनिगूहित बल वीर्यमां, जे फोरवे निज शक्ति ॥ मन वच काया इक-पणे, तेहीज प्रवचन व्यक्ति ॥ ३ ॥ उद्यम धैर्य पराक्रमी, ए सवि छे पर्याय ॥ उद्यमथी जन जिन होवे, उद्यम परम उपाय ॥ ४ ॥ ज्ञानक्रियाना योगथी, साधीजे शिवपंथ ॥ उभयाश्रित विणु एकलो, होय नयनो पलीमंथ ॥ ५ ॥ ताद पण उद्यम विना, न तरे नीरप्रवाह ॥ नही सुशिक्षितपणुं नवि लहे, विणु उद्यमे सुप-साय ॥ ६ ॥ ज्ञानादिक त्रणेहने जे, ते पण वीर्याचार ॥ सफल होय एहने सह्यां, ते विणु होवे अतिचार ॥ ७ ॥ यद्यपि कारण बहु अछे, कालादिकना ग्रंथ ॥ पण उद्यमनी मुख्यता, साधीजे शिवपंथ ॥ ८ ॥ समु-दाये समकित कह्यो, एकांते मिथ्यात ॥ गोशालक मतनी परे, नियतवादनी वात ॥ ९ ॥ यतः ॥ कालो सहाव नियइ, पुव्वकय पुरिसकारणो पंच ॥ समवाये सम्मत्तं, एगंते होइ मिच्छत्तं, ॥ १ ॥ यद्यपि भवस्थिति नियत छे, तो पण सहुनि पसुताय ॥ अधिक न्यून रस स्थिति तणी, बोली श्रीजिनराय ॥ १० ॥ ते जाणी उद्यम आदरे, हाम धरे पण नित्य ॥ तो नर मलना साभीया, तेहने उद्यम मित्त ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ २१७९ ॥

॥ ढाल ओगणपचासमी ॥

राम भणे हरि उठीए ॥ ए देशी ॥

॥ भव भमतां नर गति तणा, आगर ते मुनिराय रे ॥ विणरे गुरुपद सेवता, दर्शनथी दुःख जाय रे

॥१॥ सहुत्र संवेगीया साधुजी ॥ सहिमावंत सहंत रे ॥ शोहीता मुनिवर सदिदयें, पालन करे गतवंत रे ॥ नाण गुणना जहंत रे ॥ करता कर्मना अंत रे, संता दंता गतिमंत रे ॥ सुजस सोभाग महंत रे, संयमश्री तणा कंत रे ॥ २ ॥ स० ॥ दुर्धर तप तपता घणुं, करता कर्मना नाश रे ॥ जपता प्रवचन पावने, आतम रीतविलास रे ॥ षट्विध जीवनी रास रे, पाले निज परे उल्लास रे ॥ ३ ॥ स० ॥ उपशम नीरना नीरधि, धीरधी अडगेवीर रे ॥ सहस्रअढार शिलांगना, रथधुरा धरण धुरीण रे ॥ आगम निगम प्रवीण रे ॥ किणही थाये न खीण रे, गाइया सह जेम मीण रे, सहे परिसह अदीण रे ॥ ४ ॥ स० ॥ प्रतापसिंह नृपति ऋषि, सूर्यवती तेम माय रे ॥ लक्ष्मीदत्त लक्ष्मीवती, ए पण उपपिता माय रे ॥ एणी परे मुनि समुदाय रे, संयममां निरमाय रे ॥ एम बहु काल गमाय रे ॥ ५ ॥ स० ॥ केइक अणसण आदरी, शिव पाम्या तत्र तेण रे ॥ केइक अनुसरे उपना, एक अवतार ते तेण रे ॥ केइक उपशम श्रेण रे, टाइयां कर्म तरेण रे ॥ वर्त्या आनंद परेण रे ॥ ६ ॥ स० ॥ श्रीचंद नृपति ते मांजनी मात पितानां निर्वाण रे ॥ जक्ति थकी तेणे थानके, करे तिहां थूभ मंडाण रे ॥ संजारे गुणखाण रे ॥ जेहनी जे मीठी वाण रे ॥ ध्यावीये तेहनां झाण रे ॥ ७ ॥ स० ॥ हवे श्रीचंद नृपाल जे, पाले धर्मनुं राज रे ॥ विचारवना योगथी, साधे धर्मनुं काज रे ॥ करिय विमानना साज रे, यात्रा करे श्रीजिनराज रे, जेम जलधर तणी गाज रे ॥ तेम गुहिर निशाण अवाज रे ॥ सहुत्र सगुण रे राजवी, राजवीया शिरदार रे, सुजस सोभाग्य जंमार रे, देशविरति अवतार रे, शोजा अतिहि उदार रे ॥ ८ ॥ स० ॥ सिद्ध क्षेत्रादिक तीर्थनी, यात्रा उलट कीध रे ॥ संघ सहित परिवारशुं, नरजवनुं फल लीध रे ॥ सनह मनोरथ सीध रे, थइ जगमांहे प्रसिद्ध रे ॥ दरिद्रने गज दान दीध रे ॥ ९ ॥ स० ॥ शाश्वत चैत्य वैताढ्यनी, नंदीश्वरादिक तेम रे ॥ त्रिभुवन जीधांथी पछी, कीधी अष्टादश एम रे, हरखे सहु साथे प्रेम रे, पाले श्रावकना नेम रे, जेणी परे जातुं होये हेम रे, गुण तस कहीये केम रे ॥ १० ॥ स० ॥ मही जिनचैत्य मंडित करी, मानुं जूनामिनी उरहार रे ॥ उत्तंग तोरण ध्वज करी, मानुं निज दाननो अंबार रे ॥ सुंदर जिनबिंब सार रे, धर्मशाला सात चार रे, गुज करणीना नहीं पार रे, साते दरसन शिगार रे, दान तणा जंडार रे, कीधां सुकृत संचार रे ॥ ११ ॥ स० ॥ चंद्रकलादिक नारीनुं, दयपाला करे रूप रे ॥ अन्तरदमांहे ते बहु करे, साधे थक यश तप रे ॥ चतुर विवेकाधी चूप रे, महिमा

पूजा विविध मकार रे, निरखावे जेम भूप रे ॥ १२ ॥ म० ॥ गोत्र
अनुप अनुप रे, मदन पराजित रूप रे, प्रथम पूरणचंद नामथी, सकल कलाधर रंग रे ॥ जेहमां
गुणा गुणा, नगर तेहमांहे विशेष रे ॥ कनककमलादि अनेक रे, पंचम बहु तम देस रे, हवे धर्मी जन
गुण ने अनेक रे, जेम नगमां मांहे मेरु रे, करी सकल कलानो अभ्यास रे ॥ एकदा वर्षे राजाणे, एक
रे ॥ १३ ॥ म० ॥ चार वरस कुंअरपणे, श्रीचंद राय नाम रे, दीये धरी अति उल्लास रे, चंद्रयतन
नव निधान रे ॥ पर वीर आणा ने नाम रे, पूर्णचंद्र निज पुत्रने, करे तिहां राज्याभिषेक रे ॥ नयर कुशस्थलनो तिहां, आणी
पुर थाय रे ॥ १४ ॥ म० ॥ नाना अरि जेम नेक रे, मोहोटी जगमां जसु टेक रे, धर्म चतुराइ
विवेक रे ॥ नेत मनाव अतिरेक रे, कनकसेन सुतने दीये, नव लाख देशनुं राज्य रे ॥ कनकपुरी नगरी तणुं, कनका-
रे ॥ १५ ॥ म० ॥ श्रीमद्र तनयने काज रे, दीये कुंभकपुर राज रे, वैताढ्य गिरि तणुं राज्य रे, रत्नचंद्र
सुत माज रे ॥ मलय देशनो नृप कर्यो, मदनचंद्र मदनानो जात रे ॥ कनकचंद्रने कर्णाट
ने राज्य रे ॥ १६ ॥ म० ॥ शिवचंद्रने अंगदेश मात रे, एम करे बहु अवदात रे, जोगवतां सुख
देशनुं, तारचंद्रने नंदीपुर साक्षात् रे ॥ तेम तेम राज्य वेहेंची दीये, धारे
रे ॥ १७ ॥ म० ॥ एम सघळाये पुत्रने, जेम जेम योग्यता जाणी रे ॥ वेहेंची दीये अद जाण रे, एम श्रीचंद्र
अमकनी आण रे ॥ काइ नहीं संपनाण रे, धातु रयण तणी खाण रे,
महाराण रे, दानविमलसूरिनी वाण रे ॥ १८ ॥ म० ॥ सर्व गाथा ॥ २७७३ ॥

॥ दोहा ॥

शेठ सेना- ॥ १ ॥ चंद्रकलादिक नारीनो, पटराणी परिवार ॥ गुणचंद्रादिक मंत्रवी, आठ सहस गुणकार ॥ २ ॥ जेम हरि सुरवर लोकमें,
पति पौरजन, प्रत्येके चार हजार ॥ नर नारी वारांगना, तेह अनेक उदार ॥ ३ ॥ अवसर अवसर साधतां,
लीला अहेर करे धीर ॥ तेम श्रीचंद्र नृप मनुजनो, अधिपति धर्म सुधीर ॥ ४ ॥ एम करतां एकण समे, वनपालक अति-
धर्म अर्थ ने काम ॥ पंकजने पांखे नहीं, सेवन गुणमणि धाम ॥ ५ ॥ धर्मघोषसूरीश्वरा, सपरिवार निराबाध ॥ वनमां
राम ॥ आवी दीये वधामणी, करी कर जोडी प्रणाम ॥ ६ ॥ ते निसुणी वनपालने, प्रीतिदान दीये कोडि ॥ सामी यारह कन-

पनी, कोण करे एहनी होम ॥ ७ ॥ सेना सज्ज करी घणुं, चतुरंगिणी नर नाथ ॥ आवे श्रीगुरु वांदवा, गयल ऋद्धि लेइ साथ ॥ ८ ॥ पंचाभिगमन साचवी, मूकी राजनां चिह्न ॥ चामर छत्र शस्त्र वाहनां, मुकुट पंच ए भिन्न ॥ ९ ॥ पेहा विधि वंदन करी, दीये गुरुजी उपदेश ॥ अतिहर्षित हृदये करी, निसुणे अमृत संदेश ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ २२२४ ॥

॥ ढाल पच्चासमी ॥

॥ कुंवरजीनी देशी ॥

॥ दश दृष्टांते दोहिलो रे, नरभवनो अवतार ॥ सुगुणराय सांभलो ॥ आर्यदेश उत्तम कुले रे, लहेवुं आरोग्य तनु सार ॥ १ ॥ सु० ॥ मेलो विषय प्रमाद, टालो मन आमलो ॥ तो पामो यशवाद, करो मन निर्मलो ॥ ए आंकणी ॥ पंचेन्द्रिय पटुपणुं, वली लहेवो श्रुतयोग ॥ सु० ॥ सुगुरु तणा संयोगथी, श्रद्धानो उपयोग ॥ सु० ॥ २ ॥ आदरवुं ते धर्मनुं, पंडित वीर्य उल्लास ॥ सु० ॥ आदरीने वली पालवुं, जेम कह्युं तेम सुप्रकाश ॥ सु० ॥ ३ ॥ ए सवि दुष्कर ताम छे, जास न पूरव पुण्य ॥ सु० ॥ ते सवि तुम्हने सोहिलुं, मल्युं सुगमने तेणे धन्य ॥ ४ ॥ सु० ॥ समकित देशविरति तणा, लाभ लह्या जेणे होय ॥ सु० ॥ ते पण मही वडभागीया, थोड्या समयमां जोय ॥सु०॥ ५ ॥ पाश परे घरवासने, जाणे जेह अकथ्य ॥ सु० ॥ कामभोगने जोमीये, ते इंद्रिय अर्थ अनर्थ ॥ ६ ॥ सु० ॥ भवसमुद्रमां बूडतां, स्त्रीजन पथ्थर नाव ॥ सु० ॥ विषय ते सेव्याथी मटे, ए भाव ते विषय छे ताव ॥ सु० ॥ ७ ॥ क्षणपरिभोगी धनादिके, तेही नरक सहाय ॥ सु० ॥ एणी परे जे चित्तमां गणे, ते श्रावक ठहराय ॥ सु० ॥ ८ ॥ चिंते मनमां एहवुं, लीधुं सर्वविरति हुं केयार ॥ सु० ॥ आगम भणी प्रतिमा वहुं, वली करुं उग्र विहार ॥ सु० ॥ ९ ॥ गीतारथ गुरु सेवना, पंच प्रकार सज्झाय ॥ सु० ॥ इत्यादिक बहु भावना, एहवा मनोरथ थाय ॥ १० ॥ सु० ॥ ते संयोग मले हते, न करे दीर्घ लगार ॥ सु० ॥ ते सामग्री सवि मली, अफल करे गमार ॥ ११ ॥ सु० ॥ एम उपदेश कह्या घणा, भाव्या मनमां तेह ॥ सु० ॥ तुच्छ भोग घरवासमां, पहेला छे गुणगेह ॥ १२ ॥ सु० ॥ सेज विहार जेम मले, निद्रालुने ताम ॥ सु० ॥ तरसाने अमृत मले, निर्धनने जेम दाम ॥ १३ ॥ सु० ॥ तेम हरख्यो मन रा-

जवी, लेवा संयम काज ॥ मु० ॥ पमह वजावे नयरमां, करे तिहां गहरा गान ॥ १४ ॥ मु० ॥ अचाउ महो-
त्सव करी, चंवे चित्त उल्लास ॥ मु० ॥ गज रथ तुरग ने पालखी, शणगारे शहेरने गाम ॥ १५ ॥ मु० ॥
अलकापुर सम पुर थयुं, नगरलोक सुरलोक ॥ मु० ॥ शची शचीपति राणी राजवी, हर्षित मलि गलथोक
॥ १६ ॥ मु० ॥ जाणे हरि संजम लीये, एतो अचरिज वात ॥ मु० ॥ विस्मय देखी एहवो, जो जातो अवदात
॥ १७ ॥ मु० ॥ अति उत्सव आडंबरे, धर्मघोष सूरि पास ॥ मु० ॥ दीक्षा लीये अनुमति मली, पूर्णचंद्र नृप
पास ॥ १८ ॥ मु० ॥ हवे ग्रहणा ने आसेवना, शिक्षा दुविध प्रकार ॥ मु० ॥ धारे वारे पालनां, स्थानक जेह
अढार ॥१९॥मु०॥ जेम वसंत ऋतु राजमां, तेम संजम ऋषिराज ॥ संजम धर साधुजी ॥ शोभितरणि तेजालुडे,
तामसहिम गयां लाजी ॥ २० ॥ सं० ॥ साधुजी जेतु कृपाल, संयम निराबाधजी ॥ टाले दुरग जंजाल, परम
पद साधेजी ॥ ए आंकणी ॥ अध्यातम परिमल फल्यो, विरति फली वनराय ॥ सं० ॥ कुमलाणी अविरति
मालती, विकसित शुभ पर्याय ॥ २१ ॥ सं० ॥ सुमति कोकीला गहगही, संयम अंबने पोगी ॥ सं० ॥ चरण
करणे फूल्यो फल्यो, मंजरी सरस विशेष ॥ २२ ॥ सं० ॥ समरस नीरनां छांटणां, शुभ रुचि लाल गुलाल ॥
सं० ॥ करुणारस घोडी नली, सुकथा कथन बहु ख्याल ॥ २३ ॥ सं० ॥ श्रुत घोषादिक अति घणा, माद-
लना दोंकार ॥ सं० ॥ उचित विनय लाणे करी, गुंजे चपकृति ताल ॥ २४ ॥ सं० ॥ नंना नेरी नफेरीयां,
जुंगल जे नयवाद ॥ सं० ॥ विविध हेतु वंदे करी, चालता तेह संवाद ॥ २५ ॥ सं० ॥ चउविध सत्य
उदारता, दिक वस्त्रालंकार ॥ सं० ॥ ऋद्धि सिद्धि अणिमादिका, लब्धि ते वनिता सार ॥ २६ ॥ सं० ॥
सुमति गुपति परिवारशुं, विवेक वृंदावन मांहे ॥ सं० ॥ वारद लावना लावतां, ते ताननां रस गुणदाम
॥ २७ ॥ सं० ॥ गारव रजने समावता, माया रजनी विराम ॥ सं० ॥ धर्मध्यान सिंहासने, उपशम छत्र उदाम
॥ २८ ॥ सं० ॥ चामर तप विहुं जेदना, गारव सुहिर निशाण ॥ सं० ॥ ऋषिराजा एणी परे रमे, चरण वसंत
मंडाण ॥ २९ ॥ सं० ॥ एम आण दे अति घणे, सेवे गुरु कुलवास ॥ सं० ॥ अनियत वासे वसे सदा, उप-
योगी अति खास ॥ ३० ॥ सं० ॥ ज्ञानविमल गुरु सेवना, करता अहोनिशि एम ॥ सं० ॥ विचरे शील
हृदय धरे, वधते पूरण प्रेम ॥ ३१ ॥ सं० ॥ सर्व गाथा ॥ २२५५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुरु सेवाथी ते थया, गीतारथ गुणपात्र ॥ नणे नणावे अति घणुं, कस्या अनेक मुनि गात्र ॥ १ ॥ नवविध ब्रह्मीगुणे करी, पावन जेहनां पात्र ॥ पुण्यवंत नर जाणीये, जे करे तेहनी यात्र ॥ २ ॥ द्वादशांगी तणो लह्यो, जेणे पूर्ण आम्नाय ॥ सूत्रारथ सूधा धरे, ते श्रीचंद्र ऋषिराय ॥ ३ ॥ सारण वारण चोयण, पडिचोयणा सुशील ॥ सहे वहे गुरु आणशुं, सम जावे नहीं रीश ॥ ४ ॥ लोज महोदधि शोषव्यो, धरी संतोष अगस्ति ॥ तम्नतिमिरने अपहरे, अहोनिशि ज्ञान गजस्ति ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकावनमी ॥

॥ राग मह्हार ॥ मंदिर हमारे आए ॥ ए देशी ॥

॥ करी एणी परे शुज जायो मुणिंद राय ॥ क०॥ मैत्री प्रमोद करुणा ने उपेक्षा, ए जावना चित्त लायो ॥ मुणिंद ॥ क० ॥ श्रीश्रीचंद्र नृप रायो ॥ मु० ॥ ए आंकणी ॥ अकल सरूप अनुप अतुल बल, कर्मको कटक हरायो ॥ सत्त्व प्रधान उदार गुण देखी, चरण धर्म नृपति सहायो ॥ मु० ॥ १ ॥ श्री० ॥ शुज मानसवृत्ते महा नयरे, शुज रुचि नयर वसायो ॥ गिरिविवेक विलाप शिखरोपरि, प्रमद नंद नृप सरायो ॥ मु० ॥ २ ॥ श्री० ॥ चित्त एकाग्रनी जे थिरता, धर्मध्यान गढ पायो ॥ अप्रमत्तता जुवन जूमिका, वचन खिमा दृढ पायो ॥ मु० ॥ ३ ॥ श्री० ॥ आतमवीर्य अपूर्व उल्लासे, शस्त्र सहस समयायो ॥ श्रुत सद्बोध योध सेनानी, संयम सैन्य सजायो ॥मु०॥४॥श्री०॥ चउविह सत्य चतुर्मुख दूते, तिणशुं वांको लिखाये ॥ शुक्ल ध्यान मन मोजकी फोजा, मंगल नाद वजायो ॥ मु०॥५॥श्री० ॥ ध्यानारूढ क्षपकनी श्रेणि, मोह हरामी हरायो ॥ प्रथम गुणठाणयी जाण वल मंत्री, अणमिथ्यात्व गमायो ॥ मु० ॥ ६ ॥ श्री० ॥ बंध उदय उदीरण सत्ता, प्रकृति निकृति कय घायो ॥ यावत् अप्रमत्त गुणठाणे, निज संकेते आयो ॥ मु० ॥ ७ ॥ श्री० ॥ स्थिति रसघात गुणश्रेणी ने संक्रम, चउसेना धृति पायो ॥ पंचाचार मतंगज मयमत्त, अमवारीये उपायो ॥ मु० ॥ ८ ॥ श्री० ॥ कामकमाम धाम कीय दूरे, जिनसे जूरि जमायो ॥ सहज संतोष पोष चंद्रहास्ये, दीये डुशमन शिर घायो ॥ मु० ॥ ॥ ए ॥ श्री० ॥ खोज लहरी कीय खंको खंके, उपशम मोह उलटायो ॥ अनुजव शक्ति तिहां प्रगटावे, गुण

प्रगटननें उमाह्यो ॥ मु० ॥ श्री० ॥ शुक्लध्यान अनुजय उपयोगी, चेतन जीव द्रव्य ठहरायो ॥ अनुपयोगी निज गुण आनोगी, पण द्रव्य अजीव कहायो ॥ मु० ॥ ११ ॥ श्री० ॥ अध्यवसाय स्थानक गतिथिरता, ते धर्म अधर्म धरायो ॥ तस अवकाश घटाघट देते, ते अवकाश गहायो ॥ मु० ॥ १२ ॥ श्री० ॥ आयुःस्थिति संकलन करे ते, कालद्रव्य पर्यायो ॥ एम षट्द्रव्य एक द्रव्य जाणे ते, शुक्लध्यान प्रथम पायो ॥ मु० ॥ १३ ॥ श्री०॥ एक द्रव्यमांहे तेह गुणांतर, संक्रमथी पर्यायो ॥ तिहांथी अपर अविचार कहीजे, ते नो बीजो पायो ॥ मु० ॥ १४ ॥ श्री० ॥ शिवगेरी हेरी शत्रुंथे, योग नलिका यंत्र उपायो ॥ आतमवीर्य उदारता शाल, ध्यानानल सलगायो ॥ मु० ॥ १५ ॥ श्री० ॥ शुद्ध क्रिया उपयोगनुं संगे, कपटको कोट गिरायो ॥ मोहकोट शिर दोट देइ आपणे, दुगनायक परणकुं धायो ॥ मु० ॥ १६ ॥ श्री० ॥ अंतराय अपायनें जाणी, संदिगधीर्य प्रगटायो ॥ यत्र पटुता जलकुंडमां जीके, अरियण घर्म उमायो ॥ मु० ॥१७॥ श्री० ॥ क्षीणमोह सिंहासन गाजे, निज परिणाम मंडायो ॥ बंधे एक बेंतालीश उदये, सत्तायें पणासी समुदायो ॥ मु० ॥ १८ ॥ श्री० ॥ सूत्र थकी सविध पाली जे, तस पद जोर निवायो ॥ एकत्व प्रभुताइ पामे, अविचल आतमरायो ॥ मु० ॥ १९ ॥ श्री० ॥ तिहां निर्विघ्न सघन घन अमलो, नायपणे गवरायो ॥ चरणधर्म मधी खोइ अहोनिश, जग जनवाद गवायो ॥ मु० ॥ २० ॥ श्री० ॥ मोह सहाय ज्ञानावरणादिक, दर्शनने अंतरायो ॥ ए त्रिहुंने देइ दोट तिहां, घायकने चकायो ॥ मु० ॥ २१ ॥ श्री० ॥ क्षपकश्रेणीकी शक्ति अनंती, तिनसें कर्म खपायो ॥ ज्ञान अनंत अनंत लहे तब, जयत नीशान बजायो ॥ मु० ॥२२॥श्री०॥ ज्ञानविमल प्रभुताइ पाइ, नवि अरिवर्ग खपायो ॥ केवलज्ञान तणो गुण पामी, चामर छत्र धरायो ॥ मु० ॥ ध्यान शुक्ल दोइ पायो ॥ मु० ॥ ॥ २३ ॥ श्री० ॥ सर्व गाथा ॥ २२१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ उत्सव करता अति घणो, सकल सुरासुर वृंद ॥ सायक नरनायक मली, धरता अति आनंद ॥ १ ॥ कंचन कमलदल उपरे, बेठा श्रीमुनिराय ॥ सुवर्ण सिंहासन पण करे, जिहां विचरे तिण ठाय ॥ २ ॥ निज गोकिरण पसारथी, दूर करे तम राशि ॥ जविक चितना अति घणा, जेथी परे तरणी प्रकाश ॥ ३ ॥ जनपद-

मांहे विचरतां, दीये वहुला उपदेश ॥ जस दर्शनथी जीवना, नासे सयल किलेश ॥ ४ ॥ सोल सहस अणगारने, दीख दीये निज हाथ ॥ तेह अर्द्ध माने वली, साधवी गुणमणि साथ ॥ ५ ॥ निज धर्मोपदेशे करी, केइ समकितवंत ॥ श्रावकव्रत दीधां वहु, क्रियादान गुणवंत ॥ ६ ॥ वयर विरोध शमावता, करता जन उपकार ॥ संवेगी शिर सेहरो, समता रस जलधार ॥ ७ ॥ साधुपणे श्रुतकेवली, टालंता संदेह ॥ वली थया केवल केवली, क्षायिक गुणना गेह ॥ ८ ॥

॥ ढाल बावनमी ॥

॥ टोमरमल्ल जीत्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ गुणचंद्रादिक साधुने रे, घाती करम क्षय थाय ॥ श्रीचंद्र मुनि जीत्या रे ॥ जीत्या जीत्या मुनि समुदाय ॥ श्री० ॥ चंद्रकलादिक साधवी रे, कमलसिरि सुखदाय ॥ श्री० ॥ १ ॥ केवलज्ञान सहाय, श्री जिनधर्मने सुपसाय ॥ श्री० ॥ ए आंकणी ॥ सामोहता सरगे गइ रे, एक नवे लहेशे मोक्ष ॥ श्री० ॥ अवर सवे लक्षणादिका रे, खपिवे टाल्या दोष ॥ श्री०॥ कीधो कीधो कर्मनो शोष ॥ श्री० ॥ जीत्यो जीत्यो राग ने रोष ॥ श्री० ॥ लह्यो आतम गुणनो पोष ॥ श्री० ॥ २ ॥ वहु शिष्य केवल पामीने रे, पोहोता मुगति मझार ॥ श्री० ॥ केइ अनुत्तरे उपना रे, जिहां ठे एक अवतार ॥ श्री० ॥ साहुणीनो परिवार ॥ एणी परे तस गाते सार ॥ पाम्या पाम्या नवनो पार ॥ धन धन तस अवतार ॥ श्री० ॥ ॥ ३ ॥ केइ वली कल्पे उपना रे, तेहना त्रण अवतार ॥ श्री० ॥ पण अधिको कोइने नहीं रे, नवना तास विस्तार ॥ श्री० ॥ इस दीक्षित अणगार, उत्तम जस आचार, निर्वह्या संयम नार ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पांत्रीश वरस लगे पालीयो रे, केवलनो पर्याय ॥ श्री० ॥ आठ वरस छद्मस्थमां रे, तप तपे डुष्कर थाय ॥ श्री० ॥ दूर अवशेष अपाय, पाले जे षट्काय, धर्मे जेह अमाय, जग जस पमह वजाय ॥ श्री० ॥ ५ ॥ बार वरस कुमरपणे रे, एकशत वरसनुं राज ॥ श्री० ॥ एकशो पंचावन आगले रे, आयु सकल शुद्ध साज ॥ श्री० ॥ वाधि वाधि वहु जस लाज, सरे सारे नवि जन काज, गाजे जेम जलधर गाज, देइ देशना मुनिराज ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संयोगी गुणठाणमां रे, तिहां शैलेशी करण ॥ श्री० ॥ योग तणी थिरता धरे रे, होइ अयोगीकरण ॥

करे तिहां कायनुं करण, दोय पाये नव गरण, दोय पाये कर्मनुं तरण, गणधर
श्री० ॥ करे करे ध्याननुं शरण, करे तिहां कायनुं करण, दोय पाये नव गरण ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पाळी पूरण आउखुं रे,
कर्म निर्जरण, नहीं करीने अवतरण, अक्षयस्थिति नहीं मरण ॥ श्री० ॥ गुणे गुणे पुण्य
विपुलगिरि अधिठाण ॥ श्री० ॥ करी अनशन आराधना रे, पाम्या तिहां निर्वाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥
प्रमाण ॥ श्री० ॥ जाग अगंकित आण, मोहतिमिर नर जाण, जसु नामे कोड कल्याण ॥ श्री० ॥ एगं वत्तं रक्तं,
॥ छप्पं च॥ चरित्रगाथा ॥ माहिय पाए मयंतो, तिसंमनिय मयल सनउ य पयकमलो ॥ मंगविय जेण मुणि, सोसिरि-
पाला इंडुय सिरिचंदो ॥१॥ कम्मठ गंठी अठं, अचहिं परिसेहिं जोग मध्येणं ॥ संगविय जेण मुणि, सोसिरि-
चंदो केवली जयउ ॥ २ ॥ नविय कमलाण वयणु, करेहिं जो दिणय मय बोहिंतो ॥ विहरइ केवलिणाणं, चंदे
सिरिचंद रायरिसी ॥ ३ ॥ निवाणी धम्मतित्थे, पणपण वयाठयं च पालित्ता ॥ सिद्धिं पत्तो जो नं, सिरिचंदण
महणंत महं ॥ ४ ॥
॥ ढाल पूर्वली ॥ एम उत्तम श्रीचंद्रनुं रे, चरित्र गुणो गुणकार ॥ श्री० ॥ अनुसार के शिव के कहवनी
रे, गति सर्व तग परिवार ॥ श्री० ॥ ए तपनो अधिकार, आंबिल वर्द्धमान सार, करो तुमे नवि नर नार,
धरीये चित्तमां निरधार, जेम होय जयजयकार, ज्ञानविमल गुरु आधार ॥ ९॥ श्री० ॥ सर्व गाथा ॥२३०९॥

॥ दोहा ॥

॥ एम गौतम गणधर कहे, सुणी चेडा महाराज ॥ श्रेणिक आगळ वीरजी, भाख्युं मन्न समाज ॥१॥ तेम
में पण तुज आगळे, कहुं चरित्र रसाळ ॥ ए आंबिल वर्द्धमान तप, महिमा गुण उजमाळ ॥ २ ॥ श्रीचंद्र-
केवलीनी कथा, पूछ्या पाणी ए मांहि ॥ पूछ्या नहीं ए वातमां, जेम जलद गाज निशि मांहि ॥ ३ ॥ आठमें
चोवीशी वर्द्धं, रहेशे ए तप नाम ॥ कोइ पहुचो वायदो, प्रश्न करेशे ताम ॥ ४ ॥ कहो स्वामी कोइ पहुचो,
पहेलां थयो ते नृप ॥ तव ज्ञानी कहेने तिहां, श्रीचंद्र प्रबंध अनूप ॥५॥ एम निसुणी चेटक नृपति, गौतम गणीश्री
वात ॥ तप करता थयो छद्मस्थ, लोक शोक संघात ॥ ६ ॥ इंद्रभूति गणिवर भणे, निराशंस अनिदान ॥ कीजे
तप तेह लेहिज जगतमां, ते नर रत्न निधान ॥ ७ ॥ एम जाणी जे तप तपे, सेवे ते कर्मनी रास ॥ कीजे
तेहनां भामणां, कूटीजे नय पास ॥ ८ सर्व गाथा ॥ २३१७ ॥

॥ ढाल त्रेपनमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ थुणीयो थुणीयो रे में, एम मुनीसर थुणीयो ॥ ए देशी ॥

॥ फलीयो फलीयो रे, मुज अंगण सुरतरु फलीयो ॥ श्रीजिनराज कृपाथी संप्रति, ययो सविधी हुं वलीयो रे ॥ मुज० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ए श्रीचंद्र चरित्रने जणतां, अनुजव आवी मलीयो ॥ तव नवपदनुं ध्यान धरंते, मोह मिथ्यामत टलीयो रे ॥ मु० ॥ २ ॥ विविध शास्त्रना जाव ग्रहीने, सार परे संकलीयो ॥ नव रस यद्यपि एहमां दीसे, पण नवमा रसमां जलीयो रे॥ मु० ॥ ३ ॥ दर्शन ज्ञान स्वरूप ठे एहमां, नहीं किहां ययणे खलीयो ॥ पण मूढने मन तेह न जीजे, जेम घनजले मग सलीयो रे ॥ मु० ॥ ४ ॥ पंचांगी संमत गीतारथ, उलांसी पय तलीयो ॥ ग्रह्यो अर्थ जेम अदत्त न लागे, नाणी न होये उसलीयो रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ खल अंतर मीठाश न धारे, जेम पीलुनो कलीयो ॥ उपकृति न करे ने करतां वारे, जेम तरुवर वावलीयो रे ॥ मु० ॥ ६ ॥ सज्जन सज्जनता नवि मूके, जेम अगर अग्ने परजलीयो ॥ चंदन ठेद्यो करे सुरजिता, जो घांसलो लेइ निर्दलीयो रे ॥ मु० ॥ ७ ॥ सुस्वर सुकवि ने हृदय विकस्वर, तस मुखथी सांजलीयो ॥ अधिक सवाद दीये साकर लवे, मिश्रित मोदक दलीयो रे ॥ मु० ॥ ८ ॥ मूढ रहे ए निसुणी कोरो, घोर मांहे जेम ठलीयो ॥ स्याद्वादनुं रूप लहे नवि, आपमति वाउलीयो रे ॥ मु० ॥ ९ ॥ श्रोताजन निसुणीने हर्पे, जेम उठी जलधि उछलीयो ॥ अज्ञानी एहमां मूंजाये, जेम गाधो पंके कलीयो रे ॥ मु० ॥ १० ॥ माहारे तो गुरु चरण पसाये, अनुजव आवी मलीयो ॥ वली विशेषे गुणीना गुण जणतां, मगमांहे घी ढलीयो रे ॥ मु० ॥ ॥ ११ ॥ अंतर जाव न सूजे तेहने, जे होये मोहे ठलीयो ॥ तेह सदागम सचिव पसाये, मिथ्याभ्रांति तम टलीयो रे ॥ मु० ॥ १२ ॥ एह चरित्र पवित्र जणंते, आज दहाडो वलीयो॥ ज्ञानविमलसूरि चरणकृपाथी, मंगल कमला मलीयो रे ॥ मु० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ २३३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एह रासनुं खास ठे, आनंदमंदिर नाम ॥ सुविहित साधुने तेहमां, वसतां सुखनुं ठाम ॥ १ ॥ श्रीह-

संबंधे थया, श्रीसिद्धर्षि गजगंध ॥ २ ॥ तेणे चरित्र वखेर्यो
रिनद सूरि तणा, नाणेजा संबंध ॥ तसु शिष्य संबंधे थया, कीधो चरित्र प्रबंध ॥ ३ ॥ तस अनुसारे में कह्यो, नाम
कह्यं, प्राकृत गाथाबंध ॥ संस्कृत तस अनुसारथी, कीधो चरित्र प्रबंध ॥ ४ ॥ लोकमांहे पण एम छे, जोवे सुग तनु
सरस अधिकार ॥ जे कांइ असमंजस होवे, लेजो सुकवि सुधार ॥ ५ ॥ सज्जननी परषदमांहे, न होवे गलनो चार ॥
सौभाग्य ॥ व्यंग अंग जोवे न को, तणी परे दोषनो त्याग ॥ ६ ॥ ते प्राणी सहूको नला, आपापणे आचार ॥ पण जे आगम
पण त्रिनयीने विनयनो, करवानो व्यवहार ॥ ६ ॥ ते प्राणी सहूको नला, आपापणे आचार ॥ पण जे आगम
सार छे, ते विरला संसार ॥ ७ ॥ ते तणी आनंदमंदिरे, वास वसो गुणवंत ॥ एह आनंदमंदिर तणो, कहुं
सहु सुणो संत ॥ ८ ॥ सर्व गाथा ॥ २३३० ॥

॥ ढाल चोपनमी ॥

॥ लालदे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥

॥ आनंदमंदिर वास, पूरो सुगुण निवास ॥ आज हो जावे रे देखाडुं मंदिर केरडाजी ॥ १ ॥ जीरे जीहो
नावे० ॥ श्रीशंखेश्वर पास, श्रुति मंगल गुण रास ॥ आज हो जाणो रे ते सूधी सुथिर ते नूमिकाजी ॥ २ ॥
चार अधिकार चार धार, शोना अधिक उदार ॥ आ० ॥ चोथे रे अधिकारे शोना अतिघणीजी ॥ ३ ॥
एकशत आठ रसाल, विविध रागनी ढाल ॥ आ० ॥ जाणो रे ते थंना अनुपम गेहनाजी ॥ ४ ॥ गोख
तणा बहु जोष, जिनगुणस्तुतिना पोष ॥ आ० ॥ तेहमां रे बेसंतां मनडुं उल्लसेजी ॥ ५ ॥ सुगडादिक अधि-
कार, संबंध विविध प्रकार ॥ आ० ॥ जाणो रे साते ते नूमि सोहामणीजी ॥ ६ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र,
तास स्वरूप विचित्र ॥ आ० ॥ दीसे रे अति महोटा जेहमां ओरडाजी ॥ ७ ॥ सिद्धाचल सौनाग्य, परमेष्ठी
परनाग ॥ आ० ॥ पोहोळी पटशाळो पोहोळी गेहनीजी ॥ ८ ॥ पंचाचार विचार, समकितरूप उदार ॥
आ० ॥ कहीये रे ते पेटी गुणरयणां तणीजी ॥ ए ॥ गाथादिक बहु सुक्त, विविध कवित संयुक्त ॥ आ० ॥
सोहे रे मन मोहे हढतर आंगणुंजी ॥ १० ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्म, दाख्या तेहना मर्म ॥ आ० ॥ उपर आच्छा-
दन जयकुंश्य चारतांजी ॥ ११ ॥ वधती जे जे ढाल, ते ध्वजपट सुकुमाल ॥ आ० ॥ महिमा रे दीपंतो चिहुं
दिशि ते फरेजी ॥ १२ ॥ इत्यादिक बहु वस्त, जेहमां अछे रे प्रशस्त ॥ आ० ॥ आलोयणनी शोधि जे घर

मोतीनुंजी ॥ १४ ॥ जेहमां जोग ने खोग, जहां जिहां शुभ संयोग ॥ श्रा० ॥ दीसे रे बहु ठामे थान श्रने प्रधा-
नजी ॥ १५ ॥ ते जाणी ए श्रभिराम, श्रानंदमंदिर नाम ॥ श्रा० ॥ धारुं रे गुण जाणी माणी ए गुणोजी ॥
१६ ॥ संघ वसो ए माहि, श्राणी श्रधिक उत्साह ॥ श्रा० ॥ पुणीयो रे ए नरने नयणामां घणुंजी ॥ १६ ॥
संघ ते गुणमणि खाण, रोहणाचल सम जाण ॥ श्रा० ॥ मरुण त्रिभुवननो संघने जाणीयेजी ॥ १७ ॥ संघ
ते शशी ने सूर, पुण्य प्रताप पडूर ॥ श्रा० ॥ चक्र नगर रथ करे रुपम उदेजी ॥ १८ ॥ मेरु सुरेंद्रने सिंधु,
संघ ते जगनो बंधु ॥ श्रा० ॥ पहची रे कीर्ति कही आजी संघनीजी ॥ १९ ॥ जिनश्राणा श्राधार, वरते जे
संसार ॥ श्रा० ॥ तेहवो रे श्रीसंघ वसो एणे मंदिरेजी ॥ २० ॥ यतः ॥ संघोयं गुणरत्नरोहणगिरिः, संघ-
स्सतां मंगलं ॥ संघोयं पद्मप्रतापतरणी, संघो महामंगलं ॥ संघोऽजीप्सितदानकल्पविटपी, संघो गुरुभ्यो
गुरुः ॥ संघः सर्वजनाधिराजमहितः, संघश्चिरं नंदतु ॥ १ ॥

भावार्थ—आ संघ छे ते रत्नना पर्वत समान छे अने सज्जन पुरुषनु मंगल छे तथा प्रबलप्रतापवाला सूर्य समान छे, महा
मंगलरूप छे, अने मनोवांछित दान देवाना कल्पवृक्ष समान छे, अने मोटाना मोटो संघ छे तथा सर्वजनाधिराजे पूजि-
त एवो आ संघ छे ते घणा काल पर्यंत आनंद पामो ॥ १ ॥

॥ पूर्वढाल ॥ जेहमां गुरुनी पाट, करी उपदेशनी खाट ॥ श्रा० ॥ जाणो रे ते घरमां विविध सुखाशिका-
जी ॥ २१ ॥ ए मंदिरनी रखवाल, जिनपा अति सुकुमाल ॥ श्रा० ॥ जिननी रे वाणी छे श्रीभुवनेश्वरीजी ॥
२२ ॥ जगदीश जगआधार, जेहनी शक्ति अपार ॥ श्रा० ॥ गाये रे षड्दर्शनमां बहु नामे करीजी ॥ २३ ॥
देशना सुखनी पाय, टाळे दुःखनीना अपाय ॥ श्रा० ॥ चाये रे तृषा जवि प्राणी ताम सवादथीजी ॥ २४ ॥
जिहां तांबूल श्रमृत, मही रुचिवंत अनुकूल ॥ श्रा० ॥ अहोनिशि श्रारोगी नित्य रोगी टळेजी ॥ २५ ॥
एला क्षमा दया जावंत्रि, सत्य लविंग विचित्र ॥ श्रा० ॥ कारुण्य पूगीफल मद्यने नेत्रीयेजी ॥ २६ ॥ वस्त्यो-
दव ते बरास, दानादिक शुद्ध वास ॥ श्रा० ॥ शील श्राचारणादिक नागरवेलमीजी ॥ २७ ॥ श्रीजिनराजे
दीध, ए तांबूल विशुद्ध ॥ श्रा० ॥ एहवां रे बीडां खाइने शुचि रंगे रमोजी ॥ २८ ॥ ज्ञानविमल धरी नेह,
एह श्रानंदमंदिर गेह ॥ श्रा० ॥ उत्तम श्रावीने ए घर सुख देजे करुंजी ॥ २९ ॥ यतः ॥ काव्यं ॥ एला

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १ ॥

[illegible]

भावार्थ—हे [illegible] ॥ १ ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ २०॥ [illegible] गाथा ॥ २३६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] गाथा ॥ २३७५ ॥

॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

॥ [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]

पद ...जी ॥ श्रहो लोक जिनबिंब प्रतिष्ठा, जिनमत सुधा परख्याजी ॥ मु० ॥ ३ ॥ हीरो श्रीहीरविजयो गुरि, श्रीतिं गजी अंगे गोरीजी ॥ साहे श्रकबरने निज वयणे, जिनमतशुं मति जोरीजी ॥ मु० ॥ ४ ॥ साहे महिम श्रागल जयवरियो, श्रीविजयसेन गुण दरियोजी ॥ बिरुद सवाइ जगत गुरु दरियो, मति सुरगुरु श्रधिकारीयोजी ॥ मु० ॥ ५ ॥ श्रीविजयदेवा सुरीश्वर तस पटे, उदयो श्रभिनव नाणजी ॥ श्राचार्य श्रीविजयसिंह सूरीश्वर, ज्ञान क्रिया गुण जाणजी ॥ मु० ॥ ६ ॥ श्रनुक्रमे ते श्राचारज सुर प्रते, प्रतिबोधनने पोहोताजी ॥ श्रीविजयदेव सूरि निज पट थापे, श्रीविजयप्रज सूरि विनीताजी ॥ मु० ॥ ७ ॥ संप्रति जे जयवंता धुंता, तस गच्छ शोलाकारीजी ॥ श्रीश्रानंदविमल सूरि दीक्षित, कवि धर्मसिंह मति सारीजी ॥ मु०॥ ८ ॥ तस शिष्य श्रीजयविमल विबुध पर, कीर्तिविमल शिष्य तेहनाजी ॥ शुद्धाचारी शुद्ध श्राहारी, बिरुद कहीजे तेहनांजी ॥ मु० ॥ ९ ॥ श्रीनयविमल पंडित वैरागी, शिष्य तेहना लहीयेजी ॥ श्रीविजयप्रज सूरिनी श्राणा, शीश धरी निर्वहीयेजी ॥ मु० ॥ १० ॥ धीरविमल पंडित तस सेवक, समयमाने शुद्ध वाणीजी ॥ शक्ति प्रमाण क्रिया श्रनुसरता, शीलधरता जविप्राणीजी ॥ मु० ॥ ११ ॥ वर्द्धमान तपकारक तेहना, लब्धिविमल शिष्य तेहनाजी ॥ लघु सेवक नयविमल विबुधनी, बुधमां सवल जगीसाजी ॥ मु० ॥ १२ ॥ सयण सहाये चित्त निरमाये, उप संपद करी लीधुंजी ॥ श्राचारजपदे ज्ञानविमल इति, नाम थयुं सुप्रसिध्धुंजी ॥ मु० ॥ १३ ॥ निधि गुण मुनि शशि संवत् माने, ॥ १७४९ ॥ फागुण शुदि पंचमी दिवसेजी ॥ पत्तन नयर तणे तस पासे पद पाम्युं शुज देशेजी ॥ मु० ॥ १४ ॥ विजयप्रज सूरिने पाटे, परक संवेग सुहाया जी ॥ ज्ञानविमल सूरि संप्रति दीपे, तेजे तरणी सवायाजी ॥ मु० ॥ १५ ॥ तेणे ए श्रानंदमंदिर नामे, रास कस्यो सुखहेतेजी ॥ सागर विजय बहु समवाये, सुणवाने संकेतेजी ॥ मु० ॥ १६ ॥ राधनपुर शहेरे प्रारंन्यो, संपूरण थयो तिहांहिजी ॥ नज मुनि मुनि विधु (१७७०) संवत् माने, श्रधिक श्रधिक उछाहिंजी ॥ मु० ॥ १७ ॥ महा शुदि श्रजुश्राली तेरश, पुष्यारकने योगेजी ॥ स्नात्रोत्सव दिने चड्यो प्रमाणे, एथी सुखीयो सवि लोगजी ॥ मु० ॥ १८ ॥ श्ररिहंत सिद्ध सुसाधु धर्मनां, मंगल एही चारजी ॥ ए श्रानंदमंदिरमां तेहथी, सुखीयो बहु संसारजी ॥ मु० ॥ १९ ॥ एक शत एकादश वे ढाला, नव नव बंध रसालाजी ॥ मेत गांहोत्तर गुणथाल ग्रंथे, नवली मंगलमालाजी ॥ मु० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ २३९५ ॥

इतिश्री श्रीचंद्रप्रबंधे प्रधानप्रबंधांशे १ जन्म प्रतिजागर २ स्वर्णसिद्धिप्राप्त ३ श्रीपर्वते गमन ४ सिद्ध-
मोचन ५ अपर्तुन स्वर्णीकरण ६ स्थाने स्थाने कन्यापाणिग्रहण ७ करकोटद्वीपगमन ८ तत्र कमलांगरागु-
लाल द्वानसिद्धुर्गं नथीसफलार्थे निमित्तकथनं ९ पाताळनगरीनकन्यापाणिग्रहण १० चंद्रहासरत्न-
प्राप्ति ११ विद्याप्राप्त १२ तत्र वने अवधूतवन मातृमिलण १३ स्वगृह तत्र तंतुगृहांतग्रस्त पितृरक्षण
१४ गजवशीकरण १५ निजधर्मोपदेशकथन १६ मोहनी प्रतिबोधन विविध विनोद विलोकन १७ नाटके
पाणिग्रहण १८ राज्यपुत्रबंधमोचन १९ वीरदत्तकरण २० राजामिलण २१ बंधुजन्मा महाकरण २२ मक-
रध्वजगुप्तीकरणं २३ वैताढ्यगमनं २४ नगरादि बहुज्ञानप्राप्त २५ धर्मोपदेशश्रवण २६ स्वनय
प्रश्न २७ आत्मधर्म अंगीकरण २८ राज्यस्थापन २९ मातापितादि पितृ मातृ संयमग्रहण शिष्याग्रहन गुणठ-
ज्ञानादि ३० धर्मकरणीकरण ३१ सुतादीनां देशराज्यादि विनरण ३२ स्वयं दीक्षाग्रहण ३३ केवलज्ञान
प्राप्त ३४ परिवार दीक्षण ३५ आत्मनिर्वाण गमन आनंदमंदिर गुणप्रगटन इत्याद्यनेकविचारसारमय आनं-
दादिरत्नाधि गणकं चतुर्थोऽधिकारः समाप्तः ॥ समाप्तोऽयं ग्रंथः ॥

॥ श्रीचंद केवलीनो रास समाप्तः ॥

Printed by B. R. Ghanekar at the Nirnaya-sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.
Published by Mr. Bhanji Maya for Bhimsi Manek, House No. 228-231, Shaka Lane, Mandvi, Bombay.